अं० नि०	वृत्तान्त वा कथा वा नाम भक्तों का	पृ० सं०
निवासी प्रसाद भक्तों की कथा	पृथ्वीसिंह	१४०
	धनी भक्त	१४१
	[illegible]री	१४२
	[illegible] लड़कियों की कथा	१४३
	[illegible] दास	१४५
	[illegible] गोपाल	१४५
	[illegible]	१४६
	[illegible] जटा	१४७
	[illegible]	१४७
	[illegible]	१४८
	जगन्नाथ [illegible]	१४९
	[illegible]	१४९
[illegible] वासी भक्तों की कथा	भूमिका	१५०
	[illegible]	१५५
	[illegible]	१५६
	[illegible]	१५६
	गोविन्द [illegible]	१५७
	गंग [illegible] कथा	१५९
	भट्ट	
[illegible] भक्तों की कथा	[illegible]	
	[illegible]	
	[illegible]	

अ०नि०	वृत्तान्त वो कथा वो नाम भक्तों का	पृ०
	नारायण दास	२१४
	किन्हर दास	२१४
	पूरण दास	२१५
	भूमिका	२१५
	रन्तिदेव	२१६
	परशुराम	२१६
	रांकावांका	२२०
	रघुनाथ गोसाईं	
	[illegible]	
	कामदत्त	
	गंधर्वा दास	
	मंडव दास	२२५
	नारायण दास	२२८
	जीव गोसाईं	२३०
	सुरसुरी जी	२३२
	द्वारका दास	२३२
	[illegible]	
	[illegible]	
	[illegible]

अं०नि०	वृत्तान्त वो कथा वो नाम भक्तों का	अं० पृ०
निष्ठा इक्कीसवीं शरणागति और आत्मा [illegible] दन दश भक्तों की कथा १०	भूमिका	२९२
	अक्रूरजी	२९६
	विंध्यावली	२९८
	विभीषण	२९८
	गजराज	३००
	ध्रुवजी	३०१
	जटायु	३०२
	भाम्भांजा	३०३
	राघवानन्द	३०५
	जगन्नाथ	३०५
	लक्ष्मणभट्ट	३०५
[illegible] बाईसवीं सखाभाव [illegible] भक्तों की कथा ९	भूमिका	३०६
	अर्जुन	३११
	सुदामा	३१२
	ब्रजग्वालबाल	३१५
	गोविन्दस्वामी	३१५
	गंग ग्वाल	[illegible]
निष्ठा तेईसवीं शृंगार	भूमिका	[illegible]
	ब्रजगोपिका	[illegible]
	मीराबाई	[illegible]
	[illegible]	[illegible]
	[illegible]	[illegible]

अं०नि०	वृत्तान्त वो कथा वो नाम भक्तों का	अं० पृ०
	जसवन्त	३५५
	कल्यान दास	३५६
	कर्ण हरिदेव विख्यातकान्हरदास	३५६
	लोकनाथ	३५६
	मानुदास	३५६
	कृष्णदास	३५७
निष्ठा चौबीसवीं प्रेम की [illegible] भक्तों की [illegible]	भूमिका निष्ठा	३५७
	अम्बरीष की रानी	३६६
	सुतीक्ष्ण	३६७
	शबरी	३६८
	विदुर वो उनकी स्त्री	३७०
	भक्तदास	३७१
	बिट्ठलदास	३७२
	[illegible]कृदास	३७४
	कात्यायनी	३७५
	माधवदास	[illegible]
	नारायण	[illegible]

[illegible] किया जाता [illegible] महाराज का [illegible] धाम [illegible] स्मरणीय कृष्ण कुण्ड वा सेवा [illegible] कर लगवाई यह स्थान ऐसा [illegible] देखने के निमित्त प्रति दिन नये [illegible] पाय कृष्ण कुण्ड में स्नान कर घण्टा [illegible] उक्त महाराज का लैनैकार करते हैं और [illegible] कहने [illegible] महाराज [illegible] पश्चात् उनके पुत्र श्री मदन गोपाललाल बनवाया सबको सुख दिया तिनके पश्चात् उनके पुत्र श्री मदन गोपाललाल महाराज भी बड़े परोपकारी सर्व सन्तापहारी उत्पन्न हुए कि जिन्होंने उक्त पुस्तक को अपने हस्ताक्षरों से लिखकर अपने पुत्र को दे उससे आज्ञा करी कि तुम नित्य नेम से लाड़िलीलाल को सुनाया करो और दूसरी प्रतिसंत जनों के आनन्द और उपकार के लिये श्रीयुत मुन्शीनवल किशोर साहिब के पास छापने को भेज दी तिसको उक्त महाराज की आज्ञानुसार पण्डित कालीचरण ने बड़े श्रम से स्पष्ट भाषा कर शोधी और बहुत सरल करदी ॥

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

अनु०	अन्य वृत्तान्त प्रयोजनीय	पृ० सं०
	चारों संप्रदा में थोड़े थोड़े भेद वास्तव में एक होना परिणाम में	४०१
	स्मार्त मतके वर्णन के मिस करके अनन्य शब्दका अर्थ कथन वो दूसरी बात प्रयोजन कथ्यो	४०२
	भगवत् के अवतार लेने का हेतु	४०४
	सुसंग वो कुसंग का लाभ वो हानि का वर्णन	४०७
	बहुत निष्ठा स्थापित होने का कारण वो माहात्म्य	४०८
	भगवत् भक्त के सनबंधय	४११

इति सूची पत्र समाप्तः ॥

॥ श्रीराधाकृष्णाभ्यान्नमः ॥

भूमिका ॥

—:o:—

जय जय जय श्री अधम उधारण जय जय जय श्री नर्क निवारण ॥
जय जय जय दानव संहारन जय जय जय संतन के तारन ॥
जय जय जय यदुकुल के नन्दन जय जय जय दुख दोष निकन्दन ॥
जय जय जय अन्तर के जामी जय श्री कृष्ण गरुड़ के गामी ॥
ऐसे चरण चित्त उर लाऊं सुमिरों कृष्ण कृष्ण गुण गाऊं ॥
यह यश मुद मंगल ने गाई सब जिल्दन में दियो छपाई ॥

प्रगट हो कि शहर पड़रौना के निकट सिधुआ नाम बस्ती है जो साहिब गंज से मिलकर एक अच्छी बस्ती हो गई है तिसमें सिद्धजन सर्वदा से होते हैं वहांहीं महाराजाधिराज प्रतापसिंह ने कश्यप गोत्र में अवतार ले श्रीमुरारी भक्त हितकारी के चरणों में प्रीति की और उन्हें ऐसी भक्ति पढ़ी कि जिसका विस्तार कथनीय है उसी दशा में उक्त महाराज ने सब संत भक्त साधु जनों के उपकार के लिये एक पुस्तक भक्त कल्पद्रुम अति उत्तम बनाई कि जिसे पढ़ कलिकाल के समय में सब मनुष्य भवसागर पार होंय मुक्ति धाम प्राप्त करें क्योंकि यह पुस्तक ऐसी अपूर्व बनी है कि जिसे सुन सकल वर्णाश्रमी लोग उक्त महाराज का धन्यवाद कर उनके [illegible] की सराहना करते हैं क्योंकि उनकी पुण्याई यथार्थ में ऐसीही है कि जिसका वर्णन किसी [illegible]र पर नहीं किया जाता क्योंकि वे ऐसे धर्मज्ञ थे कि जिन्होंने [illegible] महाराज का [illegible] धाम [illegible] मन्दिर बनवाया है [illegible] देवी सकल [illegible] स्मरणीय कृष्ण कुण्ड वा सेवा कुञ्ज बनवाई तहां [illegible] द्विभुजं ज्ञान [illegible] कर लगवाई यह स्थान ऐसा मनोरम और [illegible] देखने के निमित्त प्रति दिन नये नये संत भक्त [illegible] पाय कृष्ण कुण्ड में स्नान कर घण्टा बजाय ईश्वर का [illegible] उक्त महाराज का जैजैकार करते हैं और [illegible] श्रीमहाराज प्रतापसिंह को धन्य है कि जिन्होंने यह उत्तम स्थान बनवाया सबको सुख दिया तिनके पश्चात् उनके पुत्र श्री मदन गोपाललाल महाराज भी बड़े परोपकारी सर्व सन्तापहारी उत्पन्न हुए कि जिन्होंने उक्त पुस्तक को अपने हस्ताक्षरों से लिखकर अपने पुजारी को दे उससे आज्ञा करी कि तुम नित्य नेम से लाड़िलीलाल को सुनाया करो और दूसरी प्रतिसंत जनों के आनन्द और उपकार के लिये श्रीयुत मुन्शीनवल किशोर साहिब के पास छापने को भेज दी तिसको उक्त महाराज की आज्ञानुसार पण्डित कालीचरण ने बड़े श्रम से स्पष्ट भाषा कर शोधी और बहुत सरल करदी ॥

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

त. सर्व [illegible] समाप्तः

श्री राधा कृष्णाभ्यां नमः ॥

अथ मंगलाचरण प्रारंभ ॥

श्री मद्वृन्दावनं ध्यायेद् वैष्णवो हृदये सदा ॥ महापद्मं योग पीठं [illegible] निर्मलं ॥ १ ॥ पूर्ण चन्द्रोदयं नित्यं सर्वत्र कुसुमान्वितं ॥ कदम्ब पाद पच्छायं कालिन्दी पुलिनोत्तमं ॥ २ ॥ माधवी कुंज विभ्राम भ्रमद् भ्रमर विभ्रमं ॥ कोकिलध्वनि सम्बीतं मयूरोद्दाम नर्त्तनं ॥ ३ ॥ कृष्ण सार समाकीर्णं कामधेनु सुखास्पदं ॥ गोप गोपी प्रियस्थानं कल्पपादप शोभितं ॥ ४ ॥ मध्ये गोवर्द्धनं तत्र विचित्र मणि मन्दिरम् ॥ रत्न सिंहासना शक्तं पद्मराग सरोरुहं ॥ ५ ॥ तन्मध्ये चिन्तयेत् कृष्णं किशोरं नन्दनन्दनं ॥ वामे तस्य प्रियां राधां किशोरीं वृषभानवीं ॥ ६ ॥ स्वभावतो पास्त समस्त दोष मशेष कल्याण गुणैक राशिं ॥ व्यूहांजिनं ब्रह्मपरं वरेण्यम् ध्यायेमकृष्णं कमले क्षणं हरिं ॥ ७ अंगेतु वामेवृषभानुजां मुदा विराज माना मनु रूप सौभगां ॥ सखी सहस्रैः परिसेविता सदा स्मरेम देवीं सकलेष्टकामदां ॥ ८ ॥ सत्पुण्डरीक नयनं मेघाभं वैद्युताम्बरं ॥ द्विभुजं ज्ञान मुद्राढ्यम् बनमालिन मीश्वरं ॥ ९ ॥ गोपी गोप गवावीतं सुरद्रुम लताश्रयं ॥ व्याल करणो पेतं रत्न पंकज मध्यगं ॥ कालिन्दी जल कल्लोल संगि मारुत सेवितं चिन्तयंश्चेतसा कृष्णं मुक्तो भवति संशयः ॥ १० ॥ इति श्री मंगलाचरण के ध्यान के श्लोक शुभं भूयात् ॥ जय श्री राधा कृष्ण ॥

श्री राधा वल्लभो जयतु ॥ श्री राधा कांत वृन्दावन बिहारी के चरण कमलों को कोटान कोट दण्डवत् है जिनकी अपार महिमा को शेषवो शारदा ब्रह्मा शिव वेद पुराण देवता वो दैत्य वर्णन नहीं कर सकते वो स्वरूप जिनका मन बुद्धि आदि इन्द्रियन के बिचार वो समझ से बाहर है प्राप्त रहने ऐसी प्रभुता वो ईश्वरता के भी करुणा वो दयालुता इस भांति पर है कि जब कबहीं भक्तन को दुख हुआ तब अनेक प्रकार के अवतार धारण करने में

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

विलम्ब वो लज्जा न करी वो तुरन्त दुख दूर किये वो ऐसे परम पवित्र चरित्र जगत में फैलाये कि जिनको कीर्तन करके कैसाही अधम वो पातकी होवे वह भी संसार समुद्र से उतर जाता है और यह विशेषता उनही के नहीं कि जो उत्तम कुल वो विद्या कला करके युक्त होंय किंतु ऐसे असाधु कुल वो नीच राक्षस दैत्य आदि जो सर्व प्रकार लोक वेद की रीति से बाहर वो सब विद्या कला आदि से शून्य वो अनधिकारी थे उन चरित्रों को गाय कर ऐसे स्थान को पहुंचे कि जहां योगियों का मन भी न जाय सकै पशु पक्षी जैसे रीछ बानर गज ग्राह गीध आदिको वह उत्तम गति प्राप्त हुई जिसको ऋषि मुनि नहीं पहुंचते नाम भगवत दूर करने दुख जन्म मरन के परम औषधी है और नहीं कहा जाता है कि नाम ईश्वर का बड़ा कि ईश्वर बड़ा है परंतु ध्यान करना चाहिये कि यद्यपि किसी के स्वरूप का ज्ञान है और नाम याद नहीं तो किसी प्रकार बिना नाम निर्देश उस का ज्ञान नहीं करसक्ता और यद्यपि किसी वस्तु के रूप का ज्ञान नहीं है वो नाम जानता है तो नाम से मिल सकती है जैसे यह कि किसी को बुलाना है तो यद्यपि वह समीप भी है तथापि वे नाम नहीं बुला सकता वो नाम का ज्ञान है तो दूर भी है तो पुकारने से तुरन्त आसकता है अब विचारि लेना चाहिये कि बड़ा है किसको है वेसिवाय इसके ब्रह्म के दोस्वरूप हैं एक सगुण दूसरा निर्गुण सो यह नाम दोनों से बड़ा है क्योंकि ब्रह्म एक अविनाशी और व्यापक सच्चित आनन्द घन है सो यद्यपि ऐसा ईश्वर निर्गुण निर्विकार सबके शरीर में प्राप्त है तथापि संपूर्ण जीव दीन वो दुखी हैं और जब उसी जीव ने नाम को जपा वो नाम का ध्यान किया तौ वह निर्गुण ब्रह्म आप से आप साक्षात् कार हो जाता है किन्तु अपने स्वरूप को जीव जान लेता है अब बिचार करना चाहिये कि ब्रह्म बड़ा है कि नाम और सगुण ब्रह्म से इस कारण बड़ा है कि जब भक्तों को दुख हुआ तब ईश्वर ने [illegible] ऊपर से जन्म अंगीकार करके अनेक प्रकार के अवतार धारण किये और दुखों को दूर किया वो नाम कैसा है कि जब भक्तों ने जपा बिना क्लेश के आप से आप दुःख दूर होगये अर्थात् यह नाम अर्थ धर्म काम मोक्ष चारों पदार्थ के देने को आप समर्थ है और किसी साधन का प्रयोजन नहीं और इस कलियुग में तो सिवाय कृष्ण नाम के और कोई युक्ति वो कारण उद्धार का नहीं वामन पुराण में लिखा है कि जिसने भगवत् नाम जपा उसने अश्वमेध यज्ञ आदि सब किया भागवत में कहा है कि जो बहुत दुखी हैं वे संसार के दुख से उरते हैं सो धोखे से भी भगवत् का नाम लेते हैं तो शीघ्रही दुःखों से छूट जाते हैं स्कंद पुराण में वर्णन है कि गोविन्द नाम ऐसा एक कोई धरती पर है कि जिसका जपना पापों के हजार टुकड़े कर देता है नारद पुराण में कहा है कि

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

नारायण नाम को नित्य नवीन जान कर कहते और सुनते हैं वे अमृत जान कर जपते हैं वे जीव जीवन मुक्त हैं तात्पर्य यह कि हजारों श्लोक वो वेद श्रुति नाम की महिमा में हैं सो उसी नाम को जप कर वो दण्डवत करके प्रारम्भ लिखना भाषांतर भक्त माल प्रदीपन जो तुलसी राम ने उरदू में किया हैं सूच्छ करिके करता हूं ॥

श्री गुरु की महिमा ॥

प्रथम श्री गुरु के चरण कमलों को दण्डवत् है कि जिनकी कृपा हृदय के अंधकार के दूर करने के निमित्त सूर्य से अधिक प्रकाश करती है वो वेद श्रुति कहती है कि अज्ञान अन्धकार करके जो अंधे हैं तिन को गुरु का बचन ज्ञानांजन की सलाई है वह भगवत् कि जिसकी महिमा ब्रह्मा और शिव भी नहीं कहसके सो गुरु के उपदेश से प्राप्त होता है वेद वो सब शास्त्रों ने बिना गुरु उपदेश दूसरा कोई उपाय जन्म मरन के दुखसे छूटने के निमित्त नहीं लिखा ॥

भगवत् भक्ति की महिमा ॥

पश्चात् श्री भगवत् भक्ति को करोड़ों दण्डवत् है जद्यपि भगवत में वो भक्ति में कुछ अन्तर नहीं परंतु एक बिशेष बिचार स्मरण हो आया जिस करके भगवत् भक्ति को बड़ाई प्राप्त हुई किंतु भगवत् तो कर्म के अनुसार सब को सुख दुख दोनों देता है वो भक्ति महारानी दुःखों को दूर करके सुखही देती है वो दुख को समीप नहीं आने देती भक्ति की महिमा वेद वो शास्त्रों ने इस प्रकार लिखी है जैसी भगवत् की बस अधिक भगवत् भी पद्म पुराण में लिखा है कि जैसे प्रज्वलित अग्नि सब प्रकार की लकड़ी को भस्म कर देती है इसी प्रकार भगवत् भक्ति इस जन्म वो जन्मान्तर के पापों को भस्म कर देती है तो उसी पुराण में लिखा है कि देवता भगवत् से प्रार्थना करते हैं कि जो हमने तप जप किया है उसके फलसे हमारा जन्म भरतखंड में हो कि तुम्हारी भक्ति करें नारद पुराण में लिखा है कि भगवत् केवल भक्ति से प्राप्त होता है धन आदिक से नहीं जो भक्ति से पूजन उसका करते हैं संपूर्ण अभीष्ट प्राप्त होता है और गुण यह है कि केवल पानी से पूजा हुआ सब दुख दूर कर देता है वामन पुराण में कहा है कि जिनकी अनन्य भक्ति शंख चक्र धारी नारायण में है वे लोग निश्चय करिके नारायण को पहुंचते हैं महा भारत में लिखा है कि हजारों जन्मों में जो तप वो ध्यान करके पाप दूर हुये हैं उसी को भगवत् में भक्ति होती है वैशाख माहात्म्य में वर्णन है कि प्रथम तो भरतखण्ड में जन्म होना दुर्घट है तिस पर मनुष्य फिर मनुष्य में भी स्वधर्म करने

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

अला तिस में भक्त होना बहुत दुर्लभ है पद्म पुराण में लिखा है कि जिस के हृदय में प्रेम भक्ति का निवास है तिसको यमराज स्वप्न में भी नहीं देखता और जिस को प्रेत वो पिशाच वो राक्षस वो देवता भी विघ्न नहीं कर सक्ते नारद पुराण में लिखा है कि अर्थ धर्म काम मोक्ष इन चारों के निमित्त लोग परिश्रम करते हैं सो यह सब भगवत् भक्ति से अनायास प्राप्त होजाते हैं फिर पद्म पुराण में कहा है कि भगवत् भक्तों को मुक्ति का द्वार खुला है और यह निसंदेह निश्चय किया गया कि भक्ति से अधिक अन्य कुछ साधन नहीं है ब्रह्मांड पुराण में कहा है कि जो भगवत् के भक्त नहीं हैं उनके निमित्त करोड़ों कल्प तक मुक्ति वो ज्ञान प्राप्त न होगा भागवत में लिखा है कि नारायण की भक्ति वास्ते ब्राह्मण कुल में जन्म अथवा देवता होने का प्रयोजन नहीं वो नर नारायण होने का व्रत न दान न यज्ञ केवल भक्ति से नारायण प्रसन्न होते हैं और सब खांग हैं भागवत में उद्धव से श्री कृष्ण कहते हैं योग और सांख्य और वेद का पढ़ना और वैराग्य हम को वश नहीं कर सक्ते एक भक्ति वश करती है स्कंद पुराण में लिखा है कि भगवत् भक्ति करने से और कोई उत्तम पथ नहीं है भगवत् का वाक्य है कि भक्ति के अवलंब से गोपी और गऊ और वृक्ष और पशु और सांप आदिक पवित्र होकर हमको प्राप्त हुए भागवत में कहा है कि जो कर्मों से और तप से और योग वो ज्ञान वैराग्य और दानादिक सब धर्मों से फल होता है सो केवल भक्ति से होजाता है नारद पुराण में लिखा है कि विशेष करिके मुक्ति को प्राप्ति ज्ञान से कहते हैं सो वह ज्ञान भक्ति ही के आधीन है उसी में फिर कहा है कि बिना भगवत् भक्ति के जो सहस्र अश्वमेध यज्ञ और वेद के अनुसार कर्म किए सब निष्फल है स्कंद पुराण में कहा है जहां भगवत् का भक्त रहता है तहां ब्रह्मा विष्णु महेश और सब सिद्ध निवास करते हैं भगवद्गीता में कहा है कि केवल भक्ति से जाना जाता है जैसा मैं हूं फिर उसी में लिखा है अनन्य भक्ति से प्राप्त होता है फिर लिखा है अर्जुन ने भगवत् से पूछा कि ज्ञान और भक्ति इन में अधिक कौन है भगवत् ने आज्ञा की कि मेरे भक्त योग्यतम हैं नारद सब से अति अधिक है यद्यपि ज्ञान से भी मेरी प्राप्ति है परंतु उस में क्लेश अधिक है इसी प्रकार के हजारों श्लोक पुराणों के और वेद की श्रुति है विस्तार के भय से नहीं लिखा फिर जब कि शास्त्रों का और वेद का प्रत्यक्ष यह अर्थ है कि भगवत् के प्राप्त होने के निमित्त वो अन्य फल के हेतु एक भगवत् भक्ति ही दुर्लभ है तो बड़ी दुर्भाग्यता है कि ऐसी भक्ति को त्याग करिकै इधर उधर दौड़ता फिरै ॥

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

भगवद्भक्ति का स्वरूप कि भक्ति किस को कहते हैं ॥

अब यह वर्णन उचित हुआ कि जिस भक्ति की यह महिमा है सो क्या वस्तु है और क्या उसका वृत्तान्त है सोई वर्णन होता है कि वेद और सूचों के सिद्धांत के अनुसार यह बात स्थिर वो दृढ़ हुई है कि भगवत् में परम अनुराग का होना यही भक्ति है सो सांडिल्य ऋषीश्वर ने अपने सूच में लिखा है और सूच उसको कहते हैं कि कई जगह के वेदकी आज्ञा को ऋषीश्वरों ने संग्रह करि के थोड़े अक्षरों में एक जगह रचि दिया ॥ सापरानुरक्ती ईश्वरे ॥ यही सूच है अर्थ इसका यह कि ईश्वर में दृढ़ नेह होना भक्ति है और विशेष स्पष्ट वर्णन इस सूच का प्रेम निष्ठा में होगा इस सूच में यह शंका प्रगट हुई कि गीता जी में भगवत् ने भक्ति उसको कहा कि जो अनन्य भक्त और ध्यान करते हैं दूसरे जगह सेवा को भक्ति वर्णन किया तीसरी जगह लिखा है कि मन और प्राण का लगाना और भगवत् ही को समझना वो भगवत् ही का वर्णन करना उसका नाम भक्ति है और रामानुज और माध्व और निम्बार्क और विष्णु स्वामी इत्यादि आचार्यों ने यह निर्णय वो निश्चय किया है कि दिन रात निश्चल जिस प्रकार गंगा का प्रवाह अनुक्षण प्रवर्त है और एक जगह भगवत् वाक्य है कि जो कोई जिस प्रकार के भाव करिके मेरे शरण होते हैं उसी प्रकार उन को मिलता है और एक जगह भगवत् के प्रसन्नता को भक्ति लिखा है और लिंग पुराण में लिखा है मन वच कर्म से भगवत् सेवा जो है उसी का नाम भक्ति है तंत्र शास्त्र का वचन है कि भक्ति के तीन अक्षर हैं प्रथम अक्षर (भ) यह अक्षर भव जो संसार तिस के दुःख को दूर करता है दूसरा अक्षर (क) कल्याण करता है तीसरा अक्षर (ती) तीव्रज्ञान को देता है इसी हेतु भक्ती नाम हुआ और सनत्कुमार संहिता का वचन है कि जो सब दुःख दूर करे उसको भक्ति कहते हैं और एक जगह लिखा है कि भगवत् को स्वामी और अपने को दास नित्य जानना इसी का नाम भक्ति है भगवत् का वचन है कि भक्तों के अनेक भांति के लाभ के हेतु भक्ति अनेक भांति की है सो भाव ही को भक्ति जानना चाहिये विष्णु पुराण में लिखा है कि शास्त्र की आज्ञा के अनुसार कर्म करना और जो कर्म त्याग योग्य है तिनका छोड़ देना वो भगवत् आज्ञा के बन्धन में रहना इसका नाम भक्ति है कि उसी के कारण से भगवत् की कथा होगी और साहित्य शास्त्र कि जिस शास्त्र में नेह वो काव्य वो रस इत्यादि को वर्णन किया है उस में लिखा है कि सात्विक भाव से जो ज्ञान शुद्ध होय तिस को भक्ति कहते हैं अर्थात् इन सब वचनों से भक्ति स्वरूप के निर्णय में बहुत विरोध पाया गया सिद्धांत एक बात क्या है तहां कहते हैं कि सिद्धांत उसी अनुराग

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

तात्पर्य भगवत् में दृढ़ स्नेह होने को भक्ति कहते हैं यह सब विरोध ऊपर कहने मात्र को है विचार करने में उन सब का परिणाम भगवत् की प्रीति है जिस रीति भांति से मन का रोकना भगवत् में लगाना शास्त्रों में लिखा है अथवा जिस भांत भांत की रीति से भक्त लोग भगवत् को प्राप्त हुए उस को भक्ति लिखा इस हेतु से विरोध देखलाई देने लगे नहीं तो वास्तव करिकै कुछ विरोध नहीं और विशेष निर्णय उस अनुराग का यह है कि जिस उपासक के संपूर्ण अन्तर बहिर्त की वृत्ति जिस शुभ अशुभ दुख से अलग होकर वेद वो स्मृति वो पुराण वो नारद पंचरात्रि इत्यादि शास्त्रों की आज्ञा के अनुसार श्रवण कीर्तन पूजादिक में बिना चाहना कोई वस्तु के लगी हुई ऐसे उपासक की वृत्ती शास्त्र वो नरकादिक के भय को छोड़ कर वो स्वर्गादिक के संपूर्ण सुख भोग से उदासीन होकर संपूर्ण ब्रह्मांडों की शोभा वो सुन्दरता का सार जो भगवत् का रूप तिस में स्वभाव करिकै आप से आप अखण्ड निश्चल अनुक्षण लगी रहै इसका नाम भक्ति है सो दो प्रकार की है एक विहित दूसरी अविहित सो विहित उसको कहते हैं कि जिस प्रकार शास्त्र में रीति वो आज्ञा है उसीके अनुसार होय सो विहित है सो चार प्रकार की है एक कीम अर्थात् चाहना से जैसे गोपिका वो ध्रुव इत्यादि की दूसरी द्वेष अर्थात् शत्रुता से जैसे रावण शिशुपालादिक की तीसरी भय अर्थात् डर से जैसे कंसवो मारीचादिकी चौथी स्नेह अर्थात् केवल प्रीति जैसे नारद वो सनकादिक इत्यादि की सो इन चारों प्रकार में से दो प्रकार एक शत्रुता एक भय से उपासना की रीति से त्याज्य हैं और दूसरा अविहित उसको कहते हैं कि जो स्वभाव करिके आप से आप बुद्धि के विचार से विना शास्त्र की आज्ञा की भगवत् में प्रीति हो और यह गति फल रूप अन्त का है यद्यपि इसमें भिन्न भिन्न करिके वर्णन करने का प्रयोजन नहीं तथापि कोई २ इस में दो भेद वर्णन करते हैं एक ज्ञानांगा जो ज्ञान को उत्पन्न करके मुक्ति देती है दूसरी स्वतंत्रा जो कि आप मुक्ति देती है ज्ञान उसका एक अंग है इस में भगवत् गीता का वचन है कि मेरे भक्त मेरी माया को तरते हैं फिर द्वितीय बार वर्णन किया कि मेरे भक्त मुझको प्राप्त होते हैं तीसरे बार कहा गीता जी के अंत में कि जो संसार से छूटा चाहै तो केवल मेरा ही सेवन करै सो इसमें वेद स्मृति और सब स्मृति वो पुराण इत्यादिक इस बात में युक्त हैं फिर उसी भक्ति के तीन प्रकार हैं उत्तम मध्यम प्राकृत सो प्रथम पदवी का नाम उत्तम है उस का स्वरूप यह है कि जो भगवत् को सब जगह व्यापक और वर्तमान देखता है और सबको भगवत् मय जानता है जल वा तरंग के सदृश सो उत्तम है और जिसको भगवत् में प्रीति है परंतु भगवत् भक्ति को अपना मित्र जानता है और प्राकृत भक्तों पर दया वो अनुग्रह करता है और द्वेषी जनों से अनमिल रहता है सो मध्यम

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

है और जो भगवत् और भगवत् अर्चा मूर्ति इत्यादिको ईश्वर जानता है और भगवत् भक्तों में प्रीति नहीं सो प्राकृत है फिर वही भक्ति सात्विक राजस तामस के विवरण से भागवत् के बचन के प्रमाण से तीन प्रकार की है किन्तु जो निष्काम है सो सात्विक है जैसे प्रह्लाद आदिक और जो किसी प्रकार की कामना युक्त है सो राजस है जैसे ध्रुव वो गज इत्यादिक और जो शत्रु के बिजय के हेतु करके है सो तामस जैसे इन्द्रादिक कि वृत्रासुर के बध के निमित्त भगवत् का आराधन करावो फिर उस भक्ति के तीन प्रकार और भी भागवत् में लिखे हैं एक मानस जो मन से होय दूसरा वाचक जो बोलने से होय तीसरा कायिक जो शरीर से होय फिर वही गीता जी में चार प्रकार की लिखी है एक आर्त जो किसी दुःखके कारण से भगवत् आराधन होये जैसे द्रौपदी वो गज आदिक दूसरा जिज्ञासू मुक्ति की राह ढूढ़ने वाले जैसे परीक्षित आदि तीसरा अर्थार्थी जैसे ध्रुव आदि चौथे ज्ञानी जैसे प्रह्लाद नारद सनकादिक इत्यादि फिर उसी भक्ति के तीन प्रकार और लिखते हैं एक वह जो आप करे दूसरा वह कि और लोगों से समझाय के करावे तीसरे वह कि और लोगों को भक्ति करते हुए देख कर प्रसन्न होय फिर उसी भक्ति के नव प्रकार भागवत् में लिखे हैं श्रवण १ कीर्तन २ स्मरण ३ सेवन ४ अर्चा ५ बंदन ६ दास्य ७ सख्य ८ आत्मनिवेदन ९ वो इस नव प्रकार मेंसे कोई एक इस भक्तमालमें निष्ठा नाम भरके लिखा है फिर वही भक्ति भूमिका के निश्चय से ग्यारह प्रकार की है प्रथम भूमिका सत्संग दूसरी भक्तों की दया वो प्रसन्नता के योग्य हो जाना तीसरी भक्तोंके आचरण जो प्रीति वो दया इत्यादि हैं सो उसमें श्रद्धा वो बिश्वास करना चौथी भगवत् चरित्रों को श्रवण करना पांचई श्रवण किया जो भगवत् स्वरूप तिसमें प्रेमकी उत्पत्ति होना छठवीं यह कि भगवत् के स्वरूप और अपने स्वरूप को यथार्थ जान लेना जैसा है वो इस अवस्था को अद्वैत वादी ज्ञान कहते हैं सातवीं उस भगवत् के स्वरूप में प्रेम अधिक होना आठवीं उस भगवत् का प्रकाश दिन दिन हृदय में होना नवीं दया और सब ओर से निर्मल इत्यादि जो भगवत् में धर्म है उन धर्मों का आना प्रारम्भ होना दशवीं ईश्वरता और दयालुता और सर्वज्ञता इत्यादि ईश्वर के धर्म से पूर्ण इस पुरुष में आ जाना ग्यारहवीं यह कि इस पुरुष को जितनी प्रीति अपने शरीर में है तैसीही प्रीति भगवत् में निश्चल कि कोई क्षण उस श्यामसुन्दर रूप चिंतवन से चले नहीं हो जानी फिर वही भक्ति दान इत्यादि के बिभाग से क्रम क्रम अधिक होती हुई तीस प्रकार की है सो यह सब भेद भक्ति में केवल इस हेतु है कि जिस २ भांति से भक्तों के मन लगें वह एक प्रकार की होगई जैसे भगवत् से उद्धव ने पूछा कि हे महाराज तत्व को कोई चौबीस कोई सत्तरह कोई सोलह

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

कोई तीन कोई पांच कोई आठ कोई सात कहते हैं सो बिरोध का हेतु क्या है भगवत् ने कहा कि वास्तव में कुछ बिरोध नहीं कारण यह बात है जिसने एक तत्व को दूसरे तत्व में मिला समझा तो उसकी गणना में तो कम और जिस् किसी ने अलग समझा उसकी गणना में अधिक है जैसे जिस किसी ने ईश्वर और माया और जीव को अलग जाना उस गणना में तीन हैं और जिसने माया को भगवत् की इच्छा जाना उसकी गिनती में दो हैं और जिस किसी ने तीनों तत्व परम हितू तत्व वो अहंकार वो पंच महा भूत को अधिक किया उसकी गिनती में दस हैं इसी प्रकार छत्तीस तक संयोग पहुंचो है कारण मूल एक भगवत् है दूसरा दृष्टांत और है कि किसी ने बरगद के वृक्ष को देख कर कहा कि दो शाखा वाला है किसी ने चार शाखा का देखा था उसने चार शाखा वाला बतलाया वास्तव करके वह बरगद एक है इसी प्रकार यह भक्ति एक है भक्तों के मन को लगन के अनुसार कोई प्रकार की दिखाई परती है और तात्पर्य सबका यह है कि कोई हो किसी प्रकार से कोई लाभ के लिये किसी विधान से करो परंतु अनुराग का होना अति ही प्रयोजन है जब तक वह प्रीति सिद्ध पद को नहीं पहुंचती तब तक साधन रूप है और जब सोई भाव को पहुंच गई वही फल रूप है और वह दृढ़ भाव जो किसी और पदार्थ को साधन नहीं जीवन मुक्त उसी को कहते हैं और स्पष्ट वर्णन मुक्ति का ग्रंथ के अन्त में होगा ॥

भगवत् भक्तों की महिमा ॥

अब उन भगवत् भक्तों को कि उस भक्ति के जो ऊपर कही हैं तिसके अभ्यास वो साधना करने वाले हुए और आगे होंगे और अब हैं भगवत् रूप जान कर दण्डवत करता हूं यद्यपि साधु सेवा निष्ठा में कुछ वर्णन उनका होगा तथापि यहां भी इस पोथी को मंगला चरण के हेतु उनका प्रताप थोड़ा सा लिखता हूं भागवत में लिखा है कि जिनके स्मरण करने से लोग अपने परिवार सहित पवित्र हो जाते हैं उनके दर्शन और स्पर्श वो सेवा करने का क्याही कहना है फिर भागवत के एकादश स्कंध में लिखा है कि संसार समुद्र में जो डूबते उछलते हैं तिनको भगवत भक्ति नौका के सदृश है फिर भागवत में भगवत ने आप कहा है कि मैं भक्तों के आधीन हूं और भक्त आप स्वतंत्र हैं एवं पुराण में भगवत् को वचन है कि जो मेरे भक्तों के भक्त हैं सो मेरेही भक्त हैं गोसांई तुलसी दास जीने जो यह चौपाई लिखी है कि—बिधि हरि हर कबि कोबिद बानी। कहत साधु महिमा सकुचानी—उसके अर्थ बहुत प्रकार के हैं तिस में से एक यह भी है कि मनुष्य को भक्तों के सत्संग से ब्रह्मा बिष्णु महेश की पदवी प्राप्त होती है इस हेतु उनकी बानी सकुचाती है कि

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

हम और हमारे स्वामी भगवत् भक्तों के संवारे हुए हैं हम उनकी क्या महिमा वर्णन करैं अच्छे प्रकार मन न करने से अवलोकन करी जाती है तो जिस किसी को जो पदवी लाभ हुई सो भगवत् भक्तों के सत्संग से हुई एक समय विश्वामित्र और पर्वत ऋषीश्वर से बाद हुआ विश्वामित्र जी तप को बड़ा कहते थे और पर्वत ऋषीश्वर सत्संग को बड़ा कहते थे पंच शेष जी ने इस विवाद के तोड़ने के समय कहा कि एक मुहूर्त तुम दोनों में से कोई धरती को अपने शिर पर रख लेव विश्वामित्र जी ने कई लाख बर्ष का बरु अपने जन्म भर के तप का फल लगाया धरती न ठहरी पर्वत ऋषीश्वर ने एक मुहूर्त के सत्संग का फल लगा दिया कि धरती ठहरि गई और इसी में न्याव होगया—सत संगति मुद मंगल मूला। सोइ फल सिद्ध सब साधन फूला—अर्थ इसका यह है कि सत्संग आनंद वो सुखका मूल अर्थात् जड़ है और वही सिद्ध फल है और सब साधन फल हैं अब मनमें बिचार करना चाहिये कि भगवत् भक्तों की कितनी बड़ाई होगी कि जिनके सत्संग की यह महिमा है और ध्यान करके देखना चाहिये कि भगवत् को सब कोई देह धारी अपना स्वामी जान कर पूजन करते हैं और भक्त कैसे हैं कि वही भगवत् उनके में होकर आप उनकी सेवा करता है और एक दूसरा प्रसंग है कि एक कवि ने चाहा कि जो सब से बड़ा हो उसका महत्व वर्णन करूं धरती को सबसे बड़ा जाना उससे बड़े शेषजी को और शेष जी से बड़ा शिव जी को और शिव जी से बड़ा ब्रह्मा जीको और ब्रह्मा से बड़ा भगवत् को फिर जब अच्छी प्रकार सोचा तब भगवत् से अधिक भगवत् भक्त को जाना कि जिन्हों ने भगवत् को भी बल से अपने बस कर लिया है और अपने हृदय से बाहर नहीं जाने देते तात्पर्य यह कि भगवत् भक्तों की जो कुछ पदवी वो बड़ाई है सो लिखने वो बर्णन करने के प्रमाण से बाहर है और उन में और भगवत् में कुछ भिन्नता नहीं ॥

कारण देवनागरी में भाषांतर होने का ॥

अब यह पोथी भक्तमाल कल्पद्रुम जिस प्रकार देवनागरी भाषांतर हुई सो लिखा जाता हैं इसका वृत्तांत यह है कि प्रथम मेरे चित्तको यह चाह हुई कि भक्ति मार्ग के सिद्धान्त के बचन भागवत वो गीता वो नारद पंचरात्रि वो गोपाल तापनी इत्यादि ग्रंथों के संग्रह करिके पोथी बनावैं सो बहुत से श्लोक भागवत इत्यादि के वो भक्ति के पांचों रसों की सामग्री अर्थात् बिभाव वो अनुभाव वो सात्विक वो व्यभिचारी वो स्थाई भाव इत्यादि के संग्रह करिके एकत्र किये वो इस परिश्रम में प्रवर्त रहे तब तक सम्वत् उन्नीस सौ सत्रह १९१७ श्रावण के शुक्लपक्ष में पड़रौना ग्राम में जो श्यामधाम में मुख्य भगवत् धाम है, तहां श्री राधाराज बल्लभ लाल जी

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi.

ठाकुर हिंडोला झूल रहे थे उसी समय उमेद भारती नामे सन्यासी रहने वाले ज्वाला मुखी के जो कोट कांगड़े के पास है भक्तमाल प्रदीपन नाम पोथी जो पंजाब देशमें अम्बाले शहर के रहने वाले लालातुलसीराम ने जो पारसी में तरजुमा करिके भक्तमाल प्रदीपन नाम ख्यात किया है तिसको लिये हुए आये उनके सत्कार वो प्रेम भाव से पोथी हम ईश्वरी प्रताप रायको मिली जब सब अवलोकन करिगये तो ऐसा हर्ष वो आनन्द चित्तको प्राप्त हुआ कि वर्णन नहीं होसक्ता साक्षात भगवत् प्रेरणा करके मनो वांछित पदार्थ को प्राप्त कर दिया वो लालातुलसी राम के प्रेम वो परिश्रम की बड़ाई सहस्रों मुख से नहीं हो सक्ती कुछ काल उनके अवण वो अवलोकन का सुख लिया तब मनमें यह अभिलाषा हुई कि इस पोथी को देव नागरी में भाषांतर अर्थात् तरजुमा करें कि जो पारसी नहीं पढ़े हैं उन सब भगवत् भक्तों को आनन्द दायक होय सो थोड़ा २ लिखते २ तीसरे वर्ष सम्वत् उन्नीस सौ तेईस १९२३ अधिक ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा को श्री गुरू स्वामी वो भगवत् भक्तों की कृपा से यह भक्त माल नाम ग्रन्थ संपूर्ण वो समाप्त हुआ वो चौबीस निष्ठा में सचह निष्ठा तक तो ज्यों का त्यों क्रम पूर्वक लिखा गया परंतु अठारहवीं निष्ठा से भक्ति रसके तारतम्य से क्रम न लेगा कर इस ग्रन्थ में लिखा है कोई पारसी वाले ग्रन्थ पढ़ने वाले हमारी भूल चूक न समझें हमने विचार से यह क्रम इस प्रकार से लगाया है कि प्रथम धर्म निष्ठा जिसमें सात उपासकों का वर्णन और दूसरी भागवत् धर्म प्रचारक निष्ठा तिसमें बीस भक्तों का वर्णन तीसरी साधु सेवा निष्ठा वो सत्संग तिस में नव्रह भक्तों की कथा छठई अेष निष्ठा तिसमें आठ भक्तों की कथा सातईं गुरू निष्ठा तिसमें ग्यारह भक्तों की कथा आठईं प्रतिमा वो अर्चा निष्ठा तिसमें पन्द्रह भक्तों की कथा नवईं लीला अनुकरन जैसे रास लीला राम लीला इत्यादि तिसमें छवों भक्तों की कथा दसवीं दया वो अहिंसा तिसमें छवों भक्तों की कथा ग्यारहवीं व्रत निष्ठा तिसमें दो भक्तों की कथा बारहवीं प्रसाद निष्ठा तिसमें चार भक्तों की कथा तेरहवीं धाम निष्ठा तिसमें आठ भक्तों की कथा चौदहवीं नाम निष्ठा तिसमें पांच भक्तों की कथा पन्द्रहवीं ज्ञान वो ध्यान निष्ठा तिसमें बारह भक्तों की कथा सोलहवीं वैराग्य वो शांति निष्ठा तिसमें चौदह भक्तों की कथा सचहवीं सेवा निष्ठा तिसमें दस भक्तों की कथा अठारहवीं दास निष्ठा तिसमें सोलह भक्तों की कथा उन्नीसवीं वात्सल्य निष्ठा तिसमें नव भक्तों की कथा बीसवीं सौहार्द निष्ठा तिसमें छवों भक्तों की कथा इक्कीसवीं शरणागती वो आत्मनिवेदन निष्ठा तिसमें दश भक्तों की कथा बाईसवीं संख्य भाव निष्ठा तिसमें पांच भक्तों की कथा तेईसवीं शृंगार वो माधुर्य निष्ठा तिसमें बीस भक्तों की कथा चौबीसवीं प्रेम निष्ठा तिसमें सोलह भक्तों की कथा का वर्णन लिखा गया अब भगवत् भक्तों से मेरी यह प्रार्थना है कि यह भक्त

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

माल नाम ग्रन्थ परम आनन्द का देने वाला पढ़ने वो सुनने पर तुम्हारे बिचार में सत्य करिकै यह मेरा परिश्रम तुम्हारे प्रसन्नता के योग्य होय तो इस अपने किंकर को यह प्रसन्नता दान देव कि जो ग्रन्थ के मंगला चरण में ध्यान लिखि आया हूं सो सदा अनुक्षण निश्चल मेरे हृदय में बसा रहै कदाचित् इसमें कोई दो बात की शंका वो प्रश्न करै एक यह कि जो चरित्र तुमने वर्णन किया है सो सब चरित्र भगवत् वो भगवत् भक्तों के किये हुए हैं सो सब प्रसिद्ध हैं नई कोई नहीं है वो दूसरी यह कि पारसी में जो रचा है तिस को तुमने देव नागरी में भाषान्तर अर्थात् तरजुमा कर दिया है तो इन दोनों बातों में तुम्हारी कौन नवीन उक्ति वो विशेष परिश्रम सूचित है कि जिस करिकै तुमको भगवत् भक्त लोग प्रसन्नता दान अर्थात् इनाम देंगे सो पहिले प्रश्न का उत्तर तो यह है कि जैसे राजा लोगों के किये हुए चरित्रों को गायक वो दुलैंधी वो कवि लोग गद्य पद्य वो छंद प्रबन्ध में बांधि कर उसी राजा को सुनाते हैं वो माला कार लोग राजाही की पुष्प वाटिका के फलोंके सेवक वो हार आदि आभूषण रचि करं उसी राजा के आगे धरते हैं तो यद्यपि उनके ही किये हुए चरित्र वो उन के ही फुलावाड़ी के फल हैं तथापि रचना पर प्रसन्न होकर वह राजा इनाम देता है इसी प्रकार यद्यपि उनही के चरित्र हैं परन्तु मैं रचिके आगे निवेदन करता हूं तो क्यों कहीं वांछित रूप अनूप का चिन्तवन रूप धन प्रसन्न दान मैं पाऊंगा और दूसरे प्रश्न का उत्तर यह है कि जिस प्रकार कोई ऊंचे आम्रादिके वृक्ष पर अति मीठे मीठे फल पके पके लटकि रहे हैं और किसीप्रकार हाथ नहीं आते और उसके खाद लेने को जी तरस रहा है और जो किसी ने बड़े श्रम से वृक्ष पर चढ़ि कर उन फलों को लाकर आगे धर दिया तो यद्यपि वह वृक्ष वो फल उसका लगाया वो बनाया नहीं है परन्तु निश्चय करिकै उस फलके खाद प्राप्त होने पर उस पुरुष के परिश्रम पर प्रसन्नता होती है तिसी प्रकार यद्यपि यह ग्रंथ पारसी में रचना और की किया है मैंने केवल देवनागरी में भाषान्तर कर दिया है तौ भी इस के खाद को लेकर भगवत्भक्त लोग क्यों न प्रसन्न होकर मेरे वांछित को पूर्ण करेंगे कदाचित् कोई यह कहै कि जो भगवत् भक्त पारसी नहीं पढ़े हैं सोई प्रसन्न होंगे वो जो पढ़े हैं सोनहीं सोयह बात कदापि नहीं बरु पारसी पढ़े काले भगवद् भक्त दो बातों से अधिक प्रसन्न होंगे एक तो पारसी के पदों के अर्थ वो भाव भाषा में यथार्थ बूझि करके दूसरे परोपकार पर दृष्टि करके सो सब प्रकार से दृढ़ विश्वास है कि मेरे वांछित को भगवत् भक्त लोग प्रसन्न होकर निश्चय क्षमा करेंगे॥

नाम वर्णन मुख्य करता भक्त माल और भाषांतर कर्ताओं का॥

श्री नारायण दास नाम प्रसिद्ध नाभाजी मुख्य करता भक्त माल के हनुमान वंश में उनका जन्म हुआ वृत्तान्त यह है कि दक्षिण में तैलंग देश

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

ठाकुर हिंडोला झूल रहे थे उसी समय उमेद भारती नामे सन्यासी रहने वाले ज्वाला मुखी के जो कोट कांगड़े के पास है भक्तमाल प्रदीपन नाम पोथी जो पंजाब देशमें लुम्बाले शहर के रहने वाले लाला तुलसीराम ने जो पारसी में तरजुमा करिके भक्तमाल प्रदीपन नाम ख्यात किया है तिसको लिये हुए आये उनके सत्कार वो प्रेम भाव से पोथी हम ईश्वरी प्रताप रायको मिली जब सब अवलोकन करिगये तो ऐसा हर्ष वो आनन्द चित्तको प्राप्त हुआ कि वर्णन नहीं होसक्ता साक्षात भगवत् प्रेरणा करके मनो वांछित पदार्थ को प्राप्त कर दिया वो लालातुलसी रामके प्रेम वो परिश्रम की बड़ाई सहस्रों मुख से नहीं हो सक्ती कुछ काल उनके अवण वो अवलोकन का सुख लिया तब मनमें यह अभिलाषा हुई कि इस पोथी को देव नागरी में भाषांतर अर्थात् तरजुमा करें कि जो पारसी नहीं पढ़े हैं उन सब भगवत् भक्तों को आनन्द दायक होय सो थोड़ा २ लिखते २ तीसरे वर्ष सम्वत् उन्नीस सौ तेईस १९२३ अधिक ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा को श्री गुरू खालसो वो भगवत् भक्तों की कृपा से यह भक्त माल नाम ग्रन्थ संपूर्ण वो समाप्त हुआ वो चौबीस निष्ठा में सचह निष्ठा तक तो ज्यों का त्यों क्रम पूर्वक लिखा गया परंतु अठारहवीं निष्ठा से भक्ति रसके तारतम्य से क्रम न लेगा कर इस ग्रन्थ में लिखा है कोई पारसी वाले ग्रन्थ पढ़ने वाले हमारी भूल चूक न समझें हमने विचार से यह क्रम इस प्रकार से लगाया है कि प्रथम धर्म निष्ठा जिसमें सात उपासकों का वर्णन और दूसरी भागवत् धर्म पंचरक निष्ठा तिसमें बीस भक्तों का वर्णन तीसरी साधु सेवा निष्ठा वो सत्संग तिस में बत्तीस भक्तों की कथा छठई शेष निष्ठा तिसमें आठ भक्तों की कथा सातई गुरू निष्ठा तिसमें ग्यारह भक्तों की कथा आठई प्रतिमा वो अर्चा निष्ठा तिसमें पन्द्रह भक्तों की कथा नवई लीला अनुकीर्तन जैसे रासू लीला राम लीला इत्यादि तिसमें छवों भक्तों की कथा दसवीं दया वो अहिंसा तिसमें छवों भक्तों की कथा ग्यारहवीं व्रत निष्ठा तिसमें दो भक्तों की कथा बारहवीं प्रसाद निष्ठा तिसमें चार भक्तों की कथा तेरहवीं धाम निष्ठा तिसमें आठ भक्तों की कथा चौदहवीं नाम निष्ठा तिसमें पांच भक्तों की कथा पन्द्रहवीं ज्ञान वो ध्यान निष्ठा तिसमें बारह भक्तों की कथा सोलहवीं वैराग्य वो शांत निष्ठा तिसमें चौदह भक्तों की कथा सत्रहवीं सेवा निष्ठा तिसमें दस भक्तों की कथा अठारहवीं दास निष्ठा तिसमें सोलह भक्तों की कथा उन्नीसवीं वात्सल्य निष्ठा तिसमें नव भक्तों की कथा बीसवीं सख्य निष्ठा तिसमें छवों भक्तों की कथा इक्कीसवीं शरणागती वो आत्मनिवेदन निष्ठा तिसमें दश भक्तों की कथा बाईसवीं संख्य भाव निष्ठा तिसमें पांच भक्तों की कथा तेईसवीं श्रृंगार वो माधुर्य निष्ठा तिसमें बीस भक्तों की कथा चौबीसवीं प्रेम निष्ठा तिसमें सोलह भक्तों की कथा का वर्णन लिखा गया अब भगवत् भक्तों से मेरी यह प्रार्थना है कि यह भक्त

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

माल नाम ग्रन्थ परम आनन्द का देने वाला पढ़ने औ सुनने पर तुम्हारे बिचार में सत्य करिकै यह मेरा परिश्रम तुम्हारे प्रसन्नता के योग्य होय तो इस अपने किंकर को यह प्रसन्नता दान देव कि जो ग्रन्थ के मंगला चरण में ध्यान लिखि आया हूं सो सदा अनुक्षण निश्चल मेरे हृदय में बसा रहै कदाचित् इसमें कोई दो बात की शंका वो प्रश्न करै एक यह कि जो चरित्र तुमने वर्णन किया है सो सब चरित्र भगवत् वो भगवत् भक्तों के किये हुए हैं सो सब प्रसिद्ध हैं नई कोई नहीं है वो दूसरी यह कि पारसी में जो रचा है जिस को तुमने देव नागरी में भाषान्तर अर्थात् तरजुमा कर दिया है तो इन दोनों बातों में तुम्हारी कौन नवीन उक्ति वो विशेष परिश्रम सूचित है कि जिस करिकै तुमको भगवत् भक्त लोग प्रसन्नता दान अर्थात् इनाम देंगे सो पहिले प्रश्न का उत्तर तो यह है कि जैसे राजा लोगों के किये हुए चरित्रों को गायक वो दसौंधी वो कवि लोग गद्य पद्य वो छंद प्रबन्ध में बांधि कर उसी राजा को सुनाते हैं वो माला कार लोग राजाही की पुष्प वाटिका के फलों के सबक वो हार आदि आभूषण रचि करें उसी राजा के आगे धरते हैं तो यद्यपि उनके ही किये हुए चरित्र वो उन के ही फुलावाड़ी के फल हैं तथापि सूचना पर प्रसन्न होकर वह राजा इनाम देता है इसी प्रकार यद्यपि उनही के चरित्र हैं परन्तु मैं रचिके आगे निवेदन करता हूं तो क्यों न वांछित रूप अनूप का चिन्तवन रूप धन प्रसन्न दान मैं पाऊंगा और दूसरे प्रश्न का उत्तर यह है कि जिस प्रकार कोई ऊंचे आम्रादिके वृक्ष पर अति मीठे मीठे फल पके पके लटकि रहे हैं और किसीप्रकार हाथ नहीं आते और उसके खाद लेने को जी तरस रहा है और जो किसी ने बड़े श्रम से वृक्ष पर चढ़ि कर उन फलों को लाकर आगे धर दिया तो यद्यपि वह वृक्ष वो फल उसका लगाया वो बनाया नहीं है परन्तु निश्चय करिकै उस फलके खाद प्राप्त होने पर उस पुरुष के परिश्रम पर प्रसन्नता होती है तिसी प्रकार यद्यपि यह ग्रंथ पारसी में रचना और की किया है मैंने केवल देवनागरी में भाषान्तर कर दिया है तौ भी इस के खाद को लेकर भगवत्भक्त लोग क्यों न प्रसन्न होकर मेरे वांछित को पूर्ण करेंगे कदाचित् कोई यह कहै कि जो भगवत् भक्त पारसी नहीं पढ़े हैं सोई प्रसन्न होंगे वो जो पढ़े हैं सो नहीं सो यह बात कदापि नहीं बरु पारसी पढ़ने वाले भगवत् भक्त दो बातों से अधिक प्रसन्न होंगे एक तो पारसी के पदों के अर्थ वो भाव भाषा में यथार्थ बंधि करके दूसरे परोपकार पर दृष्टि करके सो सब प्रकार से दृढ़ विश्वास है कि मेरे वांछित को भगवत् भक्त लोग प्रसन्न होकर निश्चय क्षमा करेंगे॥

नाम वर्णन मुख्य करता भक्त माल और भाषांतर कर्ताओं का॥

नारायण दास नाम प्रसिद्ध नाभाजी मुख्य करता भक्त माल के हुए हनुमान वंश में उनका जन्म हुआ वृत्तान्त यह है कि दक्षिण में तैलंग देश

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varahasi

गोदावरी के समीप उत्तर राम अद्राचल एक पहाड़ है श्री रामचन्द्र जी के वन वास के समय कुछ दिन उस पर निवास किया तहीं राम दास नाम ब्राह्मण महाराष्ट्र हनुमान जी के अंश अवतार हुए रामचन्द्र जी की उपासना में बहुत लोगों को प्राप्त किया बड़े पण्डित थे उनके परिवार हनुमान अवतार होने से हनुमानवंश करिके प्रसिद्ध हैं गान विद्या के अधिकारी हैं राजा लोगों के यहां नौकरी गाने पर करते हैं नाभा जी जन्म से सूर थे पिता के मरने पर अकाल का समय था कि उनकी माता ने जंगल में छोड़ दिया कील्ह दास वो अग्र दास जीने देखा उनके नेत्रों पर जल का छींटा दिया नेत्र खुल गये वृत्तान्त पूछकर गलता जी में ले आये चेला करिके नारायण दास नाम रक्खा सब साधुओं की प्रसादी खाते खाते दिव्य ज्ञान होगया अग्रदास जी के मानसी पूजा के समय जो साहूकार को जहाज अटकने की दुश्चिंता हुई मनमें उत्पन्न हुई सो बतलाय दिया कि महाराज जहाज निकल गया सेवा में सावधान हूजिये तब प्रसन्न होकर आज्ञा दी कि जिन भक्तों की प्रसादी से यह ज्ञान तुम को हुआ तिनका यश वर्णन करो तब छप्पै छन्द में नाभा जी ने भक्त माल बनाया यह माला भक्त गुणमणि गण से भरा है जिसने धारण किया हृदय पर तिसने भगवत् को पहिचाना ऐसी यह माला है श्रीप्रियादासजी माध्व संप्रदा के वैष्णव श्री वृंदाबन में रहते थे उन्होंने कवित्त में इस भक्त माल की टीका बनाई तिसके पश्चात् लालन लाल जी दास ने सन ११५८ हिजरी में पारसी में प्रियादास जी के मत से तर्जुमा किया वो तर्जुमे का नाम भक्त उरबसी धरा यह रहने वाले कांचले के थे लछमन दास नाम था मथुरा की चकले दारी में सत्संग प्राप्त हुआ हित हरि वंस जी की गद्दी के सेवक हुए लाल जी दास नाम मिला राधा वल्लभ लाल जी के उपासक हुए दूसरा तर्जुमा एक और किसी ने किया है नाम याद नहीं है तीसरा तर्जुमा लाला गुमानी लाल कायस्थ रहने वाले रुलक के सम्वत् १९०८ में समाप्त किया चौथा तर्जुमा लाला तुलसी राम रामोपासक लाला रामप्रसाद की मुच अगरी वाले रहने वाले मीरापुर अम्बाले के इलाके के कलक्टरी के सरिश्तेदार उस मूल भक्त माल और टीका को सम्वत् १९१३ में बहुत प्रेम वो परिश्रम करिके शास्त्र के सिद्धांत के अनुसार बहुत विशेष बाक्यों सहित अति ललित पारसी में उर्दू बानी लिये हुए तर्जुमा करके चौबीस सिद्धा में रचिके समाप्त किया ॥

महिमा वर्णन भक्तमाल की ॥

महिमा वो बड़ाई श्री भक्तमाल की कोई वर्णन नहीं कर सक्ता अपार है और इस लोक वो परलोक की कामना पूर्ण करने को जैसे कल्पवृक्ष वो कामधेनु है जो कोई सर्वदा पढ़ते हैं निश्चय करिके तिसको भगवत् भक्ति प्राप्त होती है जो कोई कामना संसारी के सिद्ध होने के निमित्त पढ़ते हैं

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

तो वह भी बहुत शीघ्र सिद्ध हो जाती है बहुत लोगों को परीक्षा मिली है जितना तीर्थों के स्नान दाना दिक से पुण्य होता है उससे दस गुण अधिक इस भक्तमाल के पढ़ने से मिलता है संसार में तीन प्रकार के मनुष्य हैं एक बिमुक्त दूसरे साधक तीसरे बिषई सो बिमुक्त वो साधक को तो यह पोथी प्राण से भी अधिक प्यारी है कि उनका अभिप्राय अच्छी भांति से निकलता है और बिषई को इस निमित्त लाभ देने वाली है कि संसारी कामना पढ़ने से इसकी प्राप्त होती है और भगवत् की ओर मन लगजावै तो आश्चर्य नहीं वो इसके सिवाय यह कि बातें अद्भुत २ वो ब्योरा खोलकर मर्जादा प्रेम औ बियोग ऐसे जोग वो रस औ शृंगार के लिखे हुए हैं यद्यपि वह सब सम्बन्ध किये गए भगवत् के प्रेम के हैं तथापि रीति प्रेम बास्तवी औ मनमुखी को एक ही भांतिकी है इसहेतु वे लोग उन मर्यादाओं को मन्मुखी प्रेमक संबन्धी समझकर प्रेम की रीति वो मर्य्याद से ज्ञान युक्त होंगे और सुख आनंद पावैंगे तात्पर्य यही है कि तीनों भांति के लोगों को लाभ वो प्रसन्नता देने वाला है और क्यों न ऐसा होय कि भगवत् को अपने भक्तों के सदृश प्यारा है कि आप सुनते हैं एक बैष्णव गुरधन दास नामे ब्रज मण्डल में कामा का रहनेवाला नगर जयपुर में गया श्री गोविंददेव जी के मंदिर के पुजारी ने कि नाम उनका राधा रमण था उस वैष्णव से भक्त मालकी कथा का श्रवण प्रारंभ किया कथा समाप्त नहीं हुई थी कि बैष्णव सांम्हर के दिशा चले गये जब फिरि आये तब पूछा कि कथा कहां तक हो चुकी थी कोई न बतला सका और श्री गोबिंद जी ने बतलाया कि फलाने भक्त तक कथा हो चुकी थी इस से बिश्वय होगया कि भगवत् आप इस भक्तमाल को सुनते हैं दूसरा यह वृत्तान्त है कि प्रियादास जी कि जिसने मूल भक्त माल की टीका को किया है सो होडलगांव में ब्रज से बीसकोस है तहां गये और लालदास महंत ठाकुर द्वारे को कथा सुनाई संयोग बस मंदिर में चोरी होगई और मूर्खों ने कारण चोरी होने का कथा को समझा परंतु महंत जी को कुछ दुचूताई न हुई और स्वामी प्रियादास जी के कथा कहने को कहा स्वामी जी बोले कि श्रोता इस कथा के आप भगवत् हैं जब तक सिंहासन भगवत् का फिर न आवैगा तब तक कथा बंद रही और सब लोग ठाकुर द्वारे के ठाकुर जीके बियोग से उस दिन बे अन्नजल रहे जब रात्रि हुई तो भगवत् ने उनचोरों को ऐसा भय दिया कि प्रातही सिंहासन भगवत् का शिर पर रख कर सब सामग्री सहित महंत जीकी सेवा में प्रगट हुए सबको श्री भक्तमाल पर बिश्वास हुआ और मूर्ख लोगों के मुह में धूल पड़ी और कथा प्रारंभ हुई यह बात कुछ औघट नहीं है काहे से कि आप अपने भक्तों की सहाय के हेतु निज धाम को छोड़कर चले आते हैं और अनेक प्रकार के अवतार धारण करते हैं जो कथा उनकी सुनी तो क्या

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

अनुचित है अब दो एक बात वह लिखी जाती है कि जिनके मनोर्थ केवल पोथी के विश्वास से प्राप्त हुए सुमेर देव ब्राह्मण नर्बदा के किनारे कोड़बने के रहने वाले ने गलता जी में अति प्रेमसे भक्तमाल की कथा सुनी और पोथी की प्रति एक लिखाय लेकर घरको चले राहमें ठगों ने मारा वो उनकी पोथी सब वस्तु सहित ले गये और यह पोथी जहां रहती है मनकी मैल को दूर कर देती है इस हेतु चोरों को अपने पाप कर्म का पश्चात्ताप हुआ और श्री भक्तमाल ने स्वप्न में भयंकर स्वरूप से दर्शन दे कर यह आज्ञा की कि सुमेर देव के शरीर को उसके घर पहुंचा दे और पोथी उसके सीस पर रख दे कि वह जी जायगा ठगों ने उसी भांति किया और तुरन्त सुमेरदेव जीगया मानो सोते से उठ बैठा यह चरित्र को देख कर सबको अचम्भा हुआ और भक्तमाल में विश्वास होगया वोभगवत् शरण होगये और वैष्णव होकर कृतार्थ होगये इसी प्रकार एक वणिक ने इस कथा को श्री प्रियादास जी से सुना और विश्वास करके पोथी को प्रति ले गया कुछ काल पीछे उसकी मृत्यु आन पहुंची तब यमदूतों के डर से अपने लड़कों से कहा कि पोथी हमारी छाती पर रखदेव जबतक पोथी आवै तब तक उसका प्राण निकल गया घर के सबने मरे पर पोथी उसके शिर पर रख दी उस प्रताप से यमदूत तो भाग गये और वणिक उठ बैठा कहने लगा कि यमदूत तो यमलोक को लिये जाते थे भगवत् भक्तों ने छोड़ाया अब मैं वैकुंठ को जाता हूं और उपदेश कर जाता हूं कि जो कोई मेरे वंश में हो सो इस पोथी को पढ़ता सुनता रहै और अन्त समय अपनी छाती पर राखै यह कह कर परमधाम को गया और उस के वंश में अब तक वह परम्परा वर्तमान है वो लाला गुमानी लाल भाषान्तर कर्त्ता तीसरा अपना वृत्तान्त लिखते हैं कि एक पुत्र उनको बड़ी प्रार्थना से प्राप्त हुआ उसको दुःख हुआ कि रड़ता था एक दिन लाला गुमानी लाल भाषांतर लिख रहे थे कि रोने की धुन अपने घर में सुनी उठ कर भीतर गये देखा कि लड़का ज्ञानवेटी रुदिल धर्ती पर पड़ा है और माता उसकी रोती है उसने शोक की पीड़ा से क्रोध भरी बातें कहीं और पोथी के ऊपर भी एक बात कठोर मुखसे निकल गई और लाला को विश्वास दृढ़ इस पोथी पर था इस हेतु वचन कठोर नहीं सहि सके और कहा कि पोथी को इस लड़के के शिर पर रख कर देखो कि भगवत् भक्तोंका और इस पोथीका कैसा प्रताप है उसने पोथी जो लड़के के शिर पररखी मानो प्राण शरीर में डाल दिये तुरन्त लड़का उठ बैठा और फेर वह दुःख उसको न हुआ प्रयोजन कहने का यह कि जो कुछ महिमा और प्रताप और बड़ाई इस पोथी की लिखी जावै वह लघु से लघु है और कदापि आश्चर्य के योग नहीं क्योंकि अब इस पोथी की कृपा से संसार

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

के आवा गमन के दुःख दूर हो जाते हैं और दुःख संसारी क्या वस्तु है—इति मंगला चरण॥

अथ भक्त माल॥

रस के भेद का वर्णन॥

मंगला चरण समाप्त होगया—परंतु जो चौबीस सिद्धा लिखी जायंगी उनका सम्बन्ध रसों से है और मूल भक्तमाल में पांच रस भगवत् भक्ति के संयोगी लिखे हैं परंतु किसी तिलक मूल में स्वरूप रसों का और जड़ लिखी कहीं यों सो निर्णय करके लिखता हूं जानि लेा जड़ रसों की वेद श्रुति है॥ रसोवैसः॥ यही श्रुति है अर्थ इसका यह है कि ईश्वर परमात्मा स्वरूप और अर्थ रस के यह हैं कि एकाग्रचित्त की वृत्ती जिस आनन्द के स्वाद को चख कर सुख में डूब कै बेसुध होजाय तात्पर्य यह कि सच्चिदानन्द घन परब्रह्म अपने स्वामी को जो स्वरूप ध्यान में साक्षात् कार हुआ उसमें वह चित्त की वृत्ती दृढ़ हो जाय वह रस है फिर उसी का दूसरा अर्थ है कि जो स्वरूप भगवत् का शृंगार अथवा वात्सल्य वो सखा इत्यादि रसों की सामग्री से कि वह सामग्री सब अपनी जगहपर लिखी जायंगी भक्तोंके हृदय में प्रत्यक्ष हुआ और उस स्वरूप में चित्त की वृत्ती दृढ़ हो जाय उसको रस कहते हैं और कोई कोई रस भेद के वर्णन करने वालों ने जो वह स्वरूप जो हृदय में साक्षात् कार हुआ उसका नाम भाव लिखा और उस भाव में मन की वृत्ती दृढ़ हो जाने को रस निश्चय किया सो वह रस एक और व्यापक पूर्णब्रह्म सच्चिदानन्द घन है उपकरण जो उसके प्रगट होने के अलग अलग हैं इस हेतु पृथक् पृथक् नाम हुए वास्तव में वह रस एक और व्यापक है जिस प्रकार एक मट्टी के बहुत प्रकार के घट अलग अलग नाम और स्वरूप के होते हैं परंतु मट्टी सबमें एकही और व्यापक है जैसे पानी में जैसा रंग मिलाया जावे वैसही दिखलाई देने लगता है परंतु पानी का रंग कई प्रकार नहीं इसी भांति वह रस जिस जगह सौंदर्यता और आभूषण और सुकुमारता और कटाक्ष इत्यादिक के अनुकरण सहित प्रत्यक्ष हुआ उसको शृंगार कहते हैं और जहां शूरता व बल व शस्त्र व उत्साह इत्यादिक के अनुकरण सहित प्रगट हुआ उसको वीर रस कहते हैं इसी प्रकार दूसरा अनुकरण वात्सल्य और सख्य इत्यादिक के पृथक् पृथक् हैं अर्थात् रस एक है अनुकरण के विरोध के कारण से अनेक नाम हुए अब एक शंका यह

CC-0. Digitized by eGangotri: Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

प्रकट भई कि प्रथम तो चित्त की दृढ़ वृत्ति को रस लिखा और फेर रस को व्यापक सच्चिदानन्द ईश्वर वर्णन किया दोनोंमें ठीक क्या है सो बात यह है कि रस भगवत् रूप व्यापक है चित्त की दृढ़ वृत्ति को जो रस लिखा तो हेतु यह है कि जैसे कहने में आता है कि जीव का अहार जीवन नहीं है सो वास्तव में अहार जीवन नहीं परंतु जीवन का अनुकरण वली है इसी प्रकार वह दृढ़ वृत्ती अनुकरण दृढ़ इसका है और उसी को रस कहा जाता है रसों की संख्या में आपुस में शास्त्रों में विरोध है शृंगार उपासक कहते हैं कि आनन्द स्वरूप केवल शृंगार से प्राप्त होता है, दूसरे रस व्यर्थ हैं उत्तर यह है कि जो मूल आनन्द का शृंगार ही होवे तो व्याघ्र वे मेंढ़ा वो गज आदि की लड़ाई देखने और दूसरा ऐसे काव्यों से जीवन का शृंगार से सम्बन्ध नहीं आनन्द होना चाहिये ओज शास्त्र वाले आठ रस कहते हैं शांत रस वर्णन नहीं करते हैं रूप निषद शास्त्र वाले शांत रस को मूल वर्णन करते हैं वो दूसरे रसों को उस की शाखा बतलाते हैं साहित्य शास्त्र वाले कि वह शास्त्र प्रेम वो काव्य वो रसों भेद आदिक का है सो नव रस इस विवर्ण से कि शृंगार हास्यकरुण रौद्र वीर भयानक वीभत्स अद्भुत शांत कहते हैं वो भगवत् उपासक किसी की हानि नहीं कहते परंतु उपासना के योग्य संपूर्ण उन नौ रसों में से दो रस एक शृंगार दूसरा शांत वो तीन रस अधिक उसमें एक सख्य दूसरा दास्य तीसरा वात्सल्य सब लेकर पांच रस अंगीकार करते हैं यद्यपि सब रसों के अवलम्ब से भगवत् का चिंतवन होसक्ता है क्योंकि भगवत् सब रसों में व्यापक हैं परंतु उपासना को लाने योग्य केवल पांच रस अंगीकार करे तो कारण यह है कि उन पांचों रसों को भगवत् के शीघ्र और निश्चय प्राप्त हो जाने में विशेषता है दूसरे रसों से ऐसी शीघ्र भगवत् की प्राप्ति नहीं और कोई कोई उन नव रसों में जैसे भयंकर और वीभत्स कोई एक ऐसे हैं कि कोई उपासक उन रसों के अवलम्ब से उपासना नहीं करता हिरण्य कशिपु और रावण और कंस इत्यादिकों को जो उस रूपसे भगवत् ने उद्धार करके मुक्तिदी इस हेतु रसों में उनको भी गिनते हुई सिद्धान्त उपासना के सम्बन्धी पांच रस हैं और इस ग्रंथ में वह पांचों रस निष्ठा नाम करके लिखे जावेंगे वो दूसरी निष्ठा सब उन रसों के अंगभूत हैं कोई पुरुष किसी भाव और किसी प्रकार और किसी विश्वास और किसी रीति और निष्ठा से भगवत् आराधन करे रस व्यतिरिक्त नहीं अब जो बातें कि संयुक्त सम्बन्धी सब रसों की हैं वह तो वहां लिखी जाती हैं और जो निज रसकी सम्बन्धी हैं सो अपने प्रयोजन के स्थान पर लिखी जावेंगी परंतु अच्छे प्रकार समझने के हेतु दृष्टांत सब शृंगार रस के सम्बन्ध के यहां लिखे जावेंगे अब जानना चाहिये कि वह रस जिस

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

का ऊपर वर्णन हुआ सो चार सामग्री से प्रकट होता है एक तो विभाव दूसरा अनुभाव तीसरा सात्विक चौथा व्यभिचारी अर्थात् प्रिय वल्लभादि रूप विभाव उसको कहते हैं जो कारण और मूल उस रस के प्रकट होने का हो सो उसके दो प्रकार हैं एक आलम्बन विभाव दूसरा उद्दीपन विभाव सो आलम्बन विभाव दो प्रकार का है एक आश्रयालम्बन जो रसके रहने का स्थान अथवा रस के उत्पत्ति का स्थान सो वह ध्यान करने वाला अर्थात् भगवत् भक्त और स्नेहासक्त अर्थात् आश्रित हैं दूसरा विषयालम्बन अर्थात् मूर्ति शृंगार रस कि जिसका ध्यान किया जाय तात्पर्य्य भगवत् स्वरूप वो जिस पर स्नेह होय वो दूसरा उद्दीपन सो चार प्रकार का है प्रथम गुण यह कि सौंदर्य्य वो स्वरूप की लावण्यता वो नव योवन वो मन मोहन किशोर अथवा बालक स्वरूप वो सुन्दर बोलन वो प्रीति इत्यादि दूसरा चेष्टा यह कि क्रांति वो झलक वो सुकुमारता का गर्व वो हाव भाव कटाक्ष वो सुकुमारताई इत्यादि तीसरा अलङ्कार यह कि वस्त्र की सज वो आभूषण वो सजावट इत्यादि चौथा तटस्थ यह कि अतर पान फूल इत्यादि यह विभाव का वर्णन होचुका दूसरी सामग्री अनुभाव यह कि स्नेह करने वाला वो जिस पर स्नेह है दोनों के एकत्र होने से जो बात प्रगट में आवे और उस कारण से वह रस प्रतक्ष होवे वह अनुभाव है यह कि परस्पर मिलना गल बाहीं बैठना और खेलना एक शय्या पर लेटना हंसी ठट्ठा चुम्बन वो आलिंगन इत्यादि यह अनुभाव है अब रही सामग्री तीसरी वो चौथी जो सात्विक वो व्यभिचारी उनका वृत्तान्त यह है प्राचीन लोगों ने उन दोनों की प्रीति करने वाले की चंचल दशा समुझ करके बल व्यभिचारी एक नाम लिखा सो उसका निर्मूल कुछ वर्णन नहीं है जैसे भरतरि ऋषीश्वर ने अपने सूत्रों में लिखा है परन्तु नवीन लोगों ने यह सूक्ष्मता निकाली कि जो एक दशा सब रसों में व्यापकता रखती होय उसका नाम सात्विक है और जो दशा ऐसी है कि एक रस में तो व्यापक होती है और दूसरे रस में व्यापक नहीं होती वह व्यभिचारी है कि दश रूपक इत्यादि रस भेद के शास्त्र में सात्विक वो व्यभिचारी पृथक् २ लिखे हैं सो सात्विक उसको कहते हैं कि अपने प्रिय वल्लभ को देखकर अथवा उसकी ओर से दुःख सुख के पहुंचने से जो मन की वृत्ती को एक दशा प्राप्त हो और वह दशा आठ है और जिस प्रकार सामग्री प्रथम वो द्वितीय जैसे विभाव और अनुभाव सब रसों के अलग २ हैं तिस प्रकार यह सात्विक जो सामग्री तीसरी सब रसों को भिन्न भिन्न नहीं एकही भांति व्याप्त सब रसों में है प्रथम दशा का नाम स्तंभ है ज्यों का त्यों रह जाना दूसरी दशा प्रलय नाम मूर्छा तीसरी रोमांच अर्थात् शरीर पर रोम खड़े होजाने चौथी दशा स्वेद पसीना हो आना पांचई विवर्ण मुख का रंग और

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

होनाना छठईं कम्प शरीर कांपना सतईं अश्रु आंसू बहना आठईं स्वर भंग शब्द में भेद पड़ जाना और यह भी ज्ञात रहै कि यह आठो दशा और एक दशा सरन कि वह व्यभिचारी के वर्णन में लिखी जायगी सो अत्यन्त हर्ष वो अत्यन्त शोक अथवा वियोग वो संयोग दोनों अवस्था में एकही भांति बराबर होती हैं और नो दशा सब रसों में बराबर व्यापक नहीं होती है इस हेतु से उसको व्यभिचारी की सञ्चञ्चनी में ज्ञाता लोगों ने गिनती करी है और सामग्री चौथी व्यभिचारी उसको कहते हैं कि जो दशा रस के दृढ़ होने के पहिले अथवा पीछे प्रकट होकर फिर जाती रहै सो दशा तेतीस हैं और सब रसों में बराबर उन सब की व्यापकता नहीं है ॥ प्रथम ॥ निर्वेद ॥ निर्वेद उसको कहते हैं कि प्यारे का वियोग अथवा दूसरे के साथ अपने प्यारे की प्रीति अथवा कोई बात विपरीत समझ लेने का दुःख ॥ १ ॥ ग्लानि ॥ उसको कहते हैं कि बल घट जाना और उमंग का न रहना ॥ २ ॥ शंका ॥ यह कि प्यारे के मिलने में किसी विघ्न के संदेह का ध्यान होना ॥ ३ ॥ श्रम ॥ यह कि पंथ चलने से अथवा संभोग के पीछे थक जाना ॥ ४ ॥ धृति ॥ मन की संतुष्टता ॥ ५ ॥ जड़ता ॥ यह कि वियोग इत्यादिक की व्यथा के दुःख से ज्यों का त्यों रह जाना ॥ ६ ॥ हर्ष ॥ यह कि प्यारे को देख कर अथवा उससे वार्त्ता लाप होने से कै कोई दूसरे हेतु से हर्षित होना ॥ ७ ॥ दीनता ॥ यह कि बेचैनी से मन छोटा होजाना और वियोग होने को न सह सकना ॥ ८ ॥ उग्रता ॥ यह कि अवज्ञा जो प्यारे से हुई इस कारण क्रोध का आजाना ॥ ९ ॥ चिन्ता ॥ चिन्ता यह कि प्यारे के मिलने के निमित्त सोचना ॥ १० ॥ त्रास ॥ यह कि अचानक किसी भय का आजाना ॥ ११ ॥ ईर्षा ॥ अपने प्यारे में दूसरे की प्रीति का साझीपना न सहि सकना ॥ १२ ॥ अमर्ष ॥ यह कि प्यारे ने अवज्ञा जो की वा उसका दुःख होना और न सहारना इस दशा में और नम्रई दशा में भेद बहुत है १३ ॥ गर्व ॥ यह कि अपने से दूसरे को अधिक न जानना ॥ १४ ॥ स्मृति ॥ यह कि अपने प्यारे को अथवा उसके गुणों को स्मरण करना ॥ १५ ॥ मरण ॥ यह कि मरने का उपाय करना अथवा मर जाना ॥ १६ ॥ मद ॥ यह कि हर्ष वो गर्व के एकत्र होने से जो दशा होती हो अर्थात् कार्य्याकार्य्य का बिबेक न करना ॥ १७ ॥ निद्रा ॥ यह कि बाहर के अनुसंधान से अन्तर की वृत्ती में एकाग्र चित्त का होना ॥ जैसे स्वप्न ॥ १८ ॥ सुप्ति ॥ यह कि घोर निद्रा ॥ १९ ॥ अवबोध ॥ यह कि सावधानता के सुधि भये पीछे बाधि होनी ॥ २० ॥ व्रीड़ा ॥ यह कि लज्जा ॥ २१ ॥ अपस्मार ॥ यह कि दुःख और त्रासा और अन्यसे मन को ताप होनी ॥ २२ ॥ मोह ॥ यह कि मन के डग मग और दुःख वो भय में जो अनवधानता होय ॥ २३ मति ॥ यह कि आदि सिद्धांत जो पथ है

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

विचार करके निश्चय कर लेना ॥ २४ ॥ आलस ॥ [illegible]
की अनवधानता ॥ २५ ॥ आवेस ॥ यह कि मन का [illegible]
अचानक पगट हो जाना और इस हेतु मन का डग [illegible]
वितर्क ॥ यह कि संदेह से नाना प्रकार का ध्यान होना ॥ २७ ॥ [illegible]
त्या ॥ यह कि हर्ष अथवा शोक के कारण करके अपने जाने हुए को [illegible]
ना ॥ २८ ॥ व्याधि ॥ यह कि वियोग में शरीर से दुखी होजाना ॥ २९ ॥
उन्माद ॥ यह कि जड़ चैतन्य को बराबर जान लेना अर्थात् मतवारा
जैसे ॥ ३० ॥ विषाद ॥ यह कि जो अपने मनको विरुद्ध है उसके दूर करने
का उपाय दिखाई न पड़ना ॥ ३१ ॥ औत्सुक ॥ अपने प्यारे के मिलने में
विलम्ब का न सहारना ॥ ३३ ॥ चपलता ॥ यह कि मित्र और शत्रु के
कारण से मनका स्थिर न होना ॥ इति ॥

वर्णन चारों सामग्री का हो चुका अब स्थाई भाव उसको कहते हैं कि
जो रस अपने सजाती वो विजाती से दूर न हो सकै और बराबर अपनी
दशा पर बना रहै वह स्थाई भाव है रसों के वर्णन के आरम्भ में जिसकी
चरचा हुई सजाती यह कि रस से रस का मिट जाना जैसे लड़के हंसी
और ठट्ठा अर्थात् हास्य रस में मग्न हैं कि किसी बड़े ने क्रोध अर्थात्
रौद्र रस से रस हंसी को निवृत्त कर दिया और विजाती यह कि जैसे
लड़के हास्य रस में मग्न हैं फिर रोटी खाने चले गये और वह रस निवृत्त
होगा तात्पर्य यह कि रस से रस निवृत्त न हुआ दूसरी वस्तु से निवृति
हुआ अभिप्राय यह कि किसी अभिघात और किसी प्रकार पर मन भगवत्
स्वरूप के ध्यान और चिंतवन से न हटै वह पदवी अन्त की और दृढ़ भाव
है इति ॥

अब तुलसी राम की प्रार्थना ॥ हे रघुनन्दन स्वामी कृपा सिंधु दीन
वत्सल हे करुणा कर हे पतित पावन अधम उधारण महाराज मैं कैसा अधम
और मति मन्द हूं कि आप तो अनुक्षण वो सर्व काल स्पर्द्धा वो कपट वो क्रोध
वो अभिमान वो मिथ्या बोलना वो हिंसादिक सहस्रों अपराध में प्रवृत्त
रहता हूं भूलकर भी आप की ओर सावधान नहीं होता और दूसरे लोगों
के कर्म वो आचरण पर व्यंग वो दंश करके उनके निमित्त शिक्षा लिखता हूं
मेरा यही हाल है ॥ ५६ ॥ आप पाप के नगर बसावत सहि न सकत पर
खेरो ॥ जो यह विनती करूं कि कुछ मेरे ऊपर भी कृपा की दृष्टि हो तो
कौन मुख लेकर निवेदन करूं कि एक बात भी अच्छी नहीं है जो विनती
करूं तो दूसरा उपाय नहीं सूझता सो अब एक बात दृष्टि में आई है कि
सब पापिन में अनुपमान वो अद्वितीय हूं सो राज सभा में सब प्रकार के
कला के बड़े प्रवीणों का प्रयोजन होता है इस निमित्त जो यह गुण मनो
वृत्य नुकूल होय तो संक्षेप यह प्रार्थना अंगीकार होवै कि कोई देह में

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

मेरा जन्म हो और नर्क में जाऊं अथवा स्वर्ग में परंतु यह स्वरूप आपका मेरे मन में बसा रहै सरयू के निकट अयोध्या निज धाम में जो राजद्वारी और उसमें निज सभा का मंदिर बना हुआ है जिस का द्वार और प्रकार वो भूमि भांति भांति के मणि गण से जटित है और तहां एक ऐसा मण्डप स्वर्ण सूत्र का है कि जिसकी झालरों में दिव्य स्वर्ण सूत्रों के गुच्छे और मोती टेके हुए हैं उसके नीचे रत्न सिंहासन है कि जिसके जड़ाऊ मणि-गण को देखकर नेत्र को चकचौंधी होती है उस सिंहासन के ऊपर आप इस शोभा से कि किशोर अवस्था है और मुख की सुन्दरता से भी सुन्दरता पाती है कि किरीट मुकुट धारण किये हुए कानों में कुण्डल और उस में श्री महारानी जीने फूलों के गुच्छे गूंथ कर डाले हैं बड़े सजावट के साथ दिव्य वस्त्राभरण जगर मगर की पहिरे हुए और उस पर माला मणि गण और फूलों की पड़ी हुई मोतियों के कंठे गले में हाथों में कड़े और पहुंची अंगुलियों में अंगूठी और चरण कमलों में घुंघरू और कड़े विराजमान और सोभित हैं और ऐसीही शोभा के साथ श्री जनक नन्दिनी अखिल ब्रह्मांडेश्वरी वाम अंग शोभायमान हैं और छलकमुख और आभूषण का परस्पर आभूषण वो मुख पर जो पड़ता है तो ऐसी एक धार वो शोभा की छटा है कि जो वहां प्राप्त है सो आपने को भूलकर सुख में मग्न हो रहे हैं वशिष्ठ जी राज तिलक करते हैं भरत लक्ष्मण शत्रुघ्न जी छत्र चंवर धनुष बाण इत्यादिक लिए हुए और हनुमान जी सन्मुख हाथ जोड़े खड़े हैं और शिव ब्रह्मादिक देवता और राजा सब देश देश के भेंट लिये हुए प्राप्त हैं और दूसरी सामग्री वो साज राज तिलक का जो भक्तों के मन में समाया है सो प्राप्त है और यह दास भी अपने ओहदे उपानत की सेवा पर प्राप्त था ॥

दोहा ॥

कामिहि नारि पियारि जिमि लोभिहि प्रिय जिमि दाम ॥
ऐसे होय कै लागहू तुलसी के मन राम ॥ १ ॥

आरम्भ निष्ठों की प्रथम धर्म निष्ठा ॥

प्रथम श्री कृष्ण स्वामी के चरण कमलों के अंकुश रेखा को दण्डवत् है कि जिस का ध्यान करने से मन जो मतंग गज के समान है तुरंत वश में होजाता है और भगवत् के मीन अवतार को दण्डवत् है कि जगत की शिक्षा के निमित्त राजा श्रुतदेव को धर्म उपदेश किया और अपनी माया उसको दिखला कर रक्षा करी वेद और सूत्रों के अनुकूल जो आचरण

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

शुभ कर्म लिखे हैं वह धर्म है और उसके प्रतिकूल अधर्म है तो अंगीकार करना आचरण शुभ और छोड़ना कर्म निन्दित वेद की आज्ञा के अनुरोध अत्यन्त उचित है और जो कोई वेद आज्ञा विरुद्ध कर्म करते हैं सो नर्क गामी होकर अति कठिन यातना का दुःख भोगते हैं इसके ऊपर चौरासी लक्ष शरीर में जन्म होने का ऐसा कठिन दण्ड है कि वर्णन नहीं होसक्ता कोई से कि नर्क से उद्धार होने का तो काल का प्रबन्ध है परन्तु आवा गमन जन्म मरण के दुःख से छूटने का कोई प्रबन्ध निबन्ध नहीं इस हेतु कि आवा गमन रहट के चक्र की भांति है कि इस योग बस मनुष्य शरीर मिलता है वो संसार समुद्र तरने के निमित्त नौका के सदृश है जो इस शरीर को पाकर अपने छूटने का उपाय किया तो बड़ा भाग है नहीं तो फिर उसी दुःख में बद्ध होता है कर्म शास्त्र की आज्ञा में युक्त रहना सीढ़ी के सदृश है कि बीध यो बिना परिश्रम उत्तम पद को पहुंच जाता है और जो कोई इससे निरास हैं सो सदा उद्धार से निरास हैं कोई कोई मनुष्य ऐसे देखे कि कर्म करने में तो प्रीति नहीं और उत्तम पद की बातें बनाते हैं ऐसे लोग कदापि सिद्ध पदको नहीं पहुंचेंगे विचार करना चाहिये कि आप भगवत् वेद आज्ञा वो कर्म शास्त्र के प्रकाश वो प्रवृत्ति कारण के निमित्त अवतार लेता है जो कोई बिना कर्म करने के उद्धार चाहे यह कब हो सकता है वो जब आप भगवत् ने अपने आपको कर्म करने से निवृत्त न किया और श्री गीता जी में भगवत् का वचन है कि मैं आप कर्म करता हूं जो कर्म न करूं तो दूसरे लोग भी छोड़ देवें तो मैंही जगत का वर्ण शंकर वो नाश करने वाला हो जाऊं श्री रघुनन्दन स्वामी को रावण के विजय किये पीछे यह ज्ञात हुआ कि रावण का जन्म ब्राह्मण वंश में था पाप दूर होनेके निमित्त एक अश्वमेध यज्ञ किया वो कर्म शास्त्र की मर्य्याद से चरण बाहर न रक्खा तो इस मनुष्य की क्या बात है कि बिना कर्म करने के आवागमन के दुख से छुटी पावे जो यह शंका होय कि कर्म तो आप जड़ हैं इस मनुष्य चैतन्य को किस प्रकार छुड़ावेंगे सो उत्तर यह है कि जिस प्रकार नौका जड़ है कैवर्त के हाथ के सहारे से सहस्रों को पार उतार देती है अथवा सीढ़ी जड़ है परन्तु बिना उसके कदापि अटारी पर न जा सका इसी प्रकार कर्म हैं संसार सागर से पार उतारने के निमित्त सहाय होते हैं वो उत्तमपद को पहुंचाय देते हैं जो यह शंका होय कि जो शुभ कर्म करेंगे तो उनके भोगने के निमित्त शरीर अवश्य होगा वो जब कि शरीर हुआ उसको एक दिन मृत्यु आवेगी और इसी प्रकार जन्म मरण में रहेंगे शुभ कर्म से छूटने के प्रकार की रचना क्या होगी सो वृत्तान्त यह है कि शुभ कर्म दो प्रकार के हैं एक सकाम कि जो किसी कामना के सिद्ध के निमित्त करा जावे वह

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

तो अवश्य आवागमन के कारण होते हैं काहे से कि जब उस कर्म का फल इति श्री होगया तब स्वर्गादिक से इस्थी पर जन्म लेता है दूसरा निष्काम कि वह उद्धार वो छूटने का कारण है निष्काम के अर्थ यह कि बिना किसी कामना के करने में आवै तात्पर्य यह कि जो कर्म करै तो फल उसका कदापि न चाहै भगवत् के अर्पण कर देवै क्योंकि भगवत् अच्युत वो अनन्त वो अविनाशी हैं इस कारण से वह फल जो भगवत् को अर्पण किया गया सो भी अनन्त वो अच्युत वो अविनाशी हो जाता है और उसी प्रसन्नता से भगवत् अपना स्वरूप उस मनुष्यके हृदय में प्रकाश करतो है अर्थात् भगवत् चरणों में प्रीति होजाती है जिस प्रकार कोई कंगाल मनुष्य कि महाराजाधिराज की सेवा में कोई वस्तु दो चार पैसे की ले जावे तो राजा उसको उस वस्तु का मोल विचारिकै अथवा उस मनुष्य की मर्य्याद के योग्य का द्रव्य नहीं देता है किंतु अपनी ओर देख कर देता है और उसका दरिद्र दूर कर देता है उसके अलग लोगों की रीति है किसी ने किसी को कोई वस्तु बिना मोल दी तो उसके हितको मानिकै कार्य्य करदेते हैं इसी प्रकार वह भगवत् कि सब कृतज्ञता की मिति के जानने वालों का मुकुट मणि है सब कार्य्य करदेता है अभिप्राय यह कि जब इस मनुष्य को भगवत् में प्रीति हुई और नित्य के कर्म सहा- यक हुए दिन दिन भगवत् की प्रीति बढ़ावते हुए ऐसे अनन्त हो जाते हैं कि हृदय निर्मल होकर भगवत् की भक्ति दृढ़ हो जाती है और उस भक्त की कृपा से कृतार्थ होकर भगवत् पदको पहुंच जाता है और फिर जन्म नहीं होता है और फिर यह कर्म शास्त्र भगवत् की आज्ञा है और रीति है कि जो कोई सेवक अपने प्रभु के आज्ञा पालन में तत्पर रहता है तो वह प्रभु उस भृत्य पर प्रसन्न होकर सब मनोर्थ सिद्ध करदेता है तो भगवत् कि जो सब प्रभु लोगों का प्रभु है जो सेवक उसकी आज्ञा को पालन करैगा उस पर प्रसन्न होकर क्यों नहीं कार्य्य सिद्ध करदेगा और क्यों नहीं आवागमन की पीड़ा से छुड़ावेगा और चमत्कार यह कि निष्काम कर्मों के कारण से संसारी कामना भी आप भगवत् करदेते हैं कि प्रह्लाद अर्जुन युधिष्ठिर ध्रुव इत्यादि भक्तों की कथा से प्रगट है अब शंका यह भारी हुई कि भला शुभकर्म तो इसी हेतु से रहे कि भगवत् में मन मिले परन्तु अशुभ कर्म भी तो इस मनुष्य से हो जाते हैं वह किस प्रकार जावेंगे सो बात यह है कि कर्म दो प्रकार के हैं एक अज्ञात दूसरा ज्ञात सो अज्ञात कर्म तो नित्य के सन्ध्या वो बलि वैश्व देव श्राद्ध वो अध्यागत पूजन इत्यादिक से दूर हो जाते हैं और वही भगवत् को प्रसन्न कर अनन्त फल के देने वाले होते हैं और ज्ञात कर्म रहा सो उनका हाल प्रगट है कि जिसकी निष्ठा शुभ कर्मों में है उस से महा पातक होताही नहीं

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

और जो कोई दैवयोग हो भी गया तो जो भगवत् शुभ कर्म का स्वामी होता है वह ही अशुभ कर्मों के पातक को मार्जन कर देता है सो वेद श्रुति प्रगट लिखती है और न्याय से भी जानने योग्य है कि जिसने शुभ कर्मों का तो फल भगवत् को दिया अशुभ कर्म उसके निमित्त क्यों रहैंगे इस व्यौहार से काम और निष्काम में एक दृष्टान्त स्मरण हो आया कि जो कोई चाकर या ठेकेदार किसी का होता है और उससे कुछ वस्तु की हानि हो जावे तो उसीके ऊपर देन उतरता है और जो घरके दासी पुत्र से हानि हो जावै तो स्वामी पर उतरता है दास से कुछ सम्बन्ध नहीं तात्पर्य्य यह कि सकाम कर्म करने वाला चाकर ठेकेदार के सदृश है और निष्काम कर्म करने वाला जैसे दासी पुत्र सिद्धांत यह कि निष्काम कर्मों का करना वेद की आज्ञा के अनुसार उचित है जो ज्ञानी और भक्त अगले समय में हुये और जो कि अब हैं वो जो आगे होंगे केवल कर्मों के प्रभाव से वह पद उत्तम उनको प्राप्त हुआ औ होंगे जैसा कि भगवत् गीता में लिखा है कि कर्मों ही के प्रभाव से जनक इत्यादि को मन की स्थिरता सिद्धि भई फिर लिखा है कि बिना कर्म करने के कदापि नहीं छूटते सर्व शास्त्र इस बातमें युक्त हैं कि बिना कर्म उद्धार नहीं और वेद आज्ञा में बुद्धि से तर्क करके कहना कि यह वेद आज्ञा है सो इस लाभ के हेतु होगी यह बात वर्ज्जित है और यह बात स्मृति में भी लिखी है परन्तु प्रयोजन पाय करके लिखा जाता है कि विधि निषेध जो हैं वेदाज्ञा सो यद्यपि पर लोक के हेतु हैं तथापि संसार के लाभ को भी विशेष हैं जैसे प्रभात का उठना वो स्नान करना माता पिता गुरु को वन्दना सत्य बोलना सुहृदता मीठे वचन बिवेकी जनन का संग करना विद्या पढ़ना और किसी को बुरा न कहना जिसका लोन खाइये तिस पालन करने वाले की सेवा निश्छल धर्म से करना मित्र से कपट न रखना वो जो कोई कुछ विद्या सिखलावै वो शिक्षा करिके भगवत् की ओर लगावै तिस को गुरु जानना वो भगवत् भजन इत्यादि सहस्रों प्रकार के शुभ कर्म का अंगीकार करना वो मिथ्या बोलना चोरी परस्त्री गमन हिंसा जूवा का खेलना मद्यपान असाधु जन का संग मिथ्या उत्पात कपट मिताई मूर्खता अकृतज्ञता इत्यादि का त्याग करना वो नदी में नहाते हुए पानी बरसते में चलते हुए बार बनवाते हुए दूसरी ओर चित्त न करना बासी अथवा गरिष्ट किसी का जूठा वो तीक्ष्ण वो खट्टा वो क्षार इत्यादिक का न खाना स्निग्ध सुस्वादु मिष्ट कोमल रंग अहार का भोजन करना रातको पहाड़ पर न चलना ऐसे२ सहस्रों आज्ञा धारण करने के योग्य हैं कि इस संसार में कैसे लाभ के देने वाले हैं इति कोई कर्म ऐसे हैं कि जो नित्य उस कर्म को न करै तो मनुष्य अपने ज्ञाती से पतित होजाते हैं परंतु ऐसी दुर्भाग्यता ने बलबांध रक्खा है

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

कि कदापि उस ओर चित्त की वृत्ती नहीं होती बरु बहुत लोग यह कहते हैं कि अजी साहब शास्त्र के अनुसार किससे कर्म होसकता है पाय धरने का भी ठिकाना नहीं कहो न कहो का ब्यौहार है सो समझ में आता है कि उन लोगों को उस आज्ञा का पालन तो अलग रहा सुनने का भी संयोग न हुआ काहे को जो आज्ञा विधि निषेध हैं ऐसी सहज हैं कि सब कोई उसपर चल सकै और जहां कोई ऐसी भी विधि की गति लिखी हैं कि वह अति कष्ट से साध्य होय तो उसी के समीप ही दूसरी रीति की आज्ञा ऐसी लिखदी है कि सब कष्ट सुलझ जावैं जैसे दीपक का तेल हाथ में लगजाय तो इतनी मट्टी लगा कर धोने को लिखा है कि बड़ा कष्ट है तहां हीं यह बात लिख दी हैं कि धरती से हाथ रगड़ कै धो डालै बहुत जगह कि पाप के प्रायश्चित्त के निमित्त चान्द्रायण व्रत लिखते हैं और उसी जगह यह भी लिखा है कि जो न होसकै तो कुछ नहीं तो तीन दिन अथवा एक दिन का व्रत करै तात्पर्य यह है कि शास्त्राज्ञा सब ऐसी हैं कि सहज से हो सकैं परंतु प्रथम तो समझना और फिर करने पर फेट बांधना कठिन हो रही है और यह भी तो अनुमान करना योग्य है कि जो अंगीकार उन आज्ञाओं का न हो सकने के योग्य होता तो शास्त्र में लिखी ही काहे को जातीं बहुत सी जाती जो नास्तिक और म्लेच्छ कहे जाते हैं तो कारण यह है कि वे लोग वेद की आज्ञा को नहीं मानते और विरुद्ध आचरण हैं तो जो कोई वेद शास्त्र की आज्ञा पर प्रवृत्ति न करै सो नास्तिक और म्लेच्छ हैं और जो कोई वेद शास्त्र को मिथ्या कहते हैं अथवा अन्य सामान विद्या के सदृश समझते हैं उनकी दुर्गति होने में तो कुछ संदेह ही नहीं है और जो नर्क स्वर्ग को मिथ्या कहते हैं वह भी निस्संदेह दुर्गती हैं यह सब वचन स्मृति के वार्ता करके लिखे गये हैं अब कथा वो नाम उन महात्मा लोगों का संक्षेप से लिखे जाते हैं कि जो इस निष्ठा में दृढ़ होकर और भगवत् भक्तों को पाकर भगवत् पारायण हुए ॥

दोहा ॥

रूप राशि आनन्द घन गौड़ श्याम कमनीय ॥
जुगल किशोर बसो सदा जन प्रताप के हीय ॥ १ ॥

कथा राजा हरिश्चन्द्र ॥

यह राजा हरिश्चन्द्र सूर्य वंशी अयोध्या के राजा बड़े प्रतापी हुए जिनकी कथा शास्त्र वो पुराण में प्रसिद्ध है विश्वामित्र को यज्ञ की दक्षिणा में राज्यादिक सब देकर तीन भार सुवर्ण के हेतु राजा वो रानी कुंवर रौतास किसी नगर में बिकने को गये वह भी नगर राजा का था विश्वामित्र ने

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

वशिष्ठ जी की शुचुतासे वो धर्म की परीक्षा के अर्थ न अंगीकार किया राज्यके अंतर्गत वह राजा से कल्पित ठहराया वशिष्ठ जीने राजा को सैन से जनाया कि काशी के राज्य में नहीं है वहां जाओ राजा काशी जी में चांडाल के यहां बिके उसने मृतक घटियां पर वस्त्र वो कर लेने की सेवा सौंपी रानी वो कुंवर एक ब्राह्मण के यहां बिके विश्वामित्र ने तब सांप होकर कुंवर सौतास को काटा रानी रोदन करती हुई मृतकको जलानेके हेतु घाट पर गई राजा ने वहीं कर के निमित्त रोका रानी ने बहुत करुणा बचन सुनाया पर राजा धर्म में दृढ़ था ऐसी दशा में भी धर्म न छोड़ा रानी के पास कुछ नहीं था कि कर दे रातको गंगा किनारे बैठी रही तब विश्वामित्र काशीराज के लड़के को मार कर रानी के पास रख के प्रभात को काशीराज से जनाया कि गंगा किनारे एक स्त्री रहती है लड़कों को खाती है उसी ने यह कर्म किया होगा लोगों ने उस लड़के को मृतक स्त्री के पास पाया काशीराज ने बिना बिचारे उस चांडाल को स्त्री के बध करनेकी आज्ञा दी उसने राजा हरिश्चन्द्र के पास बध करने के हेतु भेज दिया राजा आज्ञा सुनतेही तुरन्त तरवार खींच कर उठा चाहा कि रानी के गले पर मारे कि धरती कांपने लगी वो आकाश से हाय हाय शब्द हुआ ब्रह्मा बिष्णु महेश और सब देवताओं ने राजा का हाथ पकड़ लिया भगवत् ने प्रसन्न होकर कहा बर मांग राजा ने कहा भक्ति छोड़ दूसरे की चाह नहीं भगवत् ने भक्ति बरदान देकर कुंवर सौतास वो काशीराज के लड़के को जिलाकर अयोध्या के राज्य करने की आज्ञा दी संपूर्ण बय क्रम न्याय अरु भक्ति में व्यतीत कर और भगवत् भक्ति की रीति में प्रजा लोगों को प्रवृत्त करके अंत समय कुंवर सौतास को राज्य देकर परमधाम को गया अब बिचारना चाहिये कि धर्म की दृढ़ता वो निबाह कौन कौन पदार्थ दुर्लभ को नहीं देता है ॥

कथा राजा बलि की ॥

ये राजा बलि विरोचन के पुत्र यो प्रह्लाद के पौत्र परम भगवत् भक्त वो प्रतापी हुए जिसके यहां आप भगवत् ने भीख मांगी वो अपनी पीठ को न्याय दिया वो अब तक जिसके द्वार पर आप भगवत् वामन रूप से खड़े रहते हैं कथा लोक में उनके यश की प्रसिद्ध है यहां ध्यान करके देखना चाहिये कि भगवत् ने अपने भक्त से छल वो कपट किया तिसके हेतु अपने उस रूप को यह दण्ड दिया कि राजा के द्वारपाल होगये तो भला और कोई भक्तों के साथ छल वो कपट करैगा तिसको न जाने कैसा दण्ड करैगा ॥

कथा दधीच की ॥

राजा दधीच ज्ञानी भक्त परोपकारी ऐसे हुए कि अपने अस्थि को देवता लोगों को दे डाला और इन्द्र ने बज्र बनवा कर उसी से वृत्रासुर का बध

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

करि सुख पाया कथा प्रसिद्ध है अब बिचार कर लेना चाहिये कि जो लोग सिद्ध अवस्था को प्राप्त ये कर्म करने न करने का प्रयोजन कुछ नथा तिनको भी कर्म शास्त्र की आज्ञा पालन में कैसी निष्ठा थी अब हमारी यह गति है कि शास्त्र आज्ञा को पालन करना तो अलग है यह भी नहीं जानते कि कर्म शास्त्र किसको कहते हैं अन्य है॥

कथा दशरथ महाराज की॥

दशरथ महाराजाधिराज परम भागवत धर्म कर्म निष्ठ हुए इनकी बड़ाई वो भाग्य का वर्णन किससे होसक्ता है कि पूर्णब्रह्म भगवत् ने बस होकर जिसके पुत्र होकर बालचरित्र आदिक से आनन्द दिये ये महाराज पहिले जन्म में स्वायंभु मनु थे और शतरूपा उनकी रानी थी तप करिके भगवत् से वरदान मांगा कि आप के सदृश हमारे पुत्र होय वो हमारे जीवन का सम्बन्ध आपके दर्शन से रहै वही दशरथ हुए वे भगवत् आप उनके पुत्र होकर प्रगट हुये अयोध्या जी में राम रूप से नाना प्रकार के चरित्र किये बालमीक ऋषीश्वर ने सौ कोटि श्लोक में वर्णन किये रामचन्द्र महाराजाधिराज के चरित्र तीनों लोक में सूर्य के सदृश व्याप्त वो प्रकाशित हैं केकईरानी को पूर्व वरदान दिया था राजा ने तिस कारण से श्रीरामचन्द्र ने चौदह वर्ष बनबास किया रावणादिक दुष्टों का वध करके अपने यश का सेतु संसार समुद्र में बांधा वो दशरथ महाराज ने रघुनाथ जी के बन गवन होतेही तनको त्याग करके स्वर्गबास किया॥

कथा भीष्मप्रतिज्ञाहृ की॥

भीष्म जी परम भगवत् भक्त रहे और बारह महाभागवतों में उनकी गिनती है इस कर्म निष्ठा में उनको लिखा सो कारण यह कि प्राप्त होने भक्ति वो ज्ञान के भी प्रवृत्ति आज्ञा कर्मशास्त्र का कर्तव्य समझते रहे कि श्राद्ध के समय उनके पिताका हाथ निकला परन्तु हाथ पर पिण्डा न दिया वेदी पर रख दिया और दुर्योधन को लोक से पतित अपने को जान कर युधिष्ठिर की ओर न गये गंगा जी के उदर से उत्पत्ति उनकी है जब गंगा जी स्वर्ग चली गई वो संतनु महाराज बिकल हुए तब योजन सुगन्धा को आप राजा न होने का वाचा प्रबन्ध करके ले आये इसी हेतु अपना विवाह न किया काशी राज की लड़की अम्बा नाम तिसने विवाह नहीं किया परशुराम जी गुरू से लड़ाई का संयोग पहुंचा परन्तु न विवाह किया वो दयालुता यहां तक रही कि युधिष्ठिर महाराज महा भारत में रात को जाकर रोये तब अपने बध का उपाय आप बतलाया तब दूसरे दिन अर्जुन ने उसी रीति से शिखण्डी को बीच में खड़ा करके बान मारे तब शरशय्या पर शयन किया और भगवत् ने अपना प्रण छोड़ कर भीष्म जी का प्रण रक्खा रथ का चक्र लेकर उन पर दौड़े और अपने

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

पिता के आशीर्वाद से मृत्यु उनकी उनके आधीन रही इसी कारण से बावन दिन तक शरशय्या पर रहे और तन त्याग कर श्री कृष्णचन्द्र महाराज को आँखों के आगे देखते परम धाम को पधारे ॥ इति

कथा सुरथ सुधन्वा की ॥

ये दोनों भाई सगे राजा नीलध्वज के पुत्र परम भागवत रहे राजा ने सुधन्वा को बिना विचारे आज्ञा भंग के अपराध का दण्ड मंत्री की चतुरता से दिया तेल को कड़ाह जलते में डलवा दिया तेल ठंढा होगया जैसे प्रह्लाद को गति हुई सोई हुआ फिरि सुधन्वा ने अर्जुन से अश्वमेध के घोड़े रोकने में अत्यन्त युद्ध किया अन्त दोनों भाई खेत आए भगवत् को प्राप्त हुए वो शिर उनका महादेव ने अपने सुरुआल में लिया ॥ इति

कथा हरि दास की ॥

राजा हरिदास परम भक्त हुए धर्म शास्त्र की आज्ञा पर बहुत दृढ़ रहे इस हेतु इस निष्ठा में लिखे गये यह राजा पाटन नगर के जाति राजपूत तोदरमल के पाल राजा सिवि के समान वो दान देने में राजा दधीच के सदृश अपने वचन के पालने में राजा बलि के समान वो भगवत् भक्ति में प्रह्लाद के तुल्य वो रिझवार राजा जगदेव के समान हुए कि वृत्तान्त उसका इस जगह लिखा जाता है कि राजा जगदेव बड़े शूरवीर वो न्याय निष्ठा वाले उदार रहे और रिझवार निष्ठा इतनी रही कि एक नटिनी ने तमाशा राजा के सन्मुख कियः उसके राग वो नाचपर कला इत्यादिक से प्रसन्न होकर कुछ प्रसन्न द्रव्य देने के हेतु चिन्ता करने लगा ॥ परन्तु इसके गुन के सन्मुख कुछ ध्यान में न आया सिवाय इसके कि शीघ्र अपना देडाले नटिनी ने निवेदन किया कि जब मुझ को आपके सिर की प्रयोजन आनि पड़ैगा तब ले जाऊंगी और राजा से निश्चय किया कि रिझवारता तुम्हारे ऊपर अन्त हो तुझको अब मेरा दहिना हाथ किसीके आगे कुछ लेने को नहीं फैलेगा पीछे दूसरे राजा के यहां उसको नृत्यकला हुआ राजा रीझ कर कुछ देने लगा नटिनी ने बाँयां हाथ पसारा राजा ने क्रोध करिके कारण पूछा नटिनी ने कहा कि मेरा दहिना हाथ राजा जगदेव के भेंट होचुका है उससे सिवाय कौन दानी है जिसके आगे फैलाऊं राजा ने कहा मैं दशगुन अधिक उससे देसक्ता हूं कह उसने क्या दिया है पीछे बहुत बात चीत होने के राजा ने प्रतिज्ञा किया कि दश गुन अधिक देऊंगा निश्चय जान तब नटिनी राजा जगदेव के पास आई उसका सिर लेकर राजा के पास आई कि राजा जगदेव ने यह सिर अपना हम को दान दिया रहा यह कह कर सिर राजा के सन्मुख रख दिया वो बोली कि तू भी अपनी प्रतिज्ञा पूरी कर राजा लज्जित होकर उठ गया फिर मुख न दिखाया वो नटिनी ने शिर राजा जगदेव का उसके धड़ पर रख

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

कर वही राग कि जिस पर राजा रीझा था गाया तुरन्त जी उठा और यह रिझवारता की बात राजा जगदेव की संसार में फैली और एक प्रसंग राजा जगदेव का यह है कि कोई राजा की लड़की उसपर आसक्त ऊई विवाह का सम्बाद भेजा राजा जगदेव ने अंगीकार न किया लड़की की माता ने किसी बहाने से राजा को अपने नगर में बुलाया वो राजा को मंत्रियों के द्वारा बहुत समझाया राजा ने न माना उस लड़की ने भी अपने प्रेम वो आसक्तता के दुःख को प्रगट किया परन्तु उस जगदेव ने न अंगीकार किया यहां तक ऊआ कि उस लड़की दुष्टा ने राजा जगदेव का शिर देखने के निमित्त कटवा मंगाया परन्तु इस देशमें भी भगवत् ने राजा की ऐसी प्रतिज्ञा परी की कि मृतक शिरने उस लड़की के मुख को न देखा कई बार वह शिर के सन्मुख गई परन्तु जब सन्मुख आवे तब शीश उसके दूसरी ओर फिर जाय तात्पर्य यह निकला कि स्त्री से परामुख होय तो इस प्रकार होय वो निश्चय करिकै स्त्रिन का संग सुमुक्षु को ऐसा दुख दाई है कि कबहीं भगवत् प्राप्त के आनन्द को समीप आने नहीं देता अभिप्राय इस प्रसंग कहने का यह कि यह राजा हरि-दास भी रिझवार निष्ठा में ऐसे ही रहे मानो तोदर कुल में सूर्य के समान ऊए कलियुग में धर्मात्मा रहे तिलक माला से प्रीति रही कि बर्णन नहीं हो सकता बात यह है कि एक वैरागी दुष्ट उसकी लड़की के साथ रात को सोता था आंख से देखा परंतु क्षमा कर गये वह दुष्ट डर कर भागने लगा तब यह बोले कि ऐसे कर्मों से भेष की निन्दा होती है इतना ही कहने में उस वैरागी को ज्ञान होगया बन में निवास कर भगवत् भजन करने लगा ॥ इति

निष्ठा दूसरी धर्म प्रचारक ॥

श्रीकृष्णचन्द्र महाराज के व्यास अवतार को दण्डवत् है कि जगत के उद्धार के हेतु वेदों को विशेष प्रकाशित और ब्रह्मसूत्र और महाभारत और अठारहपुराण वो स्मृति को बनाय के भागवत धर्म की प्रवृत्ति की और चरण कमल की कुलिश रेखा को दण्डवत् है कि महाघोर रूप इलासुर और पाप के पहाड़ों को नाश करने वाला है भागवत धर्म उसको कहते हैं कि भगवत् भक्ति के सम्बन्ध से जो कुछ किया जाय सेवा पूजा भजन स्मरण कीर्तन इत्यादि जो किसी को संदेह होय कि धर्म निष्ठा और भागवत धर्म में क्या अंतर है सो बात यह है कि धर्म निष्ठा का अभिप्राय कर्म से है चाहे वह कर्म सकाम हो अथवा निष्काम और भागवत धर्म उसको कहते हैं कि जो निष्काम कर्म इस जन्म में चाहे अगिले जन्मों में किये हैं और उनको भगवत् अर्पण करिके भगवत् भक्ति

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

प्राप्त हुई होय उस भक्ति के सम्बन्ध से जो कुछ करना योग्य है वह भागवत धर्म है जब कि भागवत धर्म में सावधान होकर भक्त का मन लगा और प्रति क्षण उसी ओर बाहर भीतर की चित्त की वृत्ति हुई तो और कर्म करने न करने का स्वाधीन है वो बहुत आचार्यों का मत इस बात पर है कि कर्मों के प्रभाव से भगवत् भक्ति प्राप्त हुई है जब तक देहानु संधान को भक्तिकै मग्न न हो जाय तब तक संध्या इत्यादिक जो आवश्यक कर्म उनको करता रहै और समझना चाहिये कि यद्यपि देखने में यह बात विरुद्ध सी समझने में आती है परंतु सिद्धांत में कुछ विरुद्ध नहीं काहे से कि जो कोई भागवत धर्म में एकाग्र चित्त है वह जो कर्म करता है सो सब भगवत् भक्ति के सम्बन्ध के हैं उनको कर्म न समझना चाहिये सो उस भागवत धर्म के कि जिसका वर्णन हुआ प्रचारक उस की वोंका के समान हैं कि आप भी पार जावै और दूसरों को उतार देवैं तरन तारन जो पद विख्यात है सो ऐसेही भक्तों के निमित्त है यद्यपि भागवत धर्म के प्रचारक आप भगवत् हैं कि ब्रह्मा जी को वेद का उपदेश किया और वेद के अनुकूल भागवत धर्मने प्रवृत्ति को पाया परंतु विशेष कृपालुता के हेतु उस धर्म की प्रवृत्ति में इतनी निरन्तर कृपा दृष्टि की कि वेद और ब्रह्मा पर भी प्रबन्ध उसका न रक्खा और कई युक्ति और प्रगट कर दी यह कि भक्तों और ऋषीश्वरों के मुख से सूच और तंच और स्मृति और वेदांत पातञ्जलि मीमान्सा इत्यादि छओं शास्त्र वो वाल्मीक रामायण वो महाभारत इत्यादि इतिहास वो पुराण वर्णन वो रचना कराया कि उसके अनुकूल प्रवृत्ति उसकी हुई और लोग उनका श्रवण वो कीर्तन करिकै कृतार्थ रूप और होते हैं पश्चात् जब भगवत् ने देखा कि लोगों के चित्त की चाह काव्य के पद पदार्थ की है तो नाटक वो चम्पू वो काव्य वो साहित्य शास्त्रों के योग से शिक्षा को किया और उनके बोध से भी लोगों की बुद्धि भ्रमित वा भ्रमित देखी तो टीका करने का प्रचार चलाया और जब उनको भी लोग अच्छे प्रकार न समझ सके तो सूरदास तुलसीदास वो नाभा वो अग्रदास नन्ददास कृष्णदास इत्यादि को कलियुग में प्रकट करके भाषा में चरित्र वो भागवत धर्मों को रचना कराया वो जगत में प्रवृत्ति किया उसके अलग उस भागवत धर्म के प्रवृत्त होने के निमित्त दूसरा उपाय यह किया कि आप अपने मुखारबिन्द से उन धर्मों को स्पष्ट करिके समझाया और लक्ष्मी जी वो अपने पार्षद वो ब्रह्मा वो शिव वो सनकादिक वो नारद वो शुक्राचार्य वो बृहस्पति वो वशिष्ठ व्यास इत्यादि सहस्रों को गुरू बनाकर उपदेश वो विशेषताई उन भागवत धर्मों को करी और कलियुग में शंकराचार्य और रामानुज स्वामी वो निम्बार्क स्वामी वो माधवाचार्य वो विष्णु स्वामी वो वल्लभाचार्य वो हित हरि वंश

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

जो इत्यादिक सैकड़ों आचार्य अपनी बिभूति और कला वो अंश वो आवेश अवतार से प्रकट करिकै अब तक जिनकी कृपा से करोड़ों जीव महा पापात्मा सबों का उद्धार होता है फिर तीसरा बिचार यह कियः कि अपना मन्दिर वो मूर्ति और भजन वो तप का स्थान जैसे बद्रिकाश्रम आदि और अपने धाम जैसे मथुरा अयोध्या आदि और तीर्थ जैसे गंगा यमुना पुष्कर आदि प्रकट किये कि उनके प्रभाव से भक्ति का प्रचार हुआ तात्पर्य इस लिखने का यह कि भगवत् को प्रवृत्त करना अपने भागवत धर्म का और दृढ़ रखना उसका इतना अंगीकार है कि जब कभी थोड़ा भी उसमें बिघ्न आय पड़ता हैं अथवा कोई बिघ्न करने को उद्यत होता है तो आप भगवत् अवतार लेकर उन बिघ्न करने वालों का बध कर देते हैं और अपने धर्म को स्थिर रखते हैं गीता जी में भगवत् का बचन है कि अर्जुन जब धर्म में हानि होती है और अधर्म की वृद्धि होती है तो मैं आप अपने भक्तों के सहाय के हेतु और नाश करने दुष्टों के और स्थिर करने अपने धर्म के अवतार लेता हूं तो आवश्यक वो बड़ा प्रयोजन है कि जहां तक होसके भगवत् धर्म के प्रचार करने में परिश्रम वो यत्न करै कि उससे प्रसन्नता भगवत् को होती है और प्रचार करने वाला इस धर्म का भगवत् की बिभूत औतार में बिचारै किया जाता है एक जगह शास्त्र में लिखा है कि जो कोई एक जीव बिमुख को भगवत् सन्मुख कर देता है उसको दसहजार अश्वमेध यज्ञ का फल होता है भगवत् कथा कराना ठाकुर द्वारा भजन कुटी धर्म शाला बाटिका कूप तड़ाग पाठ शाला इत्यादि और ऐसे मन्दिर कि जिस से भगवत् भजन करने वालों और संसार को आराम हो रचना करावना और भगवत् चरित्रों को बनावना और प्राचीन पोथियों की टीका बनावना अधर्म से हटाकर भगवत् धर्म में लगाना सदावर्त इत्यादि सब जगह और बिशेष करिकै जैसे बद्रिकाश्रम अयोध्या वो हरिद्वार आदिक स्थान में प्रवृत्त करना वो एकादशी आदि भगवत् के व्रत के दिन में जागरण करना वो भगवत् कीर्तन का समाज होना और जिस दिन भगवत् के औतार हुए हैं उस दिने और दूसरे त्यौहार जो भगवत् के हैं तिनको भगवत् का त्यौहार जान कर अति आनन्द और स्नेह और धूमधामके साथ उत्सव करना और बिद्या के पढ़ने पढ़ानेमें परिश्रम वो उपाय करना ऐसेही और कामकि जिनके कारण करिकै लोगोंको भगवत् की ओर मन सन्मुख करना यह सब सामग्री बढ़ाने भागवत धर्म को हैं जो कोई कि भगवत् भक्त हैं और केवल लोगों के उद्धार वो उपकार के निमित्त जिनकी मनोवृत्ति है उनकी बड़ाई वो वर्णन तो किस से हो सकती है कि वे कृतार्थ रूप हैं और जो कोई अपने यश वो संसार के दिखाने के हेतु इस भागवत धर्म का प्रचार करता है वह भी भगवत्

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

को प्यारा है कि उसके प्रभाव से सहस्रों को सुभगति हुई वो उस धर्म के पुण्य से अथवा किसी भक्त के आशीर्वाद से उसका मन भी भगवत् में लगि जायगा महिमा भागवत धर्म प्रचारकों की शाखों में इस आधिक्यता से लिखी है कि जिसका वर्णन नहीं होसकता और एक कथा अनन्ताचार्य्य की जो पोथी प्रपन्नामृत में लिखी है कारण हुई कि उससे महिमा ऐसे भक्तों की प्रकट होती है ठाकुर द्वारे को नगर के मार्ग जाने आने के बीच में एक गड़हा पड़ गया वो रास्ता क्लिष्ट होगया अनन्ता चार्य्य जी आप टोकरी और फावड़ा लेकर उस गड़हे को भरने लगे इस हेतु कि लोगों को आने जाने का क्लेश न होवे और स्त्री उनकी कि वह गर्भवती रही उसको भी इस धन्धे में शामिल किया जब प्रसवकाल समीप आया और उस स्त्री को टोकरी के ढोने से क्लेश होने लगा तो भगवत् ने पनिहारे का रूप बना कर उसकी स्त्री को आज्ञा की कि तुम्हारे बदले में टोकरी ढोता हूं तुम बिश्राम करो पश्चात् थोड़ी ही बिलम्ब में अनन्ता चार्य्य ने देखा कि स्त्री के धन्धे पर कोई पनिहार टोकरी ढोता है सोटा लेकर दौड़े और कहा कि तू कौन है जो हमारे भाग में बलात्कार साझी होता है जब समीप पहुंचे तो भगवत् को एक भागने बिना दूसरा उपाय न सूझा और मन्दिर में जा घुसे वो अनन्ताचार्य्य जी सोटा लिये पीछे रहे जो मन्दिर में पहुंचे तो भगवत् का भी अंग मिट्टी और धूलमें भरा हुआ देखकर बूझा गया कि आप भगवत् स्त्री पर दया करके टोकरी ढोते रहे अनन्ताचार्य्य जी ने हाथ जोड़ कर प्रेम में मग्न होके बिनय किया कि महाराज कृपा करिके किंकरों को उचित है न कि स्वामी को ऐसे बिचार से सब लोगों को उचित वो योग्य है कि अपने अपने अभिलाष वो विश्वास के अनुसार इसी परम धर्म के प्रवृत्त करने में सब तन मन प्राण से उपाय वो परिश्रम करै जिस किसी को जिस बोली में विद्या प्राप्त हुई है और काव्य रचना में चित्त की वृत्ती है तो भगवत् चरित्रोंही को रचना करै परन्तु सैकड़ों काव्य कर्त्ता देखने में आते कि बिना अनाप सनाप बकवाद के भगवत् चरित्रों के ओर तनक भी एकाग्र चित्त नहीं होते और कोई कोई से बात कहने में आई कि तुम भगवत् यश वर्णन करके अपनी बानी वो अन्तः करण को क्यों नहीं पवित्र करते हो तो उत्तर देते हैं कि महाराज हम अभेद का वर्णन करते हैं और कोई कहते हैं कि समय का जैसा चलन है वैसेही पद पदार्थ की रचना का करना अच्छा होता है और कोई कहते हैं कि कवि लोगों का मन पद वो अर्थ की रचना के चिन्तन व्यतिरिक्त दूसरी ओर नहीं जाता यह भी तो भगवत् भजन है बस ऐसे ही ऐसे उत्तर अयोग्य निरर्थक देते हैं उनका वर्णन करना व्यर्थ है तात्पर्य सब कहने का यह कि जिस काव्य वो रचना वो चित्तपद में भगवत्

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

चरित्रों का वर्णन नहीं वह काव्य निराला निष्फल वो अधम है जैसे कोई परम सुन्दरी चन्द्रवदनी स्त्री है औ बिना वस्त्र नंगी होवै वो और अधिक व्यौहार संसार का वैभव वो धन पर निबन्ध है सो धनवान लोगों को अच्छे प्रकार ज्ञात वो प्रगट है कि धन किसी के घर न पहिले रहा न अब रहैगा शून्य हाथ आये और इसी प्रकार चले जावैंगे इस धन का नाम माया है और लक्ष्मी अर्थात् भगवत् की प्रतिबता स्त्री है जहां उनका स्वामी रहैगा वहीं वह रहैगी नहीं तो तुरन्त चली जायगी अभिप्राय यह है कि जो धन को सदा स्थिर करने को चाहै तो भगवत् पथ में उसको लगाकै सदा सेवा वो भजन में काल व्यतीत करै सहस्रों साहूकार और ऐश्वर्य्य वान होगये किसी का नाम भी कोई नहीं जानता और जिन लोगों ने ठाकुरद्वारा तड़ाग भजन कुटी इत्यादि बनवाया अबतक उसका नाम प्रकाशित है और रहैगा अब बड़े सोच वो अफसोस की बात है कि धनको पाय कै भगवत् धर्म का प्रचार न करै ईश्वर और जीव और संसार और स्वर्ग और नर्क और भक्ति और ज्ञान और वैराग्य और सब रीति संप्रदाय वो मत का जानना विद्या के आधीन है जबसे चारों वर्ण ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र मेंसे शास्त्र का पढ़ना उठ गया तब से सब धर्मों का नाश होगया दक्षिण देश चोला पट्टन वो तैलंग वो द्राबिड़ वो बारह मल्हार में रीति है कि जो किसी का लड़का शास्त्र पढ़ने में मन न लगा के क्रूरता करता है तो उसके बड़े लोग वहां के देशाधिपति से आज्ञा लेकर पैरों में बेड़ी डाल कर पाठशाला में भेज देते हैं और जब तक शास्त्र न पढ़लेवे बेड़ी नहीं निकालते इस कारण से उस देश के सब लोग धर्म्म में स्थिर हैं और ब्राह्मण से लेकर नीच जात पर्य्यंत कोई मनुष्य इष्ट उपासना से शून्य और अज्ञ नहीं और विरुद्ध धर्म्मी लोगों के बचन फांस में थोड़े फंसते हैं, इस हेतु जहां तक होसकै अपने वो बिराने को शास्त्र पढ़ाने की सहायता करै और जो संस्कृत न पढ़सकै तो भाषा का पढ़लेना मनोर्थ को पहुंचा देता है सूरसागर तुलसीकृत रामायण को भगवत् ने ऐसा प्रताप दिया है कि जो नेम करकै पढ़ते हैं वो निश्चय भगवत् के प्यारे हो जाते हैं और इसी प्रकार नन्ददास वो कृष्णदास वो अग्रदास वो कीलस्वामी इत्यादि की बानी को प्रताप है औ भक्तमाल का वाक्य तो प्रारंभ ही में लिखा गया भगवत् कथा कहलाना और उसके सुनने की शिक्षा देना और अपने अनुगामी वो पुत्र पौत्रादि को जिस प्रकार व्यौहार संसारिक के सिद्धके हेतु प्रवृत्त मानों विद्या को पढ़ाते हैं वो सोच करते हैं इसी प्रकार भगवत् की ओर लगाना और भगवत् सहस्रनाम को गीता वो सब राज इत्यादिक स्तोत्रों का पढ़ा देना अति प्रयोजन से है और जो कोई अपने बंधु को और अनुगामी लोगों को भागवत धर्म में नहीं लगा देते वो भगवत् धर्म के सम्बन्ध को विद्या नहीं

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

पढ़ाते तो जो पाप जीवन पर्यंत उन से होते हैं उनके बड़ों के सिर हैं क्योंकि पढ़ा देना उन विद्याओं का उस पर अवश्य था सो न किया वो जिनके बंश में भगवत् भक्त होते हैं तो अपने पुरुषों को भी नर्क से उद्धार करके मुक्त करदेते हैं इसमें प्रह्लाद आदिक भक्तों की साक्षी है कृपा सिन्धु हे दीन बन्धु हे श्री व्रजचन्द महाराज कुछ इस घर जाये किंकर की ओर भी निगाह है कि बिन आपके चरण कमलों के और कोई शरण और रक्षक मेरे नहीं जो मेरे कर्मों की ओर दृष्टि करोगे तो अगणित जन्मों तक मेरा ठिकाना नहीं लगैगा इस हेतु केवल कृपा वो दया का आसरा है वो यद्यपि यह बात जानता हूं कि जितना विमुख वो संसारी लोगों की स्तुति वा आराधना वो सुख जोहन वो मन रंजन करता हूं वो भय से उनसे कम्पमान रहता हूं जो उसके सहस्र वें भाग में एक भाग भी आपका भय करिके भजन स्मरण में व्यतीत करूं तो एक क्षण में बेड़ा पार होती है परंतु यह मन ऐसा भाग्य हीन वो दुष्ट पापी है कि भूल के भी उस ओर नहीं लगता जो अब भी मूरख मति मन्द मन ऐसा चिंतवन आपका करता रहै तो शीघ्र अपने परम मनोर्थ को प्राप्त हो सकता है श्री यमुना जी के किनारे एक वाटिका परम मनोहर है कि जिसमें सुन्दर मार्ग वो क्यारियों में जल चलरहा है और सब प्रकार के फल वो फूलों के वृक्षों पर हरी लहलही लहलही बेल छाय रही हैं वो बीच में फुलवारी नाना रंग के फूलों की छबि देती है मयूर कोकिल शुक सारिका कपोत सारस हंस आदि अपने मधुर शब्द वो चेह चुहाहट से बरबस मनको मोहित करते हैं उस वाटिका में श्री नन्द नन्दन शोभा धाम अपने सखन के संग भांत भांत के आनन्द वो खेल करि रहे हैं मुखारबिन्द की शोभा की उपमा सूर्य चन्द्रमा मणि गण अथवा कोई फल कमल वो गुलाब आदि की दी जाय तो उनमें एकही एक प्रकार की शोभा है वो इस मुखारबिन्द मनोहर में उन सबकी शोभा एकही जगह संपूर्ण है मुकुट जड़ाऊ मोरपक्ष का शीस पर कानों में कुण्डल कि उनमें फूलों के गुच्छे गुथे हैं विराजमान है गलमें मोतियों की कण्ठो वो मणि गण की माला उस पर फूलों की माला है कड़े और पहुंचो हाथों में सुवर्ण तारी दुपट्टा जैसा कि खेलने के समय बांधना चाहिये बंधा ऊंचा वो पीताम्बर की धोती पहिने ऊए चरण कमलों में कड़े वो झांझ शोभित हैं और खेल की दौड़ धूप में जो पसीना आगया है जिसकी छोटी छोटी बूंदें मुख पर झलकती हैं और अलकें घुंघरवारी जो पवन के लगने वो दौड़ने से बिथुरि के कपोलों पर आई ऊई हैं ऐसी शोभा वो आनंद प्रगट करती है कि देखने वालों का मन बरबस हाथ से जाता है ॥

—०—

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

कथा स्वामी रामानन्द जी की ॥

यह रामानन्द स्वामी परम भगवत् भक्त वो सिद्ध वो आचार्य्य वो भक्ति के प्रचार करनेवाले ऐसे हुए कि संसार समुद्र के उतरने के हेतु अपनी कृपा वो संप्रदा का सेतु बांधा वो अनन्तानन्द वो सुरेश्वरानन्द वो सुखानन्द वो भावानंद वो पीपा वो सेन वो धना जाट वो रैदास जो कबीर को उन्हीं की कृपा वो प्रभाव और उपदेश से हुआ रहा यह स्वामी दक्षिण देश में एक संन्यासी का उपदेश लेकर आर्त्त की रीति से भगवत् आराधन किया करते रहे एक दिन फूलों के लेने को फुलवाड़ी में गये वहां राघवानंद स्वामी जो रामानुज संप्रदा के रहे उनका दर्शन हुआ उन्होंने कहा कि तुमको कुछ अपना वृत्तान्त भी ज्ञात है कि तुम्हारे आयुर्बल शेष नहीं रहे इस अन्त समय में भगवत् शरण हो जाना चाहिये रामानंद जी ने अपने गुरू संन्यासी के पास आय कै सब बात कही उन्होंने भी अपने ध्यान में देखा कि सच है रामानन्द जी की आयु गत होगई अब तो कुछ उपाय नहीं सका तीनों राघवानन्द जी की सेवा में आय कै शरण हुए राघवानन्द जी ने उन पर दया करिकै मंत्र उपदेश किया और रामानन्द जी के प्राण को योगाभ्यास से दसवें द्वार ब्राह्मण्ड में पहुंचा दिया जब मृत्यु की पीड़ा टलगई तब फिर जिलाकर चैतन्य कर लिया वो बहुत जीने का वरदान दिया रामानन्दजी ने बहुतकाल गुरूकी सेवा की फिर तीर्थाटन करते बदरिकाश्रम के ओर आये कुछ काल काशी बास किया पंच गंगा घाट पर निवास रहा तहां खड़ाऊं उनकी विराज मान हैं फिर जब गुरू की सेवा में गये तब आचारी लोगों ने क्रिया वो आचार का वृत्तांत पूंछा वो जाना कि कभी जो निश्चय आचार धर्म में भेद पड़ गया है तब अपने में से न्यारे कर दिया राघवानंद उनके गुरू ने आज्ञा दी कि तुम अपना पंथ अलग चलाओ सो रामावत नाम करि कै संप्रदा चलाई वही रामानन्दी भी कहलाते हैं इस संप्रदा में श्री रघुनन्दन वो जानकी महारानी का ध्यान उपासना है वो आचारी लोगों की रीति आचार नहीं है शास्त्र को मन में यह सिद्धांत कर लिया कि जोकोई भगवत् शरण हुआ उसको बन्धन वरण आश्रम का नहीं सब अच्युत गोत्र होगये सब का भोजन एक पंक्ति में होता है सो यह शास्त्र के अनुसार है नारद पंचरात्र इत्यादिक में लिखा है कि जैसे चारों आश्रम हैं इसी प्रकार भगवत् भक्ति आश्रम है यह कि सब भगवत् भक्त एक वरन हैं भागवत में लिखा है कि जो ब्राह्मण अपने सब कर्मों में सावधान हैं परंतु भक्त नहीं तो उस से कोई नीच वरण जो भगवत् भक्त होय सो वरिष्ठ है और एक यह भी प्रमाण प्रसिद्ध है कि भगवत् ने राजा युधिष्ठिर के यज्ञ हो जाने के पीछे वाल्मीकि श्वपच को भगवत् भक्ति के कारण सब वर्णाश्रम वालों से अधिक प्रतिष्ठित किया इस बात में बहुत

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

प्रमाण हैं सो यह रीति जो वरण आश्रम धर्म में हैं तिन में नहीं है जो कोई गृहत्याग कै किसी संप्रदा में भगवत् शरण होकर विरक्त होगये उन में अब तक प्रवृत्ति है वो कपिल जी का स्थान गंगा सागर में लुप्त होगया रहा उस को रामानन्द जी ने निर्देश करके प्रकट किया गुरु परम्परा रामानुज से लेकर गोविन्ददास तक और दो गद्दी गलता वो रामगढ़ की अब तक की लिखी जाती हैं-१ रामानुज-२ देवाचार्य-३ प्रभानन्द-४ राघवानन्द-५ रामानन्द-६ अनंतानन्द-७ कृष्णदास-८ कील्हदास-९ अग्रदास-१० नारायणदास-११ गोविन्ददास॥

कृष्णदास पयाहारी की कथा॥

कृष्णदास जी अनंतानन्द के चेला वो ब्राह्मण कुल में जन्म ऐसे परम भगवत् भक्त हुए कि लाखों को संसार से उद्धार किया कील्ह वो अग्रदास केवल राम वो हठी नारायण वो प्रह्लाम वो गदाधर वो देवा वो कल्यान इत्यादि सैकरों चेले ऐसे सिद्ध वो प्रेम भक्त हुए कि लाखोंका उद्धार किया पहिले गलताजी में योगी रहते रहे कृष्णदास जी ने अपनी सिद्धता से निकाल कर पृथीराज राजा को चेताया वो एक दरिद्री लड़के को राजा बनादिया ऐसे ऐसे अनेक प्रभाव वो प्रताप जिन के हैं॥

कथा गोविन्द दास की॥

गोविन्द दास नारायण दासजो नाभा जी का नाम है तिन के चेला हुए वो बड़े भक्त हुए नाभाजीने प्रथम भक्त माल उन हीं को पढ़ाई पीछे इन्हीं ने भक्तमाल को जगत में प्रकाशकिया॥

विष्णु स्वामी की कथा॥

विष्णु स्वामी महाराज परम भागवत और प्रवृत्ति करने वाले भगवत् भक्ति के हुए दक्षिण देश ब्राह्मण वंश में हुए चारों संप्रदा में जो रुद्र संप्रदा विख्यात है उस के आचार्य स्वामी जी हैं यद्यपि यह संप्रदा प्राचीन है परंतु विशेष करिके श्रीविष्णु स्वामी से है और शिवजी के नाम से विख्यात होने का कारण यह है कि मुख्य आदि आचार्य इस संप्रदा के शिवजी महाराज हैं इस हेतु कि प्रथम इस उपासना का उपदेश शिवजी ने प्रेमा नंद मुनि को किया इस संप्रदा में ईश्वर को शुद्ध अद्वैत मानते हैं और वह ईश्वर नंदनंदन वृंदावन चंद गोलोक निवासी सर्वदा सात वर्ष की अवस्था अपने सखाओं के साथ खेल विहार करता है वृज भूमि और गोलोक में कुछ न्यून विशेष नहीं तिलक वो संन्यासका हाल भेष निष्ठा में वर्णन होगा वो जो रीति मुख्य इस संप्रदा वालों की है उस के वैष्णव वो तदनुवर्ती गुजरात देश में विशेष हैं परंतु वल्लभाचार्य की प्रवृत्तिकी हुई रीतिके अनुसार अति अधिक प्रवृत्ति इस संप्रदा की है यद्यपि रीति प्राचीन वो विष्णु स्वामी वो वल्लभाचार्य में कुछ भेद नहीं

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

कि सब बाल स्वरूप के उपासक ह्वए परंतु बल्लभाचार्य जी ने कोई कोई भाव की रीति अपने अंतःकरण के प्रेमकी तरंग के अनुसार ऐसी निकाली कि वर बस चित्त को खोजती है सो हाल उनका कुछ सूक्ष्म करिकै बल्लभाचार्य की कथामें वो वात्सल्य निष्ठा में लिखाजायगा और बावालाल कि जिस का बड़ा विश्वास आलमगीर के भाई दाराशिकोह बादशाह को रहा सो वहभी इसी निष्ठा और संप्रदा में रहे कोई कोई माध्वी संप्रदा में कहते हैं परंतु निश्चय करिकै इसी संप्रदा के अनुगामी ह्वए उन्होंने एक दो रीति में कुछ घट बढ़ कर के अपनी रीति पर प्रवृत्ति इस संप्रदा को किया वो विष्णु स्वामी महाराज की संप्रदा में करोड़ों भक्त इसउपासना के प्रताप से भगवत् पद को पहुंचे वो मुख्य गुरुद्वारा विख्यात गोकुल में है और गुजरात देश में है पर गोकुल कांसा नहीं ॥ गुरु परंपरा–१ शिवजी–२ परमानन्द मुनि–३ आनंदमुनि–४ प्रकाशमुनि–५ श्रीकृष्णमुनि–६ नारायणमुनि–७ जय मुनि–८ श्रीमुनि–९ शंकरभट्ट–१० पद्मभट्ट–११ गोपालभट्ट–१२ श्रीधरभट्ट–१३ श्यामभट्ट–१४ रामभट्ट–१५ सेतुभट्ट–१६ कृष्णभट्ट–१७ दिवाकरभट्ट–१८ कृपाल भट्ट–१९ विद्याधर भट्ट–२० दिनकर भट्ट–२१ मधुनिधानभट्ट–२२ ज्ञानदेवभट्ट–२३ सुखदेवभट्ट–२४ शिवदेवभट्ट–२५ शांत भट्ट–२६ दयालदेव–२७ क्षमादेव–२८ संतोषदेव–२९ धीरजलदेव–३० ध्यानदेव–३१ विज्ञानदेव–३२ महाचार्य–३३ तत्वाचार्य–३४ नृसिंहाचार्य–३५ सुधाचार्य–३६ सुबुद्धाचार्य–३७ प्रबुद्धाचार्य–३८ प्रबोधाचार्य ३९ असूयाचार्य–४० रुद्राचार्य–४१ भगवंताचार्य–४२ रामेश्वराचार्य ४३ ब्रह्मविधिचरियाचार्य–४४ सुदयाचार्य–४५ लक्ष्मीनारायण आचार्य–४६ ज्ञानदेव–४७ नामदेव–४८ तिलोचनदेव–४९ श्रीविष्णु स्वामी–५० लक्ष्मणभट्ट ॥

वल्लभाचार्य जी की कथा ॥

वल्लभाचार्य परम भागवत वो प्रेमी वो संप्रदा के आचार्य संसार समुद्र से पार उतारने वाले ह्वए अपने स्थान जन्मभूमि को छोड़ कर प्रथम गोकुल में और फिर वृन्दावन में आये भगवत् आराधन करने लगे भगवत् से यह मनोर्थ किया कि वात्सल्य निष्ठा की रीति संसार में फैलै इस हेतु गोकुल में निवास करके भगवत् सेवा पूजा की ऐसी रीति वो पद्धति वात्सल्य निष्ठाकी बांधी कि वर्णन उस भाव का नहीं हो सक्ता वो स्वप्न में भगवत् ने आज्ञा विवाह करने की दी हेतु यह है कि जो कोई भक्त जिस दृढ़ भाव से भगवत् आराधन करता है तो भागवत उस के हृदयमें सिद्ध पद को पहुंच जाने पर प्रेम भक्तिके साक्षात् उसीभाव से दर्शन देते हैं सो भगवत् ने एक ब्राह्मण को प्रेरणा करके लड़की उस की भेंट कराय दी विवाह ह्वआ कुछ दिन पीछे विट्ठल

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

नाथ महाराज ने जन्म लिया कि वात्सल्य निष्ठा के भक्तों में उनकी कथा लिखी जायगी उनके सात पुत्र हुए वो सब पुत्रों के नाम से सात गद्दी अब तक गोकुल में बिराज मान हैं कोई गद्दी में सात बार कोई गद्दी में नव बार सेवा की रीति है श्री राधिका महारानी को स्वकीया भाव से भगवत् प्रिया जान कर आराधन करते हैं परंतु परब्रह्म सच्चिदानन्द-घन श्री कृष्ण महाराज को मानते हैं इस संप्रदा के अलौकिक भाव की कथा कुछ कही नहीं जाती जो बाबा नन्द और यशोदा महारानी लाड़ लड़ाते होंगे उसी प्रकार गोसाईं गोकुल का भाव है आंगन से घर को बहुत ऊंचा नहीं रखते इस विचार से कि ऐसा न हो कि लड़का घुटुवन चलते गिर पड़े शयन के समय ऊंचे शब्द से नहीं बोलते इस हेत कि प्रेम सकुमार लड़का कच्ची नींद में न जाग पड़े ऐसे ऐसे सहस्रों अलौकिक भाव हैं और यहां तक गर्व और दृढ़ भाव अपनी निष्ठा में है कि जिस समय भगवत् शयन करते हैं अथवा वे समय कोई मनुष्य संपूर्ण संसार का धन चढ़ाने वाला आजावे तो क्या बात कि मन्दिर खोलें बरु जयपुर के राजा-इस बातकी परीक्षा भी लेचुके हैं और अबतक वही भाव वो रीति वर्त्तमान है किसी गद्दी में पचास हजार किसी में तीस हजार चालीस हजार रुपैया सालकी आमदनी है सब भगवत् आराधन और सजावट शोभा वो सामग्री बाल स्वरूप वो राग भोग इत्यादिक में उठाय देते हैं इस पर घनी रहते हैं यह गोसाईं गोकुलस्थ पदवी से विख्यात हैं जैसा उत्तम भाव इन गोकुलस्थ गोसाइयों का देखा और सुना सो लिखने में नहीं आसक्ता और उनके चेलोंका जैसा भाव भक्ति गोसाइयों में है वह भी वर्णन नहीं हो सक्ता मारवाड़ और गुजरात में सेवक इस संप्रदा के बहुत हैं वल्लभ आचार्य के कुल में बहुत लोग भक्त पहुंचे हुए और सिद्ध हुए और जो उनके कृपा के अवलम्बन से भगवत् परायण हुए उनकी गिनती कौन कर सक्ता है और वल्लभाचार्य स्वामी के भाव को ध्यान करके देखना चाहिये अपना नामभी अपने भाव के अनुकूल विख्यात किया यह कि वल्लभ गोप जाति को कहते हैं जिस जाति में बाबा नन्दराय जी रहे सो अपने कुल को वल्लभ कुल अर्थात् गोप कुल विख्यात किया एक समय एक साधु व्रज में आया बटुआ शालग्राम को छोड़ कर हस्त की डाल पर झुलाकर वल्लभाचार्य जी के दर्शनों को गया जब आया तब बटुआ न मिला तब आचार्य जी के आगे वृत्तांत कहा तब उन्होंने आज्ञा की कि तुम कैसे सेवक हो स्वामी को छोड़कर इधर उधर फिरते हो साधु ने विनय करके फिर आकर जो देखा तो सैकड़ों बटुआ एक भांति के उस वृक्ष पर देखे फिरि आचार्य जी से जाकर वृत्तान्त निवेदन किया आपने आज्ञाकरी कि तुम कैसे सेवक जो अपने स्वामी को नहीं पहिचान

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

सके सो साधु चुप रहा अन्तःकरण का अभिप्राय वल्लभाचार्य जी का समझ कर चरणों में पड़ा और अपना बटुआ शालिग्राम जी का लेकर भगवत् आराधन में लगा अभिप्राय यह कि उपासक को चाहिये कि जैसे मूर्ख को अपने शरीर में प्रीति और अहंकार होता है वैसीही भगवत् में निष्ठा वो प्रीति राखै यह नहीं कि स्वामी द्वार में आप बाजार में अब वल्लभाचार्य जी की गुरु परम्परा लिखी जाती है परंतु सात गद्दी में कई गद्दी न होने पुत्र के पुत्री के वंश के पास हैं दो तीन गद्दी निज विट्ठल नाथजी के वंशके पास हैं समझकर उनमें से एक गद्दी की परम्परा लिखना बहुत है सो लिखी जाती है—विष्णु स्वामी—लक्ष्मण भट्ट—वल्लभाचार्य—विट्ठल नाथ—गोकुल नाथ—रघुनाथ—यदुनाथ—घनश्याम—बालकृष्ण—गोविन्दस्वरूप—त्रिविक्रमराय—वृन्दावनदास—कृष्णदास—दामोदरदास—स्वामी शुकदेव—स्वामी हरिचरण—स्वामी तुलसीदास—हरिचरणजीव—मोहन दास—सीताराम—मनसा राम आदि विद्यमान हैं॥

कथा माधवाचार्य की॥

माधवाचार्य स्वामी ब्रह्म संप्रदा में परम भागवत वो भक्त आचार्य वो प्रवृत्ति करने वाले इस संप्रदा के हुए यद्यपि संप्रदा प्राचीन है परंतु माधवाचार्य स्वामी ने संपूर्ण संसार में प्रकाशित की माधवी संप्रदा कहिके विख्यात इसी हेतु हुई ब्रह्म संप्रदा इस हेतु से कहते हैं कि प्रथम भगवत् ने इस संप्रदा की रीति ब्रह्मा जी से वर्णन की ब्रह्मा जी से गुरु चेले की परम्परा करिके जो भक्त लोग परम्परा में लिखे गये हैं तिनको उपदेश करिके प्रवृत्ति किया और कोई कोई गोड़िये और कोई महा प्रभु संप्रदा वर्णन करते हैं तिसका हेतु यह है कि श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभु गौड़देश के रहने वाले इस संप्रदा में आचार्य और भक्त नामी भगवत् अवतार हुए संपूर्ण गौड़ बंगाले देश को शिक्षा करिके भगवत् सन्मुख किया इस हेतु महा प्रभु गौड़िय नाम से भी विख्यात हुए उडुपी माधवा करिके भगवत् माधवाचार्य जी ब्राह्मण वेष द्राविड़ देश में उडुपी कृष्णगांव में काशी पुरी से पश्चिम दक्षिण कोने पर है तहां हुए शारीरक सूत्र और गीता जी पर भाष्य रचना किया निश्चय इस उपासना वालों का वह है कि ईश्वर तटस्थ है उसकी प्रेरणा से माया जगत को रचती है और यद्यपि इस निष्ठा में ध्यान और आराधन विष्णु नारायण का प्राचीन रीति से है परंतु अब वह माध्वा चार्य महाराज के समय से उपासना श्रीकृष्ण अवतार की इस संप्रदा में वर्तमान है और ईश्वर पूरण सच्चिदानन्द घन श्रीकृष्ण कामी गोलोक निवासी को मानते हैं और माधुर्य निष्ठा से कि उसका वर्णन उन्नीसवीं निष्ठा में होगा ध्यान और चिन्तवन करते हैं यद्यपि माधुर्य निष्ठा में जुगल स्वरूपका ध्यान

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

और चिंतवन योग्य है और जुगल स्वरूप ही का आराधन वो संप्रदा में प्रवर्तमान है और राधिका महारानी में परकीया भाव राजा हैं परंतु ईश्वरता औ अद्वैतता और पूरण ब्रह्मता श्रीकृष्ण स्व. चिन्तवन करते हैं कि उनके भाष्य और दूसरे ग्रंथोंसे वह बात प्रकाशि है इस संप्रदा में लाखों भक्त और सिद्ध नामी होगये और होते हैं और आवागमन के दुःख को दूर करने के निमित्त भगवत् ने एक उपाय ऐसा विचारिके किया है कि बिना परिश्रम इस संप्रदा के अवलम्ब से कड़ोरों महा अधम भगवत् को प्राप्त होते हैं यद्यपि दक्षिण देश में प्रकाश इस उपासनाका बहुत है गुरु द्वारे बड़े बड़े वहां हैं परंतु इस समय ब्रजमें और बंगालेमें भी यहसंप्रदा विशेष प्रकाशित है और वृन्दावन में कई गुरुद्वारे विख्यात वो प्रसिद्ध हैं जैसे मन्दिर गोविन्ददेव और मदन मोहन वोश्रृंगार बट इत्यादि हैं कि जिसका प्रभाव प्रसिद्ध है जिन को भगवत् के दर्शन और दीक्षा लेने का विचार होताहै वहवहां दीक्षा लेते हैं परीक्षा माधवाचार्य्य स्वामीकी लिखनेका कुछ प्रयोजन नहीं इतनीही बहुत है कि जिनकानाम लेकर और उनकी पद्धति सिद्धान्त के अभ्यास से कड़ोरों महा पापी भगवत् भक्त होकर अपने बांछित पद को पहुंचे अब उन के घर की गुरु परम्परा गुरू चेले के रीति की एक दो गुरुद्वारे की लिखी जाती हैं इस संप्रदा में सहस्रों गुरुद्वारे हैं सब की परम्परा मिलना और लिखना कठिन है एक लिपिसे श्रीकृष्णचैतन्य महा प्रभु के चेले स्वरूप दामोदर और उनके चेले गदाधरभट्ट और उनके चेले कृष्ण ब्रह्मचारी जाने जाते हैं यह थोड़ा विरुद्ध है सो कुछ बात नहीं परम्परा में भक्तमाल के अनुसार जो निश्चय समझने में आया सो लिखा ॥ श्रीनारायण ॥ ब्रह्मा ॥ नारद ॥ वेदव्यास ॥ सुबुद्धाचार्य्य ॥ नरहराचार्य्य माधवाचार्य ॥ जान्हवीतीर्थ ॥ विद्यामुनि ॥ महानंदतीर्थ ॥ राजेंद्रमुनि ॥ जयधर्ममुनि ॥ ईश्वरपुरी वेणीमाधवपुरी ॥

नित्यानंद जी की कथा ॥

नित्यानंदजी महाराज ऐसे परमभक्त और भगवत् धर्म्मप्रचारकहुए कि जिनकी महिमा और प्रताप संपूर्ण संसार में विख्यात है जिन्होंने गौड़ देश बंगाले में पाखंड और अधर्म को दूर करके भगवत् भक्ति और उपासना का प्रचार चलाया जन्म महाराज का नदिया, शांतीपुर बंगाले देश में हुआ श्रीकृष्ण चैतन्य महा प्रभु के भाई रहे गौड़ देश के लोगों को भागवत धर्म से विमुख देख कर दया आई क्लिष्ट तप करके भगवत् को प्रसन्न किया वरदान हुआ तब भगवत् भक्ति को संपूर्ण उपदेश में नित्यानंदजीने गुरू और महंत रूप होकर फैलाया अब तक उस देश में इस प्रकार भक्तिका प्रचारहै कि बहुत भगवत् पारायणहोतेहैं वो घर छोड़ कर

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

न वास करते हैं जो भाव और प्रेम उस देश के रहने वालों का सके वन में देखा लिखा नहीं जा सक्ता अबभी वृन्दावन में आधे वेही समय भगवत्भजन और कीर्तन में रहते हैं ॥

श्रीकृष्ण चैतन्य महा प्रभुकी कथा ॥

श्रीकृष्णचैतन्य महाप्रभु नित्यानंद जी के छोटे भाई श्रीकृष्ण महाराज के अंशावतार हुए गीताजी में भगवत् का बचन है कि जबधर्मका नाश और अधर्मकी प्रवृत्ति होती है तब धर्म के स्थापन और अधर्मके नाशकेहेतु मेरा अवतार होता है सो गौड़ देश बंगाले में भागवत धर्म वो भगवत् भक्ति नहीं रही विपरीतधर्म प्रवृत्त हुआ रहा इस हेतु भगवत् ने वेद मार्ग स्थित करबे के लिये जैसे ब्रज में अवतार लिया था इसी प्रकार बंगाले में सची जी के उदर द्वारा प्रकाश किया सात वर्ष के वयक्रम में केशव भट्ट काश्मीरी ब्राह्मण को वाद में क्षण मात्र में जीत कर दया कर के भगवत् भक्त कर दिया कि स्पष्ट वृत्तांत केशव की माधुर्य्य निष्ठा में लिखा जायगा एक समय महा प्रभु जगन्नाथ रायखामीके आगे कीर्तन में ऐसे बेसुध प्रेम में हो के तन्मय होके चतुर्भुजी रूप हो गये तब सब लोग कहने लगे कि इस पुरी का प्रभाव है सिद्धताई क्या है तब महा प्रभु ने अनुजाई वो सेवक आदि के विश्वास वो भक्ति के दृढ़ता के हेतु छः भुजा धारण की अब तक सब को दृढ़ विश्वास हुआ सो पुरी में महा प्रभुके छः भुजा स्वरूप के अद्यापि दर्शन होते हैं ॥

कथा रूप सनातन जी की ॥

रूप और सनातन जी दोनों सगे भाई प्रेम भक्त वो भागवत धर्म प्रचारक हुए वे दोनों भाई गौड़देश बंगाले के रहने वाले और बादशाही अधिकार वाले रहे धनवान बड़े रहे एक रात क्या गिनते गिनते प्रभात होगया तब दोनों भाइयों को ग्लानि आई वो आपस में विचार किया कि देखो जो भगवत् भजन वो समाज में बैठते तो घड़ी घड़ी बूझते रहते कितनी रात गई इसअत्यर्थ कार्य्य झूठे में कुछ ज्ञान न रहा कि कितनी रात गई यह विचार करि अपने गुरू नित्यानन्द महा प्रभु के पास आयके शिक्षा मांगी गुरू ने आज्ञा दी कि ब्रजभूमि में जाव वहां के बन और वास सब श्रीकृष्ण स्वामी के विहार के जो काल पाय के गुप्त हो रहे हैं तिनको प्रगट करो और ग्रंथ करिव वो लीला माधुर्य्य वो रस विलासी को फैलावो उसी आज्ञा के अनुसार दोनों भाई आय के ब्रजभूमि में पड़ंचे पड़ंचतेही आप से आप रम्यता उस भूमि का कि वो पवन सुखदाई वो हरि आली आकर्षण करने वालों में रूप माधुरी में श्री प्रिया प्रीतम के उन्मत्त वो बेसुधि होगये और ऐसी गन्ध प्रेम प्रिया प्रीतम महाराज की प्राण के मस्तक में पड़ंची कि दुःख सुख सब भूल के प्रेम आनन्द में मग्न

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

होगये जब सुधि ऊई तब इन गांव के लोगों से पूछा कि ब्रज
एक ने उत्तर दिया कि तेरा बाप अन्धा होगया है यह ब्रज नहीं
है गोसाई महाराज इस गालीसे बड़े आनंदित ऊए प्रेम आन- राजा
छके ऊए पहिले श्री मथुरा जी फिर वृन्दावन में पहुंचे देखा कि श्री
यमुनाजी प्रवाह मान हैं वन सघन हरित ऐसा छाय रहा है कि सूर्य
का उदय अस्त नहीं दिखाई देता बहुत ढूंढ़ने से दुइ चार घरों की बस्ती
मिली और रहते वाले वहां के वृन्दादेवी की पूजा करने को गये हैं तब
वहां से वृन्दादेवी को ढूंढ़ते चले देखा कि वे लोग एक जगह भूमिपर
दूध दही चढ़ाकर चले गये उसी जगह टिके रात को वृन्दादेवी ने दर्शन
दिया कहा कि हमारा स्वरूप इसी जगह है निकाल कर स्थापित करो
गे सांई जी ने स्थापित किया अब तक विराजमान है गऊ बच्चा देती है तब
पहिले उनको दूध चढ़ाते हैं और गोविन्ददेव जी ने गोसांई रूप जी को
स्वप्न दिया तब गोसांई जी ने उन को निकाल कर स्थापित किया और
पूजा करने के निमित्त अपने भतीजे जीव गोसांई को कि वेभी त्याग लेकर
आय गये एहे आज्ञा दी फिर पीछे राजा मानसिंह आमेर से राजम-
न्दिर बनवाया उन्हीं दिनों अकबराबाद का किला बनताथा पत्थर लाल कहीं
नहीं जाने पाता रहा राजा ने बादशाह से आज्ञा लेकर मन्दिर लाल
संगीन निर्मित किया तेरह लाख रुपैया केवल मसाले मजूरी में लगा अब
तक वह मन्दिर वृन्दावन में प्रगट वो विख्यात है और अहम्मदशाह बाद-
शाह के समय राजा जैसिंह ने बाराह पुराण में सुना कि गोविन्द देव के
दर्शन करने से जीव का आवागमन छूट जाता है बड़ी प्रीति वो प्रार्थना से
वह मूर्ति जयपुर ले गया वहां विराजमान है वृन्दावन में दूसरी मूर्ति
स्थापित ऊई वो गोसांई रूप जी ने गुरु की आज्ञा वो शिव जी के स्वप्न देने
से बहुत ग्रन्थ भक्ति रसामृत के रस सिद्धांत वो भगवत् अमृत इत्यादि सब
पांच लाख श्लोक में रचना किये एक श्लोक में प्रिया जी की वेणी की
उपमा लिखी कि नागिनी के सदृश है गोसांई सनातन जी का यह विचार
ऊआ कि रूप जी की काव्य अधिक मधुर है परंतु प्रिया प्रीतम का
भाव अच्छे प्रकार नहीं समझा और जंतु की उपमा वेणीकी दी कि वह परम
सुकुमारी चित्त के सांप को भी देखते भय करती हैं यहां ध्यान पर खट-
कता रहा एक दिन वनमें घूमते देखा कि एक वृक्षके नीचे एक लड़का परम
सुन्दर वो कई एक लड़कियां परम सुन्दरी तिस में एक लड़की ऐसी
सुन्दरी कि कभी ऐसी सुन्दरी न देखी रही हिंडोरा झूलते हैं यह लड़की
परमसुन्दरी चुनरी ओढ़े है तिसमें वेणी श्याम नागिनि सी ऐसीलेह लहाती
है कि नागिनि में और उसमें तनक भेद नहीं गोसांई सनातन जी देख
के घबराये पुकारा मार मार कोई दौड़ कर नागिनि को इस सुन्दरी के

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

सक्ते ... उतारो यह कहिके बेसुध होगये जब सावधान भये तब श्लोक समझ ... सांई जी का स्मरण हुआ और जाना कि लाड़िली जी ने उस भक्त के भाव के संदेह दूर करने के कारण यह चरित्र किया है रूप जी पास आये परिक्रमा करिके सब बात कही देखिये गोसांईं सनातन जी डे भाई रूप गोसाईं जीके थे परंतु भक्ति में उनको बड़ा जानकर दण्डवत् के और परिक्रमा करि गोसाईं रूप जी मोटे रहे और गोसाईं सनातन जी सुकुमार और नित्य परिक्रमा व्रज की किया करते थे एक दिन परिक्रमा करे पीछे जो रूप गोसाईं के पास आये तो रूप गोसाईं को यह ध्यान चित्त पर आया कि सनातन जी अपने घर पर ऐसे पदारथ भोजन दिव्य वो मधुर खाते रहे कि सब को नहीं मिल सकता अब सूखी रोटी मधूकरी वृत्ति से कैसे तृप्त होते होंगे यह ध्यान ही था कि श्री लाड़िली जी दूध वो चावल वो और सब सामग्री समेत व्रज बासी की लड़की का स्वरूप धरके ले आई वो अति कोमल बचन से बोली कि हमारी गाय ने आज बच्चा जना है मेरी मा ने यह सामग्री तुम्हारे लिये भेजी है दोनों गोसांइ-यों ने उस सामग्री का भोजन बना कर भोग लगाया वह स्वाद पाया कि कभी अपनी अवस्था भरमें किसी वस्तु में न प्राप्त हुआ रहा सनातन जी ने रूप जी से इस का कारण पूछा तब उन्होंने मन की बात सब कही तब सनातन जी ने कहा कि सब ऐश्वर्य्य वो संपत्ति के त्याग देने पर भी जिह्वा का स्वाद रहिगया कि जिसके हेतु लाड़िली जी को परिश्रम हुआ अब आगे को चेत रहे एक दिन वृन्दावनमें समाज हुआ सब भगवत भक्त वो साधु इकट्ठे हुए ऐसे प्रेम वो अनुराग के साथ कीर्तन वो भजन हुआ कि जितने लोग रहे सो सब प्रिया प्रीतम के प्रेम में छक के बेसुधि हो गए परंतु रूप जी गोसांई अपने चित्त को दृढ़ करके खड़े रहे गोसाईं करन पुरी जी ने देखा कि रूप जी महाराज सब प्रेमियों के अग्रणीय हैं उनको जो प्रेम भगवत्का न आया तो औरों के निमित्त अच्छा नहीं रूप जी के पास गये समीप पहुंचे तो उनके स्वासकी ऐसी तप्त पवन गोसांई करनपुरी के शरीर को लगी कि फफोले उपट आये गोसांई रूप जी ने आज्ञा की कि जिनको कुछ शरीर का सम्बन्ध रहगया हैं असावधानताई उन को है और जिन लोगों को शरीर से सम्बन्ध नहीं है उन का मन देखना चाहिये शरीर नहीं यहां तक कथा रूप गोसांई की लिखी गई सनातन जी सिवाय कमंडल कोपीन के और कुछ नहीं अपने पास रखते रहे विचारते हुए एक भाट के घर पहुंचे उसके घर में स्वरूप मदन मोहन जी का बिराज मान रहा सनातन जी दर्शन करके आसक्त हो गये और नित्य उसके घर पर जाया करते और आंखों से आंसू का जल बहा करता उस भाट ने कि पहिले साहूकारी करता रहा अब दरिद्री हो गया रहा समझा कि जैसा इस

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

मूर्ति ने इसको दरिद्री वो भिखारी किया जाने इसको भी ऐसा ही
किया हो कि इस मूर्ति को देख कर रोया करता है भाट ने गोसांई जी से राजा
पूछा कि महाराज क्या तुम को भी धन सम्पत्ति घरबार से इस मूर्ति
बेचैन कर दिया है गोसांई जी ने विश्वासता भाट की विचारि के वो
कि भाई तेरे साथ इस मूर्ति ने कुछ भी नहीं किया जो मेरे साथ किए
है भाट ने कहा कि क्या उपाय करूं गोसांई जी ने कहा कि इस भगवान
को शीघ्र अपने घर से बाहर निकाल नहीं तो न जाने अब क्या करै उस
ने कहा कि जो यह ऐसा क्रूर स्वभाव है तो कौन लेवैगा गोसांई जी ने
कहा कि मेरे साथ जो कुछ इसी को करना रहा सो कर चुका मैं ले
जाऊंगा सो ले आये और वृन्दावन में विराजमान करके पूजा सेवा
प्रारम्भ किया भिक्षा मांग के भगवत् को भोग लगाया करते एक दिन
भगवत् ने स्वप्न में आज्ञा दी कि थोड़ासा लोन भी लाया करो जब लोन
लाने लगे तब आज्ञा दी कि थोड़ासा घी भी लाया करो तबसे भी भिक्षा
मांगके लाया करें तब बोले कि बनमें से तरकारी ले आना सहज है वह
भी लाया करो तब सनातन जी ने प्रेम की दृष्टि से ध्यान किया कि मदन
मोहन जी चटोरे हो गये मेरे वैराग को धूल में ला कर मुझ को भी
चटोरा किया चाहते हैं तब विनती की कि जो ऐसा हो स्वाद जीभ का
है तो कोई धनाढ्य किंकर ढूंढ लीजिये और यह कह कर बाहर आय
बैठे संयोग वस किसी साहूकार की नाव माल भरी हुई अकबराबाद को
जाती रही जब वृन्दावनमें कालीदह के समीप पहुंची तो रुक गई
साहूकार ने निकल होकर अपने आदमियों को चारों ओर भेजा कि
देखो इस वन में कोई फकीर साधु है कि जिस से इसकी निवेदन करें
आदमियों ने जाकर कहा एक साधु बैठा है साहूकार आय के चरणों में
पड़ा गोसांई जी ने उस को भगवत् के आगे ले जाकर कहा कि जो कुछ
करतूत है इसबावां की है विनती करें ले साहूकार हाथ जोड़ कर
किसी सेवा की आज्ञा की आसा कर खड़ा हुआ भगवत् की आज्ञा हुई कि
मंदिर अच्छा संगीन बनवा दे वो राग भोग के बन्धान कर दे साहूकार
ने अंगीकार किया नाव रवाने हुई साहूकार ने मंदिर बड़ा भारी बड़ी
भक्ति से निर्मित किया वो राग भोगके निमित्त महीना बन्धान कर दिया
जब सब सामग्री भगवत् सेवा की जुटि गई तब सनातन जी वहां का
अधिकार कृष्ण दास ब्रह्मचारी को देकर आप ब्रज मंडल की परिक्रमा
को चले गये एक बेर मानसर सर के तट पर नंदगांव के समीप एक हींस
के वृक्ष के नीचे तीन दिन बैठे रह गये चौथे दिन भगवत् सुन्दर मनोहर
स्वरूप एक ब्रज वासी के लड़के का स्वांग धर लाल चीरा सिर पर मोहन
पीतांबरी पहिने कटि पीत पट से कसे हुए एक रंगीन छड़ी कुछमें दबाये

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

सके तो दूध भात को लेकर आये गोसांई जी को दी वो कहा कि समय व के समीप जाय कै नहीं बैठता यहां बनमें कौन तेरे निमित्त रंग को लाया करै भगवत् ने हाथ पांव दिये हैं बिना सुकृत का माल खाना अच्छा नहीं गोसांई जी इन बातों को सुन कर परम आनन्द में मग्न हो गये इसी प्रकार तीन दिन भोजन ब्रज चंद महाराज पहुंचाते रहे तब गोसांई जी अपने प्यारे को श्रम देना उचित न समझ कर पता नाम गांव का पूछ कर दूसरे दिन बहुत ढूंढा कहीं पता न लगा तब बहुत विकल हुए और अनेक भांति सोच करने लगे तब स्वप्न हुआ कि वह लड़का हम हीं हैं जैसी तुम्हारी इच्छा होय हम करैं तब गोसांई जी ने विनय किया और उस स्वरूप अरूप के ध्यान रूपी आनन्द के समुद्र में मग्न होगये ॥

गोसांई नारायण भट्ट की कथा ॥

गोसांई नारायण भट्ट प्रेमी भक्तभागवत धर्म के प्रवर्त्त करने वाले हुए और यह गोसांई जी चेले कृष्णदास ब्रह्मचारी चेले सनातन जी पुजारी ठाकुरद्वारे मदनमोहन के सेवक हुए गुरु से कथा श्रीभागवत दशमस्कन्ध जो बालचरित्र इत्यादिक जो सुने सखन के संग जो खेल वो गोपियों के संग रास विलास सब गोसांई जी के हृदय में समाय गई तब यह अभिलाष हुआ कि वह सब स्थान जहां जहां जो क्रीड़ा किया है दर्शन करते सो उनका पता मिल न सका क्योंकि पांच हजार वर्ष भगवत् अवतार को व्यतीत हुए गोसांई जी परम भाव से आराधन भगवत् में लीन हुए भगवत् ने अपने भक्त का मनोर्थ पूर्ण करने को हृदय में प्रकाश किया वो सब स्थान बारह संहिता में जैसे लिखे हैं सब दिखलाय दिये उसी अनुसार नारायण भट्ट जी ने बन उपबन वो गृह कुंज वो बिहार स्थान प्रगट किये सो सबका वर्णन कौन से हो सक्ता है परंतु मुख्य २ स्थानों को लिखते हैं ॥

वर्णन स्थानों का गोकुल वो महावन का ॥

रोहनी मन्दिर वो श्याम मन्दिर कि जहां जन्म भगवत् का हुआ किया महा बन में दिखाते हैं ॥

ब्रह्मघाट जहां नन्द नन्दन महाराज ने माटी खाई वो अपनी माता यशोदा जी को अपने मुख में सब दिखलाए ॥

पूतना द्वार जहां पूतना का प्राण दूध के बहाने खींच लिया ॥

गोप कूप कि सोमवती मावस के दिन किनारे तक जल होकर फिर ज्यों का त्यों हो जाता है ॥

दर्शन नन्द बाबा वो यशोदा माता विश्रन्त स्थान सब मथुराजी-विश्रांत जहांकंसको मारकर विश्राम किया ॥

सात समुद्र कूप ॥

दर्शन द्वारिकाधीश कि जो सब पारख नामे साहूकार ने बनवाया

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

घाट सब जैसे बैराग घाट राम घाट वो अक्रूर घाट वो बैकुण्ठघाट वो बंगाली घाट वो सूरजघाट इत्यादि बिबरन स्थान सब श्री वृन्दाबन के॥

मन्दिर श्री गोबिन्द देव जी वो गोपी नाथ जी वो मदन मोहन जी वो राधा वल्लभ जी वो बांके बिहारी वो अटल बिहारी जी वो चौरासी खम्भा वो आठ खम्भा दही बिलोवने यशोदा जी का स्थान॥

रमन रेती जहां नन्द नन्दन महाराज ने अपने सखन संग भांति भांति की लीला करी॥

यमलार्जुन वृक्ष ऊखल से अटकाय के नन्द नन्दन महाराज ने गिराये॥

दर्शन सात गद्दी गोकुलस्थ गोसाइ लोगों की जिनका वर्णन बल्लभाचार्य की कथा में हुआ॥

रानीघाट वो यशोदा घाट वो वल्लभ घाट इत्यादिक मंदिर केशव देवजी जहां चतुर्भुज रूप होकर प्रगट हुए रंगभूमि जहां कंस को मारा॥

कंसखार जहां कंसको मारकर डाला

दर्शन ठाकुर बासाइजी॥

चौरासि इधर उधर जे हैं मथुरा देवी भूतेश्वर महादेव सप्तऋषि देवी श्लिटीश्वा दशाश्वमेध चक्र तीर्थ ध्रुवक्षेत्र सरस्वती कुण्ड योग मार्ग रावणकुटी छाकबिहारी इ. कंठाभरण [illegible] राजा

ऊपर किनारे श्री यमुनाजी का जो दहघाट वो बिष्णुघाट वो लुका लुकी वो बिहारघाट वो चीर घाट वो केशी घाट वो सूर्यघाट इत्यादिक घाट बज़ तहैं रसिक बिहारी जी वो राधा रमन जी वो श्रृंगार वट वो छैल चिकनियां जी विख्यात हैं और दो मन्दिर नये भारी हैं॥

भारी एक कृष्ण चन्द्रमाजी का लीला बाबू बंगाली दूसरा रंगनाथ जी का राधा कृष्ण भाई लक्ष्मीचंद साहूकार ने बनवाया अधिक इससे सहस्रों दूसरे हैं निधिवन वो सेवा कुंज यह भगवत् के लीला और बिहार के कुंज हैं और जो राजों ने वो अमीरों ने वो साहूकारों इत्यादिकों ने, जो कुंज वो मंदिर बनाए सो अलग हैं॥

ब्रह्म कुण्ड वो गोबिंद कुण्ड वो बेणु कूप इत्यादि के सैकड़ों कूप हैं॥

धीर समीर वो बंशीवट वो ज्ञान गुदरी वो मैनीदास जी की टट्टी वो दूसरे स्थान सब साधू लोगों इत्यादिक का निवास स्थल विख्यात है॥

राधा बाग वो मधुबन वो देवी सिंह वाला बाग और दूसरे बाग जहां सब हरियाली छाई सघन दर्शन योग्य विराजमान हैं॥

विवरण उन स्थान इत्यादि का कि बन यात्रा के समय जिनके दर्शन होते हैं और यह जानिये कि बन यात्रा करने वाले भादों बदी छठ तक मथुरा जीमें पहुंच जाते हैं जिनको जन्माष्टमी वृन्दावन में करनी संगी कार होती है सो मथुरा के घाटों का स्नान वो दर्शनकरके वृन्दावन को

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

सक्ते हो है और जिसको गोकुल में जन्माष्टमी करनी स्वीकार होती समय गोकुल में और कोई कोई मथुरा में टिक रहते हैं वे लोग जन्माष्टमी करके दशमी के दिन सांझ तक मथुरा जी में आके न्हाते हैं और एकादशी से यात्रा आरंभ होती है पन्द्रह दिन में संपूर्ण यात्रा परिक्रमा व्रज मण्डल चौराशी कोश की करके भादों शुदी दशमी अथवा एकादशी तक मथुरा जीमें आजाते हैं और द्वादशी के दिन मथुरा जी की परिक्रमा होती है दूसरी यात्रा वल्लभाचार्य के कुलवालों की तात्पर्य्य गोकुलस्थ गोसांइयों की होती है परंतु प्रति वर्ष का नियम नहीं यह गोसांई आश्विन वदी द्वितीया को यत्रा के निमित्त उठते हैं दीपमालिका जो दिवाली सो गोवर्द्धन जी में करिके कार्तिक शुदी द्वितीया को मथुरा जी के मेलों में आ मिलते हैं यह यात्रा बड़े सुख वो आनंद से होती है वो बहुत लोग उनके अनुयायी उस यात्रा में मिलके जाते हैं अब विवरन टिकांत वो स्थान दर्शन यत्रा पन्द्रह दिन वाले की लिखी जाती है ॥

पहिले दिन ॥

प्रातःकाल विश्रांत घाट स्नान करिके यात्रा के निमित्त पाय पियादे नंगे पायन उठते हैं और भगवत् भजन का नेम उचित है पहिली मंजिल में दर्शन वो यात्रा मधुवन वो तालवन वो कुमुदवन की होजाती है कल्याण नारायण वो यशोदा नंदन वो कपिल मुनि वो गिरिधर राय जी के होते हैं वो सांतनु कुण्ड के स्नान ॥

दूसरे दिन ॥

बहुला वन में टिकांत होता है और वहां दर्शन ठाकुर द्वारे मोहन लाल जी के हैं ॥

तीसरे दिन ॥

गोवर्द्धन जी में पहुंचते हैं ॥

चौथे दिन ॥

वहां टिकांत होता है गिरिराज जी की परिक्रमा होती है हरदेव जी वो नाथ जी विराजमान हैं एक मन्दिर वो गुरुद्वारा श्री संप्रदा वालों का भी है मानसी गंगा वो संकर्षण कुण्ड वो अप्सरा कुण्ड वो पुछंडी कुण्ड वो रासौली वो गांठौली वो गुलाल कुण्ड वो हर जी कुण्ड वो रुद्र कुण्ड वो विजय नाभसीकरा वो राधा कुंड वो कृष्ण कुण्ड वो कुसुम सरवर वो नारद कुण्ड वो ऐरावत कुण्ड वो सुरभी कुंड औ दूसरे सरवर कुण्ड औ भरत पुर के राजा लोगों के बानाये हुए स्थान दर्शन वो स्नान होते हैं वो दीपमालिका को गोवर्द्धन जी में मेला बड़ा भारी होता है वो दीपदान ऐसा कहीं नहीं होता है वो कार्तिक शुदी प्रतिपदा को अन्नकूट वो पूजा गिरिराज की उत्साह पूर्वक धूम धाम से होती है ॥

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

पांच ये दिन ॥

इस समय डीघ में टिकांत होता है वहां बज़त बड़े बड़े स्थान राजा भरतपुर के बज़त हैं अगिले समय में वहां टिकांत नहीं होता रहा ॥

छठये दिन ॥

कामा में पज़ंचते हैं वहां दर्शन ठाकुर गोकुलचन्द वो विजय गोबिन्द वो गोपी नाथ जी वो दुल्हा देवी वो राधा वल्लभ वो सीताराम जी के होते हैं वो भोजन थाली वो घिसिनी शिला प्रदक्षिना में आते हैं सातवें दिन तक रह कर ॥

आठयें दिन ॥

बरसाने में जो जन्म भूमि श्री लाड़िली जी की है वहां पज़ंचते हैं श्री लाड़िली जी का मन्दिर बज़त ऊंचा वो भारी पहाड़ के ऊपर है वो बाबा वृषभान वो कीर्ति जी वो श्री दामा जी के दर्शन होते हैं और दान गढ़ जहां दान लीला ऊई और मान गढ़ जहां वृषभान किशोरी ने नन्द किशोर से मान किया वो विलासगढ़ जहां प्रिया पीतम ने विहार वो विलास किया वो ओर कुटी जहां मोर के नाईं बोल के लाड़िली जी को बुलाया वो सांकरी खोर जहां अकेली देख नन्द किशोर ने लाड़िली जी को पकड़ लिया और जो चाहा सो किया और गह वर बन जो वह भी विहार स्थान है और दूसरे स्थान वो मन्दिरों के दर्शन होते हैं वो भानुसरवर वो श्री पोखर वो प्रेम सरवर इत्यादि कुण्ड वो लाड़िली जी के न्हाने और खेलने की ठौर सब हैं और ऊंचो गांव जो जन्म भूमि गोसांई नारायण भट्ट जी की कि जिन की कथा में यह सब वृत्तांत लिखा जाता है बरसाने के समीप है और एक मन्दिर में बलदेव जी का भी दर्शन होता है और देह कुण्ड जो चिबेणी वहां हैं ॥

नवें दिन ॥

नंद गर्म बाबा नंदजी के स्थान में पज़ंचते हैं वहां बाबानंदजी वो यशोदा माता जीवो यशोदा नंदन वो बलदेवजी वो बिहारी विहारन के मंदिर वो स्नान सरोवर वो ललिता कुण्ड वो विसाखा कुंड वो यशोदा कुंड वो मधुसूदन कुण्ड वो मोती कुण्ड वो कृष्ण कुण्ड वो कदम खंडी इत्यादिक तीर्थ हैं वो मथानी कि जहां यशोदा महारानी ने दूध बिलोया वो हाऊ कि जहां नंदनंदन को हाऊ कह कर डर पाया वहां है जावबट कि जहां लाड़िलीजी के चरणों में जावक लगाया कोकिला वन कि जहां कोकिला की भांति बोलके लाड़िली जीको बुलाया रासौली कि जहां रास किया बठैन कि जहां लाड़िली जीकी वेणी गूंथी वो रंग महल वो संकेत बिहारी ठाकुरवो संकेत देवी बिराज मान ॥

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

दशवें दिन ॥

शेष शायी में पहुंचते हैं वहां शेष शायी महाराज बिराजमान हैं इस हेतु करके उस गांवको भी शेषशायी कहते हैं वो विष्णु नारायण का मंदिर वो क्षीरसमुद्र तीर्थ है वो मार्ग में कदम खंडी वो क्षीर वन दर्शन होते हैं यहां से बहुत लोग राधाष्टमी करने के हेतु बरसाने को चले जाते हैं और कोई वृन्दावन को चले आते हैं और लोग ब्रज मंडल की परिक्रमा पूरी करने को यमुना पार उतरते हैं ॥

ग्यारहें दिन ॥

सेर गढ़ होकर चीर घाट जहां कात्यायनी देवी के दर्शन होते हैं सेरगढ़ में दो मन्दिर हैं वो चीर घाट से थोड़ी दूर नन्द घाट हैं तहां उतर के भद्रवन वो भांडीर वन वो वेल वन को यात्रा होती है ॥

बारहें दिन ॥

माट वन में विश्राम होता है भगवत् मन्दिर वहांहै परंतु प्राचीन वो विख्यात मन्दिर कोई नहीं है ॥

तेरहें दिन ॥

लोह वन में टिकांत होती हैं वो पथ में नन्दी देवी को बन्दी देवी के दर्शन होते हैं ॥

चौदहें दिन ॥

बलदेवजी में पहुंचते हैं वो बलदेवजी महाराजके दर्शन होते हैं एक मंदिर भगवत का वो दो तीर्थ भी वहां हैं ॥

पन्द्रहें दिन ॥

मथुरा में पहुंचते हैं पंथ में गोकुल वो महावन के दर्शन होते हैं कि वहां के स्थानों वो तीर्थों का विवरन पहिले ही लिख चुके हैं जो सब लिख आये ऊपर तिस से अधिक बन वो स्थान बहुते हैं सब यात्रा के समय पंथ में नहीं पड़ते हैं ॥

जब सब स्थान वो बन जो ऊपर लिख आये प्रगट होगये तब नारायण भट्ट जी को यह अभिलाषा हुई कि जिस प्रकार ब्रज चंद महाराज ने इन स्थानों पर रास विलास वो चरित्र किये हैं सब प्रत्यक्ष वो साक्षात देखें सो भगवत् ने उनको आज्ञा की कि वल्लभ नामा नृत्यकर बादशाही सेवा छोड़ कर वृन्दावन वास करता है तुम और वह ब्राह्मणों के लड़कों को मेरा और गोपिकाओं का रूप बना कर लीलानु करन से मेरे चरित्रों का अवलोकन करो तब गोसाईं जी ने वल्लभ नामा नर्तक को आज्ञा दी उस ने एक ब्राह्मण बालक को श्री ब्रजचंद का रूप एक को लाडिली जी का रूप और आठ लड़कों को ललिता विशाखा इत्यादि सखियों का रूप बना कर सब साधना नृत्यगाने की सिखाई और जहां जहां जो चरित्र और रास विलास भगवत् किये रहे सब चरित्र किये जाने श्रीकृष्ण

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

अवतार को नवीन कर दिया और अब तक वह रास लीला की परम्परा प्रवर्तमान है जब यह सब उपकार जगत के वास्ते प्रगट कर दिया तब इच्छा परम धाम गोलोक की की और अपने सेवकन से आज्ञा किया कि हमारा शरीर त्रिवेणी पर ले जाना सबने पूछा त्रिवेणी कहां है बतलाया कि कंचा गांव में बरसाने के निकट त्रिवेणी है गोसाईं जी एक यह भी तीर्थ प्रगट किया और अब तक गोसाईं जी के वंश उस गांव में वर्तमान हैं जब रास अथवा समाज होता है तब पहिले उनके वंश को अधिष्ठाता वो मुखिया समझ करसत्कार पूर्वक आगे बैठालते हैं ॥

निम्बार्क स्वामी की कथा ॥

निम्बार्क स्वामी परम भक्त ऋषीश्वर भागवत धर्म प्रचारक हुए महाराष्ट्र ब्राह्मण मूंगेर में गोदावरी के निकट अरुण ऋषीश्वर की जयंती धर्मपत्नी के गर्भ से जन्म हुआ सनकादिक संप्रदा जो विख्यात है उस के प्रवर्त्ति करने वाले वो आचार्य्य ये स्वामी हैं यद्यपि परम्परा इस संप्रदा की भगवत् के हंस अवतार से है परंतु इस संसार में निम्बार्क स्वामी से प्रकाशमान हुई इस हेतु निम्बार्क स्वामी के नाम से विख्यात हुआ और हंस भगवान ने प्रथम उपदेश सनकादिको किया रहा इस हेतु सनकादि संप्रदा कहते हैं गुरु परम्परा से वृत्तान्त गुरु वो चेले साखोप साखा का ज्ञात होगा यद्यपि सेवक लोग इस संप्रदा के शारीरक सूत्रों पर निम्बार्क भाष्य वर्णन करते हैं परंतु इस देश में नहीं मिलता जो श्लोक निम्बरचित स्वामी जी के हैं वेविशेष करिके मिलते हैं उन श्लोकों में रीति उपासना और ईश्वर माया जीव का निरधार और पद्धति उपासना की कथित है और व्याख्या उन की विस्तार के सहित है कि स्पष्ट करि के वृत्तान्त उपासना का उन से ज्ञात होता है उन श्लोकों में मुख्यतर दश श्लोकी श्लोक हैं उन श्लोकों के अनुसार तात्पर्य्य निश्चय यह संप्रदा का यह सिद्धांत समझने में आता है कि ईश्वर द्वैता द्वैत है जैसे सर्प का कुंडल सर्प से भिन्न नहीं और प्राणी तरंग से भिन्न नहीं इसी प्रकार यह जगत् ईश्वर से भिन्न नहीं परंतु नाम मात्र को भिन्न की भांति दिखाई देता है वह ईश्वर एक पूर्ण ब्रह्म सच्चिदा नन्द घन श्री कृष्ण गोलोक निवासी हैं और माधुर्य्य जो शृंगार की एक शाखा है और अच्छी प्रकार उसका वर्णन तो दसवीं निष्ठा में होगा उसी माधुर्य्य की रीति से ध्यान वो चिन्तन करते हैं यद्यपि इस उपासना में युगल स्वरूप श्री राधा कृष्ण का ध्यान और सेवा की रीति पुष्ट है परन्तु आदि आचार्य्य के बनाये हुए ग्रन्थों से पूर्ण प्रभुता श्री कृष्ण स्वामी की और उनका ही ध्यान करना पाया जाता है कहते कि संक्षेप सिद्धांत निम्बार्क स्वामी का यह है कि नहीं देख पड़ती कोई गति बिना कृष्ण चरणारविन्द के कैसे हैं वह चरण कि ब्रह्मा और

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

शिव उनको दण्डवत करते हैं और श्री कृष्ण महाराज कैसे हैं कि भक्तों के अभिलाषा के हेतु भांति भांति के अवतार धारण करते हैं और मन वो बुद्धि के तर्क में नहीं आसक्ते हैं जिसकी मूर्ति और जिसका अवतार विचार में नहीं आसक्ता है गूढ़ है भेद जिसका एक जगह जुगल ध्यान लिखा है और दूसरी जगह केवल श्रीकृष्ण स्वामी का सो यह कुछ वास्तव करि के विरोध नहीं है यह विचार कर लेना चाहिये कि जब गोलोक निवासी की उपासना दृढ़ ठहरती तो जुगल स्वरूप का ध्यान वो चिंतवन आपसे आप सूचित वो उचित हुआ वो तिलक आदिक का वृत्तान्त भेष निष्ठा में लिखा जायगा वो अलौकिक चमत्कार निम्बार्क स्वामी के बहुत हैं परंतु उन में से एक चमत्कार वह लिखते हैं जिस कारण से निम्बार्क नाम विख्यात हुआ एक समय एक संन्यासी स्वामी के स्थान पर अतिथ उसका सिष्टा चार स्वामी ने किया, परंतु रसोई के सिद्ध करने में संध्या होगई संन्यासी संध्या भये पीछे भोजन स्वीकार न करे स्वामी जी को दया आई तब आंगन में निम्बका वृक्षरूप उस पर अर्क अर्थात् सूर्य को दिखा दिया कि संन्यासी ने संतुष्ट होकर भोजन किया जब भोजन कर उठा तब चार घड़ी रात बीती देखी उस दिन से नाम स्वामी का निम्बार्क करिके विख्यात हुआ और कोई मुख्य नाम अर्क कहते हैं नामी गुरुद्वारा एक स्थान अरुण दक्षिण देश में दूसरा स्थान सलेमाबाद है और तो हजारों स्थान हैं ॥

हंस भगवान १	सनकादिक २	नारद ३	निम्बार्क स्वामी ४	श्रीनिवासाचार्य्य ५
विश्वाचार्य्य ६	पुरुषोत्तमाचार्य्य ७	श्रीविलासाचार्य्य ८	श्रीस्वरूपाचार्य्य ९	श्रीमाधवाचार्य्य १०
श्रीपद्माचार्य्य ११	श्री श्यामाचार्य्य १२	बलभद्राचार्य्य १३	गोपालाचार्य्य १४	कृपाचार्य्य १५
देवाचार्य्य १६	सुन्दर भट्ट १७	पद्मनाभ भट्ट १८	उपेन्द्र भट्ट १९	चन्द्र भट्ट २०
बादन भट्ट २१	कृष्ण भट्ट २२	पद्माकर भट्ट २३	अधण भट्ट २४	भूरि भट्ट २५
माधव भट्ट २६	श्याम भट्ट २७	गोपाल भट्ट २८	बलभद्र भट्ट २९	गोपीनाथभट्ट ३०
केशव भट्ट ३१	गागल भट्ट ३२	केशव काश्मीरी भट्ट ३३	श्री भट्ट ३४	हरिव्यासदेव जी ३५

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

परशुराम देव जी ३६	हरिबंश देव जी ३७	नारायण देव ३८	गोबिन्द देव ३९	गोबिन्दशरणदेव ४०
ईश्वर शरण देव ४१	श्री निम्बार्क शरण देव ४२	श्री ब्रजराजशरण देव ४३	गोपेश्वर शरण देव ४४	विराज मान ४५

गोपेश्वर शरण देव महाराज विख्यात श्री जी—संवत् १९१३ में अलेजा बाद की गद्दी पर विराजमान हुए ॥

हरिव्यास जी की कथा ॥

हरि व्यास जी सुमुखन शुक्ल ब्राह्मण के पुत्र निम्बार्क संप्रदा में परम भक्त ऐसे हुए कि अब तक जिन की कृपा से लाखों को भगवत् प्राप्ति होती है तिलक माला से अत्यंत प्रीति जिन की हुई पूर्व नाम उन का हरीराम रहा और रहने वाले कोड़छे के थे संवत् १९१२ में अपने घर को छोड़ कर पैंतालीस वर्ष की अवस्था में वृन्दाबन में आये भागवत धर्म की प्रवृति चलाई हजारों को सेवक करके भक्त कर दिया परंतु बारह सेवक तो ऐसे सिद्ध और परम भक्त और प्रतापी हुए कि जिन के नाम से अलग २ गुरु द्वारे चले और अब तक गुरुद्वारों से बढवारी भगवत् भक्ति की सब को है गुरुद्वारे सब आदिपरंपरा की रीति से निम्बार्क संप्रदाके विख्यात हैं और कई प्रकारकी रीतिजो आप व्यासजीने चलाई सो गुरुद्वारे अलग बारह १२ गुरुद्वारे से हैं यह कि निज जो वंशव्यास जी के हुए उसप्रवृति की रीतिसे उनका गुरुद्वारा है और उनका पट्ट गोसाईं करके वृन्दाबन विख्यात है और इस गुरुद्वारे के सेवक हरि व्यास कहि के विख्यात होते हैं जब व्यास जी ने वृन्दाबन में बास किया तब ऐसी प्रीति उस परम धाम में और भगवत् में हुई कि एक दम भी वृन्दाबन से अन्यत्र रहि न सकैं बरन और कोई जो जाने के निमित्त कहता तो अत्यन्त उस से दुखित होतेरहे सुन्दर नामी कोड़छे का राजा व्यासजी का सेवक रहा अपने यहां लेजाने की कामना कर के वृन्दाबन में आया और बड़ी विनय प्रार्थनाकी तब व्यासजी ने कहा कि वृन्दाबन के द्रुमलता साखा वो बन की छाया के शरण में सदा रहा हूं उन से बिदा होकर चलूंगा सो बिदा होने के निमित्त चले वो राजा भी साथ हुआ जिस वृक्ष के नीचे जाते हाथ जोड़ कर बिनती करते कि महाराज तुम्हारी शरण आया रहा अब का आज्ञा है राजा ने अपने मनमें समझा कि इसी प्रकार कहते कहते देश को चले चलेंगे तब तक एक भंगिन गोबिन्द देवजी के मन्दिर से मलल सीय प्रसादी हरि भक्तों का और भगवत् का प्रसाद उठा कर उस राह से जाती रही व्यासजी ने पूछा कि क्या है भंगिनने उत्तर दिया कि महा

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

प्रसाद है व्यासजी ने दौड़ कर एक पुलौरी महा प्रसादे की उस से लेकर भोजन कर लिया राजा ने यह जाना कि गुरुदेव महाराज को चित्त भ्रम होगया है जो देश में जावैंगे तो लोगों को वे धर्म करैंगे इस हेतु बिदा होके अपने आप चला गया और व्यासजीने उस का जाना भगवत् की बड़ी कृपा समझ कर धन्य माना सर्व काल श्री किशोर किशोरी जी की सेवा पूजा में रहते रहे एक दिन शृंगार के समय जरकशी का चीरा बांधते रहे सो जरीको चिकनाई के कारण से बांधतें में सुन्दर नहीं आता रहा कई बार बांधा परंतु सुन्दर नहीं उतरा व्यासजीने क्रोधित होके कहा कि जो लड़कोईपनमें यह दशा ढिठाई की है तो फिर न जाने क्या होगा जो मेरा बांधना नहीं भावता है तो आप बांध लेऊ और यह कह कर कुंज से बाहर जाबैठे थोड़े काल पीछे जो लोग दर्शन करके गये तो व्यासजी से कहा कि आज भगवत् का चीरा बड़ा सुंदर बंधा है व्यासजी अभिलाष भरे हुए आये देख कर कहने लगे जहां अपने हाथ ऐसी प्रवीनता को सुधरता है तो दूसरे की कब मन भाय सक्ती है एक दिन हरि भक्तोंका समाज भोजन करने को बैठा था व्यासजी की स्त्री परोसती रही संयोग बश दूध की मलाई व्यासजी के कटोरे में गिर पड़ी व्यासजी ने यह जाना कि पति भाव की प्रीति वश हम को अधिक दिया है तुरंत पंगत से निकाल दिया स्त्रीने विनती किया कुछ न सुना तब तीन दिन बिना दाना पानी रह गई और सब हरि भक्तों ने व्यास जी को समझायत तब अंगीकार किया परंतु दण्डमें सब गहना बेंच के साधों का भण्डाराकर दिया व्यासजी के लड़की को सगाईरही और पकवान कई प्रकार का बरात के निमित्त बना हुआ रहा व्यास जीने वह सामग्री सुन्दर मधुर भगवत् भक्तों के योग्य समझ तुरंत छिपाय कर भगवत् भक्तों को भोजन करा दिया जब बरात आई और कोठे पकवान को रीता पाया तब तुरंत लोगों ने पकवान बना कर बरात को जिमाया घर के लोग व्यासजी से बहुत उदास हुए व्यासजी ने तुरन्त एक विष्णु पद बना कर भगवत् भेंट किया अर्थ उस का यह है कि जिन लोगों को समधी प्यारे हैं और वे लोग भगवत् भक्तों को सूखा आटा देते हैं और समधी को भोजन भेंटे तो ऐसे विमुखों को जमके खींचते खींचते हार जाते हैं एक समय व्यासजी भगवत् के हाथ में बांसुरी चांदी की देते रहे उसकी कोर से उंगली छिल गई रुधिर निकल आया व्यासजी ने चिन्ता में होकर भगवत् अंगुली पर कपड़ा पानी से भिगो कर बांधा कि अब तक यह रीति किशोर महाराज के शृंगार के समय वर्तमान है इस चरित्र से भगवत् अपने भक्त के माधुर्य भाव को पक्का वो दृढ़ करके उपदेश वो प्रेम के पंथ को दिखलाते हैं कि जिस भाव से मेरे भक्त मेरा आराधन करते हैं उसी भाव से प्रगट होता हूं एक ब्राह्मण

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

वोड़छे का रहने वाला व्यास जी के पास आया और जहां हरि भक्तों के निमित्त रसोई बनती रही तहां भोजन करना अंगीकार न किया व्यास जीने उसको अन्न दिला दिया वह ब्राह्मण चर्म के छागल में जल लाकर रसोई करने लगा व्यास जी जूतों में घी उसके निमित्त ले गये और रसोई में रख दिया ब्राह्मण क्रोध युक्त उदास होकर उठा व्यास जी ने हाथ जोड़कर कहा कि आप के उदासी की कोई बात नहीं हुई जिस धातु का बरतन पानीके निमित्त आप अपने पास रखते हैं उसी धातु के कटोरे में घोलाया हूं वह ब्राह्मण लज्जित होकर अभिप्राय व्यास जी के मनका समझ कर भगवत् शरण होकर भगवत् भक्त होगया एक साधु बहुत दिन तक मन्दिर में व्यास जी की सेवा में रहा किशोर किशोरी जी के सन्मुख कीर्तन अच्छा किया करता था जब इच्छा चलने की करता तब व्यास जी उसको समझा करठहरा लिया करते कि वृन्दा बनको छोड़ कर कहां जाते हो एक दिन हठ करके विदा हुआ और चलता शालग्राम जी का जोकि मन्दिर में पधराय दिया रहा मांगा व्यास जी ने एक सोनेका चिड़िया डिब्बे में बन्द करके साधू को दिया साधू भोला लेकर चला गया जब यमुना जी के किनारे पर सेवा पूजा के निमित्त डिब्बा खोला तो चिड़िया उड़ गई वह साधू व्यास जी के पास गया कि महाराज मेरे ठाकुर स्वामी इस ओर आये हैं ढुंढवादेव व्यास जी ने उत्तर दिया कि सत्य है तुम्हारे स्वामी दरश परस किशोर महाराज से हो गये हैं क्या जाने उसी स्नेह से चले आये होंगे सो ढूंढेंगे और यह कह कर मंदिर में आये आकार साधू से कहा कि तुम्हारे स्वामी किशोर जी के पास बैठे हैं तुम्हारे स्वामी वृन्दावन से आया नहीं चाहते तो तुम किस हेतु जाते हो उस साधू ने सब ओर के जाने आने की इच्छा त्याग करके वृन्दावन में वास किया भक्तों को भगवत् का रास समाज वृन्दावन में होता रहा सब रसिक जन प्रिया प्रीतम की छवि से छके हुए प्रेम मग्न रहे नृत्य में प्रिया जी के चरण से नूपुर टूट गया और ताल के समा में भेद आने लगा व्यास जीने तुरंत अपना जनेऊ तोड़ कर नूपुर गूंथ कर पहना दिया और कहा कि अपनी अवस्था भर इस यज्ञोपवीत को गले का भार जानता रहा आज उसका रखना सफल हुआ भक्तमाल में जो व्यास जी के वर्णन में नाभा जी ने यह पद लिखा है कि भक्त इष्ट आदि व्यास के यह सुन कर एक महन्त परीक्षा लेने के निमित्त लाहौर से आया जमात भारी साथ में रही सब साधू संग के भूख जनावने लगे व्यास जी ने कहा अब रसोई बन कर भगवत् को भोग लगाया जाता है कुछ विलम्ब नहीं है परंतु साधु लोग माने नहीं व्यास जी पै जो भगवत् प्रसाद रहा साधुन के आगे लाये वे लोग दो चार ग्रास भोजन करके और कुछ

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

दरद का बहाना करके उठ खड़े हुए व्यास जीने उन साधुओं की सीथ प्रसादी को बहुत यत्न से रख लिया और हाथ जोड़ कर बिनय किया कि आपने अन्तत्य दया से पालन किया कि अपनी जूठन को कृपा करके दिया और कुछ दिन के भोजन के निमित्त पूंजी हो गई अब कृपा करैं कि दूसरा भोजन बनता है उसको अंगी कार करैं सब महंतों को व्यास जी में दृढ़ बिश्वास आया और जाना कि इस प्रकार निश्चय भक्तों का बिना व्यास जी के और किस को होगा व्यास जी ने एक पद भगवत् भेट किया कि उससे महिमा सीथ प्रसाद भगवत् भक्तों की प्रगट होती है अर्थ उसका यह है कि जो हरि भक्तों का सीथ नहीं खाते हैं उनके मुख सूकर और कूकर के मुख के सदृश हैं इस हेतु कि लड़का छोटी अवस्था का जिसके नाक से रैंट बहता है और गालों तक लगा हुआ है उसका मुख चूमते हुए और काम के बस में होकर स्त्री की राल चाटते हुए तो मन को घृणा नहीं होती और भगवत् भक्तों का सीथ प्रसाद खाते हुए घृणा करते हैं तो क्यों न दुर्गती होंगे व्यास जी के तीन पुत्र रहें सो झगड़ा निबटत के हेतु बिभाग कर देना सम्पत्ति का उचित समझ कर तीन भाग बनाये एक भाग तो संपूर्ण द्रव्यका और दूसरा श्री किशोर किशोरी जी महाराजका और तीसरा तिलकछाप और श्यामबन्दनीका सो भाग पहिला और दूसरा तो राम दास औ बिलास दास पहिले और दूसरे पुत्रों ने लिया और किशोर दास जी के बट में तिलक इत्यादिक आया उन्हों ने वह तिलक और छाप लेकर और स्वामी हरि दास जी से छाप धारण करा कर भगवत् भजन आरंभ किया और थोड़े ही काल में सिद्ध और शुद्ध चित्त होकर भक्त दृढ़ हो गये एक दिन किशोर दासजी और व्यास जी स्वामी हरि दास जीके साथ यमुना पर गए थे वहां एक बिष्णु पद भगवत् के रास बिलास का अपना बनाया हुआ गान किया और चले आये व्यास जी ने उसी बिष्णु पद को नित्य रासके निज भगवत् पुराण में ब्रह्माको ललिताजी के मुखसे कहा हुआ सुना व्यासजीने इस कारण से किशोर दासजी की भक्ति को निश्चय किया हरि व्यासजी महाराज के चेले सिद्ध और बड़े योग्य भये उनमें से परशुराम देव जीकी गुरु परम्परा निम्बार्क स्वामी की कथा में लिखी गई और सोभू राम जी का वृत्तांत उनकी कथा में लिखा जायगा और यद्यपि परम्परा विंदु वंश और नाद वंश हरि व्यासजी का भी विवरण सहित प्राप्त हुआ था परंतु संदेह हुआ हो गया इस हेतु न लिखा यही दो परम्परा विशेष समझना ॥

सोभू रामजीकी कथा ॥

सोभू राम जी जाति के ब्राह्मण रहने वाले बोड़िया के चेला हरि व्यासजी के जिनकी कथा ऊपर हुई परम भक्त निम्बार्क संप्रदा में हुए अब

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

तेक मंदिर वा बाटिका उनके निवास का वोड़िये जगाधरी के समीप एक कोस पर विराजमान है और ऐसा प्रतापी गुरुद्वारा है कि लाखों को जिसके प्रभाव करिकै भगवत् भक्ति प्राप्त ऊई वो होती है सोभ रामजी की कृपा करिकै उस देशमें भक्ति का प्रचार ऊआ एक वेर यमुनाजी चढ़ी नगर डबने लगा सब ने आयके पुकारा तब आपने बिनय किया वो कहा कि ऐसोही इच्छा है तो मैंभी सहायता को प्राप्त हूं यह कहिके फावड़ा लेके पानी आने की राह बनावने लगे यमुनाजी हट गई वो आरती के समय शंख ध्वनि ऊआ करती सो सुनी कि हाकिम ने क्रोध युक्त होकर विचारा कि इसको काला मुंह करि गधे पर चढ़ाना चाहिये सोभराम जी वैसोही रूप बनाकर उसके द्वार पर गये देखिके आधीन होगयो वो लज्जित होकर अपराध क्षमा करायो वे आत्माराम जिनके भाई उनकी कृपा वो दीक्षा से सब गुण करिकै युक्त परम भक्त ये मानो कृष्ण भक्तिके खंभ ऊए वो संत दास वो माधोदास दो भाई दूसरे उनकी भी भक्ति और महिमा वैसोही ऊई कि माधोदास जोने योगियों को ज्ञान समर में विजय किया एक वेर योगियों के स्थान में उतरे आग जला कर बैठ रहे योगियों का स्वामी क्रोध युक्त ऊआ तब सब अग्नि बलती ऊई अपने अंचला से उठा कर ले जाके अलग जा बैठे योगी यह चरित्र देखकर आधीन होगया चरणों में पड़ा इन दोनों भाइयों ने भक्ति के प्रकाश करने को मानो अवतार लिया था एकही समय में दोनों भाईयों ने यह प्रकाश किया ॥

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

अथ गुरु परम्परा हरि व्यासदेव जी की ॥

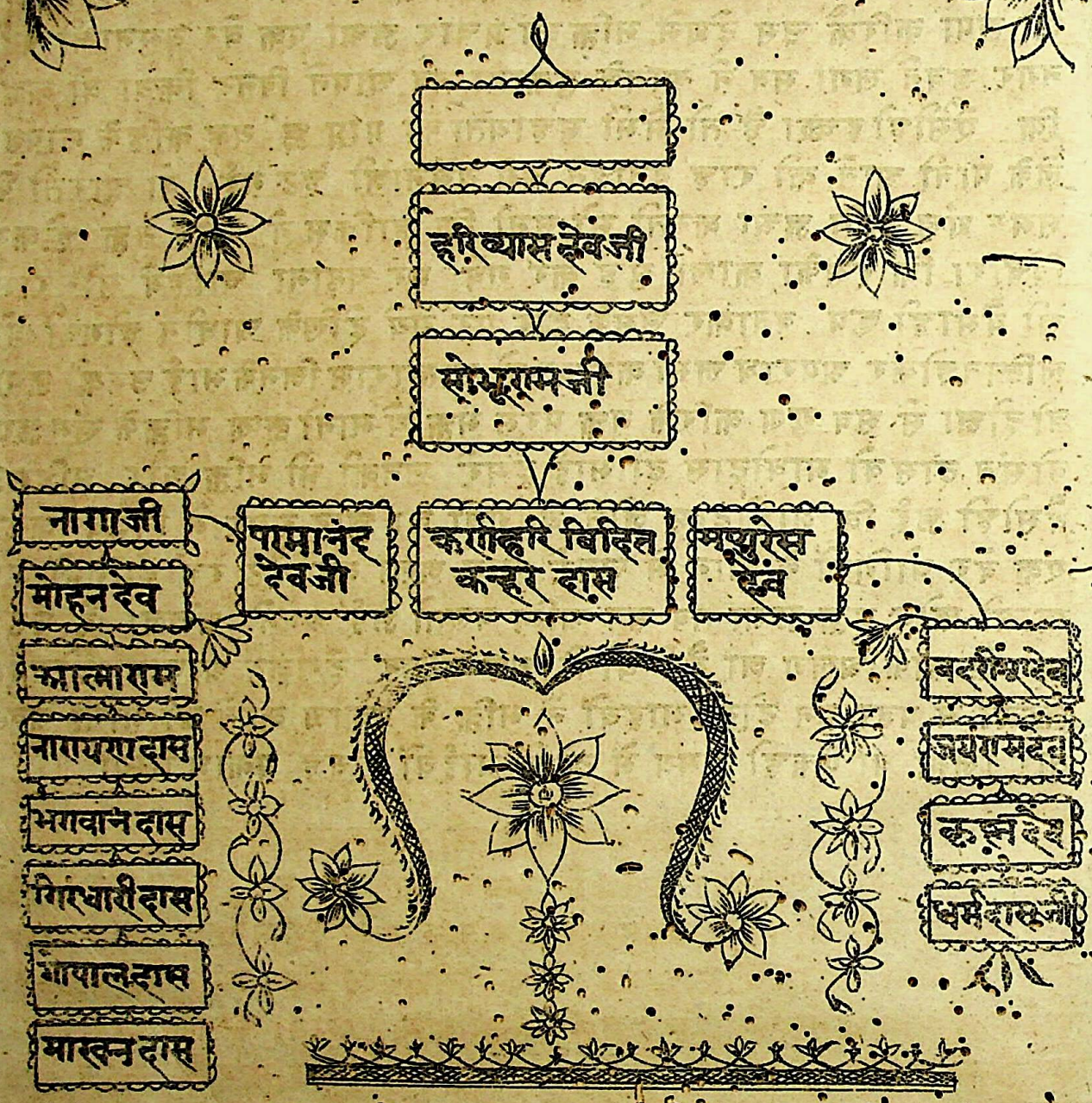

हित हरिवंश जी की कथा ॥

हित हरिवंश गोसाईं जी के भजन और भावको ऐसा कौन है जो वर्णन कर सके कि जिसने राधिका महारानी की प्रधानता करके मनको दृढ़ विश्वास से लगाया और प्रिया प्रीतम के नित्य विहार और कुंज महल में मानसी ध्यान करिके प्राप्त होकर सखी भाव से टहल वो सेवा शृंगार आदि की करी वो भगवत् के महा प्रसाद में. ऐसा विश्वासी था कि अपना सर्वस्व जानते रहे वो विधि निषेध के व्यौहार से अलग होकर

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

अनन्य दृढ़ भक्ति में मग्न रहते रहे व्यास सूनु के विश्वास और मार्ग पर जो कोई होवै वह भी अच्छे प्रकार उस पंथ को जान सकता है नाभा जी ने जो व्यास सूनु यह पदमूल भक्तमाल में लिखा तो उसके अर्थ से शुकदेवजी का भी बोध होता है और हरिवंशजी का भी क्योंकि उनके पिता का नाम व्यास रहा ये गोसाईं महाराज राधावल्लभी संप्रदा के आचार्य्य हुए कि जिस के प्रभाव से सहस्रों भगवत् सन्मुख होकर संगति को पहुंचे हैं व्यास उनके पिता गौड़ ब्राह्मण रहने वाले देव नन्दन दूला के सरकार सहारनपुर में बादशाही अधिकारी रहे परंतु बंश नहीं था नरसिंह आश्रम बड़े भाई उपासक बसिंह जी के आशीर्वाद वो कृपा से हरिवंश जी तारानाम व्यास पत्नी के गर्भ से संवत् १५५९ में उत्पन्न हुए पहिलेही से भक्ति और राधाकृष्ण महाराज की रही राधिका महारानी ने पीपल के वृक्ष पर मंत्र का पता स्वप्न में दिया वो एक भगवत् मूर्ति का पता भी कूप में जनादिया गोसाईं जी ने वह मंत्र और मूर्ति प्राप्त करके मंत्र को तो जप आरम्भ किया और भगवत् मूर्ति वो राधिका जी की गादी बिराजमान करके सेवा पूजा करने लगे रुक्मिणी नाम स्त्री के गर्भ से दो पुत्र और एक पुत्री जन्मे जब विवाहादि उनका हो गया तब वृन्दावन सेवन की इच्छा करके चले चरथावल ग्राम में भगवत् आज्ञा करके एक ब्राह्मण ने अपनी दो लड़की और राधावल्लभ जी की मूर्ति भेट करी वृन्दावन में पहुंच कर मंदिर बनवाया और भगवत् मूर्ति वो राधिका जी की जगह गादी स्थापना करिके पद्धति राधा वल्लभी संप्रदा की चलाई इस संप्रदा में राधा कृष्णयुगल स्वरूप की उपासना है परंतु राधिका महारानी की भावना विशेष है अपने आप को सखी और दासी श्री राधिकाजी की जान कर ध्यान युगल स्वरूप और शृंगार राधिका महारानी में मग्न रहते हैं और यह उनका निश्चय है कि कृपा वो अनुग्रह राधिका महारानी का होना चाहिये श्रीकृष्ण स्वामी आपसे आप कृपा करेंगे और दृष्टान्त शृंगार वो तिलक आदिका निशा शृंगार और भेष में लिखा जायगा राधा सुधानिधि ग्रंथ संस्कृत में कि उसकी प्रेम भक्ति वो काव्य की रचना पदकी मधुरताई वर्णनमें नहीं आसकी है और भाषा में हित चौरासी रचना किया जिस गोसाईं जी का प्रसिद्ध वो विख्यात है गोसाईं जी की भगवत् प्रसाद में ऐसी निष्ठा रही कि मान का बीड़ा भगवत् प्रसादी को कड़ोर एकादशीव्रत पर अधिकतर समझते रहे कोई कोई माध्व संप्रदा वाले पूर्व कुछ सेवक होने माध्व संप्रदा का गोसाईं जी को कहते हैं परंतु कुछ बात नहीं हरिवंश जी राधिका जी की कृपा करि के स्वयं सिद्ध भये इस में कुछ संदेह नहीं वो रीति भजन की नई रस भक्ति प्रेम नई निकाली वो निम्बार्क संप्रदा वो माध्व संप्रदा से सिद्धांत

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

उपासना पुन करिके अद्भुत रस भजन की रीति पुष्टकरी इस संप्रदा में राधिका महारानी में परकिया भाव है वो बंश गोसाईं जी के देवनन्दन वो वृन्दावन दोनों जगह बिराजमान हैं और श्री राधाबल्लभ लालजी के उपासना का उपदेश प्रसिद्ध वो प्रभाव संसार में प्रगट है ॥

चतुर्भुजजी की कथा ॥

चतुर्भुजजी चेले हित हरिबंशजी के भगवत् भक्त ऐसे ऊए कि भगवत् भक्त और भजन का प्रताप बहुत लोगों के हृदय में दृढ़ करिके भगवत् की ओर लगा दिया और श्री राधबल्लभ लाल जी के ऐसे चरित्र पवित्र काव्य किये कि हजारों उनको पढ़ सुनकर संगति को प्राप्त ऊए हरि भक्तों की ऐसी सेवाकरी कि उनके चरणरज को अपने शिर का भूषण समझा और सत्संग का यह विश्वास रहा कि उसी में मगन रहते थे जिन्होंने गुरु चरणकी कृपा से गोड़ वाने देश को भगवत् भक्त कर दिया यह कि उस देश के आदिमियों को काली जी की उपासना थी आदिमी को मार कर चढ़ा देते थे भगवत् भक्ति का प्रवेश निर्मल तनक नहीं रहा चतुर्भुज जी का संयोग उस देश में जाने की ऊछा चहै दशा देखी तो पहिले कालोही को भगवत् भक्त करना प्रयोजन जानि कर भगवत मंत्र सुनाया काली जब हरि भक्त ऊई तब लोगों को स्वप्न में शिक्षा कियो कि तुम लोग स्वामी चतुर्भुज जी के शीघ्रही सेवक होकर भगवत् भक्ति अंगीकार करो नहीं तो सब का नाश होजायगा सब कोई दौड़ आये और चेले ऊए माला तिलक धारण करके भगवत भक्त होगये और पूर्वके पापों से छूट गये स्वामी जीने कुछ दिन उस देश में रहकर भगवत आराधना और उत्साह वो साधु सेवा को अच्छा फैलाया और श्री जड़भरत चरित्र सुनाकर भगवत् प्रेम में पूरन करि दिया एक उचक्का किसी बनिये की थैली उठाकर जला धनी पीछे पड़ा उचक्के ने जब कोई जगह छुपने की न देखी तो स्वामी जी की कथा में जा बैठा उस समय यह कथा होती थी कि जो कोई साधु विप्र दीक्षा लेता है उसका जन्म नवीन होजाता है यह सुनकर वह उचक्का भी चेला स्वामी जी का होगया तिसके पीछे थैली वाला बनिया जा पहुंचा और लोहे का गोला तप्त करके हाथ पर रक्खा साधु ने राजा के सामने सौगंद दी कि इस जन्म में किसी का धन नहीं चुराया निदान साधु जीत गया राजा ने बनिये को शूली देने की आज्ञा दी जब साधु ने सब वृत्तान्त वर्णन किया तब राजा ने बनिये को छोड़ा भगवत् भक्त हो गया एक दिन स्वामी का खेत पका था साधु जाते रहे उस में घुस के खाने लगे रखवाले ने पुकार किया स्वामी चतुर्भुजका है साधों ने कहा तो हमाराही है शोर क्यों करते हो यह

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

सुन स्वामी आय के साधों को ले गये भोजन कराये वो आनन्द के जल आंखों से बहाये कि आज साधों ने हमारी चीज़ो को अपना समझा ॥

कथा शङ्कर स्वामी की ॥

शङ्कर स्वामी कलि में धर्म के रक्षक और भागवत् धर्म के प्रवर्तक शिवजी का अवतार और आचार्य हुये जितने अनीश्वर वादी और जैन धर्मी और पाखंडी और विमुख और दुर्बुद्धी ये सब को ध्वस्त करके शास्त्रों की पद्धति पर चलाया दक्षिण देश में विक्रमा दित्य के समय में स्वामी का अवतार हुआ स्मार्तमत की रीति से दण्ड धारण कर संन्यासी हुये और उसी धर्म की पद्धति से भागवत् धर्म को फैलाया सैकड़ों को परास्त किया मण्डन मिश्र जिनको ब्रह्मा का अवतार कहते हैं मीमान्सामत वादी रहे उनको वाद में निरुत्तर किया मीमान्सा कर्मही को ईश्वर मानता है पीछे मिश्र जी की स्त्री ने वाद आरम्भ किया और काम शास्त्र में प्रश्न करने लगी और ये स्वामी यती संन्यासी रहे उस गली से तनक भी क्रोध न या इस हेतु राजा अमरुक के शरीर में कि उसी दिन मर गया था योग बल से अपने प्राणको उसमें प्रवेश करके छः महीने तक उस शरीर में रहे एक ग्रन्थ अमरुक शतक बहुत ललित उस शरीर में रचना किया जितनी रानी राजा अमरुक की रही सबने जान लिया कि यह कोई योगी है और निज देह इसका कहीं गुप्त होगा सो उसको जला देना चाहिये कि जिसमें यह शरीर और राज और हमारा सुहाग बना रहे इस हेतु उस शरीर को ढुंढ़वा के जला देने की आज्ञा दे दी आग दियेही रहे कि स्वामी के प्राण ने राजा का तन छोड़ कर निज शरीर में प्रवेश किया और अग्नि से रक्षा के हेतु नृसिंह जी का स्मरण किया प्रभु ने उस अग्नि को शीतल कर दिया स्वामी ने चिता से निकल कर मण्डन मिश्र की स्त्री को निरुत्तर कर दिया मिश्र स्वामी के चेले होगये पश्चात् चार बाकी मत वालों को परास्त करके धर्म में प्रवृत्त किया सो अब चार बाक मतका अनुगामी दृष्टान्त कोई भी नहीं मिलता मुसलमानोंमें सुने जाते हैं जो कि दहरिया कहाते हैं फिर सांख्य शास्त्र और हठ योग वालों को चर्चा किया तब पीछे से बड़ों के साथ मत वाद युद्ध बड़ा भारी आन पड़ा निदान पहिले वाद में जीत कर फिर उनकी धुर्तई वो मंत्र चेटक आदि को दूर किया और इन्द्रजाल उन्हों ने किया तो वह भी उनके ही गले पर पड़ा इस प्रकार कि कोठे पर से गिरकर मर गये और कुछ नदी में डूबे और जो रहे बचे तिनको उस समय के देशाधीश ने नावों में भरवा कर नदी में डुबवाय दिया और जितने भगवत् के शरण में हुए वे सब उपद्रव से बच गये तात्पर्य यह कि जो कोई भगवत् से विमुख रहा अथवा वेद विरुद्ध चलता था उसको विद्या के बल से वो प्रभाव दिखा के

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

अथवा जिस प्रकार उसने बोध चाहा भागवत् धर्म परदृढ़ कर दिया फिर पीछे ठौर ठौर मन्दिर वो शिवाले आदि बनवाये और हर एक देवता के वर्णन में स्तोत्र रचना किया और रीति पूजा इत्यादिकी शिक्षा करी गीता जी वो शारीरक सूत्र वो विष्णु सहस्र नाम पर भाष्य अलग अलग रचना किया तिलक आदि की पद्धति का भेष निष्ठा में वर्णन होगा विस्तार करिके कथा स्वामी की शङ्कर दिग्विजय में लिखी है यहां एक नाम मात्र सूक्ष्म वृत्तान्त लिखा गया निर्गुण उपासक तो यह बात कहते हैं कि यह स्वामी केवल निर्गुण ब्रह्म के उपासक रहे और सगुण उपासकों का यह वचन है कि वैष्णव रहे और बाद शुष्टतर उनके वैष्णव होने की ठानते हैं स्मार्त सगुण उपासना की पद्धति यह है कि अपने इष्टको अंगी और दूसरे देवताओं को अंग मानते हैं एक तो भगवत् की जिस प्रकार दूसरी संप्रदाओं में दृढ़ है इसी प्रकार इस संप्रदा में भी पूजा वो स्मरण जप इत्यादि वैसा ही वो निर्गुण ब्रह्म का वर्णन इस पोथी के अन्त में लिखा जायगा शङ्कर स्वामीके बहुत से चेले ऐसे हुए कि उनसे इस संप्रदा की प्रवृत्ति अधिक तर हुई उनकी गुरु परम्परा से उनके नाम खुले जायंगे वो मठगुरुद्वारे भी बहुत हैं परंतु चार स्थान चारों चेलों के सब में मुख्य हैं कि उन मठो का नाम भी चारों चेलों के पास लिखा जाता है और गुरुद्वारे सहस्रों हैं इस हेतु उनकी गुरु परम्परा इस समय तक की नहीं लिखी केवल शङ्कर स्वामी के चेलों तक की लिखी ॥

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

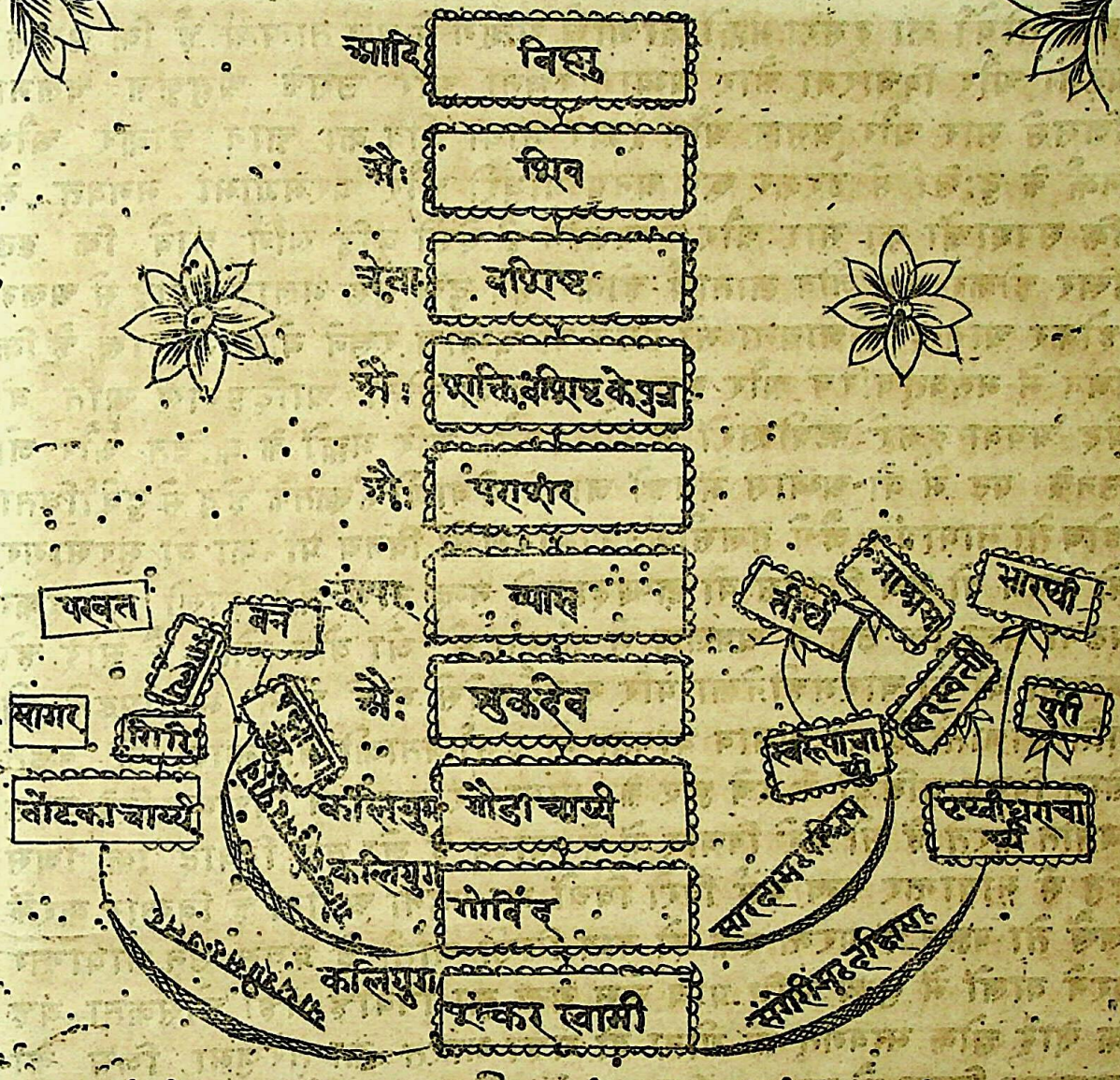

निष्ठा तीसरी ॥

साधु सेवा वो सत्संग जिसमें सोलह भक्तों की कथा है

श्री कृष्ण स्वामी के चरण कमल को अम्बर रेखा को और बाराह अवतार को दण्डवत हैं कि जिन धाम ब्रह्मपुरी में वह अवतार धारन करके पृथ्वी को समुद्र से निकाला और हिरण्याक्ष को बध किया वो सब शास्त्रों का सिद्धान्त है इस जीव को आवा गवन के बंधन से छूटने के हेतु सत्संग व्यतिरिक और कुछ साधन नहीं जिसके प्रभाव से शीघ्र भगवत प्राप्ति होती है महिमा सत्संग की अपार है तथापि किंचित्मात्र लिखी जाती है और सत्संग की प्राप्ति साधु सेवा करिके है इस हेतु साधु सेवा की महिमा भी इस निष्ठा में लिखी जायगी और यद्यपि वास्तव अर्थ सत्संग शब्द के यह हैं कि सत जो भगवत भक्त तिनका संग परंतु कोई उस सत्संग के अर्थ कई प्रकार से वर्णन करते हैं उनमें दो प्रकार मुख्य हैं एक सत्संग शास्त्र

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

और तीर्थों का दूसरा भक्तों का शास्त्र सत्संग से यह तात्पर्य्य है कि उसका पढ़ना और विचारना और अभ्यास रखना और उसके अनुकूल चलना जिससे सार और असार और ईश्वर माया जीव का ज्ञान होकर और नर्क के दुःखों से डरकर रूप अनूप माधुरी और परमशोभा भगवत् में कि सबशास्त्रों का सार और मुख्यलाभ है ऐसी बुद्धि लगि जावै कि दृढ़ स्थिर होकर यह जीव कृतार्थ होकर सब दुख सुख भलाई बुराई से अलग होकर आनन्द होजायगा सो पढ़ने वो अभ्यास रखने योग्य ये शास्त्र हैं कि जिन में भगवत्चरित्र और भगवत् स्वरूप वो गीता आदिपुराण स्मृति वो वेद अथवा दूसरे ऋषीश्वरों के रचित और हरि भक्तों के कथित और जो उनके पद में वो अभ्यास में नहीं जानने से वाणी संस्कृतके हेतु से दुर्बोधिता होय तो भाषाग्रंथ जैसे तुलसीकृत रामायण वो विनय पत्रिका वो सूरसागर वो दसम वो व्रज बिलास वो कृष्णदासवो नन्द दास की वाणी आदिका पढ़ना सदा कि उस के अवलम्ब से संस्कृत से जो बोध होता है सोई हो जायगा वो दो चारमहीनेका परिश्रमकरनेसे थोड़े हीमें भाषापढ़ने की गति होजाती है पर असाव धानता वो दुर्भाग्यताकी बातन्यारी है बहुत लोग विरुद्ध धर्मियों के रचे हुए को भाषान्तर करने में विशेष करिके काल व्यतीत करते हैं सो मेरे विचार में वे त्याज्य हैं जो वह विवाद कि जिस हेतु से भाषान्तर ग्रन्थ धर्म विरोधियों का पढ़ना अयोग्य है विस्तार करके लिखें तो बहुत हैं परन्त एक दो बात लिखी जाती हैं प्रथम उन भाषान्तर करने वालों में मुख्य अभि प्राय उस ग्रन्थ का निर्वाह नहीं होसकता यह कि कोई श्लोक भावगत् वो गीता वो महा भारत का तरजुमा जिस को भाषान्तर लिखा है पढ़ कर फिर अपने धर्म के आचार्य्यों का तिलक है तिस से मिलान करै कि मुख्य अभि प्राय लुप्त वो ध्वस्त है दूसरे कोई तरजुमा ऐसा नहीं कि तरजुमा करने वालों ने अपने दीन के विरुद्ध वो द्वेष के कारण से उसमें प्रगट अथवा कोई व्याज करके अथवा कटाक्ष लेकर हिंदू के दीन की निन्दा न लिखी होय जैसे अबुलफ़ज़ल ने महाभारत आदि ग्रंथों के तर्जुमोंका प्रारंभ किया वह जला देने योग्य हैं और उस मे विशेष अर्थों का तरजुमा लिखा है वो तरजुमें योगवाशिष्ट वो भागवत् से प्रगट है और जो किसीने दूषण रहित का तरजुमा कर दिया है तो ऐसी भांति की लिखावट है कि भवगत् वो महात्माओं के संबन्ध में तनक मर्य्याद नहीं और वचन कठोर वो तीछन जैसे बाण हृदय में लगते हैं तीसरे ऋषीश्वरों वो [illegible] की वाणी में जो प्रभाव है अन्य मत वालों के तरजुमे में नहीं और प्रतिकूल होता है यह कि जैसा विरुद्ध भाव तरजुमा करने वालों का है वैसा ही [illegible] सुनने वालों का होजाता है इस हेतु कोई आरूढ़ पद को महीपहुंचता वो आज तक उन तरजुमोंके पढ़ने वालों को भवगत् भक्त न

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

देखा होगा परन्तु इतना विशेष होगा कि ब्राह्मणों को वाद करके दुखित करना वो सत्संग में विश्वास नहीं चौथे यह कि जो मंच कथीश्वर और भवगत् भक्तों ने मूल ग्रंथोंमें गुप्त अथवा प्रगट लिखे हैं वे मंच उन तरजुमों में नहीं कि जिसके प्रभाव से मन भवगत् में लगै इस भेद करके उनका पढ़ना उचित नहीं और अच्छे प्रकार विचार कर देखिये कि जिन लोगों ने संस्कृत वो भाषा थोड़ी सी भी पढ़ी है वे सब लोग थोड़े बहुत भवगत् के मार्गपर हैं और जिन लोगों ने केवल तरजुमे भावगत वो रामायण वो महाभारत वो योग वाशिष्ठ वो दूसरे सैकड़ो किताब तरजुमा की हुई विरुद्ध धर्मिओं की पढ़ीं और अभ्यास किया कभी किसी को कुछ भी गुण न किया भला यह बात रहने दीजिये जो ऐसाही हठ है कि बिना तरजुमे फारसी के हमारा अभिप्राय नहीं निकलता तो तरजुमा हिंदुओं का किया भी तो प्राप्त है उनको क्यों नहीं पढ़ते जैसे रामायण तरजुमा किया टोडर मल वो तरजुमे भागवत किया हुआ एक कोई कायस्थ का वो तरजुमे गीता किया कोई का खीरी का ऐसेही ऐसे बहुत लोगों के—इति ॥

और तीर्थ सत्संग से हेतु स्नान गंगा वो यमुना वो पुष्कर आदि तीर्थों और यात्रा आदि से हैं उस में कोई का यह सिद्धान्त है कि तीर्थों के जल को भगवत्ने यह प्रताप दिया है कि उसके दर्शन और स्नान और पान करने से हृदय पवित्र होजाता है और कोई यह कहते हैं कि भगवत् भक्त लोग एक कोई समय नियत समय पर एक जगह इकट्ठे होते हैं इस हेतु उस स्थान का नाम तीर्थ कहा जाता है और उन भक्तों के संग का पुन्य और जल के स्नान आदि के प्रभाव कि जिस जल में चरण उन भक्तों के पड़े मनुष्योंको चित्तकी उज्वलता प्राप्त होती है इस वचन से शास्त्र ने तीर्थों से अधिक बड़ाई भगवत् भक्ति की प्रगट की परंतु दोनों दशा में निःसंदेह तीर्थों के सत्संग वो यात्रा से यह मनुष्य पवित्र होकर भगवत् में लग जाते हैं और रीति तीर्थ स्नान की धर्मनिष्ठा में लिखी जायगी प्रथम प्रकार के सत्संगका निर्णय तो होचुका अब वर्णन द्वितीय प्रकार का होता है और जो महिमा सत्संग वो निष्ठाके प्रारंभ में लिखी गई और कुछ वर्णन ग्रंथ के आदिमें हुआ और सब शास्त्रों ने जो सत्संग वर्णन किया उसका तात्पर्य भगवत् भक्तों से है निःसंदेह जिस किसी ने भगवत् भक्तों का सत्संग किया अपने वांछित अर्थ को प्राप्त हुआ भक्तों का मिलना भगवत् है सो भगवत् का वचन है कि एक क्षण सत्संग के सन्मुख मर स्वर्ग वो अपवर्ग का सुख बराबर नहीं होसकता देवभक्त का वचन है कि इस संसार से छुटने को और अपवर्ग वो मुक्ति के प्राप्त होने को सत्संग ही उत्तम उपाय है एकादश में भगवत् का वचन है कि मैं योग इत्यादि से वश नहीं होता परंतु सत्संग से वो पद्म पुराण वो स्कन्द पुराण वो विष्णु

CC-0: Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

पुराण आदि में भी यही निश्चय बचन है अब यह संदेह उत्पन्न हुआ कि सब साधन तीर्थादि से जो भगवत् भक्तों के सत्संग को बड़ा वो अधिक लिखा इसका कौन कारण है सो यह है कि प्रथम तो भगवत् और शिव जी का बचन है कि जहां भगवत् भक्त रहते हैं तहां आप भगवत् बिराजमान रहते हैं सो जब इस पुरुष को भगवत् भक्तों का सत्संग होगा निःसंदेह भगवत् मिल जांयगे कि यह वृत्तांत प्रचेता और नारदजी की कथा जो भागवत में लिखी है उस से अच्छे प्रकार समझने में आसक्ता है दूसरे अन्य साधन जो तीर्थ व्रत बो जप तप वो नेम धो संयम आदि सब ऐसे हैं कि अनुक्षण भक्त का मन उन में नहीं लगता दूसरे और होकर संसार के स्वाद में जा लगताहै और भगवत् भक्तों के सत्संग से अनुक्षण भगवत् में रहता है इसहेतु कि वहां भगवत् चरित्र और कथा वो सेवा वो भजन कीर्तन आदि के बिना और कुछ काम नहीं होता जो किसी काल में मन दूसरी ओर गया तो फिर भगवत् के सन्मुख हो जाता है तीसरे अन्य साधन तीर्थ शास्त्र आदि का यह वृत्तांत है कि कहीं भगवत् भक्ति का साधन वस्तु प्राप्ति है पर साधने वाले जो भक्त जन सो नहीं और कोई जगह भक्त साधना करने को उद्यत हैं परंतु उन को पङ्क्ति नहीं मिलती और कोई जगह ऐसा संयोग है कि भक्त और पङ्क्ति सब एकत्र हैं परंतु संदेह निवृत्त करने वाला कोई नहीं अथवा कोई ठग उस पथ का जैसे काम क्रोध लोभ मोह मद मत्सर ईर्षा आदि आय गया कि उसने सब पूंजी बटोरी हुई को एक निमिष में लूटलिया सो दूसरे साधन तो इसहेतु न्यून तर हैं कि वह सब वस्तु के प्राप्त करनेवाले नहीं और भगवत् भक्तों के सत्संग को इस हेतु बड़ा कहैं कि जिस वस्तु का प्रयोजन लगे वहीं सब वस्तु एक जगह प्राप्त है और वास्ते पहुंचाने भगवत् पद तक भक्ति ज्ञान वैराग के बेड़ा लेकर सन्मुख हैं सो जिस किसी को इच्छा भगवत् भक्ति की है और इस संसार समुद्र को उतरना चाहता है तो सत्संग करै और यह भी जान ले कि सत्संग सब जगह वर्तमान वो प्राप्त है परंतु यह अपनी कुतर्क वो कुचेष्टा है कि सूझ नहीं पड़ती काहे को आप दोष और अवगुण युक्त होने के हेतु से दूसरे को भी अपनेही सदृश जानते हैं और उसके अच्छे स्वभाव और भजन आदि पर दृष्टि न करिकै और उसके अवगुण वो शुद्ध स्वभाव के अंगीकार की दृष्टि होय तो सत्संग के सब जगह प्राप्त होने में क्या संदेह है जो ऐसेही दुर्भाव वो अवगुण दूषण देखना है तो कोई जड़ चेतन अवगुण रहित नहीं इसके सिवाय तीर्थ के स्थानों में जैसे वृन्दावन वो त्रिकूट वो प्रयाग वो अयोध्या वो काशी वो जगन्नाथ पुरी वो उज्जैन वो कांची वो हरिद्वार वो पुष्कर आदि सैकड़ों स्थान पर सत्संग जैसा चाहै मिलता है परंतु भक्त यह बात समझे रहैं कि सत्संग का

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

यह अर्थ नहीं है कि चलो साहिब कोई साधु आये हैं दर्शन कर आवैं सत् संग उसका नाम है कि भक्तों को भगवत् रूप जान कर उनके बचन पर ऐसा बिश्वास पक्का हो कि कबहीं वे बिश्वास न होंय और वह सत्संग का अनुक्षण तब तेंक अत्यन्त प्रयोजन है कि जब तक अच्छे प्रकार दृढ़ स्थिर भगवत् चरणों में न हो जावे अब अधिक बिस्तार करना प्रयोजन नहीं नारद और ब्यास बाल्मीक अजामिल सेवरी बार सुखी वो अगस्त वो प्रचेता वो ध्रुव प्रह्लाद आदिक सहस्रों भक्तों की कथा जो पुराणों में लिखी हैं और कोई इस भक्तमाल में पढ़ सुन लेवै कि सत्संगके प्रभाव करके कैसे २ प्राणियों को क्या २ पदवी प्राप्त हुई है सो वह सत्संग इस समय इस मनुष्य को बिना प्रयास मिलता है जैसे भगवत् की सेवामें निष्ठा भगवत् भक्तों को होती है जो वैसेही भगवत् भक्तों की सेवा में तन मन लगै भागवत में भगवत् का बचन है कि षटप्रीश्वर मेरे भक्त मेरा शरीर हैं और वेही पूज्य हैं और उपाय छोड़ कर उनहीं की सेवा कर पद्म पुराण में भगवत् का बचन है कि मेरे भक्तों को भोजन करावना वो सेवा करना वह भोजन वो सेवा निज मुझको होता है और जिस प्रकार मेरे भक्त मुझको भोजन कराये बिना कुछ नहीं खाते इसी प्रकार मैं बिना उनको भोजन कराये कुछ नहीं खाता और पुराणों में भगवत् ने कहा है कि जो मेरे भक्तों के भक्त हैं वे मेरे भक्त हैं फिर भगवत् का बचन है कि गंगा तो पाप और चन्द्रमा ताप वो कल्पवृक्ष दरिद्र को दूर करते हैं और मेरे भक्तों का दर्शन कैसा है पवित्र किये तीनों दुःख क्षणमात्र में दूर होजाते हैं फिर षटप्रीश्वरों का बचन है कि तीर्थादि पवित्र नहीं कर सक्ते जैसा कि संत शीघ्र इस लोक और पर लोक से निर्भय और पवित्र कर देते हैं इस प्रकार सहस्रों का बचन हैं सो जिस किसी को चाहना भगवत् के नित्यानन्द और संसार से छुटने की है उस को भगवत् भक्तों की सेवा मन वो प्राण से उचित है और कुछ बिचार जाति पांति आदि का तनक नहीं चाहिये जो कोई भी जाति भगवत् भक्त होवै वह भगवत् रूप है महाभारत में भगवत् बचन है कि जो कोई हरि भक्तों में जाति आदि का बिभेद करिके उनकी सेवा नहीं करते वे नास्तिक हैं साधु-सेवा के पथ में पांच ठग हैं एक तो जाति का गर्व कि साधु को छोटी जाति जान कर सेवा न करै दूसरे बिद्या का गर्व कि नहीं पढ़े हुए साधु को छोटा जानै तीसरे ऐश्वर्य्य का गर्व कि उसके मर्द में कुछ भला बुरा समझ न पड़ै चौथा साधू का कुरूप देख कर सेवा से बिमुख रहै अथवा रूप के गर्व से कुछ ध्यान में न लावै पांचवां बल शरीर का कि उसके गर्व से भी भले बुरे का बिचार नहीं रहता है सो इन पांचों गर्व को तो ताक पर रखदेवै और वे चरित्र भगवत् के अनुक्षण स्मरण रक्खे कि भगवत् ने आप

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

पुराण आदि में भी यही निश्चय बचन है अब यह संदेह उत्पन्न हुआ कि सब साधन तीर्थादि से जो भगवत् भक्तों के सत्संग को बड़ा वो अधिक लिखा इसका कौन कारण है सो यह है कि प्रथम तो भगवत् और शिव जी का बचन है कि जहां भगवत् भक्त रहते हैं तहां आप भगवत् बिराजमान रहते हैं सो जब इस पुरुष को भगवत् भक्तों का सत्संग होगा निःसंदेह भगवत् मिल जांयगे कि यह वृत्तांत प्रचेता और नारदजी की कथा जो भागवत में लिखी है उस से अच्छे प्रकार समझने में आसक्ता है दूसरे अन्य साधन जो तीर्थ व्रत वो जप तप वो नेम धो संयम आदि सब ऐसे हैं कि अनुक्षण भक्त का मन उन में नहीं लगता दूसरे और होकर संसार के स्वाद में जा लगताहै और भगवत् भक्तों के सत्संग से अनुक्षण भगवत् में रहता है इसहेतु कि वहां भगवत् चरित्र और कथा वो सेवा वो भजन कीर्तन आदि के बिना और कुछ काम नहीं होता जो किसी काल में मन दूसरी ओर गया तो फिर भगवत् के सन्मुख हो जाता है तीसरे अन्य साधन तीर्थ शास्त्र आदि का यह वृत्तांत है कि कहीं भगवत् भक्ति का साधन वस्तु प्राप्ति है पर साधने वाले जो भक्त जन सो नहीं और कोई जगह भक्त साधना करने को उद्यत हैं परंतु उन को पद्धति नहीं मिलती और कोई जगह ऐसा संयोग है कि भक्त और पद्धति सब एकत्र हैं परंतु संदेह निवृत्त करने वाला कोई नहीं अथवा कोई ठग उस पथ का जैसे काम क्रोध लोभ मोह मद मत्सर ईर्षा आदि आय गया कि उसने सब पूंजी बटोरी हुई को एक निमिष में लूटलिया सो दूसरे साधन तो इसहेतु न्यून तर हैं कि वह सब वस्तु के प्राप्त करनेवाले नहीं और भगवत् भक्तों के सत्संग को इस हेतु बड़ा कहैं कि जिस वस्तु का प्रयोजन लगै वहीं सब वस्तु एक जगह प्राप्त है और वास्ते पहुंचाने भगवत् पद तक भक्ति ज्ञान वैराग के बेड़ा लेकर सन्मुख हैं सो जिस किसी को ज्ञान भगवत् भक्ति की है और इस संसार समुद्र को उतरना चाहता है तो सत्संग करै और यह भी जान ले कि सत्संग सब जगह वर्तमान को प्राप्त है परंतु यह अपनी कुतर्क वो कुचेष्टा है कि सूझ नहीं पड़ती काहे को आप दोष और अवगुण युक्त होने के हेतु से दूसरे को भी अपनेही सदृश जानते हैं और उसके अच्छे स्वभाव और भजन आदि पर दृष्टि न करिकै और उसके अवगुण वो मूढ़ स्वभाव के अंगीकार की दृष्टि होय तो सत्संग के सब जगह प्राप्त होने में क्या संदेह है जो ऐसेही दुर्भाव वो अवगुण दूषण देखना है तो कोई जड़ चेतन अवगुण रहित नहीं इसके सिवाय तीर्थ के स्थानों में जैसे वृन्दावन वो चित्रकूट वो प्रयाग वो अयोध्या वो काशी वो जगन्नाथ पुरी वो उज्जैन वो कांची वो हरिद्वार वो पुष्कर आदि सैकड़ों स्थान पर सत्संग जैसा चाहै मिलता है परंतु भक्त यह बात समझे रहैं कि सत्संग का

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

यह अर्थ नहीं है कि चलो साहिब कोई साधु आये हैं दर्शन कर आवैं सत् संग उसका नाम है कि भक्तों को भगवत् रूप जान कर उनके बचन पर ऐसा बिश्वास पक्का हो कि कबहीं वे बिश्वास न होंय और वह सत्संग का अनुक्षण तब तक अत्यन्त प्रयोजन है कि जब तक अच्छे प्रकार दृढ़ थिर भगवत् चरणों में न हो जावे अब अधिक बिस्तार करना प्रयोजन नहीं नारद और ब्यास बाल्मीक अजामिल सेवरी बार सुखी वो अगस्त वो प्रचेता वो ध्रुव प्रह्लाद आदिक सहस्रों भक्तों की कथा जो पुराणों में लिखी हैं और कोई इस भक्तमाल में पढ़ सुन लेवे कि सत्संगके प्रभाव करके कैसे २ प्राणियों को क्या २ पदवी प्राप्त हुई है सो वह सत्संग इस समय इस मनुष्य को बिना प्रयास मिलता है जैसे भगवत् की सेवामें निष्ठा भगवत् भक्तों को होती है जो वैसेही भगवत् भक्तों की सेवा में तन मन लगै भागवत में भगवत् का बचन है कि षट्ऐश्वर मेरे भक्त मेरा शरीर हैं और वेही पूज्य हैं और उपाय छोड़ कर उनही की सेवा कर पद्म पुराण में भगवत् का बचन है कि मेरे भक्तों को भोजन करावना वो सेवा करना वह भोजन वो सेवा निज मुझको होता है और जिस प्रकार मेरे भक्त मुझको भोजन कराये बिना कुछ नहीं खाते इसी प्रकार मैं बिना उनको भोजन कराये कुछ नहीं खाता और पुराणों में भगवत् ने कहा है कि जो मेरे भक्तों के भक्त हैं वे मेरे भक्त हैं फिर भगवत् का बचन है कि गंगा तो पाप और चन्द्रमा ताप वो कल्पवृक्ष दरिद्र को दूर करते हैं और मेरे भक्तों का दर्शन कैसा है पवित्र किये तीनों दुःख क्षणमात्र में दूर होजाते हैं फिर षट्ऐश्वरों का बचन है कि तीर्थादि पवित्र नहीं कर सक्ते जैसा कि संत शीघ्र इस लोक और पर लोक से निर्भय और पवित्र कर देते हैं इस प्रकार सहस्रों का बचन हैं सो जिस किसी को चाहना भगवत् के नित्यानन्द और संसार से छुटने की है उस को भगवत् भक्तों की सेवा मन वो प्राण से उचित है और कुछ बिचार जाति पांति आदि का तनक नहीं चाहिये जो कोई भी जाति भगवत् भक्त होवै वह भगवत् रूप है महाभारत में भगवत् बचन है कि जो कोई हरि भक्तों में जाति आदि का विभेद करिके उनकी सेवा नहीं करते वे नास्तिक हैं साधु-सेवा के पथ में पांच ठग हैं एक तो जाति का गर्व कि साधु को छोटी जाति जान कर सेवा न करै दूसरे विद्या का गर्व कि नहीं पढ़े हुए साधु को छोटा जानै तीसरे ऐश्वर्य्य का गर्व कि उसके मन में कुछ भला बुरा समझ न पड़ै चौथा साधू का कुरूप देख कर सेवा से बिमुख रहै अथवा रूप के गर्व से कुछ ध्यान में न लावै पांचवां बल शरीर का कि उसके गर्व से भी भले बुरे का बिचार नहीं रहता है सो इन पांचों गर्व को तो ताक पर रखदेवै और वे चरित्र भगवत् के अनुक्षण स्मरण रक्खे कि भगवत् ने आप

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

बालमीक सुपच को युधिष्ठिर की निज रसोई के घर में बैठा कर द्रौपदी के हाथ से सेवा कराई और आप श्री रघुनन्दन स्वामी ने भीलनी के जूठ फल खाये एक साधु सेवी का दृष्टान्त है कि वह दुःखी था अपनी स्त्री को साधु की सेवा के निमित्त दृढ़ाय के कहा उसने अपने शिर दुखने का बहाना किया संयोग वस उसी समय दामाद आगया वह स्त्री तुरंत उठी और भोजन भोग आदिक बनाने लगी साधु सेवी ने तुरंत उस स्त्री को घर से निकाल दिया और कहा कि जब मेरा दामाद आया तब तो शिर दुखने लगा और जब तेरा दामाद आया तब वह शिर का दुखना तुरन्त दूर हुआ तात्पर्य यह कि जिस प्रकार कामी और झूठे को स्त्री और लोभी को द्रव्य प्यारा है इसी प्रकार भगवत् भक्तों को अपना निज प्यारा समझ कर और सांची प्रीति जान कर तन मन से सेवा करैं जिस को भगवत् भक्तों में प्रीति नहीं कदापि कोई मनोर्थ इस लोक और पर लोक का सिद्ध न होगा और आज तक ऐसा संयोग कबहीं नहीं हुआ कि भगवत् भक्तों की सेवा करने वाले का मनोर्थ इस लोक वो पर लोक का सिद्ध न हुआ हो जो कोई भक्तों से विमुख हैं और निन्दा करते हैं वे भगवत् के घर से निकाले हुए हैं जो भक्तों के स्वार्थ धक्का करते अथवा दुःख देते हैं उन का नाश होजाता है रसातल को जाते हैं रावण दुर्योधन कंस आदि भगवत् भक्तों के साथ बैर ठान कर ध्वंश को प्राप्त हुए भगवत् को हिरण्य कश्यप पर कबहीं क्रोध न आया देवता सब दुःख रोये भी परन्तु जब प्रह्लाद भक्त को दुःख दिया तब नहीं सहि सके तो दूसरों की क्या बात है भगवत् भक्तों के द्रोही तीनों लोक में दुःख पाते हैं जिस प्रकार दुर्वासा कि जहां गये किसी ने शरण नहीं दिया अबदास दास को विनती भगवत् भक्तों की सेवा में यह है कि कुछ कृपा की दृष्टि इस अपराध कर्मी पर भी होवै जो मेरे अपराधों पर निगाह करोगे तो उस बचन मे विरोध आवैगा कि साधु सज्जन मेघ के सदृश हैं शुचि अशुचि साधु असाधु पर बराबर दया करते हैं इस हेतु अपने ऊपर कृपा दृष्टि योग्य हैं मेरे अपराधों पर दृष्टि योग्य नहीं सिवाय इस के एक प्रकार से आश्रित भी हैं कि तुम्हारा भाट भी हूं कदाचित् कहोगे कि यह विरद रचना तेरे अन्तःकरण से नहीं ऊपरही गावता है तो यह विनय है कि सब भाट ऊपरही स्तुति विरद की किया करते हैं परन्तु यजमान उनको विमुख नहीं करता वो इसके ऊपर एक सम्बन्ध भी तुम्हारे चरण से है कि श्री कृष्ण महाराज का घर नाया चेरा हूं जो यह कहोगे कि ऐसे पूरण ब्रह्म सच्चिदानन्द घन का दास होकर हम से क्या चाहना करता है और किस का भय है सो विनय यह है कि अवगुणी चेरा हूं स्वामी की आज्ञा के अनुकूल आचरण नहीं और भूल कर भी सन्मुख कबहूं नहीं

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

होता हूं सब बातैं बनाने से मेरा तात्पर्य्य यह कि कोई प्रकार से यह दुष्ट भाग्य हीन मन भगवत् चरणों में लगै और जो मन उस समाज के चिंतवन में लगै तो आनन्द पद के प्राप्त में क्या सन्देह है कि अयोध्या निज धाम में कल्पवृक्ष के नीचे महामण्डप है वहां पुष्पक सिंहासन पर कि जिस का प्रकाश करोड़ों सूर्य्य के समान है आप बसन आभूषण समाजी अंग पर सजे हुए बीरासन बिराजमान हैं और बामभाग श्री जनक नन्दिनी शोभित हैं ऐसा मनोहर रूप अपार है कि लक्ष्मी और बिष्णु भी लज्जित होकर छीर समुद्र में जा छिपे भरत लक्ष्मण शत्रुघ्न सेवा में तत्पर हैं चारों बेद वो नारद वो सनकादिक वो ब्रह्मा आदि स्तुति करते हैं और एक ओर सुग्रीव बिभीषण आदि और दूसरे ओर सब राज मंत्री और सामने हाथ बांधे हनुमान जी खड़े हैं ॥

बिदुरजी की कथा ॥

बिदुरजी रहने वाले गांव छुटेरा राज्य जोधपुर साधु सेवी हुए एक साल अवर्षण हुआ खेत सूख गये साधों के भोजन की चिन्ता करके घबराने खप्न में आज्ञा हुई कि सूखा खेत काट के मल के झाड़ो दो हजार मन अन्न होगा वैसे ही करने लगे सब लोग हंसी करते रहे दो हजार मन अन्न ढेर लगा क्या आश्चर्य्य कि साधु सेवा इस लोक वो परलोक में सूखे वृक्ष को फल फूल लगा देती है ॥

भगवान दास की कथा ॥

ठाकुर भगवान दास भीमसिंह राज पूत तोदर के बेटे परम भक्त भगवत् भक्तों की सेवा में सावधान वो दृढ़ बिश्वास करने वाले हुए प्रति बर्ष मथुराजी में जाय के साधु ब्राह्मणों का भंडारा बड़ी करते रहे और रास बिलास उत्साहमें बड़ा रुपया उठाय के घर चले आते रहे समय के फेर करिकै वो धन के बढ़ते उठावने से धन का रुकोच आय गया तौ भी ऋण ले करिकै मथुरा आये कुछ कम करिके देने का बिचार किया तब चौबे लोग अड़े कि जितना मिलता रहा उतना ही मिलैगा तो लेंगे ठाकुर साहब ने सब रुपैया जो पास था सब के आगे रख दिया तब यह ठहरा कि अब इस को सूखा अन्न साधु ब्राह्मणों को बंट जाय एक कोठरी में नाज वो रुपैया इकट्ठे करिके बटने लगा भक्तों के द्रोहियों ने यह बिचारा कि इन का नाम हंसाजाय सो एक सीधेकी जगह दस सीधे दिलाने लगे प्रभु भक्त वत्सल ने ऐसी लज्जा भक्त की राखी कि अनगिनित लूट चांदी सोने की हो गई द्रोपदी की चीर के नाईं कोई बस्तु न घटी सब द्रोही लज्जित हुए भक्ति पर सब को निश्चय हुआ ॥

बारमुखी की कथा ॥

एक नगर बलाद दक्षिण देश में बारमुखी बड़ी धन वाली रहती थी

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

उसके द्वार पर एक वृक्ष हरित छाया नीचे सुन्दर बेदी बड़ी बिमल बनी हुई रही एक दिन साधु लोग टिक गये संध्या के समय बारमुखी द्वार पर निकली देखा बिचार किया कि मेरा नाम सुनेंगे तो साधु उठ जायंगे अपने घर में छिप गई और रात के समय कुछ सुहर रुपैया एक थाली में रख के भेंट लेकर साधों को दण्डवत किया साधों ने जब सब वृत्तान्त जाति का वो धन का सुना तब उपदेश दिया कि एक मुकुट बना कर रंग नाथ को भेंट कर तब धन शुद्ध हो जायगा तब उसने तीन लाख रुपये का एक मुकुट जड़ाऊ बनवाया और बड़ी प्रीति को बिश्वास से नाचती गाती बाजे बजवाती मुकुट लेकर चली जब श्री रंग नाथ के मन्दिर के समीप पहुंची तब रजो धर्म हो गया तब शोक से बिकल होकर गिर पड़ी उसके प्रेम को अन्तरयामी प्रभु ने देखा तो पुजारियों को आज्ञा हुई उन लोगोंने सामने प्रभु के पहुंचा दिया जब मुकुट पहिनाने को हाथ उठाया तो सिंहासन ऊंचा तिस से हाथ न पहुंचा सोचतीही रही तब तक रंग नाथजी ने अपना शिर झुका दिया उस बड़भागी ने पहिना दिया और महा बड़ भागियों की गणना में बिख्यात हुई अहो धन्य है कि एक क्षण मात्र के सत्संग की यह महिमा है हे मेरे मन कठोर तुझ को भी धन्य है कि ऐसे चरितों को लिख पढ़ के भी कोमल होकर प्रभु की ओर सन्मुख न हुआ ॥

तिलोक जी की कथा ॥

तिलोक जी जाति के स्वर्ण कार परब देश के एक नगर में हुए भगवत् भक्तों की सेवा में बड़ी प्रीति रही जो कुछ उद्यम में लाभ होता सो सेवा में लगा देते रहे उस देश के राजा ने लड़की के बिवाह समय बहुत रुपैया गहना बनाने को दिया सो सब साधु सेवा में उठा दिया तगादा हुआ तब आज काल्ह करके जैसी सुनारों की चाल है टालते गये जब सन्मुख पहुंचा तब परभात को देना निश्चय करके चले आये साधु आये उनकी सेवामें लगे रात को राजा का डर हुआ भोरही एक जंगल में छिप कर बैठ रहे भगवत् अपने दासों की लज्जा रखने वाले सेव गहना तिलोक जी का रूप धर राजा के पास ले गये दूनाभ लेआकर तिलोक जी के घर महोत्सव करके साधु ब्राह्मण को भोजन करायां प्रसाद लेकर तिलोक जी को जाकर दिया तिलोक के घर महोत्सव हुआ तुम को प्रसाद है उन्होंने पूछा कौन तिलोक जबाब दिया जिसके बराबर तिलोक में कोई नहीं समझ गये प्रभु के चरित्र हैं घर आये साधु सेवा वो भजन सुमिरण में मग्न हुए ॥

कथा तिलोचन देव की ॥

तिलोचन देव वैश्य वरण चेले ज्ञान देव के भगवत् भक्त बिख्यात हुए

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

विष्णु स्वामी संप्रदा के थे साधु सेवा में बड़ा प्रेम रहा एक स्त्री वो आप दोही रहे चिन्तना करते रहे कि एक चाकर ऐसा मिलता कि साधों के मन की जान जान सेवा करता भगवत् आप एक टहलुआ का रूप बना कर टूटी जूती फटी कमली से आन पहुंचे तिलोचन जी ने उनका घर मा बाप सब पूछा तब उत्तर दिया मा, बाप घर बार कुछ नहीं रखता टहलुआ हूं पांच सात सेर खाता हूं चारों वर्ण की पङ्गति मेरे हाथ में है भक्तों की सेवा अच्छी कर सक्ता हूं अन्तर्यामी नाम है तिलोचन बहुत आनन्द हुए नहला कर कपड़े बदला कर रक्खा सेवा भक्तों की सौंपी स्त्री से भोजन को बहुत समझाय के दृढ़ाय दिया अंतर जामी ने सब प्रकार से साधों की ऐसी सेवा करी कि तिलोचन जी का नाम विख्यात हुआ तेरह महीने इसी प्रकार से व्यतीत हुए एक दिन तिलोचन जी की स्त्री परोसिन के घर गई उसने दुर्बलता का कारण पूछा इसने कहा कि सारा दिन आटा पीसते रोटी पोते गत होता है मेरे स्वामी ने एक टहलुआ रक्खा है बहुत खाता है इतना मुख से निकलते ही अन्तर्यामी अन्तरध्यान होगये इस हेतु कि पहिले दिन बहुत भोजन का गिल्ला होने पर नहीं रहने का प्रबन्ध कर लिया था पीछे तिलोचन जी शोक युक्त हुए तीन दिन बिना अन्न जल पड़े रहे तब आकाश बाणी हुई कि तिलोचन जी तुम्हारे मन का हेतु बूझ कर वह टहलू मैं था जो तुम्हारी इच्छा अबभी हो तो हम को अंगीकार है तब तिलोचन जी को बड़ा पश्चात्ताप हुआ संतों ने समझाया सेवा करण भगवत् की करने में लीन हुए ॥

जखू स्वामी की कथा ॥

जखू स्वामी रहने वाले दुआबे गंगा वो यमुना के बीचके भगवत् भक्त हुए खेती से जो लाभ हो सो साधु सेवा में उठा देते एक समय चोर उनके बैल चुरा लेगये भगवत् ने जैसे व्रज में वैसे ही बछरा बालक रच-कर ब्रह्मा का मोह दूर किया तैसेही बैल जखू स्वामी के यहां प्राप्तकर दिये फिर चोर सब आये यहां देखा कि वहो बैल हैं तब घर दौड़ गये वहां वहीं बैल देखा फिर दौड़ आये यहां वहीं देखा कई बार दौड़े तब चकित होकर स्वामी से सब वृत्तान्त कहा स्वामी ने कहा यह भगवत् के चरित्र हैं तुम अपना काम करो हम अपना काम करते हैं चोरों को दृढ़ विश्वास हुआ बैल लाकर स्वामी को दिये तब माया के बैल गुप्त होगये वो चोर चोरी का धंधा छोड़ कर स्वामी के चेले हो गये और भगवत् भजन करने लगे ॥

राम दास जी की कथा ॥

रामदास जी रहने वाले व्रज के परम भागवत और साधु सेवी ऐसे

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

ऊए जिस प्रकार कमल सूर्य्य को देख कर फूलता है इसी प्रकार हरि भक्तको देख कर प्रसन्न ऊआ करते थे एक बेर कोई साधु राम दास जी की बड़ाई सुन कर आया पूछा राम दास कहां हैं रामदास जी उठे और उस साधु के चरण धो चरणामृत लेकर बिनय किया कि रामदास भी आया जाता है आप भोजन प्रसाद करैं साधु ने कहा हमको राम दास से मिलना है तब बिनय किया कि राम दास यही सेवक है साधु बहुत प्रसन्न ऊआ चरणों को पकड़ लिया राम दास जी के लड़की के बिवाह में पकवान बन के धरा था साधु की जमात आय गई ताला तोड़कर साधोंको भोजन करवय दिया साधु सेवा वो बिहारी लाल जी के चरण भजन में सारा वय क्रम व्यतीत किया॥

संत भक्त की कथा॥

संत भक्त रहने वाले जोधपुर के भगवत् भक्त साधु सेवी ऊए गावोंमें से मांग लाते साधु सेवा करते बिख्यात हो गये एक दिन साधु आये स्त्री संत भक्तको घर में रही पूछा संत भक्त कहां हैं उसने उत्तर दिया चूल्हे में हैं साधों ने सुन कर छोड़ दी उधर से संत भक्त जो मांगने गये थे आते रहे वहां साधों ने पूछा कहां गये रहे संत भक्त की स्त्री ने जो उत्तर दिया रहा सो सेवा के प्रभाव करिके हृदय विलख हो रहा था जान गये थे सोई बात बोले कि चूल्हे में गये थे साधु चकित ऊए तब कहा कि चूल्हे में जानेसे यह तात्पर्य्य है कि प्रभातही से साधों को रसोई की चिन्ता होती है कि कब होगा कि उन का सीत प्रसाद मुझको मिलैगा साधु लोग सुन के बहुत आनन्द ऊए उनके घर गये भोजन भजन सत्संग के सुख में मग्न ऊए॥

सेन भक्त की कथा॥

सेन भक्त जात हज्जाम चेला स्वामी रामा नन्द के रहने वाले बांधोगढ़ के ऐसे प्रेमी भक्त ऊए कि जैसे गऊ अपने बछड़े की पालना करती है इसी प्रकार उनकी पालना और सहाय प्रभु ने करी वृत्तान्त यह है कि सेन साधु सेवी रहे एक दिन तेल लगाने राजाको जाते रहे बादमें साधु मिल गये उनको अपने घर पर लाकर भोजन आदि सेवा में लगे राजा का भय कुछ न रहा जब राजा की सेवा का समय ऊआ तब आप भगवत् सेन भक्त का रूप धर के राजा की सेवा तेल मर्दन आदि करके राजाको प्रसन्न करि चले आये पीछे सेन पहुंचे विलम्ब होने का अपराध क्षमा कराने लगे भगवत् स्पर्श होने से राजा ने प्रभाव भक्ति का जान लिया सेन के चरणों में गिरा उन का चेला होकर भजन करने लगा अब तक उनके वंश में सब सेन वंश के चेले होते हैं॥

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

सदा व्रती की कथा ॥

साहूकार सदा व्रती वैश्य वरण परम भगवत् भक्त हुए साधु सेवा बड़ी प्रीति वो विश्वास से किया करते रहे एक साधु उनके घर पर टिका था साहूकार का एक छोटा लड़का कि जिस की साधु के साथ प्रीति होगई उस साधु के पास खेला करता था उसको एक दिन साधु ने जंगल में लेजाके आए कर गाड़ दिया जब सांझ तक लड़का न आया तब उसकी मा ने पुकार करी ढूंढती दौड़ी तब एक संन्यासी ने साहूकार को वह जगह जहां लड़का गाड़ा रहा दिखा दी और कहा जो साधु तुम्हारे घर में रहता है उसी ने यह कर्म किया है साहूकार ने मरना लड़के का अपने कर्म का फल समझ दंड देना उस साधु का सेवा धर्म से अयोग्य जान कर उस बात के छिपाने की यह युक्ति विचारी कि उसी संन्यासी को पकड़ा कि तैने ही मारा है जब संन्यासी व्याकुल हुआ तब साहूकार ने कहा कि यह बात मत कहो और इस नगर से चला जा तो तुझको छोड़ देंगे उसने अंगी कार किया तब छोड़ दिया जब साहूकार ने उस साधु को लज्जित देखा तब उसके संकोच मिटाने के हेतु अपनी स्त्री से विचार पूछा उसने कहा कि जो लड़की बिन ब्याही है उसके साथ व्याह दी जाय तो भरोसा साधु के रहने का है दूसरी उपाय देख नहीं पड़ती साहूकार अपनी स्त्री पर बहुत प्रसन्न हुआ और धन्य मान कर उस साधु को बुलाकर पहिले अपने भाग्य का खोट वो हरि की इच्छा की बात सब कह कर अपना विचार था सो कहा वह साधु अपने अप कर्म से महा ग्लानि को प्राप्त रहा बोला हमारे ऐसे अधर्म पर ऐसी दया अयोग्य है यातना के साथ वध उचित है साहूकार ने समझा बुझा के सावधान करके अपनी लड़की से विवाह कर दिया यह वृत्तान्त वो सर्व संसार में फैला तो साहूकार के गुरू ने भी भगवत् की आज्ञा से आय के साहूकार की घर पवित्र किया साहूकार ने सेवा पूजा को बड़े आनंद वो हर्ष से किया गुरू ने पूछा कि तुम्हारा लड़का कहां है साहूकार ने जवाब दिया कि थोड़े दिन हुए मर गया पूछा कैसे मरा साहूकार बोला कि महाराज आप तो जानते ही हैं कि संसार इस जगत् का नाम है मृत्यु का कौन कारण वर्णन करूं गुरू ने उसी की परीक्षा करी तब लड़का धरती से निकलवा कर जिला दिया सब लोगों को विश्वास भक्ति और साधु सेवा का हुआ ॥

केवल कूवा की कथा ॥

केवल कूवा जात कुम्हार ऐसे परम भक्त साधु सेवी हुए कि अपने कुल को पवित्र करिके भगवत् को प्राप्त कर दिया एक बेर उनके घर साधु आये घर में कुछ न था ऋण भी न मिला नितांत कुआ खोद देने के

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

प्रबंध पर एक दूकान दार ने सामग्री रसोई की दी साधों की सेवा करी जब कुआ खोदने लगे तब दस बीस गज पर रेत निकला टूट के सब केवल जी पर पड़ा मरा जानकर सब लोग चले आये कि हजारों मन मट्टी के नीचे कब जीते होंगे एक मास पीछे किसी ने वहां शब्द राम राम सुन कर गांव में सब से कहा सब गांव आया हाथों हाथ मिट्टी टालकर देखा- केवल जी आसन लगाये बैठे हैं एक लोटा जल आगे धरा है एकओर मट्टी ने दिन के भोजन के पनवाड़े हैं बाजा बजाते धर लाये मट्टी गिरने से कुछ कुबड़े हो गये तब से केवल कूबा बिख्यात हुए किसी समय साधु भगवत् मूर्ति स्थापन करने के लिये जाते रहे केवल जी के घर उतरे बहु मनोहर रूप देख कर केवल जी को इच्छा हुई कि हमारे यहां रहते तो अच्छा था प्रभात को साधू मूर्ति को उठा चले न उठी बहांई रही स्थापन करके सेवा करने लगे झलेरा गांव जहां केवल जी रहे वह मूर्ति विराज मान है अब तक केवल जी के घर में है अपने भक्त के हृदय की प्रीति जान कर रह गये इससे जान राय नाम है उस मूर्ति का एक बेर केवल जी को शंख चक्र लेने को द्वारावती जाने की इच्छा हुई भगवन् ने आज्ञा की तुमको घर बैठे सब होजायगा कहीं मत जाओ शरीर पर सब चिन्ह होगये ऐसे २ कितने प्रभाव केवल जी के हैं समुद्र वो गोमती के बीच में बड़ी रेती है जब लहर आवै तब समुद्र गोमती मिल कर रेती जल में होजाय फिर खुल जाय एक समय लहर आना बन्द होगया रेती खुली रह गई हवा से रेती के उस देश के लोग दुखी हुए केवल जी की माला गई तब से समुद्र गोमती में मिलने लगा यह प्रभाव देखकर बहुत लोग चेले केवल जी के हुए भक्ति की रीति उसी देश में चली एक दिन केवल जी के घर साधु आये उनके निमित्त उनकी स्त्री ने सूखी रोटी बनाई संयोग वस उस स्त्री का भाई उसी समय आगया उसके निमित्त खीर बनाई केवल जी देख कर उस को पानी लाने को भेजा खीर साधों को खिला दी स्त्री ने आकर क्रोध किया उसको घर से निकाल दिया उसने दूसरा खसम करके बेटा बेटी जन्माया एक समय अकाल पड़ा तब अन्न को बिलखती केवलजी के यहां आई देखा भंडारा चेत रहा है केवल जी को दया आई बोले कि अरे निगोड़ी जो खसम करना अंगीकार था तो ऐसा खसम क्यों न किया जैसा मेरा खसम है कि तेरा खसम भी जिसका भिखारी हुआ केवलजी साधोंके आने जाने की राह में भाड़ू देना उसको कह दिया सुकाल हुआ तब विदा कर दिया ॥

ग्वाल जी की कथा ॥

ग्वालजी परमभक्त साधु सेवी हुए अपने उद्यम से जो कुछ लाभ होता साधों की सेवा करते एकसमय वन में साधु सेवा में रहे उनकी भैंस चोर ले गये घर में

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

अपनी मा से कहा कि एक ब्राह्मण घी के दाम समेत भैंस को देने का प्रबन्ध करके ले गया है मा उन की जान गई पर कुछ न बोली पुत्र स्नेह करके एक दिन दीप दानको चोरों ने भैंस के गले में चांदी की हंसुली डाली भगवत् जो कि ब्राह्मणों के ब्राह्मण हैं रस्सी तोड़ कर भैंस कोत्वाल जी के घर पहुंचाया ग्वाल बोले री मा देख कैसा सच्चा ब्राह्मण है घी के दाम की हंसुली समेत भैंस पहुंचाय गया ॥

गोपाल की कथा ॥

गोपाल जी भक्त क्षत्रि उपासक जैपुर के राज्य में हुए साधु सेवा की उनकी बड़ी ख्याति हुई तब उनके कुल में कोई विरक्त होगया रहा सो परीक्षा लेने को आया अच्छे प्रकार उनकी सेवा करी घर में भोजन करानें को ले गये उन्हों ने कहा स्त्री को हम नहीं देखते गोपाल ने कहा सब अलग होजायंगी भोजन करने लगे तो झरोखे से भक्त की स्त्री दर्शन करने लगी तब विरक्त ने एक तमाचा गोपाल के मुंह पर एक और मारा गोपाल ने दूसरी ओर बाकी रही उसे फेर कर विनय किया कि इसको भी पवित्र करिये वह विरक्त बोला कि ऐसेही वंश से कुलका उद्धार होता है ॥

गोपाल विष्णु दास की कथा ॥

गोपाल जी रहने वाले बांगली काशी के समीप वो विष्णु दास रहने वाले काश्मीर देश दक्षिण के दोनों गुरु भाई भक्तों की सेवा परम भाव से करते थे और जो कुछ धर्म अच्युत गोत्र के कुलको चाहिये सो दोनों भाइयों ने ऐसा पालन किया कि विख्यात होगये भंडारे महोत्साह में जो कोई उनको बुलावे तो गाड़ों में सामग्री भर के ले जाते कि कोई बात की घटी आने से भंडारे वाले की निन्दा न होय गुरू उनके सिद्ध थे दोनों भाइयों ने विनय किया कि आज्ञा हो तो महोत्साह करें गुरू ने आज्ञा दी औ बुलाने के निमित्त अपने चारों ओर जल डाल कर बोले कि तुम सामा महोत्साह की बनाओ जो दिन उत्साह का है उस दिन सब साधु आवेंगे गुरू के बचन पर निश्चय कर किसी को बुलाने को कहीं न भेजा सामग्री को इकट्ठा किया उस दिन पर सारे संसार के साधुओं के पहुंचे सब की रीति मर्य्यादा कर भंडारा बड़ी धूम धाम से हुआ पांच दिन तक भांति भांति के भोजन करवाये सब को बस्त्र द्रव्य भेंट किया गुरू ने आज्ञा की कि इस मेले में नाम देव जी वो कबीर जी भी आये हैं पता बतला दिया वो कहा कि दोनों महा पुरुषों का दर्शन कर आओ दोनों भाई दौड़े नाम देव जीका चरण प्रीति से पकड़ लिया नाम देव जी कृपा करके बोले कि जहां भगवत् भक्तों की प्रीति नहीं तहां हम नहीं जाते जहां प्रीतिवो सेवा भक्तों की होती है तहां निश्चय करके आते हैं तुम्हारी साधु

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

सेवा देख कर बहुत प्रसन्न हुए अब तुम कबीर जीका भी दर्शन करो तब दोनों भाइयों ने राह में कबीर जीका दर्शन किया उन्हों ने भी वैसेही कृपाकी विदा होकर दोनों भाई गुरू के निकट आये भगवत् से मिलने का दृढ़ अवलम्ब साधु सेवा को समझ कर स्मरण भजन करते रहे ॥

गणेश दई रानी की कथा ॥

रानी गणेश दई मधुकर साह राजा वोड़छे की धर्म पत्नी भगवत् भक्ति में अद्वैत रही राज्य से जो मिलै साधु सेवा में लगाती एक साधु ने धन के ठिकाने की जगह रानी से पूछा रानी ने कहा साधु सेवा धन्य है तिस पर रानी की आकु में छुरी मार कर वह असाधु भाग गया कितने दिनों रानी बहाना रजो धर्म वे वेचैनी शरीर की करके राजा की सेज पर न गई इस हेतु कि यह घाव देख कर राजा सब साधु से भाव घटा देगा नितांत राजा के पास गई देख कर राजा ने पूछा तब वृत्तान्त कहा राजा अति प्रसन्न हुए अपना भाग सराहा ॥

लाखा भक्त की कथा ॥

लाखा भक्त हनुमान वंश में रहने वाले मार वाड़ देश के हंस के सदृश हुए राम सेवी पासक साधु सेवी विख्यात हुए अकाल पड़ा साधों का आना जाना बहुत हुआ दूसरी जगह कहीं जा बैठने का विचार किया भगवत् ने स्वप्नमें कहा कि इसी जगह रहो प्रभात एक गाड़ी गेहूं और एक भैंस आवैगी गेहूं तो कोठी में रखना जितना प्रयोजन होगा उतना निकलता रहेगा घटेगा नहीं-वो घी दूध मट्ठा भैंसि से होगा जब प्रभात हुआ तब गेहूं वो भैंसि एक आदमी पहुंचा गया लाखा सुचि जी ने होकर साधु सेवा करते रहे उस भैंस वो गेहूं के पहुंचने के हेतु भगवत् ने यह चरित्र किया कि किसी ने किसी को बाल मारा कि देखैं गे तू गेहूं वो भैंस लाखा भक्त को देआवैगा वही देगया फिर लाखा साष्टांग दण्डवत करते एक सुमिरनी भेंट लेकर जगन्नाथ जी गये थोड़ी दूर जब मन्दिर रहा जगन्नाथ रायने पालकी भेज कर दर्शन दिये सुमिरनी अंगीकार की कुछ दिन पुरी में रहे एक लड़की कुवारी रही साधु सेवा के लालच ब्याहमें चित उठा विना रुपया कौन करै जगन्नाथ जी ने आज्ञा दी हमारे भंडार से लेकर ब्याह करो अंगीकार न किया पुरी से चल खड़े हुए तब जगन्नाथ जी ने एक राजा को स्वप्न दिया तब उसने एक हजार मुद्रा भेंट किया भगवत् आज्ञा जानी अंगीकार किया घर आनि के लड़की का ब्याह कर जीवना साधों की सेवा में लगाया ॥

कथा रसिक मुरारि की ॥

रसिक मुरारि जी परम भक्त हुए सेवा पूजा उत्साह सहित करते वो प्रिया प्रीतमके रंगमेरंगे मंगल छवि माधुरी के आनंद में मग्न रहा करते

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

सदा चरणामृत पीते जल नहीं एक समय भंडारा हुआ चरणामृत संतों का लिया स्वाद न पाया कारण ले आने वाले से पूछा तो एक कुष्टी साधु का चरणामृत घृणा से नहीं उतारा था उस का भी चरणामृत उतर आया तब स्वाद पाया एक साधु ने अपने सोंटे का भी पारस मांगा न पाया तब जाकर पत्तल आधी खाई रसिकमुरारि जी के शिर पर मारा उस समय बारह राजा चेले मुरारि जी के उसको मनाने को उठे सब को मना करके आप जाकर विनय करी कि आज सीथ प्रसाद कृपाकर आपने दिया और दिन चरणामृत मिलता था यह कहकर कई पारस दिलवाये एक बेर बगीचे में साधु उतरे आप के जाने पर एक साधु हुक्का पीता रहा संकोच कर छिपाया आपने देख कर आदमियों से कहा हुक्का भर ला दर्द होता है जब आया तब थोड़ा पीकर उस साधु को दिया उसे साधु ने पिया एक बेर जागीर के गांव दो चार रहे सो राजा ने निकाल लिये श्यामा नन्द गुरुदेव ने लिखा जिस दशा में हो वैसेही आओ भोजन करें उठे थे जूठेही हाथ सुंह गुरु के पास पहुंचे गुरु ने प्रसन्न होकर राजा के पास जाने की आज्ञा दी लगे जब राजा से भेंट करने चले पालकी में तब राजा ने एक बौड़हा मत्त हाथी राह में छुड़वा दिया सब भाग गये कहार भी भागे तब हाथी से कहा कि हरे कृष्ण हरे कृष्ण क्यों नहीं कहता सुनतेही वह हाथी सोर गुल सब छोड़ कर चरणों पर मस्तक झुका कर आंखों से जल प्रेम का गिरा ने लगा गोसाईं ने माला गले में पेन्हा कर भगवत् नाम का नेम उपदेश कर गोपाल दास नाम रख दिया राजा सुनके दुष्टता छोड़ चरणों में आनि कर गिरा अपराध क्षमा कराया चेला हुआ गांव छोड़ दिये और श्री दिये हाथी साधु सेवा करने लगा बनजारों का जिनिस लाकर अण्डारा महोत्साह करता सबकी हानि का वृत्तान्त जब पहुंचा तब गोसाईं जी ने हाथी को समझा दिया तबसे पांच सात सौ की जमात साधों की लेकर महंत के डौल से रामत करने लगा जहां पड़ै तहां भेंट वो सामग्री सब कोई पहुंचाय देते यह वृत्तान्त संसार में ख्यात हुआ देशके आमिलने भी सुना पकड़नेका उपाय किया हाथ न आया एक कोई साधु का रूप बना कर सहज में ले आया कारागार में बन्धन किया वह गोपाल दास बिना भगवत् प्रसाद वो सीथ प्रसाद के कुछ और नहीं खाता रहा तीन दिन बिन अन्न जल खड़ा रहा आमिल ने कहा कि गंगा जी में ले जाव गंगा जल तो पान करैगा जब गंगा में गया तो शरीर को छोड़ परमधाम को गया यहां एक बात अति कोमल वो सूक्ष्म भी है एक कारण करके वर्णन नहीं कर सक्ता सब कोई अपने अभिलाष वो विश्वास के अनुकूल समझ लेवैं गोब्राह्मण वो हरि भक्त और हरि भक्तों की कृपा ॥

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

मनसुखदास की कथा ॥

मनसुख दासजी जाति कायथ ऐसे भगवत् भक्त ऊए जिनको भगवत्ने साक्षात् दर्शन दिये साधु सेवा में बड़ी प्रीति रही कंगालता आन गई उपवासों से दिन कटते थे ऐसी दशा में किसी दुष्ट के बहकाने से एक साधु ने मिठाई का भोजन मांगा तब स्त्री से आपने उपाय पूछा उसने नाक में से नथ उतार कर हाथ पर रख दी गहने धरके साधु सेवा की भगवत् मनसुखदास के रूप से रुपैया देकर नथ बनियां के यहां से ल्याये वह बड़ भागिनी चौका देती रही बोली पहिना देव प्रभु ने श्री हस्त से पहिनाई मनसुखदास से स्त्री की भक्ति अधिक जान कर स्त्री को दरश दिया क्योंकि ऐसी दरिद्रता में तन में केवल एक गहना सोवी नाक का जिसकरिके सुहागिन कहलाती हैं सो उतार दिया साधु सेवा को किया तो भगवत् क्यों न दरशन दे जब मनसुखदास ने देखा सब वृत्तान्त सुना तो जाना भगवत् के चरित्र हैं सब बातें समझ कर आनन्द में मग्न हो गये अब अपने भाग को सोचने लगे स्त्री के भाग को धन्य माना अन्न जल छोड़ कर दर्शन को अभिलाष कर भजन करने लगे स्वप्न ऊआ काशी में दरशन होगा वहां जाकर काशी में भजन करने लगे चतुर्भुज रूप से प्रभु ने दरशन दिये वर यही मांगा कि यही रूप मन में बसा रहै. अन्त में उसी रूप को प्राप्त ऊए ॥

हरि पाल निष्कञ्चन की कथा ॥

हरि पाल ब्राह्मण ऐसे भक्त और साधु सेवी ऊए कि धन सब साधु सेवा में उठाय दिया. ऋण से जहां तक मिला वह भी साधु सेवा में उठाया भगवत् भक्तों को खिला दिया निष्कञ्चन विख्यात ऊए तब चोरी ठगी करने लगे जिसको तिलक कंठी अथवा भक्त जानें तिससे न बोलें भगवत् सेवी सुस्त जानते तिसको हाथ न लगाते एक जमात साधों की आई टिकाकर सामग्री भोजन की चिन्ता में निकले कुछ हाथ न लगा विकल ऊए भगवत् को भी भक्तों के विकल होने से चिन्ता ऊई द्वारका से रुक्मिणीजी समेत चले श्रीकृष्णजी साहूकार के रूप रुक्मिणी साहूकारनी के रूप से आये निष्कञ्चन जी से कहा कि उस गांव तक पहुंचा देव एक रुपैया दिया निष्कंचन जी तीर कमान लेकर चले पंथ में सोचने लगे कि यह साहूकार अच्छा विकना चोदना मोटा ताजा है और भगवत् से विमुख दिखाई पड़ता है कि तिलक माला नहीं रखता इसका माल लेना चाहिये जंगल में पहुंचे तब तरवार खींच डरवा कर सब आभूषण उतरवा लिया एक कल्ला साहूकारनी की उंगली में रह गया निष्कञ्चन जी उसको भी बल करके उतारने लगे साहूकारनी बोली अरे निगोड़े तू बड़ा बेदरद वो कठोर है कि मेरा सारा गहना ले लिया अब एक कल्ले के कारण मेरी अंगुली मरोड़ता

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

है निरंचन जो बोले चल बावली कहां की कठोरता और कोमलता लाई है तेरा खसम तुझको सौ छल्ले गढ़ा देगा मैं इस छल्ले बिना दसहरि भक्तों की सेवा कहां से करूं गा यह सुनतेही आप प्रभु प्रगट हो छाती से लगा कर राजा यह पदवी निरंचन को देकर अन्तरध्यान होगये अब बिचारना चाहिये साधु सेवा की महिमा को जिसके प्रभाव करके पाप कर्म पुण्य रूप होगया और भगवत् जो काल का भी काल और भय का भी भय है सेवसी भूत होकर भक्त के मनोर्थ पूर्ण करने को निज धाम छोड़कर आता है ॥

हरी राम की कथा ॥

हरीराम जी ऐसे भगवत् भक्त रहे कि भजन के आगे सर्व साधन तुच्छ समझते रहे बड़े प्रतापी वो बुद्धिमान चतुर वो प्रेम की मूर्त्ति रहे और प्रिया प्रीतम के ध्यान में दिनरात व्यतीत होता रहा वो साधु सेवा का वरणन उनका कौन करसके एक साधु की धरती एक संन्यासी ने राना के समीप बैठने वो राना की मिचता के गर्व से छीन ली उसने राना के सन्मुख दुःख निवेदन किया तो धरती न मिली और धक्के पाये तब उस साधु ने हरीराम जीसे वृत्तान्त कहा हरीराम जीने राजा के आगे जाकर वृत्तान्त निवेदन कराया जब न माना तब बचन कठोर भगवत् भक्तों का वो दुष्टों का हिरण्य कश्यपादिका कुछ धरती साधु को दिलाई सच है कि सन्त जन कालयम किसी से नहीं डरते राजा की कितनी बात है ॥

रानी वो राजा की कथा ॥

एक राजा परम भागवत साधु सेवी ऐसा हुआ कि साधों की भीड़ उसके यहां बनी रहती थी अपने हाथ सेवा करता एक महन्त परमभक्त और ज्ञानी से बड़ी प्रीति होगई जाने नहीं देते एक बर्ष पर्यंत महन्त टिके रहे प्रभात जाने का निश्चय किया राजा ने बहुत बिकल होकर रानी से कहा रानी ने देखा कि महन्त के जाने से राजा नहीं जीवे गा तब बिचार किया कि लड़के को बिष दे कि इस हेतु कुछदिन महन्त ठहर जायंगे सोई किया राज मन्दिर से महा रुदन की धुनि हुई महन्त भी दौड़ कर गया लड़के को श्याम देखा जाना कि बिषदिया है वृत्तान्त पूछते २ राजा ने कहा तब महन्त उनके प्रेम को समझ कर बेसुध होकर मग्न होगया सब साधों को बुलाकर भजन प्रारम्भ किया थेड़ी बिलम्ब में लड़का जी उठा खेलने लगा फिर महन्त साधो को बिदा कर आप राजा रानी के प्रेम में बन्धकर रह गया सच है जो जन भगवत् भक्तों की महिमा और सत्संग के सुख को जानते हैं उनको बियोग भगवत् भक्तों का करोड़ नर्क के दुःख से भी अधिक दुःख देने वाला है ॥

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

एक राजा की लड़िकी की कथा ॥

एक भक्त साधु सेवी राजा की लड़िकी जो ऐसे बिमुख के साथ व्याही गई कि वह कुछ न जानता था कि भगवत् वो भक्ति वो साधु किस को कहते हैं अपने ससुराल में गई तब अति बिकल भई साधु का दर्शन दुर्लभ हुआ तब एक लौंडी से कहा जब साधु आवें तब कहना एक जमात साधों की बाटिका में उतरी सुनकर उस लड़िकी ने अपनी दो तीन बरसे का लड़का रहा उसको विष दिया मरगया राजा उसका खसम रोदन करने लगा तब वह लड़िकी बोली कि मैंके में हम देखा है साधु के चरणा मृत से लड़का निश्चय जिऐगा उसने कहा साधु कैसे होते हैं तब लौंड़ी के साथ करदिया उसने दण्डवत् आदि की बिधि बता दिया वह जाकर साधों को दण्डवत् बंदन कर साधों को घर लाया वह लड़िकी ने दरसन कर धन्य माना साधु लोगों ने चरणा मृत मुख में लड़के के देकर भगवत् ध्यान वो भजन प्रारम्भ किया लड़का उठ बैठा वह राजा भगवत् भक्त होकर उस देश को भक्त किया देखा चाहिये सत्संग की महिमा को एक लड़िकी बड़भागी के प्रताप से कितने लोगों का उद्धार हुआ और भगवत् भक्त जन्म वो मरण का दुःख दूर करके लाखों करोड़ों को अमर कर देते हैं एक लड़का जिलादिया तो क्या बड़ी बात है ॥

कथा नीवां जी की ॥

नीवां जी राजपूत ऐसे भगवत् भक्त साधु सेवी हुए कि जो भक्त उनके घर आवें अति प्रेम से उनको दण्डवत् कर चरणों को धोकर अपने घर ठहराते जगह २ कथा बैठाकर अपनी मधुकर बानी और सेवासे प्रसन्न रखते इसी प्रकार जबतक रहे बय क्रम भर उनके प्रेम को भगवत् ने निबाहा ॥

कृष्ण दास जी की कथा ॥

कृष्ण दास जी गलता जी जय पुर के राज में भगवत् भक्त हुए रघुनन्दन स्वामी के चरण कमल में मन भवंर के भांति लगाये रहते सुख दुःख शत्रु मित्र बराबर जानते स्त्री को नहीं देखते अभ्यागत सेवा करते कलियुग को मानो जीत लिया जो दधीच कृष्णेश्वर ने किया सो किया एक दिन गुफा में बैठे भजन करते द्वार पर व्याघ्र आया अभ्यागत जानकर अपने जानुका मांस काट के डाल दिया भगवत् ने प्रसन्न होकर दर्शन दिया विचार करना चाहिये इस धर्म को अब हम लोग थोड़ासा पानी और रुटकी आटा देते रोते हैं ॥

राजा बाई की कथा ॥

राजा बाई धर्म पत्नी राम राजा पुत्र खेमाल भगवत् और गुरू और भक्तों की ऐसी भक्त वो सेवा करने वाली हुई कि संतो ने कृपा करिके

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

दोनों लोक से निर्भय करि दिया और जिसने अपने स्वामी की शिक्षा के अनुकूल आचरण किया और नवधा भक्ति को मुख्य तर समझ कर अन्य धर्म सब छोड़ दिये और उस भक्ति के प्राप्ति का हेतु सिवाय भगवत भक्तों की प्रीति के दूसरा न जान कर सार असार के मूल तत्व को अच्छे पहुंच कर भगवत् की अनन्य दास्यता में दृढ़ ऐसी उदारता इतनी रही कि एक बेर अपने पति के संग मथुरा जी गई वहां सब धन जो पास रहा साधु ब्राह्मणों को देदिया कुछ राह के निर्वाह को भी न रक्खा उसी समय नाभा जी कर्ता भक्तमाल के आगये हाथों में केवल कड़े एक सौ पांच रुपैया के दाम के रह गये थे जो बेच कर घर जाने का विचार किया था उसको रानी साहब ने भेंट कर दिया और राजा से कहा आज-तक घरोर पर बोझ रहा आज काम आया राजा प्रसन्न हुए किसी प्रकार करके राज धानी पुर पहुंचे सत्य है कि जिसने साधु सेवा के समय कल की चिन्ता को किया सो साधु सेवा क्या करैगा ॥

नन्द दास जी की कथा ॥

नन्द दास ब्राह्मण रहने वाले बरेली परम भक्त साधु सेवी हुए खेती से जो लाभ होता साधु सेवा भगवत् उत्साह में लगा देते एक दुष्ट विमुखने एक मरी बछिया उनके खेतमें डालकर उनको हत्या लगाई नन्द दास जी ने उसको जिला दिया सबको भक्ति का निश्चय वो विश्वास हुआ ॥

हरि दास जी की कथा ॥

हरि दास जी योगानन्द महाराज के बंश में परम भक्त हुए वामन जी की भांति उन की भक्ति थोरेही काल में बढ़ गई साधुके अपराध कबहीं चित्तपर न लाये भक्तों को गुरु तुल्यजानते तिलक माला से अत्यन्त प्रीति रही रघुनन्दन महाराज के उपासक वो गृह में रहते पर वैराग्य जनक महाराज के सदृश रहा ॥

कान्हड़ जी की कथा ॥

कान्हड़ विट्ठल दास जी के पुत्र जातके चौबे रहने वाले मथुरा के भगवत् महोत्साह ऐसा करते रहे कि चारों वरण चारों आश्रम और कंगाल वो राजा सब इकट्ठे उस महोत्साहमें होतेरहे सब का शिष्टाचार करते कोई विमुख न जाता चन्दन पान वो वस्त्रसे भगवत् भक्तोंकी सेवा सत्कार करते और समाज ऐसी होती मानो अमृत की वर्षा होती है जब भगवत् भक्तोंकी सेवा सत्कार करके बिदा करते तो प्रेम में बेसुध होजाते रहे सो कारण दो प्रकार का समझ में आता है एक तो भक्तों का वियोग कि अपने को बड़ भागी जानकर प्रेम में मग्न होजाते रहे और उसी महोत्साहमें सबकोई इकट्ठे होकर नाभा जी जिसने भक्तमाल रचना किया उनको गोसाइ पदवी दी थी ॥

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

साधो खाल की कथा ॥

साधो खाल ऐसे भक्त साधु सेवी हुए कि दिन रात भगवत् भक्तों के सुख के हेतु चिन्ता रहती थी वो नव प्रकार की नवधा भक्ति दशवीं प्रेम लक्षण सोई मानसर है तिसके मराल थे सब की भलाई की चाहना सदा भगवत् चरितोंके स्मरण में रहते क्षमा शील सब से बराबर सब के मित्र निर्मल चित्त प्रेम की खान हुए ॥

गोपाली की कथा ॥

गोपाली गिरधर खाल कि जिसका वर्णन अेष निष्ठा में होगा तिसकी माता भगवत् भक्तों केपालन का यशोदा का अवतार हुई मनमोहन महाराज से ऐसी प्रीति रही कि व्रज चन्द महाराज के माधुर्य्य रस और प्रेम भक्ति के रंग में भरी हुई दिन रात श्रीगोविन्द २ यही ध्वनि लगी रहती थी संतोंके चरणों में दृढ़प्रीति रही ॥

निष्ठा चौथी माहात्म्य श्रवण जिसमें चार भक्तों की कथा ॥

श्रीकृष्णस्वामी के चरण कमलकी कमल रेखा को और कपिलदेव अवतार को दण्डवत् है कि जगत के उद्धार के हेतु सांख्य शास्त्र का तत्व विचार करके फैलाया भगवत् चरितों का सुनना उद्धार दो भगवत् पद प्राप्त के हेतु और जब तक जन चरितों को न सुनैगा तो भगवत् में मन किस प्रकार लगैगा ध्यान वो मंत्र का जप औ पूजा वो भजन वो व्रत वो नेम आदि सब साधन का सम्बन्ध केवल श्रवण से है कि जब गुरू और शास्त्रों से सुना तब उसके अनुकूल साधन किया और अच्छे प्रकार विचार करके देखा जाता है तो संपूर्ण कार्य्य यह लोक वो परलोक के श्रवण को पाय कर प्रवर्त्त मान हुए वो होते हैं ब्रह्मा जी को भगवत् ने सृष्टि रचने की आज्ञा दी तो कुछ न होसका जब शब्द तप करने का सुना और उसके अनुकूल साधन किया तब इस संसार की रचना की कोई मन्वंतर वाले जाद ब्रह्मका सुनाही युक्ति मानते हैं कि भागवत में इसका वृत्तान्त लिखा है और वहां उसके वर्णन का प्रयोजन नहीं समझा क्यों कि यह ग्रंथ और है और वह इस ग्रंथ से अलग है अभिप्राय यह कि बिना सुने कुछ नहीं होसकता और भगवत् के मिलने को तो सिवाय भगवत् चरित्र श्रवण के और कोई मार्ग सुख साध्य नहीं महिमा सत्संग की जो ठौर ठौर शास्त्र वो पुराणों में लिखी है उससे यही तात्पर्य है कि भगवत् चरित्र सुने और शीघ्र भगवत् पद को प्राप्त हो भगवत् महिमा श्रवण निश्चय कि आप निज श्री मुख से वर्णन किया जो पुराणों में ठौर ठौर लिखा है हरिवंश में लिखा है कि जहां भगवत् कथा को सुनते हैं वहां वेद और सब शास्त्र प्राप्त रहते हैं जिनको मुक्ति की चाहना हो तो भगवत् कथा सुने भागवत का वचन है कि जो भगवत् कथा रूपी अमृत को कर्ण पुट करिके

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

स्नान करते हैं वे सब पापों को दूर करि भगवत् परम्पद को जाते हैं फिरि भागवत में लिखा है कि जो कोई भाग्य हीन भगवत् कथा को छोड़ कर निन्दित सार हीन कथा, श्रवण करते हैं वे लोग ऐसे हैं जिस प्रकार शूकर की विष्ठा में रुचि होती है और अच्छे प्रकार विचार करना चाहिये कि जो कोई भक्त हुए अथवा अब हैं वो आगे होंगे वह सब प्रताप श्रवण का है यद्यपि सुनना भगवत् चरित्रों का सब प्रकार मंगल रूप है परन्तु जो विधिपूर्वक विश्वास करिकै सुनै तो उसका क्या कहनाहै यह कि व्यास को भगवत् रूप जाने वो हरि चरित्रों और उस शास्त्र में हृदय से प्रेम हो वो सुनकर समझ कर अच्छे प्रकार मनन करै और उसके अनुकूल बर्त्तै भागवत कथा से तृप्ति न होय ऐसी प्रीति होवै हरि चरित्रों को नित नवीन समझै यह नहीं कि एक बार जो सुना उसके सुनने का क्या प्रयोजन है पृथु महाराज ने भगवत् चरित्रों के सुनने को दशहजार कान मांगे भागवत से नवधा भक्ति में जो प्रथम श्रवण लिखा है सो यही अभिप्राय है कि बिना श्रवण भगवत् चरित्रों के भक्ति प्राप्ति नहीं होती यद्यपि आयुष की वार्त्ता लाभ में भगवत् चरित्रों का सुनना वो विष्णु पद आदि का श्रवण सब श्रवण निर्छाही में प्राप्त होते हैं पर दुष्टतर श्रवण वह है कि भगवत् भक्तों के सत्संग में चरित्र सुने जावैं किस हेतु कि उस श्रवण का साधन भी कहां प्राप्त होता है और जो कुछ सन्देह वो भ्रम होता है सो तुरन्त निवृत्त हो जाता है अथवा पुराण आदि की कथा कराना यह भी अच्छी रीति श्रवण की है किसी हेतु कि आपसे आप सत्संग लाभ होता है सो कथा कराने की रीति कहीं कहीं है पर जो लोग ऐश्वर्य्य मान और सरदार और मुलीजिम सरकार हैं उनको कथा कराने का दृष्टान्त अद्भुत है थोड़ा सा लिखता हूं प्रथम तो भगवत चरित्रों में किसी को प्रीतिही नहीं वरञ्च कोई कोई मन्द भागियों का यह वचन है कि साहब कथा सुनने से क्या होता है करणी प्रमाण है और उन दुष्टों असुर बुद्धियों को इस बात का विचार नहीं कि जिसका पढ़ना वो व्यवहार के काम करने वो चतुराई सम्पूर्ण कार्य्य लेन देन वो काव्य संस्कारी आदि सब श्रवण के अवलम्ब से उनके ध्यान में आये हैं तो जब तक भगवत् कथा न सुनेंगे तब तक भगवत् का रूप किस प्रकार से बुद्धि में आवेगा और किसी के कुल में यह दृष्टान्त अपनी आंखों से नहीं देखा कि कभी उनके कुल में कथा नहीं हुई वरञ्च अमंगल और कारण आजाने किसी उत्पात और मरजाने किसी प्रियबन्धु का समझते हैं सो ऐसी बुद्धि और बोलन उनकी उनके सत्यानाश जाने की निमित्त है जो किसी ने गला दबाने से अथवा सङ्कोच से किसी की कथा कहलाई तो ऐसे आदमी से कि इकट्ठे का रहने वाला अड़क दार अथवा पुरोहित अथवा लड़काई

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

की जवानी का यार अथवा सदा सेवी होवै किसी प्रेमी वो भगवत् भक्त को ढूंढकर कहलाने कीतो कुछ बातही नहीं भला अब जब कथा प्रारंभ हुई तो कोई सुनने को नहीं आता कोई सावकास नहीं पाने की बात कहता है कोई कार्य्य की भीड़ का परिश्रम बतलाता है कोई कहता है कि क्या हमने पाप किया है जो कथा सुने और कोई कहता है कि जिस दिन संपूर्ण होगी उस दिन आजावेंगे और कोई अपने आपको बड़ा आदमी अथवा बड़ा ओहदे वाला समझ कर कंगाल अथवा छोटे ओहदे वाला जान कर उसकी कथा में नहीं जाता और देखिये तो उन साहिबों को सिवाय सतरंज वो गंजीफा खेलने वो कुत्सित कथा कहने वो खेल कूद नाच तमाशा देखने और ऐसेही ऐसे प्रकार के निष्फल आचरणों के सिवाय और कुछ काम नहीं और जो भाग वस कोई संयोग से चला भी गया तो तनक मन न लगा और जातेही निद्रा विलास में प्राप्त हुए और जब और किसीने पूछा तो कथा और पंडित दोनोंकी निन्दा करने लगे बस वह कथा कहलाने वाला अकेला सुनता रहा जब समाप्त होने का दिन आया और उनलोगों को बुलाया तो दश बीस बार के बुलाने से निज कपड़ा चढ़ाने के समय आये इसहेतु कि कोई अक्षर कानमें न पड़ जाय और जो कथा के पूर्ण होने में कुछ बिलम्ब हुआ तो बुलाने वाले आदमी पर क्रोध किया कि इतना पहिले क्यों बुला लाया और कोई पंडित जी से कहता है कि महाराज शीघ्रता करो संध्या निकट आई और कोई गरदन उठा कर पंखे की पांती देखता है कि लाल पांती अन्त की आई कि नहीं और कोई उस घरके अधिष्ठाता से कहता है कि आरती आदि की सामा सावधानी से तैयार कर रक्खो कि विलम्ब न हो और कोई मनही मनमें कहता है कि किस उत्पात में आनफसे और किसी ने सुद्राही भेज दिया और चरण को दुःख न दिया किसी प्रकार इस दृष्टान्त से कथा पूरी हुई पर इतना और भी अधिक है कि जो बस चला तो खोटा रूपैया चढ़ा गये वाह क्या बड़ाई कीजिये कि जो नाच में जावें तो स्वप्न में भी नींद न आवे और उसके प्रेम में भूख प्यास सब भूल जावें और सबसे पहिले जा बैठें और भगवत् चरितों के सुनने का और कथा में जाने का यह दृष्टान्त कि मानो किसीने तोप के मुख पर खड़ा कर दिया हो हाथ बांध कर यह विनती है कि इस अवगुणी ने अपना दृष्टान्त लिखा है किसीको दुःख न होय यह दृष्टान्त मेरा करोड़ भागोंमें से एक भाग है हे श्रीकृष्ण स्वामी हे दीन वत्सल हे प्रणतारत भंजन हे दीनबन्धु कोई दिन ऐसाभी आवैगा कि आपके चरित्र पवित्र तो चन्द्रमाके सदृश होंगे और मेरा मन चकोर की भांति और कौन वह घड़ी होगी कि आपके रूप अनूप का चिंतवन और ध्यान ऐश्वर्य्य की भांति सदृश होगा और मेरा मन लालची पुरुष के सदृश है हे करुणा कर

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

महाराज जो अपनी भाग्य हीनता और अपराधों को बिचार करता हूं तो करोड़ों जन्म तक कुछ ठिकाना नहीं दीखता और पतित पावन दीन वत्सल अधम उधारन करुणा निधान आदि नामों पर दृष्टि होती है तो कोई चिन्ता और भय का स्थान नहीं पर इसमें भी एक कटाक्ष यह है कि यह लिपि मेरी केवल नाममात्र को है कुछ मन से नहीं जो अपनी इस लिपि पर दृढ़ होकर संतुष्ट रहा तौभी बेड़ा पार है कहां तक बिनय करूं जो कर्म मेरे हैं उनमें ऐसा एक भी नहीं कि जिसके अवलम्ब से आपके अंगीकार योग्य हूं अब इतनीही बिनय बनत है कि जैसा हूं आपका हूं यह इस समाज आपके चरित्र का जो मेरे हृदय के नेत्रों में भाल कै तो मेरे बराबर भाग कौन का है कि वृषभान नंदिनी ब्रज चंदिनी जी को यह समाचार पहुंचा कि नंद नंदन ब्रज चंद महाराज सामा खेली खेलने की लेकर बड़ी धूम धाम से सहस्रों लाखों अपने सखा औ मित्रों के सहित समीप आन पहुंचे तो तुरन्त करोड़ों सखियों और रंग गुलाल आदि सहित परम आनंद में भरी हुई गाती बजाती चलीं जब मान सरवर के निकट पहुंचीं तो नंद नंदन महाराज का यूथ आन पहुंचा और दोनों ओर से बर्षा रंग की कि जिसमें गुलाब वो केवड़े वो कस्तूरी वो केसर वो चंदन आदि की सुगन्ध से सुगन्धित था आरम्भ हुआ तिस पीछे कुलकुंजे जो कि अबीर और गुलाल लाल खेत पीले हरे अबासी वो गुलाबी से भरे हुए थे चलाए यह वृत्तान्त तो दूरसे बीता जब दोनों यूथ मिल गये तो इस धूम वो घन घमण्ड से रंग की बर्षा और गुलाल मलने और आपस पर डालने की भीड़ हुई कि धरती वो आकास रंगीन होकर आनंद रूप होगया और सामां सब प्रकार की लाड़िली जी के यूथ में बनत थीं और सेना बिजय रूप भी बनत सजी हुई कि उसमें ललिता वो बिसाखा वो श्यामला वो श्रीमती वो धन्या वो पद्मा वो भद्रा वो चन्द्रावली हजारों लाखों सखी सहेलियों की यूथेश्वरियों सहित रहीं इस हेतु ब्रज किशोरी जी का यूथ प्रबल पड़ा और यद्यपि नटनागर महाराज की और भी श्री दामा वो मधु वो मंगल वो सुबल वो सुबाहु वो अर्जुन वो भोज वो मंडल यूथेश्वर बनत सखा और बाल गोपाल सहित था पर लाघवता वो चटकाई वो हस्त क्रिया की तीक्ष्णता के कारण दूसरे ओर किये सब निबल पड़े और ब्रज किशोरी जी की ओर सहाय भी पहुंची कि ब्रह्माणी और पारवती वो इन्द्राणी आदि जो बिमानों पर आरूढ़ होकर इस आनंद के देखने के निमित्त आई थीं ब्रज नागरी जी की प्रसन्नता के हेतु रंग वो गुलाल और कल्प वृक्ष के फूलों की वर्षा करने लगीं यह वृत्तान्त हुआ कि एक एक नंद नंदन जी के सखा को दश दश ब्रज नागरियों ने घेर लिया और रंग डारने वो गुलाल मलने से सब का हाथ बन्द करके

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

अपनी लाघवता वो हस्त क्रिया कि तीक्ष्णता वो अनूप सुन्दरता वो मन्द मुसक्यान वो कटाक्ष तिरछी चितवन की फांस में सबको बांधि लिया नंद किशोर महाराज को वृषभान नंदिनी जी ने पकड़ा और गले में हाथ डाल कर अपनी ओर खींच लिया और ललिता विशाखा वो धन्या आदि जो समीप रहीं उनकी सहाय से ब्रज चंद छूटने न पाये सब ने मिलकर रंग वो गुलाल से अच्छी भांति सेवा करी तब चन्द्रावली कि लाड़िली जी से प्रतिकूल रही यह दशा देख कर आप आईं और ब्रज किशोर महाराज से कहा कि सावधान हो हम तुम्हारी सहाय को सामा सहित आनि पहुंची सो चन्द्रावली जीकी कृपासे ब्रजनागर महाराज नागरी जी को पकड़कर मन भाई अपना बदला लिया और एसे धूम धाम से रंगकी वर्षा वो हंसी वो ठट्ठा वो वार्तालाप शोभा उस समाज की हुई कि भक्तों के मन में वह समा शोभा समाय रहा है उस समय की छवि श्रीब्रज किशोरीजी की कौनसे वर्णन हो सक्ती है कि मानो शोभा स्वरूप मान धरतीपर आकर करोड़ों चन्द्रमाकी शोभा को लज्जित करती है गोरे मुख और तड़पदार मुखारबिंदपर अलकैं बिथुरी हुई चन्द्रिका और शीश फूल शिरपर भाल में तिलक और केसर कस्तूरी का टीका जड़ाऊ झमक और करनफूल कानोंमें शोभित नथ और बेसर नाक में महीन स्वर्ण तारी का दुपट्टे हरित वो अन्य पहिराव लहंगा आदि की अति चमक दमक सहित वो यथा योग्य आभूषण सब अंगन पर जमे हुए एक हाथ ब्रज किशोर महाराज के गले में और दूसरे हाथ में गुलाल और इसी प्रकार नंद नंदन महाराज बड़े सज वो धज के साथ श्यामसुन्दर के मुखारबिंद पर अलकों के बाल बिखरे हुए शीश पर मुकुट कानों में कुण्डल और झूमक की अन्य आभूषण सब अंग अंग पर विराजमान झुण्ड टुपट्टे से कमर कसे हुए एक हाथ तो ब्रज नागरी जी के गले में बाईं और दूसरे हाथ में गुलाल इस छवि से प्रिया प्रीतम को देखकर ब्रह्मा और शिव आदि देवताओं की तो क्या बात वो बल है कि सावधानी की बुध बुध में रह सकैं जहां आप प्रिया प्रीतम आपस के रूप को देखकर वेसुध वो मग्न हो गये ॥

कथा नारद जी की ॥

नारदजी महाराज भगवत् भक्ति को सब निष्ठाओं में अग्रणीय हैं पूर भागवत धर्म प्रचारक और कीर्तन में विशेष तर हैं पर उनको जो उत्तम पदवी मिली तो श्रवण के अवलम्ब से इस हेतु श्रवण निष्ठा में लिखा नारद जो भगवत् के मन हैं और ब्रह्मा जीके पुत्र हैं जगत के उपकार में इतनी प्रीति है कि दो घड़ी से अधिक विलम्ब कहीं नहीं करते बाल्मीक रामायण वो श्रीमद्भागवत ये दो जहाज संसार समुद्र से जीवों को पार लगानेको जो बने सो नारदजी ने उपदेश किया है जिन पर कृपा किया वे भगवत्

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

रूप होगये जैसे प्रह्लाद ध्रुव साठ हजार दक्षप्रजा पति के पुत्र वो प्रचेता आदि लाखों जिनकी गिनती नहीं होसक्ती जिस पर क्रोध किया वह भी अन्त में भगवत् को प्राप्त ऊआ चरित्र नारद जी के अपार हैं पर पूर्व का चरित्र जिस करके श्रवण निष्ठा में लिखे गये सो लिखा जाता है भागवत में लिखा है कि पहिले कल्प में नारद जी दासी पुत्र रहे दुःख पड़ने से माता उनकी ऋषीश्वरों के यहां टहल करके अपनी वो नारदजी को पालन करती थी जब कामको जाती तब ऋषीश्वरों के पास छोड़ जाती तहां जो कथा का सत्संग ऊआ करता उसको सुनते सुनते ज्ञान वैराग्य भक्ति को प्राप्त ऊए जब माता उनकी मरगई तो बनमें जाकर भगवत् का ध्यान करने लगे एक बार भगवत् के रूप अरूप का प्रकाश उनके हृदय में प्रगट होकर फिर अन्तरध्यान होगया नारद जी उसी रूप अरूप के प्रेम में विकल होकर भगवत् भजन में प्रवृत्त ऊए अन्त में फल यह निकला कि इस कल्प में ब्रह्मा के पुत्र ऐसे ऊए जिनकी महिमा ब्रह्मा जी भी वर्णन नहीं कर सक्ते ॥

गरुड़ जी की कथा ॥

गरुड़ जी भगवत् पार्षदों में हैं इस हेतु सेवा निष्ठामें लिखना उचित रहा पर एक समय उनको मोह ऊआ सो काग भुसुण्डि के यहां कथा सुनी तब ज्ञान ऊआ इस हेतु श्रवण निष्ठा में लिखा जब श्री रामचन्द्र महाराज लंका के विजय को चढ़े और रावण का बेटा लड़ाई करने आया तो संपूर्ण सेना और दशरथ राजकुमार महाराज को कि जिसकी माया के पास में अगनित ब्रह्मांडों के ब्रह्मादिक देवता फंसे ऊए हैं और जिसके एक बार नाम लेने से जीव की जन्म मरण की फांसी कटजाती हैं नाग फांस में बांधि लिया नारदजी ने गरुड़ को भेजा तब उन्हों ने सब सांपों को खाया इन्द्रजीत की माया दूर ऊई तो गरुड़ को मोह भस्म ऊआ ब्रह्मा के पास गये तब शिव जी के पास आये उन्हों ने कागभुसुण्ड के पास भेजा कि पक्षी की बोल पूर्ण अच्छे समझेगा वहां गये तब समीप नीला बलके जातेही मोह दूर ऊआ फिर रामायण वहां संपूर्ण श्रवण किया नित्य ज्ञान को प्राप्त ऊए सत्य करिके भगवत् चरित्र अज्ञान तमको सूर्य हैं और कामना के कल्प वृक्ष और कामधेनु ॥

राजा परीक्षित की कथा ॥

राजा परीक्षित अभिमन्यु के पुत्र अर्जुन के पौत्र श्रवण निष्ठा में मुख्य अग्रणीय ऊए उन्हीं से श्रीमद्भागवत की प्रवृत्ति संसार में ऊई जिस से कोटों जीवों को परम पद प्राप्त ऊआ और होती है वो होगी जब पण्डवों ने संसार त्याग किया परीक्षित को राज्य दे दिया परीक्षित ने नीति पूर्वक प्रजा का पालन किया दिग्विजय वो धर्म के पालनको निकले कुरुक्षेत्र में

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar-Mishra Collection, Varanasi

कलियुग ने छल किया जिस करके राजा को ऋषिबालक का शाप हुआ तब राजा ने जन्मेजय अपने बड़े पुत्र को राज गद्दी देकर तुरन्त गंगा तट पर उत्तर मुख आनबैठे और अपने उद्धारके हेतु ऋषीश्वरों वो ब्रह्मणों को बटोरा संयोग वश शुकदेवजी आये श्रीमद्भागवत श्रवण कराया जब विराम किया तब तुरंत राजा अपने शरीर की सुध भूलकर भगवत् के चरणों में लीन होकर मग्न वो समाधि में होरहा उसी समय तक्षक नाग ने ऋषि का बचन पूर्ण कर दिया राजा शरीर छोड़ कर उस परम धाम को गया कि फिर नहीं फिरता सत्य करिके जो ऐसा मन भगवत् चरित्रों में लगावै उसको अर्थ धर्म काम मोक्ष सब पदार्थ इसी शरीर में प्राप्त हैं ॥

लाल दास जी की कथा ॥

लाल दास जी ऐसे परम भक्त हुए कि हृदय उनका भगवत् चरित्रों का स्थान होगया जैसी भगवत् में प्रीति उसी भांति शुरू में और लोभ निकट न आया जैसे कमल पत्र जलमें रहता है तिस प्रकार संसार में रहे भगवत् चरित्रों में राजा परीक्षित की भांति थे और उसी प्रकार भगवत् धाम को गये अर्थात् बघेरा गांव में कथा श्रीमद्भागवत की हुई रही जब सम्पूर्ण हुई उसी समय भगवत् के ध्यान की समाधि लगा कर शरीर त्याग उसी परम पद को पहुंचे जहां राजा परीक्षित गये ॥

निष्ठा पांचवीं

कीर्तन के वर्णन में पन्द्रह भक्तों की कथा है ॥

श्री कृष्ण स्वामी के जब रेखा चरण कमलों को और हरि अवतार को दण्डवत् है कि ऋषि ऋषीश्वर के घर चित्र गिरि पहाड़ पर वह अवतार धारण करके अलरक और प्रह्लाद आदि को भगवत् का ज्ञान उपदेश किया यद्यपि कीर्तन शब्द का अर्थ यह है कि जो कहनेमें आवे पर शास्त्र वो पुराणके अभिप्राय करिके यह पद निज भगवत् चरित्रों के विषय होगया है दूसरे बोल चाल के हेतु नहीं रहा सो वह कीर्तन कई प्रकार का है आपस में भगवत् की चर्चा अथवा गाना अथवा भगवत् चरित्रों को काव्यमें रचना करना अथवा कथा कहानी अथवा मंत्र और नाम का मुख से उच्चारण करना अथवा स्तोत्र आदिका पाठ अथवा पढ़ाना इस हेतु कि जिस प्रकार भक्त कोई प्रकार से पारायण होवे उनको इस निष्ठा में लिखा पर यह भी जान रक्खो कि सब भक्त जितने आगे हुए और अब हैं

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

और आगे होंगे कीर्तन निष्ठा में सबको विश्वास दृढ़ हुआ और इसी निष्ठा के अवलम्बसे भक्त हुए सो सबका लिखना इस निष्ठा में हो नहीं सकता इस हेतु थोड़े भक्तों की कथा इस निष्ठा में लिखीगई और नाम निष्ठा अलग वर्णन हुई इसहेतु नाम उपासकों का वर्णन उस निष्ठा में होगा इस कीर्तन निष्ठा की महिमा और बड़ाई किसे वर्णन होसक्ती है तरन तारन पद जो संसार में विख्यात है सो इसी निष्ठा के उपासकों के निमित्त सत्य है निश्चय भक्ति और मुक्तिकी सब इसी निष्ठा अर्थात् भगवत् चरित्रों के कीर्तन परहै जो कोई जिस पदवी को पहुंचा केवल कीर्तन के अवलम्ब से पहुंचा दूसरे प्रकार नहीं श्रवण निष्ठा में जो यह वर्णन हुआ कि श्रवण के प्रभाव से भगवत् मिलता है तो तात्पर्य यह है कि जब भगवत् की महिमा और भगवत् चरित्रों का श्रवण करैगा तब भगवत् चरित्रों का कीर्तन करैगा और किसीने भगवत् चरित्रों को केवल सुनि मात्र लिया और फिरि कीर्तन नहीं किया तो कैसे भगवत् मिलैगा सिद्धान्त यह हुआ कि भगवत् कीर्तन के हेतु श्रवण एक साधन है और फल उसका कीर्तन और इसी हेतु श्रवण के पश्चात् कीर्तन शास्त्रों में लिखा है और यह बात देखने में भी आती है कि हजारों आदमी भगवत् कथा आदि सुनते हैं पर सुने पीछे जो भगवत् कीर्तन नहीं करते इसी हेतु कोई वांछित फल को नहीं प्राप्त होते और बुद्धि से भी जाना जाता है कि जबतक देखे वो सुने हुए सौंदर्य्य अथवा दूसरी कोई वस्तु का वर्णन न होगा तो किस प्रकार मन में रहैगा भगवत् का वचन है और पुराण में लिखा है कि मैं न बैकुण्ठ में रहताहूं और न योगियों के हृदय में केवल मैं वहां रहता हूं जहां मेरे मेरा कीर्तन करते हैं भागवत के एकादश में लिखा है कि सत युग में ध्यान से और त्रेता में यज्ञ से और द्वापरमें भगवत् पूजा से मुक्ति होतीरही और कलियुग में भगवत् कीर्तन प्रमाण है विष्णु धर्मोत्तर में लिखा है कि भगवत् का कीर्तन सब सुखों का देनि वाला और पापों का नाश करने वाला और मन को बिमलता देने वाला और धर्म का बढ़ाने वाला और भक्ति मुक्ति का देनेवाला और परम सार है वेद विरुद्ध मत वाले भी इस बात में युक्त हैं सिद्धान्त यह कि बिना भगवत् कीर्तन कोई उपाय जन्म मरन के फंदे से छुटने का देख नहीं पड़ता पानी के मथने से घी और रेत में से तेल प्राप्त होजाय तो हो जाय पर बिना भगवत् भजन संसार सागर को उतर जावै यह कदापि होनी नहीं और भगवत् कीर्तन के विधान में यह लिखा है कि मन से उस कीर्तन में मग्न होकर देह की दशा भूल जाय यहां एक बात स्मरण होआई कि दो आदमी ने निरन्तर में भगवत् कथा कही सुनी दोनों बे सुध होकर वहीं मरगये लोगों ने दोनों को इकट्ठे जला दिया उनकी स्त्रियों ने आकर

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

अपने अपने पति की हड्डियां अलग चुन लीं किसी ने पूछा कि तुमको अपने अपने पति की हड्डियों की प्रतीति किस प्रकार हुई कीर्तन करने वाले की स्त्री बोली कि मेरा पति भगवत् चरणों के रस में ऐसा मग्न होगया था कि हड्डी तक गलगई थी इसी से पहचान कर चुन लिया दूसरी ने कहा कि भगवत् चरित्रों के तीर जो कीर्तन करने वाले के मुख रूपी चुटकी से छूटे तो मेरे पति के हृदय में ऐसे लगे थे कि हड्डियों में वेध होगये थे इसे पहचान लिया सो इस प्रकार कीर्तन और श्रवण में प्रीति होवै पर यह वचन शास्त्रों में लिखा है कि कीर्तन भगवत् का अन्तःकरण से अथवा ऊपर से दिखलाने के हेतु अथवा कोई फल के हेतु किसी प्रकार से होवै निश्चय करिके भगवत् भक्ति प्राप्त होजायगी वो मन भगवत् सन्मुख हो जायगा इस बात का वर्णन कुछ नाम निष्ठा में होगा सब कीर्तन के प्रकार में एक प्रकार भगवत् कथा कीर्तन की जो विख्यात है तो इस समय उसका आश्चर्य दृष्टान्त है कि कीर्तन करने वाले तो बिना हेतु केवल भगवत् भजन के निमित्त से कीर्तन नहीं करते वो पढ़ना पुराणों का जीविका के प्राप्त के हेतु समझते हैं वो श्रवण करने वालों का दृष्टान्त थोड़ासा श्रवण निष्ठा में लिखा गया है बहुत करके ब्राह्मण जो भागवत् कांख में दबाये कथा की आड़ करिके फिरते हैं और उनकी कथा नहीं होती तो कारण यह है कि जिस दिन से उन्हों ने उस कथा को पढ़ा तो फिर नहीं कबहूं उसको बिचारा न देखा जो नित्य उसका कीर्तन करें तो बिना घूमने फिरने के आपसे आप हजारों पुरुष कथा करने के निमित्त उनको बुलाया करैं इस कारण से कि भागवत् वो रामायण आदि पुराण सब भगवत् रूप हैं जो कोई भगवत् कीर्तन आराधन करैगा निश्चय करिकै उसकी कामना सिद्ध होगी अर्थात् सुनने वाले जो यह बात कहते हैं कि आज कल्ह कोई कथा कहने वाला प्रेमी और भगवत् भक्त नहीं मिलता यह बचन उनका निपट झूठ है हजारों लाखों पण्डित प्रेमी मिलते हैं पर हम लोगों को उनका ढूंढ़ना नहीं और अपने अवगुण के कारण से उनके गुणों को अवगुण के समान करलेते हैं प्रेम और भक्ति पर दृष्टि नहीं जाती जिस प्रकार दो पुरुष एक सराय में रात को टिक कर सारीरात अपने अपने प्रेम में जागते रहे प्रभात को जो दोनों ने परस्पर देखा विषयी मद्यपान करने वालों ने भगवत् भक्तको यह समझा कि इसने सारीरात हमसे भी अधिक आनन्द किये होंगे और जो पुरुष भगवत् भजन में जगता रहा उसने उस विषयी को अपने से अधिक भजन आनन्द में जाना इसके सिवाय जो हमलोग भगवत् भजन करने वाले और प्रेमी होवैं तो कथा करने वाले अनायास मिलजावैं वो वे लोग आप हमको ढूंढ़ लेवैं जैसे शुकदेव जीने राजा परीक्षित को और सूत जीने सौनकादि को

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

आप ढंढ लिया यह रीति सिद्ध है कि जैसे को तैसा आमिलता है इसके ऊपर. जो प्रेमी और भक्त नहीं मिलते हैं उन्ही पर विश्वास उचित है वो योग्यहै कि हमसे अधिक ज्ञाता हैं पहिले तो शास्त्र को अच्छे जानते हैं दूसरे ब्राह्मण हैं ब्राह्मणों की महिमा वेद और शास्त्रों में लिखी ऊई है कि भगवत् रूप हैं वो भगवत् का बचन है कि ब्राह्मण विद्यायुक्त होवे अथवा बिद्या हीन होय वह मेरा अंग है कोई कोई दो चार पारसी तरजुमे की पोथियों को पढ़ कर और अपने आपको ज्ञानवान वो सर्बज्ञ समझ कर अथवा बड़े ओहदे पर होकर और धन ऐश्वर्य्य पाकर कहते हैं हममें और ब्राह्मणों में क्या भेद है ब्राह्मण वह है जो ब्रह्म को जाने जैसे वह मनुष्य हैं वैसेही हम हैं सो जान रक्खो ब्राह्मण मनुष्य नहीं देवता हैं भूसुर और भूदेव उनका नाम है और जो वे बिश्वासियों को आदमी देखने में आवें तो दूसरे आदमियों से इतना भेद है जैसे तारों से सूर्य्य को और दूसरे पशुओं से गऊ को एक वृत्तान्त स्मरण हो आया यह कि कोई पीपल के नीचे लघु शंका किया करता था ब्राह्मणों ने मनाकिया न माना फिर अधिक तर वरजन किया तो क्रोध कर कहने लगा कि सब वृक्ष बराबर हैं एक ब्राह्मण युक्त बोलने वाले ने कहा कि तुम्हारी जोरू और तुम्हारी मा में क्या भेद वह भी बराबर है तात्पर्य्य यह कि ब्राह्मणों को सब प्रकार से बड़ाई है सिवाय इसके सब विधि बिधान दोनों लोक का ब्राह्मणों ने बिस्तार किया है और पूर्ब युग में अथवा अब जिसको बड़ाई प्राप्त ऊई और भगवत् भक्ति का प्रकाश ऊआ तो सबको ब्राह्मणोंही के कैंकर्य्य और सेवकाई से मिला और अब भी गुरू आचार्य्य ब्राह्मण हैं तो बड़ी भाग की खोट है कि उनमें निश्चय न होय जो किसी के आचरण वो कर्म कलिके प्रभाव करिके दुष्ट भी देखने में आवें तौ भी वेबिश्वासता आयोग्य है यद्यपि राखमें अग्निदब जाय तौभी तेजमिट नहीं जाता जितने महापुरुष वो साधु आदि कहलाते हैं सब ब्राह्मणों के प्रभाव करिके ऊए कि उनको अथवा उनके गुरू अथवा परम गुरू को ब्राह्मणों से उच्चपदवी उपदेश ऊआ जिस किसीको ब्राह्मणों में बिश्वास नहीं है भगवत्के घर से निकाले ऊए हैं और दोनों लोक से भाग्य हीन हैं जिसने ब्राह्मणों से द्रोह किया सो सुगतिको नहीं प्राप्त ऊआ जिसने सेवा की सो इस संसारमें यशी होकर भगवत् भक्तों में गिना गया सो कथा करने के हेतु जैसेही ब्राह्मण मिलते हैं वैसेही आचार्य्य और भगवत् रूप हैं बिश्वास तत्व है अभिप्राय यह सब लिखने का इतना है कि भगवत् कीर्तन सुख्यों पर सुख्यतर है कि बिना परिश्रम लोक परलोक दोनों प्राप्त होते हैं हे नन्द नन्दन दीनबन्धु हे करुणाकर हाय कि यह मन पापी मति मन्द ने आज तक कहीं आपके कीर्तन और चरित्रों में चित्त लगाने नहीं दिया लड़क-

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

मन तो खेलते खाते में खोया और जवानी भांत भांत के अप कर्म और संसार के स्वाद में अब बुढ़पन पहुंचा तौ भी किसी प्रकार आपके चरण कमलों की ओर साव धानता नहीं करता यद्यपि भलो प्रकार यह बात जानता है कि बिना आप के सरण हुए कहा भी इस संसार से नहीं छुटा सक्ता है पर माया के जाल में ऐसा फस रहा हूं कि अपनी हानि लाभ पर तनक दृष्टि नहीं करता और सिवाय चरणारविन्द के और कुछ रक्षा का ठिकाना नहीं रखता इस हेतु दया वो करुणा की आसा करिके कुछ निवेदन करता हूं कि यह समाज आपका मेरे हृदय के दुःख को दूर करिके नित्यानन्द का देने वाला होय यह कि सरयू के किनारे पर अखाड़ा परम शोभाय मान कि दीवारैं उसकी छोटी और उन पर चित्र विचित्र चित्राम और स्वर्ण जल से बेल बूटे बने हुए हैं सांझ सबेरे आप भाइयों और अपने छोटे वय क्रमियों के सहित वहां जाकर भांति भांति की बाजी और खेल में तत्पर होते हैं कबहीं तो सारुक और शुक और कबूतर और लाल और हंस और सारस वो मयूर आदि पंक्षियों के खेल और नाच और लड़ाने का मन विश्राम है और कबहीं पतंग उड़ाने का और कबहीं घोड़ोंके फेरने दौड़ाने और सवार होने पर परिश्रम करने का प्रेम करते हैं और कबहीं गुरुज बठाटा बनेजा वो तीरंदाजी का और कबहीं चौगान का अपने मित्रों के साथ खेल है और कबहीं मल्लयुद्ध का और कबहीं तमासा हाथी मेंढ़ा आदि की लड़ाई का देखते हैं और कबहीं उमंग अपने वय क्रमियोंके साथ हंसी और ठट्ठा दंगा मुक्की का कभी नाव पर सवार होकर अब लोकन सरयू का और कबहीं नाच राग इत्यादि देख सुन कर मन वांछित द्रव्य और आभूषण प्रसन्न होकर देते हैं कबहीं गजशाला और घुड़शाला का अव लोकन है और कबहीं सचशाला और सामग्रीशाला की निरीक्षण और कबहीं ब्राह्मणों और भक्तों के ऊपर दया और कृपा की दृष्टि है और कबहीं दास औसर जानें चेरों पर पालमां की चितवन ब्रह्मा वो शिव वो सनकादिक वो नारदादि दर्शनों के निमित्त आते हैं और मनको चरणारविन्दों पर निछावर करके वियोग के दुःख से आखैं आंसूचुचाती और जलतीं हुई छाती सहित चले जाते हैं वो मुखारविन्दों पर कि करोड़ों कामदेव और चन्द्रमा वार जातें हैं अलकैं घुघरवाली छूटी हुई कानों में कुंडल और सिर पर बड़ाऊ किरीट मुकुट छोटासा बुलाक नाक में बाजूबन्द कड़े पहुंची हाथों में की अंगुलियों में अंगूठी और कटि पीताम्बरी बांधा की उस पर सुक्क घु आदि जगह जगह टंका हुआ है शोभायमान और जरी के दुपट्टे से कटिकणी हुई वनमाला के ऊपर मणि और मोतियों की माला पड़ी हुई है वस्त्र पहिने हुए धोती पीताम्बर विराज मान चरण कमलों में घुंघरू और

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

शोभित बयस बारह बर्ष की और ऐसोही साज औ शृंगार के सहित भरत लक्ष्मण शत्रुघ्न और दूसरे राजकुमार वो सखा संग हैं छोटी २ कमान और तीर हाथों में मानों शोभा और शृंगार स्वरूपवान होकर धरती पर आये हैं और शोभा औ सजावट सब ब्रह्माण्डों की इकट्ठी होकर अयोध्या पुरी में देखने वालों के वृत्ति को अपने बलात्कार से लूटती हैं॥

बाल्मीकजी की कथा॥

बाल्मीक जी ब्राह्मण बंश में जन्मे किसी संयोग से लड़काई में भील के हाथ आगये उसने पुत्र मानिके पालना करी और भीलकी लड़की के साथ बिवाह भी कर दिया आदि से उद्यम राह लूटने वो ठगी व्याध कर्म करते रहे एक बार कश्यप अत्रि भारद्वाज बशिष्ठ गौतम बिश्वामित्र जमदग्नि सप्त ऋषि उस ओर आगये बाल्मीकजी ने उनके लूटने का मनोर्थ किया ऋषीश्वरों ने पूछा कि किस कारण ऐसा दुष्ट कर्म करता है उत्तर दिया कि बाल बच्चों के पालन के निमित्त फिर पूछा कि वे सब तेरे पाप वो दुःख में साझी हैंगे तब पूछने गया तब सबने साझा पाप में अंगीकार नहीं किया तब आन कै वर्णन किया तब ऋषीश्वरों ने कहा कि वे तेरे पाप में साझी नहीं होते तो तू उनके हेतु अपना परलोक क्यों बिगाड़ता है इतनेही सत्संग और उनके दर्शन से बाल्मीकजी को वैराग्य और भय उत्पन्न हुआ अपने कल्याण की राह हाथ जोड़ कर पूछी जेचें में जप मरि आया ऋषीश्वर दया करके राम नाम उपदेश करके चले गये पर राम रामके स्थान मरा मरा स्मरण रहा एकाग्र चित्त करके जपने लगे कुछ काल पीछे फिर सप्त ऋषि जो उधर को आ निकले वो बाल्मीकजी की अन्वेषणा करी तो अद्भुत लीला देखी कि एक बामी के समीप जो प्रभु पहुँचा जाता है राम नाम कहने लगता है इस चिन्ह से जाना तब निकाला और देखा कि सब प्रकार से शुद्ध और सिद्ध होगये और किसी वेद वो शास्त्र वो धर्म कर्म सिखाने का प्रयोजन नहीं रहा कि आपसे आप नाम के प्रताप से सब जानि लिया है बिदा हुए और बाल्मीकजी के शरीर पर मिट्टी जम कर बामी के स्वरूप हो रही थी सर्पादि ने उसमें घर कर लिया था इस हेतु बाल्मीक नाम रक्खा बाल्मीक जी सर्वज्ञ वो त्रिकाल दर्शी जब होगये विचारा कि जिसके नाम के प्रभाव से यह ऊँचा तिसका वर्णन करना चाहिये यह ध्यान करतेही भील रूप से भगवत् ने आज्ञा दी वो नारदजी ने आकर उपदेश किया और भविष्य राम चरित्र ध्यान में बाल्मीकजी के दिखला दिये उसी अनुकूल रामावतार से दश हजार वर्ष पहिले सौ करोड़ श्लोक में राम चरित्र बारम्बार उपासना अपनी भाषामें रचना किया अर्थात् राज गुन करिके श्लोकों में कहा उस रामायण को शिवजी ने तीनों लोक में फैलाया देखना चाहिये

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

कि पहिले बाल्मीकजी तो ऐसे थे कि छाया स्पर्श ऋषीश्वर नहीं करते और फिर राम नाम के प्रभाव और कीर्तन से सोई बाल्मीक उस पदवी को पहुंचा कि जिनकी कथा वो कथन संसार ताप के दूर करने को छत्र छाहं होगया वो बालचरित्र देखने की अभिलाषा बाल्मीकजी को हुई तब जानकी जी उनके आश्रम में लव कुश सहित रहीं नाना प्रकार बाल चरित्र किये अश्वमेध में घोड़ा बांधि लिया हनुमान आदि सबको जीति के बन्द में किया पीछे बाल्मीकजी के साथ अयोध्याजी में गये यह रामा श्वमेध में कथा है सो राम नाम की महिमा जहां तक कोई वर्णन करै वह सब थोड़ी है॥

शुकदेव जी की कथा॥

ऐसा जगत में कौन है जो शुकदेवजी की महिमा वर्णन कर सकै जिनके मुख से श्री मद्भागवत रूप अमृत की नदी निकली वो सब पान करने वालों को अमर करदेती है एक समय देव स्त्रियों ने स्नान करते शुकदेवजी से लज्जा न की और व्यास जी को देख लज्जित होकर वस्त्र लिया व्यास जी ने पूछा तब उत्तर दिया कि शुकदेव जी सिवाय भगवत् रूप के जगत को दूसरा नहीं देखते और आपको नाना प्रकार का ज्ञान है इस हेतु तुम से लज्जा है शुकदेव जी माता के गर्भही से भगवत् भक्त और ज्ञानवान हुए कारण यह है पार्वती जी ने शिवजी से तत्व ज्ञान पूछा तब शिव जी अपने आश्रम के सब जीवों को अलग करके उपदेश करने लगे पार्वती को नींद आगई भगवत् इच्छा करिके एक शुगा का बच्चा उस आश्रम में रहि गया सोई पार्वती जी की जगह हूं हूं करता रहा वह ज्ञान सुन कर अमर होगया पीछे शिव जी ने जाना तब क्रोध कर मारने के हेतु उद्यत हुए तब वह भागा व्यास जी की पत्नीके उदर में बारह बरस रहे पीछे देवता और ऋषीश्वरों की प्रार्थना से शुकदेव महाराज ने जन्म लिया और तुरन्त वनको गमन किया व्यासजी पीछे पीछे हे पुत्र २ कहते मोहके वश चले तब सब ओर के वृक्षों से जंगल में धुनि हुई कि मैं और तू दुःख और सुख यह सब भ्रम है इस संसार में न जानें तुम कै बेर मेरे पिता हुए वो हम तुम्हारे और जो देखने में आता है सो सब भगवत् रूप है विद्या का जानना भगवत् के जानने के हेतु है जो द्वैतपन नछूटा तो विद्या सब निःफल है व्यास जी यह उत्तर पाकर फिर आये पर इसी विचार वो उपाय में रहे कि शुकदेव जी फिर आय रहैं इस हेतु कितने लड़कों को यो मद्भागवत के श्लोक सिखा कर जिस बन में शुकदेव जी रहा करते थे वहां भेज दिया एक दिन शुकदेव जी ने किसी लड़के के मुख से यह श्लोक सुना आश्चर्य किया यह पापात्मा पूतना स्तन में विष लगा कर मारने के लिये गई पर उसको वह गति प्राप्त हुई कि दूसरे

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

को न मिल सकै सो ऐसा दयालु तो और कौन है कि जिसके सरण जावैं शुकदेव जी सुनकर स्नेह वङ्ग होगये और लड़कों से आन कर पूछा उन्हों ने व्यास जी से सीखने का वृत्तांत कहा शुकदेव जी आये अत्यन्त प्रेम से श्रीमद्भागवत को पढ़ा पीछे यह इच्छा हुई कि किसी प्रेमी को सुनानी चाहिये पर कोई अधिकारी देखने में न आया नितान्त राजा परीक्षित को योग्य समझा और गंगाके किनारे पर राजा को सुना कर सात दिन में भगवत् परायण और मुक्त कर दिया और जिस जिस ने उस सभा में सुनी सब भगवत् परायण हुए और अब भी जो कोई सुनता है परम पद का अधिकारी होता है ॥

कथा जयदेव जी की ॥

सब कवि मण्डलीक राजों के सदृश हैं उनके राजा चक्रवर्ती स्वामी जय देव जी हुए गीतगोविन्द तीनों लोक में ऐसा प्रकाशित किया कि कोक और काव्य और नौरस और शृंगार का समुद्र है जिसकी अष्टपदी को जो कोई पढ़ता है निश्चय बुद्धिमान और ज्ञाता शास्त्रों का हो जाता है और जहां जो कोई कीर्तन करता है अरु सुनने के निमित्त निश्चय करिकै भगवत् प्रसन्न होकर बसते हैं और भगवत् भक्त जो कमल सदृश हैं उन के फूलने और आनन्द के हेतु सूर्य्य के सदृश हैं और भगवत् का आनन्द देने वाला भी वैसाही है और यह जान रक्खो कि कोक और शृंगारपद से विषई लोगों के मन की बुद्धि में तो कोक वो शृंगार वर्ति रहा है उस का निश्चय न होवै शृंगार पद से भक्तमाल आदि की रचना करने वाले का यह तात्पर्य्य है कि वह शृंगार जिसका वर्णन केवल भगवत् शोभा वो भगवत् में होवे कुछ कुछ इस ग्रंथ के आदि में लिखा और तेईसवीं निष्ठा में लिखा जायगा और रस राज जिसका नाम है और जिसके वर्णन में वेद की यह श्रुति है कि जिसको प्राप्त करके निश्चय भगवत् का आनन्द मिलता है सो रस जयदेव जीने इस गीतगोविन्द में वर्णन किया है और कोक उसकी एक साखा है स्वामी जयदेव जी कुड़बिल्व में कविराज हुए रसराज जो शृंगार तिसकी मूर्ति थे पर उस रस का स्वाद अपनेही मनमें लेते रहे कारण यह कि वैराग्य इतना था कि किसी रात एक पेड़ के नीचे नहीं रहते रहे और सिवाय एक गुदरी वो कमण्डल के कुछ अपने पास नहीं रखते थे मसिहानी लेखनी वो पत्रिका तो कौन बात है भगवत् को उस रसराज की प्रवृत्ति अंगीकार हुई इस हेतु यह उपाय किया कि एक ब्राह्मण को प्रतिज्ञा रही कि अपनी लड़की जगन्नाथ जी को भेंट करूंगा जब लड़की लाया तब स्वामीकी आज्ञा हुई कि जयदेव मेरा स्वरूप है यह लड़की उसी को देव तब जयदेव जी के पास लड़की सहित जाकर प्रभु की आज्ञा का वृत्तान्त निवेदन किया उन्हों ने कहा कि लड़की योग्य वो

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

धनवान को देना उचित है विरक्त फक्कड़ों को नहीं ब्राह्मण न बोला भगवत् आज्ञा में मेरा क्या वश जयदेव जी बोले वे प्रभु हैं हजारों लाखों स्त्री उन की शोभित हैं हमको एक पहाड़ के समान है नितान्त समझाते समझाते ब्राह्मण न हारा तब लड़की छोड़ कर चला गया वो धर्म लड़की को दृढ़ाय गया जयदेव जी लड़की को भी समझा थके तब भगवत् आज्ञा से वे वश होकर एक छोटी कुटी बना कर भगवत् सेवा पधरा कर भगवत् सेवा में रहने लगे और गीतगोविन्द की रचना के प्रारम्भ में एक अष्टपदी में प्रिया जी के मानके वर्णन में यह भाव ध्यान में लाए कि श्री कृष्ण स्वामी मनावने के समय इस दीनता सहित प्रियाजी से विनती करते हैं कि कामदेव का विष दूर करने वाला जो आपका पवित्र चरण कमल उसको मेरे मस्तक पर शोभायमान करो पर ढिठाई सोच कर न लिख सके दूसरे भाव को चिन्तन करते स्नान करने चले गये भगवत् आप जयदेव जी के रूप से आकर जो भाव जयदेव जी ने पहिले अपने मनमें विचारा था उसी को रचि के लिख गये कि भाव उसका ऊपर लिखा गया जब जयदेव जी स्नान करिके आये और अपने विचारित भावको सुन्दर पदन से रचि के लिखा देखा तब पद्मावती अपनी स्त्री से पूछा तब उत्तर दिया कि आपही अबहीं आयके लिख गये फेर पूछतेहैं जयदेव जी ने भगवत् चरित्र जाना वो गीतगोविन्द को परम पवित्र समझा इस गीत गोविन्द की ख्याति थोड़े दिन में जहां तहां होगई और सब को अंगीकृत हुआ जगन्नाथ पुरी का राजा पण्डित रहा उसने भी एक गीत गोविन्द रचना किया जब देव जी का गीत वो राजा का दोनों जगन्नाथ के मन्दिर में रख दिये गये जगन्नाथ राय जी ने जयदेव जी के गीत गोविन्द को छाती से लगा लिया राजा लज्जित होकर समुद्र में डूबने चला प्रभु ने आज्ञा की यह कर्म उचित नहीं न्याय उचित है जयदेव जी की भक्ति और कविताई को तुम्हारी नहीं पहुंचती अच्छा जय देव जी के गीत गोविन्द में प्रति सर्ग में एक श्लोक तुम्हारा भी रहेगा पर नाम जयदेव जी का ख्यात होगा बारह सर्ग गीत गोविन्द है एक माली की लड़की यह अष्टपदी पांचवें सर्गगीत गोविन्द की गाती हुई बैंगन तोड़ती फिरती थी जगन्नाथ स्वामी उसके पीछे जिस ओर वह जाती थी सुनते हुए फिरे लगेकांटे से अंगा फट गया राजा दर्शन के समय अंगा देख कर चकित रहा पंडों से पूछा नितांत जगन्नाथ स्वामी ने राजा के हृदय में वृत्तान्त प्रकाश करि दिया राजा ने निश्चय करिके डौंडी फिरवा दी कि जो कोई गीत गोविन्द पढ़े तो पवित्र स्नान वो शुद्ध में पढ़े कि आप भगवत् सुनने को जाया करते हैं एक मुगल बड़े प्रेम से इस पोथी को पढ़ा करता था एक दिनघोड़े पर सवार और प्रेम भाव से मग्न होकर अष्टपदी को गाता

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

था उसको दर्शन हुए कि सुनने को साथ हैं इस गीतगोविन्द की महिमा और प्रताप कौन वर्णनकर सक्ता है स्वर्ग लोक में देव कन्या गान करती हैं एक समय जयदेवजी को राह में ठग लगे तब यह सोचा कि पाप का मूल धन है और रोग का मूल अत्यन्त भोजन है वो दुख का मूल स्नेह है सो इन तीनों का त्याग उचित है यह सोच कर जो कुछ पास रहा सो ठगों को दे दिया ठगों ने जानः कि यह बड़ा धोखे बाज है कुछ उत्पात पीछे करैगा अनेक बात बिचारने लगे निदान हाथ पांव काट कर एक कुवें में जय देव जीको डालदिया एक राजा भगवत् इच्छा से आय गया निकाला हाथ पाय नहीं देख कर पूछा जय देव जीने कहा कि माता के गर्भ से ऐसेही जन्म मेरा हुआ बातों लाभ होने से राजा जान गया कि कोई प्रतापी भगवत् भक्त हैं भाग्य से मुझे दर्शन हुआ अपनी राज धानी को ले गया हाथ जोड़के कुछ सेवा को निमित्त विनती किया जय देव जी ने साध सेवा की आज्ञा दी राजा अंगीकार करके साधु सेवा करने लगा जब ख्यात हुआ ठग भी साध का रूप बना कर पहुंचे जय देव जी ने राजा से कहा कि यह लोग हमारे बड़े भाई वो बड़े महापुरुष हैं अच्छे प्रकार सेवा करो राजा ने वैसाही किया पर ठगों ने भी जय देव जी को पहचान लिया इस हेतु चाहा युक्त बिदा होने की बिनती नित्य करते थे निदान एक दिन बहुत रुपया दिला दिया वो बिदा करादिया कुछ सिपाही घरतक पहुंचाने को पठवे सिपाहियों ने पूछा कि स्वामी जीसे कैसी प्रीति वो सम्बन्ध है जो ऐसे मर्य्याद से बिदाई हुई ठग बोले कहने योग्य बात नहीं सिपाहियों ने बचन दिया कि किसी से न कहैंगे वे ठग बोले कि एक राजा के यहां हम लोग और तुम्हारे स्वामी चाकर थे किसी अपराध करने के कारण वध करने की आज्ञा दी सो हम लोगों ने हाथ पांव काटे लिये जान छोड़ दी इसी हेतु यह सेवा हम लोगों की कराई यह अपराध भक्त का प्रभु न सहि सके धरती तुरन्त फट गई वो ठग सब पाताल में चले गये सिपाहियों ने सब वृत्तान्त जय देव जी से आकर कहा वे दया से कृपमान होकर हाथ पांव मलने लगे तो हाथ पांव निकल आये जैसे पूर्व हो रहे वैसे ही हो गये यह दोनों वृत्तान्त सिपाहियों ने राजा से कहा राजा ने आय के स्वामी जी से पूछा कुछ न बोले जब बहुत पूछा तब सब वृत्तान्त कह सुनाया राजा अति विश्वास युक्त सेवा करने लगा सच कहि के भगवत् भक्तों की रीति है कि जो कोई उनके साथ दुष्टता करै वे अपनी साधुता से चूकते नहीं जैसे दुष्ट अपनी दुष्टता से नहीं चूकता जयदेव जी ने अपने देश को जाने का विचार किया तब राजा ने बहुत प्रार्थना करके न जाने दिया आप जाकर पद्मावती जी स्वामी जी की पत्नी को ले आकर राज मन्दिर में निवास करा

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

कर रानी की सेवा में पद्मावती जी के बज़त दृढ़ किया उस रानी का भाई मर गया था उसकी स्त्री साथ सती होगई थी रानी ने एक दिन पद्मावती जी के आगे एक आश्चर्य सहित अपने भाई भाउज की बात कही पद्मावती जी सुन कर हंसी रानी ने कारण हंसने का पंका तो उत्तर दिया कि शरीर का जला देना पति के साथ इसमें प्रीति की. रीति की हानि है सुख प्रीति वो स्नेह वह है कि तुरन्त अपने पति की मृत्यु सुनते ही उसी क्षण अपना प्राण निछावर करै रानी बोली इस समय में. तो ऐसी सती आपही हैं और पद्मावती जी की परीक्षा लेने की पीछे पड़ी राजा से जा कहा कि स्वामी जी को एक दिन फुलवाड़ी में ले जाव और नगर में विख्यात कर देव कि स्वामी जी मर गये राजा ने उसरानी को समझाया कि ऐसी बात जिस में मेरा शीश कटे न करनी चाहिये नितान्त न मानी राजा ने वैसेही सब किया तब आंखों में आंसू भरे रानी पद्मावती जी के पास जा बैठी उन्हों ने कारण दुःखित होने का पंका रानी रोने लगी पद्मावती जी ने कहा स्वामी जी आनन्द से हैं तब रानी लज्जित ऊई दश बीस दिन पीछे फिर वैसेही बात उठाई पद्मावती जी ने समझा रानी परीक्षा के हेतु पीछे पड़ी है रानी के मुखसे बड़ बात सुनतेही प्रान को छोड़ दिया यह दशा देखतेही रानी वो राजा का रंग सफेद हो गया और इतने शोकान्वित ऊए कि जीना विष होगया वो अपने जलने के निमित्त चिता को रचाया स्वामी जी यह समाचार सुनतेही तुरन्त आये राजा को मृतक प्राय देखा वो शोक से जलने को तैयार है बज़त समझाया न माना स्वामी जीने विचारा कि बिना जिये पद्मावती के राजाका जीना कदापि नहीं होगा अष्टपदी गीतगोविंद की गाई कि पद्मावती जी उठबैठी और साथ गाने लगी तौ भी राजा सावधान न ऊआ स्वामी जी ने बोध करके अपघात से बचाया कुछ दिन पीछे अपने स्थान पर गये कुरुड़बिल्व गांव मेंघर था वहां पहुंचे गंगा जी अठारह कोस पर रहीं नित्य स्नान को जाते दृढ़ता देखि गंगा जी की एक धारा जिसका नाम जयदेई गंगा है स्वामी जी की कुटी के नीचे बहने लगी अद्यापि बहती हैं जयदेई गंगा नाम विख्यात है॥

कथा तुलसी दास जी की॥

गोसाईं तुलसी दासजी को भक्तमाल के कर्त्ताने बाल्मीकजी का अवतार लिखा है सो इसमें संदेह नहीं कि उनकी वाणी में प्रभाव दिखाई पड़ता है कि हृदय में चुभि जाती है और रामचरित रूपी अमृत की धारा को इस कलियुग में प्रवाह मान किया है वो सबको सुलभ है और चौदह रामायण अर्थात् चौपाई बन्द जो विख्यात हैं वो विनय पत्रिका॥ वो गीतावली॥ वो कवितावली॥ वो दोहावली॥ वो रामशलाका॥ वो हनु

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

ज्ञान बाऊक ॥ वो जानकी मंगल ॥ वो पारवती मंगल ॥ वो कड़का छन्द ॥ वो करवाछन्द ॥ वो रोड़ा छन्द ॥ वो झुलना छन्द ॥ एक दूसरा कि प्रेमियों को वो उपासकों को सब जगह मिल सकते हैं और भक्तों के मुख से निश्चय हो चुका है कि जो कोई नेम करके नित्य किसी रामायण का पाठ करता है निश्चय श्रीरघुनन्दन स्वामी के चरणों में प्रीति होजाती है वो कामना करिकै कांडका पाठ करै तो सिद्धि होजाती है वो राम शलाका में जो प्रश्न करै तो ऐसे दोहे निकलैं कि जो होने वाली बात हो सो ज्ञात हो जाय और तुलसी कृत रामायण को काशी जी के सब पण्डितोंने सभा करके संपूर्ण पढ़ा आदि अन्त सब वेद शास्त्र पुराण गीता जी के अनुकूल देख कर सबने अंगीकार लिख दिया कोई कोई ने द्वेष करिकै बाद ठाना तो विश्वेश्वर नाथ जी के अंगीकार करने से सबका अंगीकृत हुआ गोसाईं तुलसी दास जी कानकुब्ज ब्राह्मण रहे अपनी स्त्री से स्नेह विशेष रखते थे एक दिन स्त्री अपने मैकें में मां बाप से मिलने को गईं गोसाईं जी को इतना वियोग हुआ कि सहन न होसकी अपनी ससुरारि में पहुंचे स्त्री को लज्जा आई क्रोध करके गोसाईं जी से बोली कि यह शरीर अस्थिमांस का अनित्य है रघुनन्दन स्वामी नित्य निर्विकार पूर्णब्रह्म हैं तिनसों क्यों नहीं स्नेह करते कि दोनों लोक में लाभ हो इतने कहने से गोसाईं जी पण्डित और ज्ञान मान ये पूर्व पुण्य के पुंज उदय हुए ज्ञान वैराग्य की आखैं खुल गईं काशी जी में आकर श्रीरघुनन्दन स्वामी के भजन कीर्तन में लगे गोसाईं जी दिसा फिरने बनमें जाया करते तो पानी सौच शेष को एक जगह नित्य डाल दिया करते थे वहां एक भूत रहता था उस पानी से उसकी तृषा मिटती थी एक दिन प्रसन्न होकर बोला कि तुमको कामना हो सो कहो गोसाईं जी ने कहा रघुनन्दन स्वामी का दर्शन करादे भूतने कहा कि यह सामर्थ्य मेरे में नहीं पर हनुमान जी का पता यह बतलाता हूं कि अमुक स्थान में कथा रामायण होती है और हनुमान जी सब से पहिले ऐसे कुरूप से कि जिसको देखते डर लगै और घृणा होय आते हैं सबसे पीछे जाते हैं इस प्रहिचान से गोसाईं जी हनुमान जी के पीछे चले गये बनमें चरण पकड़ लिया न छोड़ा हनुमान जी ने दर्शन दिया कहा जो चाहना हो कहो विनय किया रघुनन्दन स्वामी का दर्शन चाहता हूं आज्ञा दी कि चित्रकूट में दर्शन होगा गोसाईं जी अति अभिलाष से चित्रकूट में आये एक दिन इस स्वरूप से दर्शन हुआ कि रघुनन्दन स्वामी श्याम सुन्दर राजकुमार के स्वरूप से वसन भूषण बहु मोल्य के पहिने धनुष बान लिये घोड़े पर सवार और लक्ष्मण जी गौर मूर्ति वैसेही सजावट के सहित साथ एक हरन के पीछे घोड़ा डाले हुए जाते हैं यद्यपि स्वामी की मूर्ति मन और आंखों में समाय गई पर यह न जाना कि यह स्वामी हैं

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

पीछे हनुमान जी आये गोसाईं जी से पूछा कि दर्शन किये गोसाईं जी ने विनय किया कि दो राज कुमार देखे हैं हनुमान जी बोले कि वही राम लक्ष्मण थे गोसाईं जी उसी रूप का ध्यान करते हुए सुख मनोर्थ को प्राप्त हुए एक हत्यारा पहिले रामका नाम टेर कर कहा करता कि हत्यारे को भिक्षा देव गोसाईं जी को आश्चर्य हुआ कि यह कैसा पुरुष है कि पहिले राम नाम लेता है फिर अपने आपको हत्यारा कहता है वो ठहराता है बुलाया और प्रेम शुद्ध जान कर उसको अपने साथ भगवत् प्रसादे जिमाया काशी के पण्डितों ने सभा करी और गोसाईं जी को बुलाकर पूछा कि प्रायश्चित्य बिना किस तरह इसका पाप दूर हुआ गोसाईं जी ने कहा एक बार राम नाम लेने का क्या माहात्म्य है शास्त्र में देखो इसने तो सैकड़ो बेर नाम उच्चारण किया तो शास्त्र के बचन पर जो बिश्वास नहीं तो अज्ञान का अंधकार दूर नहीं होसक्ता पंडितों ने यद्यपि शास्त्र को माना तथापि वे बिश्वास से यह ठहराया कि बिश्वेश्वर नाथ का नादिया इसके हाथ से भोजन करै तो सत्य मानैं सो नादिया ने उसके हाथ से धराया हुआ प्रसाद को भोग लगाया सब पण्डितों ने लज्जित होकर नाम की महिमा वो गोसाईं जी की भक्ति पर निश्चय किया एक दिन गोसाईं जी के स्थान पर रात को चोर चोरी करने को आये तो श्रीरघुनन्दन स्वामी धनुष बान लेकर चोरों को डराते फिरे चोरी करने न पाये गोसाईं जी से प्रभात को आके पूछा कि महाराज वह श्याम सुन्दर किशोर मूर्ति परम मनोहर कौन है जो रात को चौकी देता है गोसाईं जी सब वृत्तान्त सुन कर प्रेम में डूब गये फिर बिचारा इस सामग्री के हेतु परिश्रम वो रात को जागरण स्वामी का अच्छा नहीं बहुत रोने लगे उसी घड़ी सब धन सामग्री दान कर दिया चोर यह वृत्तान्त देखकर घर बार छोड़ कर भगवत् शरण होगये और एक ब्राह्मण मर गया उसकी स्त्री विमान के साथ सती होने जाती थी गोसाईं जी को दण्डवत् किया गोसाईं जी के मुख से निकल गया सौभाग्यवती उसने कहा मेरा पति मर गया यह दासी सती होने जाती है सौभाग्य कहां है गोसाईं जीने उसके कुल में भगवत् भक्ति करने की प्रतिज्ञा कराय के पति को जिला दिया जब यह बात विख्यात हुई तो बादशाह ने बड़े आदर से बुलाकर उच्चआसन पर बैठाल कर सिद्धाई दिखलाने को बिनय किया गोसाईं जी बोले सिवाय रघुनन्दन स्वामी के दूसरी सिद्धाई कुछ नहीं जानता हूं और न इस झूटे खेल से कामरखता हूं बादशाह ने कहा कि अपने स्वामीहीं के दर्शन करा देव यह कहकर बंद में किया गोसाईं जी ने हनुमान जी का स्मरण किया उसी घड़ी बान्दरों की अगणित सेनाने बादशाही किले में ऐसा उत्पात किया कि प्रलयकाल दिखलाई पड़ा

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

बादशाह जब पलंग परसे उलटा गया तब ज्ञान शुद्ध से गोसाईं जी की शरण में आया चरण पर गिरा तब सब वानरी सेना अन्तरध्यान होगई वो तुलसी दास जीने आज्ञा किया तुम दूसरा किला रहने को देख लेव यह स्थान रघुनाथ जी का ऊआ बादशाह ने तुरन्त छोड़ दिया तुलसी दास जी काशी को चले आये एक कोई भक्तों के वैरी ने गोसाईं जी के मारने को अनुष्ठान जप का किया गोसाईं जी ने एक पद महादेव जी का बनाया कुछ न ऊआ वह आप लज्जित होरहा फिर गोसाईं जी वृन्दाबन आये नाभा जी से मिले उनकी रचना भक्त माल की देख सुनकर बहुत प्रसन्न ऊए और यह बात जो फैली है कि गोसाईं जी ने मदन गोपाल जी के दर्शन के समय यह बात कही थी कि धनुष बान धारण करोगे तब दर्शन करूंगा सो यह बात निपट झूठ और बिना सिर पैर की है काहे कि कृष्णावली में कृष्ण यज्ञ गोसाईं जी ने गाया है सो प्रसिद्ध है सिवाय इस के सब जगत को दण्डवत् किया है—सिया राम मय सब जग जानी। करों प्रणाम सप्रेम सुबानी ॥ यह चौपाई जिसकी कही है भला सो कब भगवत् के साम्हने ऐसी हठवानी कह सक्ता है इस बात के फैलने की बात यह है कि उपासक जिस देवता के मन्दिर में जाता है अपने इष्ट का रूप ध्यान करता है यह रीति शास्त्र के सम्मत् के अनुकूल गृहीत है सो गोसाईं जी दर्शन को गये वो परम मनोहर मूर्ति को देखा तो श्रीरघुनन्दन धनुष बानधारी का ध्यान करके दण्डवत किया सो गोसाईं जो भक्त सांचे वो सिद्ध थे इस हेतु मदन गोपाल जी ने भी उनके ध्यान के अनुकूल रूप दिखा दिया जो कोई उस समय दर्शन करने वाले थे उनको भी धनुष बानधारी दृष्टि में आये इस हेतु वह बात फैली और किसी ने एक दोहरा भी बना लिया वृन्दाबन में किसी ने गोसाईं जी से प्रश्न किया कि श्रीकृष्ण महाराज पूर्ण ब्रह्म और अवतारी हैं और नृसिंह वामन परशुराम रामचन्द्र आदि उस अवतारी के अंश कला से अवतार हैं तुम श्रीकृष्ण महाराज की उपासना क्यों नहीं करते यद्यपि शास्त्र प्रमाण से गोसाईं जी उत्तर देने को समर्थ थे पर माधुर्य भाव में प्रेम भक्ति को दृढ़ करते ऊए ऐसा उत्तर दिया कि वो चुप हो रहा और सिद्धांत बना रहा सो वह यह है कि श्रीरामचन्द्र दशरथ नन्दन को बहुत सुन्दर सुकुमार अंग मनोहर मूर्ति परमशोभायमान देखकर हमारा मन लग गया है कि नहीं छूटता अब जो तुम्हारे बचन से उनमें कुछ ईश्वरता भी है तो और अधिक वो मन भाई भई ॥

कथा सूर दास जी की ॥

सूर दास जी की रचना सुनकर ऐसा कौन है जिसका मन प्रेम से न उमंगे और सिर न हिल जाय जिसमें अर्थभाव और स्वाद और ललित अक्षरों की बैठक और अनुप्रास और भगवत् प्रेमका निबाह वो सलिल

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

अर्थ वो तुलेऊए वो बिकसित बऊत हैं और भगवत् ने जो चरित्र किये ऐसा विस्तार सहित वर्णन किया कि मानों देखते थे ऐसा बिमल हृदय जिसका है अथवा भगवत् ने आप उन चरित्रों का प्रकाश उनके हृदय में झलकाय दिया भगवत् के जन्म और कर्म और गुण और रूप ऐसे प्रगट किये कि जो उनको पढ़ता है अथवा सुनता है निश्चय बुद्धि निर्मल वो मन पवित्र होकर भगवत् परायण हो जाता है उद्धव जो जो श्रीकृष्ण महाराज के सखा वो मित्र थे उनके अवतार हैं यद्यपि बिष्णु स्वामी संप्रदा में रहे वो बाल चरित्रों में चितकी चाह बऊत थी पर शृंगार निष्ठा और सखा भावका प्रेम भी अत्यन्त था कि सूरसागर से प्रगट है महिमा सूर दास जी की और सूरसागर की किसे वर्णन हो सक्ती है कि जिनकी कृपा से सहस्रों अपराधी सिद्ध और शुद्ध भगवत् भक्त होगये उनका संकल्प यह रहा कि सवा लाख बिष्णु पद में भगवत् चरित्रों का कीर्तन करें पर जब पंचहत्तर हजार रचना करचुके तब परम धाम को चले गये पचास हजार आप श्रीकृष्ण महाराज ने रचना करिके अपने भक्त का संकल्प पूरा कर दिया और सूरश्याम के नाम से भोग रख दिया खान खाना वजीर बादशाह अकबर का बिद्या संस्कृत वो भाषा में पण्डित रहा कबि भी था उसने सूरदासजी के पद जहां तहां से ढूंढ २ कर इकट्ठे किये और एक पद एक मोहर का ठहर गया बऊत लोग लोभसे मोहर के नये पद बना-बनाकर सूरदास जी के भोग में नाम डालकर ले गये जब भीड़ हुई तो यह विचार किया कि एक पद सूरदास जी का तौल का बाटखरा रख लिया नये पद जो आवैं उसी से तौलना आरंभ किया जो पद नया होता सो कागद मोटा भी हो वो पद भी बड़ा हो तौभी बराबर न तुलता वो सूरदास जी का बनाया पद छोटा पद भी हो वो कागद महीन तौभी बराबर हो जाता इसी परीक्षा से सूरसागर को प्रमान ग्रंथ किया किसी की यह कहनायत है कि अकबर बादशाह ने सूरसागर इकट्ठा किया और दो लाख बिष्णु पद का संयोग पहुंचा तब अग्नि में डाल दिया सूरदास जी का न जला औरों का बनाया जलगया तो दो कहनावतों में जो सच हो पर बड़ाई वो प्रभाव से व्यतरिक्त सूरसागर नहीं और यह कहावत न विख्यात होती तो क्या सूर्य्य छिपा रहता है सूरसागर को भगवत् ने वह प्रताप वो प्रभाव कृपा किया है कि एक २ अक्षर मंत्रके सदृश हैं॥

कथा नन्ददास जी की॥

नन्ददास जी पुच चन्द्रहांस जाति ब्राह्मण रहने वाले रामपुर के भगवत् भक्त प्रेमी वो नामी विख्यात हैं कि अनुक्षण सिवाय भगवत् वो कीर्तन के दूसरा काम नहीं था रचना उनकी जैसे पंचाध्यायी वो रुक्मिणी मंगल वो दशमस्कन्ध वो नाम माला वो अनेकार्थ वो दान लीला वो मान लीला

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

आदि हजारों विष्णुपद उनकी भक्ति के सदृश सारे संसार में विख्यात हैं उनके काव्य की श्लाघा में कवि लोगों का यह कहा है कि और सब घड़िया वो नन्ददास जड़िया अष्ट छाप के भक्तों में इनकी भी गिनती है जान रक्खो आठ भक्त जिन्हों ने श्री कृष्ण स्वामी के चरित्र कीर्तन किये और उनके विष्णु पद ब्रज में भगवत् के सन्मुख कीर्तन किये जाते हैं उनकी गिनती अष्ट छाप में है और नाम मंगल रूप उनके यह हैं १--सूरदास--२कृष्णदास--३ छीतस्वामी--४ नन्ददास--५ परमानन्द--६ चतुर्भुज--७ व्यास जी--८ हरिदास ॥

कथा चतुर्भुज जी की ॥

चतुर्भुजजी भगवद् भक्त परम रसिक हुए नित्य श्री वृन्दावन में विहारी जी के मन्दिर में अत्यन्त प्रेम वो भाव से नृत्य करते थे एक दिन नृत्य करते में लंगोटी खुल गई दोनों हाथों से झांझ बजा रहे थे ताल वो सम के भंग होने के भय से लंगोटी न सम्हाली वो लोगों के ठट्ठा करने की चिन्ता भी हुई तब तक परम रसिकबर बिहारी ने दो भुजा और उत्पन्न कर दीं और अपने भक्त की लज्जा रखली ॥

कथा मथुरा दास जी की ॥

मथुरा दास जी जो चेले वृद्ध माधव जी के ऐसे भगवत् भक्त धर्म में साव धान हुए कि नन्द नन्दन महाराज का दृढ़ बिश्वास और बल रखते थे प्रीति ऐसी कि अपने सिर पर कलस जल का रखकर ले आते और ऐसे प्रेम वो भक्ति से रास चरित्र का श्रृंगार किया करते कि मानो उनका हाथ भगवत् चरित्र और माधुर्य्य के दरशाने को सूर्य्य के सदृश था एक समय कोई साधु भेष से वृन्दावन में आया चेटक यह करता कि सालिग्राम सिंहासन पर डोलते रहते सो मथुरा दास जी भी चेलों के कहने से गये जाने से चेटक बन्द होगयी तब उसने मूठ मंत्र मारा सो भी उलट कर उसी पर पड़ा मरने के योग हुआ तब मथुरा दास जीने जिलाया ॥

कथा सुखा नन्दजी की ॥

सुखा नन्द जी संसार के आवा गमन के भय के दूर करने को एकही हुए काव्य रचना उनकी गुरु मंत्र वो तंत्र शास्त्र के तुल्य बिख्यात है भोग में जहां अपना नाम लिखा तहां भगवत् की नाम सुख सागर लिखा जैसे जैसे चन्द्रसखीने बाल कृष्ण नाम वो मीरा जी ने गिरधर नागर नाम लिखा है भगवत् गुन चरित्र कीर्तन भजन अति प्रेम से करते वो भक्ति कमल के सेवा करने में मानो सरोवर थे ॥

श्रीभट्ट जी की कथा ॥

श्री भट्ट जी ने आनन्द कन्द ब्रज चन्द महाराज और वृषभान किशोरी के भजन स्मरण का ऐसा सामान दृढ़ इस संसार में कर दिया कि संसार

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

समुद्र के उतरने को नौका के सदृश है अर्थात् माधुर्य उपासना के जो शोभायमान चरित्र प्रिया प्रीतम के हैं सो अपने जुगल शत आदि ग्रंथ में रचना इस मिठाई वो मधु बानी वो सुन्दरता के सहित वर्णन की कि निश्चय करिकै मन द्रवी भूत होकर नवल किशोर और नवल किशोरी महाराज के चरित्र और प्रेम में मग्न होता है और अज्ञान रूपी अन्धकार के दूर करने को जिनका सुयश चन्द्रमा है ॥

कथा वर्द्धमान गंगल की ॥

वर्द्धमान वो गंगल दोनों भाई बेटे भीष्म भट्ट परम भक्त के थे दोनों भक्ति के दृढ़ करने वाले ऊए भगवत् चरित्र और श्री भागवत के कीर्तन की नदी बहाई और इस संसार को पापों से पवित्र और निर्मल करि दिया वो भक्तों से ऐसी प्रीति रही कि सर्व काल भीड़ रहती थी और यशोदा नन्दन महाराज के स्मरण भजन से प्रेम था वो दीन जनों पर कृपा अत्यन्त थी ॥

कृष्ण दासजी की कथा ॥

कृष्ण दास जी विख्यात चालक की रचना चर्चरी छन्द वो विष्णु पद आदिकी ऐसी विख्यात ऊई कि समुद्र पर्य्यंत पहुंची अलग अलग ग्रंथ सब चरित्र जैसे गुरधन चरित्र वो पंचाध्याई वो रुक्मिणी मंगल भगवत् भोजन विधि इत्यादि की रचना की सुख देने वाले घटा के सदृश ऊए भगवत् सन्मुख करने के हेतु उनका अवतार ऊआ ॥

नारायण मिश्र की कथा ॥

नारायण मिश्र नवला वंश में परम भक्त ऊए भागवत के कीर्तन में तो मानो वेहो एक जन्मे थे क्यों कि जिनको बद्रिकाश्रम की और शुकदेव जी ने आप भागवत पढ़ाई जिनके पास भक्तों की समाज नित्य रहा करती नवधा भक्तिको जिसने भली प्रकार साधा सब शास्त्रों को अच्छे समझ कर तत्व चुनि लिया जो बृहस्पति और शुकदेव और सनकादिक वो व्यास और नारदादि को अंगीकार वो हृदयस्थ है सुधा बोध ये मूंगा तुल्य जिनका दर्शन था ॥

कमलाकर की कथा ॥

कमलाकर भट्ट परम भक्त और पंडित सर्व शास्त्रोंके ज्ञाता ऊए उपासना शास्त्र के तो ध्वजाही रहे कि भक्ति विरोधियों को शास्त्रार्थ में जीतकर भगवत् भक्ति पर स्थिर किया माध्व संप्रदा में मानो माधवाचार्य्य के अवतार हैं माधवाचार्य्य ने जो दिग्विजय टीका भागवत की रचना करी है उसी के अनुकूल भागवत का कीर्तन और वर्णन किया करते थे स्मृति वो पुराणके अनुकूल भगवत् के शंख चक्र की महिमा वर्णन करके आप चिन्ह उनके धारण करे वो सब अवतार को पूर्ण समझा किसी में कुछ भेद नहीं किया ॥

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

परमानंद जी की कथा ॥

परमानंद जी गोपियों के सदृश श्री कृष्णजी के स्नेह वो प्रेम में बेसुध वो मग्न रहते थे व्रजकिशोर स्वामी के चरित्र बारह बर्ष की अवस्था के ऐसे कीर्तन किये कि विख्यात हैं और जो उन्होंने शोभा वो सुन्दरता और माधुरी रूप और लीला नट नागर महाराज की अति प्रेम युक्त वर्णन करी तो कुछ आश्चर्य्य नहीं कि वह शोभा वो चरित्र उनके बाहर भीतर की आखों के आगे थी प्रेम का जल आखों से बहता और रोमाञ्च अनुक्षण रहता था वो स्वरभंग शोभा धाम महाराज की शोभा में पगे हुए वो उस रंग में रंगे हुए थे और अपने काव्यमें सारंग नाम भगवत् का विशेष करके लिखते वो रचना उनकी भगवत् प्रेम की बढ़ाने वाली ऐसी है कि भगवत् के ध्यान वो प्रेम में मनको लगा देती है ॥

छप्पै छठवीं

भेष वर्णन जिसमें कथा आठ भक्तोंकी हैं ॥

श्री कृष्ण स्वामी के चरण कमलों की ध्वजा रेखा को दंडवत करिके यज्ञ अवतार को प्रणाम करता हूं जिनसे वैवस्वत आदि राजा लोग यज्ञ और धर्म का उपदेश पायकर संसार समुद्र से पार हुए जान रक्खो कि भगवत् के मिलने के निमित्त दो प्रकार का भेष है एक तो आंतरीय अर्थात् अन्तर का विचार दूसरे सोचना और समझना सार और असार काम वैराग्य अर्थात् त्याग करना ब्रह्मलोक पर्य्यन्त सुखका ॥ ३ सम अर्थात् मनका निग्रह करना ॥ ४ दम अर्थात् संयम और नेम अवलम्ब से इन्द्रियों को अपने बसमें करना ॥ उपरति अर्थात मनको फिर उन स्वादों की ओर न जाने देना ॥ ५ तितिक्षा अर्थात दुःख सुख भलाई बुराई का सहना ॥ श्रद्धा अर्थात् गुरू का उपदेश ॥ ६ और भगवत् में विश्वास ॥ समाधान ॥ अर्थात् ॥ ७ भगवत् के ध्यान की समाधि ॥ दूसरा भेष बाह्य अर्थात् बाहर ॥ ८ जो देखने में आवें कि जिनको पंच संस्कार कहते हैं प्रथम ऊर्द्ध पुण्ड अर्थात् तिलक ॥ २ दूसरा मुद्रा अर्थात् शंख चक्र भगवत् अंगों के चिन्ह शरीर पर लगाना ॥ ३ तीसरा माला ॥ ४ चौथा मंत्र ॥ ५ पांचवां नाम ॥ और कोई नाम की जगह विचार भी कहते हैं ॥ और यह पांचो संस्कार गारहस्थ आश्रम में होवै त्यागीही को सब उचित है कि पद्मपुराण और हारीति स्मृति और परासर स्मृति आदि पुराणों वो स्मृति का बचन इसके विधान में युक्त है और वेद स्मृति की निज आज्ञा मिलती हैं भेद इतना है कि जो गृहस्थ हैं उनका नाम प्रकट वही रहता है जो गृह में धरा गया था और गृहस्थ आश्रम का त्याग किया विरक्त

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

होगये उनका नाम वही विख्यात होता है जो संस्कार भये के समय गुरू ने कृपा करिके दिया भेष की महिमा वो बड़ाई क्या लिखूं कि भगवत् के मिलने के हेतु सब से दृढ़ अवलम्ब मुख्य यह है पद्मपुराण में लिखा है कि जिन के गले में तुलसी लगी भई अर्थात् कंठी की माला और कमल के फूलों की माला पहिने भए भगवत् शखों का चिन्ह बाहु पर तिलक मस्तक पर है ऐसे वैष्णव शीघ्र संसार को पवित्र करदेते हैं आगम सार तंत्र का बचन है कि जो केवल माला धारी वैष्णव है वह ब्रह्मा आदि करिके भी पूज्य है मनुष्यों की कौन बात है फिर तंत्र शास्त्र का बचन है कि माला और तिलक और भगवत् शखों का चिन्ह जिस किसी के शरीर पर है जो वह चांडाल भी है तो भी पूजन के योग्य है महाभारत के भीष्म पर्व में लिखा है कि ब्राह्मण न हैं अथवा क्षत्री अथवा वैश्य के शूद्र जिसने भेष वैष्णव धारण किया है वह पूज्य है और दण्डवत् करने के योग्य और वहही कर्मों में युक्त है जो शूद्र भी है तो भी ऐसा है कि ब्राह्मणों की धरती पर मिलना श्लिष्ट है ऐसे सैकरों हजारों श्लोक हैं और क्यों नहीं ऐसी महिमा और बड़ाई इस भेष की होवै कि बिना इसके कोई मार्ग उद्धारके निमित्त देखने में नहीं आता भक्त किसीने संप्रदा के भजन कीर्तन की इच्छा की तो वह भजन कीर्तन की पद्धति और प्रश से करैगा कै तो यह बात होगी कि नहीं मिलने कोई राह और पद्धति के कारण से भजन कीर्तन की इच्छा छोड़ देगा और जो इच्छा दृढ़ होगी तो हारि झखमार कर किसी न किसी संप्रदा को अंगीकार करेगा काहे से कि जिस रीति वो पद्धति को लेकर भजन आरंभ करैगा वह निश्चय करिके किसी न किसी संप्रदा के अनुकूल होगा और जब कि किसी संप्रदा के मत के अनुसार हुआ तो निश्चय पद्धति उस संप्रदा की अंगीकार करनी पड़ेगी और जब कि पद्धति को अंगीकार किया तो सब से मुख्य रीति संस्कार की है और सब वैष्णव और शैव वो स्मार्त वो शाक्त आदि इस बात में एक मत हैं सो जितने ऋषेश्वर और भक्त ब्रह्मा तक जो हुए हैं सब को पहिले संस्कार और गुरु मंत्र उपदेश हुआ है बिना मंत्रादि किसी का उद्धार आजतक न हुआ न होगा और शास्त्र की आज्ञा प्रसिद्ध सब ठौर परहै कि ब्राह्मण बालक का संस्कार आठ बरस की अवस्था में और क्षत्रीका ग्यारह बारह वर्ष के और वैश्य का सोलह वर्ष के वय क्रम में न होजावै तो वह अपने वरण से पतित होजाता है तो सब प्रकार से संस्कारों का होना सिद्धांत वो मुख्य करकै कर्तव्य है जो किसी को यह कथन होय कि ऊपर का भेष बनाने से क्या लाभ होगा मन का भेष संवारना चाहिये तो जान रक्खो कि पहिले तो इस सिद्धांत में बोल चाल वो प्रश्न वो संदेह की समवाई वो पहुंचही नहीं है क्योंकि शास्त्र की आज्ञा

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

में किस को पराक्रम बाद करने का है कान लटका कर उस आज्ञा के अनुकूल साधना करना उचित है नहीं तो विचार लेना चाहिये कि किसी को आजतक जन्म के दिन से संसार में एकही बेर बिना ऊपर के भेष वो भजन की अन्तष्करण की उज्जलता प्राप्त हुई है जब ऊपर भजन व्रत नेम जप तप आदि करते हैं तब सैकरों जन्मों में भीतर की पदवी मिलती है सिवाय इसके प्रगट है कि पारस पाषाण लोहे को सोना कर देता है सो यह भेष ऊपर का परस मणिके सदृश है निसंदेह अन्तःकरण के अवगुणों को दूरे कर देगा फिर तुलसी और भगवत् के शंख चक्र आदि का सत्संग है और सत्संग का माहात्म्य पहिले लिख चुके हैं फिर तीर्थ के सदृश है कि हृदय को पवित्र कर देना तीर्थों का स्वभाव है वो सिपाही तब कहलाता है कि जब तरवार बांधता है बिनाध्वजा अलग अलगके ठाकुरद्वारे वो शिवाले की समझ नहीं होती है बैल पर त्रिशूल का अंक लगा देते हैं शिव जी का नादिया विख्यात होजाता है काल कहार जो कहारों का गुरु है उसकी वार्ता है कि किसी राजा धर्मात्मा के राज में मछली पकड़ता रहा राजा को आवते देख कर जाल पोखरे में छोड़ दिया अपने प्रान के भय से तलाव की मिट्टी को तिलक लगा वो जाल के दानों की माला लेकर साधों के रूप से बैठ गया राजा ने उस को साधु जाना दण्डवत् करा और कुछ भेट धरे चला गया वो काल उसी घड़ी भगवत् शरण हुआ और यह दोहरा पढ़ा ॥ दोहा ॥ बीना बड़ो दयाल को तिलक छाप अरु माल। यम डरपै कालू कहै भय मानो भूपाल ॥ इस हेतु बहुत उचित वो करनी यह चाहिये कि भेष सद्गुरु से ले सो पांचो संस्कार में पहिले ऊर्ध्व पुंड तिलक है उसके निमित्त अथर्वन वेद के उपनिषद में यह आज्ञा है कि भगवत् चरण के चिन्ह अर्थात् तिलक जीव के कल्याण के हेतु जो कोई धारण करता है और वह तिलक मध्य में छिद्र होवै और खड़ा हो कह मनुष्य भगवत् को प्यारा है और धर्मात्मा वो मुक्ति वाला है दूसरे पुराणों का बचन लिख देने से वेद श्रुति के प्रमाण लिखने पर प्रयोजन न समझा सो वेद वो पुराणों की आज्ञा के अनुकूल चारों संप्रदा में प्रनाली तिलक की है पर तिलक के स्वरूप बनाने में आपुस में कुछ भेद है श्री संप्रदा में दोनों और बीच में ललाट के भगवत् चरणों के चिन्ह बनाकर दोनों भौंह के बीच में सिंहासन लगाते हैं और बीच में रोली की पीली की लाल लकीर दीपक ज्योति के आकार खींचते हैं कि उसका नाम श्री है और कारण अधिक करने श्री के निमित्त के दो विचार इस में हैं कि यह चिन्ह उन चरण कमलों का है जिनका सेवन श्री अर्थात् लक्ष्मी अनुक्षण करती है माध्व संप्रदा में दो लकीर महीन ऊंची लगा कर दोनों भौंह के नीचे सिंहासन लगाते हैं और सिंहासनके नीचे एक

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

चिन्ह कटार के फल के आकार नाक तक देते हैं निम्बार्क संप्रदा में दो लकीर महीन के बीच में एक बिन्दी छोटी श्याम बंदिनी अथवा श्वेत लगाने की रीति है उसको कमल कहते हैं और सिंहासन महीन लकीर का जैसा तिलक का और विष्णु स्वामी संप्रदा में दो लकीर महीन और नीचे उसके सिंहासन लगाकर बीच में शून्य छोड़ देते हैं व्यास जी ने जो नई परिपाटी अपनी संप्रदा की की तो निम्बार्क संप्रदा से उनके तिलक में थोड़ा भेद है यह कि निम्बार्क संप्रदा में तिलक का सिंहासन दोनों भौंह के नीचे लगाया जाता है और व्यास जी की संप्रदा में सिंहासन नासिका के अग्र भाग से तिलक आरंभ करते हैं हित हरिवंश जी की संप्रदा का तिलक निम्बार्क संप्रदा के आकार है और रामानन्द जी की संप्रदा का श्री संप्रदा के अनुसार है चारों संप्रदा में द्वादश अंग पर तिलक करना लिखा है और सब तिलकों के मंत्र अलग २ हैं निम्बार्क संप्रदा में दोनों लकीर के बीच में बिन्दी का लगाना और माध्वी विष्णुस्वामी संप्रदा में रिक्त का और श्री संप्रदा में गोपी चन्दन छोड़कर और तीर्थों के जैसे चित्रकूट वो तोताही आदि की मृत्तिका का तिलक लगाना विधि है वो तैसेही रामानन्द संप्रदा में और तीनों संप्रदा में गोपीचन्दन का वो वैसे के समय दूसरे तीर्थों की मृत्तिका का पर विष्णु स्वामी संप्रदा में केशर आदि का भी लगाते हैं॥ तिलक निम्बार्क संप्रदा का॥ तिलक॥ माध्व संप्रदा का॥

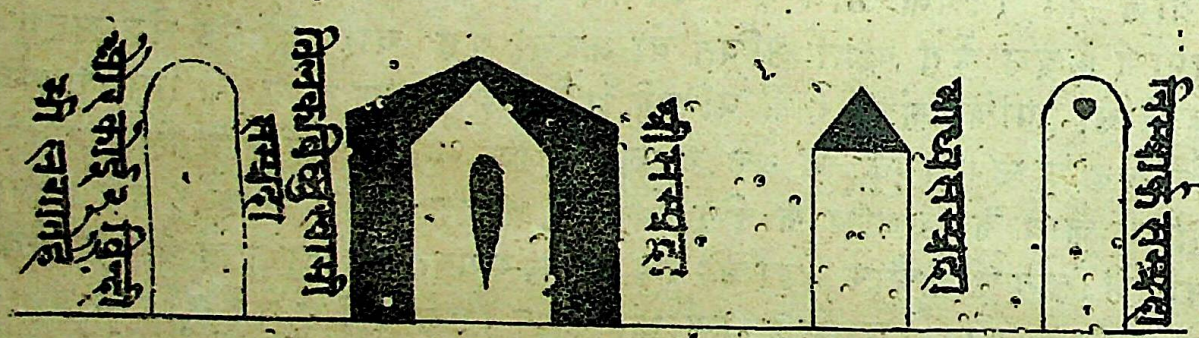

दूसरा संस्कार मुद्रा है और अथर्वण वेद की श्रुति की आज्ञा है कि जो कोई पुरुष भगवत् के शंखचक्र आयुध की तप्त मुद्रा दोनों भुजा पर धारण करता है सो विष्णु महाराज के परम पद को जाता है और इसी प्रकार दूसरी श्रुति थोड़े अक्षरों के न्यून विशेष की है वो पद्मपुराण में भी ऐसीही आज्ञा है यद्यपि चारों संप्रदा वाले इस आज्ञा के अंगीकार में एक मत है पर श्री संप्रदा में तो यह रीति है कि दीक्षा देने के समय तुरन्त तप्त मुद्रा

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

धारण करा देते हैं गृहस्थ होय अथवा त्यागी होय और तीन संप्रदा में एक पुराण के श्लोक के प्रमाण में शीतलकी मुद्रा को रीति है और यद्यपि अगिले आचार्यों ने पुराण के प्रमाण से तप्त मुद्रा धारण करना एक स्थान द्वारका में लिखा है पर गृहस्थों में यह चलन नहीं गृहत्याग के पश्चात् उचित वो अवश्य करनी यह है तीसरा संस्कार माला है तुलसी की अथवा कमल के फल की विहित है तुलसी जी का माहात्म्य बहुत जगह पुराणो में लिखा है इस हेतु विस्तार करिकै तरजुमा लिखना प्रयोजन नहीं समझा सारांश यह है कि तुलसी के धारण करने वाले को निश्चय भगवत् की प्राप्ति होती है और मरण के समय तुलसी की माला कै तुलसी दल अथवा कंठी जिसके शरीर पर होय तो यमराज का भय नहीं होता संज्ञप्ति को जाता है पद्मपुराण में जो कदम्ब आदि वृक्षों के काष्ठ की माला वृन्दावन की बनी हुई का महात्म्य तुलसी की माला के सदृश देखने में आया चौथा संस्कार मंत्र है सो उसकी महिमा सब कोई जानते हैं कि सब संप्रदाओं की जड़ और सब वेद शास्त्रों का सारांश और शीघ्र भगवत् का मिला देने वाला और भक्ति मुक्ति की कामना पूर्ण करने वाला है भगवत् में और मंत्र में बाल बराबर भी भेद नहीं है भगवत् मंत्र के आधीन हैं सब वेद वो पुराण उस मंत्र की महिमा को वर्णन करते हैं इस हेतु किसी श्रुति का तरजुमा करना प्रयोजन न समझा सो मंत्र चारों संप्रदा का अलग अलग है जो यह बाद हो कि एक स्वर का मंत्र अलग अलग किस हेतु है तो यह दृष्टांत अच्छे प्रकार उस बाद को बिरवार देता है नाम वो रीति से पुकारते हैं और वह मनुष्य सब नाम वो रीति से सावधान वो सन्मुख होता है इसी प्रकार वह भगवत् जिस नाम और मंत्र से स्मरण किया जावे सन्मुख होता है पांचवां संस्कार १ नाम २ दूसरा करने का है उसके निमित्त कुछ प्रमाण वो वाद का प्रयोजन नहीं जिस वर्ग में जो कोई होता है उसी भांति का नाम रक्खा जाता है पलटन में भरती हो तो सिपाही कहते हैं और सवारों में हो तो सवार चारों संप्रदा के जो संन्यासी होते हैं चिदण्डी कहलाते हैं एक दण्ड लकड़ी पलास की दूसरा शिखा तीसरा सूत्र अर्थात् यज्ञोपवीत विशेष करिकै नाम गिरि पुरी तीर्थ मुनि संन्यास धारणके समय रक्खे जाते हैं वो कपड़ा खेत अथवा गेरू के रंगका कैसिंगिरफी रंग का पहिरते हैं और संन्यास लेनेके पहिले सब संप्रदा में सब रंग की पहिरन सिवाय नील आदि जो शास्त्र में निषेद है पहिनते हैं स्मार्त संप्रदा जो चारों संप्रदा से अलग है और उसके आचार्य शंकर स्वामी हुए उसके तिलक की रीति त्रिपुण्ड अथवा बेठाकार अर्थात् चिन्ह बरगैदके पत्रके सदृश चन्दन अथवा भस्म कै गोपी चन्दन या तीर्थ की मृत्तिका से है ॥

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

बटाकार त्रिपुण्ड

और माला तुलसी वो कमलाक्ष वो रुद्राक्ष वो जया पुता आदि की वो गायत्री आदि सब प्रकार के मंत्र हैं मुद्रा लगाने की रीति नहीं त्याज्य जानते हैं नाम वही रहता है जो जन्म होने पर धरा गया और यज्ञोपवीतके समय जो संस्कार हुआ उसीको सब प्रयोजन के अर्थ बखत कर समझते हैं फिरि गुरु नहीं करते हैं संन्यासकी इस संप्रदामें यह रीति है कि शिखा सूचदूर कर देते हैं केवल एक दण्ड लकड़ी का रखते और नाम भी उसी समय दूसरा धरा जाता है और इसकी संप्रदा में संन्यासियों के दस नाम हैं जो कि शंकर स्वामी की कथा में लिखे गये हैं गेरू या सिंगरिफ के रंग का कपड़ा पहिनना वो तिलक त्रिपुण्ड अरुका ब्राह्मण से सिवाय और किसी के हाथ का भोजन न करना कर्मों का करना न करना बराबर समझना और दूसरे धर्म सब संन्यासियोंके बराबर हैं मुख्य संन्यासीवे हैं जो दण्ड धारण रखते हैं और सब संप्रदामें दंडी स्वामी बोले जाते हैं विशेष करि जो काशी जी वो मथुरा आदि में आते हैं हे श्रीकृष्ण स्वामी हे दीन बत्सल हे दीन दयाल हे करुणाकर कबहीं कृपा करिके इस अपने घरजाये चेरे की ओर भी कृपा दृष्टि करोगे हे नाथ भला हूं कि बुरा जैसा हूं आपका हूं जिस प्रकार लाखों करोड़ों जन्म तक इस मेरे मनने मुझको अपने वश में रक्खा है इसी प्रकार कभी मुझको भी तो ऐसा करि देव कि मैं मन को अपने वश में कर लूं और सच करि के जो सदा का अपराधों से भरा हूं पर मेरी ओर देखना क्या प्रयोजन है आप अपने बिरद पतित पावनता की ओर देखें कि कोटान कोटि महा पापी और पातकी एक नामके अवलम्ब से शुद्ध और पवित्र हुए और होते हैं और यह निवेदन मेरी ऐसी नहीं कि जिसका पूरा करना कुछ क्लिष्ट हो थोड़ीसी बात यह चाहता हूं कि वह समाज आपका जो आरम्भ ग्रंथ में लिख आया हूं सदा मेरे मन में बसा रहै स्वर्ग में कै नर्क में कहीं रहूं,—कवित्त—बसी रहै शशि छवि ज्यों मन चकोरन के अलि मति मालती सुमन में बसी रहै। बसी रहै गज मनरे वाकी रुचि रेनु मोरन की रुचिघना घन में बसी रहै॥ बसी रहै श्री पति सदन कमला जू जैसे मदन सुधा ज्यों जुवा योन में बसी रहै। बसी रहै त्योंही तेरे छवि की लगन कृष्ण मूरति तिहारी मेरे मनमें बसी रहै॥

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

कथा रसखान की॥

रसखान जो परम भक्त भगवत् के ह्वए पहिले मुसलमान थे अपने पीर के साथ राह चलते श्री वृन्दाबन में आपहुंचे तो अनेक जन्मों के पुण्य उदय ह्वए अर्थात् श्री ब्रजचन्द महाराज के दर्शन ह्वए दर्शन होतेही कुछ औरही दशा होगई उस रूप अनूप में छककर बेसुध होकर गिर पड़े उनका पीर उस पीर को न समझा मूर्छा समझ कर औषधि करने लगा और पुकारा आखैं खोलो रसखान की उसी क्षण सब विद्या वो काव्य सब गुन के खान होगये उस मनोहर मूर्ति की छवि एक कवित्त में वर्णन की अन्त में कहा कि आखैं क्या खोलूं वह मूरति मन में बस गई है पीर ने कहा काबे को चलो तब बोले कि जो है सो सब यहांहीं प्राप्त है मैं ब्रज की होचुका अब कहां जाता हूं और एक कवित्त में कहा है कि पत्थर हूं तो गिरराज का जो पशु हूं तो नन्द रायकी धेनु में चरूं जो मनुष्य शरीर मिले तो ब्रज के ग्वाल बाल में रहूंगा जो पक्षी हूं तो ब्रजके वृक्षों का उनके पीर ने चाहा कि बल से रथ में डाल कर ले जावैं वृन्दाबन के बनों में भागकर जा छिपे वृन्दाबन बास करि के हजारों कवित्त वृन्दावन की शोभा के वर्णन और प्रिया प्रीतम की शोभा बिहार की रचना करी वैष्णवी भेष रखते थे माला बहुत पहिनते थे किसीने पूछा कि एक दो माला बहुत हैं इतनी माला का क्या प्रयोजन है उत्तर दिया कि माला संसार समुद्र से पार उतार देती है सो जो छोटे पत्थर हैं उनको एकही दो माला बहुत हैं और मैं कि बड़े पत्थर के सदृश हूं मुझ को बहुत माला रखना चाहिये॥

कथा भगवान दास की॥

भगवान दास जी रहने वाले मथुरा भगवत् भजन भाव में दृढ़ वो बड़े गुणवान भगवत् के प्रेमी श्रोता और रहस्य वो रस के ज्ञाता भगवत् भक्तों में विश्वास और ऐसे सुन्दर कि जिनके देखने से मनको सुख हो और भगवत् के जो धाम हैं उनके टहल करने वाले सब भाव करिके साध्य ह्वए एक बेर बादशाह ने परीक्षा के हेतु डौंड़ी को फेरवाय दिया कि जो कोई माला तिलक धारण करैगा गरदन मारा जायगा इस बात पर बहुतों ने छोड़ दिया पर भगवान दास जी न डरे अपने अनुगामियों समेत और दिन से अधिक प्रकाशित तिलक दोहरी माला धारण कर बादशाह के साम्हने जानके आये बादशाह ने बुरा मान कर आज्ञा न मानने का कारण पूछा भगवान दास जी ने अर्थक उत्तर दिया कि हमारे दीनमें माला तिलक सहित प्राण जाय तो उद्धार होती है अब इस समय कि हमको अपनी मृत्यु ज्ञात होगई तो तिलक और माला अच्छे प्रकार धारण किये कि बिना परिश्रम उद्धार हो बादशाह यह विश्वास दृढ़ देखकर अति

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

प्रसन्न ह्वा कहा कि जो चाहना हो सो मांगो भगवानदास जी बोले मथुरा जी से बाहर जाना नहीं चाहता बादशाह ने लिख दिया कि मथुरा की आमिली जब तक मन चाहै तब तक करै सो बहुत काल मथुरा की आमिली भगवानदास जीने करी हरदेवजी का मन्दिर और मानसी गंगा पोखरा गोवर्द्धन जी में उनका बनवाया है ॥

चतुर्भुज जी की कथा ॥

चतुर्भुजजी राजा करौली ऐसे भगवत् भक्त साधु सेवी ह्वए कि उन के दृष्टान्त को कोई राजा नहीं मिलता है भक्तों के आने का वृत्तान्त सुनकर इस प्रकार लेने को आगे जाते थे कि जैसे सेवक वो चाकर अपने स्वामी की सेवा में जाता है घर लाकर राजा वो रानी अपने हाथों से चरण धोते पूजा करते नगर के चारों ओर चार चार कोस पर चौकी थीं कि जो कोई माला धारी आवै उसका समाचार पहुंचावैं एक दूसरा कोई राजा यह वृत्तान्त भेष सेवा का सुन कर कहने लगा कि योग्य अयोग्य की समझ नहीं तो भक्ति को बड़ाई क्या है उसके पण्डित ने उत्तर दिया कि मनसे समझ लेते होंगे राजा ने भाट विमुख को परीक्षा के हेतु भेजा वो समझा दिया कि माला तिलक धारण कर स्वामी हरिदासि जी बनकर राजा के पास जाना वह भाट आया अपने स्वामीका कहना भूल गया भटोंकी रीति फैलाई जब प्रवेश राजा तर्क दुरूह देखा तब अपने राजा को शिक्षा स्मरण ह्वई वो उसी भांति से गया द्वार पाल ने कुछ रोक टोक न किया जब सामने गया तो राजा ने अपने स्वभाव के अनुकूल आगत स्वागत सब किया भगवत् प्रसाद जिमाया भगवत् चरचा आरंभ किया वह भाट हूं हां करता रहा राजा ने जान लिया किसी ने परीक्षा को भेजा है-विदाई दिया और एक डिबिया में एक फूटी कौड़ी धरकै ऊपर से कीनखाप वो सुसज्जर से लपेट कर ऊपर मुहर छाप लगा उसको दे दिया भाट जब अपने राजा के पास आया तो सब वृत्तान्त भक्ति भाव का राजा चतुर्भुज का वर्णन किया वो सब विदाई समेत डिबिया राजा के आगे धर दी डिबिया खोलकर देखा भेद न पाया तब उसी पण्डित ने समझाया कि खुली बात है कि ऊपर भेष ऐसा और भीतर भाट है भक्ति नहीं राजा चतुर्भुज कहो कहता है वह राजा लज्जित ह्वआ उस पंडित को भेजा पंडित सत्संग को धन्य मानि गया राजा चतुर्भुज सुनकर आदर से दंडवत करलेगया बहुत दिन तक सत्संग का सुख लिया निश्चय जब चलने की इच्छा करी राजा ने भण्डार खोल कर कहा जो इच्छा हो सो ले जाइये पंडित ने कुछ न लिया एक मैना पक्षी राजा को प्यारा था राजा साधु सेवी ने दे दिया मैना लेकर राजा के समीप पहुंचा मैना सभा को भगवत् विमुख देख कर कहने लगी कि कृष्ण कृष्ण कहो जो तुम्हारा उद्धार हो यह संसार असार वो आशमा पायी है बिना

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

कृष्ण भजन किसी प्रकार उद्धार नहीं होगा राजा ने सब वृत्तान्त पूछा पंडित ने कहा कि एक मैना से सब समझ लेव औ हम करोड़ों मुखसे भक्ति भाव राजा चतुर्भुज का वर्णन नहीं कर सक्ते हैं राजा को बड़ा विश्वास हुआ भगवत् भक्ति साधु सेवा अंगीकार की पीछे जब भाव भक्ति राजा को होगई तब मैना बिदा होकर राजा चतुर्भुज के पास पहुंची राजा बड़ा प्रसन्न हुआ ॥

एक राजा की कथा ॥

एक राजा भगवत् भक्त ऐसा हुआ कि संसार के सुख और ऐश्वर्य्य को अनित्य समझ कर सदा भगवत् के स्मरण भजन में रहता था जिस को कंठी तिलक धारण किये देखता भगवत् रूप जानके दण्डवत् करता वो धन भगवत् उत्साह वो भक्तों के हेतु लगाता वो भांड़ आदि जो भगवत् बिमुख हैं इनको कुछ न मिलता भांड़ मंचना कर साधों का भेष बना कर आये राजा ने अपने भाव के अनुसार पूजन वो सत्कार किया भांड़ साज सम्हाल राग नाच वो हंस में का रूप बनाने लगे राजा प्रसन्न होकर बोला धन्य है भगवत् भक्तों को कि अपने सेवकों को ढोल बजा कर नाच गाय कर कृतार्थ करते हैं बड़े आदर पूर्वक प्रसाद जिमाया एक थाल में मुहर भर कर बिदा के समय आगे धर दिया भांड़ों ने विश्वास राजा का देख कर और सत्संग जो हुआ तो सब भगवत् शरण होगये ॥

गिरधर ग्वाल की कथा ॥

गिरधर ग्वाल जी भगवत् में सखा भाव रखते थे और अनुक्षण भगवत् के समीप और हंसी खेल में मिले रहते थे अपने अन्तर के प्रेम को बहुत छिपाये रहते पर भगवत् चरित्रों को कीर्तन करते गद्गद बाणी होजाती प्रीति कहां छिप सकती है तब बन में जाकर कीर्तन वो नृत्य करने लगे एकबेर मौजे माल्लपुरा में भगवत् का रास चरित्र कराया प्रेम में वे वस होकर सब धन वो वस्तु भगवत् भेंट कर दी भक्तों में ऐसी प्रीति रही कि जिस को साधु भेष देखते भगवत् रूप जानते एक बेर कोई साधु मरा देखा उसका भी चरणामृत लिया दूसरे ब्राह्मणों ने यह स्वभाव अयोग्य बिचार कर मना किया पर न माना उत्तर दिया कि भगवत् भक्त को कबहूं मृत्यु नहीं यह तुम्हारा वे बिश्वास है जो मृतक कहते हौ और ग्वाल पट्ट इस कारण से बिख्यात हुआ कि सखा रहे ॥

लाला चार्य्य की कथा ॥

लाला चार्य्य रामानुज स्वामी के जमात में ऐसे भगवत् भक्त हुए कि जिन की कथा सुन कर निश्चय भगवत् चरणों में प्रीति होती है गुरूने आज्ञा दी कि भगवत् भक्तों में जितनी प्रीति वो बिश्वास हो सो अच्छा पर बड़े भाई से कम उनको न जानना सो उस आज्ञा के अनुकूल बर्तते रहे एक समय कोई माला तिलक धारी को नदी में बहते जाते से निकाल

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

कर अपने घर लाये औ बीमान बना कर भगवत् कीर्तन करते नदी परले जाकर दाह क्रिया करके फिर महोत्सव में ब्राह्मणों सगोचों को न्योता दिया ब्राह्मणों ने अंगीकार न किया कहने लगे कि इनका कोई न था जानै कौन जाति का मृतक रहा लाला चार्य्य सुनकर चिंता करने लगे और अपने गुरू के पास गये वे स्वामी रामानुज के पास ले गये दण्डवत् कर सब वृत्तान्त निवेदन किया वो स्वामी ने कहा कि वे लोग भगवत् प्रसाद की महिमा नहीं जानते हैं तुम चिंता मत करो भोजन की सामग्री बनाओ भगवत् पार्षद वैकुंठ से आकर भोजन करेंगे सो उस दिन पर भगवत् पार्षदों का झुण्ड ऐसे स्वरूप औ वस्त्र अलंकार से कि किसी ने स्वप्न में भी न देखा हो आकर जो प्रसाद बना हुआ था अति प्रेम से भोग लगाया ब्राह्मणों को पहिले तो आश्चर्य्य हुआ कि ऐसे ब्राह्मण कहां से आये हैं फेर द्वेष बुद्धि करके यह मंत्र ठहराया कि जब भोजन करके आवें तो ऐसी हंसी करो कि लज्जित हों भगवत् पार्षद उनके कुमंत्र को जान गये भोजन करके आकाश मार्ग होकर चले गये ब्राह्मणों ने जो यह चरित्र और प्रताप देखा तो बहुत लज्जित हुए और अहंकार को छोड़ कर आए और लज्जा करिके लाला चार्य्य के सामने आखैं बरा बर न कर सके और पनवाड़े भोजन किये हुए पार्षदों के पड़े थे उन में से सीथ प्रसाद लेकर खाने लगे फिर लाला चार्य्य के चरणों में दंडवत् करके प्रार्थना की कि अब हमको अपना सेवक करो और कृपा करो लाला चार्य्य ने कहा कि तुम्हारे ऊपर तो भगवत् की कृपा हुई कि भगवत् पार्षदों के दर्शन तुमको हुए इससे अधिक क्या कृपा चाहते हो ब्राह्मणों ने विनय किया अब हमको लज्जित करना क्या प्रयोजन अनुग्रह करना प्रयोजन है सो सब भगवत् शरण हुए और भगवत् भक्ति और भेष निष्ठा का प्रताप सब संसार में प्रकाशित और प्रगट हुआ॥

मधुकर साह की कथा॥

राजा औड़ेछ भगवत् भक्ति में भी राजा हुए साधु भेष में अत्यन्त प्रेम वो विश्वास था सच करके जैसा मधुकर नाम था वैसी ही रीति भी रही अर्थात् भ्रमर सारग्राही होता है वैसेही सारग्राही थे उनकी रीति थी कि जो कोई कंठी तिलक माला हो तिसका चरणामृत लेते और परिक्रमा करते राजा के भाई बंधुओं को यह बात अच्छी न लगी एक गदहे को बहुतसी माला पहना कर तिलक करके महल में भेज दिया राजा उठा उसका चरण धोकर परिक्रमा करिके कहा कि आज निहाल कर दिया पीछे प्रसाद जिमा कर बिदा कर दिया दुष्टों को लज्जा हुई और विश्वास हुआ राजा ने जो वचन निहाल करने का कहा तो अभिप्राय यह है कि मेरे बड़े भाग्य हैं जो मेरे राज में गदहे भी माला तिलक धारण करते हैं जो कोई माला तिलक धारण नहीं करता निश्चय वेदुमका गदहा है वह गदहे से भी बत्तर॥

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

हंस प्रसंग की कथा ॥

एक राजा को कुष्ट था औषध बहुतेरी भई रोग न छूटा किसी वैद्य के कहने के अनुसार राजा ने व्याधों को हंस पकड़ने को मानसरोवर में जहां रहते हैं भेजा जब हंस इन व्याधों के हाथ न आवैं तब सब साधु का रूप बना कर गये हंस व्याधों का कपट जान गये पर भेष को न मानना भागवत धर्म से बुरा जानकर जानिके पकड़ायें गये व्याध उनको बन्ध में करिके राजा के पास लाये तब तक भक्त वत्सल महाराज वैद्य बनकर आये नगर के बाजार में अपनी बैदाई की दूकान अच्छी लगाई फिर राजा के पास पहुंचे राजा ने अपने दुःख का वृत्तान्त और हंस पकड़वा मंगाने का सब वर्णन किया वैद्य महाराज ने उनको आश्वासन कर कहा कि तुम्हारा बहुत शीघ्र दुःख दूर हो जायगा इन पक्षेरुओं को बन्धन से छोड़ो बन्दी में डार रखना कुछ प्रयोजन नहीं कुछ औषध को शरीर पर लगवा दिया तुरन्त शरीर निर्मल होगया राजा ने तुरन्त आनन्द होकर हंसों को छोड़ दिया राजा ने वैद्य के आगे हाथ जोड़ कर विनय किया कि यह राज्य वो सम्पति सब आपका है वैद्य ने कहा सच करिकै सब हमारा है अब तुम भगवत् भक्ति और साधु सेवा अंगीकार करके मनुष्य शरीर जो कि बड़े क्लेश से मिला है उसको सुफल करो फिर तो राजा ऐसा भक्त हुआ कि सब राज्य में भक्ति की प्रवृत्ति हुई यह हंस प्रसंग समझने योग्य है कि जानवरों को तो ऐसी भक्ति हो और मनुष्य जोकि ज्ञान करिकै युक्त है सो विमुख होवै तो वह मनुष्य जानवर है कै नहीं और वह नर्कगामी होगा कै नहीं ॥

निशा सातवीं ॥

गुरू की महिमा वर्णने जिसमें ग्यारह भक्तों की कथा ॥

श्री कृष्ण स्वामी के चरण कमलों की गोपद रेखा को दण्डवत करके पृथु अवतार को दण्डवत करता हूं कि अयोध्या जी में प्रगट होकर सब धर्म की मर्य्यादा फेर से नवीन बांधी और धरती को बराबर करके सब औषधी निकालीं शास्त्र का वचन है कि गुरू तीन हैं प्रथम गुरू पिता दूसरा संस्कार कर्ता कि जिसने यज्ञोपवीत आदि दिया हो तीसरा भगवत् मंत्र और भगवत् धर्म का उपदेश करने वाला और एक वचन से स्त्री का गुरू उसका पति है सो यद्यपि मर्य्यादा और महिमा में बराबर है पर इस निशा में उस गुरू का वर्णन होता है कि जो गुरू भगवत् के मिलने के हेतु किया जावै सो जानो रहो वेद वो सब शास्त्र इस बात पर युक्त हैं कि गुरू और भगवत् में कुछ भिन्नता नहीं भागवत के एकादश में भगवन् का वचन है कि गुरू को मेरा रूप जान भक्तमाल के करता का वचन पहिलेही लिखा गया कि भक्त और भक्ति और गुरू और भगवत्

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

कहने मात्र कोचार हैं पर सत्य करिकै एक स्वरूप हैं गुरू कैसाही कामी क्रोधी लोभी मोही बुद्धि हीन कूरूप होवै उसको भगवत् रूप भजना चाहिये किसी पुराण में वर्णन है कि जो गुरू कामी है तो श्री कृष्ण स्वरूप है जो क्रोधी है तो नृसिंह जो लोभी है तो वामन स्वरूप और जो धर्मात्मा है तो राम रूप भागवत् में लिखा है कि जो कोई मनुष्य भगवत् के ज्ञान देने वाले गुरूको अन्य मनुष्य के सदृश जानता है उसकी बुद्धि हाथी के सदृश है कि अन्हाय के फिर धूल मस्तक पर डालता है आज तक न किसी को देखा न सुना कि बिना गुरू ईश्वर को प्राप्त हुआ हो और विचार करने की ठौर है कि प्रगट विद्या सब बिना गुरू के प्राप्त नहीं होती तो भगवत् बिना गुरू कैसे मिलैगा महा भारत में लिखा है कि जब तक गुरू नहीं करते तब तक कुछ प्राप्त नहीं होता इस हेतु गुरू करना निश्चय प्रयोजन है और आज्ञा है कि वेद पुराण शास्त्र जप तप आदि बिनागुरू निष्फल हैं और वेद की आज्ञा है कि बिना गुरू उपदेश के जो पूजा इत्यादि करते हैं सब व्यर्थ है तो उचित है कि जो भगवत् और भक्ति के प्राप्त की चाहना हो तो गुरू के शरण हो कोई जातों में परम्परा है कि संस्कार होने पीछे गुरू नहीं करते और कोई जात में यह रीति है कि संस्कार भये पीछे भगवत् प्राप्त के अर्थ गुरू अलग करते हैं सो ज्ञात हो जाने प्रयोजन वो नहीं प्रयोजन दूसरे गुरू करने का वो लाभ हानि के निमित्त एक दृष्टान्त स्मरण हो आया है कि अंधेरी कोठरी में एक सुई सूक्ष्म है उसको एक तो इस भांति जानता है कि निश्चय सुई इस कोठरी में है और दूसरे को यह कि वह सुई ठीक २ जिस जगह दीवार में गड़ी हुई है ज्ञात है दोनों के चेले उस सुई के ढूंढ़ने को गये पहिले का चेला तो ढूंढ़ता फिरने लगा मिलगई तो मिल गई नहीं तो हारकर चला आया जो ढूंढ़ता रहगया तौ जानै मिलै कै न मिलै और मिलै तो जानै कब तक और दूसरे का चेला अपने गुरू का मता बतलाये हुए के अनुसार सीधा चला आया और बिना परि श्रम वह सुई मिल गई और यह नहीं हो सक्ता कि नमिलै अभिप्राय इस लिखने से यह है कि संस्कार होजाने पीछे जब कुछ समझ हो तो भगवत् के जानने वाले को गुरू निश्चय करकै करै बिना गुरू कुछ नहीं हो सक्ता और जो उस गुरू से भी कुछ संदेह रह जाय अपने लाभ वो इच्छा की पूर्णता को प्राप्त न हो तो दूसरा गुरू करते हैं कुछ हानि नहीं शास्त्र की आज्ञा है जैसे देखो दत्तात्रेय ने चौबीस गुरू किये यद्यपि धर्म गुरू और चेले के शास्त्रों में बहुत लिखे हैं परगुरू के चार धर्म आवश्यक निश्चय हैं एक तो शास्त्र को जानने वाला हो दूसरे भगवत् भक्त तीसरे सम दर्शी चौथे वेद की आज्ञा के अनुकूल वर्त्तने वाला इसके ऊपर एक धर्म सब

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

जगह लिखा है कि गुरू अज्ञान के दूर करने के निमित्त है तो जिसप्रकार हरे सबै चेलेको भगवत् सन्मुख कर देवै और इस आज्ञा को आप गुरु शब्द का अर्थ निश्चय करता है गुरू जो अज्ञान वो अन्धकार को दूर करै वह गुरू है इसी प्रकार चेले के निमित्त चार धर्म दृढ़ हैं प्रथम सेवा गुरू की तन मन सेवा के समय सुख स्वादु का त्याग तीसरे गर्वका त्याग चौथे गुरू में दृढ़ बिश्वास सो बेद की स्मृती कहती हैं कि जिसकी भक्ति भगवत् और गुरू में बराबर है तो उस महात्मा को सब मनोर्थ आप से आप प्राप्त हो जाते हैं सो वह बिश्वास ऐसा हो जैसे भगवत् भक्तों को भगवत् में होता है और सेवा ऐसी हो कि जिस प्रकार अज्ञानी अपने शरीर की करते हैं महाभारत के आदि पर्व में लिखा है कि धूम्र ऋषेश्वर के चार चेले ये चारों दृढ़ बिश्वास वो गुरू की सेवा करिके केवल गुरू के आशीर्बाद से सब बिद्या के ज्ञाता और दोनों लोक के फल को प्राप्त होगये जो यह प्रतिबाद हो कि बिना परिश्रम केवल बिश्वास से कैसे सब बिद्या इत्यादि लाभ हुई तो जान रक्खो कि गुरु में जो बिश्वास किया तो भगवत् रूप जान कर किया सो भगवत् ने गुरू द्वारेसे उनके मनोर्थ सिद्ध करि दिये वो सिवाय इसके कई जगह वर्णन होता है कि असुक ऋषि ऐसे प्रतापवान थे कि उनके स्थान में बकरी वा व्याघ्र एक जगह पानी पीते थे सो व्याघ्र का ऐसा स्वभाव हो जाना यह प्रभाव उस स्थान का है जो व्याघ्र को ब्यापि गया इसी प्रकार गुरू की भी अपने प्रताप के प्रभाव करिकै एक क्षण में वांछित पद को पहुंचा देता है बहुत ऐसा हुआ और होता है और कुछ अयुक्त नहींकि निर्मलजल कपड़े के मैलको दूर कर बिमल कर देता है भले का आशीर्बाद वो आप शीघ्र ब्यापि जाता है इस सिद्धांत से यह सिद्ध हुआ कि गुरू महात्मा योग्य चाहिये और ऐसे गुरू इस समय में नहीं मिलते पर ऐसे हैं कि उनको केवली द्रव्य आकर्षण से प्रयोजन है चेला चाहे नर्क में जाय कै स्वर्ग में छैसाहीं अथवा सात में पधारे और उस पर दुकान दारी फैलाई जो हाथ आगया सो लेगये और जो किसी चेले ने कोई बात अपने संदेह निवृति के हेतु पूछी तो उसके उत्तर का तो कुछ ठिकाना नहीं और उसको वे बिश्वास वो नास्तिक वो कथनी कथने वाला ठहराया वो सब से उसी की निन्दा कहते फिरने लगे और चेलों का यह हाल है कि गुरू जी की भिक्षा ग्रहण करना और मंत्र को जपना तो कुछ बात हो नहीं जो बरस दो बरस पर गुरू जी रामभक्त करते पधारे तो सातों यम दूत दिखाई पड़े इस हेतु कि पांच चार दिन रहैंगे भोजन अच्छे लेंगे और बिदाई भी देनी पड़ैगी भला जब इस समय के गुरू चेलों की यह गति हो तो कहां गुरू वो कहां चेला और यह भी जानो कि गुरू बहुत मिलते हैं पर चेलों की आंखें बन्द हैं कि उनको देखें जो थोड़ासा भी परलोक का

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

भय करके भगवत् और गुरू को ढूढ़ें तो ऐसा नहीं कि न मिलें लोकोक्ति है कि जिन ढूढ़ा तिन पाया और जब कि घरसे पांव बाहर नहीं निकलते और परलोक का भय नहीं और न भगवत् की चाह है तो कहां से गुरू मिलै कि किसी को छप्पर फाड़ कर धन नहीं मिलता अब इस लिखने से कोई ऐसा न समझ लेवै कि जब गुरू योग्य मिलेंगे तबही गुरू करेंगे यह समय का वृत्तान्त है निज अभिप्राय इस लिखने का यह है कि गुरू निश्चय करना चाहिये जैसा मिलै केवल इतना देख लेना बहुत है कि उपासना का जानने वाला हो और उसको मंत्र गुरू दीक्षा से मिला हो यह नहीं कि पोथी देख कर मंत्र दे दिया चेला बना लिया और गुरू के उपदेश वचन पर दृढ़ विश्वास हो बस वह गुरू है तिस को हाथों हाथ संसार समुद्र में उतार देगा धर्म कर्म उस गुरू के बुरे हों कै भले इस पुरुष को सब धर्म रूप हैं काहे से इस को विश्वास दृढ़ है वो गुरू रूप भगवत् आप हैं वही राह दिखा कर दोनों लोक के अर्थ को सिद्ध कर देगा जो विश्वास न होगा तौ कैसाही महात्मा गुरू हो मिल कुछ लाभ न होगा और विचार लेना चाहिये कि जो मनुष्य भगवत् से विमुख हो उनको तो गुरू के अवलम्ब से ईश्वर मिलसक्ता है और जो गुरू न किया अथवा उसके वचन पर विश्वास न किया तो फिर कहां ठिकाना है बहुधा ऐसा हुआ है कि चेलों के विश्वास से गुरू भीतर गये हैं कि गुरू भक्ति कोई कोई की इस निष्ठा में लिखी जावेगी उनसे सिवाय एक और बात है किसी खत्री के लड़के ने अपने गुरू से सुना कि श्रीनन्द नन्दन महाराज ब्रज में नित्य रहते हैं जो मन लगाकर ढूढ़ै तो मिल जाते हैं यह लड़का अत्यन्त दर्शन का आकांक्षी होकर ब्रज में गया और ढूढ़ा कुछ पता न लगा लोगों से पूछा किसीने कहा गो लोकमें हैं और किसी ने बैकुंठ में बतलाया और किसी ने कहा कि जो ब्रज में हैं तो देखने में नहीं आते और किसी ने कहा परमधाम को गये इस लड़के को किसी के वचन पर विश्वास न हुआ और कहने लगा कि मेरे गुरू का वचन कबहीं झूठ नहीं पर मेरे ढूढ़ने का आलस है तब खाना सोना सब छोड़ कर बे चैनहोकर ढूढ़ने लगा जब कुछ दिन बीता न खाया न सोया न बैठा जहां तहां फिरताही रहा तो करुणाकर दीनवत्सल प्रगट हुए और कहा कि जिसको तू ढूढ़ता फिरता है वह मैंहूं यह लड़का रूप माधुरी और छवि अनूप देख कर चरणों में गिर पड़ा और बिनय किया कि कुछ संदेह नहीं आप वही हैं कि जिसको मैं ढूढ़ता था पर मैंने सुना है कि आप चोर और छलिया भी हैं जब तक मेरे गुरू तुमको पहिचान कर निश्चय न करदेंगे तब तक हमको विश्वास नहीं भक्त वत्सल महाराज उसके प्रेम वो विश्वास के वस होकर कुछ न कह सके

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

साथ हो लिये और उस लड़के ने छल वो कपट के डरसे हाथ पकड़ लिया बस तुरन्त जहां उनके गुरु रहे आन पहुंचे आधीरात थी गुरु जी अटाय सैन में थे इस लड़के ने पुकारा कि महाराज ब्रज सुन्दर मन मोहन महाराज को लाया हूं आप पहिचान कर लें दोचार बेरके पुकारने में गुरु जी को सुनपड़ा उसके बचन को मिथ्या समझा पर उजेरा मुख झलक वो आभूषण सोभा धाम की जो विलक्षण चांदनीसी छिटक रही थी अरोखों के राह से देखा तो घबराकर उठे और दरीवे से झांका तो क्या देखते हैं कि सच है कि नट नागर ब्रजचन्द छवि समुद्र हैं कि मुखारविन्द के झलक की चांदनी चारों ओर खिलरही है और घूंघरवाली अलकैं छटी लटैं अरसीली आंखों में काजल की रेख और मुकुट जड़ाऊ जवाहिरात का सिर पर है कानों में कुंडल कि उसके मोतियों की झलक कपोलों पर और कपोलों की झलक मोतियों पर पड़ती है नाक में छोटासा बुलाक कि उसमें सबजा मड़ा हुआ है कंठा पचरंगी माला जवाहिरात और मोतियों और सुगन्धवाले फूलों के गलेमें हार और सुकुमार शरीर में बागा सुनहरी तारकी उसपर सुफेस में मोती गूंथ कर गोपियों ने झालर की भांति लगा दिये हैं उसके ऊपर है कल जड़ाऊ झलकती है धानी रंग दोपट्टा जरी का उसे कटिको कसे हुए हाथो में कंगन पहुंची और बाजूबन्द जड़ाऊ अंगुलियों में अंगूठी घुटना गुलेनारी गुलबदन का कि गोटे और पट्टे कीगुलकारी उस पर हो रही है शोभायमान चरणों में महावर लगा हुआ उस पर घुंघरू और कड़े हैं और किसी गोपिका के साथ जो कुछ छेड़ छाड़ करी थी और उसने केसर के छींटे देदिये थे वह मुखार विन्द पर झलक रहे हैं और उस गोपिका के छेड़ने की और उसे उत्तर पाने की हंसी अब तक नहीं गई फूल जहां तहां गुथे हुये हैं और मुरली फेंट में बस यह देख कर गुरु जी बेबस होकर पुकारे कि अरे तू किस ढिठाई से हाथ पकड़ रहा है यह नन्द नन्दन महाराज पूर्ण ब्रह्म सच्चिदानन्द घन हैं और मैंभी आता हूं यह कह कर गुरु जी तो आतेही रहे कि आप नट नागर महाराज उस लड़के सहित अन्तर ध्यान होगये गुरु जी जो आये तो कुछ नहीं देखा कभी अपने चेले के बिश्वास पर दृष्टि करिकै अपने ऊपर धिक्कार और कभी दर्शन पाने से अपने भाग्य को धन्य कह कर त्यागी होगये वो अपने चेले के निश्चय के प्रभाव करिकै भगवत् को प्राप्त हुए सो गुरुमें बिश्वास करनाही उद्धार का कारण है रे मन मूरख कभी तो उस स्वरूप की ओर तू सन्मुख हो जो ऊपर लिख आया और विचार कर कि भगवत् चरण कमलों के बिना किसी को भी कुछ प्राप्त हुआ है ब्रह्मादिक देवता तो जिसके चरण कमलों की रज को अपने धन्य भाग्य समझते हैं और तू ऐसा असावधान कि कभी उस ओर

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

न लगै तो तेरी अभाग्य दशा यह है दूसरी बात नहीं सो तू अबभी समझ और कृपा करके उस रूप अनूप का चिंतवन कियाकर कि सबसे पहिले तेरीही नाव उस किनारे पर पहुंचै ॥

पाद पद्मा चार्य्य की कथा ॥

पाद पद्मा चार्य्य जी परम भगवत् भक्त गुरुनिष्ठ गंगा जी के तट पर गुरू सेवा में रहा करते एक समय गुरू तीर्थ को जाने लगे तब पाद पद्मा-चार्य्य को अपने वियोग से विकल देख कर आज्ञा की कि गंगा जी को हमारा ही रूप ध्यान करना पद्मा चार्य्य जी गंगा जी का पूजन करते वो चरण गंगा में नहीं रखते कूप जल से स्नानादि क्रिया करते दूसरे साधु वहां थे वे लोग इसबात में प्रसन्न न थे जब गुरू आये तब सब ने निन्दा करी गुरू पद्मा चार्य्य के हृदय को जान गये कि मर्य्याद के भय से चरण गंगा में नहीं देते पर सब का मोह दूर करने को एक दिन गुरू ने गंगा में स्नान करते में पद्मा चार्य्य से अंगौछा मांगा पद्मा चार्य्य को इधर गुरू रूप गंगा में चरण देना ढिठाई उधर गुरू आज्ञा साधना इसी चिन्ता में शोचतेही थे कि कमल के फूल गंगा में प्रगट हो आए उसी पर चरण देते जाकर अंगौछा दिया वो फिर तट पर लौट आए गुरू ने यह विश्वास वो प्रभाव देख छाती से लगाया वो चरण भी पकड़ लिये पाद पद्मा चार्य्य नाम धरा ॥

विष्णु पुरी की कथा ॥

विष्णु पुरी ऐसे भगवत् भक्त हुये कि भागवत धर्म के आगे और सब धर्म असार समझते थे श्री मद्भागवत जो समुद्र है तिसमें से श्लोक रूपी अमोल्य रत्नों को निकाला और कलिके जीव इस धन के दरिद्र हैं तिन को निहाल कर दिया यह विष्णु पुरी जो माध्व संप्रदा में श्रीकृष्ण चैतन्य महा प्रभु के चेले हुए जगन्नाथ पुरी में बात चले पर दूसरे साधों ने प्रति-वाद किया कि मुक्ति होने के हेतु काशी पुरी में ठिके हैं श्री कृष्ण महा-प्रभु जी ने उत्तर दिया कि उनको न मुक्ति से प्रयोजन है न किसी देवता से न काशी से सिवाय श्री कृष्ण चरण कमलों के किसी ओर भूल कर भी उनके चित्त की वृत्ती नहीं जाती केवल सत्संग के अर्थ काशी में ठिके हैं पर लोगों ने न माना तब कहा प्रभू ने विष्णु पुरी से रत्न की माला के भेजने के हेतु चिट्ठी भेजी विष्णु पुरी जी ने हृदय को समझ कर भागवत् समुद्र से पांच सौ श्लोक रूपी रत्न चुन कर और भक्त रत्नावली नाम रख कर अपने गुरू को भेजा साधों ने जो देखा पढ़ा भक्ति रस में मग्न होगये विश्वास हुआ कि विष्णु पुरी जी परम अनन्य भक्त हैं तैसे ही गुरु निष्ठा में हैं जाने रहो भक्त रत्नावली के तेरहे अध्याय में अलग अलग क्रम से नवधा भक्ति वो ज्ञान वैराग्य का वर्णन है ॥

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

कथा पृथी राज की ॥

पृथी राज कछवा है आमेर के राजा ऐसे भक्त वो गुरु निष्ठ ऊए कि घर बैठे द्वारिका नाथ महाराज के दर्शन पाये और शंख चक्रका छाप शरीर पर प्रगट ऊआ और कृष्णदास जी की कृपासे सबधर्म वो उपासना के ज्ञाता होगये भीष्मपितामह के सदृश निष्पाप वो युधिष्ठिर के सदृश धर्मात्मा वो पूजा करने वाले प्रह्लाद के सदृश ऊए जैसे चेले कृष्ण दास जी के ऊए सो कृष्ण दास जी की कथा में कहा है पृथी राज ने जब कृष्ण दास जी के साथ द्वारिका जाने का इच्छा वो सजाव सब किये तब राज मंत्रियों ने कृष्ण दास जी से विनय किया कि राजा के जाने से इस देशमें भक्ति का प्रकाश बढ़ता जाता है सो घटती होने लगैगी कृष्ण दास जीने अपने राज पर रखने की आज्ञादी राजा ने विनय किया वो उदास होकर बोले कि एक तो आपके चरण का संग दूसरे द्वारिका नाथ का दर्शन गोमती का स्नान वो भगवत् शंखों का चिन्ह प्राप्त होने का लाभ था सो अब मैं उन लाभों से बिमुख होता हूं कृष्ण दास जीने आज्ञाकी कि शोच करना कुछ प्रयोजन नहीं वह सब तुम को इसी जगह प्राप्त होजायगा यह कह कर चले गये राजा साथ के वियोग से धार धार रोने लगा तीन दिन बीते थे अर्द्धरात्रि के समय राजा ने कृष्ण दास जी का पुकारना सुना दौड़ कर गया देखा आप द्वारिका नाथ महाराज हैं प्रेम में बेबस ऊए दण्डवत् परिक्रमा करी फिर आज्ञा पाकर गोमती में स्नान किया शरीर पर शंख चक्र के चिह्न अंकित होगये रानी भी राजा की आज्ञा से गोमती में स्नान करके कृतार्थ होगई प्रभात को यह वृत्तान्त सारे संसार वो देश देश में फैला नगर के लोग वो जहां तहां के सन्त महन्त दर्शनों के लिये भेंट नाना प्रकार की आगे धरे गुरु भक्ति वो भागवत भाव का विश्वास दृढ़ ऊआ पीछे राजा ने मन्दिर बनवाया मूर्ति विराजमान करके दिन रात सेवा पूजा में रहने लगा एक अन्धा ब्राह्मण बैजनाथ जी के द्वार पर सूझने के लिये पड़ा रहा बहुत दिन बीते तब शिव जी ने दया करके कहा कि पृथी राज का अंगौछा आंखों पर मल दे खुल जायंगी ब्राह्मण आया राजा ने नवीन अंगौछा अपने शरीर पर लगा कर दिया कि तुरन्त आंखें खुल गईं ॥

तत्वा जीवा की कथा ॥

तत्वा जीवा दोनों भाई ब्राह्मण पद्मनाभ देश जो कमल के सदृश है तिसको प्रफुल्लित अर्थात् भक्त करने को सूर्य्य के सदृश ऊए अथवा भगवत् भक्ति जो अच्युत का समुद्र है तिसके दोनों तट ऊए जिनके प्रभाव करिकै लाखों को भगवत् भक्ति प्राप्ति ऊई रघुकुल वालों के सदृश भये एक लकड़ी सूखी द्वार पर गाड़े थे वो प्रण था कि जिसके चरणामृत से यह

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

लकड़ी हरीहो जावै उसको गुरू करैंगे सो कबीर जी के चरणामृत से हरी होगई कबीर जी के चेला ऊए कबीर जी चलते समय कह गये जब प्रयोजन पड़ै तब हमको स्मरण करना तिसके पीछे ब्राह्मण वो उनके सगोतियों ने जुलाहे के चेला होने से उनको जाति से निकाल दिया और उनकी लड़की का ब्याहलेना अंगीकार न किया चिन्ता में होकर संदेश गुरू के पास कहला भेजा कबीर जी ने उत्तर भेज दिया कि यह लोग भगवत् से विमुख हैं तुम्हारे सम्बन्ध योग्य नहीं तुम लोग दोनों भाई आपुसमें अपने लड़कों का सम्बन्ध कर लेव उस आज्ञा के अनुसार इच्छा को किया सब बरावे और सबने एकट्ठे होकर दोनों भाइयों से कही कि ऐसी रीति उचित नहीं है उत्तर दिया कि हमको सिवाय गुरू की आज्ञा के अपने दूसरा कुछ करना अंगीकार नहीं है वे सब लोग इस विश्वास के वस होगये फिर इस बात के बन्द करने को बिनय किया तब दोनों भाइयों ने कबीर जी से जाकर कहा तब कबीर जी ने आज्ञा की कि जो वे लोग भक्ति अंगीकार करैं तो करो चिन्ता नहीं सो उन लोगों ने भगवत् भक्ति स्वीकार करी तब नातेदारी होने लगी जब सबने भक्तों का समाज वो प्रभाव भक्ति का देखा तब सब भगवत् शरण होकर कृतार्थ हो गये॥

खोजी की कथा॥

खोजी परम भगवत् भक्त और गुरु निष्ठ रहे उनके गुरू ने एक घंटा स्थान में लटका दिया था वो चेलों को समझा दिया रहे कि हम जब परमधाम को जावैंगे तब यह घंटा बजैगा जब गुरू ने देह त्यागा तो घंटा न बजा चेलों को चिन्ता ऊई खोजी वहां उस समय न थे जब आये तो सुना तब जिस जगह गुरू ने देह त्याग किया लेटकर देखा तो एक आंब पका लगा है उसको तोड़कर टुकड़ा किया तो देखा कि एक कृमि उसमें है और उसी क्षण वह कीड़ा मर गया और घंटा बजा सबको निश्चय ऊआ सो इसमें गुरू ने चेलों को एक उपदेश कर दिया कि अन्तकाल में जहां मनलगैगा सोई होगा गीताजी में भगवत् बचन है तिसको निश्चय कराया॥

गुरू निष्ठ की कथा॥

एक गुरू निष्ठ भगवत् भक्त ऐसे ऊए कि गुरू के सिवाय दूसरे साधु सन्त की सेवा नहीं जानता गुरू की इच्छा यह रही कि साधों की भी सेवा करै तो अच्छी बात है पर विना परीक्षा इस बात के कि आज्ञा करैं कै न करैं कह नहीं सके यह परीक्षा बिचारी कि जब वह तीर्थ को जाने लगा तब उसे कहा कि जब तुम आवोगे तब एक बात कहूं करिच्छा करैंगे तीर्थ करके जिस दिन वह पहुंचने को था तब गुरू ने प्राण

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

छोड़ दिये लोग जलाने को ले गये तब तक गुरु निष्ठ पञ्जंचा सुन कर रोता दौड़ा लोथ को रोका कि हमारे गुरू का बचन है जब तीर्थ कर आवेगा तब कुछ शिक्षा कहूंगा सो बचन मेरे गुरू का मिथ्या नहीं नितान्त किसी प्रकार गुरू के शरीर को फेर लाकर सिंहासन पर पधराय कै बिनय किया कि अपने बचन को पालन करिये मेरी आसा लगी है गुरू जी उसके विश्वास पर अति प्रसन्न होकर जीकर उठ बैठे साधु सेवा के निमित्त शिक्षा करी गुरुनिष्ठ ने बिनय किया कि आप तो परमधाम को जाते हैं मेरी साधु सेवा कौन देखैगा गुरू इस बचन को चतुराई से प्रसन्न होकर एक बर्ष और जीते रहे ॥

कथा घाटम की ॥

घाटम जात के मीना रहने वाले गांव घोड़ी राज जयपुर के गुरू भक्तिको बचन के निश्चय से उत्तम पद को पहुंचे और कृतार्थ होगये ठगी का रोजगार करते थे कुछ मन में बिवेक आया किसी हरि भक्त के पास गये उसने शिक्षा किया चोरी ठगी छोड़ देव घाटम ने कहा मेरी जीविका वही है हरि भक्त ने कहा उसके बदले चार बात अंगी कार करो १ एक सत्य बोलना २ दूसरी साधु सेवा ३ तीसरी भगवत् अर्पन किये पीछे कुछ चीज खाना पीना ४ चौथी भगवत् आरती में जा मिलना सुनते ही चारों बातों को अंगी कार किया तब हरि भक्त ने घाटम को भगवत् मंत्र उपदेश करके चेला किया घाटम गुरू की चारों बातों पर अभ्यास रखते रहे एक दिन घर में कुछ न था साधु आगये खलिहान से किसी के गेहूं चुरा लाकर साधु सेवा को किया पर सेवा करते में कुछ डर मन में होजाती थी कि पता लगा कर गेहूं वाला आकर पकड़ न ले नहीं तो साधों की सेवा में बिघ्न होगा सो आंधी पानी ऐसी आई कि पता पांव का सब मिट गया सुचित होकर सेवा किया एक समय गुरू ने भगवत् उत्साह में घाटम को बुलाया उस समय साधु सेवा के करने से कुछ पास न था चिन्ता में हुए राजा के मकान पर आये डेवढ़ी दारों ने पूछा तब उत्तर दिया चोर हूं घाटम मेरा नाम है वे लोग पहिरन उत्तम उनका देख कर जान गये कि हंसी की राह अपने को चोर कहता है कुछ न बोले घोड़सार के भीतर जाकर एक उत्तम घोड़ा सुरकी रंग चुन करके सवार होकर चले द्वार पर द्वार पालों ने रोका फिर उसी प्रकार सांच सांच कह कर चले आये गुरू की ओर चले संध्या के समय एक नगर में किसी ठाकुर द्वारे में आरती होती थी वहां गये भजन करने लगे राजा के यहां उस घोड़े की ढूंढ़ पड़ी कोतवाल बहुत सिपाहियों सहित घोड़े के पांव का पता लगाता हुआ उसी मन्दिर के द्वार पर जहां घाटम आरती में थे पञ्जंचा भगवत् भक्त बत्सल महा-

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

राज को चिन्ता भई कि यह कोतवाल घोड़े को पहिचान कर मेरे भक्त को दुःख देगा इस हेतु घोड़े को बुकरा रंग कर दिया वो घाटम जब सवार होकर निकले तब कोतवाल देख कर लज्जित वो शोच में भर गया कि घोड़ा वही पर रंग दूसरा अब राजा जाने हमें कैसा दण्ड करैगा घाटम जीने उनसे वृत्तान्त सब सुन कर दया करके बोले कि वह चोर मैं हूं और यह घोड़ा भीवही है भगवत् इच्छा से यह रंग होगया मेरी रक्षा के हेतु सो चिन्ता न करो घोड़े समेत तुम्हारे राजा के पास मैं चलता हूं यह कह कर राजा के पास आये राजा सब वृत्तान्त सुन कर चरण पर पड़ा और रुपया मोहर सब देने लगा घाटम जीने कहा घोड़े से प्रयोजन है और कुछ न चाहिये राजा ने और कुछ सहित घोड़ा घाटम जी को भेंट किया घाटम जी ने वह सब लेजाकर गुरू जी को भेंटकर दिया कुछ संदेह नहीं कि भगवत् भक्ति का ऐसाही प्रताप है सो आप गीता जी में भगवत् ने कहा है कि किसी के आचार दुष्ट भी हैं पर मेरा भजन ऐसा करता है कि दूसरे को कदापि नहीं जानता उसको निसंदेह साधु जानना चाहिये काहेसे कि जो निज तात्पर्य और सारांश शास्त्रों का है उसको वह पहुंच गया है वो निश्चय करिकै बुरे आचरण भी उसके शीघ्र छूट जावैंगे और सुखको प्राप्त होगा और अर्जुन सर्व जान मेरे भक्त का कभी नाश नहीं होता ॥

नरवाहन की कथा ॥

नर वाहन जी राधा वल्लभी रहनेवाले भौगांव के हित हरिवंश जी के चेले भगवत् भक्त साधु सेवी परम गुरू निष्ठ हुए एक साहूकार की नावको लूट लिया और उसको और धन को लेने के हेतु बंधन में डारा नर वाहन जी की लौंडी दया मान थी, उस वणिक को खाना पहुंचाया करती उसने उसको यह उपाय बतलाया कि आधी रात के समय राधा वल्लभ हित हरिवंश राधा वल्लभ हित हरि वंश पुकार पुकार कहता जिसमें नर वाहन के श्रवण में पहुंचै और जब कुछ पूछै तो हित हरि वंश जी का चेला अपने को कहना उसने वैसाही किया नर वाहन जी सुन तेही नाम राधा वल्लभ और हित हरि वंश जी के बेसुधि दौड़े साहूकार को दण्डवत् करके वृत्तान्त पूछा उसने कहा कि हित हरि वंश जी का चेला हूं और राधा वल्लभ जी का बिना मोलका चेरा हूं नर वाहन जी लज्जित और ग्लानि युक्त हुए और सब धन उसका फेर दिया और अपने अपराध को क्षमा कराया वो चरणों में पड़ कर बिनय किया कि तुम बड़े भाई हो मुझ को अपना दास जान कर इतनी मेरी पालना करो कि यह वृत्तान्त स्वामी जी तक न पहुंचे वह साहूकार यह दया नर वाहन जी की देख कर उसी घड़ी भगवत् के शरण हुआ और हित

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

हरिबंशजी के पास आया और चेला होकर भगवत् भक्त होगया गोसाईं जी भी नरबाहन जी के निश्चय पर बहुत प्रसन्न हुए अब यहां एक प्रतिवाद यह खड़ा हुआ कि एक कथा तो घाटम की लिखि आये कि वह चोरी किया करता था यह नर बाहन जी की लिखी कि ठग थे तो क्या भगवत् भक्त चोरी और ठगी को पाप नहीं समझते उत्तर यह है कि भगवत् भक्त निश्चय करिके चोरी और ठगी को पाप कर्म समझते हैं और ऐसे कर्मोंके निकट नहीं जाते भगवत् भक्तों के बराबर संयमी कोई नहीं और यह चरित्र जो घाटमजी से वो नर बाहनजी से हुआ तो चोरी में नहीं गिना जाता चोरी वह है जो अपने शरीर के हेतु होय और उसे लड़के बालों का खाना कपड़ा चलताहो अब और शंका उत्पन्न हुई कि इस लिखने से चोरी करना अच्छा कर्म ठहरा कि लोगों का धन भले लूटाकरै और संख आंझ बजै साधु सेवा किया करै उत्तर यहहै कि कदाचित् चोरी करके साधु सेवा करनी उचित नहीं दुष्टत के धनसे साधु सेवा करनी उचित है और अभिप्राय मेरा यह नहीं था कि जो कुछ समझकर शंका करदिया तात्पर्य यह था कि जब अन्तष्करणकी निर्मलता प्राप्त होतीहै और यह संसार अनित्य दिखाई देने लगा और द्वैतता का आवरण उठ गया उस समय जो कर्म भक्तोंसे होते हैं वह सब अच्छे हैं जो चोरी वो ठगीकरैं तो उस दोष में वह भक्त दंडके योग्य नहीं होता निश्चय इसका गीता जी के अध्याय पांचवां वो श्लोक सातवेंसे अच्छे प्रकार होता है और घाटम की कथा भी निश्चय कराने वाली है कि भगवत् ने दूर करने के निमित्त पांवके चिन्ह को आंधी और मेह बरसा दिया और घोड़े का रंग मुसकी से सुपेद कर दिया और अपने भक्त के कर्म धर्म वो पुण्य रूप समझ कर उसके पक्ष पर हुए सिवाय इसके सब धर्म कर्म भगवत् भक्ति की प्राप्ति के अर्थ हैं जिस काम से भगवत् भक्ति हो वह चोरी में गिनती नहीं बरु जैसे अन्य साधन सब हैं तैसे हैं सो घाटम वो नरबाहन दोनों से प्रसन्नता भगवत् और गुरू की हुई जो वे लोग चोर वो ठग होते तो भगवत् कब प्रसन्न होते सिवाय इसके समर्थ को कुछ दोष नहीं होता जिस प्रकार गंगा जीमें सब प्रकार के जल मिलकर गंगाजल और प्रज्वलित अग्नि में सब वस्तु अग्नि हो जाते हैं तो जान रखिना कि साधु सेवा वह परम धर्म है कि उसके निमित्त भगवत् भक्तों ने निज भगवत् का आभूषण उतार कर बेच डाला है दूसरे कर्म की कौन बात है बरु आप भगवत् साहूकार बनकर अपने भक्तों के हाथ से ठगी कराते हैं और उस चरित्र से प्रसन्न और संतुष्ट होते हैं कि निश्चय इसका हरिपाल निष्किंचन की कथा से होता है प्रीति सांची और बिश्वास दृढ़ उचित है घाटम के बिश्वास को देखना चाहियेकि कैसे गुरु के बचन पर स्थिर वो सच्चे थे कि प्राण का भी लोभन किया और

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

नरवाहन जी के विश्वास को देखना चाहिये कि अपने गुरू वो इष्ट का नाम सुनकर तीन लाख वो तीस हजार का धन फेर दिया और अपने आपको भक्त के दुःख देने वो सताने का अपराधी समझा नितान्त अर्थ यह कि भगवत् भक्ति में विश्वास होना सब सुकर्म से सिरोमणि है सिवाय इसके एक यह है कि जिस अपराध से वाली और रावण भगवत् के घर से निकाले गये और वध को प्राप्त हुए सोई अपराध सुग्रीव और बिभीषण से हुआ पर वे भक्ति के प्रताप से महा भागवत और भगवत् सखाओं में गिने गये तो भगवत् भक्ति का यह प्रताप है कि सब अपराध उलट के पुण्य हो जाता है ॥

गजपति की कथा ॥

गजपति राजा पुरुषोत्तम पुरी के भगवत् भक्त हुए गोसाईं श्रीकृष्ण चैतन्य अपने गुरू में ऐसा विश्वास दृढ़ रखते थे कि जब दर्शन कर लेते तब राज काज किया करते एक दिन गुरू गोसाईं जी ने उनको दर्शन करने को आना वर्जित किया राजा संन्यासी रूप होकर दर्शन के हेतु इधर उधर फिरने लगा पर दर्शन न पाया एक दिन रथयात्रा के समय देखा कि रथ के आगे गोसाईं जी नृत्य कर रहे हैं दौड़ के चरणों में पड़ा गोसाईं जी ने राजा का प्रेम वो विश्वास देख कर छाती से लगा लिया वो प्रेम आनन्द में मग्न कर दिया ॥

चतुरदास की कथा ॥

स्वामी चतुरदास परम भक्त वो वैराग्यवान हुए भगवत् भजन के आनन्द में मग्न रह कर सदा भगवत् के रंग में रंगे रहते थे मथुरा और ब्रजमण्डल में फिरते हुए ठौर ठौर सत्संग के सुख को लेते रहे गुरु भक्ति में ऐसे हुए कि कोई न होगा उनके गुरू सदा घर पर आया करते भगवत् रूप जान कर सेवा पूजा किया करते स्वामी जी की नव यौवना वो रूपवती थी उसको गुरू की सेवा में तत्पर कर दिया कि जो आज्ञा हो सो सम्हारना और आप अपने धर्म पर ऐसे दृढ़ रहे कि कभी विश्वास में तनक भेद न आया नितान्त सब सामग्री और धन वो स्त्री गुरु की भेंट करके दंडवत करके आज्ञा से ब्रज मंडल में आये प्रभात की मंगल आरती के दर्शन गोविन्द देव जी के किया करते और शृंगार आरती केशव देव जी की और राज भोग नन्द गांव का देख कर गोवर्द्धन जी में राधा कुंड पर होते हुए वृन्दावन में आते एक बेर नंद गांव में मानसरवर पर वे अन्न जल रहे सो नन्द गांव के स्वामी नन्द बाबा हैं सत्कार पथिक लोगों का कि जो उनके स्थान पर आवै उनहीं पर उचित है इस हेतु नन्द जी के कुमार सुकुमार भक्त वत्सल महाराज अपने मेहमान को बिन अन्न जल न देख सके बारह बरष के लड़के के स्वरूप से दूध लेकर कटोरे में स्वामी चतुरदास को दिया स्वामी चतुर दास ने उस रूप के फिर देखने के लालच जल

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

मांगा जब बहुत देर तक वह निडर चंचल लड़का पानी न लाया तब बहुत बेचैन वो बिकल हुए भगवत् ने स्वप्न में आज्ञा की कि पानी का कुछ प्रयोजन नहीं तुमको दूध सब ब्रजबासियों से मिलता रहैगा स्वामी ने बिनय किया कि दूध ब्रजबासियों को बड़ा प्यारा है कि यशोदा जीने दूध के हेतु आपको छोड़ दिया था फिर वह लोग दूध किस प्रकार देंगे भगवत् ने आज्ञा की कि निश्चय कर मिलैगा सो स्वामी चतुर दास को दूध सब कोई देने लगे और अब तक स्वामी के बंश में चेले जहां चाहैं ब्रज में तहां दूध लेते हैं सत्य है गुरु सेवा से कौन पदार्थ नहीं मिलता है॥

राघव दास की कथा॥

राघव दास जी परम भक्त भगवत् के हुए अपनी रचना में अभोग दुबरियां रखते थे इस हेतु लोग दुबला कहते थे पर भक्ति भावमें मोटे वो बहुत थे शास्त्रोक्त जो भगवत् धर्म है सो साधना अच्छे प्रकार से की और गुरु चेले का धर्म ऐसा निबाहा जो किसी से न होसके अर्थात् वायु पुराण में लिखा है कि जो मंत्र है वहही गुरु है और जो गुरु है वही भगवत् है जब गुरु प्रसन्न होगा तो भगवत् आपसे आप प्रसन्न वो बशी भूत होजावैगा सो राघव दास जी ने अपने गुरु की ऐसी सेवा करी कि गुरु और भगवत् को संतुष्ट करि लिया और जिसको अपना चेला किया उसको आवागवन से छुड़ा कर भगवत् में मिला दिया और अन्तर बाहर ऐसे बिमल हुए कि कलियुग की काई समीप न आई दिन रात सिवाय भगवत् चरित्र कीर्तन के दूसरा कार्य्य न था कठोर बचन कभी मुख से न निकला नाभा जी ने जो दृष्टान्त उनके निमित्त हीरा का लिखा सो अभिप्राय यह है कि जिस प्रकार हीरा को अहरन पर रखकर घन मारते हैं और वह टटता नहीं उस अहरन में धंसि जाता है जब दूसरा हीरा उसका सजाती सन्मुख करते हैं तो अहरन से बिकल आता है इसी प्रकार राघव दास जी थे कि पतन सरदी वो गरमी दुःख वो सुख संसार का उनके हृदय को चलायमान न कर सका और सत्संग को देख इस प्रकार आमिलते थे कि जिस प्रकार हीरा अपने सजाती को देख कर आमिलता है॥

निष्ठा आठवीं॥

प्रतिमा वो अर्च्चा के वर्णन में पन्द्रह भक्तोंकी कथा है॥

श्री कृष्ण स्वामी के चरण कमलों की शंख रेखा को दण्डवत् करके फिर हंस अवतार को दण्डवत् करता हूं कि ब्रह्म पुरी में प्रगट होकर ब्रह्मा को उपदेश किया शास्त्रों का सिद्धान्त है कि भगवत् की प्राप्ति के

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

हेतु भगवत्ही की पूजा अर्चा जप मंत्र आदि साधन हैं और पूजा अर्चा बिना उसके कि जिसका पूजन करना चाहिये नहीं होसक्ती और बिना पूजा अर्चा भगवत् की प्राप्ति दुरूह है इस हेतु करुणाकर दीन बत्सल महाराज को यह शोच हुआ कि मेरी प्राप्ति जो मेरी पूजा के ऊपर सिद्धान्त ठहरा तो बिना प्राप्ति के पूजा हो नहीं सक्ती तो उद्धार जीवों का किस प्रकार होगा तब आप भगवत् ने जिस प्रकार भक्तों के हेतु अवतार धारण किये थे और करता है उसी प्रकार प्रतिमा रूप होकर इस संसार में प्रगट हुआ सो बारंह प्रतिमा जैसे बद्री नारायण वो रंग-नाथ स्वामी वो गोविन्द देव जी आदि स्वयं व्यक्ति हैं वो जगन्नाथ राय जी वो वरदराज आदि कई प्रतिमा ब्रह्मा वो शिवादिक देवताओं की स्थापित की हुई हैं और कोई मुनीश्वर वो ऋषीश्वरों की स्थापित हैं जब इन मूर्तियों से भी भगवत् ने सब किसी को प्राप्त न देखा तब शालग्राम रूप होकर प्रगट हुए कि अधिक करके सबको प्राप्त हो फीछे जब यह देखा कि यह भी सब किसी को प्राप्त नहीं है तब आज्ञा की कि सोने चाँदी और पाषाण आदि की प्रतिमा बनाकर और बेद मंत्रों के अनुकूल प्रतिष्ठा करके पूजन करैं और सब प्रतिमाओं के पूजन और दर्शन में चमत्कार दिखाया कि जिसने अनन्य होकर आराधन किया सिद्ध पदको पहुंच गया और यहां तक करुणा और दयालुता को विस्तार किया कि जो कोई चित्र लिखवाकर औ भगवत् जानकर पूजन करता है भगवत् को प्राप्त होता है सो इस भगवत् विग्रह पूजन दर्शन को भक्तों ने कई प्रकार पर माना है कि कोई तो उस प्रतिमा को निज स्वयं भगवत् की प्रति मूर्ति जानकर इस प्रकार पर पूजन करते हैं कि पहले मानसी पूजन और फिर उस मूर्ति का और किसी का यह बिश्वाह है कि उस प्रतिमा को पूरण ब्रह्म सच्चिदानन्द घन मानते हैं मानसी पूजन आदि का कुछ प्रयोजन नहीं और तीसरे पथ का यह बचन है कि वास्तव मूर्ति उस सच्चिदानन्द घन की लोगों के ध्यान में शीघ्र नहीं आय सक्ती इस हेतु मुख्य भगवत् स्वरूप में इस मन के जमजानें के निमित्त इस मूर्ति का दर्शन और पूजन करते हैं और सब कोई अपने बिश्वास वो निश्चय के अनुसार मनोर्थ को पहुंचते हैं सो जब कि यह बात प्रगट होगई कि आप भगवत् ने जगत् के उद्धार के निमित्त अपना रूप प्रतिमा स्वरूप से प्रगट किया है तो अत्यन्त उचित हुआ कि भगवत् विग्रह को ईश्वर जानकर दृढ़ बिश्वास से दर्शन और पूजन किया करैं हजारों और करोड़ों का उद्धार प्रतिमाओं के बिश्वास के प्रभाव से हुआ और होता है भागवत का वचन है कि मुकुन्द भगवान की मूर्ति का दर्शन और उस मूर्ति के दर्शन करने वाले का मिलना अथवा मूर्ति के चढ़े हुए फूलों का सूंघना और तुलसी

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

दलका खाना और भगवत् मन्दिर में जाना और दण्डवत् करना यह सब भगवत् लोक को प्राप्त करते हैं नारद पंच रात्र में लिखा है कि शालग्राम जी का स्नान जिस वर्तन में कराया जाता है उसका सातवीं बेर का धोवन गंगा जल के बराबर का माहात्म्य रखता है सो माहात्म्य दर्शन आदि का इसी से विचारि लेना चाहिये कि कितना होगा पर यह पूजन आराधन भगवत् मूर्ति का कुछ ऐसी सहज बात नहीं है कि राह चलते उत्तम पद को पहुंचाय देवै अर्थात् बहुत कठिन है क्या बात है कि शास्त्रों के अनुसार भगवत् एक व्यापक और ब्रह्म स्वरूप हैं जब तक अन्य विश्वास को और भांति भांति के शंका संदेह और मन की कचाई को हृदय से दूर करके निज उस मूर्ति में मन न लगैगा तब तक किस प्रकार मिलना भगवत् का होसक्ता है और वह मन ऐसा लगै कि दूसरी ओर न जाय और न दूसरे की शरण का भरोसा होवै एक वार्ता है कि एक कोई अर्थार्थी को भगवत् पूजन से धन न मिला तो किसी के उपदेश से भगवत् मूर्ति को ताख में रख कर दुर्गा मूर्ति का पूजन करने लगे एक दिन यह विचारा कि धूप जो दुर्गा को देता हूं महिषे भगवत् को पहुंचती होगी इस हेतु भगवत् प्रतिमा के नाकमें रुई ठूंसने लगा उस क्षण भगवत् प्रसन्न हुए और बोले कि जो चाहना हो सो कहो उसने विनय किया कि पूजा से कबहीं प्रसन्न न हुए और इस ढिठाई से बहुत कृपा यक्त हुए इसका क्या कारण बोले कि जब तू पूजन करता रहा तब पत्थरकी मूर्ति जाना करता था और इस समय सब ओर से मन को खींच कर भगवत् मूर्ति को परब्रह्म सच्चिदानन्द घन जाना इस हेतु प्रसन्न हुए एक बाई की कथा है कि गुजरात में भगवत् मूर्ति की आराधन वात्सल्य भाव से करती थी जहां रहती रही उस गांव में भेड़ियों की प्रबलता हुई और कई लड़कों को भेड़िये उठा ले गये यह सुन कर इस बाई की बुधि गई और मूसल हाथ में लेकर सारी रात जागने लगी बहुत दिन यह दशा रही कि दिन को भोग वो रसोई वो शृंगार में भगवत् के रहती वो रात को रखवारी में भेड़िये की भगवत् को बड़ी करुणा हुई और साक्षात् प्राप्त हुए बाई ने जो धुनि झम झमाहट घंघरू आदि आभरण की सुनी तो मूसल उठा कर दौड़ी देखा कि कोई लड़का श्याम सुन्दर मोहनी रूप है पूछा कि तू कौन है उत्तर दिया कि मैं वही ईश्वर परमात्मा हूं कि जिस की मूर्ति को तू बालक जानकर आराधन करती है सो जो तुम को चाहना हो मांगो बाई प्रसन्न होकर बोली कि तू ईश्वर है तो यह वर मांगती हूं कि इस मेरे लड़के को भेड़िया न लेजाय वाह २ बाई यशोदाके कौशिल्या रूप तात्पर्य यह कि विश्वय दृढ़ भगवत् मूर्ति में इसप्रकार का हो कि जो आप भगवत् प्रगट होकर आवैं तब भी अपना इष्ट उस मूर्ति कोही समझता रहै और जो

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

दूसरी ओर मन गया तो प्रेम कहां और स्त्री को जिस प्रकार दूसरे पुरुष की शोभा वर्णन करना वर्जित है इसी प्रकार अपनी सेवा मूर्ति की बराबर और किसी की शोभा मनमें न लावै कि मूर्ति की पूजा प्रकार में यह बात लिखी है और जिस प्रकार कोई सेवक अपने स्वामी को प्राण से अधिक जानता है और सब प्रकार की सामग्री बना करै बार बार उसके आगे धरता है इसी प्रकार अपनी सेवा मूर्ति की सेवा उचित है जैसे ग्रीष्म ऋतु है तो टट्टी या खस खस और पंखा औसुगन्ध औ पानी का छिड़काव औ मन्दिर हवादार औ फूल औ वस्तु अलंकार उत्तम चमक दमक वाले बना करके एक दिन में कई बार भगवत् का शृंगार करै और इसी प्रकार वर्षा ऋतु और जाड़े की ऋतु में सामग्री सब उस ऋतु के अनुकूल किया करै अर्थात् जो कुछ अपने प्राण औ सुख और अपनी शोभा के हेतु जो सजाव औ बनावट सामग्री औ शृंगार की वस्तु हर प्रकार की और खाने पीने के पदार्थ इत्यादि की वार्ता है उसे दस गुणित भगवत् के निमित्त करै और जिस दिन कोई त्यौहार जैसे होली औ दिवाली औ दसेरा औ बसन्त पंचमी आदि अथवा सांझी का समय या सावन के महीने में हिंडोरा झुलाने के चरित्र औ भगवत् जन्म उत्सव जैसे रामनौमी औ जन्माष्टमी औ नरसिंह चतुर्दशी बामन द्वादशी इत्यादि अथवा तीर्थ और व्रत का दिन होय ऐसी धूम धाम के साथ उत्साह औ शोभा की सजावट इत्यादि किया करै कि जिस प्रकार अपने लड़के के विवाह में अथवा पुत्र के जन्म होने के दिन किया करते हैं कहां तक वर्णन किया जाय कि यह बात अपने हृदय की प्रीति से सम्बन्ध रखती है और भगवत् कृपा भाग्य के उदय से होती है यह उत्सव और देश में स्वप्न प्राय वो आश्चर्य है दक्षिण में अथवा मथुरा वृन्दावन वो अयोध्या जी आदि में हैं एक कोई गोसाईं वृन्दावनी ने एक कोई कामवाले के स्थान पर देश पंजाब में बसन्त पंचमी के दिन फूल डोल बनाया वेश्या सब जो कारदार के घर पर उस त्यौहार के इनामके लिये आईं तो उसने गोसाईं जी के संकोच बस राग न सुना और बिदा कर दिया गोसाईं जी ने कहा कि भगवत् के सामने राग क्य नहीं होता कारदार ने पूछा कि क्या भगवत् के सामने भी वेश्या का नाच राग होता है गोसाईं जी ने कहा कि जो भगवत् नाच और राग के प्रेमी न होते तो संसार में यह फैलने क्यों पावता जो कुछ सुख आनन्द का साज वो समाज शुभ वो प्रगट की आखों को जहां तक देखने में आता है सब भगवत् के हेतु है कि मूल सब कार्यों का भगवत् से है से लेकर उपचार जो पूजन का विख्यात है सो भगवत् मूर्ति और मानसी पूजन के निमित्त बराबर हैं भेद इतना है कि मूर्ति पूजन के निमित्त तो सामग्री प्रगट करनी पड़ती है और मानसी पूजन के निमित्त मनमें सब

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

सोलह प्रकार में पहिले आवाहन सो आवाहन उस देवता का करना पड़ता है कि जिसकी कभी कोई दिन पूजा करना हो और भगवत् पूजना का आवाहन इतनाही मानते हैं कि प्रभात अपने स्वामी को जगाना और दण्डवत् करना और श्लोक वो पद जगाने का पढ़ना मान करना दूसरा आसन सिंहासन पर बिछावना सुन्दर बिछावना और मन्दिर की झाड़ू बुहारी करनी तीसरा पाद्य भगवंत् का चरण अंगोछे से पोंछना अर्घ हाथ मुंह धोलाना पांचवां आचमन दतवन कुल्ली कराना छठवां स्नान कराना अंगोछे से शरीर पोंछना धोती कराना सातवां वस्त्र अलंकार से भूषित करना आठवां यज्ञोपवीत स्वर्ण का अथवा पाट का कै सूचका पीली रंग कर पेन्हाना नवां गन्ध अर्थात् सुगन्ध जैसे चन्दन और केसर वो कस्तूरी वो अतर इत्यादि लगाना दशवां पुष्प अर्थात् फूल भगवत् के मुकुट और झूमक आदि में गूथना और माला फूलों की बनाना ग्यारहवां धूप अगर आदि की धूम को देना बारहवां दीप दीपक गोघृत कर्पूरादि से प्रकाशित करना तेरहवां नैवेद्य अर्थात् सब प्रकार के पवित्र मधुर भोजन कराना वो आचमन कराना जल पिलाना कुल्ला कराना हाथ धुलाना अंगोछे से हाथ मुंह पोछना बीड़ी बना कर देना चौदहवां दक्षिणा अर्थात् भेंट आगे धरना पंद्रहवां नीराजन अर्थात् आरती करनी प्रदक्षिणा करना अर्थात् अपने पो को वारि जाना और पुष्पांजलि देना अर्थात् फूल ऊपर बखेरना सोलहवां बिसर्जन और यहां अभिप्राय बिसर्जन से यह है कि पलंग वो तोशक बिछोना वो तकिया चादर वो दुलाई आदि सजना अतर पान वो कुछ भोजन के पदार्थ वो पीने के पलंग के समीप रख देना और सैन के समय भगवत् का चरण पलौटना जाने रहो कि इस सोलह प्रकार का आराधन जैसे जगन्नाथ राय जी वो बद्री नारायण जी अयोध्या वो रंग नाथ वो वृन्दाबन में नित्य सात बेर होता है और कोई जगह पांच बेर और बहुत जगह तीन बेर अर्थात् एक प्रभात काल मंगल आरती द्वितीय मध्याह्न काल राज भोग तृतीय सायं काल नियत आरती सो पूजन और दर्शन करने वाले को सात बेर आराधन अति प्रयोजन है नहीं तो तीन बेर से कम न हो और जाने रहो कि तंत्र शास्त्र वो पुराणों के बचन के अनुसार जो मूर्ति स्वयं व्यक्त जैसे बद्री नारायण वो रंगनाथ स्वामी वो गोबिन्द देव इत्यादि शालग्राम मूर्ति वो पुष्कर वो निम्बखार आदि तीर्थ हैं वे बारह २ कोश तक शुद्ध वो पवित्र करते हैं और जो मूर्ति को देवताओं ने स्थापित किया वे चार चार कोस तक और जिन्हें ऋषीश्वर और सिद्ध लोगों ने बिराज मान किया वे दो दो कोस तक और जो मूर्ति दूसरे लोगों से शास्त्र बिहित मंत्रों के अनुसार स्थित हुई वे एक एक कोश तक और जो मूर्ति केवल घर में बिराज मान

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

कर लेते हैं वे उसी घरको पवित्र और शुद्ध करती हैं भगवत् ने कृपाकरके सब सामग्री को इसजीव के उद्धारके हेतु बनाय दिया कि किसी प्रकार मन चरणारविंद में लगे पर कोई ऐसा कर्म कठोर और नकरे आगे आये रहे हैं कि ऐसे सुगम मार्ग पर भी मन नहीं लगता कोई नगर और ग्राम नहीं कि वहां भगवत् मन्दिर और ठाकुर द्वारा न हो परन्तु पुजारी के सिवाय क्या बात है कि कोई दर्शनों के निमित्त जावै विशेष करिके धन मान और उनमें भी नौकरी करने वाले घूमने और देखने शोभा चकले के हेतु जहां तक कोई ले जावै हजार मन और चरणों से चले जांय और जो कोई ठाकुर द्वारे के चलने को कहै तो मानो दम निकल गया है और घूमते फिरते जो राहमें कोई मन्दिर आजाय तौ यह कहैं कि अजी संध्या होगई और सावकाश नहीं फिर किसी समय दर्शन करेंगे और जो धुना-क्षर न्याय कभी जाने का संयोग हो भी गया तो सारे संसार के झगड़े और बकवाद डिगरी डिस मिस आदि की बातें वहीं चरण हो आईं जब तक बैठे रहैं यही बात रही कौन बात है कि एक बेर भगवत् नाम मुख से निकलै बस जो दूसरा कोई भजन करता होय तो उसको भी अपनी ओर सावधान युक्त करलैं यह वृत्तान्त कुछ सुनाही नहीं है आखों की देखी है कहां तक लिखूं कि ग्रन्थ के विस्तार भयसे और अप्रसन्न होने उनलोगों का कि जो मेरे लिखे को अपने ऊपर समझा लेवैं व्यापमान हैं उनमें पहिले गणना इसमति मन्द की है सो क्या वर्णन करूं कि कर्म तो ऐसे सुन्दर और कामना वह कि निश्चय परम धाम को जावैंगे कौन सङ्गति होगी अरे मन पापी अब भी लजा वो ध्यान करके देख कि मनुष्य शरीर वार २ नहीं मिलता न जानै कौन पुण्यसे यह शरीर मिला है इसदेह को पाय के श्रीनन्द नन्दन स्वामी के चरण कमलों में न लगा तो तुझ से अधिक और कौन भाग्य हीन है बजत रुपया उल्लू करना झूठ सच बोल कर लोगों को वसी कर लेना तुलसी दास जी ने कहा है कि यह ढंग वेश्याओं को भी अच्छे प्रकार आता है और जो यह शरीर संसार से विषय भोगही के निमित्त समझ रक्खा है तो शूकर और कूकर वो गर्दभ आदि को भी सब सुख विषय भोग के प्राप्त हैं मनुष्य शरीर और उन शरीरों में इतना भेद है कि इस शरीर के प्रभाव से भगवत् की प्राप्ति होती है जो भगवत् चरणों में मन लगा तो शूकर और कूकर आदि से भी अधिक अधर्मी वो पापी है क्योंकि उन शरीरों में आगे के निमित्त पाप नहीं लगता केवल अगिले पापों को भोगते हैं और मनुष्य को तो नहीं करने भगवत् भजन के हजारों पाप सुरंड पर चढ़ते हैं तो इसे अब तुझको उस रूप अनूप का चिन्तवन करना उचित है॥

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

कवित्त ॥

मोर पंखा सिर ऊपर राजत केसर खौर दिये रचि भालहि।
अंजन से दोउ रंजित कीने जुखंजन कंज से नैन बिशालहि॥
गोल कपोलन पै कल कुण्डल लोल अनूप प्रताप रसालहि।
रसन मन्द अनन्द को कन्द तू क्यों न भजै नँद नन्द गोपालहि॥ १॥

राजा चन्द्र हास्य की कथा॥

राजा चन्द्र हास्य बाल पने से ऐसे भगवत् भक्त हुए कि महा भागवतों में गिने गये और अबतक उनका यश चांदनी की भांति शास्त्रों में लिखा है व्यास अश्वमेध में लिखा है कि मेधावी नाम राजा केरल देश के घर जब चन्द्रहास्य का जन्म हुआ तो एक भावमें छः अंगुली थीं कि सामुद्रिक में अप लक्षण लिखे हैं जन्म से थोड़े ही दिन बीते पर कोई शत्रु चढ़आया और मेधावी उस लड़ाई में मारा गया चन्द्रहास्य की माता सती होगई और धाय उनको लेकर कुन्तल पुर में चली आई कुन्तलपुर के राजाके वजीर का नाम धृष्ट बुद्धि था उसके घर रहने लगे फिर वहां धाय भी मर गई और चन्द्रहास्य जी अनाथ पांच वर्ष के नगर में फिरने लगे जो कोई कुछ देता उसी से उदर पालन कर लेते एक दिन नारद जी आये एक शालग्राम जी की प्रतिमा देकर आज्ञा की जो कुछ भोजन आदि करो सो इस प्रतिमा को दिखला लेना चन्द्रहास्य जी उस मूर्ति को मुख में रखते और नारद जी की आज्ञा के अनुकूल बर्तते रहे थोड़े दिन में भगवत् की प्रीति होगई एक दिन उसी वजीर के घर में ब्रह्मभोज में ब्राह्मण आये थे उसने ब्राह्मणों से पूछा कि मेरी लड़की को वर कौन और कैसा मिलेगा उन्होंने चन्द्रहास्य जी को बतलाया कि यह लड़का इसका पति होगा वजीर को बड़ी ग्लानि आई कि हाय मेरी लड़की दासी पुत्र की भार्य्या होगी बध करने वालों को बुलाकर कहा कि इस लड़के को जंगल में लेजाकर मार डालो वे सब जंगल में लेगये और वजीर की आज्ञा सुना कर कहा कि अब तुम्हारा रक्षक कौन है चन्द्रहास्य जी को तनक सोच वो चिन्ता अपने बधकी न हुई और कहा कि एक घड़ी मेरे वध में धीर धरो पीछे शालग्राम जी का पूजन किया और बधिकों को संज्ञा वध करने की करके भगवत् ध्यान की समाधि को लगाय लिया भगवत् भक्त रक्षक महाराज ने उन बधिक निर्दयों के हृदय में ऐसी दया डाल दी कि एक अंगुली अधिक जो रही वजीर को दिखलाने को काट ले गये और चन्द्रहास्यजी को उसी जंगल में छोड़ गये चन्द्रहास्य जी तीन दिन तक भगवत् ध्यान में मग्न और आनन्दित फिरते रहे जिस समय धूप लगती तो पक्षी अपने परों से छाया करते और राचि के समय व्याघ्रादिक उनकी रक्षा के निमित्त चौकी देने को आते संयोग वश कलिंद

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

नामे राजा चन्दनावती नगरी का सिकार खेलता उस बन में आया चन्द्रहास जी को अपने घर लेगया उसके कोई लड़का नहीं था इन्ही को अपना बेटा जानकर सब विद्या पढ़ा कर युक्त किया और पीछे राज तिलक देकर संपूर्ण राज्य भार सौंप दिया और आप भगवत् भजन करने लगा यह राजा कलिंद कर देने वाला राज कुन्तलपुर का था जब समय पर कर न पहुंची तो धृष्टबुद्धि वजीर सैना सजि के आया राजा कलिंद सुनकर मिलने के निमित्त गया बड़ी रीति मर्य्याद से नगर में लाया चन्द्रहास जी से भेंट कराई और राज देने का वृत्तान्त सब कहा वह धृष्टबुद्धि चन्द्रहास जी को पहचान कर बड़े शोच में होकर मारने के उपाय में हुआ और यह उपाय सूझा कि चन्द्रहास जी को कुन्तलपुर में भेजकर वहां मरवा डालना चाहिये इस हेतु राजा कलिंद को डर पाया कि तुझको उचित नहीं था बिना हमारे राजा की आज्ञा चन्द्रहास को राज्यतिलक कर देना अब चन्द्रहास को अपने मदन नामा पुत्र के नाम के पत्र सहित कुन्तलपुर भेजता हूं कि वह राज्यतिलक अंगीकार करा देगा सो चन्द्रहास जी पत्री समेत चले और कुन्तलपुर के निकट उसी वजीर के बाग में ठहरे स्नान पूजा करि भगवत् प्रसाद भोजन करिकै पथि श्रम से सोगये संयोग बस उसी वजीर की लड़की विषया नामा बाग की शोभा देखने को आई सखियों से अलग होकर जहां चन्द्रहास जी सोते थे तहां पहुंची चन्द्रहास जी की शोभा देखते ही तुरन्त आशक्त होगई और भगवत् से प्रार्थना की कि यह पुरुष मेरा पति होय फिर जो निगाह उसकी चन्द्रहास जी के कमर की ओर गई तो एक पत्री कमर में देख कर निकाल ली और पढ़ा अर्थ उसका यह था कि हे मदन चिट्ठी ले जाने वाले को तुरन्त बिष दे देना जो बिलम्ब होगा तो हमारे क्रोध का हेतु होगा वजीर की लड़की ने पढ़कर शोच किया कि हाय यह महा मनोहर वृथा बिन अपराध मारा जायगा और फिर यह बिचार किया कि मेरा बाप बहुत दिनों से सुन्दर पुरुष के ढूंढ़ने में मेरे निमित्त था और चलती बेर बहुत शीघ्र बिवाह कर देने को मुझ से बचन देगया था सो इस पुरुष को मेरे निमित्त भेजा है और जल्दी में लिखा है इस हेतु अक्षर या जो बिष के पीछे लिखना था सो भूल गया सो अक्षर बना देना चाहिये सो अपनी आंखों के काजल की स्याही से बनाकर पत्री चन्द्रहास जी की कमर में रखकर चली आई चन्द्रहास जी मदन के पास पहुंचे और पत्री दी वह बहुत प्रसन्न हुआ और उसी घड़ी चन्द्रहास का बिवाह अपनी बहिन के साथ कर दिया जब वजीर ने अपने बेटे के पत्र से यह वृत्तान्त सब जाना तो अत्यंत खिन्न मन वो क्रोध युक्त हुआ और दुःख के दुःख से उसी क्षण चलके अपने घर आया अपने लड़के को धिक्कार आदि

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

कहने लगा मदन उसके लड़के ने उसकी पत्री आगे धर दी और अपना कुछ अपराध नहीं जो लिखा सो किया वजीर ने अपने मन में यह निश्चय किया कि लड़की विधवा रहै तो रहै पर चन्द्रहास्य का वध करना उचित है इस हेतु वध करने वालों को बुलाकर आज्ञा दी कि प्रभात समय जो कोई दुर्गाभवन में आवै उसको मारडालना और चन्द्रहास्य जी से कहा कि हमारे कुल में विवाह के पीछे दुर्गा पूजन उचित है तुम प्रभात दुर्गा पूजन कर आवो वजीर दुर्बुद्धी ने तो यह उपाय रचा और भगवत् की यह इच्छा भई कि कुन्तलपुर का राज्य भी चन्द्रहास्य जी को मिल जावै इस हेतु कुन्तलपुर के राजा के मन में ज्ञान दिया कि राज्य और शरीर दोनों नाशवान हैं और भगवत् भजन से अधिक दूसरा कोई काम नहीं आता सो यह राज्य तो वजीर का लड़का चन्द्रहास्य जो कि लायक और योग्य है देना चाहिये और जो कुछ वयक्रम शेष है सो भगवत् भजन में लगाना उचित है प्रभात को जिस प्रकार से चन्द्रहास्य दुर्गा पूजन को चले तो राजा ने मदन जो वजीर का लड़का था उसे बुलाकर कहा कि हम राज्य तिलक चन्द्रहास्य को देते हैं उस को शीघ्र लाओ वह इस आनन्द से कि राज्य अपने घर में आता है शरीर में न समाया और चन्द्रहास्य जी के पास आकर उनको तो राजा के पास भेज दिया और दुर्गा भवन में पूजा करने को गया राजा ने चन्द्रहास्य जी को तुरन्त राज्य तिलक कर दिया मदन नाम वजीर का बेटा जब दुर्गा भवन में पहुंचा तो मारा गया और वजीर मदन का मारा जाना सुनकर शिर पर धूल डालता हुआ उसके शरीर के पास पहुंच कर पत्थर से शिर मारकर मर रहा यह वृत्तान्त चन्द्रहास्य जी ने सुना और दुर्गा भवन में आकर दया और करुणा से विह्वल होगये प्रथम उन सब के जीने के हेतु दुर्गा जी की स्तुति की जब कुछ उत्तर न पाया तो तरवार निकाल कर अपने को घात करने को उद्यत हुए दुर्गा महारानी प्रगट हुईं हाथ पकड़ लिया और कहा कि दुष्टबुद्धि सठ दुष्ट सदा तुम्हारे मारने के उपाय में रहता था कि उस कर्म के फल से पुत्र सहित मारागया अब जिला देना उचित नहीं चन्द्रहास्य जी ने बिनय किया कि सत्य है पर आपको यह भी तो सामर्थ्य है कि उनके मन को निर्मल कर के भगवत् भक्त कर देवें कि फिर किसी के साथ दुष्टता न करैं दुर्गा महारानी प्रसन्न हुईं दोनों को जिला दिया वजीर ने जो प्रताप भगवत् भक्ति और भक्तों का देखा तो विश्वास युक्त हुआ और चन्द्रहास्य जी के चरणों में बड़ी प्रीति से गिरकर भगवत् शरण होगया चन्द्रहास्य जी ने तीनि सौ बरस राज किया भगवत् भक्ति का प्रचार चलाया कि सब देश भक्त होगया जब राजा युधिष्ठिर ने अश्वमेध यज्ञ किया और घोड़े को चन्द्रहास्य जी ने पकड़ लिया तो भगवत् श्री कृष्ण महाराज

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

ने समझा कि भक्त को कोई जीत न सकैगा तब अर्जुन से मेल कराके घोड़ा छुड़ा दिया पीछे चन्द्रहास्य जी अपने बड़े पुत्र को राज्यतिलक देकर आप राजा युधिष्ठिर के यज्ञ में आनि मिले अब बिचार करना चाहिये कि कैसी शिक्षा भक्तों के निमित्त है पहिले तो प्रतिमा निष्ठा का फल दूसरे यह कि भगवत् भक्त मृत्यु से भी नहीं डरते तीसरे यह कि कोई कठिन आपत्ति के आने पर भी भगवत् भजन नहीं छोड़ते चौथे यह कि कोई उनके साथ दुष्टता करता है उसको भी सुखही देते हैं सिवाय इसके यह बात तो विख्यात है कि भगवत् अपनी प्रसन्नता से अधिक मानते हैं सो चन्द्रहासजी से आप यज्ञ के घोड़े को छुड़ाया जाय के मेल कराया बल केा कुछ न चल ने दिया नहीं तो एक क्षण में करोड़ों ब्रह्माण्ड लों सृष्ट और लयकर सक्ते हैं॥

कथा नाम देव की॥

नाम देव चेले ज्ञान देव जी के निर्गुण स्वामी संप्रदा वाले संसार में भक्ति का प्रकाश करने को सूर्य्य के सदृश हुए बलि पन में अपने भक्ति भाव से भगवत् को वशि कर लिया भगवत् अंश से उनका जन्म है उसका वृत्तान्त यह है कि पण्ढरपुर में वामदेव नामे जातिका छीपी भगवत् भक्त था उसकी लड़की बाल बिधवा होगई जब बारह बरस की हुई तो कृष्ण देव ने भगवत् सेवा पूजन की शिक्षा करके कहा कि जो हृदय को प्रीति होगी तो तेरा सब मनोर्थ वो चाहना भगवत् पूरण करदेगा उस लड़की ने उसी दिन से अति भक्ति वो बिश्वास से ऐसी पूजा अंगीकार करी कि थोड़ेही दिनों में भगवत् प्रसन्न होगये यहां तक कि जवानी के आने से जो उसको चाहना काम की हुई तो वह भी भगवत् ने पूरण करी और उस लड़की के गर्भ रह गया सारे संसार वो ज्ञाति भाई में यह बात विख्यात हुई और लड़की से पूछा कि यह क्या अभाग्यता तेरी है उसने कहा कि तुमने कहा था कि सब चाहना तेरी भगगत् से प्राप्त होगी सो जो कुछ हुआ वह भगवत् से हुआ वाम देव इस सुख समाचार से ऐसे आनन्द हुए कि शरीर में न समाये और जब लड़का उत्पन्न हुआ तो सब धन संपत्ति को उसके जन्म उत्सव में लुटादिया नाम देव नाम रक्खा और प्राणसे अधिक प्यारा जाना वे बिश्वासी वा और आयोग्यों के शंका वो संदेह दूर करने के हेतु पुराणों की कथा आदि से अलग भगवत् का वचन स्मरण हो आया भागवत के दूसरे स्कन्ध में लिखा है कि निष्काम अथवा कामना अथवा मुक्ति के हेतु मुझको दृढ़ भाव से जो सेवन करते हैं तो आप मैं सब कामना पूरण करता हूं एकादश में लिखा है कि अपने भक्तों को मुक्ति पर्य्यंत सब देता हूं संसारी कामना की तो कितनी बात है और इसको अलग रहने देव जब कि भगवत् अपने भक्तों के हेतु अपना निज धाम छोड़ करके चले आते हैं और ऐसे शरीर बना लेते हैं कि जो बुद्धि वो बिचार में न आसके तो गो किसी अपने भक्त काम सुख की

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

चाहना करने वाले की कामना पूरण करी तो क्या आश्चर्य है जो भगवत् के अवतार वो गोपिका वो कुब्जा आदि के चरित्रों पर विश्वास है तो नामदेव का जन्म होना निज भगवत् से सर्वथा सच और युक्त है कथा संक्षेप जन्महीं से नामदेव जी को भगवत् का प्रेम हुआ जब दो चार वर्ष के हुए तो खेल भगवत् आराधन के खेलते अर्थात् भगवत् मूर्ति बना कर आभषण वस्त्र पहिना कर जिस प्रकार उनका नाना सेवा आरती किया करता था तब यह कहता था कि यह भगवत् मूर्ति मुझको दे देव और वह बालक जान कर बहाना कर दिया करता एक दिन कहा कि मैं किसी गांव जाता हूं चार दिन में आऊंगा तुम सेवा पूजा कीजियो जो भगवत् ने तुम्हारा भोग लगाना अंगीकार कर लिया तो सेवा तुम को सौंप देंगे नामदेव जी बहुत प्रसन्न हुए और दिन गिनने लगे नाना से नित्य जाने का दिन पूछा करते और बहुत अपने मन में आनन्द हुआ करते जब वह दिन आया उनका नाना सब रीति भगवत् सेवा की समझा कर चला गया नामदेव जी को संध्याही से प्रेम हुआ और जब राज के आने में विलम्ब हुआ तो आप बन में जाकर लाये फिर माता ने अनुशासन किया कि दूध पिलाने का समय आगया इस हेतु दूध बहुत शीघता से उष्ण किया और सुगन्ध जो मिश्री मिलाकर बड़े प्रेम और उत्साह से कटोरा भगवत् के आगे ले गये पर यह डर मनमें रहा कि मुझसे कुछ अपराध न होगया हो भगवत् के सामने हाथ जोड़ कर बड़ी दीनता से बिनय किया महाराज दूध है मुझको अपना दास जान कर पान कीजिये और अपने दास को परम आनन्द दीजिये दूध न पिया नामदेवजी लड़के थे यह बात जानते थे कि भगवत् भी जैसे सब लड़के दूध पिया करते हैं पीते हैं इस हेतु भगवत् के चुप रहने से बहुत उदास हुए और सामने से अलग होकर बहुत शोच करने लगे जब निरास हुए तो रोने लगे और कहा कि महाराज अच्छे प्रकार गरम किया है मिश्री बहुत डाली है जब न पियें तो रोते रोते बिना भोजन किये भूखे प्यासे पड़े रहे इसी प्रकार दो दिन बीते तीसरे दिन कि उसके भोर उनका नाना आने वाला था यह बिकलता हुई कि दूध न पियें तो सेवा मुझ को न मिलेगी इस हेतु दूध बना कर सामने लेगये कई बार बिनय किया नहीं माने तब छुरी निकाल कर अपना गला काटने पर प्रकर्ष हुए भगवत् ने जो यह दृढ़ बिश्वास देखा तो एक हाथ से उनका हाथ पकड़ लिया और दूसरे हाथ से कटोरा दूध का उठा कर पीने लगे जब कटोरे में दूध थोड़ा रहा तब नामदेव जी ने कहा नित्य भर भर कटोरा पीते हो मैं तीनि दिन का भूखा हूं कुछ भी तो छोड़ो भगवत् हंसे अपना अधरामृत युक्त महा प्रसाद दिया निश्चय स्कन्ध पुराण का बचन है कि भगवत् न काष्ठ की

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

मूर्ति में हैं न पाषण की न दूसरी जगह केवल इस पुरुष के विश्वास में बिराज मान हैं इसहेतु विश्वास दृढ़ चाहिये भोर को नामदेव जी का नाना जब आया तब सब वृत्तान्त सुना तो परम आनन्द में मगन होगया और कहा कि हमको भी तो दिखलाओ नामदेव जी उसी प्रकार कटोरा दूध का संवार कर लेगये कुछ बिलम्ब हुआ तो वही चांकू दिखलाया कहा कि मेरे पास है भगवत् ने तुरन्त पान किया वाह वाह भगवत् वत्सलता और प्रेम की बिभावारता कि जिसको वेद नेति नेति कहते हैं और शिवादिक जिस हेतु भांति भांति की समाधि लगाते हैं वह अपने भक्तों की भक्ति और प्रीति के ऐसा बस में है कि उनके मनोर्थ के अनुकूल सब कुछ करता है इस बात की ख्यात होगई बादशाह ने बुला कर कहा तुमको ईश्वर मिला है सो हम को भी दिखाओ अथवा अपनी सिद्धाई दिखादेव नामदेव जी ने कहा हमारे में सिद्धाई है तो तो छीपी की आजीविका क्यों करते और दिन भरते जो कोई साधु सन्त आजाता है आध सेर आटा बांट खाते हैं कि उसके प्रभाव करके आपने बुलालिया है बादशाह बोला कि तेरी कपट की बातें कुछ नहीं सुनते गऊ मरी है इस को जिलादेव नहीं तो तुम को कातल कर देंगे नामदेव जी ने एक विष्णु पद बनाया पङ्क्ति तुक यह है ॥ बिनती सुन जगदीश हमारी ॥ तुरन्त सुनतेही उस विष्णु पद के गऊ जी उठी और बादशाह चरणों में पड़ा कहा कि द्रव्य वो गांव परगना जो आज्ञा हो नामदेव जी बोले कि हमको कुछ प्रयोजन नहीं बिदा मात्र का प्रयोजन है बादशाह ने एक पलंग सोने का जड़ाऊ भेट किया उसको मूंड़ पर रख कर चले और बादशाह के भृत्य लोग जो साथ आये थे सब को बिदाकर दिया राह में एक नदी थी उसे पलंग को डाल दिया बादशाह ने सुन कर उसी पलंग को मांग भेजा इस बहाने कि उस नमूने का बनवाया जायगा नामदेव जी ने उस पलंग से उत्तम उत्तम पलंग अगणित नदी से निकाल कर डाल दिये और आदिमियों से कहा कि अपना पहिचान कर ले जाव तब तो बादशाह की बुद्धि गई आकर चरणों में पड़ा नामदेव जी ने कहा कि फिर किसी साधु को क्लेश न देना और न कभी हम को बुलाना एक दिन पण्ढरपुरके ठाकुर द्वारे में दर्शन को गये बड़ी भीड़ लोगों को देखकर दर्शन में दुचिताई रही यह विचार करके जूती कमर से बांध कर मन्दिर में गये संयोग वश किनारा जूती का किसी ने देख लिया मारते मन्दिर से बाहर कर दिया नामदेव जी मन्दिर के पीछे बैठे रहे और भगवत् से बिनय करी कि दण्ड किया तो उचित किया पर मुझको आप के सिवाय कुछ ठिकाना नहीं और न कुछ चाहना है जो दर्शन और लोगों को है तो कान मेरे कीर्तन की ओर हैं यह बिनय करिके कीर्तन

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

करने लगे और बिष्णु पद व्यंग लिये और अपनी हिनाई को भी गावा, पहिली तुक यह है ॥ हीन है जाति मेरी यादव राय ॥ भगवत् सुनतेही करुणा से बिह्वल होकर मन्दिर को जड़ से फेरि के द्वार उसका नामदेव जी की ओर कर दिया यह चरित्र देख कर सब चकित हो रहे और महन्त आदि नें चरणों में पड़ कर अपराध क्षमा कराया अब तक द्वार उस मन्दिर का दक्षिण मुंह है एक दिन अचानक नामदेव जी के घर आगि लग गई तो जो वस्तु घर से अलग थी आग में डालने लगे और बिनय किया कि सब को अंगीकार करिये भगवत् बहुत हंसे और कहा कि क्या आग में भी मुझको जानता है कहा कि यह घर आपका है दूसरा कौन समर्थ कर सक्ता है भगवत् ने प्रसन्न हो कर आप नवीन छप्पर ऐसा सुन्दर छादिया कि किसी ने न देखा था लोगों ने पूछा कि किसने यह छाया है और मजूरी क्या लेता है और नामदेव जी ने कहा मजूरी बड़ी कड़ी है अर्थात् तन मन चाहता है और पहिले यह मजूरी ले लेता है तब दिखाई देता है पण्ढरपुर में एक साहूकार ने तुला दान किया सारे नगर में सोना बहुत बांटा किसी के कहने से नामदेव जी को भी बुलाया नामदेव जी ने दो बार कहला भेजा हमको द्रव्य का प्रयोजन नहीं तीसरी बार गये साहूकार ने कहा कि कुछ थोड़ा आप भी अंगीकार करें कि मेरा भला होय नामदेव जी ने मन में सोचा कि इस का गर्व धन का दूर होगा तब भला होगा इस हेतु एक तुलसीदल पर रा अक्षर कि भगवत् का नाम है लिख कर उसके बराबर सोना मांगा पहिले साहूकार ने जैसे बलि बावन जी से कहा उसी प्रकार तोला पीछे घर का वो औरों से मांग मांग कर धरा बराबर न तुला तब लज्जित हुआ नामदेव जी ने बिचारा कि धन का गर्व हो दूर हुआ पर पुन्य इसने किया है तिसका गर्व दूर किया चाहिये बोले कि जो तू ने अपनी अवस्था भर पुण्य किया है सो भी संकल्प कर दे क्या जानें बराबर होजाय साहूकार ने वह भी संकल्प कर दिया जब तराजू में बराबर न तुला तो संकुचित हो कर कहने लगा कि जो है सोई ले जाव नामदेव जी बोले अरे अज्ञानी यह धन हमारे कौन काम का है एक भगवत् भक्ति धन चाहिये कि जिसके आधीन सब देवता और सब ऐश्वर्य दोनों लोक के हैं साहूकार लज्जित होकर बिश्वास युक्त भगवत् भक्त होगया इसके पश्चात भगवत् ने एकादशी व्रत की परीक्षा के हेतु एक अति दुर्बल ब्राह्मण के रूप से आय नामदेव जी से भोजन मांगा उन्होंने एकादशी व्रत जान कर न दिया ब्राह्मण बोला भोजन बिना अब मेरा प्राण निकला चाहता है शीघ्र भोजन देव नामदेव जी कहैं कि आज एकादशी को न देंगे इसी हठा हठी में दोनों झगड़ पड़े शोर गुल हुआ लोग बटुर आये समझे कह

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

रसोई बनवाय के खिवा देव नामदेव जी ने न माना संध्या के समय ब्राह्मण मर गया लोगों ने कहा नामदेव जी को हत्या ऊई नामदेव जी को कुछ भय न था चिता में ब्राह्मण की लोथ समेत बैठ कर लोगों से कहा आग लगा देव इतने में भगवत् हंस पड़े बिश्वास भर नामदेव जी के प्रसन्न ऊए लोग यह चरित्र देख कर नामदेव जी के चरणों में पड़े नामदेव जी के घर पर एकादशी को जागने में हरि भक्तों को जल तृषा ऊई बावली में एक बड़ा प्रेत रहता था उस डर से कोई न जा सका नामदेव जी कलश लेकर आधीरात को वहां गये वह प्रेत बिकराल वो भयंकर रूप आया नामदेव जी ने यह पद ताल हाथ लेकर किया तुक उसका यह है ॥ ए आए मेरे लम्बक नाथ ॥ धरती पांव स्वर्ग लौं माथो जोजन भर २ हाथ भगवत् उसी भूत में प्रगट ऊए और वह भूत भी नामदेव जी की कृपा से भगवत् धाम को पहुंचा नामदेव जी एकादशी के जागरण में ऐसे दृढ़ प्रेमी शिरोमणि ऊए कि अब तक रीति है कि जहां जागरण एकादशी का होता है पहिले नामदेव जी का पद मंगला चरण में गाते हैं ॥

अल्ह जी की कथा ॥

अल्ह जी परम भगवत् भक्त ऊए तीर्थ यात्रा में कहीं एक राजा के बाग में उतरे सेवा पूजा को किया आम के नीचे बागवान से आम मांगा भगवत् को भोग लगाने को उसने कहा जो आम खाये बिना नहीं रहा जाता है तो तुम तोड़ लेव बस तुरन्त आमकी डाली सब ऐसी झुक गई कि आम सिंहासन पर वो भूमि पर आय गये आम ठाकुर जी को भोग लगाया उस बागवान ने जाकर राजा से यह चरित्र कहा राजा दौड़ा आया चरणों में पड़कर विनय किया आप के चरणों के प्रभाव से मैं और यह बाग वो सब देश पवित्र ऊआ अब कृपा विशेष करना चाहिये अल्ह जी ने दया करिके उसको भगवत् शरण वो भक्त कर दिया जाने रहो भगवत् भक्ति और भक्तों का यह प्रताप है कि शिव ब्रह्मादिक जिनको चरणों में अपना मस्तक झुकाते हैं जो एक इन्द्र झुका तो क्या आश्चर्य है ॥

कथा पृथ्वीराज की ॥

पृथ्वीराज राजा बीकानेर बेटा कल्याणसिंह के भगवत् भक्त ऊए कवित्त दोहा भाषा में श्लोक संस्कृत में रचना करिके अति प्रेम से कीर्तन किया करते थे पिंगल इत्यादि के बड़े ज्ञाता वो काव्य बड़ी ललित उनकी थी भगवत् सेवामें बड़े निष्ठ थे और त्यागी इन्द्री सुख के ऐसे थे कि अवस्था भर स्त्री की ओर नहीं देखते थे कहीं परदेश में संयोग वस गये थे तो मन्दिर में सेवा मूर्ति का ध्यान मानसी करते थे दो दिन ध्यान में वह स्वरूप न देखा तीसरे दिन दर्शन मानस में ऊआ पर वृत्तांत बूझने के

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

हेतु साड़नी दौड़ाई तो राजमंत्रियों ने पत्री लिखी कि मन्दिर की मरम्मत होने से दो दिन श्री जी दूसरे स्थान में थे मन्दिर में नहीं गये राजा का तब संदेह दूर हुआ और बड़े आनन्द हुए राजा ने अपने मन में मथुरा जी में देह त्यागने का प्रण किया था इस वृत्तान्त को बादशाह ने सुनकर द्वेष करिके उनको काबुल की लड़ाई पर तैनात कर दिया राजा को इस याचा से एक एक दिन कल्प के समान बीतते थे क्योंकि अवस्था जीने की थोड़ी आय रही थी जब दिन उनके प्रणका निकट आया तो भगवत् ने उस दिन राजा को जनाय दिया तुरन्त साड़नी पै बैठकर मथुरा जी में आये और प्रण पूरण हुआ शरीर त्याग करके परम धामको पहुंचे जय जय की धुनि सारे संसार में पहुंची और निर्मल यश भगवत् भक्ति और भक्तों का संसार में विख्यात हुआ एक वृत्तान्त राजा का और भी तीसरे तरजुमा करने वाले ने लिखा है कि एक बेर विदेश याचा में संयोग वश जंगल में वास हुआ और वहां लश्कर को कुछ सामा खाने पीने की न मिली भगवत् ने भक्त वत्सलता करिके एक नगर बड़ा भारी प्रगट कर दिया कि सब प्रकार से सुख सारे लश्कर को हुआ॥

धना भक्त की कथा॥

धना जाति के जाट परम भक्त हुए उनके भक्त होने का वृत्तान्त यह है कि जब लड़के थे तब उनके घर एक ब्राह्मण भगवत् भक्त आया भगवत् की सेवा पूजा करता था धना भक्तने उसको कहा कि मूर्ति हमको भी देव कि जैसी तुम सेवा पूजा करते हो हम भी करें पहिले बहाना किया जब हठ देखा तो एक छोटासा पत्थर शालग्राम दे दिया धना जी ने बड़ी प्रीति से सिर व नेत्रों से लगाया सेवा प्रारंभ की पहिले आप स्नान किया और फिर भगवत् को स्नान कराकर तालाब की मिट्टी का तिलक लगाया और तुलसीदल के स्थान पर हरी पत्ती चढ़ाई और बड़ी प्रीति और हर्ष से साष्टांग दण्डवत् की जब उनकी माता रोटी लाई तो भगवत् के आगे रखकर और आंखें बन्द करके बैठ गये बड़ी देर तक बाट जोहते रहे कि भगवत् भोग लगावें पर जब न खाई तब उदास वो दुखित होकर बार बार हाथ जोड़े तब फिर लड़कई हठ कर करके बहुत प्रार्थना किया तो भी न भोजन किया तो रोटी को तालाब में डाल दिया और आप भी बे अन्न जल रह गये कई दिन इसी प्रकार बीते और मुख प्यास से विह्वल होकर मरने के निकट पहुंचे भगवत् को द्रव हुआ प्रगट होकर रोटी खाना प्रारंभ किया जब आधा भोजन किया तब धनाजी बोले क्या सब तूही खाय जायगा कुछ मुझको भी देगा कि नहीं भगवत् ने हंस कर बची रोटी धना को दी इसी प्रकार नित्य की व्यवस्था होगई धना जी ने जो परम मनोहर रूप भगवत् का देखा तो

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

ऐसी प्रीति हो गई कि एक क्षण उस रूप को ध्यान में अथवा प्रगट में न देखें तो बेचैन होजाते भगवत् ने देखा कि जिसकी रोटी बेपरिश्रम खाते है उसकी टहल भी कुछ किया चाहिये कि बिना परिश्रम किसी का खाना अच्छी बात नहीं सो धना भक्त से पूछकर गऊ चुगाय लाया करते एक बार वही ब्राह्मण आया सेवा पूजा धना को करते कुछ न देखा कारण पूछा धना जी ने कहा कि महाराज भली पूजा दे गये थे कि कितने दिनों मुझको भूखों मारा अब बड़ी कठिनता से ऐसा सीधा हुआ है कि गाय तक चुगाये लाता है ब्राह्मण को आश्चर्य हुआ कहा कि हमको भी दिखला धना जी ने ब्राह्मण को भी दर्शन कराया वह ब्राह्मण भी कृतार्थ होगया औ धना भक्त जी भगवत् की आज्ञा से काशी जी में रामानन्द जी से मंत्र उपदेश लेकर गुरु की आज्ञा के अनुसार घर में आय के साधु सेवा में लीन रहे एक दिन खेत बोने को गेहूं लिये जाते रहे साधु आय गये वह गेहूं साधु सेवा में लगा दिये माता पिता के भय से खेत को जैसा बोने पर बना के छोड़ देते हैं वैसा ही करके छोड़ दिया भगवत् ने बिचार के सब से अच्छा उस खेत को जमाया कि सब लोग बड़ाई करने लगे धना जी ने लोगों की बड़ाई करना खेत के जमने की हंसी ठट्ठा समझा एक दिन जो खेत की ओर गये तो कहना सब का सत्य देखा भगवत् की कृपा के बार बार जाके प्रेम बड़े आनन्द में डूब गये और अधिक भगवत् और भक्तों की सेवा में लौलीन हुए औ राजा इन्द्र तू कैसा ज्ञान मान वो बुद्धिमान है कि वज्र के बनाने के हेतु दधीच ऋषेश्वर को दुःख दिया मेरे इस मन अभंगे को क्यों न उठा कर ले गया कि कठोर वज्र से भी कठोर है जो यह कथा धना भक्त की कह कर और करुणा और भक्त वत्सलता और शिक्षा वारता परम दयाल की सुन कर तनक भी नरम नहीं होता॥

कथा देवा की॥

उदय पुर के निकट एक मन्दिर रूप चतुर्भुज स्वामी का है वहां का पुजारी देवा नाम ब्राह्मण दृढ़ हुआ एक दिन जब राना उदय पुर का गद्दी का मालिक आय गया और देवा रात को सैन के समय भगवत् को सैन कराके माला फूलों की उतारी तो अपने सिर पर लपेट कर कपाट मन्दिर के बन्द कर चुके थे देवा ने वह माला उतार कर जब राना मन्दिर में पहुंच गया राना के गले में डाल दी संयोग बस एक केश सुपेद उस माला में राना को देख पड़ा देवा पुजारी से पूछा क्या भगवत् के केश सेत होगये देवा ने कहा हां महाराज सुपेद होगये राना ने कहा हम भी प्रभात देखेंगे यह कहकर चला गया देवा जी के मुख से जो यह बात निकल गई तो भयभीत होकर सिवाय भगवत् के और दूसरा

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

रक्षक न देखा बहुत दुःखी होकर कहने लगे कि हे हृषीकेश हे स्वामिन् आप की भक्ति मेरे में है न सेवा पूजा में विश्वास पर आपके चरण कमलों से सिवाय कोई शरण वो रक्षा का स्थान भी नहीं कि जहां जाऊं अब मेरी लज्जा आपही को है चाहो सो करो भगवत् यह विनती अपने भक्त की सुन कर करुणा युक्त होकर उसी क्षण अपने श्री अंग पर श्वेत केश धारण कर लिये प्रभात को देवा ने मन्दिर के कपाट खोले और श्वेत केश श्री अंग पर देखतेही भगवत् के करुणा वो दयालुता के प्रेम में ऐसे बे सुधि होगये कि कुछ सुधि बुधि शरीर की न रही पीछे सुधि भई भगवत् के करुणा दीन वत्सलता आदि गुणों को और अपनी विमुखता को सोचते भक्ति और भाव में छके हुए भगवत् की महिमा अपने मन में वर्णन कर रहे थे कि राना आया और भगवत् के शरीर पर केश सुपेद देख कर ध्यान में आया कि इस ब्राह्मण ने किसी के आंख लींगा दिये हैं परीक्षा के हेतु एक केश खींचा भगवत् को क्लेश पहुंचा और नासिका को चढ़ाई फिर वह केश टूट गया और नस्तिर की धार इस वेग से निकली की राना के कपड़ों तक पहुंची राना यह वृत्तान्त देख मूर्छा खाकर गिर पड़ा एक पहर तक अचेत पड़ा रहा फिर उठ कर देवा के चरणों में पड़ा और क्षमा करने अपराध के निमित्त विनय वो प्रार्थना की तब आज्ञा हुई कि अबसे राना के वंश में जबतक कुंअर रहे तब तक दर्शन को मन्दिर में आवें और जबसे राज तिलक होय तब से मन्दिर में न आवें जावें सो अब तक यह रीति बर्तमान है ॥

कथा दो लड़कियों की ॥

एक लड़की किसी जिमीदार की और दूसरी राजा की भगवत् कृपा के प्रभाव करिके उस पदवी और भक्ति को पहुंची कि जिनकी कथा अब तक भक्तों के मुखसे होती है वृत्तान्त यह है कि एक बेर राजा के गुरू आये वे दोनों लड़कियों ने भगवत् मूर्ति मांगी उन्हों ने बालापन देखकर एक टुकरा पत्थर का देकर बाल शिलकी बतला दिया और इतना उपदेश कर दिया कि मन लगा कर सेवा पूजा करती रहो संसार समुद्र से पार होजाओगी वे दोनों बड़ भागिनी अत्यन्त विश्वास और प्रेम से सेवा पूजा करने लगीं यहां तक कि भगवत् का रूप उन्हों के हृदय में प्रकाश होत हुआ इतनी कथा दोनों की एकट्ठी वर्णन हुई अब अलग अलग लिखी जाती है जिमीदार की लड़की का चचा अपने भाई से अर्थात् उस लड़की के बाप से शत्रुता रखता था वह उसपर चढ़ि आया गांवको लूट लेगया उस लूटने में उस लड़की की सेवा की मूर्ति भी गई वह लड़की अत्यन्त विकल भई वो सारा संसार उसको अंधियाला होगया और जी

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

में प्राण पीड़ा होगई जब सोना खाना पीना सब छूट गया तब सबके कहने से अपने चचा के पास जहां वह अपने चौबारे में बैठा था और गांवके सब आदमी भी थे वह लड़की गई और मूर्ति मांगी वह बोला पहिचान कर लेजा किसी ने कहा तू टेरदे जो ठाकुर को तेरे साथ प्रीति होगी तो आप चले आवेंगे वह लड़की कि रोते २ आंखें सूज आई थीं वो गला पड़ गया था बड़े कष्ट से दीन होकर पुकारी हे शिल्पली महाराज अपनी दासी को क्यों छोड़ आये कहां हो भगवत् सुनतेही शब्द के तुरन्त आकर उस बड़भागनी की छाती से लिपट गये और उसको प्राण दान देकर जिवाय लिया और दोनों गांव वालों को निश्चय अपनी भक्ति का किया और राजा की लड़की भगवत् प्रेम में ऐसी रंग गई कि रंगीन होगई परन्तु एक आदमी भगवत् विमुख के साथ उसका विवाह होगया था वह लेजाने को आया उसको बड़ी चिन्ता भगवत् सेवा की हुई नितान्त जब माता ने विदा कर दिया अपने प्राण प्रीतम को डोला में बैठा लिया और कोई लौंड़ी बांदी को साथ न लिया राहमें वह विमुख पास आया और बोलने बोलाने की चाह से बोलाया वह कुछ न बोली तब उसने कहा तुम क्यों नहीं बोलती हो और तुमको कौन दरद है कि उसका उपाय किया जाय उस लड़की ने उत्तर दिया कि तुमको चाहना हमसे बोलने की है तो भगवत् भक्ति अंगीकार करो नहीं तो हमको स्पर्श न करो उसको क्रोध आया और पिटारी भगवत् सेवा की नदी में डाल दिया यह लड़की अति व्याकुल वों स्वामी के वियोग से दुखित हुई और अन्न जल विष होगया उस विमुख ने उसको प्रसन्न करने को अनेक उपाय रचे पर कुछ काम न आया अपने घर में आया तब राह का यह वृत्तान्त सब जना दिया स्त्रियों ने बहु भांत समझाया और सास अपने हाथ से भोजन कराने लगी परंतु उस बड़भागी का मन भगवत् चरणों में दृढ़ लग रहा था किसी की कुछ न सुनी और न कुछ खाया पिया जब सब उपाय करके सास इत्यादि हारीं तब सब उसीनदी पर आये जहां पिटारी को पानी में डाल दिया था और वह बड़भागी करुणा से भरी हुई रुदन करती हुई पुकारी कि हे स्वामी शिल्पली महाराज कहां हो आप दासी से किस हेतु रूठ गये हो जो बहुत पानी में नहाना आपको था तो मैं गंगा जी में स्नान कराती अब कृपा करो दर्शन देव भगवत् अपने भक्त के पराधीन ऐसे हैं जैसे कामी पुरुष सुन्दरी नायका के आधीन वो वशीभूत होता है वह शब्द करुणा से भरा हुआ सुनकर तुरन्त अपने वियोगिनी विरहिन को दर्शन देकर प्राण को रख लिया सबको भक्ति का विश्वास हुआ और भगवत् भक्ति वो साधु सेवा सब कोई करके कृतार्थ होगये॥

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

सन्त दास की कथा ॥

सन्तदास जी निवाई गांव में विमला नन्द के प्रबोधन बंश में परम भक्त हुए जिस प्रकार राजा पृथु ने अपनी स्त्री समेत भगवत् सेवा करी उसी प्रकार सन्तदास जी ने करी अपनी बाणी की रचना में भगवत् और भक्ति और भक्तों का प्रताप बराबर लिखा और काव्य उनका सूरदास जी के बराबर था भगवत् के जन्म वो कर्म वो लीला वो चरित्रों को ऐसी मधुर वो ललित बानी में बनाया कि निश्चय मन नरम हो हो कर भगवत् चरणों में लग जाता है एक बेर उनके मनमें यह आया कि भगवत् को छप्पन प्रकार का भोग लगाना चाहिये सो ध्यान में भोग लगाया जगन्नाथ राय जी ने अपने सच्चे भक्त का मानसी भोग अंगीकार किया और पुजारियों का धरा थाल भोग न लगाया और राजा को स्वप्न में आज्ञा की कि संतदास के घर हमारा नेवता था उसने ऐसा भोजन कराया कि स्वादिष्ठ वो मधुरता से बंइत खा गये कि भूख नहीं है राजा ने संत दास जी के भक्ति वो प्रताप का विश्वास किया और भक्तों को भगवत् भक्ति और भाव की वृद्धि हुई ॥

साखी गोपाल की कथा ॥

दो ब्राह्मण गौड़ देश के रहने वाले उसमें एक बूढ़ा वो कुलीन और दूसरा जवान और सामान्य कुल का तीर्थ यात्रा में एक साथ रहे जहां तहां दर्शन करिके जब वृन्दावन में आये तो बूढ़ा ब्राह्मण बीमार होगया जवान ब्राह्मण ने उसकी सेवा को अच्छे प्रकार से किया जब आराम हुआ तो उसने प्रसन्न होकर व्याह कर देने अपनी लड़की का बचन दिया और जवान ब्राह्मण ने बहुत कहते सुनते अंगीकार किया साक्षी चाहा तो वृद्ध ब्राह्मण ने श्री गोपाल जी को साक्षी दिया जब दोनों अपने घर आये तब उस युवा ब्राह्मण ने कहा कि बचन पूरा करो तो स्त्री वो सुत ने बूढ़े ब्राह्मण को अपनी कुलीनता वो प्रतिष्ठा के कारण से न माना तब पंचायत बटुरी पंचों ने साक्षी मांगा उसने उत्तर दिया कि जहां गोपाल जी साक्षी हैं तो और साक्षी का क्या प्रयोजन है पंचों ने कहा कि जो गोपाल जी आय कर गवाही देवें तो निसंदेह विवाह होजावे और इस बात का लिखना भी होगया वह ब्राह्मण वृन्दाबन में आया श्री गोपाल जीके मन्दिर में जाकर चलने के निमित्त निवेदन किया कितने दिन तक इसी आशा में फिरता रहा जब भगवत् ने अच्छे प्रकार विश्वास मन का देख लिया तब बोले कि प्रतिमा भी कहीं चलती है तब ब्राह्मण ने बिनय किया कि जो चलती नहीं तो बोलती भी है योगीश्वर भगवान निरुत्तर हुए और साथ होलिये पर उस ब्राह्मण से कहने लगे कि जब तू पीछे फिर कर देखेगा उसी जगह खड़ा हो जाऊंगा उसने कहा कि जो ऐसा

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

ठगोरा हो कि हजार हों उपाय और परिश्रम से भी महादेव इत्यादि के मनमें से भाग जाता है और जिसने गोपियों का माखन और दही चुरा कर अच्छे प्रकार खाया और उन्हों ने पकड़ने का मन किया फिर भाग गया उसका कैसे विश्वास होवै कि पीछे पीछे आता है या नहीं इस हेतु साथ साथ चलना चाहिये भगवत् ने हंस कर कहा कि हमारे नूपुर की धुनि तेरे कान में पड़ती रहैगी उसने मान लिया जब घर के समीप पहुंचे तो ब्राह्मण को कामना हुई कि अब तो रूप अनूप को आंख भर देख लेना चाहिये सो इस चाहना में प्रबन्ध की बात को भूल गया और पीछे फिर कर देखा तो भगवत् वहीं खड़े होगये और ब्राह्मण आज्ञा पाकर गांव में गया वृत्तान्त आदने आप श्री गोपाल जी महाराज का कह करके पंचों को ले आया और भगवत् ने दोनों ब्राह्मणों में जो प्रबन्ध था सो कह दिया सबको भगवत् और भक्ति और भक्तों का विश्वास हुआ और उस ब्राह्मण का विवाह बड़े हर्ष से हुआ अब तक श्री गोपाल जी महाराज बड़ दान गांव में श्री जगन्नाथ राय जी के मन्दिर से पांच कोस पर बिराज मान हैं और नाम साखी गोपाल विख्यात है जो कोई जाता है दर्शन पाता है

सीवां की कथा ॥

सीवां बेटा सांगन राजा अपनी काबा जाति के द्वारिका देश में परम भक्त हुए यद्यपि काम ध्वज जी बड़े त्यागी विख्यात हैं परन्तु यह राज काज करते हुए और सब पदार्थ ऐश्वर्य्य पाय के काम ध्वज से अधिक त्यागी मनसे थे बीर वो उदार वो पराक्रमी ऐसे थे कि भगवत् की सहाय करी वृत्तान्त यह है कि अजीजखां नामी बादशाही नौकर बड़ा कटक लेकर द्वारका पर चढ़ गया रन छोड़ जी के मन्दिर और पुरी में आग को लगा दिया और लोगों पर नाना प्रकार का उत्पात प्रारंभ किया भगवत् ने सीवां से सहायता चाही सीवां ने कुछ सवारों समेत द्वारका में पहुंच कर सबों का वध किया बड़ा युद्ध करा अजीजखां को यमलोक में पहुंचाय के आप भगवत् लोक में वास किया ॥

सदन की कथा ॥

सदन जी जाति के कसाई परम वैराग्यवान भक्त हुए जिस प्रकार सोना कसौटी से अवगुन रहित हो जाता है इसी प्रकार सदन जी ने पिछले जन्मों के पाप दूर कर दिये मांस औरोंसे मोल लेकरबेचा करतेथे हिंसा नहींकरते थे शालग्राम मूर्ति पास थी उसी से सेर अथवा मन जो चाहता था तौल देते थे एक वैष्णव ने देखकर मनमें कहा कि यह मूर्ति ऐसे दुष्टि वाले के पास कहां उचित है इस हेतु सदन जी से मांगी उन्हों ने तुरन्त देदी साधु को स्वप्न में कहा कि जहां से लाया तहांही पहुंचादे साधु ने कहा कि महाराज कसाई के

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

यहां आपका निवास अयोग्य है तब आज्ञा हुई कि हमको उससे बड़ी प्रीति है हमको पलरे पर रखता है तो हम झूलाझूलते हैं वो मोल को जो २ बात चीत करता है सो हम कीर्तन मानते हैं साध ने जाकर सदन जी से सब वृत्तान्त कह कर शालग्राम मूर्ति को दे दिया सदन जी घर बार त्याग कर उस मूर्ति को सिर पर रखके जगन्नाथराय जी को चले राह में कहीं एक स्त्री सदन जी को सुन्दर वो युवा देख कर आशक्त होगई अपने यहां टिकाया अच्छा भोजन कराया रातको कहा कि हमको अपने साथ ले चलो उन्हों ने कहा कि मेरी गरदन काट डालो तब भी यह नहीं होगा उसने कुछ और ही समझ कर तुरन्त घरमें जाकर अपने पति का सिर काटि कर फिर आकर वृत्तान्त कहा कि अब बेखटके तुम साथ ले चलो सदन जी ने कहा कि ऐ मतिहीन यह हमसे कदापि न होगीउसने शोर किया कि इस आदमी को साधु जान कर टिकाया सो मेरे पति का सिर काटकर हमको साथ ले जाने को कहता है सदन जी पकड़ कर हाकिम के यहां गये पूछा गया तब सदन जी ने कहा हां हमसे अपराध हुआ हाकिम ने हाथ सदन का कटवा दिया ऐसे कष्ट में भी सदन अपने पूर्व पाप का फल समझकर भगवत् के ध्यान स्मरण से आनन्द रहे वो जगन्नाथ जी को चले जगन्नाथराय महाराज प्रसन्न होकर निज सवारी की पालकी सदन जी के निमित्त भेजी पर सदन जी मर्य्यादको देखकर न चढ़े जब सबने बहुत कहा तब आज्ञा भगवत् की उलंघ करना उचित न जानकर सवार होके श्री दरबार में पहुंचे और भगवत् के दर्शन को पाकर कृतार्थ अपने आपको ज्ञानकर दण्डवत् किया उसी क्षणहाथ जैसे थे वैसे होगये और सब दुःख जन्मान्तर के दूर होगये निश्चय करिके भगवत् भक्ति का ऐसाही प्रताप है सो महा भारथ में भगवत्का बचन है कि जिसको मेरी भक्ति नहीं और चारों वेद पढ़ा हो वह हमको प्यारा नहीं और जो कोई मेरा भक्त है और यद्यपि वह चांडाल भी है पर हमको अत्यन्त प्याराहै और यही पूजा योग्य है और एकादशस्कन्ध में भगवत् ने उद्धव से इसी श्लोक की भांति कहा है ॥

कर्म्मानन्द की कथा ॥

कर्म्मानन्द जी जाति चारन रजवाड़े में भगवत् भक्त वैराग्यवान हुए काव्य उनका ऐसा प्रभाव युक्त है कि कैसाही कठोर चित्त हो पढ़ सुनकर द्रवी भूतहो जाता है उन्हों ने संसार को असार वो अनित्य जान कर त्याग किया और तीर्थ यात्रा को चले भगवत् सिंहासन सिर पर और हाथमें एक छड़ी ले ली जहां कहीं टिकते वह छड़ी धरती पर गाड़ देते और बटुआ शालग्राम जी का उसी की साखा पर झूले के भांति विराजमान करदेते एक वेर वह छड़ी भूलगये चित्त भगवत् चरणों में था इस

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

कारण रांह में भी सुधि न ऊई टिकांत पर पहुंचे जब प्रयोजन भगवत् के बिराजमान करने का ऊआ तब स्मरण ऊआ और अत्यंत प्रेम से कहने लगे कि झाड़ू देने वाला वो पानी भरने वाला वो रसोइआ वो सेवा करने वाला वो सवारी देने वाला निश्चय करिकै यह दास है क्या जो कार्य्य कि आपको अधिकार है वह भी इस सेवक को सौंपा गया अर्थात् अन्तःकरण के प्रेरक तो आप हैं छड़ी भूल गई न स्मरण ऊई तो विचार कर लें कि इसमें दोष किसका है भगवत् ने जो बोलन प्रेम युक्ति की सुनी तो प्रसन्न ऊए वो तुरन्त छड़ीको मंगा दिया॥

कूल्ह अल्ह की कथा॥

कूल्ह वो अल्ह दोनों भाई रजवाड़े में ऊए कूल्ह भाई बड़े आदि से भगवत् भक्त वो वैराग्य वान वो त्यागी वो भगवत् रूप माधुरी के ध्यान में मग्न और भगवत् चरित्र और गुणों के कीर्तन करने वाले ऊए वो अल्ह जी छोटे भाई मद्य मांस के पीने खाने में रहे वार् बृजत से राजाओं के, यश के कवित्त बनाया करते और कभी घनाक्षर न्याय भगवत् चरित्र का भी कीर्तन करते पर बड़े भाई की आज्ञा में रहते थे एक दिन बड़े भाई ने कहा कि यह मनुष्य जन्म दुर्लभ कहा जाता है और यह संसार अनित्य है उचित है कि द्वारका जी में भगवत् के दर्शन कर आवें सो दोनो भाई द्वारका में आये कूल्ह बड़े भाई ने अपने बनाये कवित्त और छन्द भगवत् रन छोर जी की भेंट किये और अल्ह छोटे भाई ने अति लज्जा से शिर नीचे करिके आंखों में आंसू भरि लिये और अपने अप कर्मों को शोच के विकल चित्त होकर दो चार कवित्त पढ़े भगवत् ने जो अत्यन्त प्रीति हृदय की देखी और अपने पाप कर्मों की लज्जा से लज्जित, देखा तो प्रसन्न होकर अल्ह जीके कीर्तन पर साव धान ऊए और ऊंकारी भरने लगे अभिप्राय यह कि हम सुनते हैं कुछ और कहो और पुजारी को निज माला देने के निमित्त आज्ञा की किया अल्ह जीने विनय किया कि कूल्ह जी बड़े भाई इस कृपा योग्य हैं मैं अपराधी इस योग्य नहीं पुजारी ने उत्तर दिया इस दरबार में बड़ाई छोटाई हृदय की प्रीति की देखी जाती है और हमको केवल आज्ञा पालन उचित है यह कहि कर माला को अल्ह जीके गले में डाल दिया कूल्ह जी को अति दुसह ऊआ और अपनी वे मर्य्यादी समझ कर बड़े दुःखों ईर्षा से डूबने का मनोर्थ करिके समुद्र में कूद पड़े सुख द्वारका में जा पहुंचे भगवत् का दर्शन पाकर कृतार्थ होगये जब भोजन करने गये तब भगवत् ने आज्ञा की कि दो पनवाड़ों में पारस करो कूल्ह जीने कहा दूसरा पारस किस के निमित्त है भगवत् ने कहा तुम्हारे छोटे भाई के हेतु सुनतेही बड़ा दुःख फिर ऊआ और विषके समान होगया भगवत् ने कहा दुःख की कुछ

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

बात नहीं है तुम्हारा छोटा भाई मेरा परम भक्त है और वृत्तान्त उसका यह है कि अगिले जन्म में राजा था और राज छोड़ कर जंगल में हमारे स्मरण भजन में रहा करता था संयोग बस एक राजा वहां आय के टिका और उसकी सजावट भोग बिलास वो रांग रंग इत्यादि की देख कर उस सुख की चाहना को किया इस हेतु यह शरीर पाया अब वह तुम्हारे स्नेष से खान पीना सोना सब छोड़ कर मृतक प्राय है शीघ्र जाकर सुधि लेव कूल्ह जी प्रसाद लेकर अपने डेरे पर जहां टिके थे एक क्षण में पहुंचे और अल्ह जी को वहां न पाया घर जाने की सुध पाय कर गृह को चले अल्ह जी अपने भाई के वियोग से महा दुखित रोया करते थे कूल्ह जी को कुशल पूर्वक पत्थर के साथ आते सुन कर अति हर्षित होकर आगे जाकर लियो दण्डवत् करके दोनों भाई प्रेम से भरे हुए मिले कूल्ह जी ने सब वृत्तान्त कहा दोनों भाई ऐसे प्रेम में पूरण हुए कि घर बार त्याग करके वन में चले गये भगवत् सेवा भजन में शरीर समाप्त किया॥

जगन्नाथ की कथा॥

जगन्नाथ जी रहने वाले थानेसर परम भक्त और श्री कृष्ण चैतन्य महा प्रभू के सेवक पार्षद के सदृश हुए सेवक होने का यह वृत्तान्त है कि तीन दिन तक महा प्रभू को अपने घर पर बिराज मान देखा और उनके प्रताप का प्रभाव घर में प्रगट पाय के आधीन को विश्वास युक्त हुए और सेवक होकर कृष्ण दासनाम पाया पर लोग कृष्ण नाम कहा करते थे बहुत काल मानसी पूजा और ध्यान करते रहे एक दिन यह अभिलाष हुआ कि जो चर्चा मूर्ति भगवत् की मिलै तो स्थापन करके सर्व काल सेवा पूजा में रहा करूं भगवत् ने कृपा करिकै अपना स्वरूप एक कुए में बतलाया उसको लाकर स्थापन किया और ऐसे सेवा पूजा में लवलीन रहा करते कि रात दिन भगवत् के शृंगार वो राग भोग वो उत्साह और लाड़ लड़ाने के सिवाय दूसरा कुछ काम न था उनके मुख का नाम रघुनाथ जी था वह लड़काई से ऐसा भक्त औ प्रेमी हुआ कि भगवत् ने स्वप्न में एक श्लोक अपने प्रेम और भक्ति का शिक्षा किया॥

राम दास की कथा॥

राम दास जी रहने वाले डाकौर द्वारिका के निकट बड़े प्रेमी भक्त हुए एकादशी व्रत बड़ी प्रीति से रहकर जागरण के हेतु रनछोर जी के मन्दिर में द्वारका जाया करते जब वृद्ध हुए तब रनछोर जी ने आज्ञा की कि अब तुम घरही में स्मरण भजन किया करो रामदास जी ने यद्यपि वचन अंगीकार किया पर जब तरंग प्रेम की उठै तो बे बस होकर चले जाते भगवत् को राह का परिश्रम वो क्लेश आने जाने का अपने भक्त का

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

सहा नहीं गया और आज्ञा की कि तुम एक गाड़ी लेआवो हम तुम्हारे घर चलेंगे रामदास जी अगिली एकादशी को गाड़ी लिये आ पहुंचे और लोगों ने जाना कि बुढ़ाई के कारण से गाड़ी पर आया है द्वादशी के दिन बतलाये हुए भगवत् मन्दिर में गये और गाड़ी पर सवार कराकर चले पर गहने सब भगवत् के मन्दिर में छोड़ दिये प्रभात को पुजारी लोगों ने मन्दिर खोला वो भगवत् को न देखा तो जानगये कि रामदास ले गये सब पीछे पड़े और रामदास जी को उनके आने से चिन्ता हुई भगवत् ने कहा कि समीपही एक बावड़ी है उसी में हमको छिपादेव रामदास जी ने वैसाही किया वे लोग जो आये तो पहिले रामदास जी को मारा मोटा घायल किया जब गाड़ी में न देखा तो लज्जित होकर पश्चात्ताप करने लगे पीछे किसी के बतलाने से बावड़ी को देखा कि रुधिर से भरी है चलत हुए भगवत् ने कहा कि रामदास हमारी आज्ञा से हमको लाया है तुमने जो उसको घाव दिया सो हमने अपने शरीर पर रोका है इस हेतु बावड़ी रुधिर से भरी है अब तुम फिर जावो तुम्हारे साथ न जायंगे पुजारियों ने बड़ी प्रार्थना वो करुणा से विनय किया कि महाराज जो आप न चले तो हमारी क्या गति होगी भगवत् ने कुछ न सुना बहुत कहते सुनते यह ठहरा कि भगवत् मूर्ति बराबर सोना तौलदे सो पुजारी लोग इस बात पर मानगये रामदास जी ने कहा महाराज मेरे घर सोना कहां है भगवत् ने कहा कि तुम्हारी स्त्री के कान में बाली सोने की है हमारे तौल के बराबर वही बहुत है जब उस सोने की बाली के साथ भगवत् मूर्ति को तोलने लगे तो बाली वाला पलरा धरती पर होगया वो भगवत् मूर्ति वाला पलरा खल्लता से ऊपर उठ गया पुजारी सब लज्जित होकर अपने घरको चले गये रामदास जी ने भगवत् को अपने घर पर लाकर विराजमान किया और सेवा भजन करने लगे इस चरित्र से प्रगट है कि राजा बलि के यहां तो उसके बांध लेने के पीछे उसके यहां टिके और यहां तो रामदास जी के घायल होने के पीछे टिके और सदा भगवत् के यहां रहने का यह चिन्ह है कि अब भी भगवत् मूर्ति किसी और आदमी से नहीं उठती जब कोई रामदास जी के वंश में का उठाता है तो तुरन्त उठ आती है मन्दिर की मरम्मत के समय इस बात की परीक्षा हो चुकी है॥

निष्ठा नवीं॥

जिसमें महिमा लीलानुकरण अर्थात् राम लीला वो रास लीला इत्यादि जिसमें सब भक्तों की कथा है॥

श्री कृष्णस्वामी के चरण कमलों के चक्ररेखा को दण्डवत् करके कमठ

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

अवतार को दण्डवत् करता हूं कि समुद्र मथने के समय वह अवतार समुद्र में प्रगट करके मन्दराचल पहाड़ को अपनी पीठ पर धारण किया और देवताओं के दुःख दूर किये रास लीला वो रामलीला नृसिंह लीला बनाकर जो भगवत् का आराधन पूजन करते हैं उसका नाम लीलानुकरण है यह निष्ठा परम पुनीत ऐसी है कि सैकड़ों हजारों महा पापी जिसके प्रभाव करिके भगवत् परायण हुए और भागवत से प्रसिद्ध है कि जब रास लीला को प्रारंभ में भगवत् गोपियों से अन्तर ध्यान होगये तो वे सतवारी बिरह वो बावरी रूप अनूप की होकर बन और कुंजन में सब द्रुम और लता गुल्म से पछती हुई ढूंढने लगीं और रोना वो आंसू बहाना वो विनय वो प्रार्थना वो गिड़गिड़ाना वो स्तुति जो कुछ उपाय सूझ पड़ी सब करी पर भगवत् प्रगट न हुए नितांत सब गोपियां भगवत् के किये भये चरित्रों को करने लगीं अर्थात् कोई गोपी तो श्री कृष्ण रूप बनी और कोई बालक और कोई गऊ और कोई बछड़ा और जिस प्रकार जन्मोत्सव से लेकर जो जो लीला भगवत् ने करी थी सब करीं भगवत् प्रसन्न होकर प्रगट हुए तो सिद्धांत यह बात होगई कि भगवत् अपने लीलानुकरण से ऐसे रीझते हैं कि आप प्रगट हो आते हैं किंतु रासलीला भगवत् ने आप आज्ञा देकर संसार में प्रगट करी कि यह वृत्तान्त नारायणभट्ट जी की कथा में लिखी गई इसे भी निश्चय होता है कि भगवत् को अपनी लीलानुकरण अपने निज चरित्रों के सदृश प्यारा है और प्रसिद्ध है कि शास्त्रों में मूर्ति की उपासना वो पूजन के निमित्त आज्ञा है और वह मूर्ति पाषाण वो दारु वो धातु इत्यादि की होती है और आदिमी आप उनको बना लेते हैं और बहुत भीत इत्यादि पर चित्र खींच कर अथवा वेदी वो पीठ बना कर पूजा इत्यादि करते हैं और उसी के प्रभाव से अपने विश्वास के अनुरूप अपने वांछित फल को प्राप्त होते हैं अब विचार करना चाहिये कि यह लीलानुकरण मूर्ति पहिले तो ब्राह्मण बालक होते हैं कि भगवत् वो बेद के बचन से जन्म सेही भगवत् रूप हैं फिर उन्होंने अपना शृंगार भी भगवत् के सदृश बनाया तो जो कोई विश्वास करि के उन का पूजन करैगा तो क्यों न अपने मनोर्थ को पहुंचेगा बरं दूसरी मूर्ति से तो विलम्ब करि कै मनोर्थ सिद्ध होता है और इन लीला मूर्तियों से तो शीघ्र हृदय की निर्मलता वो भगवत् की प्राप्ति होजाती है इस हेतु कि आर्चा मूर्ति आदि से भगवत् की प्राप्ति तब होती है कि पहिले तो उस मूर्ति में अच्छे प्रकार मन लगे कि दूसरी ओर न जाय दूसरे भगवत् चरित्रों का श्रवण कीर्तन वो सत्संग होय सो दूसरे मूर्ति शिला आदि में ऐसा मन बड़ी प्रीति से कम लगता है कि जिसको दृढ़ नेह कहते हैं सो घुनाक्षर न्याय और श्रवण वो कीर्तन वो

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

सत्संग यह खोजने से मिलता है और लीलानुकरण मूर्ति पूजन सेवन से वह सब बात एक जगह एक समय प्राप्त होजाती हैं क्या अर्थ कि प्रत्यक्ष सुन्दरताई और बस्त्र संकार चमक दमक के कारण से प्रीति तो तुरन्त उत्पन्न होती है और भगवत् चरित्रों का कीर्तन श्रवण और भगवत् भक्तों का सत्संग बिना खोजे प्राप्त रहता है सिवाय इस के पूजन भगवत् मूर्ति का इस हेतु है कि उसके सहारे से मुख्य भगवत् मूर्ति के ध्यान में मन दृढ़ हो जाय सो जब कि लीलानुकरण मूर्ति के अवलम्ब से मुख्य भगवत् की प्राप्ति होना बहुत शीघ्र निश्चय होय तो इस लीलानुकरण निष्ठा से और कौन सी मूर्ति वो निष्ठा उत्तमतर है इस हेतु बहुत उचित औ अति प्रयोजन देने वाली बात है कि भगवत् लीलानुकरण मूर्ति को निज मूर्ति भगवत् की जान करके मन विश्वास युक्त करिके पूजा करै बिना संदेह अपने वांछित अर्थ को पहुंच जायेगा कलियुग के महा पापात्मा लोगों के उद्धार के हेतु भगवत् ने सब कुछ उपाय सहज से सहज बनाया कि तुरन्त बेड़ा पार हो जावै पर हमारे लोगों की अभाग्यता को हजार धन्य है कि उन मूर्तियों को भगवत् रूप जानना और चरित्रों में चित्त लगाना तो एक ओर रहा ढिठाई वो बे विश्वासी इस प्रकार अधिक है कि जिस का वर्णन विस्तार का कारण है वरु बेक हैं अच्छा बिना संदेह ऐसे महा पापी बिश्वास हीन वो ढीठ नर्क में जापड़ैंगे और किसी प्रकार पापों से न छूटैंगे और जाने रहो कि मनुष्य को बिश्वास ही मुख्य साधन है जो अच्छा बिश्वास हुआ तो उत्तम पद को गया जो अनिष्ट हुआ तो पाताल को पहुंच गया क्यों कि बेद शास्त्रों ने भगवत् को अच्छे वो बुरे कर्मों के फल देने में कल्प वृक्ष के सदृश लिखा है इस हेतु एक दृष्टांत कल्प वृक्ष की लिखना उचित हुआ कल्प वृक्ष का स्वभाव है कि वांछित फल देता है एक पथिक संयोग वस कल्प वृक्ष के नीचे पहुंचा और मनोर्थ किया कि ठंढी पवन चलती तो अच्छी थी सो पवन ठंढी चलने लगी फिर शीतल जल से पूर्ण एक तड़ाग वो एक हरे बाग की चाहना करी वह भी प्राप्त होगया फिर दिव्य बस्त्र आभूषण वो सामग्री भोग विलास वो राग रंग वो सुन्दरी नायकाओं की चाहना हुई वह भी सब प्राप्त हुए जब उन नायकाओं के साथ सुख वो विलास में लीन हुआ तो यह चिन्तना हुई कि ऐसा नहो कि इनका मालिक दण्ड देने लगे सो तुरन्त जूती पड़ने लगी और शिर पिलपिला होगया इसी प्रकार भगवत् बिश्वास के अनुसार सब फल देता है और गीता जी में भगवत् का बचन है कि निश्चय मनही मनुष्यों को बन्ध और मोक्ष का कारण है भागवत का बचन है कि जो कोई जिस बिश्वास से मन लगाता है वैसाही फल उसको मिलता है बिश्वासही मूल है यद्यपि कथा उन भक्तों की कि जो लीलानुकरण के प्रभाव करिके परंपद को गये बिस्तार करिके

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

लिखी जायगी पर दो एक बात यहां भी लिखता हूं मीर माधो जी जो भगवत् भक्त बिख्यात हैं उनको भक्ति का आरंभ वो कारण लीलानुकरण से हुआ वृत्तान्त यह है कि अमीर कबीर थे वो मजहब मुहम्मदी रखते थे राह चलते मथुरा वृन्दावन में पहुंचे अपने मुन्शी से कि भगवत् उपासक था बड़ाई रासलीला की सुनकर देखने की चाह हुई मुन्शीने उनकी बड़ी प्रीति देखकर पूजा करना वो मर्य्याद से बैठालना वो बैठना यह सब ठहराकर रास करने वालों को बुलाया और अमीर ने प्रेम वो मर्य्याद से सब भगवत् चरितों को देखा मन और प्राण से चाह करने वाले बास्तव स्वरूप श्रीनन्द नन्दन महाराज के होगये और माल वो रुपैया सब भगवत् के आगे भेंटकर दिया पीछे गृह बार संसार ब्यौहार त्याग करिके पीछे कपड़े पोशाक सबको त्याग करि दिया श्रीकृष्ण श्रीकृष्ण कहते श्रीवृन्दाबन की कुंजन में निज अपने प्राण प्यारिको ढूढ़ते फिरने लगे अनुक्षण नाम जो भगवत् का मुखसें निकलता था इस हेतु लोगों ने मीरमाधो नाम रखदिया और भगवत् भक्तों में गिना काव्य रचना उनकी में बाल चरित्र भगवत् के बहुत हैं उस में से एक कसीदे की पहिली तुक पारसी में है सो यह है ॥ ताके जे खुदरानी सखुन श्रीकृष्ण गो श्रीकृष्ण गो बुग जारकत्र वो मावो मन श्रीकृष्ण गो श्रीकृष्ण गो ॥ अर्थ इसका यह है कि जब तक बचन बोलना तेरे आधीन है श्रीकृष्ण कह श्रीकृष्ण कह अभी मान वो हम वो हमारा यह सब छोड़ श्रीकृष्ण कह श्रीकृष्ण कह ॥ थोड़े दिनों में भगवत् का रूप उनके हृदय में प्रगट हुआ और सिद्ध होगये उस रूप अनूप के रस में मत्त रहने लगे और श्रीभागवत् सुनने की इच्छा हुई पर किसी ने मन्दिर में जाने नदिया, भगवत् ने एक अपने भक्त गोसाईं को सुनाने की आज्ञादी उन्हों ने बड़े आदर से कथा सुनाना आरंभ किया एक बेर कथा कहते बहुत रात बीति गई और मीरमाधो मन्दिर में सो रहे आधीरात को भूख लगी भगवत् ने विचार किया कि आज मीरमाधो हमारे पाहुन हैं बड़ी सोच की बात कि भूखे रहैं इस हेतु अपने निज भोग के थाल में लड्डुवा वो जलेबी और लोटे में जल दस बारह बरस के लड़के के स्वरूप से लेकर आये और कहा कि गोसाईं जी ने भेजा है मीर माधो जीने लेकर खालिया और सो रहे प्रभात को थाल सोने का वो लोटा न पाया तो पुजारी खोजने लगे मीर माधो जी के पास पड़ा हुआ देखकर पुजारियों ने अज्ञान से अच्छा मारा फिर जो भगवत् मन्दिर में गये तो सब बस्त्र भगवत् के टुकड़े २ पाये और भगवत् मूर्ति की भी चेष्टा अति उदास वो क्रोध युक्त देखी तुरन्त गोसाईं जी के पास गये सब वृत्तान्त कहा गोसाईं जी नंगे पांय दौड़ आये और मीर माधो जी के चरणों में शिर रख कर बहुत विनय वो प्रार्थना

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

को किया जब मीर माधो जी ने पुजारियों का अपराध क्षमा किया तब भगवत् भी प्रसन्न हुए शिक्षा दई कि मेरे भक्त को मुझसे कम न समझा करैं कथा के श्रोता लोगों का गोसाईं जी पर संदेह हुआ कि मुसल्मान को अपने पास बैठाकर कथा सुनाते हैं एक दिन गोसाईं जी ने परीक्षा के हेतु श्रोताओं से पूछा कि कल्ह कथा कहाँ तक हुई थी किसी ने कुछ न बतलाया मीर माधो जी ने कथा के आरम्भ से अन्त तक सब श्लोक और अर्थ और जो अक्षर गोसाईं जी के मुखसे निकले थे सुनादिये सब संदेह करने वाले लज्जित हुए एक बेर किसी राजा ने अतर्री श्री बिहारी जी को भेजा मीर माधो जी ने हरिद्वार से लेकर धरती पर डाल दिया सब मन्दिर के भीतर सुगन्ध छाय गई वो बिहारी जीका श्री अंग वो वस्त्र अतरसे तर होगया जैसे हरिदास जी का वृत्तान्त लिखा है वैसी ही बात हुई दूसरी एक बात चन्दा नामे डाकू की यह है कि वह ठगी वो डाका मारा किया करता था एक बड़े आदमी के यहां रास चरित्र होने का समाचार पाया और यह भी सुना कि लाखों रुपये का जेवर वो असबाब रास होने के समय इकट्ठा होगा पीठा ठोंठ पांचसौ आदमी हथियारबंद के समेत आप पहुंचा और उसके आतेही राह में हल्ला वो शोर पड़ा देखने वाले अपना अपना जीव लेकर भाग गये भगवत् स्वरूप जो रास में थे उन्होंने उस बड़े आदमी से पूछा कि क्या शोर गुल है उसने वृत्तान्त डाकू के आने का कहा भगवत् मूर्ति ने कहा कि क्यों डरहै आनेदेव इसी कहने सुनने में थे कि डाकू सीधा बेडर निर्भय सिंहासन के समीप आ पहुंचा और चाहा था कि गहने वो असबाब पर हाथ डालैं आप भगवत् मूर्ति ने सिंहासन पर से उठकर और हाथ चन्दा का पकड़ कर एक मुष्टिक सुंहपर मारी और कहा कि इतनी ढिठाई सो बयक्रम भगवत् स्वरूप का दस बारह वर्ष से अधिक न था पर वह पहलवान डाकू मुष्टिक की चोट से ऐसा लोट गया कि लंगोट की भी सुध न रही और उसके साथी ज्ञान हाथ से खोकर पाँव से भगे तब चिच की पुतली होगये पीछे जब उस डाकूकी मूर्छा जगी तो अपने हथियारों को भगवत् के आगे रख कर चरण कमल इस प्रीति वो प्यार से पकड़ लिया कि फिर हृदय से न छोड़ा और सब त्याग कर भगवत् भक्त वो नारायण होगया तीसरा और एक वृत्तान्त कि किसी बड़े आदमी ने यमुना जी के किनारे पर रासलीला कराई काली के नाथ ने का जो चरित्र आरंभ हुआ तो उसने लोगों से पूछा कि क्या भगवत् स्वरूप यमुना में कूदैंगे जो कमर कसते हैं यह बात भगवत् स्वरूप के भी कान में पड़ी और आप बोले कि हां और यह कह कर यमुना जी में कूद पड़े और एक सांप ऐसे भारी को जो दसबीस आदमीसे न उठ सके पकड़ लाये उस घड़ी उस बड़े

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

आदमी ने भगवत् रूपी का प्रकाश वो झलक ऐसा देखा कि आंखै चक चोंध के औंध गईं और बेसुध होकर गिर पड़ा पीछे जब शरीर का ज्ञान हुआ तो कृष्ण चरण का ध्यान हृदय में धरि के सब त्याग दिया भगवत् परायण होगया काशी जी में पाठक जी परम भक्त रघुनन्दन महाराज के हुए भगवत् से साक्षात दर्शनों की वांछा की शिक्षा हुई कि राम लीला में दसहरे के दिन भरत मिलाप में दरशन होंगे और परीक्षा इसकी-तब जानना कि जब कोई वस्तु हम आप तुमसे मांगे तो जिस दिन भरत मिलाप का दिन आया पाठक जी भी देखने गये थे मिलाप होने पीछे जिस समय भरत जी आखों से आनन्द वो प्रेम का जल बरसाते हुए श्री रघुनन्दन स्वामी के चरणारबिन्द पकड़ रहे थे उस समय उस राम मूर्ति ने पाठक जी को बुलाया लोगों के ढहने से आये भगवत् स्वरूप ने आज्ञा की कि कुछ मिठाई प्रसाद के निमित्त और थोड़ा जल लावो पाठक जीने तुरन्त प्राप्त किया भगवत् ने थोड़ा भोग लगाकर और जल पीकर पाठक जी को वह महा प्रसाद दिया और ऐसी झलक उस मनोहर मूर्ति की कि जैसी शास्त्रों में लिखीं हैं पाठक जीने देखी कि बेसुधि होगयी इसी प्रकार की कितनी कथा हैं कि विस्तार के भय से नहीं लिखते और दो चार बेर रामलीला में कितने मनुष्य ऐसे देखने में आये कि अत्यन्त प्रेम करिकै अचेत वो बेसुधि होजाते थे और कितने मनुष्य ऐसे देखने में आये कि प्रेम से रास लीला में अत्यन्त बेसुधि बुध होजाते थे और कितने ऐसे देखने में आये कि पहिले केवल देखने के निमित्त साखी बनाने राम लीला के हुए पीछे उसी प्रभाव से निन्दित पथ छोड़ कर कुछ भगवत् की ओर सन्मुख होगये क्या अच्छी बात हो कि यह मेरा मन पापी अपने चंचल स्वभाव को छोड़ कर इसी लीला कुकरण के अवलम्ब से भगवत् के सन्मुख हो और बड़ा आश्चर्य यह है कि संसार के सहस्रों प्रकार के दुःख प्रति दिन देखता है पर कबहीं उनका भय करिके भगवत् चरणों में नहीं लगता जो सुख और धन इत्यादि आपसे आप प्राप्त होने वाले हैं उनके हेतु सहस्रों प्रकार के उपाय और अधर्म्म वो मिथ्या बोलना इत्यादि करता है और जो भगवत् की करोड़ों जन्मों तक नहीं मिलता उसे ऐसा असावधान वो विमुख कि निर्मूल उसका चिन्तन भी नहीं करता वा हरे मन तेरी बुद्धि वो चतुराई अरे अभागे अब भी चेत और उस समाज और शोभा को कि जो ग्रन्थ के मंगला चरण में कहि आये हैं सदा चिन्तवन किया करता कि यह जन्म मरण की अपार नदी सूख जाती और दुःख सुख संसार का छूट कर परम आनन्द रूप होजाता ॥

दोहा—नील सरोरुह नील मणि नील नीर घर श्याम।
लाजहिं तन शोभा निरखि कोटिकोटि शत काम ॥

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

अली भगवान् की कथा॥

अली भगवान् पहिले रघुनन्दन स्वामी में निष्ठा रखते थे पर वृन्दावन में आकर उनकी कुछ और ही गति होगई अर्थात् जब रास चरित्र में भगवत् का मन मोहनी स्वरूप देखा तो वह छवि माधुरी के प्रेम से अपनी इष्ट उपासना सब भूल गये और श्री प्रिया प्रीतम के रूप अनूप में मग्न होके उसी ओर के हो रहे बिहारी जी का चरित्र और रासलीला के चिन्तन और पूजा में मन लग गया और वही स्वरूप हृदय में बसि गया उनके गुरू ने जो यह वृत्तान्त सुना तो वृन्दावन में आये अली भगवान किसी बन में चले गये और वहां गुरू के दर्शन हुए दण्डवत् करिके बिनय किया कि महाराज मेरे गुरू और स्वामी आप हैं पर बर बस ब्रज नागर जीने मेरे मन को अपनी ओर लगा लिया है गुरू ने जो दृढ़ प्रीति देखी तो प्रसन्न हुए और श्रीकृष्ण स्वामी के चरित्रों और प्रेम का उपदेश करके चले आये जाने रहो कि गुरू के आने का अभिप्राय यह था कि अली भगवान पहिले तो श्री राम उपासक था अब रास लीला को देख कर कृष्ण उपासक होगया कल्ह को किसी और मत मतान्तर वाले के पास बैठेगा तो उसी ओर होजायगा इसमें किसी ओर की भी न होगा और दोनों लोक से जाता रहैगा काहे से कि स्वरूप भक्ति की शास्त्रों में यह लिखा हैं कि मनकी वृत्ती अचल एक ओर लगी रहे सो जब अली भगवान् के मन को दृढ़ देखा तो प्रसन्न हुए॥

बिपुल बिट्ठल की कथा॥

बिपुल बिट्ठल जी स्वामी हरिदास जीके चेले निधबन में भगवत् भक्त अनन्य उपासक हुए जब स्वामी हरिदास जी भगवत् के परम पदको गये तो उनके चरण कमलों के वियोग से अत्यन्त शोक युक्त रहा करते एक बेर रास लीला में हरि भक्तों में उनको भी बुलाया हरि भक्तों की आज्ञा उल्लंघन न कर सके जब वृहां गये और प्रिया प्रीतम के स्वरूप को देखा तो भगवत् का नृत्य और कीर्तन और भाव मन में समाय गया और निज भगवत् स्वरूप में मग्न और तद्रूप होगये स्वामी हरिदास जी के दर्शन इसी दशा में हुए और परम आनन्द द्विगुण हुआ फिर तो भगवत् के प्रेम समुद्र में ऐसी डुबकियां लगाई कि फिर न निकल सके उसी रूप और भाव में मिलकर भगवत् के नित्य विहार में जा मिले॥

राम राय की कथा॥

राम राय राठौर बेटा राजा खेम्हाल के परम भक्त हुए भगवत् भक्ति और भाव को ऐसा देश में प्रवृत्त किया सब को भक्ति सहज होगई जिस प्रकार शिवजी महाराज ने इस परम धर्म को संसार में फैलाया और आप आचरण किया इसी प्रकार रामराय जी हुए जो लोग भगवत् भक्ति से

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

बिमुख थे उनका त्याग किया और जिन को योग्य उपदेश के जाना उन को उपदेश कराकर बड़ी पदवी पर किया प्रताप राजा भरत के सदृश्य था कि जिनका बेटा लड़काई में व्याघ्र का कान पकड़ कर जंगल से ले आया था अर्थात् उस समय में और कोई राजा उनके दृष्टान्त के योग्य न था और किस प्रकार उनके भाव की बराबरी किसी से होसकै कि अपनी लड़की को गन्धर्व विवाह की रीति से भगवत् मूर्ति के अर्पण कर दिया दृष्टान्त यूह है कि सरद पूनों अर्थात् जिस रात ब्रजचन्द्र महाराज ने रास चरित्र किया था राजा नें समाज रासलीला का कराया भगवत् के स्वरूप और चरित्र और राग रंग और नृत्य को देख कर प्रेम में विह्वल होगये एक ब्राह्मण जो मंचो था उससे पूछा कि भगवत् को क्या वस्तु भेट करनी चाहिये ब्राह्मण नें कहा जो वस्तु आप को प्यारी हो राजा चुप होगया बिचार कर के बोला म्हां को तो म्हां की डाबरी प्यारी छे अर्थात् हम को अपनी लड़की प्यारी है यह कह कर महल में गये और लड़की को शृंगार आभूषण आदि से शृंगार करके ले आये और गांधर्वी रीति से भेट किया पीछे धन वो असबाब इतना कि जीवन पर्य्यंत सैकुरों वर्ष वह खड़की को दुःख न होय नेछावर करिके भक्ति भाव का अन्त इस संसार में सूर्य्य के सदृश्य प्रकाशित कर दिया॥

खड्गसेन की कथा॥

खड्गसेन जो जाति कायथ रहने वाले ग्वालियर भगवत् भक्त रास निष्ठ और प्रेमी हुए पद रचना बहुत ललित करते थे ब्रज गोपिका वो ब्रज ग्वालों के मा बाप का नाम ग्रन्थ से ढूंढ़ ढूंढ़ कर एक ग्रन्थ बनाया और दान लीला और दीप मालिका का चरित्र ऐसा ललित बनाया कि जिसके पढ़ने सुनने से भगवत् में निश्चय करिके प्रीति हो जाती है संपूर्ण अवस्था को श्री ब्रजचन्द्र महाराज के और उनके सखा सखियों के चरित्रों में व्यतीत किया और श्री नन्द नन्दन स्वामी के चरण कमलों में ऐसी प्रीति और लगन थी कि सिवाय उनके चरित्रों के और कोई बात नहीं रुचती थी और रास लीला और दूसरे चरित्रों का समाज उत्साह सदा रहा करता था पर सरद पूनों को यह प्रण दृढ़ था कि बहुत द्रव्य लगा करिके रास लीला कराया करते थे एक बेर प्रिया पीतम के रास विलास की दशा में हंसी और खेल वो राग वो नृत्य और परस्पर देखना वो मुसक्याना वो सकुचाना और श्री लाड़िली जी का मान और आप श्री लाल जी का मनाना देख कर ऐसे बे सुध वो तदाकार होगये कि देह को उस रास लीला के प्रिया प्रीतम के नेछावर करिके प्राण मुख्य रस रास और नित्य बिहार में प्राप्त किये और प्रेम की दशा और रास निष्ठा की महिमा को उसके

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

प्रभाव करिके नित्य रास बिलास और भगवत् स्वरूप प्राप्त होता है लोक में प्रगट करिके भगवत् भक्ति और भाव को शिक्षा किया ॥

वल्लभ की कथा ॥

वल्लभ जी चेले नारायण भट्ट जी के ऐसे भक्त और प्रेमी हुए कि जिन्हों ने उस ब्रज वल्लभ महाराज परमानन्द घनको जो आनन्द का भी आनन्द और सुख का भी सुख है रास चरित्र में नृत्य और कीर्तन से और अपनी आंखों के हाव भाव और मन्द मुसक्यान से आनन्द और सुख दिया अर्थात् रास चरित्र में कबहीं ललिता और कबहीं बिसाखा का रूप बना करते और ऐसे प्रेम और प्रीति से भगवत् को रिझाया करते कि तद्रूप ललिता वो बिसाखा के हो जाते वृन्दाबन बास करिके अपने भक्ति भाव और उदारता वो प्रभाव से लोगों का उद्धार किया और भगवत् के महोत्साह करिके लोगों को परम आनन्द दिया ॥

नाथ भट्ट की कथा ॥

नाथ भट्ट जो फनी अर्थात् शेष जी के बंश में परम भक्त हुए फनी वंश का यह अर्थ है कि बलदेव जी महाराज शेष का अवतार हुए और बलदेव जी का अवतार नित्यानन्दजी सो नित्यानन्द जी के बंश में जो होय उसको फनी वंश अर्थात् शेष जी का बंश कहना योग्य है सो नित्यानन्द जी के चेले सनातन जी और सनातन जी के कृष्ण दास कृष्ण दास जी के नारायण भट्ट और नारायण भट्ट के चेले सनातन जी और सनातन जी के कृष्ण दास और कृष्ण दास जी के नारायण भट्ट और नारायण भट्ट के चेले वो पुत्र गोपाल भट्ट और गोपाल भट्ट के पुत्र नाथ भट्ट जी हुए ऊंचे गांव में रहते थे तंत्र शास्त्र वो वेद वो पुराण और सब शास्त्रों को विचार कर उनका जो सार वो अभिप्राय भगवत् भक्ति और प्रेम है उसको अपने मन में दृढ़ स्थित किया रूप और सनातन वो जीव गोस्वामी वो नारायण भट्ट ने जो कुछ अपनी काव्य रचना में भगवत् का माधुर्य्य को शृंगार रस वर्णन किया है उसको अपना सर्बस्व जानकर उसके अनुसार आचरण किया और शृंगार वो माधुर्य्य भाव के स्वरूप हुए रसिक बिहारी महाराज की रासलीला बड़े आनन्द वो बिश्वास से मनाते और रास निष्ठा में परम प्रेम और निश्चय थी बिमल हृदय वो प्रिय बचन बोलने में एकही थे वो रास उपासना के भक्तों में मुख्य अर्थात् राजा हुए और जाने रहो कि रास निष्ठा नाथ जी के घराने में प्राचीन इस काल पर्य्यंत संग्रहीत बना है ॥

निष्ठा दशवीं ॥

दया वो अहिंसा के बर्णन में कथा छः भक्तों की है ॥

श्री कृष्ण स्वामी के चरण कमल के स्वस्तिक अर्थात् सथिये की रेखा

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

को दण्डवत् करिकै धन्वन्तर अवतार को दण्डवत् करता हूं कि जगत के उद्धार के हेतु समुद्र मे अवतार धारण करके फिर इस संसार में प्रगट हुए दया भगवत् का स्वरूप है महाभारात में लिखा है कि सब धर्मों से दया परम धर्म है जब तक दया नहीं तब तक कोई धर्म नहीं गिने जाते हैं भागवत वो स्कंद पुराण में दया के गुण वर्णन करके अन्त में कहा है कि जिसको दया है उसने सब धर्म कर लिये नारद जीसे भगवत् ने सब धर्म वैष्णवेंके के वर्णन करके कहा है कि दया वो भजन वो साधु सेवा सब धर्मों में मुख्यतरें है और उनमें भी दया का स्वरूप यह है कि दूसरे किसी जीव के दुःख देख कर हृदय द्रवी भूत और दुखित होना और वह दुःख वो द्रव्य बिना कारण वो सम्बन्ध के हो और जब तक उसका दुःख दूर न हो लेवै तब तक त्रिगुण दुःख उस दयावान को है उस दया के दो प्रकार हैं एक संसारी दुःख देख कर किसी का अपने को दुःख वो दया होना और उसके दूर करने का उपाय मन क्रम वचन से करना और क्रोध का न आना वो मधुर वचन बोलना और किसी को दुःख न देना और उदारता वो दातव्य और किसी का न्यून सोचना धरती को देखते चलना इसी प्रकार और दूसरे कार्य्य सबकि जिसे किसी को दुःख न होय और अथवा किसी का दुःख दूर होता होय यह सब अंग दया के हैं दूसरा पारमार्थिक दया अर्थात् पार लौकिक दुःख देख कर दया होना और वह यह है कि अनादि काल से जो जीव जन्म मृत्यु नर्कादि अनेक भांति के दुःख वो जातनामें फसा है उन दुःखों को देख कर दया होना और जिस प्रकार से होसकै भगवत् के सन्मुख उस जीव को करिके जन्म मरण के दुःखों से छुड़ा कर कृतार्थ करि देना सोई दोनों प्रकार में पहिला प्रकार तो साधक को होता है और सिद्ध और भगवत् भक्तों और विरक्तों को दोनों प्रकार का शास्त्रों में महिमा दान वो क्षमा आदि एक अंग दया के इस भांति लिखे हैं कि उन में से किसी एक पर दृढ़ होजाय तो उसके सहारे से भगवत् मिल जाता है जो कोई दया पर दृढ़ है उसकी महिमा तो किसे वर्णन हो सक्ती है एक साहूकार काल के फेर करिके दरिद्री होगया चार यज्ञ उसने किये थे किसी ऋषीश्वर के उपदेश से एक यज्ञ के फल लेने को धर्मराज के पास चला एक काल के भोजन की सामग्री पास थी उसकी रसोई बना कर जब खाने को बैठा तब एक कुतिया उसी घड़ी की ब्यानी हुई भूख से बिकल आई साहूकार को दया उत्पन्न हुई चौथाई भोजन उसको दे दिया पर भूख न गई तब दूसरी चौथाई दी फिर भी वही दशा रही फिर चार बेर में सब भोजन दे दिया और पानी पिला दिया संतुष्ट होकर चली गई और साहूकार भूखा प्यासा धर्म राज के पास पहुंचा हिसाब के समय धर्म राज ने कहा कि पांच यज्ञ में एक

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

यज्ञ अक्षय है जिसका कबहीं नाश नं हो तू किसका फल चाहता है साहूकार ने चकित होकर बिनय किया कि महाराज मैंने चार यज्ञ किये हैं पांचवां यज्ञ कौनसा है धर्म राजने कहा कि पांचवां यज्ञ अक्षय वह है कि तूने कुतिया पर दया करिके अपना सब भोजन दे दिया अभिप्राय यह है कि थोड़ीसी दया यज्ञ के फल को देती है कोई का सिद्धान्त यह है कि जो दया होगी तो जीव घात करने से आप से आप किनारा करैगा और कोई यह कहते हैं कि दया अहिंसा का एक अंग है और गीता जो में भगवत् ने अहिंसा धर्म अलग गिना और दया अलग सो इनके बिरोध का निर्णय वो बाद लिखना सब व्यर्थ है शास्त्र में जो दया वो अहिंसा के अंग सब सुन्ने में आये तो बराबर हैं इस हेतु दोनों को बट वो बटबीज न्याय समझ लेना चाहिये सो यह अहिंसा धर्म वह है कि जिसके वर्णन में शास्त्रों ने यह कहा है कि अहिंसा सब धर्मों का नायक है सोरहं अध्याय भगवत् गीता में भगवत् ने सब धर्मों से प्रथम अहिंसा को वर्णन किया और इसी प्रकार दशवें अध्याय में पतंजलि महाराज ऋषीश्वर ने जहां आंठ सिद्धि वर्णन की तहां सबसे प्रथम अहिंसा सिद्धि लिखी है इस कारण से कि जो अहिंसा सिद्धी सिद्धि होजावै तो अन्य सिद्धि आप से आप प्राप्त होजावैं किस कारण से कि जब अहिंसा सिद्धी की और मनदृढ़ हुआ तो सब जीव भगवत् रूप विचार में आवैंगे और जब भगवत् को सब जगह प्राप्त देखा तो भगवत् मिल गया और जब भगवत् मिला तो सब कुछ मिल गया जाने रहो कि अहिंसा आदि आठ सिद्धी पातंजल में भगवत् की प्राप्ति होने के हेतु हैं और अणिमादिक आठ सिद्धी संसार के अर्थ उनसे अलग ठग वो डाकू भगवत् प्राप्ति की राहकी हैं अरे मन विचार कर कि यह समय फिर हाथ नहीं आवैगा जो अब भी श्रीकृष्ण स्वामी के चरण में न लगा तो फिर कहीं ठिकाना नहीं और विचार कर कि हिरण्यकश्यप वो रावण वो सहस्र बाहु आदिक सैकरों ऐसे २ होगये कि जिन्हों ने यमराज को भी अपने बंश में कर लिया था जब कि वे सब मृत्यु से न बचे तो तेरी क्या गिनती है जिनके साथ तू प्रीति करके अपना जानता है वे केवल इस शरीर और अपने सुख के साथी हैं संसार समुद्र के उतारने में कोई तेरी सहाय करने वाला नहीं फिर तू उनके हेतु क्यों अपने परलोक का नाश करता है, अब अपनी हानि लाभको समझ और इस समाज के चिंतवन में रहा कर कि दोनों लोक तेरे बनैं जिस समय जनकपुर वासियों के करोड़ों जन्मों के जप तप पुन्य के फल उदय भये और राजा जनक के ज्ञान वैराग्य के वृक्ष फले अर्थात् श्री रघुनन्दन स्वामी शोभा धाम ने उन लाखों राजोंकी सभा में कि जो सुमेर वो कैलाश को राई के दाने के सदृश उठा सक्ते थे और उस राज मण्डप में कि जिसके द्वार वो दीवार सब स्वर्णमय भांति २ के जवाहिरात से जड़े थे और चंदोआ जरी

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

का कि जिसमें झालरैं मोतियों की लगी थीं छाई थीं शिव जी का धन्वा तृण के सदृश तोड़ कर डाल दिया और धरती आकाश से फूलों की वर्षा वो जय जय कार वो नेवछावर वो बधाव बजना आरम्भ हुआ उस समय जनक नन्दिनी अखिल ब्रह्मांडेश्वरी जैमाला पहिराने को चली शोभा जगत जननी की यह मति मन्द तो क्या लिख सक्ता है इस ध्यान में सारदा गूंगी और शेष जी विमा जीभ हैं सखियों के समाज में कि वह सब शोभा वह छवि की मूरति थी धीरे धीरे बड़े उत्साह और उमग समन परमानन्द से भरा हुआ गुरजन लोगों की लज्जा से लजाती हुई शोभा धाम महाराज के सन्मुख पहुंचीं और कहने से सखी सहेलियों के दोनों हस्त कमल उठा कर जैमाला दूशरथ नन्दन महाराज के गले में पहिराई जिस समय दोनों का मुख चन्द्रमा एक से एक बराबर हुआ सब ओर से मन एकाग्र होकर परस्पर रूप अनूप देखने में नयन एक से एक का मिल कर रह गये उस समय का समाज और समा देख कर देवता आदि तो अपने अपने स्थान पर भीत के खिंच से होगये और जनक आदि को महा आनन्द वो प्रेम से वेसुधिता होगई दशरथ नन्दन के श्यामसुन्दर कपोलों पर कुण्डल के मोतियों की झलक ऐसी छवि देती थी कि बरबस मन हाथ से जाता था और ऐसाही भाल पर केशर वो गोरोचन का तिलक बिराज मान सिर पर जवाहिरात जड़ा किरीट मुकुट आंखैं अरसीली वो रसीली की चंचल चितवन गले में कंठी वो फूलों की माला बाग़ा धानी जरीका शोभाय मान कमर कसे हुए हैकल जड़ाऊ दोनों ओर पड़े हुए एक ओर तरकस शोभित है और दूसरी ओर कमान वो जनक दुलारी के दोनों हाथ माला लिये कांधे पर आये हुए और मन्द मुसक्यान दोनों सन्मुख परस्पर बिराज मान॥

कथा शिबर की॥

राजा शिबर की कथा पुराणों में और विशेष करिके महाभारत में लिखी है कि दया दान वो शरण देनेवाले और धर्मात्मा हुए अश्वमेधादिक बहुत यज्ञ करिके ब्राह्मणों को हर एक प्रकार के दान दिये भगवत् प्रेरणा करिके राजा इन्द्र को दया वो शरणागत वत्सलता की परीक्षा की चाहना हुई अग्नि देवता को कबूतर बना कर आप बाज का रूप धरके आया कबूतर ने बाज के भय से कांपता राजा के दामन में शरण ली वो बाज से वो राजा से बड़ा वाद हुआ बाज कहै कि हमारा अहार छीनते हो राजा कहै कि शरण में आये को न रक्षा करना अधर्म है नितान्त अपने शरीर के मांस देने पर बाज मान रहा जब मांस पलरे पर काट के धरा तो कबूतर का पलरा भरती न छोड़ै मांस काट २ धरते धरते नहीं बराबर हुआ तब राजा सिर काट कर धरने लगा तब दोनों देवता प्रगट

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

ऊए वरदान देकर स्तुति की वो शरीर जैसा था वैसा करिके चले गये भगवत् भक्त भी भगवत् रूप हैं जो कुछ करैं आश्चर्य्य नहीं॥

राजा मयूरध्वज की कथा॥

राजा मयूरध्वज और उनकी धर्म पत्नी और ताम्रध्वज उनका पुत्र ऐसे परम भक्त दयावान ऊए कि भगवत् ने घर बैठे दर्शन दिया और परीक्षा में दृढ़ देखा वृत्तान्त यह है कि जब राजा युधिष्ठिर ने अश्वमेध यज्ञ किया और अर्जुन को रक्षा के निमित्त साथ करके घोड़ा यज्ञ का छोड़ा तो उसी समय राजा मयूरध्वज ने भी यज्ञ आरम्भ किया था वो ताम्रध्वज घोड़े के साथ था राह में दोनों का भट भिरा ऊआ ताम्रध्वज ने उस अर्जुन को कि जिसने महाभारत में विजय को पाया था और उन श्री कृष्ण महाराज को कि शुद्ध सच्चिदानन्द घन पूरण ब्रह्म हैं और जिनके नाम की कृपा से जय का नाम भी जय है जीत के घोड़े को बल से छीन लिया भक्तानुकूल महाराज ने देखा कि यहां दोनों भक्त हैं एक को जय दी जाय तो दूसरे की अभिलाषा भंग होगी इस हेतु परीक्षा के निमित्त आप दृढ़ ब्राह्मण बनि और अर्जुन को लड़के का रूप बना कर राजा मयूरध्वज के द्वार पर गये राजा यज्ञ शाला में था दण्डवत् करके आदर वो विनय पूर्वक पूछा कि आगमन का हेतु क्या है ब्राह्मण ने कहा कि जंगल में एक व्याघ्र है उसने इस बालक के खाने की इच्छा की बहुत मैंने कहा कि इसके बदले हमको खाले पर उसने न माना कहा कि तू बूढ़ा है तेरा मांस मेरे काम का नहीं नितान्त बड़ी प्रार्थना वो रोदन करने से यह ठहरा कि जो राजा का आधा शरीर खावे तो इस बालक को छोड़ देवैंगे इस हेतु तुम्हारे पास आया हूं जो बन सकै तो इस बालक की रक्षा करो राजा को बड़ी दया आई और कहा कि निश्चय यह शरीर एक दिन जाने वाला है ऐसे काम में आवे तो इससे अच्छा क्या है ब्राह्मण ने कहा कि एक वचन व्याघ्र का यह भी है कि जिस आरे से राजा का शरीर चीरा जाय वह आरा एक ओर राजा के बड़े बेटे के हाथ में होय और दूसरी ओर राजा की स्त्री के हाथ में होय और किसी प्रकार का किसी को शोक वो दुःख न हो राजा ने इस बात को भी अंगीकार किया ताम्रध्वज ने ब्राह्मण से कहा कि शास्त्र के मत से बेटा भी बाम का रूप है जो मेरा आधा शरीर लिया जाय तो अच्छी बात है ब्राह्मण ने कहा कि तू राजा नहीं फिर राजा की स्त्री ने कहा कि मैं भी राजा की अर्द्धांगी हूं जो राजा के आधे शरीर के बदले मुझको लें जावे तो व्याघ्र को और अधिक संतुष्टता होय ब्राह्मण ने कहा कि तू स्त्री है राजा नहीं फिर तो ब्राह्मण ने ताम्रध्वज को राजा के सामने इस कारण कि परस्पर देखकर मोह उत्पन्न होजाय वो पीठ पीछे स्त्री को खड़ा किया

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

और दोनो आरा राजा के सिर पर रख कर खींचने लगे जब आरा राजा की नाक तक पहुंचा तो बाम नेत्र से राजा के पानी निकला ब्राह्मण ने कहा बस यह शरीर मेरे कार्य के योग्य नहीं कि राजा दुखित होकर देता है राजा ने विनय किया कि महाराज कृपा करो क्रोध न करियै जिस ओर की आंख से पानी निकला है उस ओर के शरीर को यह दुःख है कि मैं बड़ा पापी हूं कि किसी काम में न आया दाहिना अंग बड़ा बड़भागी है कि ब्राह्मण के काम आया भगवत् करुणासिन्धु इस बचन के सुनतेही भक्ति और बिश्वास से अत्यन्त प्रसन्न हुए कि प्रेम में बिह्वल होगये और राजा को आरे के बीचे से उठाकर छाती से लगा लिया और निज रूप से राजा को दर्शन दिया भगवत् के स्पर्श होते ही राजा के सिर का घाव अच्छा होगया और भगवत् ने कहा कि तुम्हारी धर्म निष्ठा से बहुत प्रसन्न हूं जो चाहना हो सो कहो पूर्ण करूंगा राजा ने हाथ जोड़ कर निवेदन किया कि हे करुणा सिंधु महाराज आपने अनुग्रह किया तो और कौन पदार्थ अब रह गया जो मांगूं केवल चरण कमलों की प्रीति चाहता हूं और एक प्रार्थना यह है कि कलि काल आगे पर आने वाला है सो अब ऐसी परीक्षाओं से भक्त बचे रहैं भगवत् ने अंगीकार किया और फिर अर्जुन और राजा का भेंट मिलाप करा कर मेल करा दिया राजा ने बहुत हर्ष से घोड़ा फेर दिया इस चरित्र से भगवत् की कुछ अर्जुन का गर्व दूर करना प्रयोजन था सो भी होगया॥

भवन की कथा॥

भवन राजपूत चौहान के राजा सरकार में दोलाख रुपैया के उत्तम पदवी वाले राज सेवक और भगवत् भक्त दयावान और साधु सेवी हुए एक बेर राना के साथ शिकार में एक हरिनी के पीछे घोड़ा डाला और उसको तरवार से मारा वह गर्भ से थी बच्चे सहित दो टुकड़े होगई भवन को बड़ी दया और लज्जा हुई मनसे कहने लगे कि प्रगट में तो मैं ऐसा कि भगवत् भक्तों में गिना जाता हूं और आचरण यह कि जो भगवत् बिमुख भी न करैं उसी समय प्रण किया कि लोहेकी तरवार रखनी प्रयोजन नहीं सो एक तरवार काठ की और मूंठ उसकी लोहेकी बनवा ली जब कबहीं राना के दरबार में जाते उसी तरवार को साथ ले जाते एक पट्टीदार भाई को यह वृत्तान्त ज्ञात हुआ राना से कह दिया राना को बिश्वास न आया उसने सौगन्द खाकर कहा तब भी राना ने इसकी निर्णय करने में एक बरस बिताया जब उस चुगुली खोर ने यह हठ किया कि जो झूंठ ठहरे तो मुझ को बध का दण्ड दिया जाय तब एक जगह सभा की और सब उत्तम राज सेवक इकट्ठे हुए पहिले राना ने अपनी तरवार निकाल कर लोगों को दिखलाया फिर

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

वारी के साथ सब की तरवार देखी जब बारी भवन माहाराज की पहुंची तब तलवार निकाल कर यह कहा चाहते थे कि जो चाहो सो करो तरवार मेरी दारु अर्थात् काठ की है पर भगवत् इच्छा से यह बचन मुख से निकलाकि सार अर्थात् पोलाद की है यह कह कर तरवार को मियान से ईंचा और ऐसी निकली कि मानों हजार बिजुरी एक बेर बादल से निकलीं उजेरी वो तड़प से सब की आँखें बन्द होगईं राना ने कहा कि मारो चुगुल अभागे के शिर पर और यह कह कर उसके बध की इच्छा की भवन ने बिनय किया कि इसने कुछ मिथ्या नहीं कहा है भगवत् की इच्छा से यह तरवार पोलाद की होगई है नहीं तो दारुव करिके लकड़ी की थी राना को भक्ति का बिश्वास हुआ और चाकरी के परि श्रम से छुट्टी करके पट्टा जागीर का सदा काल का लिख दिया और बिनती की कि जो दर्शन देने को आया करो तो मेरा निस्तार है जाने रहो कुछ आश्चर्य नहीं जो काठ की तरवारु को भगवत् ने पोलादी कर दी किस हेतु कि भगवत् भक्तों की इच्छा वो बचन तरवार से अधिक है कि पापियों के पाप की सेना को बध करके दृढ़ राज भक्ति देश को कृपा करके दे देते हैं जो उनके मुखसे एक लकड़ी के निमित्त बचन पोलाद निकल गया और उसी प्रकार वह होगया तो क्या आश्चर्य है॥

कथा रांका की॥

यह रांका परम भक्त भगवत् के जाति के कुम्हार हुए जो कुछ अपनी जाति वृत्ति से उत्पन्न करते सो सब हरि भक्तों की सेवा में लगा देते एक बेर कच्चे बरतनों का आवां बना कर तैयार किया और किसी कारण से दिन में आग न डाली रात के समय एक बिलाई ने बच्चे दिये और एक कच्चे बरतन में रख कर चली गई रांका जी को यह बात मालूम न हुई प्रभात को आग लगा दी जब आग ने अच्छा प्रकाश वो जल किया तब यह बात जानी बिकल होकर बच्चों के निकालने के उपाय में लगे पर कुछ न होसका अधिक दुःख वो शोक हुआ उस रोदन करने के समय सिवाय एक भगवत् के और कोई रक्षा करने वाला न सूझा जाने रहो कि जो रांका जी का सब घर जल जाता अथवा उनके प्राणों को संकट कोई आता तो भगवत् से कबहीं न कुछ कहते किस हेतु कि जब भगवत् भक्त अपने स्वामी से मुक्ति तक की याचना नहीं करते दूसरी बातें तुच्छ की कब चाहना करते हैं और बिना मांगे जांचे उनकी इच्छा सब पूर्ण हो जाती है भगवत् से मांगने का प्रयोजन नहीं इस लिखने का प्रयोजन यह कि भगवत् भक्तों को दया और करुणा पर दृष्टि करना चाहिये कि एक तुच्छ जीव का दुःख नहीं सहि सक्ते और बिकलता की अवस्था में जो काम कबहीं न किया सो भी कर बैठते हैं जब भगवत् ने

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

बक्कल दशा अपने भक्तकी देखी तो यह चरित्र किया कि सब आवां पकि गया पर वह बरतन जिस में बच्चे थे कच्चा रख दिया अग्नि की उष्णता भी न पहुंची रांका जी उन बच्चों को कुशल देखकर तनमें न समाये और भगवत् को अति प्रेम से दण्डवत् प्रणाम किया तब से कुम्हारों में यह रीति है कि जब आवां तैयार हो उसी दिन आग लगा देते हैं॥

केवल राम की कथा॥

केवल राम जी ऐसे परम भक्त और भागवत् धर्म के प्रवृत्ति करने वाले हुए कि जिन लोगों ने कभी भक्ति और भगवत् और गुरू और भक्तों के नाम को भी नहीं जाना था ऐसे लोगों को पवित्र करके भगवत् में लगा दिया दुःख सुख मिश्र शत्रु से अलग और तिलक माला नवधा भक्ति के बड़ी भंत बड़े दृढ़ थे भगवत् के चरणों में प्रीति और भक्ति निष्काम हुई और लोगों पर दया और कृपा बिना कारण सब के घर पर जाकर किया करते थे कि श्रीकृष्ण स्वामी की सेवा और नाम में मन लगाओ यह दान हम को दें और भागवत् धर्म उनको समझाया करते जहां कहीं दस बीस साधु देखते उनको शालग्राम जी और भगवत् मूर्ति अपने पास से देकर पूजा और सेवा की रीति उपदेश किया करते एक बेर बनजारे ने अपने बैल पर कोड़ा मारा स्वामी जी बेसुधि वो बिकल होकर धरती पर गिर पड़े लोगों ने दौड़ कर उठाया जो शरीर पर निगाह किया तो साठ कोड़े की मारका उपड़ा हुआ साफ दिखाई पड़ा सब को आश्चर्य हुआ कि यह रीति दया की जाने किसी ने सुनी होगी॥

कथा हरिव्यास की॥

हरिव्यास जी ऐसे भगवत् भक्त हुए कि देवताओं को अपना चेला करिके भगवत् का भक्त कर दिया भगवत् भक्तों से ऐसी प्रीति थी कि कबहीं उनसे अलग नहीं होते और जिस प्रकार राजा जनक ऋषीश्वरों के सत्संग और जमावड़ी में रहा करते थे इसी प्रकार हरिव्यास जी रहा करते साधों की सेवा करने वाले ऐसे हुए कि संसार में कदाचित् कोई हुआ हो सिवाय भगवत् और भक्तों के चरित्र से दूसरी ओर मन नहीं देते एक बेर चरथावलग्राम में हरा बाग देख के टिके और इच्छा थी कि भगवत् की सेवा पूजा करके भगवत् प्रसाद बनावेंगे उसी बाग में एक दुर्गा का मन्दिर था किसी ने वहां बकरा मारा हरिव्यास जीको दया खाता करिके कि स्वभाव हरि भक्तों का है बहुत करुणा आई और मन को व्यथा हुई भूखे प्यासे भजन करते रहे दुर्गा महाराणी भगवत् भक्तों के दुःख को न सहि सकी साक्षात् होकर हरिव्यास जी से कहा कि भगवत् प्रसाद करें हरिव्यास जीने उत्तर दिया कि जहां ऐसा अन्याय होता है तहां रसोई किस प्रकार होसक्ती है दुर्गा ने कहा कि मेरे

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

ऊपर कृपा करिके अपराध क्षमा करो और भगवत् मंत्र उपदेश करके इस नगर को प्रविच करदेव हरिव्यास जीने देखा कि दुर्गा के चेले होने से सब लोग दुरस्त होते हैं इस हेतु भगवत् मंत्र का उपदेश किया जब दुर्गा वैष्णव ऊई तब नगर को वैष्णव करना उचित जाना जो सरदार था उसको रात के समय पलंग से डाल दिया और कहा कि जो अपना भला चाहता है तो हरिव्यास जी का सेवक होकर भगवत् भक्ति अंगीकार कर नहीं तो सब नगर का नाश कर देऊंगी तुरन्त सब लोग आये चेले होकर भगवत् भक्त होगये और जो अपराध किये थे सबसे छुट्टी पाई हरि व्यास जी कुछ दिन वहां रहे ऐसा उपदेश किया कि भंगी तक हरि भक्त होगये॥

निर्जला ग्यारहवीं॥

व्रत वो उपास के वर्णन में जिसमें कथा दो भक्तों की है॥

अद्भुत कुलिश रेखा श्रीकृष्ण स्वामी के चरण कमलों को दण्डवत् करके नृसिंह अवतार को प्रणाम करता हूं कि अपने परम भक्त प्रह्लाद के निमित्त सुलतान नगर में नृसिंह रूप धारण करके हिरण्यकशिपु को परम धाम दिया उपासक भगवत् प्राप्ति के निमित्त उपाय दृढ़ है कि सब कोई बिना अन्य परिश्रम भगवत् को प्रपंच सक्त है लिखाना होक श्रुति वो पुराणों का कुछ प्रयोजन नहीं कि एकादशी वो जन्माष्टमी वो राम नवमी आदि के माहात्म्य को पोथियां और अन्य व्रतों की विख्यात वो सब कोई जानते हैं निश्चय निर्णय व्रत एकादशी का दशमी के ऊपर है इस कारण से किदशमी विद्धा व्रत सब श्रुति वो पुराणों में वर्जित लिखा है और कारण वर्जने का यह है कि दशमी के दिन दैत्यों ने जन्म लिये जो दशमी विद्धा व्रत हो तो दैत्य और राक्षसों की वृद्धि होकर धर्म का नाश होजाय और एकादशी के दिन देवता उत्पन्न ऊए इस हेतु एकादशी व्रत से देवता प्रसन्न होते हैं और भगवत् प्रसन्न होकर व्रत करने वाले के हृदय में प्रकाशित होते हैं वेध भेद को कहते हैं अर्थात् पहिले दिन आरंभ में दशमी हो फिर एकादशी सो वेध के निर्णय में कईविरोध ऊए स्कंद पुराण में चालीस घड़ी का वेध लिखा है अर्थात् जिसके आरंभ में चालीस घड़ी दशमी होय तो उसके प्रभात व्रत करना चाहिये जो चालीस घड़ी से अधिक दशमी होय तो दूसरे दिन अर्थात् द्वादशी को व्रत होगा सो इस वचन पर निश्चय काली कंठी वाले रखते हैं जाने रहो कि काली कंठी वाले वल्लभ जी के चेले कहलाते हैं मत उनका वैष्णवी है दुआबे यमुना

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

वो गंगासे सिवाय दूसरे देश में इस पंथ वाले नहीं हैं मौजे रनदेवा सहारनपूर के इलाके में उनका गुरद्वारा है आचार्य्य इस पंथ का योग्य वो सिद्धि या रीति उपासना की उचित वो अंगीकार योग्य है वो शास्त्रों के अनुसार है पर इस समय इस पंथ में कोईपण्डित योग्य वो सिद्धि और जानने वाला भेद उस उपासना का नहीं इस कारण से प्रकाश कम है बस बहुत घराने से न जानने के कारण से वह उपासना त्याज्य होगई है अब स्कंद पुराण में बीस प्रकार का निर्णय इस व्रत में आया अर्थात् जो किसी ने इकतालीस घड़ी दसमी को उचित जाना तो वह एक प्रकार ठहरी और इसी भांति जिसने पैंतालीस घड़ी को सिद्धान्त किया तो यह दूसरी प्रकार हुई इसी क्रम से साठ घड़ी तक बीस प्रकार की होगई और नाम हर एक के ब्याली वो महा ब्याली वो भया वो महा भया इत्यादि लिखे हैं सो सिवाय काली कंठी वालों के और कोई उस पंथ का प्रवर्तक नहीं इस हेतु विस्तार वो वर्णन करना प्रयोजन नहीं समझा और चारों संप्रदा के वेध का निर्णय यह है कि निम्बार्क संप्रदा वालों ने श्रुति वो स्मृति की आज्ञा के अनुसार पैंतालीस घड़ी के वेध को अंगीकार किया अर्थात् प्रारंभ अगिले दिनका पिछली अर्द्ध राचि से है जो आधी-रात के उपरांत दशमी होय तो अगिले दिन व्रत करना न चाहिये क्योंकि दशमी का वेध होगया और इस रीति को कापालिक वेध कहते हैं विशेष करके सिद्धान्त जानने वालों को उपासना का यह निश्चय है कि ग्रीष्म ऋतु में सैंतालीस घड़ी पर आधी रात होती है और हेमन्त ऋतु में सैंतालीस घड़ी पर सो जिस तिथि में जितनी रातगत होने पर आधी-रात हो उस को मुख्य जानना चाहिये पैंतालीस घड़ी के प्रबन्ध का प्रयोजन नहीं पर सामान्य विख्यात पैंतालीस घड़ी के वेध की है और रामानुज संप्रदा में स्मृति को पुराण की आज्ञा के अनुसार पचपन घड़ी तिथि आज के बीतने पर अगिले दिन को ग्रहण किया है अर्थात् आधी मुहूर्त का आठवां भाग रात का है जब से प्रारंभ हो तब से तिथि का आरम्भ है वो प्रमाण रात का भारतखण्ड में चालीस घड़ी तक है इस हेतु आठवां भाग रात का पांच घड़ी हुआ सो इस संप्रदा के अनुगामी पचपन घड़ी से अधिक होय तो अगिले दिन व्रत नहीं करते जो कम होय तो करलेते हैं और रही दो संप्रदा एक विष्णु स्वामी वो दूसरी माध्व सो उनका निश्चय भी ऊपर की लिपि के अनुसार है पर कोई २ ने आठवां भाग रात का चार घड़ी भी अंगीकार किया है इस हेतु छप्पन घड़ी दशमी का वेध मानते हैं वो स्मृति लोगों में न होने एक निश्चय वो निष्ठा के कारण से कईमत हैं अर्थात् कोई तो पैंतालीस घड़ी और कोई पचपन घड़ी कोई छप्पन घड़ी मानते हैं और कोई अरुणोदय

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

बेध मानते हैं अर्थात् अट्ठावन घड़ी से अधिक दशमी होय तो अगिले दिन व्रत नहीं करते और कोई तिथि का प्रारंभ सूर्य्योदय से मानते हैं उस समय दशमी हो तो व्रत नहीं करते नहीं तो साठ घड़ी दशमी तक बेध मानने का प्रयोजन नहीं और कोई ग्यारह का आंक मुख्य जानते हैं यह कि पत्रे में जिस दिन ग्यारह का आंक हो उसी दिन व्रत करते हैं और जो पंद्रह दिन में एकादशी घट जाय और पत्रे में ग्यारह का आंक न हो तो व्रत नहीं करते कश्मीर इत्यादि देशों में पश्चिम पांच घड़ी दिन चढ़े तक जो दशमी हो तो उसी दिन व्रत करते हैं पश्चिम देश में दशमी बिद्धव्रत करने का कारण यह है कि शुक्राचार्य्य दैत्य अरु राक्षसों के गुरू थे उनको अपने शिष्यों की वृद्धि करनी थी इस हेतु उस व्रत की प्रवृत्ति चला दी पर विष्णु नारायण ने दशमी बिद्धा व्रत को त्याज्य किया और इसका निषेध आप वैकुंठ से आय कर ऋषीश्वरों से कहा कि यह वृत्तान्त पद्म पुराण इत्यादि में विस्तार करिके लिखा है सो उस शुक्राचार्य्य के मत को मूर्खों ने अब तक अंगीकार कर रक्खा है कोई का यह मत है कि एकादशी को नाज खाना वर्ज्जित है सो जिस घड़ी एकादशी प्रारंभ हो अन्न जल छोड़ देना चाहिये और जब द्वादशी प्रारंभ हो पारन करना उचित है इसके आचरण न करने वाले दक्षिण देश में सुने जाते हैं सो हरएक देश की रीति वो उपासना का विरुद्ध जो है सो लिखा गया पर शास्त्र के जानने वालों से विशेष है करिके तीन प्रकार के बेध की रीति है एक पैंतालीस घड़ी दूसरी पचपन घड़ी तीसरी छप्पन घड़ी और यह भी जाने रहो कि शास्त्रों में जो उत्सर्गक व्रत का पुण्य बड़ा लिखा है सो उस उत्सर्गक का है कि जो प्रारंभ तिथि में घड़ी दो घड़ी एकादशी हो और फिर द्वादशी आरंभ होकर तिथि के बीतने के पहिले त्रयोदशी आरंभ होजाय और उस उत्सर्गक का पुण्य नहीं लिखा है कि जिस के आरंभ में दशमी हो पीछे एकादशी उसी तिथि में भोग करके फिर द्वादशी प्रारंभ कर जाय बरु दशमी के बेध के कारण से यह उत्सर्गक त्याज्य और निषेद है॥ जन्म अष्टमी व्रत में श्री संप्रदा वाले सिंह के सूर्य्य में जो अष्टमी हो उसको जन्म अष्टमी मानते हैं और उस अष्टमी में कृत्तिका नक्षत्र अथवा सप्तमी का बेध एकादशी के बेध की रीति से मानना योग्य है जाने रहो कि जन्म उत्सव वो सालग्रह इत्यादि में जन्म के नक्षत्र पर दृष्टि होती है सो भगवत् का आविर्भाव रोहिणी नक्षत्र में हुआ इस हेतु कृत्तिका का बेध मानना योग्य है और जो सिंह का सूर्य्य भादों महीने में पांच दिन पीछे तक अष्टमी से न हो तो आश्विन में व्रत करते हैं और दूसरे संप्रदा वाले तीनों भादों वदी अष्टमी को मुख्य मानते हैं पर सप्तमी के बेध पर निश्चय करिके दृष्टि जाती है जो एक पल भी सप्तमी और सारा दिन और रात को

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

अष्टमी हो तो उस दिन व्रत न होगा अगिले दिन होगा कृत्तिका के वेध पर निगाह नहीं विष्णु स्वामी संप्रदा में वल्लभ कुलवालों के भाव की बात निराली है कि नेम पर प्रेम प्रबल है स्मार्त मतवाले चन्द्रोदयके समय अष्टमीका होना सिद्धांत समझते हैं सप्तमी के वेध पर कुछ दृष्टि नहीं रघुनन्दन महाराज का अवतार चैत्र शुदी नवमी को और श्री वामन जी का अवतार भादों शुदी द्वादशी को हुआ और नृसिंह जी का प्रादुर्भाव वैशाख शुदी चतुर्दशी को हुआ उन व्रतों में भी वेध अष्टमी वो एकादशी वो त्रयोदशी का मानना चाहिये और इसी प्रकार चैत्र शुदी द्वीज को सीता महारानी का और भादों शुदी अष्टमी को राधिका महारानी का जन्म उत्सव होता है उनके जन्म उत्सव वो अनन्त चौदश आदि व्रतों में वेध की रीति है पर जानेरहो की कोई तो भगवत् अवतार और महारानी जी के जन्म के दिन को व्रत मानते हैं और एकादशी की भांति निर्जल उपास करते हैं और भगवत् उपासक उत्सव समझकर उत्साह जैसे भगवत् जन्म और शालग्राह को करते हैं और जन्मके संसय के पीछे पञ्चामृत लेकर सब प्रकार के व्यंजन पकवान अपनी सामर्थ्य के योग्य भगवत् को अर्पण करके भोजन करते हैं और जो लोग जन्म अष्टमी के दिन यह बाद करते हैं कि अर्द्धरात्रि पीछे भोजन करना निषेध है उनको यह उत्तर देते हैं कि वह रात नहीं करोड़ों दिन से अधिक प्रकाशित है और यह भाव उनका सत्य वो सिद्धान्त है जन्म उत्सव की उमंग जिस प्रकार भक्त और उपासक लोग करते हैं कोई लिख नहीं सक्ता अपने अपने भाव और भक्ति के आधीन हैं कितने लोगों का ऐसा भाव देखने में आया कि पुत्र अथवा पौत्र के जन्म अथवा विवाह में जो एक रुपैया खरच किया तो भगवत् जन्म उत्सव में उसे दस गुण उत्सव किया और वह धूम धाम वो आनन्द किया कि अनायास निश्चय करिके भगवत् चरित्रों में मन लग जाय जो लोग एकादशी नेम के साथ करते हैं उनकी यह रीति है कि नवमी के दिन एक भुक्त हविष्यान्न जैसे चांवल वो मूंग वो जव वो गेहूं वो तिल वो घी खाते हैं और दशमी के दिन एक भुक्त फलाहार और एकादशी को निर्जल व्रत करते हैं व्रत के दिन को प्रभात से भगवत् भजन में व्यतीत करना उचित है दूसरी और चित्त न जाय गवाही और सुनसफी राह चलना शतरंज गंजीफा यह सब खेलना दिन को सोना स्त्री वो मिच का देखना और दूसरी निषेध सब जैसे पान वो अंजन इत्यादि जो कि बिस्तार करके एकादशी माहात्म्य में लिखा है यहां बिस्तार करके लिखना व्यर्थ समझा क्रोध वो मिथ्या बोलना इत्यादि का तो लिखने का प्रयोजन नहीं कि वे सर्वथा वर्जित हैं रात्रि को जागरण करना उचित है और जो किसी कारण से समाज भगवत् कीर्तन और भगवत् भक्तों का प्राप्त न होसके

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

तो आप अकेला भगवत् भजन में जागता रहै द्वादशी के दिन भजन पूजन किये पीछे ब्राह्मणों को यथा शक्ति श्रद्धा भगवत् प्रसाद भोजन कराकर और रुपया वो बर्तन वो अन्न वस्त्र यथा श्रद्धा दान देकर और फल उस व्रत आदि का भगवत् अर्पण करके तब आप भोजन करै पारण द्वादशी में उचित है और जिस दिन कि बेध के बिचार से व्रत द्वादशी को होगा तो पारण त्रयोदशी में आप से आप उचित होगा और जाने रहो कि द्वादशी शुक्लपक्ष आषाढ़ वो भादों वो कार्तिक में बीस बीस घड़ी अनुराधा वो श्रवण वो रेवती नक्षत्रों की पारण के निमित्त त्याज्य हैं जो उन बीस घड़ी में पारण करै तो बारह एकादशी के व्रत का फल जाता रहता है बीस बीस घड़ी तीनों नक्षत्रोंके निषेध का निर्णय कई प्रकार पर लिखा है पर बहुत लोगों का सम्मत शास्त्र के प्रमाण से निश्चय इस बात पर है कि अनुराधा नक्षत्र की बीस घड़ी नक्षत्र के प्रारम्भ से पहिली में वो श्रवण नक्षत्र की बीस घड़ी बीचली में वो रेवती की बीस घड़ी अन्त वाली में पारण निषेध है उन बीस घड़ी के आगे पीछे किसी समय कर लेवै और यह भी जाने रहो कि जो निर्जल व्रत न हो सकै वो निर्बलता से भगवत् भजन में बाधा देख पड़ै तो ऐसी दशा में इतना फलाहार और दूध अथवा जलका लेना उचित है कि सामर्थ्य जागरण और भगवत् भजन की बनी रहै और जो एकादशी व्रत के दिन शरीर ज्वरादिक करिके क्लेशित होजाय तो मूंग और गेहूं का भोजन करना वर्जित नहीं है ऐसी रीति और भगवत् प्रीति से जो कोई व्रत करते हैं उनके मुक्ति वो सद्गति में क्या संदेह है और एकादशी व्रत का जन्म वो फल और व्रतों से सद्गति होने का हेतु वो सब वृत्तान्त एकादशी माहात्म्य इत्यादि में लिखा है इस कारण यहां नहीं लिखा और जितनी बातें प्रयोजन की हैं उनको लिख दिया अब हमारे व्रत का वृत्तान्त सुनिये कि प्रीति तो ऐसी कि कबहीं याद नहीं रहता जो याद पड़ गया तो दशमी से चिल्ला चढ़ती अर्थात् रात्रि के समय अच्छे प्रकार पेट भर के खाया और फिर बिचार हुआ कि प्रभात को क्या क्या फलाहार होगा जब प्रभात हुआ तो बनना फलाहार का प्रारंभ हुआ और दो पहर के पहिले खाने को बैठ गये और इतना खाया कि दशमी के दिन भी कबहीं न खाया होगा तिसके पीछे आतेही पलंग पर आराम किया और जो दही वो कूटू वो सिंघारा वो तरकारी अथवा पेड़ा हलुवा भोजन उष्ण वो गरिष्ट वो तीक्ष्ण खाया था इस हेतु कई वेर पानी पिया कि पेट फूल गया और चारपाई पर लोटते रहे वो अबहीं भोजन पचा नहीं तब तक उस कूटु के मेवे तथा दवायें और उसी समय मंगाकर खाये पीछे रात हुई दूध और पेड़ा खाये और ऐसा शीघ्रता से चारपाई पर गिरे कि एक क्षण न बैठ सके सारी रात

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

गदहे की भांति लोटते रहे अगिले दिन चार घड़ी दिन चढ़े सुधि भई और भजन इत्यादि की बात क्या है यह भी न बना कि एक बार भी भगवत् का नाम मुख से निकला होवै वाहवा यह तो व्रत और भजन तिसपर चाहना सज्जनि और भगवत् धाम का हजार धिक्कार ऐसे जन्म और समझ और वेविश्वासी पर अरे मन पापी अब भी समझ और तनक बिचारकर कि भगवत् चरणों से बिमुख किसीने भी सुख पाया है जो तू इस समाज में दृढ़ होजाय तो तेरे उद्धार में क्या सन्देह है कि मौसम बरसात में जो सावन का महीना आया तो प्रिया प्रीतम को उमंग झूला झूलने की ऊई तो सब सखियों के सम्मत से बरसाने का पहाड़ इस समाज के निमित्त ठहरा जिसके चारों ओर बनकी हरियाली और कल्प वृक्ष वो तमाल वो कदम्ब वो पाढ़ल वो मौलसिरी वो चम्पा आदि वृक्षों पर बेल छाई ऊई सुगन्ध वारे फूल मौसमी वो बेमौसमी भगवत् सेवा के निमित्त फूलि रहे हैं और जहां तहां झरने झर रहे हैं घटा उमड़ी ऊई बादलों की मन्द मन्द गरजन में कभी २ बिजली की चमक मयूर वो सारस वो कोकिला वो चकोर इत्यादि पक्षियों का शब्द मनोहर शीतल मन्द सुगन्ध पवन अर्थात् किशोर किशोरी के आनन्द वो प्रसन्नता के निमित्त वह पहाड़ ऐसा शोभायमान वो आनन्द बढ़ाने वाला ऊआ कि बरबस स्नेह वो शृंगार वो प्रेम वो प्रीति सब जगह से उत्पन्न होती थी वहां एक कल्पवृक्ष के पेड़ में सखियों ने वो स्वर्णसूत्र आदि की डोर का झूला डाला और उसमें सिंहासन रत्न जड़ित डाल कर जरी वो मखमल वो कीमखाब का बिछौना मोतियों की झालर लगा ऊआ बिछायकै संवारा उसमें पिया प्रीतम विराजमान ऊए और एक वो चन्द्रावली वो ललिता वो बिशाखा वो श्यामला वो श्री भती और दूसरी ओर धन्या वो रंगदेवी वो पद्मा वो भद्रा और अन्य सखी सब पखावज वो बीना वो बांसुरी वो सारंगी वो सितार वो तंबूरा झांझ इत्यादि साज वो समाराग का दुरुस्त करके झुलाने और गाने के निमित्त खड़ी ऊईं राग मलार आरंभ करिके प्रिया प्रीतम को झुलाने लगीं और वह समा वो समाज दरसा कि ब्रह्माणी वो पारवती वो इन्द्राणी आदि सब भीत की चित्र होगईं और सब राग वो रागिनी वेसुध बुधि हो रहीं उस समय की शोभा वो शृंगार वो सामान वो बहार वो हंसी ठट्ठा वो आनन्द का किसे वर्णन हो सक्ता है सारा बन वो पहाड़ परम आनन्द वो मंगल का देनेवाला हो रहा था और हर एक सखी मोहिलेने के निमित्त उसे मनमोहन के कि जिसकी माया के कटाक्ष में करोड़ों ब्राह्माण्ड नाचते हैं मोहनी रूप सब के गोरे मुख चन्द्रमा पर अलकों की लटैं छुटी ऊईं माथे पर टीका वो बेंदी उसके ऊपर चन्द्रिका कानों में करण फूल और झुमका पचलड़ी वो चम्पाकली

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

वो हैकल आदि गले में हाथों में बाजूबन्द वो चूड़ी वो कंगन जड़ाऊ वो अंगुलियों में अंगूठी छल्ले आरसी और दुपट्टे लहंगे सुरख वो सबज वो गुलेनारी वो धानी वो बैंगनी वो नारंजी आदि रंगों को अपने अपने अंगों वो रूपरंग के जरीगोटे पट्टे से भरे पहने हुए पांवों में पायजेब वो झांझैं वो बिछुए वो सजिक पगफूल उन सब सखियों के समाज में नट नागर ब्रज चन्द्र महाराज की कैसी शोभा है कि जिस प्रकार करोड़ा छवि मूर्ति मानों सेंइंगार विराजमान हो शोभा बोसजाट वो दमक झमक वस्त्र अलंकार ऐसा मनोहर वो चित्त को हरै है कि सब सखियां सुख चन्द्रमा की चकोर होरही हैं एक हाथ किशोरी जी के गले में और दूसरे हाथ से अलकैं जो पवन के झोंके से उरझ गई थीं सुलझाते हैं कबहीं चन्द्रावली वो ललिता आदि से ठट्ठा वो छेड़छाड़ है और कबहीं तिरछे नैनों से नैन मिलाकर सुन्दरता वो विलास देखते हैं और कबहीं राग गाने वो सुनने पर चित्त है और कबहीं छबभान नन्दनी से हंसी वो खेल वो अंक मेल है इसके आगे इस रस का अन्त नहीं जो इति श्री लिखूं ॥

अंबरीष की कथा ॥

राजा अंबरीष चक्रवर्ती परम भक्त हुए जिनके गुण वो दान वो यज्ञ का यश पुराणों में प्रसिद्ध है और सर्व सुख जो इन्द्रादिक को कठिन से मिलै सो सब प्राप्त था पर कबहीं उनमें मन न लगाया भगवत् सेवा में ऐसी प्रीति वो निश्चय था कि सब कैंकर्य्यता भगवत् की अपने हाथ से करते थे किसी सेवक को नहीं करने देते और एकादशी व्रत की जो आज्ञा शास्त्र की है तिसको राजा ने अत्यन्त पालन किया नवमी को दशमी के नेम वो संयम के पश्चात् एकादशी व्रत करके जागरण किया करते थे और द्वादशी के दिन सब प्रकार द्रव्य वो वस्त्रादि वो कई करोड़ गऊ दान करके और ब्राह्मणों को सब प्रकार के भोजन प्रसाद जिमा करके तब आप पारण करते एक वेर दुर्वासा ऋषीश्वर आये राजा ने सत्कार वो दण्डवत् करके भोजन के निमित्त विनय किया दुर्वासा ने कहा कि स्नान कर आवैं सो स्नान करने गये संयोग वस उस दिन द्वादशी दो दंड रही राजा को पारण की चिन्ता पड़ी वो ब्राह्मणों के सम्मत वो आज्ञा से नारायण का चरणामृत पान कर लिया जब दुर्वासा जी आये और यह वृत्तान्त सुना तो क्रोधाग्नि से ज्वलित होकर राजा के मारने को उद्यत हुए और अपनी जटा से काल कृत्या नामी अग्नि की ज्वाला ऐसी उत्पन्न करी कि वह राजा के भक्ष करने को दौड़ी भगवत् जो कि सर्व काल अपने भक्तों की रक्षा के चिन्ता में रहते हैं दुर्वासा के गर्व को न सहिसके चक्र सुदर्शन को आज्ञा दी उसने पहिले तो काल कृत्या को ऐसा सुधिलो कि भस्म कर दिया फिरि दुर्वासा ऋषीश्वर को सेवा की सुधि लेने को चले दुर्वासा जी अपने प्राण के भय से

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

भाग निकले और चक्र सुदर्शन जीने रगेद लिया सारे संसार वो ब्रह्मलोक और कैलाश आदि में सब लोक पाल वो देवता आदि की बिनय वो प्रार्थना करते फिरे पर कोई उनकी रक्षा करने को सामर्थ्य न हुए और निश्चय यह बात है कि ऐसा कौन है कि भगवत् भक्त के द्रोही को रख सकै जब कहीं शरण न पाई तब बैकुण्ठ निवासी बिष्णु भगवान के पास गये और वहां से यह उत्तर पाया कि यद्यपि मैं तुम्हारी रक्षा कर सक्ता हूं पर बिचार करना चाहिये कि जो मेरे भक्त सब सुख छोड़ कर मेरे शरण हुए हैं और मुझसे सिवाय और कुछ आश्रय उनको नहीं तो किस प्रकार उनका अपमान हमसे सहा जाय कि तुम्हारी रक्षा करूं सो तुमको उचित यही है कि तुम राजा अंबरीष की शरण जाकर अपना अपराध क्षमा कराओ यह सुनकर दुर्वासा निरास हुए फिरि राजा की शरण में आये दण्डवत् करि के त्राहि त्राहि पुकारे राजा ने स्तुति वो प्रार्थना से सुदर्शनचक्र को शीतल करिके दुर्वासा जी का मान सन्मान ऐसा किया कि सब दुःख भूल गये और यह जानिये कि दुर्वासा जी एक वर्ष तक ब्याकुल भ्रमते रहे पर राजा ज्यों का त्यों दया करिके युक्त एक स्थान पर खड़ा रहा और दुर्वासा के क्लेश का सोच करता रहा सत्य है कि भगवत् भक्तों को किसी के साथ वैर नहीं होता क्योंकि उनकी दृष्टि में यह जगत् भगवत्रूप है अथवा भगवत् भक्त रूप है पीछे राजा ने दुर्वासा जी को भोजन कराया आप भोजन किया यह दयालुता भक्तों की देख यश गाते हुए अपने आश्रम को गये इस कथा में एक संदेह उत्पन्न हुआ कि भगवत् का प्रण है कि कैसाही पापी शरण आवै अभय कर देता हूं अब दुर्वासा शरण गये न रक्षा की तो प्रण में बिरुद्ध पड़ा सो जाने रहो कि पहिले तो भगवत् ने आप दुर्वासा को उत्तर देने के समय संदेह यह दूर कर दिया सो ऊपर लिख आये सिवाय इसके भगवत् का बचन है कि सब पाप क्षमा करता हूं पर ऐसा पाप नहीं एक यह कि मेरे भक्तों का जो अपराध करै जैसा दुर्वासा ने किया और दूसरा जो मेरे नाम का अपराध करै अर्थात् इस नियत से पाप करै कि पाप करने पीछे नाम अथवा मंत्र जप कर शुद्ध वो पवित्र हो जायंगे तो जब भगवत् का ऐसा बांचा प्रबन्ध है तो प्रण में बिरुद्ध कहां है जो यह न माने कोई तौ भी अच्छे प्रकार बिचार कर देखा जाता है तो शरणागति में भी कुछ बिरुद्ध भगवत् के प्रण में नहीं हुआ क्योंकि दुर्वासा अपने प्राण की रक्षा के हेतु भगवत् शरण हुए सो उपाय भगवत् ने बतलाया वो दुर्वासा का प्राण बचा तो संदेह को ठार नहीं है और यह भी जाने रहो कि दुर्वासा जी पर राजा अंबरीष का कुछ क्रोध नहीं आया था बरु भगवत् का क्रोध हुआ था कि चक्रसुदर्शन को आज्ञा दण्ड की दी थी यह प्रताप शरणागति का हुआ कि दुर्वासा का

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

प्राण बचा नहीं तो कहां उस प्रभु का क्रोध वो कहां दुर्बासा बिचारा और मुख्य कारण इस चरित्र का यह है कि भगवत् अपने भक्तों के सब अपराधों पर तनक अवलोकन नहीं करते पर एक अहंकार पर तुरन्त दृष्टि होती है किस हेतु कि गर्व वो अहंकार से भजन वो सेवा में बड़ा विघ्न होता है इस हेतु से अपने भक्त के गर्व को दूर कर देते हैं कि गरुड़ मारकण्डेय वो नारद आदि की कथा साक्षी इस बात की है सो दुर्बासा जी को गर्व अपनी सिद्धता वो बड़ाई का हुआ था कि राजा की परीक्षा के हेतु गये थे इस कारण भगवत् ने राजाही के शरण भेज कर दुर्बासा जी का गर्व दूर कर दिया इस चरित्र से एक उपदेश भगवत् का और भी है और वह यह है कि जब भगवत् ने दुर्बासा जी को शरण से निरास कर दिया तो दुर्वासा जीको क्रोध आया भगवत् को श्राप दिया और उसके कारण से दश बेर भगवत् को अवतार धारण करना पड़ा उपदेश इस में यह हुआ कि जब हमारे ईश्वर को भी शरण नहीं देने से दश देह अंगीकार करनी पड़ी तो दूसरे मनुष्य जो शरण आये की रक्षा न करैंगे तो न जाने उनकी क्या गति होगी जब राजा की भक्ति और भाव विश्व में विख्यात हुई तब एक कोई राजा की लड़की ने कि भगवत् भक्त थी राजा अंबरीष से अपने बिवाह की बात चलाई राजा ने उत्तर दिया कि हमको भगवत् सेवा से छुट्टी नहीं वो न स्त्री की चाहना है वह लड़की अधिक प्रेम युक्त होगई बारम्बार हठ किया राजा उसके प्रेम के बस होकर आप तो न गये पर अपनी तरवार भेज दी उसी से बिवाह का नेग चार सब हुआ जब वह रानी आई एक महल अलग बना उसमें रहने लगी एक दिन वह रानी पूजा का मन्दिर राजा का देखने को गई राजा जगे नहीं थे रानी मन्दिर बुहारलीप कर जल शुद्ध रख कर सब साज पूजा का तैयार कर के चली आई राजा जब पूजा करने आये तब सामग्री सजी देखी बड़े आश्चर्य्य में हुए जब कितने दिन ऐसेही वृत्तान्त देखा तो एक रात राजा जागते रहे और जब रानी आई तो पूछा कि तू कौन है जो मेरी सेवा में चोरी करती है उसने उत्तर दिया कि दासी नई हूं राजा ने उसकी भक्ति देखकर आज्ञा की कि अलग सेवा किया करो सो उसने ऐसे प्रेम से सेवा पूजा को किया कि भगवत् वो राजा दोनों प्रसन्न होगये बिस्तार करके कथा इस रानी की प्रेम निष्ठा में लिखी जायगी दूसरी रानियों ने भी राजा की प्रसन्नता देख कर सबने भगवत् सेवा पधराई सब कोई के प्रेम को देखकर राजा सब के महलों में जाने लगे पुरबासियों ने भी ऐसीही प्रेम सेवा उठाई वहां भी राजा जाते सब नगर भगवत् पारायण होगया अर्थात् जब राजा भगवत् धाम को जाने लगे तो संपूर्ण अयोध्या बासियों को अपने साथ लेते गये और सब उस पद को पहुंचे कि जोगी जन अनेक जन्म तक परिश्रम वो क्लेश करके नहीं पहुंचते॥

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

रुक्मांगद की कथा॥

राजा रुक्मांगद की कथा एकादशी माहात्म्य वो पुराणों में प्रसिद्ध है उनकी एक फुलवारी ऐसी सुगन्धित वो शोभाय मान थी कि देवताओं की स्त्री वहां के सुख लेने को उतरती थीं एक दिन उनमें से किसी के बेर का कांटा लग गया उसकी अशुद्धता से उड़ न सकी मालो की लड़की से कहा कि कोई एकादशी व्रत जो किया हो तो उसका पुण्य मुझको दिला देव कि स्वर्ग जाऊं यह बात सुनकर राजा आया देवांगना से कहा यहां व्रत कोई जानता नहीं उसने बतलाया तब राजा ने एक साहूकार की लौंडी जो मारने से भूखी प्यासी सारा दिन वो रात जागती रही बुलवाकर पुण्य दिला दिया कि देवांगना स्वर्ग गई वो राजा ने सारे देश वो नगर में डोंडी एकादशी की फेरवायदी हाथी घोड़े तक उपास करते थे अन्त सब समेत राजा वैकुण्ठ गया राजा की लड़की भी एकादशी व्रत की निष्ठायुक्त ऐसी थी कि एकादशी के दिन उसका पति आया देखा देखी व्रत रहा पीछे भूख से बिकल हो कर भोजन चाहा उसने माहात्म्य से प्रवीण थी न दिया दो चार घड़ी पीछे वह मरगया भगवत् धाम को गया उसकी स्त्री ने बड़ा उत्साह माना स्तुति करते करते वह भी भगवत् धाम को चली गई ऐसी ऐसी कथा एकादशी माहात्म्य में बहुत हैं जिसको इच्छा हो सो देखलो॥

निष्ठा बारहवीं॥

महिमा महा प्रसाद जिसमें चार भक्तों की कथा है॥

श्रीकृष्ण स्वामी के चरण कमलों के जंबू फल रेखा को दण्डवत करके हयग्रीव अवतार को दण्डवत करता हूं कि कामरू देश में देवताओं की सहायता वो दुष्टों के नाश के हेतु अवतार धारण किया गीता जी में भगवत् की आज्ञा है कि जो कुछ करै जो भोजन करै जो यज्ञ करै जो देवै जो तप करै सब मेरे अर्पण करके शुभ अशुभ कर्मों के बन्धन से छूट जावैगा इस हेतु उचित है कि जो कुछ खाना पीना वो सामा नवीन तैयार हो सो सब पहिले भगवत् अर्पण करै तब अपने अर्थ लगावै कि भगवत् वह अर्पण किया हुआ भक्त का अंगीकार करते हैं सो गीता जी में भगवत् ने कहा है कि पत्र पुष्प फल जल जो वस्तु भक्ति से हमको निवेदन करते हैं प्रसन्न होकर खाता हूं भगवत् प्रसाद के भोजन से वो शास्त्रोक्त कर्मों के करने से कितना गुण भारी है कि बहुत शीघ्र अन्तःकरण निर्मल होकर भगवत् चरणों में प्रीति हो जाती है और पुराणों में लिखा है कि हजार एकादशी और सौ द्वादशी का फल भगवत् प्रसाद के एक कण के सोल-

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

छवां अंग के माहात्म्य को नहीं पहुंचता है गरुड़ पुराण में भगवत् की आज्ञा है कि जो भगवत् प्रसाद करके भोजन करते हैं उनके मनके सब रोगों का नाश हो जाता है और पवित्र होते हैं फिर लिखा है कि जो कोई सामग्री खाने पीने की मेरा प्रसाद करके खाते पीते हैं वे मेरे समीप पहुंचते हैं भागवत् की आज्ञा है कि जो कोई बिना भगवत् को भोग लगाये खाते पीते हैं तो भक्ष उनका शूकर के भक्ष सदृश वो पानी रुधिर के सदृश है और ऐसाही वचन विष्णु पुराण का है सो देखो भगवत् अर्पण करने से कुछ उस वस्तु में से घटती वो हानि भी नहीं होती है केवल इतनीही बात है कि जब रसोई खाने को बैठे तो भगवत् का ध्यान करके भगवत् अर्पण कर दिया और इतना और भी ध्यान कर लिया कि भगवत् ने इस भोज्य वस्तु वो पानी को भोग लगाया पीछे भोजन कर लिया इसी प्रकार सम्पूर्ण सामा वो वस्तु जब बनिके तो सज्जि के आवैं भगवत् भेट किया करैं जो भगवत् मूर्ति न होय तो ध्यान में भगवत् अर्पण करिके तब अपने अर्थ वो काम में लगावैं और जो ऐसा संयोग पड़ै कि रसोई की सामग्री को पहिले कुछ किसी ने खालिया हो तो ऐसा विचार कर लेना कि पहिले भगवत् अर्पण होगया है उस में का शेष यह है पर भगवत् ध्यान करके कुछ भोग लगाने का चिन्तवन कर लेना निश्चय चाहिये क्यों कि बिना भोग लगाये भगवत् प्रसाद नहीं हो सक्ता अर्थात् सर्वथा कोई वस्तु बिना भगवत् अर्पण किये त्याज्य वो महा हलाहल विष है महा हलाहल इस से है कि विष खाने से एक बेर मरता है वो इस विष से चौरासी लाख बेर मरना पड़ता है एक किसी को संदेह हुआ कि सैकड़ों हजारों लोग भगवत् प्रसाद वो चरणामृत ठाकुर द्वारों में खाते पीते हैं और बहुत लोग शालिग्राम मूर्ति अपने पास रखते हैं और बिना भोग लगाये कुछ नहीं खाते परन्तु हृदय की निर्मलता और भगवत् की प्राप्ति किसी किसी को होती है इसका कारण क्या है सो जाने रहो कि इसमें विश्वास कारण है जैसे २ विश्वास की वृद्धि होगी तैसे तैसे हृदय भी निर्मल होता जायगा अन्त को निर्मलता वो भगवत् प्राप्ति हो जायगी जैसे पारसमणि अर्थात् पारस वो लोहे के बीच में एक महीन दल का भी अन्तर जब तक रहैगा तो लोहा सोना नहीं होगा परन्तु लोहा वो पारस मणि एकत्र रहैंगे तो वह वस्तु थोड़ेही काल में रगड़े खाकर उड़ जायगा वह लोहा सोना निश्चय करके होगा और यह भी जाने रहो कि भगवत् प्रसाद वो चरणामृत खाने पीने वाला यद्यपि दृढ़ विश्वास युक्त नहीं है तथापि यमयातना वो नर्क का दुःख नहीं पावैगा भगवत् चरणामृत वो महा प्रसाद की महिमा तो कौन वर्णन करने सक्ता है भगवत् भक्तों का चरणामृत वो जूठन का यह प्रताप है कि जिसके प्रभाव करिके हजारों परम पातकी वो

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

अधम शुद्ध भी भगवत् निकट निवासी होगये कथा नारद जी वो नाभा जिसने भक्तमाल को रचना किया इसके निश्चय वो साक्षी के निमित्त प्रत्यक्ष हैं सिवाय इसके भगवत् अपने महा प्रसाद वो चरणामृत की महिमा द्रौपदी वो अम्बरीष आदि की कथा में प्रगट दिखाते हैं अर्थात् दुर्वासा जी ने चरणामृत के लेने के अपराध से अम्बरीष को दुःख दिया था उनकी क्या गति हुई और द्रौपदी की कथा में लिखा जावैगा कि वनवास के समय राजा युधिष्ठिर को सूर्य्य ने एक टोकनी दी गुण उसमें यह था कि नित्य जब तक द्रौपदी भोजन न करती वांछित भोजन अपार उसमें से निकलता जाता एक दिन द्रौपदी के भोजन कर लेने पीछे दुर्वासा जी दस हजार शिष्यों संहित आये राजा चिन्ता में पड़े श्री कृष्ण महाराज पधारे एक पत्ता शाक का टोकनी में से ढूंढ के खागये उसका यह प्रभाव हुआ कि दुर्वासा जी दसों हजार अपने चेलों के सहित ऐसे अघाय गये कि बाहर बाहर भाग खड़े हुए विचार करना चाहिये कि क्या भगवत् बिना शाक के खाये दुर्वासा जी को नहीं अघाय सक्ते थे अवश्य अघाय सक्ते पर हठ करके शाक खाने का अभिप्राय केवल यह था कि भगवत् अपने महा प्रसाद का प्रताप दिखाते हैं कि जो कुछ मेरे अर्पण होता है वह ऐसा अनन्त होजाता है कि जैसा मैं हूं और करोड़ों को अघवा कर सक्ता हूं द्रौपदी ने पहिले जन्म में थोड़ासा कपड़ा एक ऋषीश्वर को भगवत् की राह पर दिया था वह ऐसा अनन्त हुआ कि दुःसासन खीचते २ हार गया एक बुन्द जो सिंधु में डाले तो बुन्द भी सिंधु होजाता है इसी प्रकार जो पदार्थ अनन्त को अर्पण किया जाय अनन्त होजाता है और जब ऐसा अनन्त हुआ तो उसके खाने पीने से हृदय निर्मल क्यों न होगा होवैहीगा विस्तार करके लिखा जाता है अर्थात् रीति है कि जो पवित्र वस्तु है सो अशुद्ध वो अपवित्र को शुद्ध वो पवित्र कर देती हैं यह बात अग्नि वो जल वो पवन के दृष्टांत से अच्छे प्रकार निश्चय होती हैं इसी प्रकार वह भोजन वो जल जिस समय भगवत् परम शुद्ध वो परम पावन को पहुंचा तो उसी समय शुद्ध वो परम पावन होगया उस शुद्ध और पावन भोजन वो जल को जब भक्त ने सेवन किया तो उस भक्त को भी शुद्ध वो बिमल वो अनन्त कर दिया विश्वास मूल है देखो प्रसिद्ध है कि महात्मा सिद्ध राह चलते बहुत आदमी पापी वो अपावन को अपना जठन खिलाकर अथवा शरीर से शरीर मिलाकर एक क्षण में अपने ऐसा निर्मल वो पापों से मुक्त कर दिया तो कारण इस का यही है कि वह महात्मा सिद्ध पावन वो निर्मल था अपनी बिमलता से दूसरे के हृदय का मल क्षण मात्र में दूर कर दिया तात्पर्य कहने का यह है कि कोई वस्तु बिना भगवत् अर्पण किये कदापि अपने अर्थ न लगावै और

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

यह भी लिखा गया कि कुछ बड़े क्लेश की बात नहीं एक बात को बात है और केवल मनमें ध्यान कर लेना है पर यह दुर्भाग्यता हम लोगों को और कलियुग का प्रताप है कि थोड़ीसी बात नहीं हो सकी हाय अफ़सोस कि मन भाग्यहीन ने मुझको बहुत भ्रमाया और इसी दुष्ट के करने से इस दशा को पहुंचा हूं कि जाने कबसे करोड़ों जन्म भांति भांति के लेकर अनेक प्रकार की पीड़ा में फंसा हूं पर अब मेरा भी अच्छा दाव लगा है कि श्री कृष्ण स्वामी के चरण कमलों की छांह मिल गई है देखूंगा कि इस मन दुष्ट की बल चलता है कि मेरे स्वामी पतित पावन दीन वत्सल के बिरद की रे मन तेरे बुरे चलन पर जो दृष्टि करूं तो तू कदापि इस योग्य नहीं कि तेरी भलाई के निमित्त परिश्रम करना जावै परन्तु सदा मेरे पास रहता है इस हेतु शिक्षा करता हूं कि इस रूप अनूप का चिन्तवन किया कर कि तेरे दोनों लोक सुधर जावैं——दशरथ महाराजा धिराज का परम सुन्दर मन्दिर है और दर वो दीवार वो छिति वो छत आदि सुवर्ण वो रूपमई तिसमें हीरा लाल पन्ना आदिरत्नों से जड़ाऊ शोभायमान उसमें चारों भाई मानों चारों मुक्ति अथवा चारों फल अथवा चारों ब्यूह अथवा चारों उपासना अर्थात् नाम १ धाम २ लीला ३ रूप ४ स्वरूप लीन अपने खेल वो बाल चरितों से सब माता वो दशरथ महाराज को परम आनन्द से पूरण करते हैं कबहीं तो माता के साथ कोई खिलौना मांगने की हठ है कबहीं दशरथ महाराज के साथ घोड़े पर चढ़ाने वो तीर वो कमान मंगा देने की हठ कबहीं दीवारों में चित्र वो रंग रंग के जड़ाव वो बेल बूटा सुनहरे देखकर प्रसन्न होते हैं और माता से पूछते हैं कि यह क्या है और कबहीं रत्नों में अपने प्रतिबिम्ब को देख कर बूझते हैं कि यह किसके लड़के हैं कबहीं खाते खेलते फिरते हैं और पंछियों को बटोर करके खिलाते हैं कबहीं उनके पकड़ने को दौड़ते हैं और उड़ जाने पर माता से हठ है कि तू पकड़ कर लाद और कबहीं चारों भाई परस्पर हाथ पकड़ कर नाचते हैं कबहीं रात के समय चन्द्रमा को देखकर माता से कहते हैं कि हमको भी ऐसा हीमंगाई अर्थात् वह लीला वो चरित्र परम मनोहर हैं कि ब्रह्मादिक देखकर कबहीं तो परम आनंद में मग्न होते हैं और कबहीं माया के जाल में फंस जाते हैं चारों भाइयों के सुख की शोभा ऐसी है जिसको देखकर आनन्द को भी आनन्द होता है वो संपूर्ण शोभा वो शृंगार वो दृष्टान्त भाल के श्री पर निछावर होकर दर्शन में बेसुधि हो जाते हैं जरदोजी काम वो गोटे पट्टे वो जवाहिरात से भरी हुई टोपी शिर पर घुंघरवाली जुल्फैं छुटि हुई भाल पर गोरोचन का तिलक कानों में छोटे २ कुण्डल और झुमका बुलाक जिस में सजा पड़ा हुआ है पहिने हुए झलकदार कपोलों पर डिठौना लगा

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

ऊआ गले में कंठी वो कटुला जड़ाऊ वो बगनखा वो जुगदू शोभित हाथों में बाजूबन्द पहुंची कड़े चरण कमलों में घुंघरू वो आंखैं वो नासुक अति सुकुमार शरीरों में जर्द सबुज धानी सुरुख कुरते महीन कौशिल्या कैकई सुमित्रा आदि माता बाल चरित्रों को देखती ऊईं आनन्द में मग्न वो बेसुधि अपने भाग्य की बड़ाई करती ऊई चारों ओर विराजमान हैं॥

अंगद की कथा॥

अंगद जी चचा राजे सिखहदीराय सेन किल्ले में जाति राजपूत परम भक्त भगवत् के ऊए प्रथम का वृत्तान्त यह है कि भगवत् से विमुख थे स्त्री उनकी परम भक्त साधु सेविनी थी एक समय उस स्त्री के गुरू आये महल में भगवत् उपदेश वो कथा कर रहे थे अंगद जी आय गये बुरा माना गुरू चले गये स्त्री भगवत् कथा वो गुरू के दर्शन बन्द होने से खाना पीना कहना सुनना त्याग कर दुःखित रहने लगी अंगदजी उसके रूप में आशक्त थे बिकल ऊए बहुत उपाय किया यहां तक कि शिर अपना उसके चरणों पर धर दिया परंतु प्रसन्न न ऊई जब अंगद जी ने भी खाना पीना त्याग किया वो बचन प्रबन्ध किया कि जो तू कहैगी सोई करूंगा तब राजी ऊई और कहा कि भगवद् भक्ति अंगीकार करो और गुरू जी के चेले होकर उनकी सेवा किया करो अंगद जी जाकर उस गुरू के चेले ऊए माला तिलक धारण किया फिर उनको अपने घर पर ले आये और भगवत् भजन वो साधु सेवा ऐसी प्रारंभ की कि थोड़े दिनों में हृदय निर्मल वो भगवत् की सच्ची प्रीति होगई एक बेर राजा किसी शत्रु से युद्ध करने को चढ़ा वो विजय पाई शहर लूटने के समय अंगद जी को एक ताज अर्थात् बादशाही टोपी ऐसी मिली कि उसमें एक सौ एक हीरे लगे थे सौ हीरे तो बेच के साधु सेवा वो भगवत् उत्साह में लगाये और एक हीरे को बहुत मूल्य वो उसके सदृश मिलने योग्य दूसरा नहीं तिसको पगड़ी में अपने जतन से बांधि लिया श्री जगन्नाथराय की भेंटके निमित्त रक्खा इस हीरे की ख्यात ऊई राजा ने सब लूट को साफ किया उस हीरे को मांगा अंगद जी ने लोगों के समझाने पर भी न माना वो उत्तर दिया कि यह हीरा श्री जगन्नाथराय जी को भेंट होचुका है अब किसी को नहीं मिल सक्ता अंगद जी की बहिन थी उसके हाथ की रसोई भगवत् को भोग धरा करते थे और उसकी एक छोटी लड़की भोजन के समय साथ खाती थी राजा के लालच के फन्द में आय के उस स्त्री ने रसोई में बिष डाला अंगद जी भगवत् को अर्पण करिके प्रसाद भोजन करने बैठे तब उस लड़की को बुलाया उसको उसकी माने छिपा रक्खा जब वह न आई तब अंगद जी ने भी भोजन न किया तब उस लड़की की मा धिक्कार अपने को मान कर रोने लगी वो अंगद जी से सब वृत्तान्त बिष मिलाने वो लड़की को छिपा

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

रखने का कहकर मिलकर रोई अंगद जी अपने को बिष देने पर कुछ मनमें न लाये पर भगवत् को अर्पण होने का क्रोध हुआ उसको निकाल दिया और आप उस प्रसाद को अमृत जानकर भोजन कर गये प्रेम वो आनन्द में मग्न होकर भगवत् भजन में लगे वो राजा को यह सब समाचार पहुंचे इस अभिलाष में रहा कि अब अंगद जी के मरने की खबर आती है और अंगद जीको महा प्रसाद में अमृत का दृढ़ भाव रहा इस हेतु उसने अमृत का फल दिया और क्षण क्षण शोभा सुख की और हृदय को आनन्द अधिक होता गया और बिष देने दिलाने वाले अभागों को लज्जा वो शोक प्राप्त हुआ पीछे अंगद जी उस हीरे को जगन्नाथ राय जी की भेट करने के निमित्त लेकर चले राह में राजा के चाकरों ने घेर लिया कहा कि कि हीरा देव नहीं तो लड़ो हमारे साथ अंगद जी ने कहा कि एक क्षणमात्र बिलम्ब करो यह कहकर तालाब के किनारे पर गये और भगवत् से बिनय किया कि महाराज यह आपकी अमानत मेरे पास थी सो आप सम्हाल लें यह कहकर और सबको दिखा कर उस हीरा को तालाब में डाल दिया भगवत् अपने भक्त की बिन्ती सुनकर सात सौ कोस आनकर पानी तक पहुंचने न दिया लेगये और अपनी भक्ति और भक्तों का प्रताप प्रगट किया सो अब तक भुजा में शोभित है दर्शन होते हैं और राजा के चाकर लोग वो आप राजा ने उस तालाब का पानी उलिचवाय के तलाश किया कराया पर हाथ न लगा लज्जित घर गये और अंगद जी अपने घर चले आये राजा अंगद जी को बिश्वास करिके मानने लगा और पुजारियों ने जगन्नाथ राय जी की आज्ञा पाकर उस हीरे के पहुंचने का समाचार अंगद जी के पास भेजि दिया अंगद जी अति हर्षित होकर जगन्नाथ पुरी को गये उस हीरे सहित दर्शन करिके आनन्द में मग्न हो गये राजा अंगद जी के आने से अति बिकल हुआ ब्राह्मणों को वास्ते ले आने अंगद जी के भेजा अंगद जी ने न माना तब सब अन्न जल छोड़कर धरना बैठे तब अंगद जी आये वो राजा ने आगमन सुनकर आगे जाकर लिया वो देखकर चरणों से लिपट गया अंगद जी ने उठाकर छाती से लगा लिया राजा को भगवत् भक्ति वो साधु सेवा का उपदेश किया राजा ने धन सम्पत्ति अंगद जी पर निछावर किया और भगवत् शरण होकर कृतार्थ होगया॥

पुरुषोत्तम पुरी के राजा की कथा॥

पुरुषोत्तम पुरी के राजा परम भगवत् भक्त हुए और महा प्रसाद में ऐसी निष्ठा थी कि थोड़ी अवज्ञा से अपना हाथ कटवा डाला वृत्तांत यह है कि एक बेर चौसर खेलते थे पुजारी जगन्नाथ राय जी का महा प्रसाद लेकर आया राजा ने दहिने हाथ में पासा रहने से बांया हाथ फैलाया

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

पुजारी महा प्रसाद की अवज्ञा समझकर क्रोध युक्त होकर महा प्रसाद फेर लेगया राजा इस अपराध से लज्जित होकर दौड़े पुजारी से बिनय प्रेरणा करके महा प्रसाद लिया शिर पर धारण किया चूक के पश्चात्ताप में बहुत चिन्ता युक्त बिना खाये पिये चाहि चाहि करते घर में जाकर पड़ रहे इस उपाय में हुए कि किसी प्रकार से दाहिने हाथ को दूर करना चाहिये कि भगवत् प्रसाद से बिमुख हुआ फिर चिन्ता करैं कि मेरे हाथ को कोई कब काट सकता है इस शोच में मन मलीन चिंता युक्त रहते थे एक दिन कारण इस मानसी व्यथा का मंची ने राजा से पूछा राजा ने कहा कि रात के समय एक भूत आता है झरोखे के राह हाथ डालकर शोर गुल किया करता है सो तुम रात को मेरे मकान में रहो जब वह प्रेत अपना हाथ झरोखे में डाले तब काट डालो कि उसी रात मंची चौकी पर रहा राजा ने झरोखे में हाथ डालकर शोर किया मंची ने ऐसी तरवार मारी कि हाथ साफ अलग जा पड़ा जब मंची को मालूम हुआ कि राजा का हाथ है बड़ी शोच वो लज्जा में पड़ा राजा ने कहा कि भूत वो प्रेत वही है जो भगवत् से बिमुख है तुम चिन्ता मत करो हम को यह करना योग्य था भगवत् करुणा सिंधु ने अपने भक्त की ऐसी निष्ठा देखकै आज्ञा की कि राजा को महा प्रसाद ले जाओ वो कटा हाथ उठा लाओ पुजारी लोग दौड़े वो इधर से राजा दर्शन को चले राह में पुजारी लोग जब महा प्रसाद आगे लेकर देने लगे तो राजा ने बड़े भाव वो भक्ति से लेने को दोनों हाथ उठाये उस समय भगवत् कृपा से कटा हाथ भी नया निकल आया वो राजा ने दोनों हाथों से महा प्रसाद लेकर अपनी छाती से लगाया और दर्शन करके प्रेम आनन्द में पूर्ण होकर भगवत् भजन में रहने लगे भगवत् ने कटा हुआ हाथ अपने बाग में लगवा दिया कि वह दौना का वृक्ष सुगंधवान फलों का होगया कि अब तब उस के फूल जगन्नाथ राय जी को चढ़ाये जाते हैं एक पुराण में लिखा है कि भगवत् जगदीश का प्रसाद अन्न जल के सदृश नहीं भगवत् रूप है जो कोई और बिचार करते हैं सो पापी हैं और उनका नाश हो जाता है॥

सुरेश्वरानन्द की कथा॥

सुरेश्वरानन्द स्वामी चेले रामानन्द जी के परम भगवत् भक्त हुए और महा प्रसाद की महिमा ऐसी इस संसार में प्रकाशित की जिसके प्रभाव करिके हजारों को दृढ़ विश्वास हो गया अर्थात् एक बेर राह चलते में किसी द्वेषी ने दारू वो मांस का बड़ा बना हुआ आगे ले आकर कहा कि भगवत् का महा प्रसाद है सुरेश्वरानन्द जी ने भगवत् महा प्रसाद का नाम सुनतेही भोजन कर लिया और चल खड़े हुए पीछे से जो चेले

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

रखने का कहकर मिलकर रोई अंगद जी अपने को बिष देने पर कुछ मनमें न लाये पर भगवत् को अर्पण होने का क्रोध हुआ उसको निकाल दिया और आप उस प्रसाद को अमृत जानकर भोजन कर गये प्रेम वो आनन्द में मग्न होकर भगवत् भजन में लगे वो राजा को यह सब समाचार पहुंचे इस अभिलाष में रहा कि अब अंगद जी के मरने की खबर आती है और अंगद जीको महा प्रसाद में अमृत का दृढ़ भाव रहा इस हेतु उसने अमृत का फल दिया और क्षण क्षण शोभा सुख की और हृदय को आनन्द अधिक होता गया और बिष देने दिलाने वाले अभागों को लज्जा वो शोक प्राप्त हुआ पीछे अंगद जी उस हीरे को जगन्नाथ राय जी की भेट करने के निमित्त लेकर चले राह में राजा के चाकरों ने घेर लिया कहा कि कि हीरा देव नहीं तो लड़ो हमारे साथ अंगद जी ने कहा कि एक क्षणमात्र विलम्ब करो यह कहकर तालाव के किनारे पर गये और भगवत् से बिनय किया कि महाराज यह आपकी अमानत मेरे पास थी सो आप सम्हाल लें यह कहकर और सबको दिखा कर उस हीरा को तालाव में डाल दिया भगवत् अपने भक्त की बिन्ती सुनकर सात सौ कोस आनकर पानी तक पहुंचने न दिया लेगये और अपनी भक्ति और भक्तों का प्रताप प्रगट किया सो अब तक भुजा में शोभित है दर्शन होते हैं और राजा के चाकर लोग वो आप राजा ने उस तालाव का पानी उलिचवाय के तलाश किया कराया पर हाथ न लगा लज्जित घर गये और अंगद जी अपने घर चले आये राजा अंगद जी को बिश्वास करिके मानने लगा और पुजारियों ने जगन्नाथ राय जी की आज्ञा पाकर उस हीरे के पहुंचने का समाचार अंगद जी के पास भेजि दिया अंगद जी अति हर्षित होकर जगन्नाथ पुरी को गये उस हीरे सहित दर्शन करिके आनन्द में मग्न हो गये राजा अंगद जी के आने से अति विकल हुआ ब्राह्मणों को वास्ते ले आने अंगद जी के भेजा अंगद जी ने न माना तब सब अन्न जल छोड़कर धरना बैठे तब अंगद जी आये वो राजा ने आगमन सुनकर आगे जाकर लिया वो देखकर चरणों से लिपट गया अंगद जी ने उठाकर छाती से लगा लिया राजा को भगवत् भक्ति वो साधु सेवा का उपदेश किया राजा ने धन सम्पत्ति अंगद जी पर निछावर किया और भगवत् शरण होकर कृतार्थ होगया॥

पुरुषोत्तम पुरी के राजा की कथा॥

पुरुषोत्तम पुरी के राजा परम भगवत् भक्त हुए और महा प्रसाद में ऐसी निष्ठा थी कि थोड़ी अवज्ञा से अपना हाथ कटवा डाला वृत्तांत यह है कि एक बेर चौसर खेलते थे पुजारी जगन्नाथ राय जी का महा प्रसाद लेकर आया राजा ने दहिने हाथ में पासा रहने से बांया हाथ फैलाया

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

पुजारी महा प्रसाद की अवज्ञा समझकर क्रोध युक्त होकर महा प्रसाद फेर लेगया राजा इस अपराध से लज्जित होकर दौड़े पुजारी से विनय प्रार्थना करके महा प्रसाद लिया शिर पर धारण किया चूक के पश्चात्ताप में बहुत चिन्ता युक्त बिना खाये पिये चाहि चाहि करते घर में जाकर पड़ रहे इस उपाय में हुए कि किसी प्रकार से दाहिने हाथ को दूर करना चाहिये कि भगवत् प्रसाद से विमुख हुआ फिर चिन्ता करैं कि मेरे हाथ को कोई कब काट सकता है इस शोच में मन मलीन चिंता युक्त रहते थे एक दिन कारण इस मानसी व्यथा का मंची ने राजा से पूंछा राजा ने कहा कि रात के समय एक भूत आता है झरोखे के राह हाथ डालकर शोर गुल किया करता है सो तुम रात को मेरे मकान में रहो जब वह प्रेत अपना हाथ झरोखे में डाले तब काट डालो कि उसी रात मंची चौकी पर रहा राजा ने झरोखे में हाथ डालकर शोर किया मंची ने ऐसी तरवार मारी कि हाथ साफ अलग जा पड़ा जब मंची को मालूम हुआ कि राजा का हाथ है बड़ी शोच वो लज्जा में पड़ा राजा ने कहा कि भूत वो प्रेत वही है जो भगवत् से विमुख है तुम चिन्ता मत करो हम को यह करना योग्य था भगवत् करुणा सिंधु ने अपने भक्त की ऐसी निष्ठा देखकै आज्ञा की कि राजा को महा प्रसाद ले जाओ वो कटा हाथ उठा लाओ पुजारी लोग दौड़े वो इधर से राजा दर्शन को चले राह में पुजारी लोग जब महा प्रसाद आगे लेकर देने लगे तो राजा ने बड़े भाव वो भक्ति से लेने को दोनों हाथ उठाये उस समय भगवत् कृपा से कटा हाथ भी नया निकल आया वो राजा ने दोनों हाथों से महा प्रसाद लेकर अपनी छाती से लगाया और दर्शन करके प्रेम आनन्द में पूर्ण होकर भगवत् भजन में रहने लगे भगवत् ने कटा हुआ हाथ अपने बाग में लगवा दिया कि वह दोनों का वृक्ष सुगंधवान फूलों का होगया कि अब तब उस के फूल जगन्नाथ राय जी को चढ़ाये जाते हैं एक पुराण में लिखा है कि भगवत् जगदीश का प्रसाद अन्न जल के सदृश नहीं भगवत् रूप है जो कोई और बिचार करते हैं सो पापी हैं और उनका नाश हो जाता है॥

सुरेश्वरानन्द की कथा॥

सुरेश्वरानन्द स्वामी चेले रामानन्द जी के परम भगवत् भक्त हुए और महा प्रसाद की महिमा ऐसी इस संसार में प्रकाशित की जिसके प्रभाव करिके हजारों को दृढ़ बिश्वास हो गया अर्थात् एक बेर राह चलते में किसी द्वेषी ने दारू वो मांस का बड़ा बना हुआ आगे ले आकर कहा कि भगवत् का महा प्रसाद है सुरेश्वरानन्द जी ने भगवत् महा प्रसाद का नाम सुनतेही भोजन कर लिया और चल खड़े हुए पीछे से जो चेले

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

आते थे उन लोगों ने भी देखा देखी वही आचरण किया स्वामी जी ने उन से क्रोध करिकै आज्ञा की कि तुम ने क्या खाया उत्तर दिया किजो आपने स्वामी जी बोले कि हमने महा प्रसाद का भोग लगाया है यह तो मांस निकला और स्वामी जी के उदर से तुलसी और गंगा जी की रेनुका निकलीं तब वेले चरणों में पड़े और भगवत् भजन वो महा प्रसाद का विश्वास हुआ निश्चय करिकै समर्थ को विष भी अमृत है और असमर्थ को अमृत विष तुल्य है सो शिव जी ने हलाहल पान कर लिया अब तक उनके कंठ का आभूषण है और राहु ने अमृत पान किया कि उसका शिर काटा गया॥

कथा श्वेत द्वीप निवासी भक्तों की॥

श्वेतद्वीप भगवत् का विहार स्थान है और जो भगवत् भक्त शास्त्रों में चिरंजीव लिखे हैं विशेष करिके इसी द्वीप में रहते हैं एक बेर नारद जी उस द्वीप में गये और ज्ञान उपदेश करने को चाहा भगवत् ने रोक दिया कि यहां के रहने वाले मेरे प्रेम और भक्ति भाव में अनिन्द रहते हैं उन्हें अलग नहीं होसक्ते तुम अपनी ज्ञान कहानी कहीं अन्यत्र आरंभ करो नारद जी उदासीन वैकुंठ में गये और वृत्तान्त कहा नारायण ने आज्ञा की कि सत्य करिके श्वेतद्वीप के रहने वालों का यही वृत्तान्त है सो चलिके अपनी आंखों से देख लेव और भगवत् नारद समेत वहां आये सरोवर के किनारे एक पक्षी को देखा कि भगवत् ध्यान में था नारायण ने नारद जी से कहा कि यह पखेरू ऐसा भक्त है कि हजार वर्ष से इसने जल पान नहीं किया इस हेतु कि भगवत् को भोग लगा हुआ जल नहीं मिला और बिना भगवत् प्रसाद के कुछ खाता पीता नहीं परीक्षा के निमित्त भगवत् ने थोड़ासा जल अपना प्रसादी करके सरवर के किनारे डाल दिया कि उस भक्त ने तुरन्त उस जल को अपनी चोंच में उठाकर पान किया नारद जीने उस पक्षी की परिक्रमा करी और सेव्य वे पूज्य समझकर प्रेम में पूर्ण हुए फिर आगे चले और भगवत् मन्दिर देखा कि उस समय आरती होकर मन्दिर का द्वार ताला मंगल होगया था एक जनको उस मन्दिर की ओर शीघ्रता से आते हुए देखा पूछा कहां जाता है उत्तर दिया कि भगवत् आरती के दर्शनों के लिये जाता हूं नारायण ने कहा कि आरती हो चुकी और द्वार मन्दिर का ताला मंगल होगया वह तुरन्त सुनतेही धरती पर गिर पड़ा और मर गया तिसके पीछे उसकी स्त्री आई नारायण ने कहा कि तेरा पति मर गया उसकी क्रिया कर्म करना चाहिये स्त्री ने उत्तर दिया कि तू क्या भगवत् से विमुख है कि भगवत् के दर्शनों पर क्रिया कर्म को पति के विशेषताई बतलाता है नारायण ने उत्तर दिया कि भगवत् आरती हो चुकी वह स्त्री सुनतेही तुरन्त अपने पति के सदृश मरकर होगई तिसके पीछे पुत्रादिक गृह के

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

लोग आये और उनकी भी वही गति हुई नारायण वो नारद जी यह प्रेम वो भक्ति उनकी देखकर आगे चले और विचरते २ फिर उसी ओर आये संयोग बस भगवत् मन्दिर खुलकर दूसरे समय की आरती आरम्भ हुई और लोग संख वो झांझ की धुनि सुनकर भगवत् दर्शनों के लिये दौड़े वह लोग जो मर गये थे उठकर भगवत् आरती में जामिले भगवत् दर्शन करके बहुत हर्षित अपने घर को चले गए नारद जी ने जो यह चरित्र देखा तो विश्वास युक्त होकर भगवत् भक्त हुए और उस द्वीप को तीनों लोक का पूजा स्थान वो बैकुण्ठ के सदृश जाना॥

निष्ठा तेरवीं॥

जिस में वर्णन है महिमा भगवंत धाम वो कथा आठ भक्तों की है॥

श्री कृष्ण स्वामी के चरण कमलों और अर्द्ध चन्द्रलेखा को दण्डवत् और श्री बावन अवतार को कि देवताओं के सहाय के निमित्त प्रयाग में धारण किया वो ब्रह्मचारी रूप से बलि राजा के द्वार पर गये उस को छल करके पाताल में भेजि दिया प्रणाम वो बन्दना करिके धाम निष्ठा लिखता हूं भगवत् का धाम भगवत् रूप है सो धाम शब्द का अर्थ किसी जगह भगवत् रूप से सम्बन्ध रखता है और किसी लोक अर्थात् बैकुण्ठादिक से सम्बन्ध है और जब कि धाम भगवत् का अच्युत अनन्त और माया से न्यारा है और यह भी गुण भगवत् के वेद और पुराणों में लिखे हैं तो भगवत् रूप होने में क्या संदेह है और विख्यात है कि जब जीव माया से अलग हो जाता है तब उस धाम में पहुंचता है तो निश्चय करिके वह धाम भगवत् रूप ठहर गया कि भगवत् की प्राप्ति भी माया छूटने पर शास्त्रों में लिखी है जिस प्रकार भगवत् की महिमा और उसके रंग रूप की वर्णन अतर्क वो अनिर्वचनीय है इसी प्रकार भगवत् धाम का वर्णन भी नहीं होसक्ता परन्तु भगवत् ने जिस प्रकार अपना रूप शास्त्रों में वर्णन किया है इसी प्रकार अपने धाम का रूप भी वर्णन कर दिया है कि तात्पर्य यह है वह धाम सच्चिदानन्द घन रूप है मन्दिर वो अट्टालिका वो वाटिका फुलवाड़ी वो द्रुमलता वो विमान वो सरोवर बावड़ी नालीं इत्यादि सब वहां के दिव्य रूप हैं अर्थात् सच्चिदानन्द घन तत्व बिना किसी अन्य वस्तु का बना अथवा बनाया हुआ वह धाम नहीं है जिस प्रकार हलवाई खिलौने बनाते हैं और सब आकार सहित वाहन वो वाहनी वो साज शृंगार अच्छे प्रकार उस खिलौने में रचित होते हैं परन्तु सब खांड़ही खांड़ है दूसरी वस्तु नहीं इसी प्रकार उस धाम का वृत्तान्त है कि यद्यपि केवल एक भगवत् मय प्रकाश का वह धाम है परन्तु

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

सब मन्दिर आदिक जो जिस प्रकार के बुद्धि की दौड़ और चिन्तना में समावै सो वहां प्राप्त वो रचित हो रहे हैं जाने रहो वह धाम किसी लोक और ब्रह्माण्ड में नहीं असंख्यात ब्रह्माण्डों में जिस किसी को मुक्ति मिलती है तिसको यह धाम मिलता है और इस धाम में पहुंच कर आवा गमन से छूट जाता है सो गीता जो में लिखा है कि जहां जाय के फेर नहीं संसार में गिरता है वह धाम मेरा है भागवत में लिखा है कि भगवत् धाम में पहुंच कर जीव निश्चल होजाता है और फेर जन्म नहीं होता पद्म पुराण वो स्कन्द पुराण वो वाराही संहिता में लिखा है कि भगवत् धाम में पहुंच कर मुक्त होजाता है और दूसरे पुराण सब इसी में युक्त हैं और वेद की श्रुति और कितनेही उपनिषद् हैं वे ऐसीही आज्ञा करते हैं बहुत विस्तार का प्रयोजन नहीं जिस किसी ने एक पुराण भी सुना होगा उसको महिमा वो बड़ाई भगवत् धाम की अच्छी प्रकार समझ में आगई होगी सो वह परम धाम श्री संप्रदा वालों के निश्चय में बैकुण्ठ है वो राम उपासकों के विश्वास में अयोध्या वो साकेत वो सांतानक वो कृष्ण उपासकों के विश्वास वो सिद्धांत में गोलोक इसी प्रकार सब उपासक अपने अपने इष्ट का धाम उसी गुण वो महिमा सहित वर्णन करते हैं औ स्मार्त्त मत वालों का सिद्धान्त यह है कि वे लोग उस धाम को ब्रह्मलोक कहते हैं और उनका निज इष्ट जो देवता होता है उसका धाम सबसे अति ऊपर मानते हैं और दूसरे देवताओं का नीचे जैसे मनुष्य शरीर में हाथ पांव अर्थात् अंग अंगी भाव रखते हैं और कोई कोई को यह निश्चय है कि वह धाम सच्चिदा नन्द घन, भगवत् रूप एक है कोई अन्य स्थान नहीं है जिस प्रकार भगवत् अपने वाक्य के अनुसार कि जिस भाव से जो कोई उसका भजन सेवन करता है उसको उसी रूप से उसी प्रकार मिलता है इसी भांति वह धाम भी जब भक्त उस धाम में पहुंचते हैं उनके भाव को विश्वास के अनुरूप दिखाई देता है, भगवत् ने गीता जीमें कहा है कि जो जिस भाव से मेरे शरण होते हैं उनको उसी भाव से मिलता हूं नारायण उप निषद और कई उपनिषद् वो सहस्र शीर्षा आदि से भी यही बात प्रगट होती है सो जब कि भगवत् अपने भक्तों के भाव के अनुसार प्रगट होता है तो भगवत् का धाम भी कि भगवत् का रूप है वैसाही होना उचित है भगवत् की प्राप्त होने में जो आनन्द है वही इस धाम में सर्व काल वो सब घड़ी सब को प्राप्त रहता है कि जिसका वर्णन किसी प्रकार किसी से नहीं होसक्ता शास्त्रों में जो स्वर्ग वो पृथ्वी पर धन वो राज्यादिक हजारों सुख लिखे हैं वह सब उस धाम के करोड़वां अंश के सुखको नहीं तुलते अब यह वर्णन विस्तार सहित वो निश्चय करना उचित हुआ कि मथुपुरी वो अवध पुरी वो काशी आदि जो धाम वो

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

पुरी धरती पर हैं क्या हैं सो जाने रहो यह धाम वहही हैं जिनका दृष्टान्त ऊपर लिख आये तनक बाल बराबर भी उस धाम और इन धामों में भेद नहीं वरु बैकुण्ठ धाम से इन धामों को एक प्रकार से विशेषता है काहे से कि वह धाम तो ऐसा है कि जब मनुष्य अच्छे प्रकार विश्वास दृढ़ करिके उपासना करै और सब ओर से मन को एकाग्र करिके लगावै तब न जाने कितने जन्मों में मिलता है और यह धाम वह है कि कैसेही पापी वो अधम ने उनकी शरण को लिया वह भगवत् को जा मिला और किसी जन्म में एक बेर भी उन धामों में रहा उसके प्रताप से संगति को पहुंचा और विचार करना चाहिये कि वह ईश्वर जिसको बेद नेति नेति कहते हैं अपने निज धाम को छोड़ कर इन धामों में आता है और अब भी विराजमान है तो बड़ाई इन धामों की है की उस धाम की जो यह कहो कि भला जो यह धाम भी उस परम धाम के सदृश हैं तो जो आनन्द और सुख वहां है वह क्यों नहीं सो जाने रहो कि संपूर्ण सुख वो शोभा इन धामों में सदा हैं और इनहीं धामों के प्रभाव करिके उस धाम का सुख वो शोभा और आनन्द जीव को मिलता है जितना आराधन वो प्रीति उस धाम के प्राप्त निमित्त होती है उसे आधा वो चौथाई भी इन धामों में विश्वास करिके होय तो तुरन्त बेड़ा पार हो जावै विश्वास और हृदय की आंखों को खोल कर देखना चाहिये कि तनक भी भेद नहीं है जैसे गोस्वामी की कथा में वर्णन होगा कि वृन्दावन की शोभा को तनक झलक बादशाह को दिखलाई और हरिदास जी का वर्णन है कि उस समय के बादशाह को उन्हों ने भी ब्रज की छवि और शोभा को दिखाया था और एक कोना सीढ़ी किसी घाट का टूटा था कि सातों बादशाहत के धन से भी उस सीढ़ी का बनना बादशाह ने कठिन समझा था सो विश्वास और प्रीति दृढ़ यही सुख है और जैसे जैसे मन निर्मल और विश्वास की बढ़ती होती जाती हैं तैसेही तैसे शोभा और सुख की बढ़ती होती है अर्थात् हृदय के नयन से दिव्य रूप की शोभा धाम को देखने में आवैगी यह कहो कि भला इन धामों को परम धाम के सदृश लिखते हो और यहीं के रहने वाले ऐसे शठ और धूर्त वो कुचाली बज्जत देखने में आते हैं कि सारे संसार के पापियों के शिरोमणि हैं और उचित यह था कि यह लोग ऐसे होते कि जिनके दर्शन करतेही पापी लोग पापों से छूट जाते सो इसका क्या कारण है सो जाने रहो कि रहने वालों के बुरे आचरण देखने से भक्तों को विश्वास से शिथिल होना नहीं उचित है क्यों कि धाम वासियों के अघ कर्म से भी भगवत् रूप होना उन धामों का अच्छे प्रकार निश्चय होगया अर्थात् भगवत् कल्पवृक्ष के सदृश हैं सबके भाव के अनुसार फलदेते हैं सो उन बसने

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

वालों की रुचि समय के कारण करिकै पाप में ऊई तो भगवत् ने उनकी चाहना के अनुसार पापों की बढ़ती को करि दिया और इस विवाद से निश्चय होगया कि यह धाम कल्पवृक्ष के सदृश भगवत् रूप है अब यह शंका उचित आई कि जो इन लोगों के पापों की बढ़ती ऊई तो ताड़न वो शासन भी बहुत होगा और जब कि दूसरों से अधिक ताड़ना ऊई तो यह धामही दुखदाई ऊआ मुक्ति दायक प्रभाव क्या ऊआ और जो दण्ड न होगा तो शास्त्रों में जो आज्ञा विधि निषेद लिखी हैं वह सब व्यर्थ होजावैंगी सो जाने रहो कि रहने वाले लोगोंको पूरण फल भगवत् धाम सेवन का मिलैगा और शास्त्रों की मर्य्यादभी बनी रहैगी किस प्रकार कि शास्त्रों केवचन से प्रसिद्ध है कि जो और जगह के रहने वाले पापी पातकी हैं वह लाखों करोड़ों वर्ष तक नर्कों में रहैंगे और चौरासी लाख योनि में न जाने कितने कितने वेर जन्म पावैंगे और नाना प्रकार का दुःख भोगना होगा और इन रहने वालों को एकही शरीर में थोड़े ही काल जो कि प्रमाण शास्त्रमें लिखा है दण्ड घोर होकर उन पापों से छूट जावैंगे और भगवत् को प्राप्त होंगे जानेरहो कि पहिले चेष्टा उन लोगों के पापों की और युक्त ऊई रही इस हेतु पापों की वृद्धि पहिले ऊई पीछे उसको धाम ने अपना यह प्रताप किया कि सब पापों से मुक्त करिके परम धाम को पहुंचाय दिया विचार करना चाहिये कि जो कर्म भले होंगे और भगवत् धाम में विश्वास दृढ़ होगा तो क्यों विना दण्ड के वह परमधाम को प्राप्त न होगा और बढ़ती विश्वास और पुण्यों की पहिले क्यों न होगी अब इस बात का उत्तर लिखना चाहिये कि बहुत जाची ऐसे देखने में आये कि जाचा करने पर आगे से और अधिक स्वभाव कठोर वो पापों की चेष्टा करने वाले हो गये सो जाने रहो कि कल्पवृक्ष का वृत्तान्त यहां भी समझ लेना चाहिये जैसे विश्वास और मन से वे लोग जाचा करते हैं वैसेही कार्य्य में बढ़ती होजाती है रीति धामों की जाचा और वहां के रहने की विधि थोड़े में यह है कि विश्वास शुद्ध उस धाम में होय और जिस दिन से याचा करै काम क्रोध लोभ मोह इत्यादि मन से दूर करै मुख से भगवत् का नाम और हृदय से भगवत् चरित्रों का चिंतवन होय और सत्संग हरि भक्तों का होवै संयम नियम सम दम तितिक्षा वो सत्य वो दया वो सचैव वो उदारता निश्चय चाहिये और जब वहां पहुंचै तो वहां के रहने वालों और सब द्वार वो दीवार को भगवत् मय समझ और जो कुछ दान पूजा स्नान व्रत आदि कर्म करै सब भगवत् अर्पण करके फलकी चाहना न करै और ढूंढ़ के भगवत् भक्तों का सत्संग करै कि तीर्थ यात्रा में सत्संग सारहै जब इस प्रकार याचा और वहां वास करै तो पूर्ण फल मिलने में क्या संदेह है और जो ऊपर लिखने के अनुसार न होसकै तो धाममें विश्वास और

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

भजन वो सत्संग में प्रीति और अपकर्मों से निवृत्ति रहना उचित है कि भला कुछ ठिकाना लगै और उत्तम गति को पहुंचे अब उन लोगों की आचा का वृत्तांत सुनिये कि जो लोग साधारण वो थोड़ी पूंजी वाले हैं उन्होंने तो जब समय यात्रा वो पर्व की आई तो यह चरचा आरंभ की कि अबकी बेर बड़ा भारी मेला होगा और अच्छानयन विश्राम होगा कि चारों ओर से सब भांति के लोग चले जाते हैं यह मन करिके दस पांच एक संग के मिल कर चले पथ में सिवाय व्यर्थालाप और हंसी वो ठट्ठे वो वाहियात बोलने वो अनाप सनाप बकने वो हुक्का पीने के और कुछ न किया जब धाम में पहुंचे तो मेले के देखने में लगे और जब तीर्थ स्नान को गये तो स्त्रियों के देखने वो ताकने में मन लगाया और चले तब किसी स्त्री के पीछे पले कुत्ते के सदृश होलिये और उसके टिकांत तक पहुंचाय आये और जो भगवत् मन्दिर में दर्शन को गये भजन ध्यान इत्यादि न बना कोठा अटारी और दूसरी दूसरी लीला देखते फिरे फेर क्रय विक्रय करने लगे और सत्संग न ढूंढ़ा अपने मन के रुचिके अनुसार भंगेरे वो चरस वाले वो दूसरे कुसंगियों को ढूंढ़ने लगे वो हरि भजन वो कीर्तन को न किया नाच राग लड़कों आदि का देखते फिरे जब टिकांत पर आये तो आपुस में बैठ कर जो स्त्रियां कि दिनमें देखी थीं उनका चरचा करते रहे अथवा वहां के रहने वालों की निन्दा वो बणिक लोगों के ठगपने का वर्णन करि फिरि सो रहे जै दिन वहां रहे यहही आचरण रक्खा और जो स्नान वो यात्रा के फलको मांगा तो अपने भाग्य वो कर्म के अनुसार और धन मान यात्री ऐसे हैं कि जब यात्रा की मानस करी तो पहिलेही उसके फल की चाहना करली कि अमुक कार्य हमारा होगा अथवा बेटा होगा वो धन मिलैगा अथवा चाकरी वो द्रव्य उत्पन्न की जगह मिलैगी और रास्ते में सिवाय बार्ता डिगरी ठिस मिस सुक्कहमा अथवा जवाब दावी वो रद्द जवाब का वर्णन अथवा स्तुति निन्दा मिच मुचु वो बादशाहों के वो हाकिमों की करनी कि कथन वो रस की काव्य वो बिरह की जलन वो खाने पहिरने की रचना वो सुन्दरता की इसी प्रकार की बेठौर ठिकाने के और कुछ मुखसे न निकला जो हजार में एक दो को विष्णु सहस्र नाम या महिम्न कंठ हुआ तो न्हाने के पीछे कबहीं पाठ कर लिया नहीं तो कुशल क्षेम और जब धाम में पहुंचे तो घोड़े और बैल वो दुशाले वो सामग्री आदिक का लेन देन प्रारंभ किया अथवा कोठा अटारी फुलवारी देखते फिरे कै मिल वो हाकिम वो ओहदेदार चाकर कै बड़े लोग जो मेले में आये रहे उनको ढूंढ़ २ मिले कै और लोग मिलने को आते रहे और जो स्नान को किसी तीर्थ पर गये तो मांगने वालों के डरसे शरीर को भिजो कर तुरंत चल दिये जो कुछ दान

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

दिया तो हजार आदिमियों को दिखला दिया और हजारों से वर्णन किया और यह चाहना की कि इस दान के प्रभाव से अमुक २ कार्य्य सिद्ध होंय और जो कोई साधु ब्राह्मण मांगने को आया तो रुपया पैसा देनेकी जगह गालियां दी और कहा कि देखो कैसा मोटा संडा है घास खोदकर नहीं खाया जाता सेंत के धन पर कमर बांध रक्खी है और जो मन्दिर वो शिवालय में दर्शनों के निमित्त गये तो सब मनोर्थ मांगे और शेष आचरण महिले लोगों की भांति तात्पर्य्य कहने का यह कि जब ऐसे आचरण से याचा होवै तो वह फल जो शास्त्रों में लिखा है किस प्रकार इस जन्म में प्राप्त होय और क्यों न वे लोग कठोर हृदय होजावें अभिप्राय विस्तार करने का यह है कि भगवत् धाम अर्थात् मथुरा अयोध्या आदि निज परमधाम के सदृश हैं विश्वास और भगवत् भजन और धाम में प्रीति उचित है जो थोड़ी सी प्रीति और भगवत् के मिलने की चिन्ता होगी तो निश्चय करिकै बहुत शीघ्र भगवत् भक्ति की बढ़ती होकर भगवत् की प्रीति सहज में होजावैगी हे मन जो बात कि ऊपर लिख आया स्मरण रखना योग्य है नहीं तो सबसे अधिक तेरी दुर्दशा होगी वह समाज जो ग्रन्थ के प्रथम भूमिका के अंत में लिखि आया जो अनुक्षण हृदय के नयनों के आगे रक्खेगा तो किसी याचा आदि के बिना कियेही सब कुछ तेरे आगे हाथ बांधे आज्ञा के अनुवर्ती हैं वो न तेरे समान दूसरा कोई होगा किस हेतु कि भगवत् धाम उसी का नाम है कि जहां भगवत् विराजमान हैं॥

कवित्त॥

श्याम घन तन पर बिद्यु से दसन पर माधुरी हंसन पर फसन खगी रहै।
घुर वाले भाल पर लोचन बिशाल पर अरु बनमाल पर जुगुत जगीरहै॥
जंघ जुग जानु पर मंजुल सुखान पर श्रीपति सुजानमति प्रेमसों पगी रहै।
नूपुर नगन पर कंज से पगन पर आनंद अखंड मेरी लगन लगी दूहै॥१

काग भुशुण्ड की कथा॥

महिमा और कथा काग भुशुण्ड जी की जितनी पुराणों में लिखी है उतनी थोड़े में लिखने की समवाई नहीं है परन्तु प्रयोजन मात्र धाम निष्ठा के लिखताहूं कि वे पूर्व शूद्र वर्ण अयोध्या बासी हुए किसी दुःख पड़ने से उज्जैन में जा रहे शिव मन्दिर में जप करते समय गुरु आये दण्डवत न किया शिवजीने शाप दिया कि दश हजार वर्ष सर्पादिक योनि में इसका जन्म होय पीछे गुरुने स्तुति बहुत करी शिवजी प्रसन्न हुए वाणी भई कि हे ब्राह्मण परउपकारी वर मांग ब्राह्मणने प्रथम भक्ति मांगी फिर उस शूद्र के कल्याण की बिनय करी आज्ञा हुई कि तथास्तु और शूद्र को आज्ञा हुई कि तेरा जन्म अयोध्या पुरी में हुआ है वो अयोध्या पुरी का यह प्रताप है कि किसी जन्म में एक बेर अयोध्या बस जावै निश्चय रघुन-

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

न्दन स्वामी का भक्त होकर कृतार्थ और जन्म मरण के दुःख से छूट जाता है सो भगवत् का बचन है कि यद्यपि सबने बैकुण्ठ का वर्णन किया है परन्तु अयोध्या के बराबर प्यारा नहीं सो उस अयोध्या पुरी के प्रताप और मेरी कृपा से वह परम गति तेरी होवैगी कि जिसका कबहूं क्षय न होवै अर्थात् श्री रघुनन्दन स्वामी के चरण कमलों में निश्चला भक्ति होगी परन्तु आगे पर किसी साधु ब्राह्मण का निरादर न करना ईश्वर के तनु हैं जो कोई इन्द्र के बज्र वो हमारे त्रिशूल से भी न मरै सो ब्राह्मणों की क्रोधाग्नि से भस्म हो जाता है तिसके पश्चात् शिवजी की आज्ञा के अनुसार काग भुशुण्ड ने वह देह त्याग अन्त में ब्राह्मण के बंश में जन्म लिया माता पिता मर गये तब बनको गवन किया जहां कोई लोमस ऋषेश्वर मिलता तो उनसे श्री रघुनन्दन स्वामी के चरित्रों को पूछते फिर लोमस ऋषेश्वर के दर्शन हुए और उनसे वही अभिप्राय अपने मनका पूछा ऋषेश्वर ने पहिले कुछ सगुण उपासना का वर्णन करके निर्गुण ब्रह्म का वर्णन आरम्भ किया कागभुशुण्ड ने कहा कि महाराज सगुण उपासक हूं राम चरित्र रूपी जल से मेरा मन मीन के सदृश अलग नहीं हो सक्ता ऋषेश्वर ने थोड़ीसी सगुण उपासना वर्णन करके फिर निर्गुण ब्रह्मका वर्णन आरम्भ किया कागभुशुण्डने उस निर्गुण मत को खंडन करिके फिर सगुण उपासना को दृढ़ किया इसी प्रकार से संयोग बाद विवाद की पहुंच गई तब तो ऋषेश्वर क्रोध करिके बोले कि कौआ की भांति अपनी ही कांव कांव करता है मेरी सांची बात को नहीं सुनता इस हेतु तुरन्त कागकी देह तेरी होजाय सो उसी घड़ी काग का शरीर होगया वो भगवत् भक्तों को किसी के साथ बैर वो शत्रुता नहीं इस हेतु कुछ शोच वो चिन्ता को न किया और ऋषेश्वर को दण्डवत करके अपनी राह ली श्री रघुनन्दन स्वामी ने इस परीक्षा में जब काग भुशुण्ड जी को सच्चा पाया तो लोमस ऋषेश्वर के मनमें दया को उपजाय दिया अर्थात् ऋषेश्वर यह सहिष्णुता को धीरता काग भुशुण्ड जी की देख कर लज्जित हुए और अपने पास बुलाकर आश्वासन किया बालरूप भगवत् की उपासना वो राम मंत्र का उपदेश किया वो रामचरित्र सुनाकर यह आशीर्वाद दिया कि राम भक्ति दृढ़ तुम्हारे हृदय में बसी रहैगी वो रघुनन्दन स्वामी के प्यारे होगे वो जो इच्छा करोगे सो सब पूर्ण हुआ करैगी वो मृत्यु तुम्हारे आधीन रहैगी ज्ञानवैराग्य सदा रहैगा और तुम्हारे स्थान के चार चार कोस तक माया नहीं व्यापैगी रघुनन्दन स्वामी के गुप्त चरित्र हैं सो अनायास सब तुमको प्राप्त रहैंगे जब यह आशीर्वाद ऋषेश्वर ने दिया तो आकाश वाणी हुई कि ऐसाही होगा कि यह मेरा भक्त अनन्य है पीछे काग भुशुण्ड जीने ऋषेश्वर के चरणों को दण्डवत् करके नीलाचल पर्वत पर जोकि सुमेरु के निकट है जाकर निवास किया और

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

बहुत कल्प व्यतीत हुए अब तक वहां बने हैं रघुनन्दन स्वामी के कीर्तन में सदा रहते हैं जिनके सत्संग से महा अधम जीव भी जीवन मुक्ति की पदवी को पहुंच गये और शिवजी महाराज ने हंसरूप होकर रामचरित्र सुना और गरुड़जी भगवत् के नगीची होकर ऐसी माया में पड़ गये थे कि शिवजी वो ब्रह्मा भी उपदेश न कर सके परन्तु काग भुशुण्ड जीने ऐसीकृपा करी कि माया दूर होगई एक बेर काग भुशुण्डजी को यद्यपि बरदान सब प्रकार का पाये रहे पर भगवत् माया ने ऐसा नचाया कि बुद्धि का दीपक ठंढा होगया और यह कथा सब पुराणों में लिखी है परन्तु हरि की माया भगवत् भक्तों का कुछ बिगाड़ नहीं सकती काहे से कि भगवत् आप रक्षा करते हैं इसी कारण उस माया से भी परम कल्याण काग जी का हुआ जाने रहो कि जब भक्त को थोड़ा भी अभिमान उत्पन्न होजाता है तब भगवत् अपनी माया से उस अहंकार को दूर करदेते हैं जो ऐसा न करें तो वह भक्त दोनों लोक से जाता रहे जैसे बालक के गुमड़े को उसकी माता चिरवाती है और वह थोड़ीसी पीड़ा होने से सदा का दुःखदूर होजाता है सो भक्तों को किसी प्रकार का कष्ट और दुःख होना कारण बढ़ती भक्ति और परम कल्याणका दायक है भगवत् धाम की यह महिमा है कि जिस पद को ब्रह्मादिक भी नहीं पहुंचते सो पदवी सहज में प्राप्त होती है॥

भगवन्त की कथा॥

भगवन्त जी आगरे के सूबा के दीवान भगवत् भक्त ऐसे हुए कि पुरुष बिहारी जी के चरित्र वो उनका स्वरूप वो प्रिया प्रीतम के आपुस की प्रीति वो प्रेम में दिन रात मग्न रहते थे और सिवाय प्रिया प्रीतम के दूसरी ओर भूलि के भी चित्त नहीं जाता था विधि निषेद से न्यारे होकर युगल स्वरूप के माधुरा रस में छके रहते थे वैष्णवी रूप धारण किये हुए भजन वो भाव का मन विश्राम रखते और श्री वृन्दावन धाम में प्रिया प्रीतम के तुल्य भाव था जो कोई वहां का रहने वाला उतरता तो उसको भगवत् रूप जान कर द्रव्य वो अच्छे पदार्थ आगे धरते एक बेर स्वामी हरिदास जी अधिकारी मन्दिर गोबिन्द देव जी के प्रेम वो भक्त में अद्वैत वो भाव में अनन्य वो भगवन्त जीके गुरु रहे वो भगवत् ने आप जिन से दूध वो भात मांग करके भोग लगाया आगरे की ओर आये भगवन्त जी सुन कर बड़े आनन्दित हुए अपनी स्त्री से मंत्रना किया कि भेंट क्या दिया चाहिये उस बड़ भागिनी ने उत्तर दिया कि एक एक धोती शरीर पर रख लेव औ सब घर बार संपति हाथी घोड़े भेंट कर देव यह सुन कर भगवन्त जी स्त्री से बहुत प्रसन्न हुए और बोले कि प्रेम और भक्ति का रस भगवत् ने तेरेही भाग में दिया है यह विचार इन

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

दोनेां का स्वामी हरिदास जीने भी सुना अति प्रसन्न हुए परंतु उनका धन सम्पत्ति लेना अनुचित समझ कर उनके यहां न गये श्री वृन्दावन को लौटि आये भगवन्त जी गुरु के नहीं आने से बड़े उदासीन वो शोक युक्त होकर सूबे से बिदामांगि वृन्दावन को आये याचा इत्यादि करिके भांति भांति भगवत् भाव वो चरित्रों के सुनने से आनन्दित हुए वो आप भगवत् चरित्रों की रचना करिके भगवत् भेंट किया एक बेर वृजवासी सब चोरी के कारण आगरे के कारागार में बद्ध रहे भगवन्त जीने जाकर छुड़ा दिया एक बेर वृजवासियों ने भगवन्त जी की सब वस्तु को चुरा लिया बड़े आनन्द वो प्रेम में मग्न होगये कि उस चितचोर मन मोहन नन्दकिशोर ने मेरे धन को गोपियों के माखन के सदृश समझा ऐसा भाव भगवन्त जी का अब उनके पिता माधवदास जी का वृत्तान्त सुनिये कि जब उनके देहांत का समय आया श्रेष्ठा पहिचान कर लोग पालकी में डालकर वृन्दावन को लेचले आधी दूर जब पहुंचे तब सुधि भई पूछा कहां लिये जातेहौ उत्तर दिया कि जिस धाम का रात दिन ध्यान करते रहे तहांहीं लिये जाते हैं माधव दास जी ने कहा कि शीघ्र लौटि चलो मेरा शरीर वृन्दावन के योग्य नहीं विचार करो कि जब यह शरीर जलाया जायगा और दुर्गन्ध उठैगी प्रिया प्रीतम के खेल और विहार में भंग होगा कदापि इस शरीर को वृन्दावन में ले जाना उचित नहीं और वृन्दावन में जानाही है तो आप से आप जाने वाला युगल स्वरूप को पहुंच जावैगा यह कहि कर तन को छोड़ दिया वो नित्य विहार में जामिले॥

कथा हरिदास की॥

हरिदास जी जाति के बनिये रहने वाले काशी के निकट के राधा बल्लभी सम्प्रदा में परम भक्त ने अगणित गुण वो गूढ़ भगवत् चरित्रों का सार जानने वाले हुए मानो पलटे से सुख अभिप्राय शास्त्रों की घटती बढ़ती देखा करते रहे जिन्हों ने डंका देकर अपने प्रण को पूरा किया और राधा बल्लभ जी के भजन का प्रताप दिखाया भगवत् भजने में दृढ़ वो कलियुग में कामधेनु के सदृश रहे हरिदास जी ने प्रण किया था कि वृन्दावन में देह त्याग करैं संयोग बस ज्वर हुवा और वैद्य लोगों ने औषधि देने से हाथ खींचा तब डोली में बैठकर भगवत् चरणार विन्द में मन लगा कर वृन्दावन चले बीच में तन छूट गया परन्तु प्रण प्रण करने के निमित्त वैसाही शरीर बना कर वृन्दावन में आये और श्रीराधा बल्लभ लाल जी वो गोसाईं सुन्दर दास अपने गुरू के प्रेम और भाव से दर्शन करके सत्संग और भगवत् चरित्रों के सुख लिये और चीर घाट पर स्नान करके उस देह को छोड़ दिया वो साथी सब लास को दग्ध करके रोते

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

वो शोक युक्त वृन्दाबन में आये सब वृत्तान्त उनके गुरु और सबसे कहा गोसाईं जी ने कहा कि तुम उनके प्रण की चिन्ता कदापि मत करो कल्ह हरिदास जी हमारे पास आये बोल बतराव करके वो भगवत् दर्शन करके स्नान यमुना जी का किया वो देह त्यागि दिया सब को भगवत् भजन का विश्वास हुआ इस चरित्र में जो किसी को शंका होय कि जो हरिदास जी ऐसे समर्थ रहे कि दूसरा शरीर धारण कर लिया तो पहिले शरीर से क्यों नहीं वृन्दावन में आये सो जाने रहो कि हरिदास जी को कुछ ऐसी लाग अपने प्रण पूरे होने की नहीं रही चाहे परा होय न हो परन्तु आप भगवत् को उनके प्रण पूरण होने की लाग पड़ी क्योंकि पद्म पुराण आदिक में वचन भगवत् को है कि मेरे भक्त जो चाहना करते हैं सो पूरण किया करता हूं सिवाय इसके भगवत् को यह बात फैलानी जगत में थी की मेरे भक्तों का प्रण कबहूं नहीं बिचलता है एक तन छूटा तो क्या हुआ दूसरे तनसे वृन्दावन में पहुंचगये॥

मधु गोसाईं की कथा॥

मधु गोसाईं जी मधु श्रीरंग विख्यात थे परम रसिक प्रिया प्रीतम वो श्री वृन्दावन के हुए दर्शन की चाह वो वृन्दावन बास के निमित्त घर बार छोड़ कर बंगाले से वृन्दावन में आये जब याचा वो दर्शन कर चुके तब चाहना साक्षात् दर्शनों की हुई और ब्रज किशोर किशोरी की परम मनोहर मूर्ति के ध्यान में छके हुए सब बन वो कुंज में ढूंढ़ते फिरने लगे दिन रात खाना सोना शीत उष्ण का बिचार निर्मूल मन से दूर किया भक्त भाव महाराज ने जब ऐसी प्रीति अपने भक्त की देखी तो यमुना के किनारे बंशी बट के निकट इस स्वरूप से दर्शन दिये कि परम शोभाय मान श्याम सुन्दर स्वरूप माथे पर मुकुट कानों में कुण्डल स्वर्ण तारों का बागा वो घुटना पैन्हें हुए वो मणि गण के आभूषण सब अंगों पर शोभित एक हाथ में मुरली और दूसरे में छड़ी अपने सखाओं के संग हंसो खेल कर रहे हैं गोसाईं जी को यह रूप अनूप देख कर कुछ सुधि न रही ब्रह्मानन्द में मग्न होकर वे सुध दौड़े वो चरणारविन्द में लिपट गये उनके भाग की बड़ाई किस प्रकार लिखी जावे कि जिस पूरण ब्रह्म सच्चिदा नन्द घन के चरणरज को ब्रह्मादिक बाञ्छा करते हैं सो उनके भक्ति वो प्रेम के बस होकर आप प्रगट हुए॥

भू गर्भ की कथा॥

भू गर्भ जी गोसाईं परम माधुर्य्य उपासक हुए घर बार छोड़ कर विरक्त हो गये और वृन्दावन में आय कर निश्चल वो दृढ़ बास किया अर्थात् सिवाय उस परम धाम के दूसरी किसी ओर चित्त वो चाहना न हुई किसी पुराण का बचन है कि वृन्दावन से बाहर जो करोड़ों चिन्ता मणि

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

मिलते हों अथवा आप भगवत् मिलता हो परन्तु वृन्दावन की रज वो धूलि से यह शरीर कबहीं अलग न होय सो ऐसे ही दृढ़ भाव से गोविन्द देव जी की कुञ्ज में बास करके मानसी भाव से रूप माधुरी प्रिया प्रीतम की तिसमें बेसुध वो मग्न रहा करते खाने पीने की सुधि भी विशेष करिके भूल जाते मन वो प्राण बुद्धि वो सुधि और जितनी चित्त की वृत्ति हैं सब रूप अनूप के चिन्तवन में ऐसी लगी कि दूसरी ओर कदापि न चलाय मान हुई ॥

काशीश्वर की कथा ॥

गोसाईं काशीश्वर जी परम भक्त हुए पहिले अवधूत रहे पुरुषोत्तम पुरी में आये वो श्री कृष्ण चैतन्य महा प्रभू के चेले हुए फिरि आज्ञा से गुरु के वृन्दावन में आये प्रेम वो आनन्द में मग्न वो कृतार्थ होगये थोड़ेही दिन में उनकी भावना वो प्रीति ऐसी विख्यात हुई कि श्री गोविन्द देव जी महाराज की सेवा पूजा उनको मिली उसी सेवा में रात दिन रहने लगे ॥

प्रबोधा नन्द की कथा ॥

प्रबोधा नन्द सरस्वती संन्यासी चेले श्रीकृष्ण चैतन्य महा प्रभू के परम रसिक भक्त हुए प्रिया प्रीतम का बिहार वो कुञ्ज खेल के रस को अपनी काव्य रचना में ऐसा वर्णन किया कि जिस को पढ़ सुन कर करोड़ों प्रेम वो आनन्द में मग्न हुए वो होते हैं युगल स्वरूप मुख चन्द्र में मन को चकोर कीभांति लगाया और वृन्दावन बास की दृढ़ शिक्षा जगत को लखाई कि किसी प्रकार वृन्दावन के बाहर न जावैं ॥

लालमती की कथा ॥

मानुष तन को पाकर जो लाभ होना चाहिये सो लालमती जी को हुआ कि गौड़ स्वामी के चरण कमलों से अन्यत्र किसी ओर चित्त की वृत्ति नहीं जाती रही और लालमती जी वात्सल्य उपासक जनाई पड़ती हैं इसी हेतु भक्तमाल में नाभा जीने गौड़ स्वामी की प्रीति से यह पद धरा नहीं तो प्रिया प्रीतम अथवा किशोर किशोरी यह पद धरते लालमती जी को जितना प्रीति युगल रूप में वैसीही यमुना जीसे वो ब्रज की कुंजों से और वंसीवट इत्यादिक भगवत् के खेल स्थान वो ब्रज मंडल से रही वो अचल बास श्रीवृन्दावन में करके भक्ति भाव को दृढ़ किया वो यद्यपि वात्सल्य उपासना लालमती जी को रही और गोकुलस्थों की सेवक रहीं परंतु धाम निष्ठा का बिश्वास और जिस बिधि से वहां बास चाहिये सो सब लालमती जी में रहा इस हेतु धाम निष्ठा में लिखा गया ॥

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

निष्ठा चौदहीं ॥

भगवत् नाम की महिमा जिस में पांच भक्तों की कथा है ॥

श्रीकृष्णचन्द्र स्वामी महाराज के चरण कमलों के षट् कोण रेखा वो परशुराम अवतार को दण्डवत है कि पृथ्वी के भार दूर करने के हेतु इक्कीस बार क्षत्रियों को वध करके ब्राह्मणों को राज दिया और यह अवतार जमीना गांव में बैशाख शुक्ला तृतीया को हुआ यद्यपि भगवत् नाम का लेना कीर्तन में है परंतु स्मरण से संबंध अधिक है इस हेतु अलग निष्ठा स्थापित हुई और जो चार प्रकार की उपासना अर्थात् नाम धाम लीला रूप शास्त्रों में लिखी हैं तो नाम की उपासना प्रथम अग्र गामी है इस हेतु नाम निष्ठा लिखना उचित समझा महिमा भगवत् नाम की यद्यपि सब वेद वो पुराणों में वर्णन की है परंतु पार न पाय सके जैसे भगवत् की महिमा वो क्षरित, अनन्त हैं उसी भांति नाम की महिमा भी वो नाम अनन्त हैं शेष जो जिस नाम को नित्य नवीन वर्णन करते हैं परंतु पार नहीं पाते शिवजी का प्राण आधार है वो संसार से उद्धार के निमित्त भगवत् नाम ही बरत है और साधन का प्रयोजन नहीं और विशेषता यह है कि कौन २ भाव से नाम स्मरण करें निस्संदेह भगवत् प्राप्त होता है स्कंद पुराण में लिखा कि भक्ति से अथवा बे भक्ति से भगवत् नाम का उच्चारण सब पापों को नाश कर देता है जिस प्रकार महा प्रलय की अग्नि सारे संसार को भस्म कर देती है भागवत् में लिखा है कि औषधी जाने के बिनजाने जिस प्रकार अपना गुण करती है तिसी प्रकार भगवत् नाम वो नृसिंह पुराण में भगवत् का बचन हैं कि जो मेरे नामका जप करते हैं सो अपने करोड़ों पुरषों सहित मेरे धाम को पहुंचते हैं विष्णु रहस्य में लिखा है कि वही परम ज्ञानवाला है और वही परम तप वाला है जो भगवत का नाम लेवै राम रक्षा में विश्वामित्र जी का बचन है कि राम राम अथवा रामचन्द्र रामभद्र जो कोई स्मरण करते हैं उनको कभी यमस्पर्श नहीं करता दोनों लोक की कामना सिद्ध होती हैं स्कंदपुराण का बचन है कि राजसूय यज्ञ वो अश्वमेध और अध्यात्म ज्ञान इत्यादि का सारांश श्रीकृष्णस्वामी ने अपने नाम में रख दिया है अर्थात् सबका फल नाम से हो जाता है जो यह शंका कोई करै कि जिस आदिमी का नाम लेकर पुकारते हैं तो तुरंत आजाता है और ईश्वर का नाम हजारों लोग लेते हैं ईश्वर नहीं आता है इसका क्या कारण है सो यह हेतु कि जिस मनुष्य को पुकारा जाता है किसी प्रकार की बेविश्वासी उसके जानलेने और पहिचान में नहीं होती है इसी प्रकार जब नाम वो नामी में दृढ़ विश्वास होगा तो निःसंदेह तुरन्त भगवत् साक्षात्कार हो जायगा और एक दृष्टान्त भी है कि धर्मात्मा वो न्याय

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

कर्ता राजा को सभा में हजारों दुःख कहने को वो न्याय के निमित्त जाते हैं उसमें बहुत लोग ऐसे हैं कि न न्याय करवाने की रीति जानते हैं और न राज सभा में जाने की रीति जानते वो न कोई पक्ष उनको है और न राजा का स्वभाव पहिचानते केवल अपनी दुहाई तिहाई शोर शुल से काम है सो यद्यपि राजा के न्याय वो धर्मशील स्वभाव से अपने न्याय को पहुंचते हैं परंतु जो विलम्ब होता है सो अज्ञानता से उन लोगों के राजा का कुछ दोष नहीं और कितने लोग ऐसे हैं कि राज सभा की रीति व्यौहार जानते हैं और राज सेवकों से पहिचान है ऐसे लोग जब सभा में गये उसी घड़ी अपने परिश्रम वो राज सेवकों की कृपा से अपना अर्थ सिद्ध करि जाये और केवल राजा की प्रसन्नता के हेतु सभा में जाते हैं वो किसी प्रकार की कुछ याचना नहीं करते ऐसे लोग बहुत थोड़े हैं सो ऐसे लोगों का अर्थ राजा आप सिद्ध कर देता है उनको विनय वो प्रार्थना का प्रयोजन नहीं होता तैसेही यह नाम भी है जापक के विश्वास के अनुकूल अर्थ को सिद्ध कर देता है यद्यपि तरवार में यह शक्ति है कि लोहे के तवे को दो टुकड़े करदें परंतु निर्बल के हाथ से चिह्न भी नहीं उखड़ती और बली के हाथ से तुरन्त दो टुकड़े हो जाते हैं यही इतना नाम के विश्वास का है अब यह शंका उत्पन्न हुई कि बिना मनके लगाये नामके लेने से भगवत् कैसे मिल जायगा सो जाने रहो कि किसी प्रकार नाम लिया जावै निश्चय करिके भगवत् प्राप्त हो जायगा किस हेतु कि नाम और नामी भिन्न नहीं हैं और रीति है कि नाम के पुकारने से नामी पहुंच जाता है सो भगवत् सब जगह प्राप्त रहने वाला नाम के पुकारने से क्यों न आवैगा प्रेमसे पुकारै कै बिना प्रेम पुकारै सो श्लोक सब इसके साक्षीही हैं पर अजामिल की बात इस निष्ठा में लिखी जायगी कि धोखेसे भगवत् का नाम लिया था सो परम धाम को प्राप्त भया और बाल्मीक जी की कथा कीर्तन निष्ठा में वर्णन हुआ है कि उनको भगवत् की महिमा का निर्मूल ज्ञान नहीं रहा और न नाम की महिमा जानते रहे और जो किसी को हठ इस बात का हो कि जब प्रीति दृढ़ वो एकाग्र चित्त लगैगा तबही भगवत् प्राप्ति होगा तो जाने रहो कि परम्परा की रीतिके अनुसार प्रारम्भ में प्रीति वो एकाग्र चित्त की वृत्ति किसी को नहीं होती और जो होती है तो बहुत कम पर नामहीं वह विश्वास वो मनकी लगन को दिन दिन अधिक करिके भगवत् पदको पहुंचाय देता है जैसे बालपन की विद्या के अभ्यास में प्रथम न मन लगै वो न प्रीति उपाध्याय के भयसे अक्षर धोखते धोखते पण्डित होजाता है इसी प्रकार भगवत् नामकी रटना वो विश्वास कर मनकी लगन बढ़ाय के पदको पहुंचाय देती है इस समय में बहुत लोग प्रगट भजन और नाम लेने को अच्छा नहीं कहते हैं वो यह बात बनाते

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

हैं कि बिना मन लगे क्या होता है सो ये लोग जबहीं किसी मनोरथ के सिद्धता को नहीं प्राप्त होते वो उनके संदेह निवृत्त होते हैं निश्चय करिके बौड़हे कुत्ते के सदृश हैं भौंक भौंक के मर जावैंगे प्रथम तो उनके नाम करने को अपराध शास्त्र की आज्ञा का नहीं अंगीकार करना यही प्रबल है अर्थात् शास्त्रों में तो यह आज्ञा होचुकी कि बिना मन ऊपरही से नाम लेनेसे उद्धार होता है और वे लोग उसके प्रतिकूल वर्णन करैं तो निश्चय करिके असुर वो अपराधी हुए और ऊपर ही के भजन से मन भी लगने लगता है सो जब कि उन असुर बुद्धियों को पहिलेही पद से अरुचि भई तो उन को दूसरा पद कब प्राप्त होगा और इसी से सदा जन्म मरण के दुःख में बंधे रहैंगे और बौड़हे कुत्ते के दृष्टान्त से यह अभिप्राय है कि पाप कर्मों के मद से उनकी बुद्धि जाती रही सूक्ष्म अर्थ समझना तो अलग रहा मोटी बातों पर भी उनका विचार नहीं प्रकृति अर्थात् शीतल जलका स्नान और अग्नि का सेवन अथवा ऊपर की सुन्दरताई या किसीकी बात अथवा सुगन्ध वो ठंढी पवन वो दुर्गन्ध इत्यादिक तो ऊपर से हृदय के भीतर भी न जावै और भगवत् नाम ऐसा हुआ कि वह ऊपर से लाहा हुआ कभी गुण न करै धन्य उनकी समझ वो बुद्धि और सोच की बात है कि प्रगट विख्यात बातपर दृष्टि नहीं होती कि पारस पाषाण को लोहा जानिकै लगि जावै अथवा बिना जाने पर भी निश्चय सोना कर देता है और आग में कोई वस्तु जानिकै डाल अथवा बे जाने निश्चय करिकै भस्म होजाती है अमृत को कोई जानिकै पीवै अथवा बेजाने निश्चय अमर हो जायगा इसी प्रकार भगवत् नाम को कोई मनुष्य बिना जाने ऊपर से लेवै अथवा जानिके हृदय से परंतु निश्चय भगवंत् रूप होजायगा तात्पर्य यह कि चारों फल के देने को और संसार सागर से उद्धार के निमित्त मेरे स्वामी का नाम समर्थ है और किसी साधन का प्रयोजन नहीं और इससे अच्छा कोई शरणता अवलम्ब दिखाई नहीं देता है सत्युग में भांतिभांति के कर्म वो ध्यान आदिक और द्वापर में भगवत् पूजन इत्यादि व्यवस्थित रहा और कलियुग में कि पाप रूप है बिना कृष्ण नाम के कोई उपाय अच्छा वो सुख साध्य भगवत् और शास्त्रोंने नहीं ठहराया भगवत् का बचन है कि जब महा पापी धोखे से नाम लेकर संसार समुद्र को उतर गये तो जानि कै नाम लेवैंगे उनका क्या कहना है रामरसराज में लिखा है कि राम नाम ब्रह्म हत्या का दूर करने वाला है भगवत् का बचन है कि कैसाही किसी को दुःख हो और कैसाही विषयी पापी हो भगवत् नाम के प्रभाव से सब पापों वो दुःखों से छूट कर परम आनन्द को प्राप्त होता है सो दोनों लोक का साधन भगवत् नाम से अधिक दूसरा दृष्टि में नहीं आता और यह बात विख्यात है कि जब किसी को कुछ दुःख होता है अथवा

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

कुछ कामना होती है तो बरण बैठलाते हैं और मनोर्थ को प्राप्त होते हैं तो जाने रहो कि अभ्यास और जप भगवत् नाम का सर्वदा वो सब घड़ी अत्यन्त प्रयोजन है वो अवश्यक करनीय है परंतु अत्यन्त आवश्यक से आवश्यक यह है कि साढ़े तीन करोड़ शरीर पर रोम हैं सो अपने जीवते भरमें एकबेर प्रति रोम एक नाम के गणना से साढ़े तीन करोड़ नाम पूरी कर देनी उचित है और इक्कीस हजार छः सै खासा रात दिनमें चलता है सो इतनाही नाम नित्य जप लेना चाहिये इस हेतु कि कोई खासा नाम बितरिक्त गणना में न आवै इक्कीस हजार छः सौ नाम तीन सवा तीन घड़ी में पूरे होजाते हैं अर्थात् सवा घंटे में और यह कुछ प्रयोजन नहीं कि एक जगह बैठ कर लिये जावें चलते फिरते बात करते जिस प्रकार होसकै पूरे कर देने चाहिये सो यह दोनों प्राकर का कर्तव्य उन लोगों के निमित्त लिखा गया कि जिन को नाम लेने में प्रीति नहीं और जिन को भगवत् नाम में प्रीति है और अनुक्षण नाम को रटे हैं उनके एक पल नाम बिना नहीं जाता उनके हेतु कोई रीति लिखनी क्या प्रयोजन कि उनका जीवन धन भगवत् नाम है अरे मन तनक तू समझ और चेत कर कि तू भगवत् अंश से हुआ सदा एक रस प्रकाशवान और ज्ञाना नन्द स्वरूप है कभी ऐसा नहीं हुआ कि तू न रहा हो वो आगे न होगा न कभी तुझ को मृत्यु है और न कभी जन्मता है परन्तु श्री कृष्ण लाली के चरण कमलों से विमुख होकर इस गति को पहुंचा है कि भांति भांति के दुःख नर्क वो स्वर्ग नाना प्रकार की पीड़ा चौरासी लाख योनि की तेरे सुपुर्द पड़ी है स्त्री वो लड़के वो धन वो गृह मिच आदि इनको तू अपना और नित्य समझ कर उनके चिन्ता वो शोच में दुखित वो मग्न रहता है सो अब तू अपने ऊपर दया और उस स्वरूप के चिन्तवन में रहा कर जोकि ग्रन्थारंभ में लिखा है की जिस करके माया के जाल से तेरी छुट्टी होकर परमानन्द की प्राप्ति होय॥

कथा अजा मिलकी॥

अजामिल पूर्व जन्म का ब्राह्मण थी और बन में तप किया करता था मरती समय एक चांडाली में उसका ध्यान गया और मर गया इस जन्म में भी कान कुब्जा नगर में ब्राह्मणके घर जन्म पाया परंतु पहिलेही से पाप कर्म में रत रहा एक पुंश्चली स्त्री को देख कर आशक्त होगया उसके साथ रहने लगा वो पक्षी मृगा मारना मद्य पान वो चोरी वो जुआ खेलना ऐसाही पाप कर्म उसकी जीविका थी कि वर्णन उन कर्मों का अच्छा नहीं एक बेर भगवत् भक्त लोग बिना जाने उसके घर आये उसने प्रेम से सब सेवा रसोई इत्यादि की अच्छे प्रकार से करी और दीन होकर अपना सब वृत्तान्त कह कर चरण पकड़ लिया हरि भक्तों को दया आई चलती बेर

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

उपदेश कर गये कि अबकी लड़का उत्पन्न होय तो नारायण नाम धरना अजामिल ने वैसा ही किया और नारायण नाम लड़के को प्यार बड़ा करता था जब मरण समय यमदूतों करिकै पीड़ित ह्वआ तब पुकारा हे नारायण तब तक नारायण के पार्षद पहुंचे यम दूतों को मार कर निकाल दिया अजामिल को बैकुण्ठ में ले गये यम दूतों ने जाकर यमराज के पास दुहाई दी कि ऐसा पापी सो अपने बेटे को पुकारा कुछ भगवत् को जानकर नहीं सो पार्षद लोगोंने हमको मारकर निकाल दिया उसको बैकुण्ठ में ले गए यमराज ने कहा कि जब मरने के समय किसी प्रकार भगवत् नाम लिया तो अब कौन धर्म कर्म करने को शेष रह गया तुमको इतना ज्ञान नहीं अच्छा ह्वआ जो तुम्हारा दंड ह्वआ आगे पर जाने रहो कि जहां भगवत् नाम का उच्चारण किसी प्रकार हो वहां न जाना क्योंकि जहां भगवत् नाम है तहां यम दूतों का क्या काम है अजामिल जब परम धाम को गया तब उसकी पुश्त की स्त्री भी मनको लगा कर उसी गति को पहुंची धन्य है भगवत् नाम की महिमा वो प्रताप को कहां अजामिल के पाप घोर वो क्या पदवी केवल धोखे से नाम लेने के प्रभाव से मिली तो जान कर नाम लेने से कैसी गति मिलैगी इस चरित्र में महिमा संत्संग और नवें अध्याय गीता जी में जो दृढ़ निश्चय करिके कहा है कि मेरे भक्त का नाश नहीं सोभी प्रगट है॥

कथा २ एक राजा की॥

एक राजा अन्तर निष्ठ परम भागवत् ऐसे ह्वए कि भगवत् का स्मरण भजन इत्यादि सर्व काल मनहीं में किया करते और बाहर की दृष्टी ऐसी थी कि सब लोग महा विषयी वो संसारी जानते थे और रानी हरि भक्ति रही उसको भी राजा के अन्तर निष्ठा का वृत्तान्त ज्ञात न था इस सोच में रहा करती थी कि राजा को किसी प्रकार भगवत् में प्रीति होती एक दिन निद्रा में राजा के मुख से भगवत् नाम निकल गया रानी ने उस दिन नौबत बजवाई दान पुण्य बड़ा उत्साह किया राजाने उत्साह का हेतु पूछा रानीने विनय किया कि रात आपके मुखसे भगवत् नाम निकला इसी हेतु उत्सव किया राजाने कहा कि मूल प्राणका तो भगवत् नाम शरीरमें था जो वहही निकल गयातो तन किस काम का है यह कह कर तन छोड़ दिया तुरंत परम पद को जा पहुंचा रानीने जो यह गतिपुत्र भक्ति और भावराजा का देखा तो ऐसे परम पद परम भक्तके वियोग और अपने अज्ञानता के शोकसे अत्यन्त विकल वो बे सुधि ह्वई कि राजा के प्रेम वो भगवत् भाव में मग्न होकर प्राण त्यागिकै जिस परम धाम को राजा पहुंचे तहां हीं पहुंची निश्चय करिकै जिसका भगवत् नाम से प्रीति नहीं सो शतक प्राय है और जिसको उस नाम से प्रीति है सो सदा अमर है॥

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

कथा एक ब्राह्मण की ॥

एक ब्राह्मण भगवत् भक्त अपनी स्त्री को मैकेसे लिये आता था राह में ठगों से भेंट हुई और ठगों ने पूछने पर कहा कि जहां तुम जाते हौ तहां हीं हम भी जाते हैं सो हम सीधो राह देखे हैं तुम भी इसी राह चलो ब्राह्मण को विश्वास न आया तब उनसे चोरों ने रामचन्द्र के नाम कोबीच दिया तब उस स्त्री ने ब्राह्मण को समझाया कि अब न आनना अयोग्य है तबि दोनों उन ठगों के साथ चले जब महा घन बन में गये ठगों ने ब्राह्मण को मार कर वस्तु सब और स्त्री को ले चले वह स्त्री पीछे फिर फिर देखत जाय ठगों ने पूछा कि अब पीछे कौन को देखती है खसम तेरा तो मारा गया उसने उत्तर दिया कि जो हमारे तुम्हारे बीच में है उस को देखती हूं वो सबों ने कहा कि कहने की बात है कहां अब रामचन्द्र हैं परंतु उस स्त्री को दृढ़ विश्वास था तब तक धनुष धारी महाराज धनुष बान लिये घोड़े पर सवार पीठ ठोंक और पहुंचे ठगों को मार वो ब्राह्मण को जिवाय उन दोनों को घर के समीप पहुंचाय आप अंतर्ध्यान हो गये ॥

कथा कबीर की ॥

कबीर जी काशी में भगवत् भक्त ऐसे हुए कि जिनकी भक्ति और प्रताप जगत में विख्यात है जिन्होंने भगवत् भक्ति से व्यतरिक्त कर्म को अधर्म जाना अर्थात् योग यज्ञ वो दान वो व्रत इत्यादि बिना भगवत् भजन वो भाव के वृथा समझा और निश्चय करिके शास्त्रों का भी यह हो अभिप्राय वो सिद्धांत है कि और साधन शून्य के सदृश हैं और कृष्ण नाम अंक के सदृश हैं जो कृष्ण नाम अंक मात्र है तो योग यज्ञ दान इत्यादि शून्य कृष्ण नाम अंक पर अधिक हो कर सब दश गुने हो जाते हैं और जो कृष्ण नाम रूपी अंक नहीं तो सब वो शून्य व्यर्थ वो रिक्त किसी प्रयोजन के नहीं रहते तात्पर्य इस लिखने का यह है कि जो साधन कर्म हो सो भगवद्भक्ति प्राप्ति के अर्थ वो कृष्ण नाम के प्रीति के निमित्त हो संसार के कार्य्य वो स्वर्गादि के निमित्त न होय कबीर जीने एक ऐसा ग्रन्थ बनाया जिसको सब मत वादी अंगीकार करें और सबके उद्धार के निमित्त काम आवै वो भगवत् भजन में ऐसे दृढ़ थे कि भजन के आगे वरण आश्रम के धर्म को सब वृथा जाना और उनकी कथा यद्यपि बहुत जगत में लोग कहते हैं परंतु जो कुछ भक्तमाल के तिलक से ज्ञात हुआ सो लिखीजाती हैं प्रारंभही से अपने जाति वो मत की रीति को छोड़ कर भगवत भजन में रहा करते थे आकाश वाणी हुई कि माला तिलक धारण करो वो रामचन्द्र जी के चेले हो कबीर जीने विनय किया कि रामानन्द जी मुसल्मानों की परछांहीं भी नहीं देखते हमको चेला किस प्रकार करेंगे तब

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

उसका भी उपाय भगवत् ने बतला दिया तब कबीरजी उसी प्रकार कुछ रात बाकी रहते राह में पड़े रहे रामानन्दजी स्नान को जाते थे उनका चरण कबीर जी पर पड़ा और राम राम मुख से निकला कबीर ने यही को उपदेश समझा और तिलक माला इत्यादि धारण करके उस महा मंत्र का जप और भजन करने लगे कबीर जी की माता ने जो अपने मत के विरुद्ध आचरण देखा तो शोर वो चिल्लाहट किया वो समझाया कबीर जी ने कुछ न सुना अपने स्मरण भजन में रहते रहे नितान्त इस बात की पुकार रामानन्द जी तक पहुंची रामानन्दजी ने आज्ञा दी कि कबीर को पकड़लावो हमने कब उसको चेला किया है कबीर जी गये रामानन्द जी ने परदा डलवा कर वृत्तान्त पूछा कबीरजी ने सब वृत्तान्त उपदेश का वर्णन किया और यह भी विनय किया कि सब ग्रन्थों का मत युक्त इस बात पर है कि राम नाम महा मंत्र हैं सो मंत्र मुक्ति राजलक्ष राज में लिखा है कि श्री राम नाम परम जाप्य हैं महामंत्र ब्रह्म स्वरूप है और शिवजी ने पारवती को राम नाम परम मंत्र सहस्र नाम के तुल्य उपदेश किया है सो उस नाम से कि जिसका उपदेश आप के श्री मुख से मुझको हुआ दूसरा बड़ा मंत्र कौन है कि जिसका उपदेश आप करते तब चेला कहलावते और जब कि उस नाम का उपदेश आपके मुख से हुआ तो आप को गुरु और मुझको चेले होने में क्या संदेह अब रहा रामानन्दजी ने प्रसन्न होकर परदा उठा के कबीर जी को छाती से लगाया वो भगवत् भजन स्मरण वो साधु सेवा का उपदेश किया वो विदा कर दिया कबीर जी प्रयोजन मात्र को उद्यम कपड़ा बुनने का करते थे वो मन अनुक्षन राम नाम में रहता था एक दिन कपड़ा लेकर बाजार में बेचने गये किसी साधु ने जांचा वह कपड़ा दे दिया और खाली हाथ के कारण से घर न गये छिप रहे घर के सब चिन्ता में पड़े भगवत् उनके घर वालों के दुःख न सहि सके तीन दिन बीते बनजारे का रूप धर बैलों पर सब प्रकार के अन्न लादे आये कबीर जी के घर डाल कर चले गये पीछे लोग कबीर जी को ढूंढ़ कर घर लाये जो नाज जमा देखा भगवत् चरित्र समझ कर आनन्दित हुए साधों को बुला कर बांट दिया पीछे अपना उद्यम भी छोड़ दिया ब्राह्मणों ने अन्न में कुछ न पाया तिस करके बटुर के कबीर के घर आये और कहने लगे कि सुनरे जुलाहे तुझको धन का बड़ा गर्व होगया है कि बिना हमको जनाये वैरागियों को कि छोटी जात और शूद्र थे नाज बांट दिया तू इस नगर को छोड़कर दूसरी जगह जाकर वास कर कबीर जी ने कहा क्यों दूसरी जगह छोड़ जावें किसी के घर चोरी करी है कि राह लूटी है ब्राह्मणों ने कहा कि भला इसी में है कि कैतो तू कुछ हमारी भेंट कर नहीं काशी से बाहर जा कबीर जी उनको

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

अपने घर में बैठाल कर आप कहीं जाकिये भगवत् को अपने भक्त का प्रताप सारे काशी में विख्यात करना था इस हेतु कबीर जीका रूप बना घर आये और रुपैया वो नाज ब्राह्मणों को इतना बांटाकि सारी काशी में यश कबीर जीका हुआ और भगवत् ने ब्राह्मण के रूप से कबीर से जाकर कहा कि वनमें क्यों दिन भर रहता है कबीर के घर जाना रुपैया सब को बंटता है कबीर जी अपने घर आये देखकर भगवत् कृपा के प्रेम से आनन्द हुये जब यह सिद्धता भगवत् कृपा सारी काशी में फैली तो भीड़ लोगों की होने लगी तब यह उपाय किया कि एक हाथ बेश्या के गले में डाल कर और दूसरे हाथ में शीशा गंगा जलका मदिरा का भरा करावते उन्मत्त की भांति काशी में फिरने लगे भगवत् भक्तों ने देखा तो कुसंग से भयमाना वे कहने लगे कि कबीर जी परम भागवत हैं बेश्या के साथ लेने से उनको लोगों ने विषयी समझ लिया तो दूसरे लोगों को यह बेश्याओं का कुसंग क्यों न रसातल को पहुंचावैगा और विमुख देख कर हंसे वो कबीर जी की निन्दा करने लगे तब वह भीड़ तो आने जाने लोगों की समझ हुई पर निन्दा करने के अपराध में बहुत लोग बध होने लगे तब कबीर जीने यह उपाय किया कि उसी प्रकार बेश्या वो शीशा लिये राज दरबार में पहुंचे सभा में बैठ गये पर राजा वो सभा के लोग किसी ने आदर सत्कार जैसा करते थे न किया वे विश्वास होगये कबीर जीने उठ कर थोड़ासा गंगाजल धरती पर डाला वो राम राम कह कर शोच किया राजा ने कारण डालने वो शोच करने का पूछा कबीर जीने उत्तर दिया कि इस समय रसोइया श्री जगन्नाथ जी की आग में जलने लगा थी मैंने यह पानी डाल कर आग को बुझा के रसोइया को बचाया है राजा को आश्चर्य हुआ हलकारा भेज कर समाचार मंगाया तो सत्य ठहरा राजा बहुत लज्जित हुआ कि ऊपर के आचरण देख कर ऐसे परम भागवत का आदर सत्कार न किया नितांत लकड़ियों का भार शिर पर धरे रानी सहित नंगे पायन आयकै अति दीन होकर कबीर जी के चरणों में पड़ा कबीर जीने अपराध क्षमा करके भक्ति का उपदेश किया उस समय का बादशाह सिकन्दर नामी था काशी जी में आया और ब्राह्मणों और मुसुलमानों के लगाने से कबीर जी पर क्रोध करके तलबी की कबीर जी गये लोगों ने बादशाह को सलाम करने को कहा कबीर जीने कहा कि हमको न सलाम करने आता है न बादशाह से कुछ काम है एक राम नाम को जानता हूं वही मेरा सब कुछ है और मेरा प्राण का आधार वही है बादशाह ने सुन कर क्रोध करके जंजीर से बंधवा कर गंगा जी में डलवा दिया न डूबे तब आग में डलवा दिया न जले तब मतवाला हाथी उन पर छोड़ा

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

हाथी भी भाग गया यह सब प्रभाव कबीर जी का देख कर बादशाह चरणों में गिरा अपराध क्षमा कराया और कहा कि मैं आप का किंकर हूं धन संपति राज्य जो आज्ञा हो सो भेंट करूं कबीर जी ने कहा कि हमको एक राम नाम छोड़ और किसी से कुछ काम नहीं यह कह कर अपने घर चले आये भक्तों को आनन्द दिया काशी के ब्राह्मणों ने जो यह वृत्तान्त सुना तो लज्जित होकर कबीर जी के दुःख देने के उपाय में हुए बहुत आदमियों को साधु वेष बनाकर सारे मुल्क में कबीर जी की ओर से नेवता फेर दिया कि फलाने दिन कबीर जीके यहां भण्डारा है और उसी दिन पर साधों की जमात आनि पहुंची कबीर जी को जब समाचार मालूम हुआ तो छिपि रहे भगवत् आप कबीर जी के रूप से आये और ऐसी धूम धाम आदर सत्कार से भंडारा पूर्ण किया कि वैसा भंडारा भगवत् से बनि आवै फिर पीछे साधु रूप से कबीर जी के पास गये सब वृत्तान्त भंडारे का वर्णन किया कबीरजी भगवत् कृपा के आनन्द में मग्न होगये एक अप्सरा स्वर्ग की कबीर जी की परीक्षा के हेतु मोहनी रूप बनाकर आई कबीर जी ने तनक उसकी ओर निगाह को भी न किया ऐसे भगवत् रूप में छके थे नितांत चली गई भगवत् ने प्रसन्न होकर चतुर्भुज रूप प्रगट होकर दर्शन दिया और हस्त कमल उनके मस्तक पर रख कर आज्ञा की कि शरीर समेत परम धाम को चलो कबीर जी भगवत् रूप की माधुरी देख कर आनन्दी होगये और जाने को तैयार हुये परंतु भगवत् भक्ति का प्रभाव प्रगट करने हेतु एक आश्चर्य चरित्र किया अर्थात् काशी के उस पार मगहर देश है वहां जो कोई मरता है उसको गदहे का तन मिलता है सो कबीर जी परम धाम के जाने के समय उसी देश अर्थात् गंगा पार गये और वहां जाकर शरीर सहित परम धाम को याचा की इस चरित्र से यह दिखाया कि जो कोई केवल कर्म काण्ड निष्ठ है मगहर देश में मरने से गदहे का शरीर उनको मिलता है और जो कि भगवत् भक्त हैं उनको सब देश वो सब स्थान हजारों काशी के समान हैं और भक्ति की यह प्रभुता वो प्रभाव है कि मगहर देशमें मर कर भगवत् भक्त शरीर सहित परम धाम को जाता है तिसके पीछे मुसलमानों ने चाहा कि लाश को कबर दें क्योंकि कबीर जी मुसलमान थे और हिंदू लोगों ने कहा कि कबीर जी साधु थे हम उनकी लाश जलावेंगे इस पर तकरार हुई चादरा उठा कर देखें तो लाश के स्थान सुगन्ध वाले फूल मिले भगवत् भक्ति का विश्वास हुआ ॥

कथा पद्म नाभ की ५ ॥

इस संसार में भगवत् का नाम महामंत्र वो महाधन और सेवा और पूजा और जप और तप और जोग और ज्ञान वो वैराग का सार और

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

भगवत् रूप है नाम से सिवाय और कोई दूसरा नहीं नामहीसे दोस्ती और नामही से नेह और नामही से नाता वो नामही से बिश्वास चाहिये कि यहही भक्ति है और यही ज्ञान और नामही नामी है और नामही नाम है आप श्रीकृष्ण महाराज अपने नाम की बड़ाई नहीं कह सक्ते इस बात पर सब का मत युक्त है पद्मनाभ जी का वृत्तान्त सुनिये कि उनको कबीर जी अपने गुरूकी कृपा से राम नाम की अच्छे प्रकार परीक्षा हुई काशी जी में एक साहूकार को कुष्ट का रोग था और कृमि शरीर में उसके पड़गये थे गंगा में डूबने को बला संयोग वंस पद्मनाभ जी भी वहां आगये उसका कष्ट देखकर दया आई कहा कि तीन बेर राम नाम ले कर गंगा में स्नान कर कि अच्छा होजावैगा वैसाही उसने किया कि तीन बेर राम राम कह कर डुबकी लगाई अच्छा होगया पद्मनाभ जीने उसको भक्ति का उपदेश किया और वृत्तान्त अपने गुरू कबीर जी को सुनाया कबीर जीने क्रोध युक्त होकर कहा कि तुम को अबहीं तक राम नाम की महिमा मालूम नहीं हुई कि एक रोग तुच्छ के दूर करने को तीन बेर राम नाम कहलाया राम नाम ऐसा महा मंत्र है कि उसके एक बार भी श्रवण कान में पड़जावें तो करोड़ों जन्म के महा पातक दूर होजाते हैं एक कुष्टी का कुष्ट रोग कौन बड़ी बात है पद्मनाभ जीको यह महिमा सुनकर और बिशेष बिश्वास दृढ़ हुआ दिन रात उसी नाम के शरण भजन में रहने लगे॥

निष्ठा पन्द्रहीं॥

महिमा ज्ञान ध्यान की जिसमें कथा बारहभक्तों की है॥

श्रीकृष्ण स्वामी के चरण कमलों की मीन रेखा को और सनत्कुमार अवतार को कोटान कोटि दण्डवत् है यह अवतार भगवत् ने ब्रह्म पुरी में धारण किया वो ब्रह्मज्ञान की बिशेष प्रवृत्ति इसी अवतार से हुई वेद स्मृति वो सब स्मृती वो पुराण इस बात में युक्त है कि बिना ज्ञान के मुक्ति नहीं तो वेदान्त १ सांख्य २ पातंजल ३ मीमान्सा ४ तर्क ५ वैशैषिक ६ शास्त्रों ने कि वेद के अर्थ के कथन करने वाले वो वेद के अंग कहलाते हैं और जहां तक जो कोई मार्ग मतमतान्तर किसी के ध्यान में आवें और जो प्रवर्तमान हैं उन सब का मूल कारण किसी न किसी एक शास्त्र में निश्चय करिके मिलता है यह बात कदापि नहीं कि किसी मत वो ग्रंथ का मूल शास्त्र से बाहर होय उसके निश्चय के निमित्त सब ने मथन वो परिश्रम किया तो सबने ज्ञान ही को मुख्य कर जाना परन्तु सब शास्त्र अपने अपने मत वो रीति से मुक्ति का वर्णन करते हैं इस हेतु उस ज्ञान का स्वरूप देखने में छः प्रकार पर दिखाई देने लगा अर्थात् हर एक शास्त्रों के आचार्य्य

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

ने अपने मूल मत के अनुसार अर्थ ज्ञान शब्द का लिखा वो अभिप्राय अपने का ज्ञान ठहराया परंतु परिणाम वो फल सब का निचार करिकै देखा जावै तो एकही निकल आता है जो सब शास्त्र के मिलाने से थोड़ा भी अर्थ वो वृत्तान्त ज्ञान शब्द का लिखा जावै तौ भी बात बहुत बढ़ जाय और देखने में कुछ फल विशेष भी लाभ नहीं होता इह हेतु सब शास्त्रों के मतवाद से किनारा करिके जो मुख्य अर्थ वो अभिप्राय वेद वो बहुत से शास्त्रों के मत यत्र हैं वह लिखता हूं जाने रहो कि ईश्वर माया जीव इन तीनों का स्वरूप यथार्थ जानकर और ईश्वर के अद्वैततापर मनको दृढ़ करके उसी को देखना और जानना यह ज्ञानका स्वरूप है अर्थात् ईश्वर एक असहाय सब से असंग और जो गुण वेद वो शास्त्रों ने कि सत्चित् आनन्द घन वो अच्युत अनंत वो नित्य वो निर्विकार वो व्यापक वो अविनाशी इत्यादि वर्णन किये हैं तिनगुणों से युक्त और सब गुणों से न्यारे हैं भक्त जन उसकी उपासना पांच स्वरूप से करते हैं प्रथम परब्रह्म अर्थात् श्री विष्णु नारायण वैकुण्ठ निवासी का उस स्वरूप को सामा वो समाज से कि जो वेद वो शास्त्रों ने भगवत् ध्यान के वर्णन में लिखा है ध्यान वो आराधन करना परन्तु यह जाने रहो कि जो श्री रघुनन्दन वो श्रीकृष्ण स्वामी के उपासक हैं वह श्री रघुनन्दन स्वामी को परब्रह्म वो अयोध्या निवासी और श्रीकृष्ण स्वामी गो लोक निवासी को परब्रह्म अर्थात् परमात्मा मानते हैं अभिप्राय यह कि जो जिस स्वरूप अर्थात् राम अथवा कृष्ण अथवा विष्णु अथवा नृसिंह के उपासक हैं वह अपने इष्ट को परब्रह्म मानते हैं मालूम रहै कि यह वह सगुण रूप है कि जिसको शिव वो ब्रह्मा इत्यादि सब योगीजन भांति २ के समाधि लगा कर ध्यान करते हैं और भेद नहीं पावते वेद और शास्त्र वो पुराण वो स्मृती इत्यादि में हजारहों उपाय धर्म वो कर्म वो ज्ञान वो वैराग्य आदि लिखे हैं सो इसी स्वरूप के प्राप्तके हेतु है इसी स्वरूप के प्राप्त होनेसे मुक्ति वो निश्चल वो कृतार्थ वो कृत कृत्य कहलाते हैं दूसरा व्यूह २ स्वरूप इस संसार का पालन करता है और फिर नाश करदेताहै अर्थात् वासुदेव संकर्षण प्रद्युम्न अनिरुद्ध तीसरे विभूति अर्थात् अवतार सो अधर्म के दूर करने और वेद मर्य्याद के दृढ़ करने और अपने भक्तों की रक्षा करने के निमित्त होता है सो दो प्रकार का है एक मुख्य अवतार राम कृष्ण इत्यादि हैं जिनका शरीर माया का रचा हुआ नहीं वे माया के आधीश हैं और पांच उपनिषद वेदके उनके उपासना में गोपाल तापिनी वो राम तापिनी इत्यादि विख्यात हैं परंतु यह सिद्धान्त श्री संप्रदा वालों का लिखा है और जो लोग रामकृष्ण नृसिंह आदि के उपासक हैं वे अपने इष्ट को अवतारी मानते हैं वो विष्णु वो दूसरे लोगों को अवतार दूसरा गौण अवतार उसमें दो भांति हैं एक

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

तो संसारी लोगों के अज्ञान दूर करनें के निमित्त वो धर्म की प्रवृत्ति करने को होता है जैसे व्यास वो बलि वो पृथु इत्यादि दूसरे परशुराम वो शिव वो गणेशइत्यादि और कुछ वर्णन अवतारों का दूसरी निष्ठा में किनारे लिखा गया है वो चौथा अन्तरयामी उसके दो प्रकार हैं एक निरूप अर्थात् ज्ञानानन्द अलेख अविनाशी निरीह निरञ्जन निर्गुण ब्रह्म सर्व व्यापक हैं जिस प्रकार तिल वो काष्ठ के सब अंग में तेल वो अग्नि प्राप्त हैं परंतु दिखाई नहीं देते इसी प्रकार वह सर्व जगह प्राप्त वो व्यापक है और जिसकी सत्ता वो प्रेरणा से माया अनन्त ब्रह्माण्डों को रचती है दूसरा रूपवान् अर्थात् सगुण स्वरूप शंखचक्रधारी माया से निर्लेप वासुदेव स्वरूप है और यही भगवत् विग्रह शंकर्षण आदि व्यूह स्वरूप के साथ कि जिनका वर्णन दूसरे स्वरूप में हुआ गिनती होताहै अर्थात् वासुदेव शंकर्षण प्रद्युम्न अनिरुद्ध पांचवां अर्चा स्वरूप है कि जिसका वर्णन आठवीं निष्ठा प्रतिमा वो अर्चा में लिखा गया इतना भगवत् स्वरूप का वर्णन होचुका माया का रूप यह है कि जड़ अर्थात् अचल है स्वतंत्र किसी प्रकार का कुछ प्रारब्ध नहीं रखती भगवत् की प्रेरणासे सब कार्य्य करती है कोई का यंह वर्णन है कि वह माया अनादि शान्त है अर्थात् यह मालूम नहीं होसक्ता कि कबसें है और कब उत्पन्न हुई परंतु अंत उसका होजाताहै जब बेद वो शास्त्र के सिद्धांत के अनुसार छूटने के निमित्त उपाय कियाजाता है तो वह माया दूर होजाती है और कोई यह कहते हैं कि माया नित्य है वो सदा रहैगी कि भगवत् की भक्ति हैं दूर होना उसका असंभव है परंतु जब बेद के अनुसार यह जीव भगवत् आराधन करता है तो भगवत् की कृपा से वह माया उस जीव पर अपना बल जैसा औरों पर करती है नहीं करसक्ती इसबात में मूलअर्थ दोनों का एक है केवल बोलन मात्र है ॥ वह माया दो प्रकार की है एकविद्या कि जिसें अनंत ब्रह्माण्ड वो ब्रह्माण्डों के स्वामी उत्पन्न होते हैं दूसरीअविद्या कि जिस के जालमें यहजीव फंसाहुआ है ॥ जीवका स्वरूप कि जिसको आत्मा भी कहते हैं कुछ नाम निष्ठा के अंत में वर्णनहुआ अर्थात् भगवत्अंश निर्विकार प्रकाशवान ज्ञानानन्द स्वरूप वो तीनों कालभूत भविष्य वर्त्तमान में प्राप्त है परंतु भगवत् के सदृश अनन्त नहीं भगवंत् शेषहैं और जीव शेषी-हैं शेष पदका वर्णन विस्तार से सेवा निष्ठा में होगा ॥ सो जीव पांचप्रकार के हैं पहिले नित्यहै किउनका जन्म दूसरे जीवों की भांति संसार में नहीं होता जैसे विष्वक्सेन वो गरुड़ आदि ॥ दूसरे मुक्त हैं कि भगवत् आराधन वो ज्ञानके अवलम्ब से मुक्त हुए ॥ तीसरे केवलहैं कि मुक्त होने के किनारे अपने तप वो परिश्रम से पछंचगये अर्थात् जीवन्मुक्त ॥ चौथे मुमुक्षु कि जो मुक्ति चाहते हैं उनके दो प्रकार हैं पहिले वह कि जिन्होंने नवधा

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi.

भक्ति करिके भगवत् चरणोंमें चित्त लगाया है ॥ दूसरे शरणागत को भक्ति इत्यादि से कुछ संबन्ध नहीं सब प्रकार से केवल भगवत् चरणों की शरण ली है और अपने को सब कार्य्य वो साधन में निराला परतंच समझ कर सब बोझ वो भार भगवत् पर डाल दिया है उनके दो प्रकारहैं एक इच्छ कि जो चाहना भगवत् सेवा भजन इत्यादि को रखते हैं दूसरे आरत कि जो भगवत् की सेवा भजन इत्यादि में रत हैं ॥ पांचवां बंध है कि जो संसार के विषय भोग के स्वाद में भ्रमित वो लीन रह कर सदा आवा गमन की फांसी में फंसे रहते हैं और यही दशा रहेगी यद्यपि कोई पांचों प्रकार जो लिखि आये तिस को तीन प्रकार वर्णन करते हैं पहिले विमुक्ति जो कि संसार से छूटि गये दूसरे मुमुक्षू अर्थात् साधक जो कि छूटनेके हेतु उपाय करते हैं तीसरे विषयी जो कि संसार के सुख स्वाद में भूल रहे हैं परंतु जो बिचार किया जाता है तो अभिप्राय दोनों का एक है जीव का वर्णन हो चुका ॥ इस ज्ञान के निर्णय में कोई यह कहते हैं कि ईश्वर वो माया वो जीव के स्वरूप जानि लेनेके पीछे ईश्वर जीव को एक समझ के अभ्यास वो वैराग्य केवल चित्त की वृत्ति से दृढ़ होय और हृदय से द्वैत का भाव मिटजाय उसका नाम ज्ञान है और उसी को विज्ञान कहते हैं तात्पर्य्य उनका यह है कि भीतर बाहर वो मन जहां तक पहुंचै सो सब भगवत् निर्विकार ज्ञानानंद स्वरूप है सिवाय भगवत् के न कहीं कुछ हुआ न है न होगा और यह जो संसार दृष्टि में आता है सो स्वप्न प्राय है वास्तव में सब ईश्वर है और कोई का यह वचन है कि निश्चय करिके जहां तक मन वो इन्द्रियों करिके देखने में आता है वह सब भगवत् रूप है और यह जीव दास उस भगवत् का है और कोई ऐसे हैं कि उनको न पहिले वचन से कुछ प्रयोजन है न दूसरे से वे यह कहते हैं कि अपने सच्चेप्यारे के ध्यान में चित्त की वृत्ति ऐसी मग्न होजाय कि सिवाय उस रूप अरूप के और कुछ तनक भी भीतर बाहर शरीर में बाकी न रहै वही ज्ञान है और वही वैराग्य है और वही भक्ति है और वही शरणागती सो जानें रहो इसी प्रकार के बचन थोड़े थोड़े अन्तर से उनके मतान्तर के विचारने से बहुत हैं परंतु परिणाम सब सिद्धांत वो वर्णन का एक होजाता है काहे से कि जिसने जीव ईश्वर को एक जाना तो उसकी दृष्टि में सिवाय एक ईश्वर के दूसरा न रहा और जिसने अपने आप को दास और भगवत् को स्वामी विचार किया तो वह भी भगवत् रूपके माधुरी में मग्न होजाने के समय अपने को भूल जायगा सिवाय उसरूप के और कुछ दृष्टि में न आवैगा सो सब को परीक्षा मिली होगी कि कोई समय किसी काम में चित्त की वृत्ति ऐसी एकाग्र लगिजाती है कि तनक सुध बुध अपने विराने वो तनबदन की नहीं रहती तो भगवत् के

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

चिन्तवन वो रूप माधुरी का सुख वो आनन्द जब लाभ होगा तौ कब दूसरा कोई और सिवाय इस रूप के शेष रहि सकता है अब तात्पर्य्य वो मूल अभिप्राय सब शास्त्रों का लिखता हूं कि जिस प्रकार होसकै यह जीव भगवत् चरणों में लगै सब मनोर्थ इस लोक वो परलोक का और सब ज्ञान वो वैराग्य इत्यादि आप से आप प्राप्त होजावैंगे सो भगवत् ने गीता जी में आप श्रीमुख से कहा है कि हमको एक जानकर अथवा पृथक् जन कर अथवा बहुत प्रकार का जान कर जो भजन सेवन करते हैं उनको निश्चय करिकै मिलता हूं काहे से कि सब ओर मैं प्राप्त हूं सो जाने रहो कि जब तक भगवत् चरणों में मन नहीं लगता तब तक सब बुद्धिमानी भूलता है और सब जानकारी पर धूल क्या अच्छी बात हो कि मेरा मन सब असत्य को छोड़ कर श्रीकृष्ण स्वामी के चरण कमलों में मग्न होजावै और क्या सुन्दर भाग्य खुलै कि उस समाज को जो कि ग्रन्थारम्भ में नीचे लिखा है रात दिन चिन्तवन करता रहै कि यह संसार समुद्र गोपद जल से भी तुच्छ होजाय॥

वशिष्ठ की कथा॥

बशिष्ठ जी इसों पुत्रों में ब्रह्मा जी के भगवत् भक्त और सब विद्या के आचार्य्य हुए ज्योतिष विद्या वो चिकित्सा वो संगीत इत्यादि में संहिता उनकी बनाई बिख्यात हैं पिछले लोगोंने उनकी संहिता को प्रमाण करि के बई परिपाटी रचना की परन्तु बिशेष करिके उनका अधिकार धर्म शास्त्र वो भक्ति वो ज्ञान शास्त्र में अधिक है जिन्होंने अन्तरिक्ष में निराव लम्ब स्थिति करिके भगवत् भजन वो ध्यान किया और फिर दूसरे ब्रह्माण्ड में जाकर वहां की ब्राह्मणी की सहाय के निमित्त ब्रह्मा से विज्ञापन किया और धर्म के प्रवृत्ति के सहाय के हेतु अब तक यहं बिचार है कि तीन स्वरूप धारण करिके तीन जगह एक ब्रह्म लोक दूसरे धर्म राजकी सभा में तीसरे सप्तऋषेश्वरों में रहते हैं जिन के प्रताप को देख कर राजा बिश्वामित्र ने अपना राज्य छोड़ दिया को भगवत् भक्ति को अंगीकार किया और तितिक्षा ऐसी थी कि नहीं देने नन्दिनी गऊ वो नहीं कहने ब्रह्म ऋषि के बैर के कारण से बिश्वामित्र ने सौ पुत्र उनके एक राक्षस से वध करवाय दिये परंतु समर्थ होकर उसके बदले कुछ न किया उनका बचन ब्रह्मा बिष्णु शिव और सारे जगत् को ऐसा अंगीकार था कि जब बिश्वामित्र जीने ब्राह्मण होने के निमित्त बहुत काल तप किया और उनके ब्राह्मण होने का निश्चय बशिष्ठ जी के बचन पर था जब बशिष्ठ जीने अपने मुख से ब्राह्मण कहा तब सब के निकट उनकी गणना ब्राह्मणों में हुई भगवत् चरणों में ऐसी प्रीति थी कि ब्रह्मा जी से यह बात सुनी कि पूर्ण ब्रह्म सच्चिदानन्द घन सूर्य्य बंश में राम अवतार होगा बड़ी प्रस-

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

न्नता से प्रोहिताई सूर्य्य वंश की को अंगीकार किया जब भगवत् अवतार हुआ तो कबहीं वात्सल्य भाव में वो कबहीं चराचर में व्यापक देखकर प्रेम के रंग में रंगि जाते थे॥

विश्वामित्र की कथा॥

विश्वामित्र पहिले क्षत्री राजा गाधि के पुत्रथे जब नंदिनी गऊ से वशिष्ठ जी के हेतु सेना प्रबल हरिमई और राजा से ब्राह्मणों का प्रताप और पदवी भगवत् भक्ति के कारण से अधिक देखा तो राज्य को छोड़ कर भगवत् भजन में लगे और कई लाख बरस तक ऐसा घोर तप किया कि क्षत्री से ब्राह्मण होगये भगवत् भक्ति और तप करिके ऐसा बल वो प्रताप रखते थे कि दूसरा ब्रह्माण्ड उत्पन्न कर देवैं सो एक बेर ब्रह्मा से क्रोध करिके नवीन ब्रह्माण्ड रचने को विचार किया और बहुत लोग कई प्रकार के उत्पन्न किये कि ब्रह्मा और दूसरे देवता सबने आय के वह रिस निवारण की कि नवीन ब्रह्माण्ड की रचना से शांत भये सो जो वस्तु को उत्पन्न किया सो अबहीं तक हैं वो त्रिशंकु नामें अयोध्या के राजा को शरीर सहित स्वर्ग को भेज दिया जब इन्द्र ने उसको धरती पर गिरा दिया तो उसने आकाश से पुकार करी विश्वामित्र जीने अपने तप बल से धरती पर गिराने न दिया कि अब तक निराधार में है और इन्द्र को स्वर्ग से निकालने की इच्छा की तब देवताओं की प्रार्थना से फेर दयाको किया इस प्रकारके चरित्र विश्वामित्र जी के बहुत हैं भगवत् के निष्काम भक्त और कर्म शास्त्र के प्रवर्तक ऐसे थे कि एक बेर बहुत काल पर्य्यंत अकाल पड़ा था कुछ भोजन को न मिला बहुत दिन पीछे एक चाण्डाल से कुछ अखाद्य वस्तु मिली और असमय में उसको खींच विचार करिके लाये स्नान संध्या आदि करिके चाहा था कि भगवत् अर्पण वो पिंड कर्म करिके भोजन करैं परन्तु भगवत् को अपने भक्तों को ऐसा दुष्ट भोजन खाने देना अंगीकार न हुआ इस हेतु जब विश्वामित्र जीने अर्पण करने को भगवत् का ध्यान किया तो समाधि लगि गई और ऐसी दृष्टि भई कि सब वन वो खेत भांत भांत के फल वो धान्य से हरित होगये और उस मांस का भी दिव्य कटहल वो बड़हल का जमि आया जब समाधि से जगे तो दण्डवत् वो स्तुति भगवत् को करिके फलादिक से क्षुधा को शांत किया श्रीरघुनन्दन स्वामी के चरण कमलों में जो प्रीति थी उसका वर्णन तो कब हो सक्ता है कि भाव और भक्ति के वशीभूत होकर उनके साथ गये और आप उनके यज्ञ की रक्षा करिके अपने रूप अनूप अद्भुत से दृष्टि वो कृतार्थ किया॥

राजाभर्त की कथा॥

राजाभर्त जोकि जड़भर्त करिके विख्यात हैं तिनकी कथा ऐसी प्रसिद्ध है कि सब कोई जानता है इस हेतु बहुत सूक्ष्म करिके लिखता हूं राजा

CC-0. Digitized by eGangotrl. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

यें संसार अनित्य जानकर राज छोड़ दिया बन में नदी गंडिकी के तीर वास करिके भगवत् आराधन करने लगे एक हरिण के विरह से प्राण त्याग किया हरिण का तन पाया फिर वह तन छोड़ कर ब्राह्मण का तन मिला और पूर्व जन्मों का स्मरण बना रहा वो हरिण के नेह से दो बेर जन्म लेना पड़ा इस हेतु महा विरक्त होकर सदा भगवत् भजन में लीन रहे वो किसी से न कुछ बोलें न उत्तर दें इस कारण जड़भर्त नाम हुआ एक बेर कोई भीलों का राजा काली के बलिदान के निमित्त पकड़ कर लेगया जब तरवार मारने का मन किया तो दुर्गा ने वही तरवार लेकर उन दुष्टों के वध किया वो अपना अपराध क्षमा कराया एक बेर राजा रघुगण ने पालकी में लगाया चींटी बचाय के चलने से पालकी उचकै कहारों के साथ तालमेल न मिले राजा क्रोध करके बोला कि ऐसी मोटाई पर अच्छे प्रकार क्यों नहीं चलता क्या दंड देने वाला मुझको नहीं पहिचानता है भर्तृजीने ऐसे ऐसे उत्तर दिये कि राजा को कुछ ज्ञान होगया चरणों में पड़कर अपराध क्षमा कराया भर्त जी को दया आई भगवत् का ज्ञान उपदेश किया राजा कृतार्थ वो ज्ञानवान होगया भगवत् भजन स्मरण में लगा भर्त जी परमधाम को जाने लगे तो योग अभ्यास से देह त्याग किया वो उस परमपद को पहुंचे कि जहां से फिर नहीं फिरते बिचार करना चाहिये कि थोड़ी सी भी प्रीति किसी वस्तु की कैसी दुखदाई होती है॥

अलर्क मदालस सुबाहु की कथा॥

अलर्क राजा रतिध्वज का बेटा अनन्य भक्तज्ञानी हुआ वृत्तांत यह है कि मदालसा अलर्क की माता बड़ी ज्ञानी वो वैराग्यवान थी उसने अपने मनमें प्रण किया था की जो मेरे उदरसे जन्मले फिर उसको जन्म मरण की दुख नहो सो जब अलर्क जीने जन्म लिया उनको उपदेश भागवत् धर्म का ऐसा किया कि घरबार छोड़कर बनको चले गए और भगवत् भजन में लगे पीछे और लड़के जो हुए तो उनकी भी मति अलर्क जीकेसदृश हुई अंत में जो छोटा बेटा सुबाहु नामी हुआ तो राजा ने राज के निमित्त मदालसा से मांगा मन्दालसा ने अंगीकार किया परन्तु अपने प्रण की सोच और चिन्तना रही और एक पची जंच की भांति लिखकर सुबाहु को देदी कि जब बड़ा कष्ट कुछ आन पड़ै तो खोलकर पढ़ना जब सुबाहु को राज्यगद्दी का अधिकार हुआ उसके सुख में मग्न हुआ तो मन्दालसा ने अलर्क जी से कहा अलर्क जी को सुबाहु पर बड़ी करुणा वो दया हुई और चिन्ता को किया कि कौन प्रकार से सुबाहु को संसार के जाल से छुड़ा कर भगवत् सन्मुख करना चाहिये सो काशी के राजा को आधा राज देने को बाचा बोल दिया फौज चढ़वाई युद्ध भये पीछे सुबाहु

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

को सामर्थ युद्ध की न रही शोच में पड़ा तब उस यंत्र को जो माता ने दिया था पढ़ा उस में लिखा था कि जब बहुत दुख हो सत्संग करना चाहिये और यह संसार अनित्य है भगवत् नित्य और सच्चिदानन्द घन हैं ऐसे स्वामी को छोड़ कर जो अनित्य संसार में मन लगाते हैं सदा आवागवन के जाल में फंसे रहते और जो भगवत् शरण होकर भजन सुमिरण में रहते हैं सो भगवत् के परम पद को प्राप्त होते हैं सुबाहु को इस वचन से कुछ ज्ञान होगया परन्तु सत्संग को भी विशेष जानकर दत्तात्रेय जीके पास पहुंचा उनके थोड़ेही उपदेश से पूर्ण ज्ञान को प्राप्त होकर सब राज काज छोड़ अपने बड़े भाई अलर्क के पास गया हाथ जोड़कर विनय किया कि आप की कृपा से राज और संसार के बखेड़ेसे छूटकर भगवत् शरण हुआ हूं आप राजगद्दी अंगीकार करिये अलर्क जी बहुत प्रसन्न हुए और कहा कि हमको कुछ चाहना नहीं है केवल तुम्हारे छुड़ाने के हेतु यह उपाय करा था अलर्क जीने काशी के राजा से कहा कि सुबाहु ने तो राज को त्याग कर दिया तुम राज करो उसने जो सब वृत्तान्त सुना वो संसार के अनित्यता पर बिचार किया तो उसने भी अंगीकार न किया अपने राज को भी छोड़कर भगवत् के शरण में आया और सबने ऐसा भगवत् के भजन वो सेवा में मन लगाया कि थोड़ेही काल में परम आनंद वो परम पदको प्राप्त हुए॥

सुतिदेव बहुलाश्व की कथा॥

सुतिदेव ब्राह्मण वो बहुलाश्व राजा दोनें परम भक्त भगवत् के वो ज्ञानी अयोध्या में हुए जैसे अपने भक्तोंके हेतु भगवत् अवतार धारण किया करते हैं तैसाही चरित्र इन दोनों भक्तों के निमित्त किया अर्थात् जब श्री कृष्ण महाराज जनक पुर से द्वारिका जाने को विदा हुए तब अयोध्या जीमें आये ब्राह्मण वो राजा दोनों आगे जाकर मिले वो दरशन पाकर कृतार्थ हुए और दोनोंने अपने अपने गृहके पवित्र करने के हेतु बिनय किया भगवत्ने विचार किया कि दोनोंभक्त बराबरमेरे किसके जाऊं किसके नहीं कृपा युक्त होकर सब ऋषेश्वर वो सब सामान सहित दो रूप होकर दोनों भक्तों के गृह को पवित्र किया चार महीने तक दोनों भक्तोंके घर अयोध्या जी में रहे एक का भेद दूसरे ने न जाना रात दिन नित्य नये भाव प्रेमसे सेवा करते रहे बिदा के समय अनपायनी भक्ति का बरदान पाया॥

उद्धव की कथा॥

उद्धव परम भागवत् और ज्ञानी हुए यद्यपि श्रीकृष्ण महाराज कृपासिंधु उनको मंत्री वो एकांती मित्र वो नगीचो नातेदार समझते थे तथापि उद्धवजी सदा अपने दासभाव से सेवन करते रहे जब श्रीकृपासिंधु महाराजने व्रजगोपियों के बोध वो समझाने के हेतु व्रजमें भेजा तो गये वो

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

व्रजसुन्दरियों को कि व्रजचन्द्र महाराज के वियोगसे विना जलके जैसेमीन तड़फड़ाती हैं सोदशा घी उनविरहिनियों को ज्ञान वो योगका उपदेश करने लगे परन्तु व्रजकिशोरियों के नयन वो मनप्राण सब श्रीमनमोहन श्यामसुन्दर के रूप वो माधुरी के अमृत सिंधु में मग्न और प्रेम वो स्नेह के रससे छकी वो मतवारी थीं वह उपदेश उद्धव जीका तनक भी उनको न लगा और यह वचन बोलीं॥

सोरठा॥

सजल मेघ तनश्याम अधर सुधरमुरली धरे।
मोहीं सब व्रजबाम और न जानतिं ब्रह्महम॥

ऐसे ऐसे उत्तर प्रमाणिक दिये कि उद्धव का ज्ञान वो योग धूरिमें मिलि गया और प्रेम में बेसुधि वो विह्वल होकर व्रजवल्लभाओं के चरणों में लोटने लगे क्या जानै उस अपने ज्ञान और योग भले हुए को ढूंढ़ने लगे होंगे कभी उनके दर्शन से अपने आपको कृतार्थ मान कर अपने भागकी बड़ाई करते थे और कभी उसपरम आनंदसे कि जोगोपियों को प्राप्तथा अपने आपको भाग्य हीन जानकर अपने भाग से लड़तेथे कि मैं इस व्रजमें गोपबधू क्यों न हुआ सो-उद्धव जी गोपियों के प्रेम से बेसुध होगये तो कुछ आश्चर्य नहीं क्योंकि आप व्रजभूषण महाराज ने ऐसी ईश्वरता वो प्रभुतासे युक्त की कि ब्रह्मादिक भी जिसका पार नहीं पाते ऐसे उनके प्रेम में मग्न हैं कि अपने परम धाम को छोड़ कर उनके हेत नर शरीर धारण किया फिर उनकी प्रसन्नता को अपनी प्रसन्नता परभी अधिक से अधिक जानकर सब प्रकार से उनकी इच्छा वो चाह को पूरण किया और उनके अनुकूल चरित्र किये और अबतक ऐसे बसवर्ती हैं कि जो कोई उनके चरित्रोंको कोसाही पातकी वो अपराधी हुवतो है अथवा सुनता है उसके हृदय में आजातेहैं निश्चय करिकै व्रज सुन्दरियों का चरित्र संसार समुद्र से पार उतारने के हेतु ऐसा बड़ा जहाज है कि अच्छे वो बुरे कर्म रूप पवन की झोंक नगोंच नहीं आती नहीं मालूम कि कितने असंख्य जीव उसके प्रभाव से इस जन्म मरण रूपी घोर नदी से पारहुए और आगे होंगे जब उद्धव जीने ऐसा प्रेम व्रज नागरियों का देखा तो अपने ज्ञान वो योग को तुच्छ जानकर मथुरा को सिधारे और सब वृत्तांत श्री नटनागर व्रजचन्द्र महाराज से निवेदन किया वाह वाह धन्य हैं गोपियों का प्रेम कि जब आपने वह वृत्तांत सुना तो यद्यपि हर्ष शोक दुख सुख वो माया और मन से पार हैं परंतु उस प्रेममें ऐसे मग्न होगये कि जिस प्रेम का प्रवाह हृदय से उमगकर नैनरूपी झरना से प्रबाह रूप होकर निर्गुण निराकार निरंजन निर्द्वंद निर्मोह निर्लेप नाम और गुणों को बहाता हुआ कपोलों पर होकर वैजयंती और पीतांबर को भिगोता हुआ वक्ष-

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

स्वप्न से चरण कमलों तक पहुंचा पीछे जब कृपासिंधु महाराज मथुरा को छोड़कर द्वारिका को पधारे तो ऊधो जीने चरण सेवा नछोड़ी वो साथ गये जब यादव लोगों को शापहुआ तो भगवत् ने कृपा करिके ज्ञान उपदेश किया वो भक्ति का बर दान देकर बद्रिकाश्रम को भेज दिया ॥

कथा बाल्मीक स्वपच की ॥

बाल्मीक स्वपच भगवत् भक्त ज्ञानवान हुए जब राजा युधिष्ठिरने इन्द्रप्रस्थ में राज सूय यज्ञ किया तो भगवत् से पूछा कि कैसे परीक्षा होगी कि यज्ञ पूर्ण हुआ भगवत् ने कहा कि जब हमारा शंखआप से बजै तब समझ लेना कि यज्ञ पूर्ण और सिद्ध हुआ राजा ने शंख को भगवत् आज्ञा के अनुसार यज्ञ स्थान में स्थापित किया उस यज्ञमें जितने पृथ्वी पर ब्राह्मण वो ऋषेश्वर वो ज्ञानवान वो राजा वो रंक आये थे सब का सत्कार दान वो मानसे करिकै राजा युधिष्ठिर ने संतुष्ट किया औसब को यथा योग्य रीति से भोजन कराया परंतु शंख न बजा तब संदेह से युक्त होकर श्री कृष्ण महाराज से कारण पूछा तब आज्ञा हुई कि मालूम होता है कि किसी भक्त ने अपनी जूठन से इस यज्ञ को सफल नहीं किया इसी कारण से शंख नहीं बजा राजा ने विनय किया कि महाराज सबदेशों के ऋषेश्वर और ब्राह्मण आये क्या उनमें कोई हम्हारा भक्त नहीं था भगवत् ने कहा कि उन ऋषेश्वर और ब्राह्मणों से पूछना चाहिये सो राजा ने सब से पूछा तो किसी ने ऋषेश्वर और किसी ने पंडित और किसी ने बेद पाठी और किसीने ब्रह्म वादी और किसीने कर्मनिष्ठी अपने आपको बतलाया परंतु भगवत् उपासक किसी ने न कहा तब राजा वो द्रोपदी वो अर्जुन सबने बड़ी प्रार्थना से भगवत् से पूछा कि महाराज भक्त को बतलावो तब उन्हों ने बाल्मीक स्वपच को बतलाया तब अर्जुन वो भीम आदि राजा के भाई उन के घर गये वो प्रणाम करिके अपने घर आने के हेतु बिनय किया बाल्मीक जीने पहिले वहुत प्रार्थनाही से नाहीं किया पीछे भगवत् की इच्छा समझ कर राजा के घर आये राजा युधिष्ठिर व भक्त वत्सल महाराज ने बड़े आदर वो सन्मान से उन को बैठाला द्रोपदी आप थाल भोजन का तैयार करके लाई वो जब बाल्मीक जीने भोग लगाया शंख थोड़ा बजा भगवत् ने छड़ी शंखपर मारी वो आज्ञा की किया कि अब किस हेतु थोड़ा बजता है शंख ने बिनय किया कि महाराज द्रोपदी सेपूछना चाहिये द्रोपदी ने हाथ जोड़कर विनय किया कि मेरा अपराध सच करिकै है किस हेतु कि जितने भोजन अलग अलग कई प्रकार के बाल्मीक जीके आगे गये उन सब को एक में मिलाकर भोग लगाया हम को बुरा मालूम हुआ और मनमें कहा कि बाल्मीक जी नाना प्रकार के भोजन के स्वाद को कुछ नहीं जानते हैं इसी से सब को एक में मिला कर

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

खाते हैं भगवत् ने कहा कि अब आगे पर भूलकर भी भगवत् भक्तों से बुरा और उन के आचरण पर दोष विचार करना न चाहिये पीछे शुद्ध वो विश्वास युक्त चित्त से भोजन कराया तो शंख अच्छे उच्च ध्वनि से बजा, वो राजा का यज्ञ पूर्ण हुआ और भगवत् भक्ति वो प्रताप भक्तों का सारे संसार में पहुंचा भजन भाव की प्रवृत्ति अच्छे प्रकार हुई सच बात है

चौपाई ॥

हरि को भजे सो हरिको होय। जाति पांति पूछे नहिं कोय ॥

महाभारत में भगवत् का बचन है कि जो चारों वेद का जानने वाला है परन्तु मेरा भक्त नहीं तो उस से जोकि चांडाल और पतित भी है और मेरा भक्त है तो वही मेरा प्यारा है उसी को देना चाहिये और वही मिलने के योग्य है और उसी का पूजन उचित है जैसा मेरा ॥

ज्ञान देव की कथा ॥

ज्ञान देव जी परम भागवत विख्यात हैं जिसके चेले नामदेव वो तिलोचन जी सूर्य्य वो चन्द्रमा के सदृश हुए काव्य उन का सरस्वती वो गंगा की भांति जगत को पवित्र करता है ज्ञानदेव के पिता घरको छोड़ कर किसी संन्यासी के पास गये वो यह कहा कि हमारे घर स्त्री नहीं है हम संन्यास लेंगे यह कहि के संन्यासी होगये उन की स्त्री पीछे पहुंची वो संन्यासी से झगड़ा बखेड़ा करिके उनको घरले आई दूसरे ब्राह्मण सजातियों ने उन को जाति से अलगकर दिया कि यह संन्यासी होगया जाति में नहीं मिल सक्ता सो अलग रहे तीन लड़के जन्मे बड़े बेटे जो ज्ञान देव थे लड़काई से श्रीकृष्ण महाराज के चरण कमलों में उनकी प्रीति थी ब्राह्मणों के पास जो वेद पढ़ने के हेतु गये तो किसी ने न पढ़ाया कि जात से बाहर हैं वेद पढ़ने का अधिकार नहीं ज्ञान देवजीने कहा कि ब्राह्मण होना कुछ वेद पढ़ने पर सिद्धांत नहीं है कि पशु पढ़ सकते हैं सिवाय इसके वेद को भगवत् से अधिक कोई नहीं जानता और वह सब में सबजगह प्राप्त है यह कहकर एक भैंसे को वेद पढ़ने की आज्ञा दी उस भैंसे ने पढ़ना वेदका आरंभ किया और कई शाखा को ऐसी शुद्धबाणी से कि किसी ब्राह्मण को स्मरण न था पढ़ सुनाया वे लोग यह वृत्तान्त देख कर भगवत् भक्त में विश्वासित होकर चरणों में गिरे ज्ञान देव जीने उनपर दया की और भगवत् भक्ति की शिक्षा की ॥

लड्डू स्वामी की कथा ॥

लड्डू स्वामी परम भागवत भगवत् रंग में रंगे हुए और सब में उसी भगवत् रूप के चिंतवन के करने वाले हुए दुख सुख से अलग होकर जहां तहां विचरते रहते थे संयोग वस ऐसे देश में पहुंचे कि जहां तनक लेश भगवत् भक्ति का न था और वहां के लोग दुर्गा के प्रसन्नता के हेतु

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

मनुष्य बलिदान देते थे लड्डू स्वामी को मोटा चिकना देखकर काली के भेट के हेतु लेगये सो भगवत् अपने भक्तों के सहाय के हेतु सदा साथ रहते हैं सिवाय इसके लड्डू स्वामी के दृष्टि में दुर्गा भी भगवत् रूप थी इस हेतु वह प्रतिमा काली की फटि गई वो दुर्गा भयंकर रूप से प्रगट भई सब दुष्टों को तरवार से वध किया और भगवत् भक्त के दर्शन से अति प्रसन्न भई भगवत् भक्ति का प्रताप दिखाने के हेतु उनके सम्मुख नृत्यकिया और चरणों को दण्डवत् किया यह वृत्तान्त दुर्गा महारानी के विश्वास वो सहाय का वहां के रहने वालों ने देखा तो आधीन भए और भगवत् भक्ति को अंगीकार किया ॥

नारायणदास की कथा ॥

नारायणदास उत्तर देश में बदरिका श्रम के निकट परम भागवत नारायण स्वरूप भए भक्ति वो भजन में अत्यन्त निष्ठ थे मन तो भगवत् स्वरूप के चिन्तवन में मग्न रहता था और मुखसे अनुक्षण भगवत् चरित्र और नाम लेते थे भगवत् भक्ति के प्रवृत्ति वो शुभ चरित्र वो भाव के कहने वाले एकही भए भक्तों की सेवा भगवत् के सदृश किया करते थे बदरिका श्रम से दर्शन के हेतु मथुरा जी में आये केशवदेव जी के दरबार में रहने लगे एक दिन शोचा कि जो लोग केशवदेव जी के दर्शन को आते हैं उन का मन जूतियों की चिन्ता में रहता होगा सो उनका रखवारी करना आरंभ किया वो उनके प्रताप वो महिमा को कोई जानता नहीं था इस हेतु किसी ने इस सेवा के करने में वर्जना वो प्रार्थना को न किया एक बार एक दुष्ट बड़ी भारी गठरी उनके शिर पर रखवाय के लेचला राहमें किसी ने पहिचान कर साष्टाङ्ग दण्डवत किया तब यह दुष्ट लज्जित होकर अपराध क्षमा कराने लगा आपने कहा कि इस शरीर से किसी का कुछ काम निकले सोई लाभ है तुम शोच मत करो तब वह रोने लगा चरणों में गिरपड़ा नारायणदास जीने उसको भगवत् भक्ति का उपदेश करके एकक्षण में भगवत् भक्त वो सब अपराधों से निर्मल करि दिया सत्य करि के भगवत् भक्तों को सब कुछ सामर्थ्य है जो चाहैं सो करि दिखलावैं जो किसी को यह शंका होय कि ऐसे अपराधी पर ऐसी कृपा किस हेतु करी सो यह लक्षण वो धर्म शुभ दर्शन वो साधुता का है जैसे मेघ की दृष्टि गाली देने वाले वो स्तुति करने वाले को बराबर है इसी प्रकार भगवत् भक्तों की कृपा सब पर बराबर होती है ॥

किन्नर दास की कथा ॥

किन्नर दास परम भागवत भजनानंद भए भगवत् भक्तों की कृपा से निज भगवत् स्वरूप की माधुरी का उन को लाभ हुआ गुरु के सरण होकर भगवत् भक्ति को स्वरूप अच्छा जानकर संसार के सब धर्म छोड़

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

दिये वस्तु वो अवस्तु झूठ सांचज्ञान वो अज्ञान सार वो असार को बिचार कर सारे जीवन को भगवत् रूप जान कर निश्चय किया जैसे लोग बतलाया करते हैं कि फलाने वृक्ष की साखा पर वह दिखाई देता है चन्द्रमा और चन्द्रमा उस साखा से लाखों कोस पर है इसी प्रकार किन्हर दास कहने मात्र को संसार में होकर वास्तव करिकै अलग थे कबहूं किसी को कठोर वो दुर्वाच्य न कहा भगवत् और भक्तों के चरित्र सदा वर्णन करते थे ॥

पूर्णदास की कथा ॥

पूर्णदास जी की महिमा कौन वर्णन कर सकै जिन्होंने हिमाचल पर्वत में गंगा किनारे योग के प्रकार से समाधि लगा कर भगवत् के ध्यान में मन लगाया और रीछ वो व्याघ्र आदि का कुछ डर न किया प्राणायाम की विधि से प्राण को जीत कर जीवन मरण अपने बस में कर लिया साखी शब्द वो पद निर्वाण उपासना के उनके बनाये हुए बहुत हैं वो विख्यात हैं ॥

निष्ठा सोरठी ॥

वैराग्य वो शांत के वर्णन में जिसमें चौदह भक्तों की कथा है ॥

श्री कृष्ण स्वामी के चरण कमलों की बिंदुरेखा को दंडवत् करके श्री नारायण अवतार को बंदना करता हूं जिन्हों ने बदरिका श्रम में वह अवतार धारण करके तप और वैराग्य की प्रवृत्ति संसार में फैलाई जाने रहो कि तीव्र वैराग्य के परिपक्व होने पीछे शांत की पदवी प्राप्त होती है इस हेतु पहिले वैराग्य का स्वरूप तिस पीछे शांत रस का वर्णन इस निष्ठा में लिखा जायगा सब कोई इस बात को जानता है कि बिना एकाग्र होने मन के भगवत् नहीं मिलते और मन एकाग्र तब होता है कि सब संबन्ध से अलग वो त्याग होय सो गीताजी में जब अर्जुन ने भगवत् से प्रश्न किया कि मनका रोकना ऐसा कठिन है कि जैसा कोई वायु के पकड़ रखने का यत्न करै क्योंकि मन चंचल वो बलवान वो हठवाला है तब भगवत् ने उस के उत्तर में कहा कि अभ्यास वो वैराग्य से मन पकड़ा जाता है इस हेतु त्याग मुख्य साधन है सो स्वरूप उस वैराग्य का सूक्ष्म यह है कि सार को ग्रहण करना वो असार को छोड़ देना परंतु व्यास सूत्रों में उस वैराग्य की दो अवस्था लिखी हैं पहिली अपर कि उसको वशीकार कहते हैं उसका स्वरूप यह है कि संसारी सुख आनन्द से लेकर स्वर्ग वो ब्रह्मलोक पर्य्यन्त के सुख आनन्द से वैराग्य वो त्याग होय वो यद्यपि सूत्र के अक्षर से प्रगट कोई अर्थ इस अवस्था का मालूम नहीं होता परंतु तात्पर्य्य उस सूत्र का चार प्रकार के निर्णय पर है प्रथम

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

यति मान अर्थात् सार और असार का विचार और उसके त्याग का उपाय १ दूसरा व्यति रेक अर्थात् यह मन न करना कि इतना अवगुण अन्तर वो बाहर का मिट गया और इतना और बाकी है उनका भी त्याग चाहिये २ तीसरे इन्द्र अर्थात् जहां तक स्वाद वो सुख वो चाह सब देखे या सुने हैं उनकी ओर से मन को ऐसा रोकना कि फिर मन उनकी ओर न जावै ३ चौथे वशी कार अर्थात् सुख वो स्वाद के चाह की तनक लेश मन में बाकी न रहै ४ दूसरी अवस्था कानाम पर हैं उसमें कोई विशेष निर्णय नहीं स्वरूप उसका यह है कि माया से मिले हुए जो तीन गुण अर्थात् सत्व रज तम उनको त्याग करके केवल भगवत् सच्चिदानन्द घन पूर्ण ब्रह्म परमात्मा के साक्षात् स्वरूप में मग्न होजाना और माया के गुणों से सर्व प्रकार वैराग्य होना इस निर्णय से लाभ यह हुआ कि भगवत् की प्राप्ति केवल वैराग्य से है जब तक सब स्वाद वो सुख की चाह से वैराग्य न होगा तब तक कदापि भगवत् न मिलैगा और विचार से भी मालूम होता है कि मन एक पात्र के सदृश है जब तक वह संसारी संबन्ध वो सुख भोग के चाह से भरा है तब तक भगवत् के आने की वो निवास की कहां ठौर है जो भगवत् को उस मन रूपी पात्र को पूर्ण करना अंगीकार है तो दूसरे सर्व संबन्ध वो सुख भोग की चाहना से खाली करना चाहिये शास्त्रों में जो यह बात लिखी है कि गृहस्था श्रम के पश्चात् गृह त्याग करके बन वास करै तो अभि प्राय उस का यह है कि गृहस्थी दशा में भगवत् भजन नहीं होसक्ता जब सब संसार के कार्य से अलग होगा तब मन एकाग्र होकर भगवत् में लगि जायगा जिस किसी का मन संसार से त्याग वो भगवत् की ओर लगि जाय तो वह त्याग इस परम्परा के अनुसार होय जो ऊपर लिखि आये अर्थात् सार का ग्रहण वो असार का त्याग और उन दोनों के विचार में लगा रहै नहीं तो केवल इसका नाम वैराग्य नहीं कि घर बार स्त्री को छोड़ कर फक़ीर होगये और बाबा जी कहलाने लगे जो इसी का नाम वैराग्य हो तो वन जंतु सदा वनमें मग्न रहते हैं अथवा हजारों मनुष्य ऐसे हैं कि दरिद्रता के कारण से शरीर पर वस्त्र नहीं न एक कौड़ी पास है वो न स्त्री न बेटा तो क्या वे भगवत् को पहुंच जाते हैं बरु सदा आवागवन के जाल में फंसे रहते हैं और जिनको सार वो असार का विचार अनुक्षण रहता है और उनके ग्रहण वो त्याग में लगे रहते हैं उनको जो गृहस्थ धर्म भी है तो सब संसारी सम्बन्ध वन के सदृश हैं और सब लड़के बाले सत्संग वो साधुसेवी हैं सो पुराणों में जनक वो प्रह्लाद वो राजाबलि आदि की हजारों कथा वो इस भक्तमाल में सैंकड़ों भक्तों की साक्षी है और जिन लोगों का मन कुटुम्ब वो परिवार में फंसा हुआ है और सार असार का

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

बिचार नहीं तो वे सब वस्तु को छोड़ कर जंगल में चले जावैं तौ भी हजार दुनियांदारों के बराबर हैं वो मुमुक्षु साधक को एक बात यह भी जानकारी है कि सार वो असार के बिचार वो गृह कुटुम्ब के त्याग करने से मन निर्मल होकर भगवत् स्वरूप का प्रकाश जिस जिस भांति प्रगट वो साक्षात् होता जाता है उसी उसी भांति परोक्ष वो अभूतावात का जानना वो सत्य होजाना वचन आशीर्वाद वो शाप और प्राप्त होजाना सांसा मन वांछित जो कि अणिमादिक अष्ट सिद्धि प्रसिद्ध की सम्बन्धी हैं यह सब अधिक होजाता है जो तो उस बिरक्त योगी का मन उन सिद्धियों की ओर लगि गया तो सब जाता रहा फिर ठिकाना लगना कठिन है सो उस समय मनको ऐसा सम्हालै कि तनक भी मन उन सिद्धियों में न लगै ऐसा त्याग करै कि जैसे वांत वो बिष्टा को घिनावना जानकर छोड़ देते हैं जो उस समय सम्हल गया तो तुरन्त वांछित पदको पहुंच गया जो उन बटमारों ने लूंट लिया तो सातवें पाताल को गया वो यद्यपि शांत रसका स्वरूप बैराग्य में मिला प्रगट होता है परंतु उपनिषद् और रस शास्त्र के अनुसार शांत रस अलग स्थापित किया है इस हेतु रसों की प्रकृति के अनुसार से उस शांत का वर्णन लिखा जाता है आरंभ में प्रगट होने सब रसों के हेतु चार सामग्री अर्थात् विभाव वो अनुभाव वो सात्विक वो व्यभिचारी लिखी गई सो इस शांत की प्रथम सामग्री विभाव में भगवत् सब मंगल वो आनन्द की खानि अनिगिनत ब्रह्मांडों का नायक वो रचने वाला असंख्यात जीवों को वो सब जानने वाला तीनों काल में विराजमान जिसका नाम पाप वो महा कष्ट से छुड़ाने वाला परमानन्द के देनेवाले जो गुण हैं तिनका रासि जिसके बराबर अथवा अधिक दृष्टांत को कोई नहीं पूर्ण ब्रह्म परमात्मा सच्चिदानन्द घन भगवत् अपना इष्ट देव वह तो बिषयालंबन है और शिवसनकादिक नारद अथवा दूसरे भक्त आश्रयलंबन हैं वो सामग्री दूसरी अर्थात् अनुभाव दृष्टि नासा के अग्रपर वो ध्यान अनुक्षण वो सब ओर से निर्मल वो दुख सुखका त्याग इत्यादि वो सामग्री तीसरी अर्थात् सात्विक की जो जो आठ दशा हैं उनमें से एक दशा मूर्छा की नहीं होती और सात यथा कथंचित् समय पर होती है वो सामग्री चौथी व्यभिचारी में से स्मृती वो निर्वेद इत्यादि कई दशा योग्य इस रसके किसी समय में प्रगट होकर जाती रहती हैं स्थाईभाव इस रस का वह है कि सब में बराबर दृष्टि हो वो ब्रह्म लोक तक के सुखों से अनरुचि होय जिन भगवत् भक्तों की वैराग्य के प्राप्त होने पीछे शांत रसमें दृढ़ स्थित का संयोग पहुंचा उनके लक्षण यह हैं कि किसी जीव से बैर नहीं रखते सब के मित्र सब पर दया करने वाले होते हैं अहंकार वो गर्व से रहित वो दुख सुख दोनों को

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

बराबर जानते हैं सहनशील वो सब ओर से चित्त संतुष्ट भगवत् के ध्यान में अनुक्षण मन लगा हुआ दृढ़ और अनन्य विश्वास भगवत् चरणों में सब इन्द्री भगवत् स्वरूप में मग्न किसी को उनसे दुख नहीं पहुंचता वो आप किसी से दुखी होते हैं सुख वो क्रोध वो भय से जो भांति भांति की चिन्तना मन में उत्पन्न होती हैं उनसे छूटे हुये न कबहीं प्रसन्न होते हैं न अप्रसन्न कबहीं किसी बात काशोच करते हैं न किसी वस्तु की चाहना मन विमल वो एकाग्र अच्छे वो बुरे से अलग बुद्धिमान वो पवित्र शुचि दोनों से बराबर संसार से वो संसारी कार्य करने से अलग वो अनरुचि मान वो अपमान निन्दा वो स्तुति दुख सुख शीत उष्णकाल को सम करिके मानते हैं क्षुधा शांत के हेतु थोड़ेही से संतुष्ट होते हैं घर बार से न्यारे बुद्धि निर्मल वो तीक्ष्ण यह सिद्धान्त श्लोकों में से थोड़े से श्लोकों का अर्थ लिखा गया स्तुति वो बड़ाई शांत रस वो वैराग्य की लिखने वो कथन में नहीं आय सकती जिस किसी को जानने और सुनने की विशेष प्रीति होय सब पुराणों से मालूम कर सकता है हे श्रीकृष्ण स्वामी कहां मैं और कहां शांत रस की पदवी यद्यपि आप की कृपा से सब कुछ लाभ हो सकता है कि एक निमिष में मसक को ब्रह्मा और ब्रह्मा को मसक और तृण को कुलिश और कुलिश को तृण कर सकते हैं परंतु अपने अपराध वो अपकर्म को ओर देखता हूं तो किसी बात के निमित्त नहीं कह सकता जो निर्लज्ज होकर वैराग्य वो शांत मांगूं तो यह शोभा होता है कि उस श्याम सुन्दर नवल किशोर रूप अरूप के चिन्तवन के हेतु क्यों न प्रार्थना करूं कि जिसके ज्ञान और वैराग्य दोनों सेवक वो दास हैं अरे मन इस रूप और समाज के चिन्तवन में जो तू लगै तो तेरी पदवी का कोई नहीं कि चित्रकूट के निकट मन्दाकिनी के किनारे पर एक बन परम शोभायमान तमाल वो कदम्ब वो आम वो चंपा वो मौरुसरी इत्यादि वृक्षों का है और उन वृक्षों के मध्य में जो चार वृक्ष एक वट दूसरा पीपर तीसरा शाल चौथा तमाल है उन पर भांति भांति की बहुत ललित हरी लता रंग रंग के सुगन्धित फूलों की छाई हुई उन वृक्षों के नीचे इन्द्रादिक देवताओं ने भील रूप बनाकर परम शोभन कुटी रची है और उस कुटी के आगे बड़ी एक वेदी है कि श्री जानकी महारानी अखिल ब्रह्मांडेश्वरीने देवताओं के बनाने पीछे अपने श्री हस्त कमल से उसकी शोभा को रचा है उसके चारों ओर फुलवारी में रंग रंग के फूल, रायबेल वो चमेली वो दवना वो मरुआ वो मदनबान आदि कै ऐसी सुन्दरताई के साथ हैं कि जिस ओर दृष्टि जाती है परबस मन अटकता है उसके बीच में श्री रघुनन्दन स्वामी शांत स्वरूप शोभाधाम कि जिन के मुख की शोभा के आगे नील मणि वो कमल वो घन वो चन्द्रमा की

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

उपमा फीकी है मुनि बेष बनाये हुये जटा मुकुट शिर पै हैं और उसमें फूल जगह जगह श्री महारानी जीने गूंथे हैं कानों और हाथों में फूलों के आभूषण वनमाला गले में धनुष बाण धारण किये विराजमान हैं बगल अंग श्री जनक नन्दिनी शोभित लक्ष्मण महाराज शस्त्र धारण किये सेवा में हाथ बांधे तत्पर हैं चारों ओर मुनि बैठे हैं कुछ प्रश्नोत्तर हो रहा है॥

दोहा॥

लसत मंजु मुनि मंडली मध्यसीय रघुचन्द।
ज्ञान सभा जनु तनुधरे भक्त सच्चिदानन्द॥

रंतदेव की कथा॥

रंतदेव जी राजा इस कंत के वंशमें ऐसे परम भागवत हुए कि राजकरते समय संपूर्ण आमदनी राजकी को ब्राह्मण सेवा वो यज्ञ दान इत्यादि में लगा दिया और जब राज वो संसार को असार जान कर त्याग किया वो स्त्री पुत्र सहित वनमें जाकर भगवत् भजन करने लगे तो उस दशा में भी जो कुछ मिल जाता तो याचक वो भूखे को उठा देते थे एक बेर अट्ठाईस दिन पीछे थोड़ासा नाज भगवत् इच्छा से मिला उसके तीन भाग करके भगवत् अर्पण करिके भोजन करने बैठे तब तक एक ब्राह्मण आगया और भोजन यांचा राजा ने अपना भाग उठाके दिया तिस पीछे एक शूद्र आया राजाने अपने लड़के का भाग देदिया फिर एक म्लेच्छ ने याचा उस को स्त्री का भाग उठा दिया और आनन्द होकर भगवत् भजन करने लगे भगवत् ने जो राजा को भजन वो वैराग्य वो दया में दृढ़ देखा तो प्रसन्न हुए साक्षात् दर्शन दिये बड़ी कृपा करके आज्ञा की कि जो चाहनो होय सो मांगो राजाने बिनय किया कि सिवाय भक्ति के और कुछ चाहना नहीं है सो अपनी भक्ति दीजिये और यह संसार भांति २ के दुख वो पीड़ा में फंसा है तो दूसरा वर यह मांगता हूं कि सब का दुःख मुझ को मिले वो मेरे भाग में जो कुछ सुख हो सो सब को मिले भगवत् इस परोपकार वो दया पर अधिक प्रसन्न हुए वो जो पद परम योगियों को मिलता है सो उनको दिया जाने रहो कि जो कोई भगवत् भजन से बिमुख हैं उनको सब सुख वो ऐश्वर्य्य संसार के दुख रूप हो जाते हैं और जो भगवत् भक्त वो भजनानन्द हैं उन को सब दुःख वो पाप सब सुख वो पुण्य वो परम आनन्द के सदृश हैं॥

परशुराम की कथा॥

परशुराम जीने अपने भक्ति के प्रताप से जंगल देशके जंगली लोगों को इस प्रकार सत्संगी वो पार्षद रूप कर दिया कि जिस प्रकार चंदन के वृक्षों की हवा सारे बन को चन्दन करदेती है अथवा जैसे बज्र काल

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

का अन्धकार दीपक से तुरन्त दूर हो जाय श्री भट्ट जी वो हरिव्यास जीका जो परंपरा मार्ग था उसी पर चलते थे भगवत् कथा कीर्तन का ऐसा नियम था कि हजारों को भगवत् सन्मुख कर दिया भक्ति वो माला तिलक की प्रवृत्ति चलाई वो राजधानी में रहकर सब ऐश्वर्य्य प्राप्त था परंतु उस सब वैभव संसारी से ऐसा वैराग्य था कि सबको तुच्छ जानते थे सो यह दोहरा बनाया उनहीं का है॥

दोहा॥

माया सगो न मन सगो सगा न यह संसार॥
परशुरामया जीवको सगो सोसिरजनहार॥१॥

कोई साधु इसकी परीक्षा को गया वो कहा कि आपको भगवत् से प्रीति है तो इस वैभव से क्या काम है अलग भजन करना चाहिये परशुराम जी अभिप्राय उस साधु का जान गये और सब छोड़कर कोपीन बांध के एक पहाड़ की गुफा में जा बैठे भगवत् भजन करने लगे संयोग वस वहां एक बनजारा आगया और बहुत धन वो पालकी और राजाओं की सामा सब भेट करी वह साधु अच्छी प्रकार समझ गया कि परशुराम जी को कुछ चाहना वैभव की नहीं है परंतु भगवत् इच्छा से आप से आप आते हैं परशुराम जी के चरणों में पड़ा लज्जित होकर बिनय किया कि मैं अज्ञतासे बोला मेरा अपराध क्षमा कीजिये आपका प्रताप जाना सत्य करिकै भगवत् भक्त जितना ऐश्वर्य्य का त्याग करते हैं उतनीही और बढ़ती होती है तो जो संसारी सुख के चाहने वाले जितना भगवत् भजन में लगेंगे उतनाही वैभव सुख उनको मिलैगा और सिवाय उसके परम निधि भगवत् भक्ति भी उनको लाभ होगी॥

रांका बांका की कथा॥

रांका जी परम वैराग्यवान भगवत् भक्त हुए और बांका उनकी स्त्री रांकाजी से अधिक भक्त थी पंडरपुर जहां नाम देव जी का घर है तहांही उनका घर था जंगल से लकड़ी लाते बेचके निर्वाह करते दिन रात सिवाय सुमिरन भजन के और कुछ धंधा न था एक दिन नाम देव जी ने भगवत् से बिनय किया कि बड़े शोच की बात है कि रांका बांका दोनों परम भक्त ऐसे खाली हाथों से दिन काटैं भगवत् ने कहा कौन उपाय किया जाय कि वे कदापि धन अंगीकार नहीं करते सो अपने आंखों तुम यह लीला देख लेव यह कहकर नामदेव जी को अपने साथ बनमें लेगये और जिस राह रांका बांका लकड़ियों के लेने के हेतु जाते थे उस राह में एक थैली मुहरों की डालदी रांका जी की दृष्टि जो उस पर पड़ी तो बिचार किया कि स्त्री पीछे आती है ऐसा न हो कि इसको लोभ इस द्रव्य का होजावै इस हेतु उस पर धूल को डाल दिया

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

स्त्री जो रांका जी के निकट पहुंची तो पूछा कि तुम धूर में क्या देखते थे रांका जी ने वृत्तान्त देखने मोहरों के थैली की वो अपने विचार का सब कहा स्त्री ने पूछा कि महाराज सुहर वो धूल में क्या भेद है और धूल पर धूल डालना क्या प्रयोजन था रांका जी बहुत प्रसन्न हुए और अपनी स्त्री का बांका नाम धरा और कहा कि तेरे वैराग्य ने मेरे वैराग्य पर भी धूल को डाल दिया भगवत् ने नामदेव जी से कहा कि देखो कैसा वैराग्य दोनों भक्तों को है फिर पीछे भगवत् वो नाम देव जी ने भार लकड़ी का बटोर कर एकट्ठा कर दिया कि भला कुछ सेवा तो होय रांका बांका ने उन लकड़ियों को किसी दूसरे का बटोरा समझकर हाथ न लगाया, वो खाली हाथ घरको चले आये और यह निश्चय विचारा कि आज सुहरें दृष्टि में आईं उसके असगुन से लकड़ी भी हाथ न आईं जो उन सुहरों को हाथ लगाते तो न जानें क्या होता भगवत् ने वह लकड़ी बटोरी हुई को रांका जी के घर पहुंचा दिया वो रांका जी ने भगवत् का भेजा जानकर अंगीकार किया पीछे भगवत् ने दर्शन दिया और कुछ वस्तु के अंगीकार करने को आज्ञा किया रांका रूप अनूप वो छबि माधुरी को देखकर ऐसे दर्शन में बेसुधि वो मग्न होगये थे कि कुछ भान न था इस हेतु भगवत् ने आज्ञा की तिसका उत्तर न देसके और नितांत भगवत् प्रसाद को भगवत् रूप जानकर अंगीकार किया पीछे रांका जी ने नामदेव जी से कहा कि महाराज उस शोभाधाम परम सुकुमार वो फूल से भी कोमल अंगवारे को कंटक वो अनेक भय से युक्त जीवन तिस में लेजाना और परिश्रम देना तुमको कैसे अच्छा लगा नामदेव जी और रांका जी दोनो भगवत् बालरूप के उपासक थे सो भगवत् उनकी उपासना के अनुकूल रूप से प्रगट हुए॥

रघुनाथ गोसाईं की कथा॥

रघुनाथ गोसाईं की भक्ति और भाव की बडाई कौन से कही जाय कि जिसकी सेवा आप भगवत् ने करी और सदा भगवत् की परिचर्या में तत्पर रहते थे उत्कल देश में थोड़से नगर के रहने वाले थे और धन संपत्ति बड़ी घरमें थी सबको असार वो अनित्य समझ कर छोड़ दिया और जगन्नाथ पुरी में रहने लगे बाप उनका पुत्र के स्नेह से सदा कुछ द्रव्य वो सामा उनके खर्च के हेतु भेजता परंतु कुछ अंगीकार नहीं करते केवल भगवत् रूप के रस में छके हुए अपने गुरू महा प्रभू जी की सेवा में तत्पर रहकर और श्रीजगन्नाथ राय स्वामी के दर्शन करके भले बुरे वो उष्ण वो शीतल समय के धर्म से अलग रहते एक बेर जाड़े के समय में ठंढ लगी श्री जगन्नाथ राय स्वामी ने कृपा करके बानात निज अपनी सेवा की दी फिर एकबेर अतीसार का दुःख हुआ श्री जगन्नाथराय जीने जैसे माधोदास

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

का अन्धकार दीपक से तुरन्त दूर हो जाय श्री भट्ट जी वो हरिव्यास जीका जो परंपरा मार्ग था उसी पर चलते थे भगवत् कथा कीर्तन का ऐसा नियम था कि हजारों को भगवत् सन्मुख कर दिया भक्ति वो माला तिलक की प्रवृत्ति चलाई वो राजधानी में रहकर सब ऐश्वर्य्य प्राप्त था परंतु उस सब वैभव संसारी से ऐसा वैराग्य था कि सबको तुच्छ जानते थे सो यह दोहरा बनाया उनहीं का है॥

दोहा॥

माया सगी न मन सगो सगा न यह संसार॥
परशुरामया जीवको सगो सोसिरजनहार॥१॥

कोई साधु इसकी परीक्षा को गया वो कहा कि आपको भगवत् से प्रीति है तो इस वैभव से क्या काम है अलग भजन करना चाहिये परशुराम जी अभिप्राय उस साधु का जान गये और सब छोड़कर कोपीन बांध के एक पहाड़ की गुफा में जा बैठे भगवत् भजन करने लगे संयोग वस वहां एक बनजारा आगया और बहुत धन वो पालकी और राजाओं की सामा सब भेट करी वह साधु अच्छी प्रकार समझ गया कि परशुराम जी को कुछ चाहना वैभव की नहीं है परंतु भगवत् इच्छा से आप से आप आते हैं परशुराम जी के चरणों में पड़ा लज्जित होकर बिनय किया कि मैं अज्ञतासे बोला मेरा अपराध क्षमा कीजिये आपका प्रताप जाना सत्य करिकै भगवत् भक्त जितना ऐश्वर्य्य का त्याग करते हैं उतनीही और बढ़ती होती है तो जो संसारी सुख के चाहने वाले जितना भगवत् भजन में लगेंगे उतनाही वैभव सुख उनको मिलैगा और सिवाय उसके परम निधि भगवत् भक्ति भी उनको लाभ होगी॥

रांका बांका की कथा॥

रांका जी परम वैराग्यवान भगवत् भक्त हुए और बांका उनकी स्त्री रांकाजी से अधिक भक्त थी पंडरपुर जहां नाम देव जी का घर है तहांही उनका घर था जंगल से लकड़ी लाते बेचके निर्वाह करते दिन रात सिवाय सुमिरन भजन के और कुछ धंधा न था एक दिन नाम देव जी ने भगवत् से विनय किया कि बड़े शोच की बात है कि रांका बांका दोनों परम भक्त ऐसे खाली हाथों से दिन काटैं भगवत् ने कहा कौन उपाय किया जाय कि वे कदापि धन अंगीकार नहीं करते सो अपने आंखों तुम यह लीला देख लेव यह कहकर नामदेव जी को अपने साथ बनमें लेगये और जिस राह रांका बांका लकड़ियों के लेने के हेतु जाते थे उस राह में एक थैली मुहरों की डालदी रांका जी की दृष्टि जो उस पर पड़ी तो विचार किया कि स्त्री पीछे आती है ऐसा न हो कि उसको लोभ इस द्रव्य का होजावै इस हेतु उस पर धूल को डाल दिया

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

स्त्री जो रांका जी के निकट पहुंची तो पूछा कि तुम धूर में क्या देखते थे रांका जी ने वृत्तान्त देखने मोहरों के थैली की वो अपने विचार का सब कहा स्त्री ने पूछा कि महाराज सुहर वो धूल में क्या भेद है और धूल पर धूल डालना क्या प्रयोजन था रांका जी बहुत प्रसन्न हुए और अपनी स्त्री का बांका नाम धरा और कहा कि तेरे वैराग्य ने मेरे वैराग्य पर भी धूल को डाल दिया भगवत् ने नामदेव जी से कहा कि देखो कैसा वैराग्य दोनों भक्तों को है फिर पीछे भगवत् वो नाम देव जी ने भार लकड़ी का बटोर कर एकट्ठा कर दिया कि भला कुछ सेवा तो होय रांका बांका ने उन लकड़ियों को किसी दूसरे का बटोरा समझकर हाथ न लगाया वो खाली हाथ घरको चले आये और यह निश्चय विचारा कि आज सुहरें दृष्टि में आईं उसके असगुन से लकड़ी भी हाथ न आईं जो उन सुहरों को हाथ लगाते तो न जानें क्या होता भगवत् ने वह लकड़ी बटोरी हुई को रांका जी के घर पहुंचा दिया वो रांका जी ने भगवत् का भेजा जानकर अंगीकार किया पीछे भगवत् ने दर्शन दिया और कुछ बख्श के अंगीकार करने को आज्ञा किया रांका रूप अनूप वो छबि माधुरी को देखकर ऐसे दर्शन में बेसुधि वो मग्न होगये थे कि कुछ भान न था इस हेतु भगवत् ने आज्ञा की तिसका उत्तर न देसके और नितांत भगवत् प्रसाद को भगवत् रूप जानकर अंगीकार किया पीछे रांका जी ने नामदेव जी से कहा कि महाराज उस शोभाधाम परम सुकुमार वो फूल से भी कोमल अंगवारे को कंटक वो अनेक भय से युक्त जीवन तिस में लेजाना और परिश्रम देना तुमको कैसे अच्छा लगा नामदेव जी और रांका जी दोनो भगवत् बालरूप के उपासक थे सो भगवत् उनकी उपासना के अनुकूल रूप से प्रगट हुए॥

रघुनाथ गोसाईं की कथा॥

रघुनाथ गोसाईं की भक्ति और भाव की बडाई कौन से कही जाय कि जिसकी सेवा आप भगवत् ने करी और सदा भगवत् की परिचर्या में तत्पर रहते थे उत्कल देश में थोड़से नगर के रहने वाले थे और धन संपत्ति बड़ी घरमें थी सबको असार वो अनित्य समझ कर छोड़ दिया और जगन्नाथ पुरी में रहने लगे बाप उनका पुत्र के स्नेह से सदा कुछ द्रव्य वो सामा उनके खर्च के हेतु भेजता परंतु कुछ अंगीकार नहीं करते केवल भगवत् रूप के रस में छके हुए अपने गुरू महा प्रभू जी की सेवा में तत्पर रहकर और श्रीजगन्नाथ राय स्वामी के दर्शन करके भले बुरे वो उष्ण वो शीतल समय के धर्म से अलग रहते एक बेर जाड़े के समय में ठंढ लगी श्री जगन्नाथ राय स्वामी ने कृपा करके बानात निज अपनी सेवा की दी फिर एकबेर अतीसार का दुःख हुआ श्री जगन्नाथराय जीने जैसे माधोदास

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

जीकी सेवा करी थी उसी प्रकार इन गोसाईं जी की करी गुरू ने वृन्दावन वास की आज्ञा करी तब श्रीवृन्दावन में आये और राधाकुण्ड पर विश्राम किया सदा भगवत् के मानसी पूजन में रहते थे और छवि सुधा में छके दिनरात भगवत् नाम का वर्णन वो कीर्तन का मन विश्राम था एक बेर दूध भात जो मानसी भोग भगवत् को लगाया तो ध्यान में आप भी महा प्रसाद खाया बहुत भोजन करने से गरिष्ठता हुई बीमार होगए वैद्ने नाटिका देखकर कहा कि दूध वो भात खाने के कारण से यह दुख उत्पन्न हुआ है औषध पाचक वो गरिष्ठता दूर करने की करीजाय सो औषधि भी लिखी गोसाईं जीने उत्तर दिया कि जिस भोजन से गरिष्ठता हुई है वही भोजन अज्ञान रोग के वास्ते औषधि सिद्ध वो सदा जीने के हेतु अमृत है सो आप औषध अपनी अपने पास रखिये और मुझ को जिस दशा में हूं उसी दशा में छोड़ दीजिये वैद्को विश्वास हुआ चरणों में पड़ा वाह वाह इस चिन्तवन वो ध्यान के सिद्धता को कि भगवत् सब को ऐसा करै और कुछ भाग उस में से इस दास को भी देवै॥

श्रीधर स्वामी की कथा॥

श्रीधर स्वामी ने श्रीमत भागवत की टीका ऐसी रचना करी कि परम अमृत भागवत् का निज अर्थ बिना परिश्रम सबको प्राप्त होने लगा दूसरे तिलककारोंके तिलक से तो द्वेष वो खैंच प्रगट है अर्थात् जो कोई कर्म का उपासक था तो उसने भक्ति वो ज्ञान के अर्थ को भी कर्म की ओर लगाकर टीका किया और जो कोई उपासक भक्ति वो ज्ञान के थे उन्हों ने अपने २ मार्ग को दृढ़ कर दिया किसी ने मुख्य वेद और भागवत् पर दृष्टि न किया परंतु श्रीधर स्वामीने तीनों काण्ड अर्थात् ज्ञान और भक्ति और कर्म वेद की पद्धति के अनुसार बिना पक्षपात लिखा और जैसा अर्थ जिस जगह चाहिये अपने गुरू परमानन्द जी महाराज से बूझकर वैसा ही लिखा और परम संहिता को वेद की रीति के अनुसार दृढ़ रक्खा जब वह टीका रचना हो चुकी तो काशीपुरी में पण्डितों की सभा हुई और दूसरे पण्डितों ने भी अपनी टीका को रख दिया और सब पण्डित अपनी रचना को दूसरे की रचना पर श्रेष्ठता बतलाते थे श्रीधर स्वामी को तनक अहंकार वो हठ अपनी टीका पर न था निदान सब पण्डितों के सम्मत से यह बात ठहरी कि बिंदुमाधव महाराज जिस टीकाको अंगीकार करैं उसी की प्रवृत्ति चलाई जाय सो सब टीकाओं को भगवत् के मंदिर में रखवादिया और दिन को बन्द कर दिया कुछ विलम्ब करके फिर मन्दिर जो खोला तो स्वामी श्रीधर जी के तिलक पर दस्खत मंजूरी के मिले और सब नामंजूर हुआ सबको विश्वास हुआ और वही श्रीधरी टीका चली वो सबको अंगीकार हुआ श्रीधर स्वामी पहिले से भगवत् के परम

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

भक्त थे जिस कारण से घर बार छोड़ा सो यह है कि धनमान थे आगरे से कुछ द्रव्य सहित कहीं को जाते थे राह में ठग मिलगये और पूछा कि तेरे साथ कौन है उत्तर दिया कि रघुनंदन स्वामी मेरा मालिक वो जीवन आधार मेरे साथ है ठगों ने आपुस में सम्मत किया कि यह आदमी अकेला है मार कर धन असबाब लूंटलेव सो एक जो हथियार चलाने को उद्यत हुआ तो श्रीरघुनन्दन स्वामी को धनुषबाण लिये रक्षा के हेतु साथ देखा इसी प्रकार कई बार मन किया वो हरबार उस रक्षक को साथ देखा जब घर आये तो ठगों ने पूछा कि महाराज वह श्यामसुन्दर सुकुमार नवयौवन कौन है जो राह में तुम्हारी रक्षा करता रहा स्वामी ने उसी घड़ी घरबार वो धन संपत्ति को त्याग किया कि मेरे स्वामी को उसके हेतु क्लेश हुआ और वे ठग भी विश्वास करिके भगवत् सन्मुख होगये ॥

चौपाई ॥

रमा बिलास राम अनुरागी। तज तन मन जिमिनर बड़भागी॥

कामध्वज की कथा ॥

कामध्वज जी जात के राजपूत वो चार भाइयों में अपने आप परम भक्त वो वैराग्यमान हुए कि बन में रहकर सदा श्री रघुनन्दन स्वामी की भजन सेवा में लीन रहते थे किसी से कुछ मतलब वो प्रयोजन न था एक काल भगवत् प्रसाद के निमित्त नगर में आया करते थे और उसी घड़ी फिर चले जाते थे एक दिन उनके भाइयों ने कहा कि जो तुम साथ चलकर राना जीके सरकार में हाजिरी दे आओ तो तुम्हारा दरमाहा भी लिया जावै कामध्वज जीने उत्तर दिया कि जिस सरकार में नौकर हूं तहां हाजिर रहता हूं यह नहीं हो सकता कि वहां से गैर हाजिर होकर मुखों में बहरा लिखाऊं भाइयों ने कहा कि जब मरोगे दाह कर्म कौन करैगा उत्तर दिया कि वहही सब करैगा कि जिसका मैं दास हूं यह कहकर बन को चले गये कुछ दिन पीछे जब अन्त समय आया तो श्री रघुनन्दन स्वामी की आज्ञा से हनुमान जी आये चन्दन अगर इत्यादि से दाह कर्म कामध्वज जी का किया श्री रघुनन्दन स्वामी ने अपने भक्तों का प्रताप दिखलाने के हेतु एक चरित्र आश्चर्य जटायु और सेबरी के वास्ते यह किया कि जितने भूतप्रेत उसबाग में रहते थे सब कामध्वज की चिता का धूंआ लगने से पवित्र होकर परम पदको चले गये एक प्रेत उस समय कहीं चला गया था जब आया और अपने सजातियों को न पाया तो एक संन्यासी से समाचार सब सुनकर उसी भस्म में लोट कर सद्गति को गया जाने रहो भगवत् का बचन है कि मेरे भक्त तीनों लोक को पवित्र करते हैं और प्रयाग वो गंगा आदि का

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

यह वचन है कि हम सब के पाप वो दुख दूर करते हैं और हमारे पाप भगवत् भक्तों की चरण कृपा से जाते हैं तो क्या आश्चर्य हैं कि भूतप्रेतादि दुष्ट होकर सद्गति को पहुंचे ॥

गदाधर दास की कथा ॥

गदाधर दास जी परम भागवत और ऐसे प्रेमी हुए कि श्री बिहारी लाल जी की सेवा और छवि अभिराम के देखने और शृंगार में सदा आनंद वो लीन रहकर भगवत् भक्तों की रीति से सेवा तन मन से करते थे उदार और भगवत् चरितों के कीर्तन करने वाले ऐसे हुए कि वर्णन नहीं हो सकता भगवत् में अनन्य विश्वास ऐसा था कि स्वप्नें भी दूसरे देवता की ओर न देखा संसार को भगवत् भक्ति का बाधक समझ कर त्याग दिया वो बुरहानपुर के निकट एक बाग में आकर बैठे रहे लोगोंने बस्ती में चलने को बहुत विनय वो प्रार्थना की पर न गये सदा भगवत् के ध्यान में मग्न रहा करते थे एक दिन जल बहुत बरसा भगवत् ने अपने भक्त का क्लेश देखकर एक साहूकार को आज्ञा की कि तुम मेरे भक्त के वास्ते मकान बनाकर उसमें टिका देव मेरी आज्ञा जनादेव उस साहूकार ने एक मंदिर बहुत दृढ़ वो सुन्दर बनवाकर उसमें भगवत् आज्ञा सुनाके बल से ले आकर विराजमान कराया वो और मकान साधु लोगों के टिकने को वो आने जाने वालों के निमित्त बनवा दिया गदाधर दास जी ने श्री लाल बिहारी जी की मूर्ति अति सुन्दर विराजमान करके साधु सेवा को आरंभ किया जो कुछ आवे उसी दिन खरच कर देते थे कुछ नहीं रखते थे परंतु रसोइआ कुछ सामग्री इस विचार से कि प्रभात के समय भगवत् के भोग को अति काल न होजाय रख लिया करता था एक रात साधु आये उनकी रसोई के वास्ते सामग्री ढूंढ़ी गई गदाधर दास जीने रसोइआ को बुलाकर पूछा उसने कहा कि भगवत् के भोग के वास्ते भोरकी कुछ सामग्री को रख लिया है सो धरी है गदाधर दास जीने आज्ञा दी कि उसी सामग्री से साधों की सेवा करो भगवत् के वास्ते कल्हआय जायगी सो उसी घड़ी भगवत् भक्तों की सेवा हुई प्रभात को तीसरे पहर तक कुछ न आया और भगवत् भोग भी न लगा चेला लोग भूख से व्याकुल होकर कहने लगे कि देखो अत्यन्त खरच करने से अब तक सब कोई भूखे हैं न जानै भगवत् कब गदाधर दास जी के हाथ से छुड़ावैगा उसी समय एक साहूकार आगया उसने दोसौ रुपैआ भेंट किये गदाधरदास जीने कहा कि यह रुपैआ इन असन्तोषियों के सिर पर मारो कि हाय हाय कर रहे थे साहूकार डरा कि क्या यह रिस कुछ मेरे ऊपर है गदाधर दास जीने सब वृत्तान्त उस साहूकार से कह कर उसकी तसल्ली करी कि वह आनन्द हुआ और भगवत् भक्तों का

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

विश्वास करके भगवत् के शरण होगया पीछे गदाधर दास जी कुछ दिन वहां रहे फिर मथुरा जी में आये ब्रजकिशोर के रूप वो छवि से छके ऊए सत्संग वो भगवत् सेवा में सब वयक्रम व्यतीत किया॥

माधवदास की कथा॥

माधव दास जी की भक्ति और महिमा और प्रताप वो वैराग्य और शांति वो भाव का वर्णन कौन से होसकता है जिस प्रकार वेदव्यास जी ने औतार धारण करके वेदों का विभाग किया और पुराण बनाये और महाभारत वो सूच इत्यादि को जगत में प्रगट किया और फिर उनका सार और सूक्ष्म करिके श्रीमत् भागवत में वर्णन किया और भगवत् भक्ति और भागवत् धर्म को संसार में प्रवृत्त किया इसी प्रकार माधव दास जी ने मानों वेदव्यास जी का औतार लेकर भगवत् भक्ति और चरितों को सब शास्त्रों का सार निकाल कर जगत में विख्यात किया और भगवत् नाम और लीला का कीर्तन करके हजारों लाखों को संसार समुद्र से पार उतारा श्री जगन्नाथ राय जीके परम उपासक और वैराग्यवान और ब्राह्मणों के नायक ऊए ये कानकुब्ज ब्राह्मण थे जब स्त्री उनकी मरगई तो विचार किया कि यह संसार आगम पाई है मनोरथ यह किया था कि लड़का लड़की होंगे उनका ब्याह शादी करेंगे और कुल की वृद्धि होगी अब भगवत् ने यह चरित दिखाया निश्चय करिके यह संसार अनित्य है और किसी का नहीं है यह शोचकर कि जो घर में हैं इनकी चिन्ता वरना निपट अयोग्य है कि सब का आहार पहुंचाने वाला वो पालन करने वाला भगवत् है जो कोई अपना उपाय करै वह बुद्धि हीन है ऐसा निश्चय करिके और सब विकार संसारी छोड़कर अलग ऊए और श्री जगन्नाथ पुरी में पहुंचकर भगवत् के दर्शन किये समुद्र किनारे पर जाकर बैठरहे और जो सङ्ग भगवत् के रूप अनूप में दृढ़ लग गया था इसहेतु भोजन की सामग्री के न मिलने से विकल नऊए तीन दिन बीते कि कुछ न खाया और भगवत् का ध्यान करते एक जगह बैठे रहगये भगवत् ने सोचा कि हमारे वास्ते नित्य हजारों मन व्यंजन अति मधुर भोग का बनै और हाय २ हमारे भक्त को तीन दिन तक एक दाना भी न पहुंचा भक्त वत्सलता ने बेचैन किया और उसी घड़ी निज अपने महाप्रसाद का थाल सोने का लक्ष्मी जीके हाथ भेजा लक्ष्मी महाराणी भोजन लेकर चलीं तो विचार किया कि पिता तो बालक के पालन से सुचित रहता है परंतु ऐसी माता कोई नहीं कि थोड़े दिन के जन्मे ऊए लड़के को पालन न करै माधव दास भक्ति के घर में जन्मा ऊआ बालक है उसका उपाय वो सुधि भोजन की न लोगई तो

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

बड़ी लज्जा की बात है इस हेतु लक्ष्मी जी माधव दास जी के पीछे गईं वे भक्त कार पाय जेव और प्रकाश सुख का बिजुरी के सदृश माधो दास जी को मालूम हुआ परंतु भगवत् ध्यान में मग्न थे इस हेतु आंख न खोली लक्ष्मी जी थाल रख कर चली आईं जब माधव दास जीने थाल देखा तब आनंदित होकर भोग लगाया भोजन कर के अपने भाग को सराहा और सोने के थाल को पत्ते के पनवाड़े की भांति एक ओर डाल दिया या मंदिर के पुजारी सब ढूंढते हुए वहां पहुंचे माधो दास जी को पकड़ा वो बेंत मारा चले आये वह चोट बेंत की भगवत् ने अपने कमर पर ली और पुजारियों को बेंत की चोट बनाकर आज्ञा की कि वह थाल वो महा प्रसाद माधो दास जी के वास्ते हमने भेजा था उनको जो बिना अपराध दंड दिया वह सब हम को हुआ हम बहुत क्रोध में हैं पुजारी सब अति भय से व्याकुल होकर माधव दास जीके पास जाकर बड़ी मर्य्याद से चरणों में पड़ कर प्रार्थना वो विनय करके अपना अपराध क्षमा कराया यह वृत्तांत सारे संसार में विख्यात होगया और भगवत् की कृपालुता को भगवत् भक्त जन सुन कर अति आनन्द और प्रेम से शरीर में न समाये माधो दासजी को भगवत् स्वरूप में ऐसा प्रेम और नेहया कि देखते देखते बेसुध होकर मन्दिर में रहजाते थे और जब पुजारी सब मन्दिर बन्द करते थे तो भगवत् इच्छा से उनको दिखाई नहीं पड़ते थे एक रात जाड़े की ऋतु में माधव दास जीको जाड़ा लगा भगवत् ने पुजारियों को आज्ञा किया कि हम को ठंढ लगी पुजारी सब तुरन्त भांति भांतिकी रजाइयां लाए भगवत् ने अपने निज ओढ़ने की रजाई वो बनात माधव दासजी को कृपा करके दी और आप नई रजाई को ले लिया तब ठंढ मिटी एक बेर माधव दासजी के पेटमें सुर्राका रोग हुआ और अतीसार के होने से समुद्र के किनारे पर जा पड़े जब पानी लेने वो शौच करने की सामर्थ्य न रही तो आप भगवत् आये वो उनके शरीर को धोया शुद्ध किया माधव दास जीने सोच किया कि यह कौन है जो ऐसी सेवा करता है विचार किया तो जाना कि आप भगवत् हैं हाथ जोड़ कर विनय किया कि ऐसा परिश्रम कब उचित है कि दास की दासता में भेद आवै और स्वामी की बड़ाई में भगवत् ने कहा कि मेरे भक्त को जब दुख होताहै तब हमसे रहा नहीं जाता आप चला आता हूं माधव दास जीने विनय किया कि रोग को दूर कर देते तो ऐसा परिश्रम न होता भगवत् ने कहा कि रोग का होना प्रारब्धकर्म का भोग है सो प्रारब्धका दूरकरना उचित नहीं देखता कि कर्म भोग की पद्धति से विरुद्ध पड़ता है और जब कि मेरे भक्त बिना कष्ट उन प्रारब्ध कर्मों को भोग लेते हैं तो क्या प्रयोजन उनके ध्वंस करने का है यह

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

रीति दिखा कर वह रोग भी दूर कर दिया इस हेतु कि किसी साधक भक्त का विश्वास न छुट जाय जानेरहो कर्म तीन प्रकार के हैं सो संचित वो क्रियमान तो उसी घड़ी दूर होजाते हैं जिस घड़ी यह मनुष्य भगवत् शरण होता है और प्रारब्ध निश्चय करके भोगना पड़ता है जब यह चरित्र माधव दास जीका विख्यात हुआ तो हजारों आदिमी की भीड़ रहने लगी माधव दास जीने अपनी सिद्धता का विश्वास और भीड़ के दूर करने के हेतु भिक्षामांगना आरंभ किया एक के द्वारपर गये स्त्री चौका देती थी उसने शब्द सुन कर वह पोतने का कपड़ा क्रोध करके माधव दास जी के सिर पर मारा माधव दास जीको उसपर दया आई हंसकै वह कपड़ा उठा लिया उसको पानी से धोकर शुद्ध किया बत्ती बना कर रात को जगन्नाथ जीके मन्दिर में दीपक बारदिया उसका यह प्रताप हुआ कि भगवत् मंदिर वो उस स्त्री के हृदय में बराबर प्रकाश हुआ अर्थात् उस स्त्री को तुरंत भक्ति उत्पन्न हुई दूसरे दिन माधव दास जी जब गये तो दौड़ कर चरणों में पड़ी ऐसी दयालुता की बड़ाई किस प्रकार वर्णन हो सकै एक पण्डित सब देशों के पण्डितों को चर्चा वो शास्त्रार्थ में जीतता और दिग्विजय करता हुआ पुरुषोत्तम पुरी में आया और इतान्त पण्डिताई माधव दास जीका सुन कर उनसे कहने लगा कि मेरे साथ चर्चा करो माधव दास जी ने चर्चा न की और कागज पर लिख दिया कि माधव दास हारा वह पंडित काशीमें गया और अपनी बड़ाई वो पांडित्य को कह कर कहा कि माधव दास को जीत कर मैं आयाहूं जब वह कागज पण्डितों की सभा में रख दिया तो उस में यह लिखा देखा कि माधव दास जीता और पंडित हारा अति क्रोध करके फिर जगन्नाथ पुरी में आया और माधवदास जीको अनेक दुर्बचन कह कर बड़ी उपाधि वो बखेड़ा करने को उद्यत हुआ माधवदास जीने कहा कि जो कुछ तुम कहो फिर लिखदेवैं पंडित ने कहा तू बड़ा धूर्त है गदहे पर चढ़ाकर और काला मुह कर के नगर में चारों ओर फिराऊंगा माधव दास जी तो चुप होरहे और वह पंडित स्नान करने को चलागया भगवत् पंडित का रूप बना कर उसके पास पहुंचे और चर्चा कर के जीत लिया उसको गदहे पर चढ़ाकर और सौ दोसौ लड़के बटोर करके और आप भी लड़कें के रूप से साथ होकर उस पंडित की खूब धूल उड़ाई संयोग बस माधवदास जी भी उसी ओर आगये और भगवत् से विनती की कि ऐसे पंडित को बे मर्यादा वो मान भंजन करना कौन उचित था भगवत् ने कहा कि बहुत उचित और प्रयोजन था कि यह मूर्ख मेरे भक्तों को गदहे पर चढ़ाकर मुझको गदहे पर चढ़ाया चाहता था माधवदास जीने उस पंडित को आप गदहे परसे उतारा और अपना अपराध क्षमा कराया

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

एक बेर माधवदास जी के मन में यह आया कि पुरुषोत्तम पुरी में व्रज के चरित्र बहुत कीर्तन हुआ करते हैं व्रजका दर्शन करना चाहिये सो चले मार्ग में एक बाई भगवत् भक्त भोजन कराने के लिये लेगयी जब भगवत् का भोगलगाया तो जगन्नाथ राय जी आये और माधवदास जी भोजन करने लगे वह बाई भगवत् का सुकुमार अंग और सुन्दर मुख थोड़ी बयस देखकर रोनेलगी माधवदास जीने जब कारण पूछा तो कहा कि यह लड़का जो तुम साथ लाये हो थोड़ी उमर का परम सुकुमार है इसके माता पिता कैसे जीते रहे होंगे माधवदास जीने गरदन फेरकर देखा तो अपने स्वामी को देखा भगवत् कृपा और अनुग्रह के प्रेम में बेसुधि हो गये और उस बाई का बोध करके आगे चले किसी और गांव में एक महाजन भगवत् भक्त रहता था उस को माधवदास जीने वचन दिया था कि हम तेरे घर आवेंगे उस के घर गये वह महाजन किसी काम को गया था उसकी स्त्री आई चरणों में पड़ी एक महंत उसकी अटारीपर रसोई करता था स्त्रीने उस महंत से कहा कि एक हरि भक्त आगये हैं वह भी तुम्हारे साथ प्रसाद सेवन कर लेवेंगे महंत ने क्रोध सहित उत्तर दिया कि यहां किसी और की रसोई नहीं हो सकती लाचार उस स्त्री ने माधवदास जीसे विनय किया कि सामग्री तैयार है आप रसोई बना लेवें माधवदास जीने कहा कि और रसोई नहीं बना सकते जो कुछ वस्तु भोजन के योग्य होय सो ले आओ वह दूध गरम ले आई और भोगलगा कर वहां से चले और कहा कि अपने पतिसे कहदेना कि माधवदास जगन्नाथी आये थे थोड़ी दूर गये थे कि वह महाजन अपने घर आया और वृत्तांत अपनी स्त्रीसे सुन कर दौड़ा जाकर अति प्रेमसे चरण पकड़ लिये और हाथ जोड़कर अपने घर पधारने के वास्ते विनय किया माधवदास जीने उसको बहुत करके कहा कि तेरे घर तेरी स्त्री ऐसी बड़भागी है कि वर्णन नहीं होसकता अबतेरे सद्गति और तेरे उद्धारमें क्या संदेह है वह महंत भी माधवदास जीका नाम सुन कर महाजन के साथ आया था हाथ जोड़कर अपराध क्षमा कराने लगा और शिक्षा चाही माधवदास जीने कहा कि हरिद्वारमें जाकर भगवत् भक्तों को सीतप्रसादी सेवन करो तब कुछ ठिकाना लग जायगा वहां से महाजन वो महंतका बिदा करके वृन्दावन में आये श्रीवृन्दावन और श्रीवृन्दावन चन्द्र के दर्शन करके परम आनन्द में मग्न होगये बांके बिहारी जीके मंदिर में दर्शन करने गये थे वहां चनेमिले और द्वारपालों ने कहाभी कि अब भगवत् रसोई का भोग लगाजाता है तब प्रसाद मिलैगा परंतु चनेहीसे क्षुधा की शांति समझ कर यमुना के किनारे पर आये और भगवत् अर्पणकर के भोग लगाया जब मंदिरमें रसोई तैयार हुई और भांति भांति के व्यंजन मधुर भगवत् भोग

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

के वास्ते पुजारी ले गये तो भगवत् ने कुछ अंगीकार न किया आज्ञा हुई कि माधवदास जीने चना हमको भोग लगाया इस हेतु अब कुछ चाह नं रही गोसाईं और पुजारी मंदिर के दौड़े गये और ढूंढकर माधवदास जीको ले आये तब भगवत् ने भोग लगाया श्री वृन्दावन के दर्शन करे पीछे तब दूसरे ब्रजभूमि के दर्शन को गये और भांडीर बनमें खेमनामे साधु रहता था उसके स्थानपर टिकने का विचार किया उसने टिकने न दिया और कठोरताई बहुत करी माधवदासजी अलग कहीं जा कर ठहरे जब उस साधु ने अपने वास्ते तसमई को तैयार किया और खाने को बैठा तो छालि सब हो गये लाचार होकर आया और माधवदास जी के चरणों में पड़ा माधवदास जी ने उसका अपराध क्षमा किया और भगवत् भजन की शिक्षा की पीछे हरिआने गांवमें पहुंचे वहां एक बैरागियों के स्थान में साधु सेवा हुआ करती है और गऊ बहुत रहती हैं उस स्थल में कथा भागवत की होती थी भगवत् चरित्रों के सुनने के वास्ते कुछ दिन वहां टिक गये और टहल वहां की अपने अंग से यह उठा ली कि गोबर इकट्ठा करके उपले पाथ दिया करते एक साधु आगया और माधवदास जी को पहिचान कर दण्डवत् किया जब उसस्थल के महन्त आदि ने माधवदास जीको जाना तो सब चरणों में पड़े और बहुत विनय किया कुछ दिन वहां रहे और चलती बेर ऐसा वर दे आये कि अबतक वह स्थल पूर्ववत बना हुआ है और साधुसेवा होती है फिरती बेर अपने घर भी गये और माता को लड़कों को भगवत् भक्ति उपदेश करके चले आये जब उस महाजन के गांव के नगीच पहुंचे तब स्वप्न में अपने आने से उसको जना दिया वह आया और दर्शन किया वहां से पुरुषोत्तम पुरी को चले और भगवत् दरबार में पहुंचकर ध्यान भो भजन में लगे चरित्र माधवदास जीके बहुत हैं जितना जानने में आया लिख गया॥

नारायण दास की कथा॥

नारायणदास जी जाति चारन अरु भक्त के वेशमें भगवत् भक्त वो बैराग्यवान हुए उनका बड़ा भाई तो कमाने वाला था और नारायण दास जी लुटाने वाले एक बेर भाभी ने भोजन ठंढा खाने के वास्ते दिया नारायणदास जीने न खाया गरम मांगा भाभी बोली मारी कि क्या तू अपने बाबा अरु जी के ऐसा भगवत् भक्त है कि तुम्हारी आज्ञा उठाया करैं नारायणदास जी को लगगई कि भगवत् भक्ति से विमुख होकर जीना पशुके सदृश है मनुष्य शरीर केवल भगवत् भक्ति के निमित्त है संसारी सुख के निमित्त नहीं भगवत् भक्ति सार और यह संसार असार समझकर संसार को त्याग दिया द्वारका में जाकर ऐसा सेवा भजन में लगे कि भगवत् उनके भक्ति से बस होकर जो कृपा उनके बाबा

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

अल्ह जो पर करी थी वैसो ही प्रगट होकर उनपर भगवत् ने करी साक्षात् दर्शन दिये॥

जीवगोसाईं की कथा॥

इस कलियुग में रूप सनातन जी तो भक्ति के जलके सदृश हुए और जीवगोसाईं महाराज मानसरवर के सदृश वो भगवत् भजन उस मानसरवर के दृढ़ घाट के सदृश हैं और भक्ति की दृढ़ता फूले कमल के सदृश है कलियुग के प्रपंच की काई जिस सरवर समीप न गई और भगवत् भक्त जो हंस के सदृश हैं उनको परम आनन्द का देने वाला हुआ जिन्होंने वृन्दावन में वास करके प्रिया प्रीतम महाराज की सेवा और भजन में मन लगाया और जगतके उद्धार के निमित्त सब शास्त्र वो पुराण इत्यादि इकट्ठे करके उनका जो सार वो मुख्य अभिप्राय था उसको अच्छी समझा कर ऐसी भगवत् भक्ति को प्रवृत्त किया कि करोड़ों संसार समुद्र के पार होगये और शोक संदेह के नास करने वाले ऐसे हुए जैसे सूर्य अंधकार का प्रभु है और घटा के सदृश सबका उपकार करने वाले मिल हुए माधुर्य्य भाव से भगवत् की उपासना करते थे और रास चरित्र और दूसरेविहार लीला को परम तत्व जानते थे और उसीको मुख्य तात्पर्य समझते थे रूप सनातन जीके भतीजे थे धन ऐश्वर्य्य बड़ा रहा सबको अनित्य वो असार समझ कर त्याग किया और श्रीवृन्दावन में आये धोती और चादर रेशमी बड़े मोलकी शरीर परथी रूप सनातन जीने मुलाकात को समय हंसकर कहा कि नाम तो वैराग्यवान और पोशाक यह तब जीवगोसाईं जीने उसको भी त्याग किया और गांव से अलग यमुना किनारे पर कुटी बनाकर भगवत् भजन और ध्यान रूप माधुरी में लगे एक दिन गोसाईं रूप जी उसी और जा पड़े ब्रजवासियों ने कहा कि महाराज हमारे गोसाईं जी का दर्शन करो रूप जी आये और जीव गोसाईं जी की मग्न दशा देख कर अति प्रसन्न हुए और छाती से लगाकर प्रेम में पूर्ण होगये फिर अपने पास टिका कर सब शास्त्र पढ़ाया और रसग्रन्थ वो भगवत्चरित्र गोप्य जो वचन से शिक्षा का परम्परा है सो सब अच्छी भांति समझा दिया जीव गोसाईं जी ने उनको ऐसा प्रवृत्त किया कि सारे संसार को सिखा और जहां तहां गोसाईं जीकी विद्या और पांडित्य की ख्यात होगई और अकबर बादशाह ने गंगा वो यमुना के माहात्म्य वो बड़ाई के निर्णय के वास्ते बुलाया सो वृन्दावन वो ब्रज भूमि छोड़ कर कहीं रात्रि के निवास नहीं करने का प्रण था इस हेतु बादशाह ने कई जगह घोड़ोंके रथकी सवारी बैठाकर एक पहर के भीतर फिर लौटने पहुंचा देने का बाचा प्रबंध कर दिया सो आगरे में आये और ऐसे सुटवाद से यमुना जीकी बड़ाई को ठहराय दिया कि किसी को कुछ

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

अनुवाद की जगह न रही अर्थात् यह सिद्धांत दिखा कर बोले कि अल्प विचार के वास्ते हमको बुलाया कोई एक पुराण देख लिया होता कि गंगा जी को जिस पूर्णब्रह्म का चरणामृत लिखा है यमुना जी उसी पूर्णब्रह्म की पटरानी हैं बिचारकर लेना चाहिये कि बड़ाई किसकी हुई इस उत्तर से किसी को कुछ संदेह किसी बात का नहोय यह उपासना वो सिद्धांत की परम पंक्ति है जिस ओर जिस किसी को जैसा विश्वास है, उसको वह देवता वैसाही फल देता है बादशाह निर्णय गोसाईं जीको सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ और विनय किया कि कुछ सेवा की आज्ञा होय गोसाईं जीने कहा कुछ प्रयोजन किसी बातका नहीं है जब बादशाहने बहुतकहा तो आज्ञा की कि सब पुराण वो स्मृति वो सब शास्त्र काशी जी आदिसे मंगवा के वृन्दावनमें इकट्ठे करा देव बादशाह ने थोड़ेही दिन में आज्ञा गोसाईं जीकी पूर्ण करदी कि अब तक सब पुराण वो स्मृति वो शास्त्र वृन्दावन में प्राप्त हैं गोसाईं जी ने जिस प्रकार गोविन्द देव जीका मन्दिर मानसिंह आजमेर के अधिपति से बनवाया सो वृत्तान्त रूप सनातन जी की कथा में लिखाहै बादशाह अकबर वृन्दावन में आया वो गोसाईं जीके दर्शन को गया चलते समय बिनय किया कि वास्ते बनवा देने मकान इत्यादि के कुछ आज्ञा होय गोसाईं जीने कहा कुछ प्रयोजन नहीं बादशाह ने हठ करके कहा तब गोसाईं जीने कहा कि हृदय की आखों से श्री वृन्दावन वो यहां की सजावट को देखना चाहिये तिस पीछे हठ अपने अहा के अनुकूल उचित है बादशाह ने आंख बन्दकर के देखा तो धरती और मन्दिर सब ओर कुंजें आदि वृन्दावन के सब सोने के खचित मणि गण के जड़ाव से जड़ित हैं ऐसे दिखाई पड़े कि जिसके तड़प से आंखें बन्द हो जाती थीं और दूसरे सामान सब हर एक प्रकार के ऐसे देखे कि कान और ध्यान ने कबहीं न सुने थे आधीन होकर बिदा हुआ रीति गोसाईं जीकी ऐसी थी कि जो कोई भेंट पूजा ले आता था यमुना जीमें डाल देते थे अपने पास कुछ नहीं रखते थे सेवक लोगोंने हाथ जोड़कर बिनय किया कि किस वास्ते यमुना जीमें डालाकरते हो अच्छी बात है कि साधुसेवा हुआ करै कहा कि साधुसेवा करने के योग्य कोई देखने में नहीं आता एक चेलेने कहा जो आज्ञा होय तो यह दास आपके मन के अनुकूल यह सेवा करै सो गोसाईं जीने आज्ञा दी उसने साधु सेवा को आरम्भ किया एक साधु ने रात के समय कुबेला में भोजन मांगा वह सेवा करने वाला टहल और परिश्रम सेवा से थक गया था रिस करके बोला कि इस समय भोजन कहां है प्रभात को मिलैगा जो बड़ी भूख हो तो मुझको खालेव गोसाईं जी सुनकर बोले कि इसी अड्डापर सेवा साधों की अंगी कार करो थी कि उन को आदमी खाने वाला कहता है फिर पीछे हरि भक्तों

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

का माहात्म्य और उनकी बड़ाई और सेवा का फल सब को समझाया गोसाईंजी श्री गोविन्ददेवजी की सेवा पूजा में गोसाईं रूप जीकी आज्ञा से रहते थे बहुत काल पर्य्यंत बड़ी प्रीति और स्नेह से सेवा को किया जब एक चेले को भगवत् भक्ति और प्रेम की सब प्रकार से परीक्षा कर ली तब भगवत् सेवा उसको सौंप कर आप श्री वृन्दावन की लता वो कुंज वो यमुना किनारे वो बन इत्यादि में भगवत् रूप के अनन्द वो ध्यान से बेसुधि वो निमग्न रहने लगे॥

सुर सुरी जीकी कथा॥

सुर सुरी जो परम सती भगवत् भक्त ऐसी हुई कि जिनका सतरखने के वास्ते आप भगवत् स्वरूप धारण करके आये धन संपत्ति अनित्य वो संसार को असार समझकर घर त्याग करके और अपने पति सुरसुरानन्द के साथ वृन्दावन में आय के भगवत् भजन वो ध्यान में लगी रूप अति सुन्दर था उनकी कुटी के पास मुसल्मानों का डेरा आनिपड़ा उनका सरदार सुरसुरी जीके स्वरूप को देखकर आशक्त हुआ अपने सेवकों को पकड़ लाने की आज्ञा दी सुरसुरी जीने धनुष धारी का ध्यान किया भगवत् ने तुरन्त व्याघ्र के रूपसे प्रगट होकर सब दुष्टों को बिडारा कितनों को मारडाला कितने घायल हुए व्याघ्र के रूप से इस हेतु प्रगट भये कि तरकससे तीर निकालते धनुष पर चढ़ाते बिलम्ब होगी और व्याघ्र रूप में सब अंग शस्त्र रूप हैं जल्दी अच्छी दुष्टों के घात से बनि आवेगी इस हेतु व्याघ्र रूप से प्रगट हुए॥

द्वारिका दास जी की कथा॥

द्वारिकादास जी चेले स्वामी कील्ह के परम भक्त श्री राम उपासक हुए पातांजलि शास्त्र के अनुसार से शरीर त्याग करके भगवत् का परम धाम पाया कूकस गांव के नगीच नदी बहती है उसके जलमें जाकर भगवत् का ध्यान किया करते थे और रघुनन्दन स्वामी के चरणों में ऐसा दृढ़ विश्वास था कि संसार की अनेक मोह की फांसो को काटकर एक उसी ओर चित्त को दृढ़ करके लगाया॥

राघवदास जी की कथा॥

सब को जीतने वाला कलियुग तिसको जीतकर राघव दास जीने अपने आधीन करलिया और भगवत् भक्ति को ऐसा निबाहा कि कबहीं किसी प्रकार का भेद न पड़ा काम जो चाहना वो क्रोध जो रिस और लोभ जो लालच इनकी पवन ने तन को स्पर्श भी न किया जैसे सूर्य जलको आकर्षण करके फिर बरस देता है परंतु सूर्य को न चाहना आकर्षण की है न बरसने की अपनी अपनी ऋतुपर आपसे आप आकर्षण वो वर्षा होती है इसी प्रकार राघवदास जी को कुछ चाहना किसी ऐश्वर्य्य

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

वो संपत्ति के बटोरने की न थी आपसे आप द्रव्य आता था वो खरचे होता था भगवत भक्तों की सेवा में विश्वास वो सहिष्णु प्रो प्रिय दर्शन वो मीठे बोलने वाले सुन्दर रूप थे अल्ह राम जी जो रावल करके बाजते थे अपने गुरू की सेवा भगवत् की सेवा के सदृश करके संसार में विख्यात हुए॥

हरिबंश की कथा॥

भगवत् का बचन है कि निष्किंचन मेरा भजन करते हैं उनको शीघ्र मिलता हूं इस वचन पर हरिबंश जी का दृढ़ विश्वास था जैसे उस घसियारे ने कि उसके पास केवल खुरपा जाली था गंगा स्नान के समय दान कर दिया उसी प्रकार सब वस्तु दान करके वो त्यागी होकर भगवत् भजन में लगे और बिना भगवत् भजन स्मरण के एक घड़ी व्यर्थ नहीं जाती थी जब तक रहे कोई बचन कठोर न बोले रामानुज संप्रदा में श्री रंग जी के चेले थे सन्तोषी सहिष्णु प्रिय दर्शन साध्य थे॥

निष्ठा सचहीं॥

वर्णन वो महिमा भगवत् सेवा का जिसमें दस भक्त उपासकों की कथा है॥

श्री कृष्ण स्वामी की चरण कमलों की ऊर्द्धरेखा को प्रणाम करके बुध अवतार को कि गया जी में धारण करके प्रथम वाले एक प्रयोजन के यज्ञादिक की निन्दा करी और फिर सबधर्मों को स्थापित किया दण्डवत है सेवा निष्ठा की महिमा के वर्णन से प्रहिलेही एक संदेह का निवृत्त करना प्रयोजन हुआ वह यह है कि भागवत इत्यादि पुराणों में नव प्रकार की भक्ति मेसे सेवा वो पूजन वो दास निष्ठा को अलग २ वर्णन किया और बिचार करके प्रगट कुछ भेद नहीं जनाई देता सो कारण अलग २ वर्णन करने वालों का क्या है सो जाने रहो कि स्वरूप सेवा निष्ठा का सन्मुख रहना अनुक्षण सेवा में अपने स्वामी के और सहि नहीं सकना विश्लेषता एक क्षणमात्र का और करना सब सेवा जो समय समय पर करना प्रयोजन पड़े और वह सेवा मन बचे कर्म से होय सो पूजन निष्ठा से तो इस सेवा निष्ठा को यह भेद हुआ कि पूजा निष्ठा उसको कहते हैं जो केवल षोड़शो पचार से किया जाय जिनका वृत्तांत आठवीं निष्ठा अर्थात् प्रतिमा वो अर्चा निष्ठा में विशेष करके लिखा है कुछ अनुक्षण सन्मुख प्राप्त रहने का नियत नहीं है और वियोग भी वह उपासक सहि सक्ता है और दास निष्ठा से यह भेद है कि दास नाम किंकर का है वो करना किंकरताई निकट वो दूर दोनों दशा में बनता है दास को स्वामी की प्रसन्नता पर दृष्टि रहती है हठ किसी बात में नहीं कर सक्ता महिमा सेवा निष्ठा की वर्णन नहीं हो सक्ती कि जिसके प्रभाव करके

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

पूरण ब्रह्म सच्चिदानन्द घनका सामीप्य मिलता है जिनको नित्य मुक्त कहते हैं वे इसी निष्ठा से उसपदवी को प्राप्त हैं भागवत में लिखा है कि देवता वो राक्षस अथवा आदमी यक्ष गन्धर्व कोई होय नारायण के चरण सेवन से परम कल्याण को पावता है फिर लिखा है कि हे भगवत् तुम्हारे चरण नौका के सदृश हैं और उनकी सेवा में जिसका मन लगा है सो इस संसार समुद्र को गोपद जल के सदृश उतर जाते हैं कपिल देव जी का वचन है कि जो मेरे चरण की सेवा करते हैं उनको संसार का दुःख कदापि नहीं होता है सप्तमस्कन्द भागवत में लिखा है कि तब तक भय और शोक वो लोभ और स्पृहा इत्यादिक दुःख देने वाले हैं कि जब तक भगवत् सेवा में मन नहीं लगता शेष शेषी भाव जो शास्त्रों में लिखा है उसका निर्णय यह है कि जो वस्तु किसी और के निमित्त होवे उसका नाम शेष है और जिस के निमित्त वह वस्तु होय उसको शेषी कहते हैं जिस प्रकार राजा का राज वो फौज वो प्रजा वो संपत्ति इत्यादि हैं सो राजा तो शेषी है और राज इत्यादिक सब शेष हैं इसी प्रकार सवार तो शेषी है और घोड़ा साईस शेष सो जब क्रम से एक को दूसरे का शेषी बिचार किया जाय तो परिणाम में शेषी होना भगवत् पर समाप्त होता है किस वास्ते कि जितनी वस्तु हैं सो और ब्रह्मांड जहां तक गुप्त वो प्रगट आंखों से देखने में आवें सो भगवत् के वास्ते हैं और भगवत् का है भगवत् से अधिक कोई नहीं और इसी प्रकार जब शेष का परिणाम पदवी का बिचार किया जाता है तो शेषनाग पर समाप्त होता है किस वास्ते कि जब सब वस्तु को भगवत् का ठहराया गया तो बिचार करना चाहिये कि सब से अधिक कौन वस्तु निज भगवत् की है जो वस्तु अति शय करिकै भगवत् सम्बन्धी होवै वह ही सब शेष वस्तु वों में वास्तव करिकै अति शय शेष है सो यह लक्षण सब शेषनाग जी में पाये गये अर्थात् कोई अंगशेष जी का ऐसा नहीं कि भगवत् सेवा से रहित होवै शरीर तो शय्या है और कोमल भाग शरीर का तोशक के स्थान है और सहस्रों फन चंदुए के स्थान और सहस्र फन पर जो मणि हैं सो दीप मालिका के स्थान और विष भरे स्वास को रोक कर जो शीतल स्वास का लेना है सो पंखे के स्थान जिह्वा से भगवत् का नाम लेते हैं और गुप्त वो प्रगट के आंखोंसे अनुक्षण दर्शन अनन्त गुण शोभा धाम भगवत् के रूप अनूप का करते हैं नासिका से भगवत् शरीर की सुगन्ध और तुलसी सूंघते हैं और सर्व आंखही से सुनते हैं कान उन के नहीं हैं इस हेतु आंखों की राह से भगवत् के स्वासा से बेद और मंत्र निकलते हैं सो मूलपद अर्थ सहित मन में धारण करते हैं तात्पर्य यह कि सब अंग शेष जीके भगवत् सेवा में लगे हैं और सब वास्ते भगवत् सेवा के हैं इसी हेतु उनका

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

नाम शेष विख्यात होकर पदवी अंत वो परिणाम शेष होने का उन पर समाप्त हुआ सो प्रयोजन इस लिखने से यह है कि सेवा भगवत् की ऐसी हो कि शुद्ध वो प्रगट के अंग में से कोई अंग सेवा से रहित न होय इस अवस्था को जिस की सेवा पहुंच जाती है उसी का नाम शेष है और वह ही अविल्य और वह ही नित्य मुक्त है और वही समीपी सेवक वो पार्षद है और उसी का नाम सामीप्य मुक्ति वाला है रामानुज संप्रदा में जो शब्द कैंकर्य विख्यात हैं वह तात्पर्य भगवत् सेवा से हैं मूल उसपद के प्राप्त होने का यह है कि जितना काम प्रभात से अगिले प्रभात तक जिस अंग से यह मनुष्य अपने तनके वास्ते करता है वह सब भगवत् सेवा के संबन्ध विचार करके करता है अपने निमित्त तनक न समझै जैसे रसोई करना है तो चौके का देना और जलका ले आना और रसोई का बनाना भगवत् की रसोई का विचार हो अथवा घोड़ा मोल लेना है तो भगवत् की सवारी के निमित्त मोल ले अपने सवारी को विचार के नहीं और सवार होते समय यह ध्यान करले कि भगवत् घोड़े पर सवार हैं और आप साईस की भांति साथ है अथवा कोई पोशाक बनावना है तो भगवत् के निमित्त हो अपने निमित्त विचार न करै वो पहिले भगवत् को पहिनावै पीछे प्रसाद भगवत् का आप धारण करै इसी प्रकार और सब काम रात दिन और अपने जाति धर्म के करै और जो त्यागी होय तो जो कुछ बन और पहाड़ में शरीर से कर्म हो सब भगवत् सेवा के निमित्त विचार करै अपने शरीर की सुख्यता सब उठा देवै और यह सेवा भगवत् मूर्ति की करै यामानसी वो भगवत् के ध्यान स्वरूप में और ध्यान में और विश्वास रूप अरूप भगवत् का ऐसा हो कि मानो वह पोशाक अथवा कोई वस्तु अर्पण न किया हुआ भगवत् ने अंगी कार वो धारण कर लिया और प्रसाद मुझको कृपा किया केवल वाहीं का जमा खरच न हो और हर एक काम में ऐसा विचार करता रहै और मालूम रहै कोई विधान भगवत् सेवा के संबन्धी आठवीं निष्ठा अर्थात् प्रतिमा वो अर्चा निष्ठा में भी लिखे गये हैं कहां तक लिखा जावै मुख्य तात्पर्य यह है कि जो अधिक न हो सकै तो जितना सामा और काम निज अपने सुख आराम के वास्ते यह मनुष्य करता है वह सब भगवत् के वास्ते किया करै यद्यपि वह सब सामा वो वस्तु सब मनुष्यही के आराम वो सुख के वास्ते होजाते हैं परन्तु भाग्यके हीनता के कारण बस विचार वो ध्यान भगवत् का नहीं करता है हे श्री कृष्ण स्वामी इस मनभाग्य हीन को मैंने बहुत समझाया यहांतक कि समझाते २ हार गया परंतु इस दुष्टको कुछ गड़ता नहीं अब मुझको अपने पुरुषार्थके वो उपाय का तनक भी भरोसा नहीं है केवल आपको कृपाक

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

भरोसा करके प्रार्थना करता हूं कि जिस प्रकार से होसकै आपके चरण कमलों में मेरा मन लगे और यह समाज आपके चरित्र का मेरे हृदय में पूर्णमासी के चन्द्रमा की भांति उदय बना रहै और सब रसिक जनको आनंद का देने वाला होय श्रीव्रजचन्द्रमहाराज परम रसिक वो रिझवार को समाचार पहुंचे कि बरसाने में वृषभान नन्दिनी ऐसी परम सुकुमारी और सोभायमान हैं कि तीन लोक में जिस की उपमा को कोई नहीं अति चाह दर्शन की हुई और यह भी सुना कि सांझी के समय में नित्य फूलों के लेने के वास्ते फुलवाड़ियों में आया करती हैं सो उस बागमें कि जिस की शोभा से लज्जित हो कर नंदन वन आकाश में जाकर छिपा आप पहुंचे और जैसेफूल सब खिल खुल के लटक रहे थे उसी प्रकार उसी बाग़ के फूलों में सब अंग से नैन होकर बाट जोहिरहे थे कि अचानक उत्तर ओर से एक सुखमा वो शोभा की मूर्ति हजारों सखियों के बीचमें देखी कि अपने मुख के प्रकाश से सब बाग़ और सब दिशाओंको प्रकाशित वो तड़प वो बेसुधि बुधि करती हुई आती हैं आभषण वो पोशाक चमक दमक की ऐसी झका मकी वो सजावट वो सुन्दरताई के सहित तनमें शोभित है कि मानों शोभा वो छवि वो मनोहरता आदिने पोशाक वो आभूषण के स्वरूप से मनमोहन महाराज के मनको मोहिलेने के वास्ते नवल किशोरी महारानी जी के अंग अंग वो शरीर पर वास किया है यद्यपि विश्व विमोहन महाराज रूपराशि ने व्रजनागरी जीके देखने वास्ते इच्छा आगे चलने की की परंतु कुछ ऐसी छाया वो तेज प्रिया जीकी शोभा का मन पर छाया कि उसी जगह खड़े रहे और चरण न उठा इतने में व्रज चन्दनी जी चित चोर मन मोहन महाराज के आवने की खबरको पाय अपनी सखियों के साथ हंसती वो खेलती और फूलों को तोड़ती हुई समीप आनि पहुंचीं देखा कि एक नवीनवन श्याम सुन्दर स्वरूप वाला आभूषण वो पोशाक बड़ मोल्यसे सजा हुआ ऐसे सजधज के साथ है कि जिसपर करोड़ों कामदेव और शृंगार निछावर होते हैं यक टक नैन लगाये अति आशक्त देखने की होकर मन से बे होश और शोभा के मादक में छका हुआ मत वारा खड़ा है सो प्रेम की झलक व्रजचन्द्र शोभा धाम की व्रजकिशोरी जीके चित्तपर आमकर गई थी इसहेतु वृषभान किशोरीजा देखतेही व्रजकिशोर महाराजकी शोभाको बेबस होकर सुख चन्द्रमाकी चकोर होगई और प्रियाप्रीतमके चारनयन होकर देखने रूप वो बहार परस्पर के मग्न हुये पीछे वृष भानकुमारीने लज्जाकर सखियों से पूछा कि यह नाजुक नव योवन कौन है और कहां का और किसका है कि निर्भय वो ढीठ बे पूछे वो बिनाआज्ञा हमारी फुलवारी में नये नये फूले फूलों के लालच से फिरता है सखियों ने कि दोनों के मन की जानने

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

वाली होगई थीं देखने वाले रूप मनमोहन वो प्रिया प्रीतम के मिलन की समाज वो सुख लेने वाले प्रिया जीने जो वचन कहा उसमें भांति भांति के अर्थ प्रगट करके ऐसी ऐसी बातैं परिहास वो व्यंगकटाक्ष लिये हंसी वो ठट्ठे की आरम्भ की कि दोनों ओर की चाह चौगुनी होगई वो नित्य के मिलनेकी रीति बंधिगई इस समय सुन्दर पर किसी का यह बचन है कि उसी दिन दोनों ने गांधर्वी विवाह करलिया जो इस वचन पर पुराणों के प्रमाण से एक बात निश्चय किया जाय तो परकिया भाववालों को अंगीकार न होगा इस हेतु उसका निर्णय हर एक भाव वालों के विश्वास पर निश्चय करके छोड़ दिया और प्रियाप्रीतम के रूप का वर्णन जो इस समाज में नहीं किया तो वह भाववालों के मन की रुचि पर रख दिया जैसी रुचि जिसकी होय तैसीही छवि जुगल की मनमें विचारि लेवैं॥

लक्ष्मी जी की कथा॥

लक्ष्मी जगत जननी भगवत् की परम प्रिया कि भगवत् की सेवा में सुख पदवी है कि एक क्षण भगवत् चरण सेवा से अलग नहीं होती यद्यपि लक्ष्मी जी और भगवत् में कुछ भेद नहीं नाम मात्र को अलग दिखाई देते हैं जिस प्रकार शब्द वो अर्थ की वास्तव में एक बात है परन्तु कहने मात्र को अलग अलग हैं और युगल उपासकों ने दोनों को बाट से एक ही सिद्धान्त कर दिया परन्तु प्रगट में भगवत् तो स्वामी और लक्ष्मी जी सेवा करने वाली हैं इस हेतु शास्त्रों ने लक्ष्मी जी को सेवा निष्ठों की भक्तों में लिखा और दूसरे भक्तों के सदृश लिखने किसी निज चरित्र लक्ष्मी जी की ढूंढ़ी गई तो जाना गया कि जितने चरित्र भगवत् के शास्त्र और पुराणों में लिखे हैं सो सब लक्ष्मी जी और भगवत् से मिश्रित हैं इस हेतु सब चरित्र जो वेद शास्त्र में लिखे हैं लक्ष्मी जी के चरित्र समझ लेना चाहिये इसी प्रकार राधिकाजी वो सीता जी वो रुक्मिणी जी के चरित्रों का वृत्तान्त है इनमें भेद नहीं परंतु उपासक की उपासना और विश्वास का भेद है

शेषजी की कथा॥

सेवा निष्ठा शेष नागजी पर समाप्त हुई सो सेवा निष्ठा की भूमिका में प्रथम ही लिखि आये अब लिखना दुबारा प्रयोजन नहीं जगते के उपकार वो उद्धार में ऐसी प्रीति है कि सदा भगवत् भजन और वेद स्मृति का उपदेश करते हैं और कई शास्त्र नवीन रचना करके विख्यात किये कि संसार समुद्र से पार उतरने को दृढ़ तरसेत हो गये उनमें एक व्याकरण शास्त्र ऐसा है कि जो वह न होता तो वेद और शास्त्रों का अर्थ मालूम न होता और पातंजलि शास्त्र ऐसा है कि जिनसे मतयोग और ज्ञान भक्ति के विचार

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

में आते हैं उसी शास्त्र से प्रवृत्ति पाई और साहित्य शास्त्र वह है कि रस भेद वो काव्य इत्यादि उसीके प्रभाव से प्रवर्तमान हुये जब कभी धर्म की हानि हुई तो अवतार धारण करके परम धर्म भगवत् भक्ति का प्रवर्तमान किया और सब विघ्न दूर किये शेष जीके चरित्रों को भगवत् चरित्र समझना चाहिये और जिसकी महिमा वेद और शास्त्र वर्णन नहीं करसके तो मेरे ऐसे मतिमन्द की क्या सामर्थ्य कि एक अक्षर लिखि सकूं और शेष जीका नाम अनन्त है तो उनके चरित्र का अंत कौन पामें सक्ता है अर्थात् कौन वर्णन कर सक्ता है॥

१-विष्वक्सेन २-सुसेन ३-बल ४-प्रबल ५-जय ६-विजय ७-भद्र ८ सुभद्र ९-नन्द १०-सुनन्द ११-चण्ड १२-प्रचण्ड १३-कुमुद १४-कुमुदाक्ष १५-शील १६- सुशील॥

षोड़श द्वारपाल ये भगवत् के हैं सर्व काल सेवामें वर्तमान रहते हैं वो भगवत् के पार्षद असंख्य हैं इन्हो के रजकी गिनती कदाचित् कोई कर सकै परंतु भगवंत् पार्षदों की गिनती नहीं हो सक्ती ये सोलह नामी हैं सो लिखे गये उनको भगवत् सेवा में ऐसी प्रीति दृढ़ है कि कोई समय सिवाय भगवत् सेवा के दूसरा काम नहीं भगवत् स्वरूप को निरखि २ सेवा और रूप के आनन्द में मग्न रहते हैं कबहीं अलग नहीं होते आवा गमन की रीति से पार वो न्यारे हैं और सबको यह सामर्थ्य है कि करोंड़ों ब्रह्मांड रचैं और पालन करैं और फिर नाश करदें भगवत् पार्षद भगवत् रूप हैं इसमें संदेह नहीं जो किसी को संदेह हो कि जन्ममरण से बाहर हैं तो सनकादिकों के श्राप से जय विजय पार्षदों के तीन तीन जन्म किस हेतु हुए उत्तर यह है कि जो मुक्त हैं जो मनुष्य तन धारण करके धरती पर रहैं तो उनके वास्ते आवा गमन का निश्चय नहीं जैसे नारद वो सनकादिक वो वशिष्ठजी इत्यादि सिवाय उनके भगवत् भी प्रयोजन वास्ते शरीर धारण करते हैं जो भगवत् के निमित्त आवा गमन का निश्चय किया जाय तो पार्षदों के वास्ते भी होने सकै सिवाय इसके ऐसा संयोग कभी नहीं हुआ कि जब उन पार्षदों का जन्म हुआ तो भगवत् का अवतार न हुआ हो इसी से यह बात निश्चय हुई कि जिस प्रकार कोई राजा किसी देश कों जाता है तो पहिले अपना सामा डेरा वो नौकरों को भेजदेता है इसी प्रकार जब कबहीं भगवत् का पूर्ण अवतार हुआ तो जो चरित्र करना विचारा उनकी सामा को पहिलेही से भेज दिया सो यह बात बाराही संहिता और गर्ग संहिता से प्रकट है इसके सिवाय भगवत् अपनी इच्छा से इस संसार में अपना रूप प्रगट करलेता है इसी प्रकार जो पार्षदों ने भी प्रगट कर लिया तो क्या संदेह है और एक बात यह भी है कि भगवत् इच्छा सब पर प्रबल है जो वे केवल भगवत् इच्छा करिके इस संसार

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

में देह धारण करके भगवत् इच्छा में वर्त्ति के फिर उसी लोक में चले गये तो आवागमन का निश्चय हो सक्ता है अब यह सन्देह उत्पन्न हुआ कि भगवत् सेवा के उपासक एक क्षण का वियोग नहीं सहि सक्ते सो वन गमन के समय श्रीरघुनन्दन स्वामीने लक्ष्मण महाराज को अयोध्या जी में रहने की आज्ञा दी सो वे सेवा के उपासक थे भगवत् आज्ञा को अंगीकार न किया साथ गये सो दोनों पार्षद जय विजय को भगवत् सेवा से वियोग कैसे सहा गया सो यह शंका ठीक है उत्तर इसका इतनाही बहुत है कि उन्हों ने जगत् का उपकार विचार करके सेवा में वियोग अंगीकार किया यह कि भगवत् चरित्र फैलैंगे जिसको गाय गाय कै कोटान कोटि जीव भगवत् की सेवा में आवैंगे तो इससे अच्छा और क्या है सो यह विचार उनका सिद्ध हुआ कि भगवत् भक्तों के सिवाय कितने राक्षस और दैत्य और परम पातकी भगवत् को प्राप्त हुये॥

हनुमान जीकी कथा॥

चरित्र और कथा हनुमान जीके और भक्ति भाव ऐसे पवित्र हैं कि आप रघुनन्दन स्वामी सुनकर प्रसन्न होते हैं श्री रघुनन्दन स्वामी के चरित्र जो संसार समुद्र उतरनें के वास्ते दृढ़ जहाज हैं हनुमान जीके चरित्र उन जहाजों के वास्ते बादवान के सदृश हुए महिमा हनुमान जीकी किससे होसक्ती है कि सारा ब्रह्माण्ड उनको सेवा को धन्य धन्य कहता है सीता महाराणी जगत् जननी को तो भगवत् का संदेस और रावण के बध होने की भविष्य बात सुनाकर और रघुनन्दन स्वामी के हजूर हाजिर हो करके समाचार सुनाये लक्ष्मण के वास्ते संजीवनी लाये मृत्यु से बचाया को भरत शत्रुघ्न जी वो अयोध्या बासियों को भगवत् के आवने का समाचार सुनाकर उपकार किया रावण का बध करिकर सब देवताओं को आनन्द देकर धन्य धन्य कहाया भगवत् चरित्र संसार में विख्यात करके सब संसारी जीवों को परम पदका अधिकारी किया अर्थ यह कि ऐसा कोई नहीं कि जिसके वास्ते उपकार हनुमान जीने न किया हो और बहुत प्रकार की विद्या में हनुमान जी का आचार्य्य होना शास्त्रों में लिखा है परंतु गान विद्या और ब्रह्म विद्या और शास्त्र विद्या और व्याकरण और साहित्य शास्त्र में विशेष करिके आचार्य्यत्व हनुमान जी को है शिवजी के अवतार हैं और केवल रघुनन्दन स्वामी की सेवा के निमित्त अवतार लिया यद्यपि सब निष्ठाओं में उनका विश्वास दृढ़ है परंतु सेवा निष्ठा में इस हेतु लिखा कि आप भगवत् ने उनकी सेवा को बड़ाई दी और सर्व काल सेवा में प्राप्त रहते हैं भगवत् नाममें ऐसा विश्वास हनुमान जी को है कि जब श्रीरघुनन्दन स्वामी लङ्का जीतकर अयोध्याजीमें आये तो बिभीषण एक मणिकी माला कि जैसी कहीं सारे संसार में नहीं है समुद्र से मांगिके

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

भगवत् भेंट को लाया और जिस समय रघुनन्दन महाराज राजसिंहासन पर बिराज मान हुए तो वह माला भेंट की देवता वो राजा आदि जो वहां थे सबको उसके मिलने की चाह हुई भगवत् अन्तर्यामी ने बिचार किया कि माला एक और इसके चाहने वाले अनेक तो ऐसे किसी को देना चाहिये कि जिसको चाहना न होय सो हनुमान जीको पहिनाय दी हनुमान जी ने जब उस माला को देखा तो बिचार किया कि प्रगट देखने में कोई बात भगवत् भक्ति की इस माला में दिखाई नहीं पड़ती क्या जाने भीतर कोई बात होगी इस हेतु एक नग को तोड़ा और उसको देखा जब उसमें भगवत् नाम न पाया तो दूसरे दाने को तोड़ा और नाम भगवत् का न देखा उसको भी डाल दिया इसी प्रकार बहुत नग तोड़ डाले जो दाने तोड़ते थे चाहने वालों का मन टूटता था और मनही मन में रिस करके कहते थे कि भगवत् ने कैसे बेमुहर को यह माला अनमोल दीकि जो भील वो परख उसके जवाहिरातों की नहीं जानता नितान्त एक किसी से न रहा गया और हनुमान जी से पूछा कि किस वास्ते ऐसी दुर्लभ मणिको तोड़ के डालतेहो हनुमान जीने कहा कि इस मणि के भीतर राम नाम देखता हूं उसने कहा कि महाराज कहीं ऐसी वस्तुओं के भीतर राम नाम होता है हनुमान जीने कहा कि जो राम नाम इसके भीतर नहीं तो किस काम की है उसने कहा कि जो आपके विश्वास का ऐसा दृष्टान्त है तो आपके भीतर भी राम नाम होना चाहिये हनुमान जीने कहा कि सत्य करिके होना चाहिये यह कहि कर चर्म अपने छाती का उखाड़ कर दिखाया तो सब रोम रोम में राम नाम लिखा था सब किसी को हनुमान जी की भक्ति और विश्वास का निश्चय हुआ गीता भाख जो महाभारत में भगवत् ने अर्जुन को उपदेश किया तो हनुमान जीने भी अर्जुन के रथ पर ध्वजा में बिराजमान थे सुना अर्जुन को उपदेश किया सो एक अक्षर खण्ड न रहा भगवत् ने टीका करने की आज्ञा दी सो हनुमान जीने तिलक गीता जीका भगवत् आज्ञानुसार रचना किया और गीता जी की प्रवृत्ति को जगत् में किया यह बात गीता माहात्म्य से प्रगट है और महाभारत के समय यद्यपि भगवत् आप सहायक अर्जुन के थे परन्तु हनुमान जी का भी ऐसा प्रताप हुआ कि आप भगवत् ने बड़ाई को किया और महाभारत से सब बात विशेष करिके प्रगट हैं॥

जगत् सिंहकी कथा॥

राजा जगत्सिंह बेटे राजे आनन्द सिंह के भगवत् भक्ति और साधु सेवा के सुलुक में भी राजों के राजा हुये भगवत् सेवा में ऐसी सच्ची प्रीति उनको थी कि कबही उसमें डगमग नहीं होती थी जितना प्रगट

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

ऐश्वर्य वो धन असंख्य था तैसी ही ऐश्वर्य भक्ति की भी मनमें रखते थे जिन्होंने लक्ष्मी नारायण को अपनी सेवा से वसी भूत करलिया और ऐसा निर्मल यश जगत में फैलाया कि असंख्य विमुख लोग भगवत् भक्त हो गये प्रताप ऐसा था कि जिस प्रकार सूर्य के उदय होने से अंधकार ध्वस्त हो जाता है तिस प्रकार शत्रु सब नाश होगये वो आज्ञा दृढ़ ऐसी थी कि प्रजा को आनन्द वो धन संपत्ति की वृद्धि हो और किसी को पराक्रम अवज्ञा की न होय लक्ष्मी नारायण की सेवा की यह प्रीति थी कि जो कबहीं राजधानी से बाहर जाते तो भगवत् की पालकी सब से पहिले चलती और आप किंकरके सदृश पीछे होते वो जब कबहीं संयोग शत्रु से युद्ध का पड़ता तो मालिक वो अधिपति लड़ाई और सेनाके भगवत् होते और आप हरजनके सदृश फौजके काम करते जितनी टहल प्रभातसे अगले प्रभात तक भगवत् सेवा की होती सब अपने हाथ से करते अन्त है कि पानी भगवत् सेवा के वास्ते अपने शिर पर धरके लाते शाहजहांनाबाद में राजा जगत्सिंह वो दूसरे राजा लोग जैसे जसवंतसिंह उदयपुरके वोजयसिंह जयपुर के टिकैत से सबने यह हाल भक्ति वो सेवा का सुना बहुत प्रसन्न और अपनी ओर विचार करके अति लज्जित हुए एक दिन राजा जयसिंह वो जसवंत सिंहको राजा जगतसिंह के दर्शन की अभिलाष जलसे आने के समय की ऊई सो दो तीन घड़ी रातरहे पर राह पर जा बैठे और इस समाज से दर्शन हुआ कि सौ दो सौ सिपाही बीर हथियार बंद सैकरों खिदमतगार वो गुलामों सहित साथ हैं और आप राजा अपने शिर पर भगवत् सेवा का जल सोने के कलसा में लिये हुये जिह्वापर नाम और मनमें भगवत् स्वरूप तिलक और माला धारण किये हुए नांगे पायन जाते थे दोनों राजों को धैर्य न रहा और साष्टांग दण्डवत करके चरणों में पड़े फिर हाथ जोड़ कर विनय किया कि जीवने का सुख वो फल भगवत् ने तुम्हीं को कृपा करके दियो क्या हेतु कि भक्ति का सुख वो राज तो संसार में पाया और परम धाम और भगवत् का स्वरूप उस लोक में मिलैगा राजा जगत्सिंह राजा जयसिंह की ओर देख कर बोले कि मैं किसी योग्य नहीं हूं मुझ से क्या भगवत् सेवा और टहल हो सक्ती है तुम्हारी बहिन अलबत्त भगवत् भक्त है उसके सत्संग और कृपासे थोड़ी थोड़ी मेरे चित्त की वृत्ति भी भगवत् सेवा की ओर लगने लगी है राजा जयसिंह अपनी बहिन दीप कुंवरि की भक्ति वो प्रताप को समझ कर बहुत प्रसन्न हुए और किसी कारण से क्रोध था और जागोर अपनी बहिन की जप्त कर ली थी सो छोड़ दी और द्रव्य वस्त्रादिक भेजकर अपने अपराध को क्षमा कराया दीप कुंवरिने क्षमा किया और अपने भाई को भगवत् भक्ति और साधु सेवा का उपदेश लिख भेजा है भगवत् श्री कृष्णस्वामी

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

कृपासिन्धु महाराज इस पाप पुञ्ज और अति मन्द पर भी कुछ ऐसी दया दृष्टि होय कि अहंकार आदिक नाना दुर्मति को छोड़ कर आप के चरण शरण रहै ॥

कुंवर किशोर की कथा ॥

कुंवर किशोर राजा खेमाल के पोते भगवत् भक्ति के बड़े दृढ़ और प्रेम की मूर्ति बुद्धि मान आनन्द दर्शन उदार मीठे बचन के बोलने वाले हुए भगवत् भक्ति को जगत् में फैला कर सब छोटे वो बड़ों को अपनी अच्छी प्रकृति के आधीन किया अर्थात् सब कोई धन्य धन्य कहता था अवस्था थोड़ी थी परंतु भगवत् भक्ति में जवानों और बृद्धों से भी अधिक हो गये अपने पिता पितामह के शिक्षापनको ऐसा निबाहा कि मरण पर्य्यन्त उसमें भेद न पड़ा अर्थात् जिस समय राजा खेमाल उनका पितामह देह त्याग करने लगा तो आंखों में जल भरके बड़े शोच युक्त हुआ बेटोंसे बिनय किया कि खजाना वो राज वो समाज इत्यादि सब कुछ भगवत् का दिया है जो चाहैं सो दान करैं शोच करने की बात क्या है राजाने कहा कि उन बातों में से किसी बात का शोच नहीं है कि जो काम सुयश वो दान पुण्य का करना उचित था सो सब कर लिया परंतु दो बात का अफ़सोस है एक यह कि कबहीं भगवत् सेवा के वास्ते कलस जलका अपने शिरपर से आकर सेवा न की दूसरा यह कि नूपुर बांधकर भगवत् के सामने नृत्य न किया राजा के बेटे लोग सुन कर चुप हो रहे परंतु कुंवर किशोर राजा के पोते ने खड़े होकर हाथ जोड़ के बिनय किया कि इस दास को आज्ञा हो जब तक जीऊंगा तब तक आज्ञा पालन करूंगा कबहीं व्यवधान न पड़ैगा राजा ने उसी दशा में अति हर्ष वो आनन्द से उठकर कुंवरि किशोर को छाती से लगाया और दोनों को सेवा की आज्ञा देकर परम धाम की राह ली कुंवर किशोर ने उस राजा की आज्ञा को ऐसा निबाहा कि लिखने वो वर्णन करने की किसी को सामर्थ्य नहीं तन मन वो सब इन्द्री भगवत् में लगा दिये भगवत् भक्तों ने सारे संसार में यश वर्णन किया ॥

नरहरियानन्द की कथा ॥

नरहरियानन्द जी ऐसे परम भक्त हुए कि दिन रात सिवाय भगवत् सेवा के कुछ काम न था और सदा अनुक्षण भगवत् सेवा सामाकी तैयारी में रहते थे एक दिन भगवत् रसोई का चौका इत्यादि सब बना कर भगवत् के हेतु रसोई करने लगे घर में लकड़ी न मिली और पानी बड़े धूम धाम से बरसता था इस कारण बाजार में भी लकड़ी न मिली और भगवत् सेवा सब पर सर्वोपर है और सब देवता भी इस बात में एक मत हैं इस हेतु रसोई में विलम्ब उचित न समझ कर दुर्गा का मकान उनके निकट था

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

गये और छत्त उतारने लगे दुर्गा महारानी इस भगवत् सेवा के दृढ़ विश्वास से प्रसन्न हुईं और नर हरियानन्दजी से कहा कि खानको तोड़ो फोड़ो मत लकड़ी तुम्हारे घर पहुंच ती रहैंगी नर हरियानन्द जी फिर आये और प्रयोजन भरे को नित्य लकड़ी पहुंचती रहीं एक स्त्री पड़ोसकी ने इस भेद को जाना और अपने पुरुष से कहा कि नर हरिया नन्द ने दुर्गाको डरपाकर नित्य लकड़ी का पहुंचाना दुर्गा से ठहरा लिया जो तुम भी ऐसाही करौ तो नित्य लकड़ी बिना परिश्रम आती रहैं वह निर्बुद्धि दुर्गा के स्थान पर पहुंच और जैसे फावड़ा छत्त पर मारा कि दुर्गा महारानी ने शिरनीचे वो पांव ऊपर करके उसको लटका दिया जब मरने लगा तो पुकाराकि हे दुर्गा महरानी हे माता अबको प्राण छोड़ देव फिर ऐसा अपराध न होगा दुर्गा ने कहा कि जो मेरे बदले नरहरियानन्द के घर लकड़ी पहुंचाया करै तो प्राण तेरा बच सक्ता है नहीं तो इसी घड़ी प्राण तेरा लेतीहूं लाचार होकरै दुर्गा की आज्ञा को अंगीकार किया और दुर्गा के शिरसे बेगार छूटी भगवत् सेवा की महिमा जो कुछ कोई वर्णन करै सो थोड़ी है शेष और शारदासे भी वर्णन नहीं हो सक्ती है॥

प्रेम निधिकी कथा॥

प्रेम निधि जी जाति के ब्राह्मण रहने वाले आगरे के अन्तर वो बाहर शुद्ध वो सुन्दर मधुर बचन बोलने वाले नवधा भक्ति से भक्तों को आनन्द के देने वाले गृहमें रह करके गृहस्थी की किसी कार में बद्ध नहीं शुद्ध स्वभाव उदार भगवत् भक्तों के सत्संग में नेम वाले और दयालु हुए वासव करिके प्रेम निधि ये सदा चार घड़ी रात रहते उठ कर भगवत् सेवा में लगते और भगवत् सेवा के निमित्त यमुना जल अपने शिर पर रख कर ले आते एक बेर बरषा ऋतु में कहीं कहीं बहुत कीच राह में थी चिन्ता में हुए कि दिन उगे स्पर्श वो भीड़ लोगों की राह में होगी कोई नीच से जल छू जायगा वो रात को जांय तो कहीं अंधेरी में गिरन पड़ें वो घट फूट जाय नतांते स्पर्श नीच का अयोग्य विचार के पानी बरसते में उसी अंधेरी में कलस शिर पर रख कर चले द्वारसे बाहर जैसे चरण दिया को भक्त वत्सल करुणा कर महाराज उनके मनकी सेवा से प्रसन्न होकर बारह बरष के लड़के के रूपसे मशाल लेकर प्रेमनिधि जीके आगे २ होलिए प्रेमनिधि जीने जो रूप माधुरी उस मशालची मनमोहन हरे रंग आंखें अरसोली घुंघवारी अलकैं लाल चीरा बांधे हुये कमर मशालचियों की नई कसे हुये हाथ में मशाल देखी तो भीतर वो बाहर दोनों प्रकाशित हुए आश्चर्य और मोहित होगये यद्यपि यह विचारि लिया कि अपने स्वामी को पहुंचा कर अपने घर आता है परंतु उसके देखने को आशा करिके जिधर को वह चला साथ होलिये और यमुनाजी पर पहुंचे प्रेम निधिजी स्नान करि यमुना जल

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

की कलसा भर और सिर पर रख कर चले घर आए कलसा जलका भगवत् मन्दिर में रख कर तुरन्त उस मशालची को ढूंढ़ते रहे कहीं पता न लगा जानिगये कि ऐसे रूपवाला सिवाय उस ब्रज किशोर चित चोर के और कौन है कि एक निगाह में अपना दास कर लेवै और उस परम दयाल करुणा कर से ऐसा और कौन स्वामी है कि सेवक के थोड़े से परिश्रम के हेतु अपनी ईश्वरता को कि जिसका वेद और ब्रह्मा भी पार नहीं पाते छोड़ कर तुरन्त आन पहुंचे यह समझ कर भगवत् सेवा और भजन में लगे पहिले कथा कि जब भगवत् सेवा से छुट्टी पाते तो भगवत् चरित्रों का कीर्तन किया करते और बड़े प्रेम से कथा कहते थे तो श्रोता बहुत आते थे कथा के पीछे गान और कीर्तन का समाज होता था और सब भगवत् के भाव और भक्ति में मगन होते थे दुष्ट और पापात्मा लोगों को यह बात अच्छी न लगतीथी बादशाह से जनाया और पिशुनता की कि प्रेमनिधि नगर की स्त्रियों को कथा के मिस अपने घर पर जमा करता है कि यह बात कारण अकर्म की है बादशाह ने चोपदार भेजा और उसने चलने के वास्ते जल्दी की उस समय प्रेमनिधि जी भगवत् के निमित्त जलचढ़ाये जाते थे चोपदार के जल्दी करने से जलका गिलास भ्रम होगया बादशाह के सम्मुख गये बादशाह नेदरबान्त पूछा प्रेमनिधिजी ने जो सत्य बात थी कहिदी कि भगवत् कथा का कीर्तन किया करता हूं उस समय कोई स्त्रियां आवैं अथवा पुरुष रोक नहीं होसक्ती कि यह सत्पुरुषों का आचरण नहीं है परंतु स्त्रियों को बुरी दृष्टि से देखना पाप बड़ा होता है बादशाह ने कहा कितुम्हारे टोले के लोगों ने कुछ खोटी बातें कही हैं सो हम इसका वास्तव वृत्तान्त समझेंगे यह कह कर प्रेमनिधि को नजर बन्द किया और महल में चला गया रात को जब सोया तब भगवत् ने उसके इष्ट देव के रूप से स्वप्न में कहा कि हमको जलकी तृषा लगी है बादशाह ने कहा कि जल के घड़े भरे धरे हैं पान करिये इस उत्तर से भगवत् को रिस आय गई और कहा कि तेरे घड़े का पानी कौन पीता है और एक बात सारी कि हमारी बात नहीं सुनता बादशाह ने कहा जिस को आज्ञा हो पानी ले आवै कहा कि हमारा जो पानी पिलाने वाला है उसको तू ने क़ैद कर लिया पानी कौन पिलावै बादशाह की आंखें खुल गईं और बड़ी मर्य्यादा से प्रेमनिधि जी को बुलाया और चरणों में शीस रखकर अपराध क्षमा कराया और कहा कि आप जल्द जावैं जो तृषा की तृषा को भी दूर करने वाला है उसको आपके बिना तृषालगी है और माल मुलक जो चाहिये सो लीजिये भगवत् भक्तों को सिवाय भगवत् के अनित्य पदार्थों की चाह नहीं रहती कुछ न लिया विदा हुए बादशाह ने

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

मशाल साथ देकर उनके घर पहुंचा दिया उसी क्षण प्रेमनिधि जीने जल भगवत् को अर्पण किया कि तृषा मिट गई ॥

जयमल की कथा ॥

जयमल राजा मीरथ के परम भगवत् भक्त हुए कोई कोई लोग उनको मीराबाई जी का छोटा भाई कहते हैं दस घड़ी दिन चढ़े तक भगवत् की सेवा पूजा में तत्पर रहते थे और यह आज्ञा थी कि सेवा के समय कोई मनुष्य पास न आवे नहीं तो वधके योग्य होगा हेतु यह कि चित्त की वृत्ति दूसरी ओर न जाय कोई सजाती बैरी को यह समाचार पहुंचे और जो समय राजा की सेवा पूजन का था उसी समय बहुत सेना लेकर चढ़ि आया जब उसके चढ़ि आने का शोर गुल नगर में पहुंचा तो राजा के डरसे कोई राजा से कहने को नहीं गया परंतु राजा की माता ने जाकर सब वृत्तान्त कहा राजा ने उत्तर दिया कि आप सुचित रहैं भगवत् सब अच्छी करैंगे और आपे सेवा में सावधान बनेरहें शत्रु सूदन महाराज कि सर्वकाल अपने भक्तों के सहाय के हेतु शस्त्र लिये वो कमर बांधे रहते हैं राजा के घोड़े पर चढ़ि के शत्रु की सेना पर पहुंचे और एक पल में सब सेना को ध्वंस कर दिया राजा जयमल भगवत् सेवा से छुटकारा करके बाहर आये तो शत्रु से युद्ध करने की तैयारी में लगे अपने निज सवारी के घोड़े को पसीने में भरा देखकर बड़े आश्चर्य में हुए परन्तु जल्दी संकारी के कारण से कुछ सुधि न किया दूसरे घोड़े पर सवार होकर सेना लेकर शत्रु के सन्मुख पहुंचे पहिले अपने शत्रु को देखा कि धरती पर पड़ा है और बिकल है उसने राजा जयमल से पूछा कि तुम्हारे लश्कर में वह श्याम स्वरूप परम अनूप सिपाही कौन है कि जिसने अकेले आइकर मेरी सारी फौज को मारडाला और मेरामन अपने साथ लेगया राजा जयमल ने उत्तर दिया कि भाई तेरे भाग की बड़ाई कौन कहने सक्ता है कि मुझको वह सिपाही कबहीं स्वप्न में भी दिखाई न दिया और तुझको दर्शन मिला उस बैरी ने भी सब चरित्र भगवत् के जान कर निश्चय किया और भगवत् भक्ति अंगीकार करके कृतार्थ होगया राजा जयमल को ग्रीष्म ऋतु में यह मन में आया कि अत्यन्त बेविश्वासी वो ढिठाई मेरी है कि भगवत् तो नीचे मन्दिर में कि जहां पवन का तनक प्रवेश नहीं होता तहां सयन करैं और हम अटारी पर हवादार मकानों में सोवैं इस हेतु एक बंगला अति बिचित्र रतिमहला तैयार करवाया और उसको फर्स वो परदे वो छत्त वो चांदनी इत्यादि कीमखाब वो स्वर्ण तारी का वो झालर सुकैश वो मोतियों से सजाया एक पलंग सोने वो चांदी का तोशक वो चादर वो तकिया आदि से सजिके उसमें बिछाया और सब सामान रात के सयन समय का जैसे

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

मिठाई वो पानदान वो अतरदान वो उगालदान इत्यादि रखकर भगवत् का मानसी ध्यानसे उसमें सयन कराया वो आप हथियार लेकर चौकी और पहरे के वास्ते बंगले के चारौं ओर फिरते रहे और ध्यान भगवत् रूपके आनन्द में भरते रहे नित बंगले की सजावट और सबसेवा अपने हाथ किया करते और किसी सेवक वो दास को उस काम वो सेवा में कुछ करने नहीं देते भगवत् ने अत्यन्त प्रीति वो स्नेह राजाका सेवामें देखा तो अपने वचन के अनुसार जो गीताजीमें लिखा है कि जोमेरे भक्त जिस प्रकार मुझको सेवन करते हैं उसी प्रकार मैं उनको अंगीकार करता हूं उससेवा को ऐसा अंगीकार किया कि प्रति दिन प्रभात को चिन्ह खरच होने मिठाई वो पान और अतर और पानी का और दन्तवन करने का निर्देश और उगालदानमें उगाल होनेका भाव सब राजाको अच्छे प्रकार मालूम हुआ करता और राजा उस भगवत् कृपाके परम प्रेमके समुद्र में गोता लगाया करते कुछ दिन जब इसी प्रकार बीते और महलमें जाना न हुआ तो रानीको यह मनमें आया कि राजा न मालूम किसी स्त्रीको उस बंगलेमें बुलाता है सो भेदके बूझने के हेतु ऊपर चढ़कर जो बंगलेको देखातो एक लड़का किशोर परम शोभाय मान श्याम सुन्दर सुन्दर पीताम्बर पेन्हेहुये शयन में पाया रानी आधीन हुई और प्रभात को यह वृत्तान्त राजासे कहा राजाने यद्यपि इसबातसे रानी पर कुछ रिसकिया परन्तु भीतर मनमें यह बिचार किया कि परम बड़ भागी वह स्त्री है कि उसको भगवत् का दरशन हुआ॥

आस करन की कथा॥

आसकरन राजा नरवरगढ़ के महराजा भीमसिंहके बेटे जातिके कछवाहे स्वामी कील्हजीके चेले धर्मात्मा और परम भागवत गुणवान बुद्धिमान मधुर बोलने वाले सुर उदारदृढ़ चित्त साधुसेवी श्रीजानकी वल्लभ और राधा वल्लभ जनके नेम वाले अर्थात् श्रीकृष्णस्वामी और श्रीरघुनन्दन महाराजको एक रूप जानतेथे दशघड़ी दिन चढ़तेतक भगवत्की सेवा पूजन अत्यन्त प्रेमसे करते थे और द्वारपालों को आज्ञायी किकोई मनुष्य उस समय सामने न आने पावै और न किसी मालिके का सन्देस कोई संयोगवश बादशाह की सवारी आई प्रभातको किसीकार्य्य शीघ्रके वास्ते बुलाया बादशाही सिपाही जो आ येतो किसीने उनकी आज्ञाका पालन न किया और न राजा तक वृत्तान्त पहुंचाया उन सिपाही लोगोंने वृत्तान्त सब बादशाहके हजूर में पहुंचाया बादशाहने क्रोध करके फौजभेजी परन्तु तबभी राजा तक कोई न गया और न कुछभय फौज के आने का हुआ सेनापतिने बादशाहको लिख भेजा कि फौजके आनेपरभी कोई राजातक वृत्तान्त नहीं पहुंचाता जो आज्ञाहोय तो युद्ध प्रारम्भ होय बादशाह यह बात सब सुनकर आप आया

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

और दरवानोंने केवल एक बादशाहको भीतर जाने दिया बादशाहने देखा कि आसकरनजी सेवापूजन करके भगवत् के साम्हने दण्डवत करते हैं बादशाह दरबक खड़ारहा नितान्त तरवार राजा के पावमें मारी कि एड़ी कटगई परन्तु राजाने तबभी कुछ असावधानी न की और न घाव का भान हुआ क्योंकि मन भगवत् रूप में तदाकार होरहा था और जिसओरमन न होय उसओर कादुःख सुख कब व्यापित होता है सो भगवत् का बचन है कि जिनलोगों का मनमेरी कथा और चरितोंमें नहीं लगा दुःख सुख उनको मालूम होते हैं राजा दण्डवत् करने पीछे मन्दिर के द्वारपर चिलमन डार कर बाहर आये और बादशाह को देखकर रीतिके अनुसार मिलने की जो बादशाही मर्य्यादहै सो सब किया बादशाह यह वृत्तान्त सब देखकर और राजाके बिश्वास और सांचीप्रीति पर बहुत प्रसन्न हुआ और लज्जित हो अपने अपराध को क्षमा कराय और मर्य्याद राजाकी बड़ी की सब राजों का शिरोमणि समझा राजा जब परम धाम को गये बादशाहने सुनकर बड़ाशोच किया और श्रीमोहन जीके मन्दिर में जो राजा सेवन करता था तिसकी सेवा वो राग भोग के वास्ते कई गांव जागीर के बन्धान करदिये कि अबतक माफ़ हैं॥

निष्ठा अठारहीं॥

जिसमें दास्य निष्ठा की महिमा और वर्णन सोरह भक्तों की कथा का है॥

श्री कृष्ण स्वामी के चरण कमलों की पूर्णचन्द्ररेखा को प्रणाम करके ऋषभदेव अवतार को दण्डवत् करता हूं कि अयोध्या पुरी में वह अवतार धारण करके ज्ञान और बैराग्य की अन्तिमदशा को संसार में प्रगट किया महिमा दास्य निष्ठा की कौन वर्णन कर सक्ता है इसमें कुछ सन्देह नहीं कि इस संसार से उद्धार के हेतु दास्य निष्ठा से अधिक और कोई अवलम्ब नहीं यद्यपि भगवत् प्राप्ति के हेतु दूसरी निष्ठा भी बहुत हैं परंतु परिणाम सब निष्ठाओं का इसी निष्ठा में पहुंच जाता है जैसे सखा वो वात्सल्यहै और उसमें दास्य भाव प्रगट मुख्य नहीं परंतु जो मूल अभिप्राय पर दृष्टि जाती है तो वास्तव में जड़ उनके निष्ठा की दास्य भाव से सम्बन्ध रखती है और सखा वो वात्सल्य भाव केवल मनकी रुचिसे चित्त के लगने वास्ते है उनके मूल से साक्षात् अर्थ शरण होने और दास्य भावके निकलते हैं तो जब कि उन दोनों निष्ठा वालों का यह वृत्तान्त हो तो और निष्ठा एक अंग वो मिश्रित दास्यनिष्ठा की आपही होगई और हैं ब्रह्मस्तुति में भागवत् में लिखा है कि तबही तक द्वैत वो सुख दुख इस मनुष्य की बुद्धि को चुराने वाले हैं और तबहीं तक गृह कारागार है और तबहीं तक मोह जो अज्ञान सो पांव की बेड़ी है कि जब तक भगवत् का दास नहीं होता

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

दूसरा बचन भागवत् का है कि जिस भगवत् के केवल नाम लेने और सुनने से निर्मल होजाते हैं उसके दास होने से कौन पदवी उत्तम नहीं मिल सक्ती है इस प्रकार के हजारों बचन सब पुराण इत्यादिकों में विख्यात वो प्रसिद्ध हैं और यह निष्ठा ऐसी सहज सब वाई को अंगीकार वो प्राप्त है कि जिस किसी से पूछा जाताहै तो अपने आपको ईश्वरदास और ईश्वरको स्वामी और मालिक अपना वर्णन करदेता है और यह बोलना कहना सब छोटे बड़ों के मुख से स्वाभाविक है कोई कोई उपासकों ने जो शरणा गती को दास्य निष्ठा से अलग वर्णन किया तो कारण यह है कि दास तो दास्यता वो सेवाटहल के करने में बिबस वो पराधीन हैं कि सर्वा वस्था वो सदशा में उसको अपने स्वामी की सेवा करना उचित वो मुख्यतर है वो शरणागत अर्थात् शरण में आया हुआ यद्यपि दास से भी अधिक सेवा टहल करता है परन्तु दासके सदृश उसपर आवश्यक सिद्धान्त नहीं कि सेवाटहल करै सो प्रसिद्ध देखने और सुनने में आया है कि जो दास किसी का होता है जो वह अपने स्वामी की नियत सेवा टहल न करै तो निमकहरामों में गिना जाता है और स्वामी भी प्रसन्न नहीं रहता है और जो शरण में आता है उसको ऊपर कोई सेवाटहल नियत नहीं परन्तु वह दासों की भांति दास्यता की टहल वो सेवा भी करता है तो अनुक्षण साम्हने रहने के हेतु और सेवाका काम भी शीघ्र होजाता है पद्धति दास्य निष्ठा की जगह जगह लिखी हैं और गो तुलसी दास जीने भी अयोध्याकाण्ड रामायण में दास निष्ठा का भाव और रीति अच्छी खूब वर्णन करी है उसका सारांश तात्पर्य्य यह है कि दोनों लोक का लोभ अर्थात् अर्थ धर्म काम मोक्ष को मन से दूर करके केवल अपने स्वामी की सेवा वो प्रसन्नता को सब सिद्धान्तों पर सिद्धान्त तरसमझै और अपने आप को सब प्रकार पर वश वो आधीन अपने स्वामी के जानकर सुख पाय कै हर्षित दुख पाय कै दुखित न होय और सुख को दिया हुआ अपने स्वामी का और दुख को अपने जन्मांतरीय पापों का फल समझता रहै और विशेष करके जगत् की बोलन यह है कि जो कोई बात दुख वो हानिकी आय जाती है तो यह कहते हैं कि भगवत् की इच्छा वो आज्ञा ऐसी होयी सो जानेरहो कि अपने दासके दुख वो हानिके लिये भगवत् की आज्ञा कदापि नहीं होती भगवत् हर घड़ी अपने दासों के वास्ते अच्छा ही करता है नहीं तो बिचार करना चाहिये कि उस मालिक की रिस और कोप करोड़ों ब्रह्माण्डों के ब्रह्मा और काल वो यम इत्यादि नहीं सह सक्ते मनुष्य अपराधों से भरा क्या सहि सकैगा इस हेतु कदापि भूलि कै वो स्वप्न में भी किसी दुःख वो उत्पात के आने से किसी को यह मनमें नहो कि भगवत् की इच्छा से हुआ सेवा टहल जो दासको करनी

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

चाहिये अर्थात् आठवीं निष्ठा वो सचड़वीं निष्ठा में लिखी हैं उन सेवाओं का करना उचित वो योग्य है सेवा मानसी होय अथवा साक्षात् श्री विग्रह की तो जब तक सेवा सब न करै तब तक निष्ठा दास्यता की नहीं होसकती काहे से कि दासका काम सेवा करने का है सैर वो सपाटा करने फिरने का नहीं जब उस सेवा से छुट्टी पावै तब अपने स्वामी के सन्मुख विनय वो प्रार्थना वो स्तुति वो अपराध क्षमापन किया करै और चरित्र वो गुण शौचि समझ के उस आनन्द में मग्न रहै उपासकों ने इस निष्ठा को पांच रसमें एक रस लिखा है शेरस के विचार के अनुसार भगवत् सच्चिदानन्द घन पूरण ब्रह्म परमात्मा करुणा कर दीनबंधु दीनदयाल भक्त वत्सल शरणागत पालक इस रसका विषयालम्बन है और भगवत् भक्त जो पहिले होगये या अबहैं या आगे होंगे वे आश्रयालम्बन तिलक वो माला वो तुलसी और शंखों का चिन्ह धारण करना चरित्रों का श्रवण कीर्तन और शास्त्रों के अनुकूल वर्तना और भगवत् सेवा और टहल की सामा एकट्ठी करनी मूल एकादशी इत्यादि वो सत्संग वो भगवत् उत्साह यह सब विभाव वो अनुभाव अर्थात् प्रथम वो द्वितीय सामग्री है वो आठ प्रकार के सात्विक जो ग्रन्थ के आरंभ में लिखे हैं अर्थात् तीसरी सामग्री सब इस रस में अपनी प्रवृत्ति करते हैं वो चौथी सामग्री अर्थात् तेतीस व्यभि चारों की दश दशा जो वात्सल्य निष्ठा की भूमिका में लिखी हैं इस दास रसमें भी उतनीही हैं सिवाय नहीं भगवत् चरणों की सेवा में निश्चल प्रीति का होना वह स्थाई भाव है और वह प्रीति कैसी हो कि किसी प्रकार और किसी सबबसे किसी घड़ी कम न होवै जिस प्रकार गंगा का प्रवाह रात दिन बराबर चलता रहता है इसी प्रकार चित्त की वृत्ती केवल भगवत् चरणों में लगी रहै हे प्रभु दीन वत्सल हे करुणाकर हे पतितपावन महाराज किस अवतरन वो अवलम्ब से अपनी दशा के समाचार आपके समीप पहुंचाऊं कि सब प्रकार दीन और दुखित हूं और जो चुपहोरहूं तो बिना निवेदन दूसरा उपाय उद्धार का नहीं देखता हूं काहे से कि आप से सिवाय ऐसा और कौन है कि जिस को पतित और अधम प्यारे हों जो यह आप कहैंगे कि दूसरे देवता बड़े २ नामी वो बड़े हैं उनके शरण किस वास्ते नहीं जाता है तो पहिले तो वे बपुरे अपनीही दशा में फंस हैं मेरे वास्ते क्या करेंगे दूसरे जब कि आपके चरण कमलों के आगे किसी की कुछ बड़ाई न समझी तो वे हमसे कब प्रसन्न होंगे सिवाय इसके सब अपनी सेवा और स्वार्थ के चाहने वाले हैं बिना कारण दीन पर प्रसन्न होना केवल एक आपही के बांटे में आया है तो उन देवताओं की सेवा में वह कोई जाय कि जिसको अपने शुभकर्म और सब प्रकार की सेवा

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

करने का भरोसाहो उनकी सभामें मेरे ऐसे अपराधी को कौन पूछता है इस हेतु मुझको तो न कोई जगह जानेकी है वो न कोई स्वामी दिखाई देताहै न कोई दूसरा शरण है आपके द्वार पर पड़ा हूं जब कबहीं जो कुछ होगा आपही के चरणारविन्द से होगा और निश्चय करि के आपके द्वार से कोई पतित और पातकी निरास नहीं फिरा इसहेतु मुझको भी निश्चय है कि अपने मनोर्थ को प्राप्त होजाऊंगा और एक बिनती यह है कि यद्यपि प्राप्त होना मेरे मनोर्थ का मेरे यत्न से अति दुर्लभ है परंतु आपकी तनकसी कृपासे दासों से मिल सकताहूं केवल इतनाहीं चाहताहूं कि वह सभा वो समाज आपके राज्याभिषेक का जो ब्रह्मादिक को परम आनन्द का देनेवाला है सदा निश्चल मेरे मनमें बसा रहै॥ भगवत् का बावन अवतार उस स्वरूप से हुआ कि जो विष्णु नारायण शंख चक्र गदा पद्मधारी का ध्यान शास्त्रों में लिखा है और शरणागति निष्ठा में लिखा जायगा परन्तु जिस घड़ी राजावलिके द्वार पर गये और दान लिया उस समय का ऐसा ध्यान भागवत में लिखा है कि परम मनोहर और शोभायमान छोटासा ब्रह्मचारी का स्वरूप जिसको देखकर सूर्य शीतल और चन्द्रमा लज्जा से सब अंग जल होताथा बनाकर एकहाथमें जलका कमंडल वो डोरी दूसरे हाथमें दंड लिये हुये मुंजी शोभित छतरी छाताके वास्ते लगाये हुये राजावलि के सन्मुख विराज मान और संकल्प कराते हैं॥

प्रह्लाद जी की कथा॥

प्रह्लाद जी भगवत् दासों में अग्रगणनीय वो शोभा के देनेवाले दास निष्ठा और भागवत धर्म के हुए सो कथा उनकी सब पुराणों में और विशेष करिके भागवत वो विष्णुपुराण वो महा भारतमें बिस्तारसे लिखी है इसवास्ते यहां संक्षेपसे लिखता हूं जब हिरण्याक्ष हिरण्यकश्यप के भाईको भगवत् ने वाराह रूप धरिके मारा तो हिरण्यकश्यप सदा एक छत्र राजकरने वो अमर रहनेके वास्ते उपाय विचार करके तप करने को पहाड़ में चलागया राजा इन्द्र ने साज और घर बार हिरण्यकश्यप का लूटपाटके ध्वस्त करदिया और उसकी स्त्री को कि प्रह्लादजी गर्भ में थे पकड़ कर लेचला नारदजीने आकर छुड़ा दिया और अपनी रक्षा में रखकर ज्ञान उपदेशकिया वास्तव करिके वह ज्ञान का उपदेश प्रह्लादजी के वास्ते हुआ क्योंकि गर्भमें सुनते थे जब हिरण्यकश्यप अति कठिन कठिन वरदान लेकर आया तो अपना राज वो घर बार सब सजिलेय और तीनोंलोक के राजगद्दी पर बैठकर सब देवताओं को बंद में डाल दिया कुछ दिनपीछे प्रह्लादजीका जन्महुआ और ब्राह्मणों ने हिरण्यकश्यप को मंगल आशीर्वाद किया कि इस महाभाग लड़के के जन्म लेने

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

तुम्हारा कुल परिवार पवित्र ह्वआ और तुम्हारे पुरुषा सब परम धामको भागी होगये हिरण्यकश्यपने प्रह्लादजी को बड़े लाड़ वो दुलारसे पालन किया और पांच चार वर्ष के हुए तो शंड वो लिखित दोनों शुक्र जीके पुत्रहैं उनके पास वास्ते पढ़ने राजनीति और शास्त्रमें प्रवृत्ति होनेके निमित्त भेजा जब गुरूने पढ़ाना आरंभ किया तब प्रह्लाद जीने भगवत् नाम का उच्चारण किया तब गुरूने कहा कि अरेतू किसका नाम लेताहै वह तेरे बाप का शत्रु है जोतेरा बाप सुनेगा तो तुझे दंड होगा प्रह्लादजीने कहा सब विद्याका पढ़ना केवल उस भगवत् के जानने वास्ते है उसको छोड़ कर दूसरी विद्या का पढ़ना निपट निष्फल है और अपने पिताका कुछडर मुझको नहीं गुरूने प्रह्लादजी की माता से बहुत शिकाकराई परंतु प्रह्लाद जी अपने विश्वास और धर्म में दृढ़रहे एक दिन हिरण्यकश्यप ने गोदमें बैठालकर पूछा तुमने इनदिनों में क्या पढ़ाहै प्रह्लादजीने हरीनाम भगवत् का सुनाया हिरण्यकश्यप क्रोध से बोला कि यह नाम मेरे शत्रु का किसने पढ़ाया है अबफिर कबहीं इस नामको नलेना प्रह्लादजीने कहा कि यही नाम सब नामियों का नाम देनेवाला है और सब धर्मोका परम धर्म्म और सब विद्याओं की परम विद्याहै तुमको उचित है कि इस नाम का भजन किया करो हिरण्यकश्यप सुनकर अधिक क्रोधवंत ह्वआ अपने भृत्य लोगों से प्रह्लाद जी को दंडदेने के वास्ते आज्ञा दी उन्होंने आज्ञा के अनुसार किया जब कुछ न सरा तब आगमें जलवाया नदीमें डुबोया और पहाड़ परसे गिरवाया परंतु कुछकलेश प्रह्लादजी को न ह्वआ हारि के हिरण्य कश्यपने फिर पढ़ाने वालेको सौंपा प्रह्लादजीने पाठ शाला के सब बालकों को गुरू जब न रहैं तब उपदेश किया कि यह संसार असार है और जगत का सब व्यौहार नश्वर है और भगवत् सारहै और सदा सब जगह प्राप्त है भगवत् चरणों में मन लगाना परम सुखहै और भगवत् विमुख होना परम दुख मनुष्यका देह केवल भगवत् भजन के वास्ते है नहीं तो पशुपक्षी वो तृण वो कूड़ा करकट से भी तिरस्कृत है नारदजी ने जो उपदेश मुझको कियो था सो तुमको सुनाया कल्याण इसी में है कि भगवत् शरण होकर स्मरण और भजन करो भगवत् को कुछ जाति और कुल पर दृष्टि नहीं मैं भी तो तुम्हाराही सजाती हूं देखो भगवत् ने कैसे २ संकट काटे हैं बालकों को उपदेश प्रह्लाद जी का लगगया सब भगवत भजन करने लगे गुरू आया और यह वृत्तांत जब देखा तो रिस को और हिरण्यकश्यप से जाकर सब वृत्तांत कहा वह क्रोध की अग्नि में लाल ह्वआ आया और तरवार हाथ में लेकर प्रह्लाद जी के मारने को उद्यत होकर बोला कि अब तेरा रक्षक कौन है प्रह्लाद जीने उत्तर दिया कि वही भगवत् जो सबमें व्यापक और समर्थ सर्वत्र प्राप्त है

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

हिरण्यकश्यप ने कहा इस खंभे में भी है उत्तर दिया अवश्य उसमें भी है हिरण्यकश्यप ने एक मुष्टिका उस खंभे में मारी कि शब्द प्रचंड वो भयंकर उसमें से हुआ और फिर भगवत् भक्त रक्षक और सत्य करने वाले वचन अपने भक्तों के नृसिंह रूप धारण करके वैशाख सुदी चतुर्दशी मध्याह्न के समय सुलतान में कि वह राजधानी हिरण्यकश्यप की थी प्रगट हुए हिरण्यकश्यप भी युद्ध को उद्यत हुआ लड़ाई होने लगी जब संध्या का समय आया तब भगवत् ने उस को पकड़ा और अपने जानुवों पर डालकर गृहके द्वार पर अपने नखोंसे उदर फाड़ा और परमपदको भेज दिया और ब्रह्माका वरदान सब भगवत् ने सत्य भी रक्खा ब्रह्मा और शिव और इन्द्रादिक सब देवता स्तुति और विनय करने लगे और आकाश से जय जयकारकी ध्वनि और फूलोंकी बरषा होने लगी और जो भगवत् का स्वरूप विकराल वो क्रोध भरा था किसी को यह सामर्थ्य न हुई कि समीप जाकर क्रोधको शांतकरै इस हेतु सबने प्रह्लाद जी को भेजा प्रह्लादजीने जाकर दण्डवत् करके विनय किया कि हे प्रणतारत भंजन आपकी महिमा वेद और ब्रह्मा भी नहीं कहि सकते मुझ अधम वो अज्ञ वो बालक से तो क्या वर्णन होसकती है परंतु कृपासिंधु वो दीन वत्सल जानकर विनय करता हूं कि आपके क्रोध भरे स्वरूप से सब देवता भयभीत और कम्पायमान हैं कृपा करिके उनका भय दूर करो भगवत् ने प्रसन्न होकर कहा कि अच्छा और जो इच्छा तुमको हो सो मांगो कि पूर्ण करूंगा प्रह्लादजीने विनय किया कि आपके चरण कमलों की भक्ति से सिवाय किसी वस्तु की चाहना नहीं जो शरीर सुख का मिलै आपके चरणों की प्रीति बनी रहै भगवत् ने यह वरदान दिया और राजगद्दी पर बैठाल कर अपने हाथ से राज तिलक कर दिया उस समय भगवत् रूप की शोभा ऐसी थी कि जो हजारों सूर्य एक साथ उगैं तौ वे भी भगवत् मुख के तेज की समता नहीं पाय सकते उस मुख पर जहां तहां रुधिरकी बूंदैं लगी हुईं बड़ी आंखैं लाल कुछ पिय राई लिये हुए जीभसे बार २ अपने ओठों को चाटते हैं भूरी गर्दन के बाल पीले और श्याम दोनों हाथ अत्यन्त बलिष्ट नख तीक्ष्ण चौड़ी छाती पर आंतों की माला विराजमान और पूंछ कमर पर को होकर शिर पर चमर की भांति लहराती हुई प्रह्लाद जीको गोद में लेकर राज तिलक करते हैं देवता चारों ओर विनती कर रहे हैं आकाश में दुन्दुभी बजती हैं अप्सरा नाचती हैं गन्धर्व भगवत् चरित्रों का कीर्तन करते हैं फूलों की वर्षा होती है और यह बात मालूम रहै कि भगवत् स्वरूप ऐसा न था कि कोई अंग व्याघ्र का होय और कोई अंग मनुष्य का वह सब स्वरूप भगवत् का कबही व्याघ्र के रूप से देखपड़ता तथा कबहीं मनुष्यके यह बृत

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

भागवत के तिलक से प्रगट है परंतु बज़त करिबे भगवत् रूप व्याघ्र के शरीर से देखने में आता था पीछे भगवत् तो अन्तरध्यान होगये और प्रह्लाद जी राज करने लगे उनके राज में भगवत् भक्ति की ऐसी प्रवृत्ति भई कि कोई विमुख न रहा और न्याय धर्म इतना था कि एक बेर प्रह्लाद जीके पुत्र विरोचन से वो मुत धन्वा ब्राह्मण से आपुस में एक सुन्दरी स्त्री के वास्ते यह विवाद ऊआ कि विरोचन तो उसको कि राजा के पुत्र होने से आप लिया चाहता था और वह ब्राह्मण कहता था कि राजइत्यादिकों पर ब्राह्मणों का अधिकता है इस हेतु यह स्त्री पहिले भाग मेरा है न्याय इस झगड़े का प्रह्लाद जी पर निश्चय ऊआ और आपुस में यह प्रबन्ध ठहर गया कि जो अन्यथा कहने वाला राजा के यहां ठहरे सो वध किया जाय प्रह्लादजी ने कुछ पक्ष अपने पुत्र का न किया और ब्राह्मण जो सचकहता था उसको वह स्त्री दिलादी और अपने पुत्र के बध के वास्ते आज्ञा दी वह ब्राह्मण इस न्याय से बज़त प्रसन्न ऊआ और उसके बदले विरोचन को बधसेबचाय के प्रह्लाद जी को दीदिया इस प्रह्लाद चरित्र से भगवत् की भक्त वत्सलता पर बिचार करनाचाहिये कि यह हिरण्य कश्यप आरंभ राजसे देवताओं पर उत्पात करता था और देवता लोग सदा चाहि चाहि पुकारते रहे परन्तु भगवत् ने कबहीं हिरण्यकश्यप की ओर कुछ तनक चित्तवन भी न किया जब उसने भगवत् भक्त को दुःख दिया तो उसको न सहिसके और आपने बिना पुकारे भक्त की सहाय करी और एक शिक्षा भी इस चरित्र से प्रगट होती है कि जो बाप भी भगवत् सम्मुख होने में बाधा करै तौ त्याग के योग्य है जिस प्रकार प्रह्लाद जीने त्याग किया॥

अंगद जी की कथा॥

अंगदजी बेटे वाली बानरों के राजा के ऐसे परम पवित्र भगवत् भक्त ऊए कि युवा अवस्था और सर्व सुख राज्य ऐश्वर्यप्राप्त था तथापि सदा मन की वृत्ति भगवत् चरणों में रखते थे और रघुनन्दन महाराज ने उनके बाप को सुग्रीव की दीनपुकार पर बध किया परंतु तनक भी भक्ति की राहसे और अपने धर्म से न फिरे और प्रसन्नऊए कि ऐसी पदवी के योग्य बाली नहीं था सो दीवो जानकी जीके खोजने में और रावण से युद्ध होने के समय ऐसा परिश्रम वो शूरता करी सो वृत्तांत विस्तार से रामायण में लिखा है थोड़ासा यह है कि जब रघुनन्दन महाराज की ओर से रावण के पास दूत बनिके गये और प्रश्नोत्तर उचितता के साथ ऊआ तो उस घड़ी यह बात ढिठाई की रावण के मुंहसे निकली कि जैसे और आदमी हैं वैसेही रामचन्द्र तेरे स्वामी भी हैं यह बचन सुनतेही अंगद जी क्रोध से भरिके काल स्वरूप होगये कि भयसे कितने राक्षस भाग गये वो रावण

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

भी कांप कर गिर पड़ा वो मुकुट भी उसके माथे से गिर पड़े उसमें से कई मुकुट अंगद जी ने श्री रघुनन्दन महाराज की ओर फेंके उसके पीछे जब अति उत्तर प्रति उत्तर का संयोग पड़ंचा तो चरण रोपि के रावण से प्रण किया कि जो कोई तुम्हारे में से मेरापांव उठाय देवे तौ श्रीरघुनन्दन महाराज लौट जांयगे और सीता महारानी को मैं हार चुका इस बात को सुनकर इन्द्र जीत आदिक वो बड़े २ वीर उठाय के हारिगये चरण न चला न हिला जैसे कामियों की बातों के सुनने से पतिव्रता स्त्री का मन अथवा कोई आपत्ति के आने से भक्त का मन हरि-भजन और न्याय से नहीं चलायमान होता राक्षसों ने भांति भांति के उपाय से चरण को उठाया परंतु चरण ने धरती को इस प्रकार न छोड़ा कि जैसे बिना भगवत् भजन संसार का दुःख और बिना विद्याके अज्ञान नहीं छोड़ता सब लज्जित होकर बैठ गये तब अन्त में रावण ललकार कर उठा चाहा कि अंगद जी के चरण को पकड़ै उस समय अंगद जीने शिक्षा और तर्क करके कहा कि अरे मूढ़ मेरे चरण के पकड़ने से तेरा क्या भला होता है श्री रघुनन्दन स्वामी के चरण क्यों नहीं पकड़ता कि कृतार्थ होजावै रावण लज्जित होकर सिंहासन पर बैठगया अंगद जी को भगवत् का ऐसा दृढ़ विश्वास था कि प्रण करने के समय कुछ संदेह न किया और लंका को जीत कर जब रघुनन्दन स्वामी अयोध्या में फिर आये और राज्य अभिषेक होलिया तब अंगद जी श्री स्वामी की आज्ञा से विदा होकर अपने घरको गये और भगवत् के स्मरण भजन में ऐसे लीन हुए कि दूसरी ओर तनक चित्त की वृत्ति न गई॥

पीपा जी की कथा॥

पीपा जी ऐसे परम भागवत हुए कि उनके भक्ति के प्रताप से पशुतुल्य भी भगवत् परायण होगये भगवत् भक्तों के भक्त और सब गुणों के जानने वाले हुए गागरौन गढ़के राजा वो पहिले दुर्गा के सेवक थे एक बेर भगवत् भक्त लोग जा निकले उनको रसोई की सामग्री जो इच्छा से चाहा सो दिलवाय दी उन्होंने रसोई बनाकर भगवत् को भोग लगाया और भगवत्से प्रार्थना किया कि कि यह राजा भक्त हो जाय रात को एक किसी ने राजा को स्वप्न में शिक्षा किया कि तू कैसा मतिमन्द है कि भगवत् से विमुख होकर उद्धार चाहता है पीछे एक रात में शंकर रूप से प्रगट होकर राजा को पलंग पर से धरती पर डाल दिया राजा ने उसी घड़ी से भगवत् भक्तिका आरंभ किया और सब रचना संसार की असार दिखाई देने लगी दुर्गा जी साक्षात् हुईं और पीपा जी ने दण्डवत् करके पूछा कि भगवत् भक्ति किस प्रकार प्राप्त होय दुर्गा जी महारानी ने रामानन्द जी को गुरू करने की शिक्षा करके अन्तर ध्यान हुईं और

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

पीपा जी रामानन्द जी के दर्शन के हेतु ऐसे व्याकुल हुए कि लोगों को यह संदेह हुआ कि पीपा जी वैराग्य को काशी पुरी में रामानन्द जी के पास आये उन्होंने निरास कर दिया कि यह घर त्यागियों वो बिरक्तों का है राजा का यहां क्या काम है पीपा जी सब त्यागिके फक़ीर बनिके गये कि मैं भी फकीर होगया रामानन्द जीने आज्ञा की कि कुवें में गिर पड़ो तुरन्त गिरने चले जब गिरने लगे तो रामानन्द जीके चेलोंने पकड़ लिया साम्हने लाये तब रामानन्द जीने चेला किया और भगवत् भक्ति कृपा पूर्वक देकर कहा कि अपने घर जाओ साधु सेवा करते रहो एक वर्ष पीछे हमभी साधु सेवा सुनेंगे तो तुम्हारे घर भक्तों सहित आवेंगे पीपाजी घर आ ये और ऐसी साधुसेवा वो भजन को किया कि वर्णन नहीं होसकता पीछे वर्षदिन के पत्रलिखा कि अपने वचनकी पालना कीजिये पधारिये रामानन्द जी कबीर वो रैदास आदि चालीस चेलों सहित चले जब नगर के निकट पहुंचे तब पीपाजी बड़े भाव रीति मर्य्यादा पूर्वक रामानन्द जी को समाज सहित घर लाये वो ऐसी सेवा करी कि जिसका फल शीघ्र प्राप्त होय कुछदिन पीछे रामानन्द जीने द्वारका चलने की इच्छा को किया और पीपाजी विकल भये तब उनकी प्रीति हृदय को देख कर रामानन्द जीने आज्ञा की कि चाहो यहां रहो चाहो फकीरी अंगीकार करके साथ चलो पीपाजी तुरन्त सब राज छोड़ कर साथ हुए बारह रानी भी साथ चलीं पीपाजीने उन ग्यारह को समझा कर फेरा एक छोटी रानी जिसका नाम सीता था कमली पहिरना वो नंगी रहने को भी अंगीकार किया तब रामानन्द जीके सौगन्द दिलाने से साथ लिया और चले एक ब्राह्मण भी साथ हुआ मना करने से विष खा मरा भगवत् चरणा मृत से जीमया फिर कर घर अपने आया समाज द्वारका में पहुंचा दर्शन याचा करके काशीजी को याचा किया परन्तु पीपाजी आज्ञा लेकर द्वारका में रहे एक दिन श्रीकृष्ण स्वामी के दर्शन की इच्छा हुई समुद्र में कूद पड़े दिव्य द्वारका में पहुंच गये दर्शन पाया सात दिन रहे भगवत् की आज्ञासे फिर समुद्र के किनारे जलसे सीता सहित निकले कपड़ा भीगा शरीर सूखा सब लोगोंने देख करके आश्चर्य माना पीपा जी को भगवत् ने जो छाप दीथी सो पुजारियों को दी और कह दिया कि जिसके शरीरपर लगाई जायगी यह छाप सो भगवत् को प्राप्त होगा फिर जन्म न लेवैगा यह प्रताप पीपा जीका जब विख्यात हुआ तो लोगों की बड़ी भीड़ होने लगी तब वहांसे चलके छः मंजिल आये कि लश्कर पठानोंका मिला सीताजी को सुन्दरी देख कर उन्होंने छीन लिया सीताने भगवत् को स्मरण किया तुरन्त आप आये और दुष्टों को दण्ड देकर सीताको आनन्द से लिआये पीपाजीने सीतासे कहा कि अबभी घर चली

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

जाओ तुम्हारे कारणसे सब उत्पात खड़े होते हैं सीता ने उत्तर दिया कि महाराज आपके उपाय करने से कौन उत्पात शांत हुआ है कि जिसके कारण से भजन में भंग हुआ हो और किस समय प्रभुने सहाय न करी सो आपको और मुझको इस बात की परीक्षा अच्छे प्रकार होचुकी है तब भी ऐसी सिखावन करना यह दूसरी बात है पीपा जी दृढ़ निश्चय पर प्रसन्न हुये दूसरी राहसे चले राह में एक व्याघ्र आया उसको चेला करके भगवत् भक्तिका उपदेश किया उसने अंगीकार किया अब तक वहां का व्याघ्र साधु ब्राह्मण गऊको नहीं मारता वहां से चल कर एक गांवमें आये शेषशायी महाराजका वहां मन्दिरथा बाजारमें लाठी देखकर मालिकसे मांगी उसने कहा जंगलमेंसे काटलेव पीपाजीने सब लाठियों को हरी वो सपत्रकर दिया किजंगल होगया एकलाठीकोकाटलिया फिरएक चोधरनामे भक्तकेघरआए उनके घर कुछ न था अपनी स्त्रीको नंगीकोठेमें बैठाकर उसका लहंगा बेचकर रसोई को कराया भोगलगे पीछे जब चोधर भक्त को उनको स्त्री सहित जेवनेको बुलायातो चोधरने कहा कि आप भोजन करें सीय प्रसाद वह भोजन करैगी तब पीपाजीने सीताको भेजा देखा तो कोठे में है पूछा कि कोठेमें किस हेतु बैठीहैं उत्तर दियाकि तन पर वस्त्र होना न होनाकारण परम आनन्द का नहीं भगवत् रूपका चिंतवन और साधुसेवा परम आनन्द सारहै उसका होना अवश्य योग्यहै सीता जीने सबहाल जानलिया और उनके भाव के आगेअपनी भक्ति को तुच्छ समझा अपने अंगपरके वस्त्र से आधा देकर बाहर लाई और एक साथ भोजन किया पीछे सीता वो पीपाजी चन की सेवा उचित समझकर विशेष द्रव्य की प्राप्ति वेश्याकर्म से शीघ्र जानिकर बाजारमें जा बैठे सुन्दर रूप देखकर लोग जसा हुए समीप आए तो आंख उठाकर न देख सके पूछा तुम कौन हो जवाब दिया कि बार गुखी हैं घरबार कहीं नहीं केवल एक समाजी साथहै वे लोग सुन कर चुपहो रहे कुछ हंसी की बात न कहिसके नाज वो सुहर वो रुपैया भेंट किया पीपाजीने वह सब चोधर भक्त के घर पहुंचा दिया भक्त ऐसे वैराग्य वान थे कि उसी घड़ी भगवत् भक्तों को दे दिया आप जैसे थे तैसे रहे पीपाजी विदा होकर राहका कष्ट झेलते ठोड़ा शहर में टिके तालाब पर स्नान करने गये सुहरों ने भरा एक घडा देखा रातको सीतासे कहा चोरों ने सुनकर जाकर देखा तो घड़े में एक बड़ा सर्प है तब विचारा कि इस सांप से उसको कष्ट होना चाहिये जो हमारे काटने के वास्ते झूठ कहा उस घड़े को ले जाय पीपाजी के स्नान में डाल कर चले गए पीपाजी उस समय सात सौ सुहर जो पांच पांच तोले की एक एक थी तीन दिन में भंडारा करके साधो को खिला दिया सूरसेन राजा उस देश का था वह पीपा जी का नो

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

सुन कर दर्शन को आया चरणों में पड़ कर विनय किया कि मुझको भी अपने ऐसा बना वो मंत्र देकर चेला करो पीपा जीने कहा कि अपनी सम्पत्ति वो रानी इत्यादि सब हमारे भेंट करो राजा ने तुरन्त वैसाही किया तब उसको मंत्र उपदेश करके चेला किया वो रानी वो सम्पत्ति इत्यादि जो भेट किया था सो सब फेर दिया और कहा कि भक्तोंसे परदा का प्रयोजन नहीं राजा के भाई बंधु यह वृत्तान्त सुन कर बहुत क्रोध युक्त हुए और अन्तष्करण से पीपा जी के साथ दुष्टता करने लगे एक बनजारा बैलों के मोल लेने को बैल ढूंढ़ता हुआ आया राजा के भाइयों ने बहका दिया कि पीपा जीके पास बैल अच्छे २ हैं बनजारे ने पीपा जी के आगे आयके रुपैया नक्कद रख दिया और कहा कि नये नये बैलों को मोल लेने आया हूं पीपा जी दुष्टों की दुष्टता जान गये कहा कि इस समय बैल चराई पर गये हैं फिर आकर ले जाना बनजारा तो चला गया और पीपा जी ने उस रुपए से भंडारा वो महोत्साह आरंभ किया हजारों साधु जमा थे कि बनजारा आया और बैलों के वास्ते विनय किया पीपा जीने कहा कि यह हजारों बैल खड़े हैं कि परम धाम तक खेप पहुंचा देते हैं जितने तुमको कामहों ले जाव बनजारा बड़ भागी हरि भक्तों का दर्शन करके उसी घड़ी भगवत् के शरण हुआ वो अच्छे कपड़े साधों को दिये एक बेर घोड़े पर सवार होकर पीपा जी स्नान को गये घोड़े को खुला छोड़ कर नहाने लगे घोड़े को दुष्ट लोग चुरा ले गये और बांध रक्खा जब स्नान करके चलने का विचार किया तो घोड़ा कसा कसाया आगे आकर खड़ा हुआ मानो कोई तैयार करके लाया है एक बेर पीपा जी हरिभक्तों के समाज में गये थे घर पर साधु आये घरमें कुछ न था सीताजी बजार में जाकर एक बनिये से रातको आने के करार पर सामग्री ले आई उसी घड़ी पीपा जी भी आगये बहुत प्रसन्न हुए और सीता ने सब वृत्तान्त कह दिया जब रात को सीता शृंगार करके चली तो जल बरसने लगा पीपा जी अपनी पीठ पर चढ़ाकर बनिये के घर ले गये दर्शन से बनिये को ज्ञान होगया चरण सूखा देख कर पूछा माता किस प्रकार आई सीता ने कहा मेरे स्वामी अपने पीठ पर लाये देहरी पर खड़े हैं बनियां दौड़ कर चरणों में पड़ा और गिड़ गिड़ाने लगा पीपाजी ने कहा लज्जा का कुछ प्रयोजन नहीं अपने दूकानमें जा बच्चा बैल उठावो तुमने बड़ रुपया दिया है हमको कि जिसके कारन भाई आपुस में लड़ मरते हैं बनियां बहुत दुखित और धार मार मार रोने लगा पीपाजी को दया आई दीक्षा देकर आवा गमन के दुःखसे छुटा दिया॥ दुष्टों ने यह वृत्तान्त राजा तक पहुंचाया ब्राह्मणोंने राजासे कहा कि यह बड़ी अनीत है राजा अज्ञान अपनीही नाई समझ कर बेविश्वास

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

होगया पीपाजीने सुनकर विचार किया कि गुरू से विश्वास छुटे इसके देनेा लोक बिगड़ जांयगे इसको दृढ़ विश्वास कराय देना चाहिये इस हेतु राजा के घर गये खबर कराई राजाने कहला भेजा कि पूजा करता हूं पीपाजी ने कहा कि यह राजा बड़ा मूर्ख है चमार के घर जूती लेने वास्ते गया है नाम प्रजा का लेता है राजा सुन कर तुरन्त नंगे पायन बाहर आयकर चरणों में पड़गया पीपा जीने राजा को चेताने वास्ते कुछ और परीक्षा देना उचित समझा राजा की एक रानी जो बन्ध्या घर में थी उसको ले आनेकी आज्ञा की राजा अपने राज के शोच में चला आंगनमें व्याघ्र बैठे देखा फिरा कि यहीं बहाना करूंगा पीछे भीव्याघ्र देखा तब तो करामात पीपाजीकी समझा और रानीके प्रसंग्या देखा कि बगल में एक लड़का तुरन्तका जन्मा है तबतो आधीनवो विश्वास युक्त होकर साष्टांग दण्डवत् किया और हाथ जोड़कर कांपता हुआ डरसे कहने लगा कि मैंने तुम्हारी महिमा नहीं जानी अब मेरा अपराध क्षमाकर कृपाकरो पीपा जी उसी लड़के के स्वरूप से प्रगट होकर कहाकि, ऐ मूर्ख उस दिन को विश्वास और प्रेम को स्मरण कर कि जिस दिन चेला हुआ उचित तो यह था कि दिन दिन भगवत् और गुरूमें प्रीति अधिक होती यह नहीं कि विमुख होकर नरकमें जाना अबसे ज्ञानकर कि दोनों लोक सहज में प्राप्त हों. इस प्रकार शिक्षा देकर अपने स्थान पर आये एक कोई विमुख ऊपर से साधु भेषबनाकर पीपाजीसे एक रातके वास्ते सीताको लिया और सारी रात भागा और सीताकोभी भगाया इस विचारसे कि दूर निकल जावें कि सीता फेर न जाय जहां प्रभात हुआ तहांसे सीता चलनेसे रुकि गई कि स्वामीकी आज्ञा एक रातकी है तब सवारी ढूंढने गांवमें गया गांवकी स्त्रियोंको सीता का स्वरूप देखा तबतो ज्ञान हुआ सीता जीके चरनों में पड़ा और चेला होगया पीपाजी को इसी प्रकार एक बेर चार विषयी भी साधु बनिके आये सीता जी को मांगा जब सिंगार करके सीता कोठरी में जा बैठी वो भी चारों गये तो देखा कि एक बाघिन मारने वो फाड़ने वाली बैठी है तब क्रोध वो भय से भरे पीपा जी के पास आये वो कहनेलगे कि अच्छे साधु हो बाघिन बैठा दिये हो पीपा जीने कहा वह सीता है जैसी तुम्हारी रुचिकी वृत्ति है वैसी दिखाई देती है जो शुद्ध चित्तसें जाओगे तो सीता के दर्शन होंगे पीछे सीता के दर्शन हुए वह सब भी चेले होकर भगवत् भक्ति करने लगे भगवत् को प्राप्त हुए एक गूजरी से दही बहुत दिनतक साधों की सेवाके निमित्त मंगाया वो उसको मोलके रुपये बहुत दिये ॥ एक ब्राह्मण दुर्गा उपासक के घर पीपा जीने भगवत् भोग लगाकर कृपाप्रसाद भोजन किया तो उसको भी भोजन कराया उसप्रभावसे उसको दुर्गाके दर्शन हुए भगवत् भक्त होगया वो

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

भगवत् मूर्त्तिकी सेवा आराधन करने लगा॥ एक तेलिन सुन्दरी तेल लो तेल लो कहती फिरती थी पीपा जीने कहाकि इस मुखसे राम राम कहने से बड़ी शोभा होती तेलिन क्रोध करके बोली कि जब कोई मर जाता है तब राम नाम कहा करते हैं वह जब अपने घर पहुंची तो खसमको मरा हुआ देखा आधीन होकर पीपा जीके चरणों में पड़ी और सब लड़के वाले समेत राम नाम कहने का क़रार किया तब पीपाजीने उस मुरदेको जिला दिया॥ साधु सेवाके निमित्त एक भैंस कहीं से आय गई उसको चोर लेचले पीपाजी भैंस के बच्चे को लेकर पीछे २ यह पुकारते चले कि भैंस बिना बच्चे की दूध न देगी इसको भी लेते जाओ चोर आधीन हुए भैंसको थान में बांधगये कहींसे एक गाड़ी गेहूं और कुछ रुपैया लाते थे बटमारोंने वह गाड़ी छीनली पीपाजी वह रुपैया भी देनेलगे कि बिना रुपैया के घी चीनी इत्यादि सामा रसोई की न होसकैगी बटमारे भी सब आधीन हुए वो गाड़ी आप पहुंचाय गये॥ एक महाजन का बहुत रुपैया साधु सेवा के खुरच का पीपाजी पर क़रज़ होगया नित तगादा करता था वो पीपाजी आज कल किया करते एक दिन बहुत कड़ाई की पीपाबीने कहाकि हम कुछ नहीं धराते हैं उसने हाकिमके यहां फिरियाद की जब हिसाब की बही दिखाने लगा तो सब बही कोरी देखी लज्जित हुआ हाकिम ने दंडदेने को चाहा पीपा जी छोड़ाय लाये चरणों में पड़ा रोनेलगा तब बही ज्योंकी त्यों होगई और रुपैया भी उसकादिया॥ भगवत् ने देखा कि पीपाजी कंगाल होगये रुपैया और अनाज बहुत भेजवाय दिया पीपा जीने वह घर और सब असबाब पुण्यकर दिया॥ एक किसी मनुष्य से गऊ हत्या होगई उसके जात भाइयोंने पांतिसे निकाल दिया पीपा जीने राम नाम उसके मुखसे कहलाया और भगवत् प्रसाद भोजन कराकर भगवत् भक्त कर दिया उस की जाति ने ज्यों का त्यों अलग रक्खा तब पीपा जीने सब वेद वो शास्त्रों के सिद्धान्त से नाम की महिमा प्रगट दिखाकर कहा कि वह नाम एक बेर मुखसे निकले तो करोड़ों जन्म के महा पातक दूर होजाते हैं तो उस नाम के सैकड़ों हजारों बेर के लेने से एक गऊ हत्या कहां बाकी रही सबने निश्चय किया उसको जात में ले लिया॥ राजा सूरसेन को एक बेर पीपा जी के दर्शन की चाह हुई उसके मनकी बूझि के पीपा जी आप गये दर्शन दिये एक साधु को रुपया का प्रयोजन लगा उसी जगह इतना रुपया पीपा जी ने दिया कि और बच रहा॥ एकबेर श्री रंग जी के मिलने को गये रंग जी पूजा करते थे फूलों की माला मानस में पहिरावते मुकुट में अटक जाय बने नहीं तिसको पीपा जीने कह दिया कि कैसे पूजा करते हो कि माला पहिनाते नहीं बनता श्री रंग जी

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

सुनकर दौड़े आये परस्पर मिले एक ब्राह्मण ने लड़की ब्याहने वास्ते जांचा पीपा जी ने उसको राजा के पास अपना गुरू बतलाके द्रव्य दिलवाया॥ एकादशी के दिन जागरन होता था पीपा जी तुरन्त उठकर अपना हाथ मलने लगे राजा ने कारण पूछा तो कहा कि द्वारकामें भगवत् चंदुए को आग लग गई थी उसको बुझाया है राजा ने सांड़नी लगाकर समाचार मंगाया तो सत्य ठहरा और यह भी मालूम हुआ कि पीपाजी हर एकादशी को जागरन में वहां आते हैं एक दिन पीपा जी नदी पर स्नान करने गये थे एक तेली के लड़के से बैल लेकर एक ब्राह्मण को देदिया जब तेली ने पीपा जीसे अपना दुख सुनाया तो बैल अपने घरपर बंधाया॥ एक बेर अकाल में अनाज वो कपड़ा लोगों को इतना दिया कि अकाल थाही नहीं सब का दुख निवारण किया॥ एक बेर बड़ी संपत्ति कहीं से हाथ लगी दो चार दिन में खरच कर दिया ऐसे चरित्र पीपा जी के अनेक हैं कि जानने में नहीं आते सो भगवत् और भक्तों में क्या भेद है कि ऐसीही महिमा भगवत् की है॥

कथा प्रयाग दास की॥

प्रयागदास जी अपने गुरू अग्रदास जी की कृपा से ऐसे परम भक्त हुए कि मन वच क्रम से एक रघुनन्दन स्वामी के चरण कमलों में प्रेम था और भगवत् भक्तों में ऐसी प्रीति थी कि भगवत् रूप जानते थे औजे कियारे में भगवत् मन्दिर के कलश चढ़ाने का उत्साह था और मौजे आड़ेव वलिये में भगवत् मन्दिर के ध्वजा चढ़ाने को दोनों स्थान से साधु बुलाने को आए प्रयाग दास जीने बिचारा कि एक जगह जांय एक जगह नहीं तो साधु उदास होंगे इस हेतु दोनों जगह दो स्वरूप बना कर गये और सत्संग इत्यादि का आबन्द लिया और अपने हाथ से एक जगह ध्वजा और दूसरी जगह कलश चढ़ाया॥ रास होता था भगवत् के स्वरूप की माधुरी देखकर प्रेम में मग्न होगये और प्रेम के तरंग और गीत में प्राण भगवत् पर निछावर करके परम पद को गये॥

कथा भगवान की॥

भगवान नाम करिके भगवत् भक्त सोनेपत ग्राम में हुए जहां कहीं धर्म विमुखीन को सुनते तो भांति भांति के उपदेश करते और भागवत धर्म पर दृढ़ कर देते सो पड़री नामे गांव में योगियों की जमात रहती थी उनको अपनी सिद्धताकी परीक्षा दिखला कर भगवत् भक्त कर दिया बादशाह ने करामात समझने वास्ते विष पिलवा दिया भगवत् कृपा से कुछ न हुआ लज्जित होरहा दास भाव में भगवान की बड़ी प्रीति थी॥

राम राय की कथा॥

राम राय जी परम भक्त रूप सारस्वत ब्राह्मण थे ज्ञान वो वैराग्य वो

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

योग के बड़े ज्ञाता थे काम क्रोध लोभ मोह के त्यागी थे और साधु सेवा में ऐसी प्रीति थी कि साधु के दर्शन से कमल के भांति प्रफुल्लित होजाते थे एक बेर साधु समाज था वहां एक दुष्ट रामराय जी की निन्दा करने लगा भगवत् को उसका दण्ड उचित मालूम हुआ सो सभा में जहां उसके भाई बंधु सब बैठे थे उसकी पगड़ी उसके शिरसे ऐसी उछल के गिर पड़ी कि जैसे कोई धौल मारे लज्जित होकर सभा से निकल गया॥

श्रीरंग की कथा॥

श्रीरंग जी देवसागांव जयपुर के राज्य में है तहां रहते थे सरावगी के बेटे थे उनका सेवक मरकर यमदूत हुआ और उसी गांव में एक बनजारा टिका था उसके प्राण को निकाल ने को आया आगे की प्रीति बसरंग जी से मिला और वृत्तान्त कही श्रीरंग को चाह इस लीला के देखने को हुई जहां बनजारा टिका था तहां गये देखा कि उस यमदूत ने एक बैल को भड़का दिया और बनजारा पकड़ने को उठा वह दूत बैलके शिर पर जाबैठा और सींग से बंनजारे का पेटफाड़ दिया बड़ीपीड़ा से मारडाला श्रीरंग देखकर चकित हुए और उस दूत से उपाय पूछा कि जिस में यम दूतोंके हाथों से बचें उसने कहाकि बिना भगवत् भक्ति सबको ऐसी ही पीड़ा होती है और जो भगवत् भक्त हैं उनके पास स्वप्न में भी यमदूत नहीं आते श्रीरंग जी ने सरावगी मतअसार समझ कर उसी घड़ी भगवत् भक्ति अंगीकार करके दूत के बतलाने से श्रीअनन्तानन्द जो रामानन्द जी के चेले थे तिनके चेले होगये थोड़ेही काल में भगवत् स्वरूप की प्राप्ति होगई और जन्म मरण के भयसे छूटगये॥ एक प्रेत नित श्रीरंग जी के बेटे को दिखाई देता था इस कारण वह दुबला होगया जब यह वृत्तान्त सुना तब एक दिन लड़के की खाट पर सोरहे जब प्रेत आया तब रगेदलिया प्रेत भागा और कहा कि मैं इसी गांव का फलाना सुनारहूं परस्त्री गमन वो चोरी लुटाई कर्म करिके प्रेत होगया हूं सो अपने उद्धार केहेतु तुम्हारा द्वारा सेवता हूं श्रीरंग को दया आई भगवत् का चरणामृत उसको दिया कि उसके प्रभाव करिके देवता का स्वरूप पाय कर संगतिको फल प्राप्त हुआ॥

हठीनारायणकी कथा॥

हठीनारायण कृष्णदास जी के चेले रहने वाले पञ्जाब देश के परम भक्त भक्तवत् के हुए सर्वकाल भजन में वो संतोष युक्त रहते थे भांग पीने को रुचि थी बादशाह ने धतूरा मिलाकर पिलाया कुछ न हुआ तब मत द्वेष से विष पिलाया वो ऊपर से ऐसी वस्तु खिलाई वो पिलाई कि जिसमें विषभी दे और मरजाय परंतु कुछ काम न किया लज्जित होकर चरणों में गिरा अपराध क्षमा कराया जानेरहो कोई मनुष्य इस कथाको भांगपीने के लिये प्रमान न समझ ले भांग त्याज्य है मदिरा में शास्त्र ने

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

गिना है वरु भांग में एक औगुन मदिरा से भी अधिक है कि बुद्धि को हरिलेती है किसी बड़े के पीने से प्रमान नहीं होसक्ता है सूखे महादेव जी का दृष्टांत दिया करते हैं तो शिवजी हलाहल विष पान कर गये तो विषभी कोई पीवै वो शंकर स्वामी भट्टी में से औटा हुआ कांच पीगये और कोई भी तो औटा कांच उठा कर थोड़ा भी तो पिये सो बड़ों के आचरण से निषेद है सो ग्राह्य नहीं होसक्ता॥

चौपाई॥

समरथ कह नहिं दोष गुसाईं। रवि पावक सुरसरि की नाईं॥

और कई पुराणों के वचन युक्त हैं कि जो कोई किसी बड़े महात्माओं के दृष्टांत से वस्तु निषेद को विधि समझते हैं वो त्याज्यको ग्राह्य करते हैं वे नर्क गामी होते हैं हठी नारायण ने सिद्धहोने पीछे भांग पिया और सिद्ध महात्मा विधि निषेद के बंधन से बाहर हैं भगवत् रूप होजाते हैं तात्पर्य्य यह कि भांग पीना निषेद है॥

रैदास की कथा॥

रैदास जी परम भक्त भगवत् के हुए जिनकी बानी वो काव्य हृदय के अन्धकार और सन्देह के दूर करने को सूर्य के भांति है शास्त्र वो बेद के अनुसार कर्म करने में हंस के सदृश हुए अर्थात् निषेद को छोड़ कर सारको ग्रहण किया इसी शरीर में भगवत् धाम को पहुंचे और जिनके चरणों को बड़े २ बरण आश्रम वालों ने दण्डवत् किया पहिले जन्म में ब्रह्मचारी वो रामानन्द जी के चेले थे भिक्षा करिके गुरू सेवा वो भगवत् प्रसाद किया करते थे एक दिन पानी बरसता था सो एक बनियां कि जो बहुत दिन से कहता था परंतु उसकी भिक्षा कबहो न लेते थे उस दिन उसीके यहां से रसोई की सामग्री ले आये जब रामानन्द जी भोग लगाने लगे तो भगवत् ध्यान में न आये तब रामानन्द जी ने ब्रह्मचरी से बूझ के उस बनिये का वृत्तान्त बूझा बिचारा तो उसका लेन देन चमारों के साथ मालूम हुआ रामानन्द जीने ब्रह्मचारी को श्राप दिया कि तुझको चमार का जन्म मिले तो ब्रह्मचारी ने ब्राह्मण का तन छोड़ कर चमार के घर जन्म लिया परंतु भगवत् भक्ति वो गुरू के प्रताप से पहिले जन्म का ज्ञान बना रहा जन्मे तबहीं से माता का दूध पीना छोड़ दिया कि बिना गुरु मंत्र के उपदेश हुये खाना पीना निषेद है रामानन्द जी को भगवत् ने आकाश बानी से कहा कि ब्रह्मचारी को तुमने घोर दण्ड दिया उसपर दया उचित है कि रामानन्द जी उस आज्ञा से चमार के घर गये मंत्र उपदेश करके रैदास नामधरा और दूध पीने की आज्ञा दी जब रैदास जी कुछ सयाने हुये तो भगवत् भक्तों की सेवा करने लगे जो कुछ घरसे मिलता भगवत् भक्तों के आगे धर देते बापने उनको रिस करके घरसे

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

पिछवाड़े एक जगह रहने के वास्ते दे दी धन बहुत था परंतु एक दमड़ी भी न दी रैदास जी स्त्री समेत आनन्द से रहने लगे जूती बनाकर दिन खेपते जो कोई वैष्णव वो साधु देखते तो बिना दाम जोड़ी पेन्हाया करते फिर एक छप्पर डाल लिया और उसमें भगवत् मूर्त्ति बिराज मान करके सेवा करने लगे और आप उस छप्पर के आंगन और चौरे में बिना छाया पड़े रहते यद्यपि ऊपर दुःख दरिद्रता इत्यादि का था परंतु मन भगवत् के ध्यान में आनन्द रहता था भगवत् ने वह कंगाली भी दूर करना उचित समझ कर आप साधु के रूप से रैदास के घर आये रैदास ने बड़ी सेवा करके भोजन कराया और भगवत् रूप वह जाना उस साधु ने प्रसन्न होकर एक पारस पाषान रैदास जी को दिया और गुण वर्णन करके कहा कि बहुत यत्न से रखना रैदास जीने कहा कि मेरे किसी की कामना नहीं मेरा धन संपत्ति राम नाम है उस साधु नें जाना कि प्रभाव इस पारस का रैदास ने नहीं जाना इस हेतु रांपी को लगाकर सोने का कर दिया रैदास जीने मनमें समझा कि रांपी भी हाथ से गई बहुत कहा तब रैदास जी ने कहा कि छप्पर में रखदेव सो साधु छप्पर में उस पारस को रखकर चले गये तेरह महीने पीछे फिर आये रैदास जी का वृत्तान्त वैसाही देखा पूछा कि पारस क्या हुआ रैदास जी ने कहा कि जहां आप रख गये तहांही होगा मुझ को उस के हाथ लगाने से भय होता हैं भगवत् उसको लेकर चले गये एक दिन सेवा पूजा की पिटारी से पांच मुहर निकलीं रैदास जीको भगवत् सेवा से भी भय होने लगा भगवत् ने स्वप्ने में आज्ञा की कि यद्यपि तुमको कुछ लोभ नहीं है परन्तु अब जो कुछ हम देवें उसको अंगीकार करो तब रैदास जीने अंगीकार किया और एक धर्मशाला पक्का बनवाकर भगवत् भक्तोंको उसमें बसाया और फिर एक भगवत् मन्दिर तैयार करके भांति भांति के चन्दोए और झालर वो सुनहरी बन्दनवार वो द्वीवार गीरी वो छतबन्द इत्यादि से ऐसा सजा कि जो दर्शन करने वाले आते थे मन्दिर की शोभा वो भगवत् मूर्त्ति की छबि देखकर मोहिजाते थे पूजा प्रतिष्ठा सब ब्राह्मणों के हाथ से होती थी तिसके पीछे जहां रैदास जी आप रहते थे तहां एक स्थान दोमहला बनवाया और बड़ी प्रीति से भगवत् आराधन आरंभ किया बहुत से ब्राह्मणों ने मूर्खता के कारण से राजा के पास कठोर वचन मुखसे निकाल कर फिरियाद किया कि चमार जाति को भगवत् मूर्ति के पूजन का अधिकार किसी शास्त्र में नहीं लिखा रैदास निशंक भगवत् सेवा मूर्ति बिराजमान करके पूजन इत्यादि सब करता है उसको दण्ड देना चाहिये राजा ने रैदास जी को बुलाया और ऐसा प्रताप रैदास जीका राजा पर व्यापा कि एक दो बात कही और बिदा किया राजा की रानी का नाम

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

झाली था उसने जो प्रताप रैदास जीका सुना तो सेवक हुई ब्राह्मण लोग रानी के यहां रहते थे उन्होंने सिकी ओर कहने लगे किरानी की बुद्धि जाती रही राजा के पास सब समाचार कहा रानी नें रैदास को बुलाया और सब ब्राह्मण इकट्ठे हुए ब्राह्मण जातिकी बड़ाई वर्णन करते थे और रैदासजी का यह वचन था कि भगवत् को भक्ति प्यारी है जाति पर दृष्टि नहीं बहुत वाद विवाद भये पीछे यह बात स्थिर ठहरी कि भगवत् मूर्ति जो सिंहासन पर विराजमान है जिसके पास प्रसन्न होकर आजावै वही भगवत् को प्यारा है इस बात पर ब्राह्मणों ने तीन पहर पक्का बेद पढ़ा और मंत्र जप किया परन्तु कुछ न हुआ जब रैदास जी पर बात आई तो विनय किया कि महाराज अपने पतित पावन नाम को सच कीजिये और दो एक विष्णु पद कीर्त्तन किये पदका प्रथम पद यह है॥ बिलम्ब छांड़ि आइये किहौ बुलाय लीजिये और दूसरे पदका तुक यह है कि॥

चौपाई॥

देवाधि देव आयो तुम शरना। कृपा कीजिये जानि अनुपजना॥

भगवत् सुनतेही पदोंको सिंहासन पर से उठकर रैदासजी की गोद में आबैठे और सब विश्वास करिके आधीन हुए तिसके पीछे रानी झाली काशी से अपनी राजधानी में आई और यज्ञ करने का विचार किया रैदास जीको बड़ा विनय पत्र लिखकर भेजा रैदासजी चित्तौर में आये रानी बहुत आनंदित हुई बहुत रुपैया दान पुण्य किया ब्राह्मणों को शोच हुआ कि इस रानी का गुरू चमार है अच्छी बात है कि सूखी सामग्री लेकर रसोई तैयार करैं सो ऐसाही किया जब भोजन करने को बैठे तौ सबने दो जने के बीचमें रैदासजी को बैठा देखा विश्वास युक्त आधीन होकर चरणों में पड़े और लाखों मनुष्य चेले होगये और सबकें विश्वास दृढ़ करनेके हेतु अपने शरीरका खाल उतारके जनेऊ दिखाया और गुरू के शाप की बात सब कही सब का मोह दूर करके आप तन छोड़ कर परमधाम को गये जहां से फिर नहीं आता है॥

कथा गोपाल भट्ट की॥

गोपाल भट्ट ऐसे भगवत् भक्त हुए जो सारे संसार में उनकी साखी विख्यात है भक्तिका प्रताप जिनके ललाट से सूर्य्य के सदृश प्रकाशित था भक्तों की सभा को शोभित करनेवाले और श्री मद्भागवत् में किसी को जो संदेह होता तौ अपने सर्वज्ञता से उसके निवृती करने वाले हुए बांगड़ देशको भगवत् परायण वो भक्त कर दिया दास भाव से श्री राधा वल्लभ लाल के चरण रज के प्रेम में पूरण रहे नवधा भक्ति के उपदेश करन वाले और भगवत् भक्तों की कृपाके पात्र थे॥

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

दिवाकर की कथा ॥

करमचन्द जो कश्यपके सदृश थे उनके घरमें दिवाकरजी संसारी जीवों के हृदय के अंधकार दूर करने के हेतु दूसरे दिवाकर अर्थात् सूर्य हुए और बहुत से राजाओं को उपदेश करके भगवत् भक्ति में लगाया हरि भक्तों से ऐसे थे जैसे फल से लदी किसी वृक्ष की डाली भूमि पर लोटि जाती है और सबको वह फल मिलता है भोलाराम उनका शरणागत किया था श्री रघुनन्दन स्वामी के निर पेक्ष भक्त और सब के सिच और सबं पर बरा बर कृपा करने वाले हुए सीता पति अवध बिहारी महाराज के चरित्रों का कीर्त्तन वो सुमिरन किया करते थे ॥

खेमगोसाईं की कथा ॥

खेमगोसाईं बिख्यात वो नामी हैं कि राम दास अपने गुरू की कृपा से श्री रघुनन्दन स्वामी के अनन्य दास हुए इस लोक और पर लोक में सिवाय रघुनन्दन स्वामी के और किसी को कुछ नहीं जानते थे और न दोनों लोक के सुख दुख से कुछ कार्य्य वो सम्बन्ध था धनुष बाण के छाप जो दोनों भुजा पर धारण करते थे उनको देख देख करके बहुत आनन्द हुआ करते थे और परम सुख में मग्न रहा करते थे भक्तों में उत्तम पदवी में थे ॥

कल्यानसिंह की कथा ॥

कल्यानसिंह जी की भक्ति का पक्ष और उदारता अत्यंत हुई भक्ति पक्ष का संक्षेप वृत्तान्त यह है कि अपने भाई अनूपसिंह सहित श्री नन्द नंदन महाराज के जन्म उत्साह के दर्शन के हेतु नोनिरेश हरजहां उनका घर था तहां से श्री वृन्दावन को आते थे एक सरावगी दुष्ट कर्मी को देखा कि एक साधू कंगाल को दुख दे रहा है कल्यानसिंह जी ने उस साधु वैष्णव की पक्ष किया और उस सरावगी से बचाय लिया और उदारता का यह तात्पर्य्य कि धन सम्पत्ति देना तो एक थोड़ी बात है उनको प्राण देने से भी सोच न था और भगवत् ने दोनों बातें उनको देहान्त पर्य्यन्त निबाहीं पहिले जगन्नाथ स्वामी के चरणों में प्रीति रही अन्त में रघुनन्दन स्वामी के चरणों में प्रीति होगई जगन्नाथ पुरी में रहा करते थे रघुनन्दन स्वामी के स्नेह से दोनों लोक की स्पृहा दूरकरदी थी मनमें रूप और सिद्धा पर रघुनन्दन स्वामी वो जानकी महारानी का नाम रहता था ॥

राजा खेमाल की कथा ॥

राजा खेमाल जाति के राजपूत राठौर ऐसे परम भक्त हुए कि उनके कुलमें भक्ति अचल हो गई रामराय बेटे कुंवर किशोर पोतेकि उनका वर्णन इस भक्तमाल में अलग हो आया परम भक्त हुए कि राजा से भी अधिक हो गये राजाको भगवत् भक्तों में ऐसी प्रीति थी कि जिस प्रकार

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

चन्द्रमा को देख कर समुद्र तरंग लेता है इसी प्रकार भगवत् भक्त को देखकर आनंद होते थे भगवत् भजन में अत्यन्त प्रेम था गंगा जलके सदृश मन विमल मन वचन कर्म से श्रीरघुनन्दन स्वामी के दास थे सिवाय इस चरण कमल के दूसरा भरोसा और आसा न थी ॥

केशव की कथा ॥

केशवजी लटेरा पद कर्म विख्यात थे लटेरा दुर्बल को कहते हैं काम क्रोधादिक में दुर्बल थे परंतु भक्ति भाव में पुष्ट और मोटे थे डर सुरानन्दजी की संप्रदा में परम भक्त हुए जिह्वा पर नाम और मनमें भगवत् चरित्र रहता था जैसा प्रेम दास भाव भगवत् में किशोर जीका था ऐसाही उनके पुत्र को हुआ क्यों न होय कि जैसा वृक्ष बोया था वैसाही फल लगा भगवत् चरित्रों के कीर्तन में एकही से तैसेही उदारता और दयामें ॥

सोती की कथा ॥

सोती जी हरिभक्तों की सभा में वंदनीय वो साध्य विख्यात सूर्य्य के सदृश हुए भजन का प्रताप ऐसा था कि भक्ति और धर्म के ध्वजा थे श्री सीता पति अवध विहारी के चरित्रों में अनुक्षण मग्न रहा करते और भगवत् के दासभाव में मन को ऐसा दृढ़ किया था कि तनक दूसरी ओर चित्त की वृत्ति नहीं जातीथी और नरहरजी उनके गुरू के प्रतापसे ऐसीही भक्ति उनके बेटे वो पोते सब को भी हुई ॥

निष्ठा उन्नीसवीं ॥

जिसमें महिमा वात्सल्य वो नवभक्त इस निष्ठा के उपासकों की कथा वर्णन है ॥

श्रीकृष्ण स्वामी के चरण कमलों की इन्द्र धनुष रेखाको दण्डवत करके हरि अवतार को प्रणाम करता हूं कि गजके वास्ते वहरूप प्रगट करके आये और उसको ग्राहसे छुड़ाया वात्सल्य निष्ठा वह है कि अपने बल से भगवत् को खींचके उपासक के मनमें स्थिर कर देती है और ऐसा कदापि नहीं होता कि इस निष्ठाके अवलंब से उपासना करने वाले को भगवत् प्राप्त न होय कारण यह है कि भगवत् का प्राप्त होना मन के प्रेम पर निश्चय है सो इस निष्ठा से शीघ्र वो विना श्रम प्रीति उत्पन्न हो जाती है कि और किसी निष्ठा से ऐसी शीघ्र नहीं होती प्रगट है कि प्रीति सांची केवल पिता को अपने पुत्रोंके हेतु होती है और बेटा कैसाही रूप को बुद्धि हीन होय परन्तु पिता का कलेजे का टुकड़ा वो आंखों का प्रकाश है जो वहही प्रीति भगवत् में लगाई जावैगी तो क्यों नहीं शीघ्र तर भगवत् प्राप्त होगा सिवाय इसके बालकों के चरित्र ऐसे मनोहर हैं कि बरबस चित्त में बसि जाते हैं और बहुतेरों ने देखा होगा कि किसी का लड़का लीला और तोतली बातें करता है और सुन्दर भी है ॥ तोराही बेटोही

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

भी राह चलते उसकी लीला देखकर प्रसन्न होते हैं और कहलाते हैं और वह लड़का मनहीं समाजाता है तो वह पूर्ण ब्रह्म सच्चिदानन्द घन कि जिसपर सब सुन्दरताई वो लीला और दूसरे चरित्र बाल कों के समाप्त हैं इस निष्ठाके सहारे से आराधन किया जावै तो क्यौं नहीं शीघ्रमन में समायगा सिवाय इसके प्रीति सब वस्तु की किसी न किसी भयसे होती है और जब भय नहीं रहता तो प्रीति भी कमहोजाती है और बेटे की प्रीति आपसे आप मनके तरंग से होती है इस हेतु उसको दृढ़ता है इस रूप से निश्चय होगया कि जो इस निष्ठा के अवलम्ब से मन भगवत् में लगेगा तो कबहीं प्रीति की घटती न होगी और दिन दिन वह प्रीति बढ़कर भगवत् परायण कर देवैगी जहां रसभेद का वादविवाद लिखा है तहां नव रसके निश्चय करने वालोंने वात्सल्य निष्ठा को एक अंग करुणा रस लिखा है और भगवत् उपासकों ने जो उनका उत्तर दिया और निश्चय रसों की करी तो करुणा को एक अंग वात्सल्य का ठहराय के दृढ़ कर दिया सो दोनों के बचन पर जो दृष्टि की जाती है तो समझ भगवत् उपासकों की ठीक और युक्त है किस हेतु कि रस उसको कहते हैं कि जिस करके अधिक स्वाद विशेष करिके उस वस्तु का कि जिसको रस विख्यात किया गया है और किसी वस्तु में न होय जैसे वीररस उसको कहैंगे कि सब पदवी वीरता वो शूरता की जिस पर समाप्त होंगी इसी प्रकार यहां दया के विचार में मुख्य रस उसको कहना चाहिये कि जिस पर दया समाप्त हो सो विचार करके देखा जाता है तो दया वात्सल्य निष्ठा पर समाप्त है काहे से कि करुणा उसको कहते हैं कि दूसरे का दुःख देख के मन कोमल होजाय और मन से वो वचन से वो कर्म्म से उसके वास्ते उपाय करि जावै और वात्सल्य वह है कि प्रीति की अति झोंक से धैर्य्य छोड़ कर स्वाभाविक दया होवै और मन बचन कर्म्म एक बेर अनुस्मरण की झोक और खींच से सब एक ओर एक वृत्ति होजावै तो विचार करना चाहिये कि समाप्त होना दया का वात्सल्य पर हुआ कि करुणा रस पर और दोनों में करुणा की अधिक प्रतिष्ठा हुई कि वात्सल्य भी अबभली प्रकार समझ में आने के वास्ते एक दृष्टांत स्मरण हो आया सो लिखता हूं एक संकीर्ण गलीमें एक ओर से गायें आती हैं और दूसरी ओर से एक मनुष्य स्नान करके आता है और ऐसा शुद्ध वो पवित्र है कि किसी को स्पर्श नहीं करता संयोग वस किसी का एक लड़का दो तीन बरस का खेलरहा है जब वह गायें उस लड़के के निकट आई तो वह मनुष्य बड़ी दयासे पुकारा कि कोई जलदी से आकर इस लड़के को उठालेवै और आप अशुद्ध होजाने के भय से न उठाया थोड़ी दूर चला था कि उसी मनुष्य का बेटा भी उसी अवस्था का राहमें खेल रहा

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

घा और मिट्टी वो कीच में शरीर उसका अशुद्ध होरहा था वह गायें इस लड़के के भी निकट आनि पहुंची वह मनुष्य धैर्य्य छोड़ कर दौडा और कुछ विचार अपनी शुद्धता और लड़के की अशुद्धता का न किया तुरन्त उस लड़के को उठाकर अपने गले से लगा लिया इस दृष्टान्त से विचार वात्सल्य और करुणा रस में कर लेना चाहिये सो मुख्य रस वात्सल्य है और करुणा उसका एक अंग है यह उपासना श्री दशरथ नन्दन अवध बिहारी और श्री नन्दनन्दन वृन्दावन चन्द की प्रवर्त्त मान है और ऐसा अलौकिक भाव इस उपासना वालों का है कि वर्णन उसका नहीं हो सक्ता भगवत् को अपना पुत्र मानते हैं और उसी को पूर्णब्रह्म सच्चिदानन्द घन मुकुन्द जानते हैं कुछेक रीति इस उपासना की विष्णु स्वामी वो वल्लभाचार्य्य की कथा में लिखी गई और कोई कोई सामग्री आगे लिखी जायगी महिमा इस उपासना वो उपासकों की निगम वो आगम वो ब्रह्मा वो शिव भी नहीं कहि सक्ते इस मतिमन्द पामर पुंज को क्या सामर्थ्य कि जीभ हिलाय सके और सच है कि कोई किस प्रकार कहिसकै कि जो पूर्ण ब्रह्म अनेक जन्म तक योगियों के हजारों साधन करने पर भी मनमें नहीं आता सो उपासकों के वास्ते नररूप जन्मा और परम अनूप बाल चरित्र दिखाए और अब दिखाता है और आगे दिखावेगा आप उसी पूर्णब्रह्म की यह निष्ठा ऐसी प्यारी है कि अपने भक्तों के चित्त को दूसरी निष्ठाओं से फेर कर इस निष्ठा की ओर प्रीति युक्त लगा देता है कि इसका निश्चय भागवत् वो रामायण से अच्छा होता है अर्थात् नन्दरानी वो देवकी वो कौशिल्या वो वसुदेव को कई बेर अपनी ईश्वरता भगवत् ने दिखाई जब उनके चित्त की वृत्ति उस ओर लगी तो आप भगवत् ने उस ओर से उनके मनको फेर कर बाल चरित्रों की ओर लगा दिया और परम आनन्द दिया जो भगवत् की यह निष्ठा प्यारी न होती तो क्यों ऐसा करते और अब भी ऐसे भाव को पक्का कर देने के निमित्त अपने भक्तों को इस प्रकार के चरित्र दिखला देते हैं कि देखने से कथा बिट्ठलनाथ वो कृष्णदास वो कर्मा बाई इत्यादि के से मालूम होता है और थोड़े दिनो की बात है कि एक गोसाईं वल्लभ कुलके कि नाम उनका स्मरण नहीं है परम भक्त वात्सल्य रस के उपासक हुए एक बेर मनिहारी उनके घर की स्त्रियों को चूड़ी पेन्हाने के निमित्त उनके घर आई जब गोसाईं जी दाम देने लगे तो मनिहारी ने कहा कि मैंने सात लड़की वो बहू इत्यादि स्त्रियों को चूड़ी पेन्हाई हैं गोसाईं जीने उत्तर दिया कि मेरे घर में छः स्त्रियां बेटी और बहू समेत हैं इस वाद बिवाद में मनिहारी बिना दाम लिये चली गई रात को राधिका महारानी ने स्वप्न में गोसाईं जीको कहला भेजा कि क्या मैं तुम्हारी बहू नहीं जो मेरी चूड़ियों के दाम मनिहारी को

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

नहीं देते हैं। अब देखना चाहिये कि भगवत् कैसे मनोहर चरित्र करके अपने भक्तों के भाव को पक्का कर देते हैं सो यह वात्सल्य निष्ठा भगवत् के शीघ्र मिलने के हेतु सब निष्ठाओं का तत्व वो अभिप्राय वो परम सार है॥ ग्रन्थ के आरम्भ में लिखा गया कि रस चार सामग्री अर्थात् विभाव अनुभाव सात्विक व्यभिचारी से प्रगट होते हैं सो इस वात्सल्य रस में पहिली सामग्री के सामग्रियों में पूर्णब्रह्म परमात्मा अच्युत अनन्त सच्चिदानन्द घन श्री नन्द नन्दन महाराज के रघुनन्दन महाराज तीन बरष से सात बरष तक अवस्था वाले सुकुमार अंग तुतले वचन श्याम सुन्दर स्वरूप शिर पर छोटा सा मुकुट शरीर में महीन जरतारी का कुरता गोटे पट्टे से भरा हुआ कानों में झूमका और छोटे २ कुण्डल वो गोरोचन का तिलक भाल पर नाक में बुलाक कपोल पर डिठौना आखैं ढीठ और चञ्चल गले में कण्ठुला वो जन्तर वो बघनखा हाथों में कड़े वो पञ्चो चरण कमलों में घुंघुरू यह विषया लम्बन है और नंद यशोदा वो कौशिल्या महारानी इत्यादि आश्रया लम्बन और अत्यन्त चंचलता वो चपलता की कबहीं माता की गोद में हैं और कबहीं खिलौनों की ओर चित्त कबहीं पखेरुओं पर दृष्टि कबहीं भोजन पर सुत और कबहीं किसी वस्तु के लेने पर हठ कबहीं तोतली बाणी से कुछ पूछना और कबहीं पलंग को पकड़ कर खड़ा होना कबहीं माताकी उंगली पकड़ कर चलना सीखना कबहीं नाचना कबहीं आंगन में अपने सखाओं और भाइयों के साथ खेलना ऐसे ऐसे अनेक चरित्र॥ स्नान करांना शृंगार करना वो बाल चरित्र के खिलौना इत्यादि सजि रखना सब प्रकार के पदार्थ खिलाने के योग्य भोजन करांना प्यार करना लाड़ लड़ाना गोद में लेकर रंग रंग की सैल कराना आशिर्वाद देना और इसी प्रकार के अनेक साज वो सामा की चिन्तन सब सामग्रियां सामग्री पहिली अर्थात् विभाव में कि और सामग्री दूसरी अर्थात् अनु भाव की है॥ सामा तीसरी अर्थात् आठ प्रकार के सात्विक सब इस रस में प्रवर्तमान होते हैं वो तेतीसों व्यभिचारी अर्थात् सामग्री चौथी में से दस दस इस रस में प्राप्त होते हैं एक मनस्ताप दूसरी दुर्बलता तीसरी विबरण चौथी मन उचट जाना संसार के सब कामों से पांचवीं अदृढ़ता छठवीं जड़ता सातवीं दुखी हो जाना आठवीं उन्मत्तता नवीं मूर्च्छा दसवीं मृत्यु और इस रस का स्थाई भाव वह है कि चिन्ता की वृत्ति दोनों लोक की चिन्ता को छोड़ कर एकाग्र हो कर दिन रात अचल भगवत् के स्वरूप और प्रेम में दृढ़ हो जाय और किसी प्रकार किसी ओर न जाय॥ हे श्री नन्द नन्दन हे दीन वत्सल हे प्रण तारत भञ्जन हे पतित पावन हे दीन बंधु हे कृपा सिंधु महाराज आज तक जो निन्दा इस मन की विनय करि कै तो व्यर्थ जानि परता है किस वास्ते

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

कि उसी निन्दा से कबहीं कुछ प्राप्त न हुआ और न इस मन अभागे ने कुछ सुना और न कुछ माना जो उस कृपा और प्रसन्नता का कि जिस के प्रभाव करिके अजामिल और गज वो गनिका वो पशु पक्षी इत्यादि बिना कुछ साधन वो भजन एक क्षण में परम पद को पहुंच कर जन्म मरण के बंदी खाने से छूटि गये आश्रित हो कर आप के द्वार पर बिनय वो प्रार्थना किया करता तो आपके बिरद वो दया से कब मैं ऐसाही संसारी रहता और यह मन अभागा मेरे बशी भूत क्यों न होजाता सो अब उसी कृपा वो दया की आस करिके बिनय करता हूं कि जिस प्रकार से होने सकै ऐसी कृपा दृष्टि होय कि रूप अनूप आप का दिन रात अचल मेरी आंखों में बसा रहै॥

कवित्त॥

कबहूं शशि मांगत आर करैं कबहूं प्रति बिम्ब निहारि डरैं।
कबहूं करताल बजायके नाचत मातु सबे मन मोद भरैं॥
कबहूं रिस मोरि कहैं हठसों पुनि लेत वही जेहि लागि परैं।
अवधेश के बालक चारि सदा तुलसी मन मन्दिर में बिहरैं॥१॥
तनकी दुति श्याम सरोरुह लोचन कञ्जकी कोमल ताई हरैं।
अति सोहत धूमर धूरि भरैं छबि भूरि अनंग की दूरि धरैं॥
दमकैं दतियां दुति दामिनि ज्यों किलकै कलवाल बिनोद करैं।
अवधेश के बालक चारिमदा तुलसी मन मन्दिर में बिहरैं॥२॥
दन्त की पंगति कुन्दकली अधरा धर पल्लव खोलन की।
चपला चमकै घन बिज्जु जगै छबि मोतिन माल अमोलन की॥
घुंघुरारि लटैं लटकैं मुख ऊपर कुण्डल लोल कपोलन की।
न्योछावर प्राण करैं तुलसी बलि जाउं लला इन बोलन की॥३॥

दोहनी को समै जामन मोहन ललाजू की ललित लोनाई कबि बरने कहा कहे।
कबहूं किलकि धाय नन्दके निकट आय कर उचकाय मुख तोतरे बबा कहैं॥
ताके ब्रजरानी महा कौतुक सिरानी दीठ बानी मृदु सुनत बलैयालेउ मा दहैं।
ओट है गैया की ललैया बलगैया दैके यसुमति मैयासों कन्हैया जब ता कहैं॥४॥

कौशिल्या जी की कथा॥

कौशिल्या महारानी के भाग्य की बड़ाई और भक्ति भावका वर्णन कौन कर सक्ता है कि पूर्णब्रह्म सच्चिदानन्द घन जिसकी महिमा को वेद वो शास्त्र वर्णन करिके पार नहीं पाते सो जिस कौशिल्या के भक्ति के बस होकर परम मनोहर रूप धारन करिके प्रगट हुए और ऐसे चरित्र बिचित्र दिखलाए कि जिन को सुन कर महा २ पातकी भव सागर से पार होते हैं महाराजा धिराज दशरथ जी की कथा में वर्णन हुआ कि पहिले जन्म में दशरथ जी स्वायंभुमनु और कौशिल्या महारानी सत रूपा रहैं और उन को बरदान हुआ कि तुम्हारा पुत्र हूंगा उस समय सतरूपानि

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

यह भी मांगा कि हम को ज्ञान तुम्हारे स्वरूप का बना रहै भगवत् ने आज्ञा की कि माता का भाव और ज्ञान दोनों तुम को बना रहैगा सो वैसाही कौशिल्या जी को दोनों भाव बने रहे इस हेतु वात्सल्य की उपासना का आचार्य कौशिल्या जी को समझना चाहिये॥ एक समय कौशिल्या महारानी भगवत् को पालने में सुला कर आप कुल देवता के पूजन करने को गईं वो पूजा के समय भगवत् अर्थात् रामचन्द्र को देखा आश्चर्य मान कर वहां से भगवत् के सयन के स्थान में आईं तो वहां सोता देखा फिर पूजा के घर में गईं तो वहां भी भगवत् को देखा सो दो चार बेर के आने जाने में जो दोनों जगह भगवत् को देखा तो चिन्ता में होकर बिचार करने लगीं कि यह कौन कारण है भगवत् ने यह चिन्ता देखकर अपने स्वरूप और अपनी माया के दर्शन माता को कराये कि अनगिनत ब्रह्माण्ड हैं और अलग अलग प्रकार से सब ब्रह्माण्डों की रचना है और सब में श्री रघुनन्दन महाराज बिराजमान हैं परंतु भगवत् का रूप ब्रह्माण्डों की भांति अनेक प्रकार का नहीं सब जगह एकही प्रकार वो बराबर हैं ब्रह्मा शिव सिद्ध देवता असुर इत्यादि स्तुति करते हैं और एक कोने में वह माया कि जो सब ब्रह्माण्डों को बना कर फिर नाश कर देती है डर सहित खड़ी है कौशिल्या जी यह चरित्र देखकर डरीं और घनराय के चरण पकड़ लिया भगवत् ने हंसि कर बोध किया और बचन हुआ कि अब मेरी माया तुमको कबहीं न सतावैगी इस चरित्र से भगवत् शिक्षा करते हैं कि जिसको मेरा स्वरूप लाभ हुआ उसको मुझसे सिवाय और कौन भजने के योग्य बाकी है काहे से कि जिस देवता में जो ईश्वरता है सो सब मेरी दी हुई है और वह देवता हमारेही सम्बन्ध से पूज्य है फिर तो कौशिल्या जी इस प्रकार भगवत् स्वरूप के चिन्तवन और लौ लड़ाने में तत्पर हुईं कि जिसका वर्णन नहीं होसक्ता सो जब रघुनन्दन महाराज बन को चले गये तो स्वरूप भगवत् का ऐसा सन्मुख कौशिल्या जी के रहता था कि कबहीं बनका जाना मालूम न हुआ जब कोई स्मरण कराय देता था तब बनका जाना मालूम होता था फिर एक क्षण के पीछे वही दशा होजाती थी जब रघुनन्दन महाराज लंका जीतकर आये और कौशिल्या महारानी जैसे पहिले आरती भगवत् की किया करती थीं आरती करने लगीं तो यह मालूम न हुआ कि यह समय कौन साहै और यह शोच हुआ कि लड़के ने ऋषेश्वरों कासा रूप क्यों बनाया है और मेरी प्यारी बहूका रूप भी वैसाही बना लिया दुखित हुईं और उसी घड़ी जानकी महारानी को अपने साथ उठाले गईं और आभूषण इत्यादि से श्रृंगार कराया और जब भगवत् के राज सिंहासन पर बैठने की समाज वो धूम धामका आनन्द सारे संसार में हुआ तो

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

कौशिल्या महारानी को यह चिन्ता हुई कि राज तिलक के समय ऋषि-मुनि वो देवता वो असुर इत्यादि सब आवेंगे और मेरा लड़का और बहू परम सुकुमार और कोमल और मनो हर हैं ऐसा नहो कि रूप अनूप देख कर किसी की नज़र लग जावे सो सुमित्रा इत्यादि रानी तो मंगल वो आरती इत्यादि की तैआरी में रहीं और कौशिल्या महारानी को आरती के करने के समय तक तलास वो उपाय ऐसी ऐसी वस्तु को रही कि जिस में नज़र नलगे सो राज तिलक के समय आरती करने को आरंभ किया तो पहिले नज़र के बचाने वास्ते स्याही की बिन्दी अपने लड़के वो बहू के चेहरे पर लगालिया तब आरती करी और रूप को देखकर परम आनन्द में मग्न हो गईं उस समय के परम आनंद का समा भक्तों के हृदयमें बना है॥

श्री नन्दबाबा वो यशोदारानी की कथा॥

ये नव नन्द हैं—धरानन्द १ ध्रुवानन्द २ उपनन्द ३ अभयनन्द ४ सुनन्द ५ अभयानन्द ६ कर्मानन्द ७ धर्मानन्द ८ वल्लभानन्द ९॥ तिनमें धरानन्द जी के घर भगवत् का अवतार हुआ सो धरानंदजी वो यशोदारानी की यह कथा है यशोदा महारानी वो बाबा नंद जीके भाव की महिमा कौन कहि सक्ता है कौशिल्या महारानी का भाव वो इनका भाव एक हैं बार बराबर भी भेद नहीं जो कोई न्यून विशेष कहै तो कारण उपासना भाव के भेद को समझना चाहिये लीला चरित्रों का भेद अलबत्ता है अर्थात् श्रीराम अवतार में तो ऐसा चरित्र बहुत नहीं हुआ कि जिसको कौशिल्या जी से छिपाने का प्रयोजन पड़ै और श्रीकृष्ण अवतार में आरम्भही से सब चरित्र ऐसे हुए कि माता से छिपाना अवश्य पड़ै कारण इस प्रकार के चरित्रों का प्रकाशित और सबको मालूम है कि भगवत् का अवतार केवल जगत् उद्धार के हेतु होता है सो ऐसे चरित्र मनोहर किये कि सबका मन भगवत् की ओर लगि जाय और उन चरित्रों की खबर यशोदा माता और नंदबाबा को कबही नहीं हुई और जो कोई कारण संदेह का होगया तो यह समझा कि हमारा बालक भोला और सीधा सादा है उसने यह काम कदापि नहीं किया होगा सो जब आप गोपिकाओं का माखन चुराते और वे सब मनमोहन के रूप अनूप के देखने वास्ते उरहने के बहाने यशोदा महारानी के पास आतीं और फिरियाद करतीं तो यशोदा महारनी अपने पुत्र कौतुकीका अपराध कदापिन समझतीं वरु उनहीं को लजावती एक बेर रातको किसी कुंजमें आप और प्यारीजी विहार और रास बिलास करते थे जब दो चार घड़ीरात शेषरही तो कौतुकी महाराज चुपके २ अपने पलंग पर आके सोरहे और जल्दी में पीताम्बर छूट गया नीलाम्बर बदले में लाये थे उसीको ओढ़े शयन में थे प्रभातही यशोदा जीने जगाया तो

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

नीलाम्बर को देखकर यह जाना कि बलदेव जीका नीलाम्बर बदल गया और आपुस के परस्पर हंसी खेलमें नखोंके चिन्ह औ अंगपर झलक रहे थे तो उसको यह विचार किया कि काल्हइसी बनमें यह लड़का गया था कि बंदरों ने घेर लिया और उनके नखों का चिन्ह शरीर पर है और रात के जगने सें उनींदी आंखों को यह जाना कि नखों के लगने से बन्दरों के रात को नींद नहीं आई अतिप्यार दुलार करिके छाती से लगाया और रोने लगी और समझाया कि अब से ऐसे बनमें कदापि मत जाना और ब्राह्मणों को बुलाकर दान वो निछावर दिया वो यद्यपि घर हजारों दास दासी थे परंतु जोगऊनिज भगवत् के वास्ते नाम करिके थीं उनकी सेवा और उनके दूधको गरम करना वो जमाना और बिलोवन यशोदा जी निज अपने हाथ से किया करती थीं और जो माखन होता था उसको अलग अलग कई माटों में ऐसी जगह रखतीं कि जहां आते जाते भगवत् कीदृष्टि पड़े अभिप्राय यह था कि किसी प्रकार यह लड़का सुख से मांग कर अथवा छिपा के कुछ माखन खावै कि शरीर से पुष्ट हो ब्राह्मण फकीर कुछ जानने वाला जो कहीं सुनतीं तो उस को बड़े निहोरे और चाह से बुलातीं और धन द्रव्य वस्त्र को मन मानी देकर इस बात का जंत्र और गंडा बनवाया करतीं कि लड़का सुकुमार है बुरी भली जगह समय वो बे समय फिरता है किसी की नजर न लग जावै और अच्छे प्रकार भोजन किया करै ऐसे २ चरित्र असंख्य हैं कि जो कोटान कोट जन्म शेष और सारदा का प्राण तबभी वर्णन न कर सकूं और किस प्रकार वर्णन होसकै कि जो मनुष्य महा पापी और पतित उस भाव और चरित्र यशोदा माताके को स्मरण कर लेता है उसकी महिमा किसी से नहीं कही जाती और तरन तारन हो जाता है जो परम आनंद यशोदा माता को लाभ ब्रह्मा सो न शिव को न लक्ष्मी को और किसी को तो क्या गिनती है कि भगवत् इस बात का साक्षी है कि एक सिखायन भगवत् का इस कथा में लिखना उचित समझा और वह यह है कि जब यशोदा जीने कई बातें और धूम धाम के करने के कारण से उस ढीठ वो धूम करने वाले को ऊखल में बांधना विचार किया तो यह बात सुन कर सब गोपिका प्रसन्न हुईं कि आज सब लंगराई का बदला होगा और अपने अपने घर से रसरी लेकर दौड़ीं और निज कामना यह थी कि इसी बहाने से उस परम सुन्दर को देखि आवें जब यशोदा जो बांधने लगीं तो सब रस्सी दो अंगुल घट जाती रही यहां तक हुआ कि किसी गोपिका के घर रसरी न रही और भगवत् न बंधे तब तो यशोदा जीको बड़ी लज्जा वो खिन्न गात्र वो परिश्रम हुआ तब कृपा सिंधु तुरन्त उस रस्सी में बंधि गये इस चरित्र में यह शिक्षा है कि मेरे बंधि जाने में केवल दो अंगुल का बीच है एक अंगुल का तो भक्त

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

की ओर से अर्थात् परिश्रम वो उपाय के शोच का और दूसरा एक अंगुल का मेरी ओर से अर्थात् करुणा वो दयालुता का सो जिस समय भक्त की ओर से परिश्रम सहित उपाय होय और उसके कारण से मैंने दया की किवा तो तुरन्त बंधि जाताहूं अर्थात् ढूंढ़ने वाले को मिल जाताहूं ॥

विट्ठल नाथ की कथा ॥

विट्ठल नाथ गेसाईं वल्लभाचार्य के बेटे जिनकी कथा धर्म्म प्रकाशक निष्ठा में लिखी गई ऐसे परम भक्त वात्सल्य निष्ठा के हुए कि जो सुख वात्सल्य का नंदबाबा को हुआ था सोई, भगवत् ने कृपा करिके उन को दिया विट्ठल नाथ जीकी रीति थी की रात दिन भगवत् आराधन वो लाड़ लड़ाने और खिलाने और राग भोग की तैयारी और सेवा में रहते थे प्रभातही भगवत् को जगाना और मुखार बिन्द धोना कुछ भोजन कराना फिर स्नान कराना आभषण वो पोशाक पहिराना शृंगार कराना खिलौना अनेक प्रकार का ढूंढ़ के ले आना सेज बिछाना शयन कराना और दूसरे सब बालचरित्र में तत्पर रहना और यह आराधन केवल एक बेर का न था सात बेर करते थे तात्पर्य्य यह कि सेवा और आराधन के बिना चित्त की वृत्ति दूसरी ओर नहीं जाती थी जैसा कुछ ब्रह्मांड गोकुल और नन्दराय जी का समाज था वैसाही सोभा का सामान अपने सेवकों के हृदय में प्रगट कर दिया था इस में सन्देह नहीं विट्ठलनाथ जीने कलियुग को द्वापर कर दिया यद्यपि ध्यान में भगवत् के बाल चरित्रों का दर्शन साक्षात् दर्शनों के बराबर होता था परन्तु एक बेर चाहना हुई कि साक्षात् भगवत् के बाल चरित्र देखें भगवत् ने उन का मनोर्थ पूर्ण करना बहुत उचित समझ कर आज्ञा किया कि हम अपने आवेश अवतार से अपने बाल चरित्र दिखावें गे सो जब गिरधर जी बड़े पुत्र उत्पन्न हुए तो उनके शरीर में भगवत् की कला ने प्रकाश किया और बाल चरित्र विट्ठलनाथ जी को दिखलाये जब गिरधर जी पांच बरस की अवस्था अधिक हुए तो वही कला गिरधरजी से अलग होकर दूसरे पुत्र के शरीर में आय गई इसी प्रकार सात पुत्र हुए और सब में भगवत् ने अपनी कला का प्रवेश किया और बाल चरित्र दिखाया एक बेर भगवत् बंदर को देख कर डरे और दौड़ कर विट्ठलनाथजी की गोदमें आय छिपे उस घड़ी विट्ठलनाथ जी को भगवत् के ईश्वरता का ध्यान था प्रेम से गोद बैठा कर प्यार कर के बोले कि जिस घड़ी लंकापर चढ़े और असंख्य बन्दर काल के सदृश बिकराल साथ में थे उस घड़ी तो कबहीं न डरे अब इस छोटे एक बन्दर से किस हेतु डरे हैं भगवत् ने कहा कि जो तुम्हारे चित्त की वृत्ति मेरे ईश्वरता की ओर लगी है तो बाल चरित्र के उपासना का क्या प्रयोजन है और जो बाल चरित्र की उपासना निश्चय है तो उन चरित्रों का कारण

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

पड़ना कुछ प्रयोजन नहीं मेरे चरित्र और मेरे स्वरूप भक्त वत्सल वो कृपालुता करिके भक्तों की चाहना के अनुकूल होते हैं नहीं तो इन बातों से अलग और सब माया के गुणों से परे हैं बिट्ठलनाथ जी इस भगवत् की कृपा से अति आनन्द को प्राप्त हुए साहो पुत्रों का नाम वल्लभाचार्य्य जी के परंपरा में लिखा हुआ है सब आवेश अवतार हुए सात गादी उनके नाम से अब तक गोकुल में विराजमान हैं और विख्यात हैं इस संसार समुद्र से पार उतारने को मानों सात जहाज हैं स्वामी वल्लभाचार्य्य और बिट्ठलनाथ और उनके पुत्रों की विराजमान की हुई सात मूर्त्ति थीं तिन में से एक मूर्त्ति श्रीनाथ महाराज की उदय पुर के राना की चाह और प्रार्थना वो विनय से आलमगीर बादशाह जिस समय था तब राना के राज में सैर करने को पधारे और उदयपुर से बारह कोश उत्तर ओर विराजमान हैं और नाथ द्वारा सारे संसार में प्रसिद्ध और विख्यात वो अब तक आप श्रीनाथजी वहां पथिकों की भांति शोभित हैं निज अपने रहने के वास्ते कोई मंदिर नहीं बनवाया गोसाईं लोग वो पुजारी लोगों के वास्ते बड़ी बड़ी भारी इमारते तैयार होगई हैं और बिट्ठलनाथ जी के वंशमें से वहां के अधिकारी वो गोसाईं हैं और इसी प्रकार दूसरी मूर्त्ति गोकुल चन्द्रमा नाम आलमगीरही के समय में जयपुर का राजा ले गया वह मूर्त्ति भी अब तक जयपुर में है और गुरद्वारा भी बड़ाभारी बिट्ठलनाथ के वंश में से वहां पुजारी वो गोसाईं हैं॥

कर्म्माबाई की कथा॥

कर्म्माबाई परम भक्त वात्सल्य उपासक हुई रीति है कि बालक छोटे प्रभात ही उठते हैं और खिचड़ी अथवा रोटी खाने को मांगा करते हैं और माको लड़के के जगने के पहिले से चिन्ता होती है सो कर्माबाई को उसी भाव से पहिले चिन्ता भगवत् के खिचड़ी तैयार करने की होती थी और बिना न्हाये और क्रिया आदिक के किये थोड़ी सी खिचड़ी छोटीसी कुल्हड़ी में अंगारों पर रख दिया करती और जब वह तैयार होजाया करती तो अत्यन्त प्यार वो प्रीति से भगवत् को भोग लगाया करती वो जगन्नाथराय स्वामी पुरुषोत्तम पुरी से आयकर और अति प्रसन्न होकर भोजन किया करते एकवेर कोई साधु आगया वह आचार पूर्वक भोगलगाने को इच्छा करगया लाचार कर्म्माबाई आचार पूर्वक भोगलगाने लगी अबदेरी भोजन में भगवत् के होने लगी एक दिन कर्माबाई जीके गोद में बैठे खिचरी खाय रहे थे कि पुरुषोत्तम पुरी में राजभोगकी तैयारी हुई और बिना हाथ मुह धोये वहां पहुंचे जब पंडोंने भगवत् के हाथ और मुखसे खिचड़ी लगी देखी तो चकित हुए और बिनय करिके पूछा तो आज्ञा हुई कि कर्माबाई हमको प्रभातही खिचड़ी भोगलगाया करती थी और हम उसके

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

प्रीति के वश होकर भोजन करने जाया करते थे अब एक साधू ने उस बाईको आचार क्रिया की शिक्षा करदी है इस कारण विलंब होजाता है सो उस साधु को आज्ञादेव कि कर्माबाई को पहिले जिस प्रकार से करती रही तैसेही करने को शिक्षा दे आवैं पुजारियों ने उस साधु को ढूंढ़कर कर्माबाई जी के घर भेजा भगवत् आज्ञा की शिक्षा दे आया कर्मा बाई जीने कि उस क्रिया आचार को बड़ी बलाय समझ रक्खा था इस हेतु कि मेरा लड़का सुकुमार और थोड़ा खानेवाला है सो दोपहर तक भूखा रहने लगा जब पहिली रीति की शिक्षा पाई तो ऐसी प्रसन्न हुई कि अंगमें न समाई अब तक जो जगन्नाथरायजी को सब भोगों से पहिले खिचड़ी का भोग कर्माबाई नामसे लगता है तो इसके दो कारण समझ में आते हैं एक यह कि गीताजी में भगवत् का बचनहै कि जो कोई जिस भाव से भरता है सो उसी भाव को प्राप्त होता है सो इस बचन के प्रमाण से कर्माबाई जी को यशोदा महारानी की पदवी मिली काहे से कि उनको मरने के समय अपने वात्सल्य भाव में दृढ़ निष्ठा थी और उसी के अनुसार कर्माबाई जी अबतक भगवत् को खिचड़ी भोग लगाती हैं दूसरी यह कि भगवत् अपने भक्तों को शिक्षा करते हैं कि मेरी प्रीति और वात्सल्य की यह पदवी है कि कर्माबाई जी की खिचड़ी का स्वाद अबतक मेरी जीभ से नहीं मिटा उपासक लोग और प्रेमी लोग वो रसिक लोगों को मालूम रहै कि इसमें संदेह नहीं जो कर्माबाई आपआकर खिचड़ी भोग लगाती है किस हेतु कि हजारों प्रकार के भोजन भगवत् के वास्ते पुरुषोत्तम पुरी में तैयार होते हैं परंतु जो स्वाद वो मिठाई कर्माबाई जी की खिचड़ी में है इस प्रकार और किसी भोजन में नहीं॥

कृष्ण दास की कथा॥

कृष्णदास जी वात्सल्य निष्ठा में ऐसे परम भक्त हुए कि श्री गोवर्द्धन धारी व्रज भूषण महाराजने अपने नित्य परम आनन्द में मिला लिया श्री वल्लभा चार्य गुरूके वचन पर ऐसे आरूढ़ हुए कि आप भजन वो सेवा के स्वरूप होगये और उनका काव्य दूषण रहित ऐसा था कि पण्डित और भक्त सब कोई जिसको धन्य कहिकर समझ के दण्डवत् करते थे और अब तक विमुखों को राह धराने वाला है व्रज के रज को अपने इष्टदेव के सदृश जाना वो सदा भगवत् भक्तों के सत्संग में रहे एक बेर शृंगार की सामा के खरीदने वास्ते दिल्ली में आये जलेबी विमल देखकर चित्त में आया कि जो नाथ जीके वास्ते यह जलेबी भेजी जावे तो आंगन में खाते फिरते हुए और बन्दर वो जानवरों को खिलाते हुए बहुत प्रसन्न होंगे और यह भी जानेंगे कि हमारे बाबा ने हमारे वास्ते दिल्ली की मिठाई भेजी है और अपने सखाओं को खिलावेंगे बस उस ध्यान के स्वरूप के चिन्तवन

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

में मग्न होकर उन जलेबियों का भोग श्री नाथ जी को लगाया और वह ऐसा अंगीकार हुआ कि थाल जलेबियों का उठाके दूकान से कृष्णदास जीके आगे आय गये कि उसका प्रसाद अपने सेवकों को दिया कोई कोई ने तो न लिया और यह समझा कि पुजारी की बुद्धी में भेद आय गया है न जानें यह जलेबी किस आचार से बनी हैं और कोई कोई ने लेकर महा प्रसाद बिचार किया और कृपा वो आचार के वास्ते यह समझा कि बड़ों के आचरण में पकड़ करना न चाहिये उनकी आज्ञा को शिर पर रखना उचित है वहां से आगे चले एक बार सुखी को नाचते देखकर प्रेम में मग्न होगये कि इस चन्द्र सुखी का नाच नाथ जी को दिखाना चाहिये और अपने पास बुलाकर कहा कि हमारा लड़का नाच राग का बड़ा रसिया है उसके सामने नाचने को चल उसने मंजूर किया सो साथ लेकर आये और गोवर्द्धन जीमें मानसी गंगा स्नान करोकर गहने वो वस्त्र चमक के पेन्हाये और अतर पान सुरमा इत्यादि से संवारि के मन्दिर में लेगये बैठा बेश्या श्री नाथ जी का स्वरूप देखकर प्रेम के मदमें मतवारी होगई और मन क्रम बचन से भगवत् की होकर देखने और दिखलाने के रसमें बेसुध बुध होगई कृष्णदास जी ने पूछा कि हमारे साहिब जादे को देखा बेश्या ने उत्तर दिया कि देखा और मेरे मन वो नैनों में समागया फिर उसने नाचना गाना प्रारंभ किया और ऐसी ऐसी भाव अपने मुसकान वो चितवन वो बतलाने इत्यादि को बनाई और दिखलाई कि उस परम विश्वंभर को अपने रूप और नाच और राग और भाव के वस में कर लिया फिर तद्राकार रूप होकर और तनको छोड़ कर नित्य बिहार में जा मिली भगवत् भक्तों को करोड़ों दण्डवत् हैं कि एक छिन में परम पातकी और अधर्मी को कि जिन्हों ने कबहीं नाम तक मुख से न उच्चारण कियर था उसको उस पदवी को पहुंचाय देते हैं कि आप वह अनन्त ब्रह्माण्डों का उत्पन्न करने वाला हो जाता है कृष्णदास जीने प्रेम रस राम ग्रंथ बनाया कि उसको आप श्री नाथ जीने अंगीकार किया और सब भक्तों को उसमें प्रेम वो प्रमाण है मिलनेके समय सूरदास जी ने कृष्ण-दास जीसें कहा कि कोई पद अपनी बनाई ऐसी पढ़ो कि जिसमें मेरे बनाये पदों का भाव न होय कृष्ण दास जीने दस पांच पद सुनाये परन्तु सूरदास जीने सब में अपने बनाये हुए भाव को ठहराया वो पद पढ़ दिया कृष्ण दास जीने कहा कि तुम्हारे कहने अनुसार पद कल सुनावेंगे और चिंता में हुए वो श्री नाथ जी महाराज परम कृपालु ने जो चिन्ता अपने भक्त की देखी तो आप एक पद बनाय के उनके तकिया के नीचे रख दिया कृष्ण दास जीने जो प्रभात को उठ कर देखा तो भगवत् कृपासे आनन्द हुए और सूरदास जीको वह पद सुनाया सो सूरदास

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

जीभी पर
की है कि
बुधि हो
आवत बने
मालूम रहै
जीके चेले हैं
स्नान के नि
किया कि
न माना तो
लाया कृष्ण
पांव के कं
मिले रसि
कर मरनेका
कृष्णदास जी
कृष्णदास जी
से यह बात
कि इस घड़ी
है उस के ढूंढ
स्थान में साठे
आभूषण वो
विट्ठलेनाथ जी
और सब को

गो. सांई गो
और सब गुणों
श्री गिरधर
चरणों को सब
संसारियों के
बड़ा धनवान
वास्ते ले आया
किस वस्तु में
कहा कि तुम
होती तो हो
लगा दिया
कवउत्पन्न

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

विचार में बेसुध और विह्वल होजाते कोई भगवत् भक्त बज को जाने लगा उसको वह कपड़ा दे करके बड़ी आधीनताई से बिनय किया कि इस कपड़े का समाचार गोसाईं जी को न पहुंचे काहे से कि उनकी दासियों की दासी के योग्य भी नहीं है भंडार में डाल देना वह आदमी आया भंडारी को दे दिया भंडारी ने बेमर्य्याद से कपड़ों के नीचे डाल दिया श्रीनाथजी को कि वह रजाई भेजी हुई नंद स्वरूप अपने बाबा की तोशे खाने में पहुंचने पर भी पाई तो जाड़े से कांपने लगे गोसाईं जीने लिहाफ और रजाई जरबफ़ और किमखाब इत्यादि की उढ़ाई परंतु जाड़ा न गया फिर दुशाले वो रूमाल इत्यादि उढ़ाये तब भी जाड़ा वैसाही रहा आग की अंगीठी लाये दरवाजे सब बंद कर दिये परंतु क्या बात कि जाड़ा तनक भी हटै गोसाईं जी ने विचार करके भंडारी और कारबारियों से कहा कि भाई यह प्रीत नहीं किसी की प्रीति है सो कहो किस किस भक्त ने क्या क्या जड़ावर भेजी है उन लोगों ने जिस जिस राजा और उमराव और दूसरे लोगों का भेजा जड़ावर था सो बिनय किया और उढ़ाया गया कुछ कार्य्य सिद्ध न हुआ तब भंडारी को स्मरण हुआ और गोसाईं जीसे वर्णन किया कि तिपुर दास कंगाल होगया है उसने एक थान बहुत मोटा भेजा है वह भगवत् की पोशाक के बांधने वास्ते भंडार में रक्खा है गोसाईं जी ने कहा कि शीघ्र ले आओ सो लाया और उसका चोलनासा तैयार करके पहिनाया कि तुरन्त जाड़ा छूटा गया और हठ भी छूटा तिलककार भक्तमाल शिक्षा कराते हैं कि इस प्रीति और भक्त वत्सलता की ओर विचार करके मन लगाना चाहिये सो संत करिके हैं जो इस भगवत् कृपालुता को विचार करके और पढ़ सुनके जो मन अभागा भगवत् में न लगै तो निस्संदेह पत्थर से भी अति कठोर है वह वज्र समझना चाहिये॥

निष्ठा बीसवीं॥

जिसमें महिमा सोहार्द वो वृत्तान्त छ: भक्त इस निष्ठा के उपासकों का वर्णन है॥

श्रीकृष्ण स्वामी के चरण कमलों की अष्ट कोण रेखा को दण्डवत् करके कल्की अवतार कि जिसको निष्कलंक कहते हैं प्रणाम करता हूं और वह अवतार कलियुग के अन्त समय सम्भल देश में धारण करेंगे और नाम कलियुग का वो पापों का पुंज संसार से उठाय देंगे प्रत्यक्ष है कि जितने सम्बन्ध संसार में प्रवर्त्त मान हैं सो नव प्रकार के सम्बन्ध से उत्पन्न होते हैं—एक शेष शेषी १ अंश अंशी २ शरीर शरीरी ३ पति पत्नी ४ पूज्य पूजक ५ सेव्य सेवक ६ रक्ष रक्षक ७ जनक जन्य ८ गुरु

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

जीभी परम भक्त थे जानि गये और कहा कि यह करतूत तुम्हारे कौतुकी की है कि अपने बाबा की हिमायत की और दोनों भगवत् प्रेम में वे सुधि बुधि हो गये॥ पहिला तुक भगवत् के बनाये हुए पदका यह है॥ आवत बने कान्ह गोपबालक संग बच्छ की खुर रेनु छुरित अलकावली॥ मालूम रहैकि कृष्णदास जी और सूरदास जी दोनों गुरुभाई बल्लभाचार्य जीके चेले हैं कृष्णदास जी नित्य मथुरा जीसे विश्रान्त घाट का जल भगवत् स्नान के निमित्त ले आया करते थे गोबर्द्धन जीसे नव कोश है भगवत् ने मना किया कि इतने परिश्रमका कुछ प्रयोजन नहीं परंतु जब कृष्णदास जीने न माना तो श्री नाथ जीने अपने शिर में चिन्ह लेआने कलश जल का दिखलाया कृष्णदास जी लाचारहो कर कूपके जलसे स्नान कराने लगे एकदिन पांव के कंपनेसे कूप में गिरपड़े और भगवत् के नित्यलीला विहार में जाय मिले रसिक लोगों को एक तो दुख उन के बियोग का दूसरे कुए में गिर कर मरनेका हुआ श्रीनाथ जी महाराज उस निन्दा को न सहि सके कृष्णदास जीको नित्य विहार में मिलनेकी सब को परिक्षादी यह कि कृष्णदास जी एक ग्वाल को गोबर्द्धन जीके निकट मिले और उस ग्वाल से यह बात कहा कि गोसाईं विट्ठलनाथ जीसे दंडवत् करकेबिनय करना कि इस घड़ी वह कौतुकी और ढीठ गोबर्द्धन की ओर अकेला चला गया है उस के ढूंढने को जाता हूं इस हेतु आय नहीं सक्ता और मेरे शयन स्थान में साठे हजार रुपैया गड़ा है तुम उस को निकलवाकर आधे का आभूषण वो शृंगार श्रीनाथ जीका और आधा साधु सेवा में लगा देव विट्ठलनाथ जीने जो कहने के पते पर ढूंढ़ा तो उतनाही रुपया निकला और सब को विश्वास हुआ॥

गोकुल नाथ की कथा॥

गोसाईं गोकुल नाथ जी विट्ठलनाथ के पुत्र वल्लभाचार्य के पोते भक्ति और सब गुणों के समुद्र वो बुद्धि मान वो सुन्दर धीर सहिष्णु मितभाषी श्री गिरधर महाराज के भजन में दृढ़ हुए भक्ति के प्रताप से जिन के चरणों को सब राजा दंडवत् करते थे भीतर बाहर एक भांति और मन सब संसारियों के लाभ के हेतु सावधान रहता था उन की सेवा में एक कोई बड़ा धनवान सेवक होने के वास्ते आया और लाखों रुपैया भेट करने के वास्ते ले आया गोसाईं जीने उस से पूछा कि तुम्हारी प्रीति हृदय की किस वस्तु में है उस ने उत्तर दिया कि किसी वस्तु में नहीं गोसाईं जीने कहा कि तुम किसी और गुरू को ढूंढ़ो जो तुम को किसी और प्रीति होती तो हो सक्ता कि उस ओर से मन को हटा कर भगवत् की ओर लगा दिया जाता और जब कि स्नेह का बीज ही नहीं तो भक्तिका वृक्ष कबउत्पन्न होगासो सत्य है कि जो मन स्नेह वो चाह रहित हैं सो तीक्ष्ण

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

पत्थर के सदृश है ॥ कान्हाअंगी सदा नाथ जीके मन्दिर में झाड़ू देने वास्ते आया करता था और रूप अनूप भगवत् का दरशन करके उस के रस और प्रेम में मग्न रहता था गोसाईं जीने सब के नज़र का पड़ना श्रीनाथ जी पर अच्छा नहीं जान कर एक आवरण की दीवार खिंचवाई और कान्हा को भगवत् के दरशन होने में विक्षेप पड़ा भगवत् भक्त वत्सलको उस का दरशन बन्द होना पसंद न हुआ और रातको स्वप्न में उस कान्हाको आज्ञा दी कि गोसाईं गोकुल नाथ जीसे विनय कर देना कि नई दीवार गिरवाय दे हमारे दूर तक के अवलोकन में बाधा करती है कान्हा ने मन में विचारा कि गोसाईं तक पहुंचने की हमको कहां गति है जो जाता हूं तो द्वार पाल ढिठाई समझकर पीटेंगे लालजी महाराज बिन प्रयोजन मुझ को प्रेरणा करतेहैं यह समझ कर चुप होरहा श्री नाथ जी अहा राज ने तीन दिन तक बराबर उसी आज्ञा को किया लाचार होकर गया डेवड़ी दारों से कहा किसी ने गोसांईं जीसे न कहा परंतु किसी और आदमीने बात्तों बात होतेमें जनाय दिया गोसाईं जीने उसी घड़ी बुलवाया और उसके बिनय के अनुसार एकांत में पूछा कान्हा ने भगवत् का संदेस सुनाया और यह भी कहा कि तीन दिन से बरा बर दिढ़ाय के आज्ञा है गोसाईं जीने पूछा किन्यामेरा नाम धरकर नाथ जीने आज्ञा किया है उत्तर दिया कि आपही का नाम लेकर कहाहै कि दीवार गिरवायदें सो गोसाईं जी को भी कुछ इस बातकी इंगित मालूम हुई थी बात कान्हा की ठीक समझ कर बेसुधि हो गये और कान्हा को दौड़ कर छाती से लगालिया और भगवत् आज्ञा को पालन करी ॥

गुंजामालीकी कथा ॥

गुंजामाली नाम बिख्यात होने का कारण यह है कि गुंजा जो घुंघची उस की माला बहुत पहिरते थे इस हेतु कि व्रज भूषन महाराज को उस की माला प्यारी है इसी हेतु गुंजा माली नाम बिख्यात हुआ नाम का अर्थ यह कि गुंजा की माला वाला लाहौरके रहने वाले थे बेटा उन का मर गया बहूसे कहा कि धन संपत्ति घर बार सब तेरा है और गोपाल जी महाराज मालिक और स्वामी हैं जो तुझ को इच्छा हो सो लेकर भगवत् भजन किया कर सो वह बहू उन की भगवत् भक्त थी उसने कहा कि मुझको कुछ चाहना नहीं गोपाल जी महाराज की मूर्त्ति सेवाके हेतु मुझ को देव और भगवत् सेवा के हेतु अति बिनय वो प्रार्थना करती भई गुंजामालीजी ने भगवत् सेवा तोउस बहू को सौंपी और माल असबाब स्त्री को देकर आप श्री वृन्दा बन आये और व्रज वल्लभ महाराज के भजन कीर्तन में लगे और बहू वह बड़ भागिनी सेवा करने लगी ऐसी भगवत् सेवा में लौलीन हुई कि कोई घड़ी भजन वो सेवा बिना व्यतिरिक्त न जाय

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

और जहां भगवत् मूर्ति बिराजमान थी तहां दूसरों के लड़के उस बह्न की चाहना और भावना से खेला करते थे एक दिन ईंटों की धूल उन लड़कों ने भगवत् के ऊपर डाल दी उस बह्न ने उनपर बहुत रिसकी और आना उनका बन्दकर दिया जब भोजन तैयार करके भोग धरा तो भगवत् ने भोजन न किया और अनमने होकर कहा कि हमारे सखाओं को आने से मनाकर दिया हम तेरी रोटी भी नहीं खाते बह्नजी ने बहुत मनाया दुलराया परन्तु एक न सुनी तब तो रिस करिके कहा कि हमारी क्या बिगड़ती है तुम्हारीही पोशाक बिगड़ती है सो मैं जितनी धूलमिट्टी करोगे प्रभात को धुलवाओंगी अब भोजन करलेव भगवत् बिना अपने सखाओंके राजी न हुए लाचार उन लड़कों को मिठाई देने को कहकर फुसला कर ले आई तब भगवत् ने भोजन किया धन्य है भगवत् की कृपालुता वो दयालुता कि अपने भक्तों की प्रीति का ऐसा निबाह करते हैं॥

गिरधर की कथा॥

गिरधर जी महाराज बेटे बिट्ठल नाथ जी के और पोते बल्लभा चार्य्य जी के कल्पवृक्ष के सदृश हुए बरु कल्पवृक्ष से भी अधिक हुए क्यों कि कल्पवृक्ष तो केवल संसारिक पदार्थ देता है लोभी कामना करने से और गिरधर महाराज अर्थ धर्म काम मोक्ष और भगवत् भक्ति बिना चाहना देने वाले हुए सब शास्त्रों का सार और वेद का मुख्य तात्पर्य्य जो भगवत् ज्ञान है उसको अच्छे प्रकार समझा और ब्रजराज कुंवर महाराज की सेवा में वात्सल्य भाव से प्रेम लगाया केवल उनके दर्शनों से लोग पवित्र होते थे और जिस सभा में बैठते थे वहां भगवत् प्रेम का अमृत बरसता था उनके गुण और भाव का वर्णन कहां तक कोई करै॥

तिपर दास की कथा॥

तिपर दास जी जातिके कायस्थ रहने वाले शेरगढ़ के वात्सल्य भाव से प्रेम और भक्ति के स्वरूप हुए हरसाल जाड़े के दिनों में यह नेम था कि श्रीनाथ जी महाराज के वास्ते पोशाक जरदोजी के या और किसी अति सुन्दर प्रकार की तैयार करके भेजा करते थे संयोग बस राजा ने सब धन सम्पत्ति उनका निरोध कर लिया कुछ बस न रहा सोचने लगे कुछ उपाय न बनपड़ा अधिक हुआ तो यह सोच हुआ कि उस सुकुमार को जाड़ा लगता होगा बिकल होकर रोने लगे और घर में जाकर बहुत ढूंढ़ा तो एक दवात हाथ लगी एक रुपैया पर बेंच कर एक थान गुंदा मोल लेकर कुसुम्भी रंगा कर भेजने के उपाय में लगे परंतु उस कपड़े को देख देख यह सोच करते कि उस परम मनोहर शोभाय मान और अति सुकुमार के वास्ते हाय ऐसा मोटा कपड़ा भेजना चहिये और इसी

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

विचार में बेसुध और विह्वल होजाते कोई भगवत् भक्त व्रज को जाने लगा उसको वह कपड़ा दे करके बड़ी आधीनताई से बिनय किया कि इस कपड़े का समाचार गोसाईं जी को न पहुंचे काहे से कि उनको दासियों की दासी के योग्य भी नहीं है भंडार में डाल देना वह आदमी आया भंडारी को दे दिया भंडारी ने बेमर्य्याद से कपड़ों के नीचे डाल दिया श्रीनाथजी को कि वह रजाई भेजी हुई नंद स्वरूप अपने बाबा की तोशे खाने में पहुंचने पर भी पाई तो जाड़े से कांपने लगे गोसाईं जीने लिहाफ और रजाई जरबफ़ और किमखाब इत्यादि की उढ़ाई परंतु जाड़ा न गया फिर दुशाले वो रूमाल इत्यादि उढ़ाये तब भी जाड़ा वैसाही रहा आग की अंगीठी लाये दरवाजे सब बंद कर दिये परंतु क्या बात कि जाड़ा तनक भी हटै गोसाईं जी ने विचार करके भंडारी और कारबारियों से कहा कि भाई यह प्रीत नहीं किसी की प्रीति है सो कहो किस किस भक्त ने क्या क्या जड़ावर भेजी है उन लोगों ने जिस जिस राजा और उमराव और दूसरे लोगों का भेजा जड़ावर था सो बिनय किया और उढ़ाया गया कुछ कार्य्य सिद्ध न हुआ तब भंडारी को स्मरण हुआ और गोसाईं जीसे वर्णन किया कि तिपुर दास कंगाल होगया है उसने एक थान बहुत मोटा भेजा है वह भगवत् की पोशाक के बांधने वास्ते भंडार में रक्खा है गोसाईं जी ने कहा कि शीघ्र ले आओ सो आया और उसका चोलनासा तैयार करके पहिनाया कि तुरन्त जाड़ा छूटा गया और हठ भी छूटा तिलककार भक्तमाल शिक्षा कराते हैं कि इस प्रीति और भक्त वत्सलता की ओर विचार करके मन लगाना चाहिये सो संत करिके हैं जो इस भगवत् कृपालुता को विचार करके और पढ़ सुनके जो मन अभागा भगवत् में न लगै तो निस्संदेह पत्थर से भी अति कठोर है वह वज्र समझना चाहिये॥

निष्ठा बीसवीं॥

जिसमें महिमा सोहार्द वो वृत्तान्त छ: भक्त इस निष्ठा के उपासकों का वर्णन है॥

श्रीकृष्ण स्वामी के चरण कमलों की अष्ट कोण रेखा को दण्डवत् करके कल्की अवतार कि जिसको निष्कलंक कहते हैं प्रणाम करता हूं और वह अवतार कलियुग के अन्त समय सम्भल देश में धारण करेंगे और नाम कलियुग का वो पापों का पुंज संसार से उठाय देंगे प्रत्यक्ष है कि जितने सम्बन्ध संसार में प्रवर्त्त मान हैं सो नव प्रकार के सम्बन्ध से उत्पन्न होते हैं—एक शेष शेषी १ अंश अंशी २ शरीर शरीरी ३ पति पत्नी ४ पूज्य पूजक ५ सेव्य सेवक ६ रक्ष रक्षक ७ जनक जन्य ८ गुरु

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

शिष्य ९॥ सो सब सम्बन्धों पर अच्छी प्रकार बिचार किया जाता है तो अन्त की पदवी सब सम्बन्धों की ईश्वर प्राप्त वो युक्त होती हैं वो इस और जीव पर प्राप्त होती है सो बिस्तार करके सेवा निष्ठा में शेष वो शेषी भाव के वर्णन में जीव वो ईश्वर पर लिखा है थोड़ा यहां भी लिखता हूं तात्पर्य्य यह कि अंशी वो पति वो पूज्य वो सेव्य वो रक्षक वो पिता वो गुरू अथवा कोई सम्बन्ध वाला जो सब में बड़ा और पुराना और आगे पर भी सदा रहने वाला और पहिले था और उस सम्बन्ध की रीतिका जाननेवाला और निबाह करदेने वाला जो ढूढ़ा जाय तो भगवत् से अधिक और अच्छा कोई नहीं और इसी वास्ते अंशी वो रक्षकपति इत्यादि नाम भगवत् के विष्णु-सहस्रनाम और दूसरे सहस्रनामों वो स्तोत्रों में लिखेगये और इसी प्रकार पूजा करने वाला और सेवा करने वाला वो रक्षा चाहने वाला इत्यादि जो ढूंढ़ा जाय तो जीव पर युक्त वो योग्यता होती है कि जीवसे अच्छा उन सम्बन्धों में दूसरा कोई नहीं तिस में भी मनुष्य शरीर तो मुख्य संबन्ध अर्थात् नातेदारी ईश्वर और जीवपर संप्राप्त हुई और यह नाता अनादि और पुराना अर्थात् उस दिनसे है कि जिस दिनसे इस जीवने ईश्वर अंश से प्रगट होकर जीव नाम धराया और बिशेषता यह कि आगे पर भी बना रहैगा तो भला जब कि ऐसा नाता पुराना जीव और ईश्वर का दृढ़ है तो अत्यन्त उचित वो योग्य है कि नातेदारी जो संसारी हैं सोभी भगवत् ही के साथ लगाई जावैं और इस बात में आप निज भगवत् ने कहा है कि जो मुझको अपना नातेदार जानकर सेवन करता है सो मुझको प्राप्तहोता है भागवत वो महाभारत के बहुत बचन इस बातके निश्चय करने वाले हैं फिर गीताजी और एकादश और शान्तिपर्व्व महाभारत में बारम्बार यह वार्त्ता आई है कि जो जिस भाव से भगवत् का आराधन करता है भगवत् उसी भाव से उसपर प्रसन्न होता है और सैकड़ों हजारों कथा पुराण वो भक्तमाल की इस बातकी साक्षी हैं नहीं तो कहां वह पूरण ब्रह्म सच्चिदानन्द घन कि जिस को बेद नेति नेति कहते हैं और जिसके स्वरूप ज्ञान और महिमा के वर्णन में ब्रह्मा वो शिव वो शेष वो सारदा के ज्ञान का दीपक ठंढा है और कहां रामकृष्ण नृसिंह बावन इत्यादि अवतार धारण करके सब भक्तों का भाव और चाह को पूरण करना तात्पर्य इस कहने का यह है कि संसार में नातेकी धर्म्मी ऐसी बराबर है कि उसके अवलंब से बरबस नेह वो प्रीति सबको अपने नातेदारोंके साथ होती है जो भगवत् में सौहार्दभाव के अवलंब से मन लगाया जाय तो भगवत् के मिलने में क्या सन्देह वो भ्रम है बरु निश्चय करिके और शीघ्र मिलैगा जो यह वाद कोई करै कि भगवत् को भाई अथवा बाप वो दामाद वो भतीजा अथवा देवर वो जेठ इत्यादि नातेदार कहना

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

कहां योग्य है और कब बुद्धिमें यह बात आय सक्ती है उत्तर यह है कि जो यहबात अंगीकार की जाय तो दास्य वो शृंगार वो वात्सल्य इत्यादि उपासना सब त्याज्य हो जांयगी काहे से कि जिन प्रमाणों से नातेदारी त्याज्य हैंगी सोई वास्ते लोप करने दास इत्यादि निष्ठाके भी समर्थ हैं कि भगवत् स्वामी वो मित्र वो बेटा वो पति नहीं हो सक्ता और जिन वचनों के प्रमाण से दास्य इत्यादि निष्ठा अंगीकार योग्य हैं उन्हीं प्रमाणों से यह सौहार्द निष्ठा भी सत्य वो युक्त है कि जैसी आज्ञा शास्त्रों की उन निष्ठाओं के वास्ते है वैसोही इस निष्ठा के वास्ते भी है सिवाय इसके गवाही युधिष्ठिर वो कुन्ती द्रोपदी वो उग्रसेन वो लक्ष्मण वो शत्रुघ्न वो भरत वो बलदेव जी वो लव वो कुश वो प्रद्युम्न वो अनिरुद्ध वो जनक इत्यादि हजारों भक्तों की प्रगट है और एकबात यह भी सब शास्त्रों में लिखी है कि सब नातेदारों को भगवत् के नाते से मानना चाहिये अर्थात् बेटा पोता भाई भतीजा और दूसरोंको किसी को किंकर किसी को जल भरने वाला और किसी को रसोइया और किसी को चौका देने वाला और किसी को सेवा करने वाला जाने संसारी नातों को मुख्य न समझै और उनमें कोई भगवत् विमुख हो तिसका त्याग उचित है कि प्रह्लाद ने पिता को त्याग दिया और बिभीषण ने भाई को और भरत जीने माता को राजा बलिने गुरूको और गोपिकाओं ने पतिन को और उस त्याग करने में यह नहीं हुआ कि किसी की कुछ हानि हुई हो बरु ऐसी हुई कि उनका नाम जगत् के आनन्द और मंगल को देता है तो जब कि दूसरे नातेदारों को भगवत् के नाते से मानना लिखा है तो आपसे आप उचित वो आवश्यक करना यी हुआ कि निज अपना नाता भी स्थिर कर ले और वह नाता आरोपन करना योग्य है कि जैसी मन की रुचि और गहरी प्रीति होय और मुख्य अभिप्राय सब शास्त्रों का यह है कि भगवत् का किसी प्रकार और किसी रूप में और किसी रीति से आराधन हो अद्वैतता और ईश्वरता भगवत् की निश्चय समझ कर दृढ़ विश्वास कर लेना चाहिये यह कदापि नहीं कि भगवत् न मिलै और जब तक कि अद्वैतता और ईश्वरता का ज्ञान वो विश्वास नहो तब तक कुछ प्राप्त नहीं होता इस सौहार्द निष्ठा की महिमा वो बड़ाई कौन कहि सक्ता है और ऐसा प्रताप इस निष्ठा को है कि अपने आप मन भगवत् में लगता है और क्यों नहीं ऐसा प्रताप इस निष्ठा को होय कि पूर्ण ब्रह्म अन्तर्यामी और व्यापक साक्षात होकर सब प्रकार से मन भाया वो चितचाहा इस निष्ठा के उपासकों का करता है और करता रहा और आगे पर करैगा कारण ऐसा प्रताप होने इस निष्ठा का यह है कि दूसरी निष्ठा तो ऐसी प्रसिद्ध हैं कि सब कोई अपने आपको दास वो सिरजा हुआ भगवत् का कहि सक्ता है अथवा कोई बात अपने मन

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

मतान्तर को जानता हो कै जानता हो और इस निष्ठा में उसी का मन लगैगा किचो कुछ जानने वाला भगवत् के सिद्धांत और शास्त्र वो ईश्वरता वो चरित्रों का होगा और जब कि शास्त्रों के सब अभिप्राय जानने के पीछे मन भगवत् में लगा तो भगवत् बहुत शीघ्र मिल सक्ता है। इस निष्ठा के उपास कों को उचित है कि जिस नाते से भगवत् का आराधन करैं उस नाते को अच्छे प्रकार रीति भांति जैसी कि भाई वा दामाद अथवा भतीजे आदिके साथ रखते हैं भगवत् के साथ दृढ़ विश्वास वो सच्ची भावना से पक्की दशाको पहुंचा देवैं और जिसनाते की जो रीति है सो सब भगवत् के साथ ऐसी निबा है कि तनक कोई बात बाकी न रहै थोड़े दिनहुए कि स्वामी रामप्रसाद जनक पुर के रहनेवाले श्रीरघुनन्दन महाराज को अपना दामाद मानते थे जब दरशन करने को अयोध्या जी में आयेतो अयोध्या के देश का पानीतक पीना छोड़ दिया जब दरशन को श्रीरघुनन्दन महाराजके गये तो उनके भावको पूर्ण करने को और भक्तिके प्रताप को प्रगट दिखाने के निमित्त मूर्त्ति भगवत् की रत्नसिंहासनसे उठकर कई डग उनके अगवानी को आई और जो रीति मर्याद राजा जनक के वास्ते होना उचित था सो सब उनके वास्ते हुई यह बात बिख्यात है और स्वामी रामप्रसादजी के सेवक अब तक उस देश में बने हैं कहने का अभिप्राय यह कि निष्ठा में पक्कता होय कि तुरंत बेड़ा पार है एक बैष्णव रघुनन्दन स्वामी को अपना बहनोई जानते थे और कोई घड़ी भजन बिना नहीं बीतता था वो जिस घड़ी अपनी निष्ठा और विश्वास की वार्ता लाया करते थे तो सुनने वाले प्रेम में मग्न हो जाते थे और उनकी दशा की क्या कही जाय॥ ब्रजमें बरसाना जो लाड़िली जीका मैका है वहां की ब्रजबासिनियों की बोलचाल यात्रियों के साथ जो होती है और उस समाज में जो दशा भगवत् भक्तों की होती है सब किसी को मिलै तात्पर्य यह कि इस निष्ठा वालों की बोलचाल सुन कर सुनने वालों को बरबस स्नेह वो प्रीति भगवत् में होती है उनके प्रेम का क्या वर्णन किया जाय हे श्री कृष्ण स्वामी हे दीन बत्सल हे पतितपावन कोई ऐसी अच्छी घड़ी मेरे वास्ते भी आवैगी कि जितने इस संसार में नाते वो स्नेह वो मित्रता हैं सो सब आपके चरण कमलों में बिचार किया करूंगा और कबहीं वह दिन भी होगा कि दूसरे सब अवलम्ब वो विश्वासों को छोड़ कर केवल उन चरण कमलोंका आसरा वो बिश्वास युक्तहूंगा कि जो शिव ब्रह्मा इत्यादि परम योगियों के इष्टदेव हैं और नारद प्रह्लाद सनकादिक भक्तों के स्वामी और ध्यान जिनका परम पदका देनेवाला है और इस संसार समुद्र के उतरने को हम सबको जहाज है॥

राजा जनक की कथा॥

राजा जनक महाराज की महिमा शास्त्रों में लिखी है जिनका ज्ञान

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

सूर्य के सदृश ऐसा प्रकाशित ह्वआ कि शुकदेव जी इत्यादि ऋषीश्वर ज्ञान वान और वैराग्य वानों के मनको कमल की भांतिप्रफुल्लित कर दिया और आवा गवन के अन्धकार को दूर किया सीता महारानी सर्व ब्रह्मांडेश्वरों की माता और श्रीरघुनन्दन स्वामी की परमप्रिया ने जिन जनकमहाराज के घर अवतार धारण करिके परम पवित्र चरित्र किये ऐसे महाराज की महिमा का वर्णन कौन से होसक्ता है जब रघुनन्दन महाराज जानकी जी के स्वयम्बर में विश्वामित्र जी के साथ जनक पुरमें गये और राजा जनक मिलने के वास्ते आये तो श्री रघुनन्दन महाराज को देखा और उसी घड़ी ज्ञान वैराग्य को बिदाकरके परम मनोहर और अनूप रूप माधुरी के प्रेम में बिह्वल हो गये और जब अपनी प्रतिज्ञा पर चित्त गया कि जो कोई शिव जी का धनुष तोड़ैगा उसकोही सीता मिलैगी तो अति विकल ह्वए कबहीं तो अपनी बुद्धिपर शोच करते थे कि क्यों ऐसी प्रतिज्ञा की और कबही कर्मों से उदास होकर कहते कि तुमने प्रतिज्ञा किस वास्ते कमाई कबहीं देवताओं का ध्यान मनमें करके यह मांगते कि यह श्यामसुन्दर वर सीता को मिलै और कबहीं अपने ज्ञान वैराग्य वो कर्मों का फल वास्ते पूरण होने अपने मनोर्थ के मनमें संकल्प करते नितान्त जब किसी प्रकार मन की विकलता न मिटी तो रघुनन्दन महाराज के चरण कमलों की शरण गही और दृढ़ विश्वास अपने मनोर्थ पूर्ण होनेका कर लिया श्रीरघुनन्दन महाराज ने जो जनक महाराज की भक्ति और भाव को देखा और फिर जनकपुरवासियों की चाहना कि राजाजनक से सौ गुणी कामना टूटने धनुष का रघुनन्दन के हाथ से रहा देखा और जान की महारानी को वह प्रेम अपार पाया कि सब ब्रह्मांडों का प्रेम जिन के करोड़वें भाग प्रेम की छाया है तो धनुष को तोड़ा और सीता महारानी ने जयमाल को राजसभा में श्रीरघुनन्दन महाराज को पहिराया उस समय छबि अनूप सीता और दशरथ नन्दन की जनक महाराज ने जो देखी तो अपने भाग की बड़ाई करते ह्वए भगवत् कृपाके समुद्र में गोता लगा के बेसुध बुधि होगये वो जिस घड़ी बिवाह वो भांवरि होने पीछे सीता जी वो रघुनन्दन महाराज एक सिंहासन पर बिराजमान ह्वए उस समय की शोभा वो दशा का वर्णन किसी से नहीं होसक्ता ब्रह्मानन्द का परम आनन्द भी उस आनन्द के सन्मुख फीका है राजा जनक की यह दशा ह्वई कि अंग अंग से थकित थकित होकर आंखों से एकटक रहिगये सत्य करिके बिदेह नाम उसी समय ह्वआ और राजा जनक वो सुनयना उन की रानी का प्रेम अलगरहा जनक पुरवासियों केप्रेम की दशा लिखी जायतो अगणित शेष वो शारदा भी नहीं लिख सक्ते तो मैं मतिमन्द क्या लिखसक्ता हूं रनिवास की प्रीति और बोलचाल और हंसी

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

इत्यादि ऐसे आनन्द का देनेवाला रस है कि जिसको पान करिके सुधि बुधि सब बिसर जाती है तो फिर वर्णन कौन करि सकै गूंगे का गुड़ है कि मनहीं मन स्वाद को लेता है और विश्वामित्र जीको राजा जनक के प्रेम वो भक्ति का वृत्तांत कुछ कुछ धनुष टूटने पर और कुछ कुछ बिवाह हो लेने पर खुलिगया था परन्तु अच्छी तरह उस घड़ी मालूम हुआ कि जब जानकी महारानी को पालकी पर सवार कराकर श्री दशरथनन्द महाराज से विदा हुए ॥

वृषभानकीर्ति जीकी कथा ॥

महिमा और भक्ति और जसवृषभान महाराज और कीर्तिदामहरानी उन की धर्म पत्नी की कैसे मुखसें वर्णन हो सकै जिनके घर श्रीराधिका महारानी सर्वेश्वरी श्रीकृष्ण की प्राण प्रिया ने अवतार धारण करके तीनों लोक को पवित्र किया रसिक लोगों को मालूम है कि श्रीराधिका महारानी में उपासक लोग दो प्रकार के भाव रखते हैं निम्बार्क संप्रदा वालों का तो यह निश्चय है कि राधिका महारानी और नन्दकिशोर महाराज का विवाह हुआ और विष्णु स्वामी संप्रदा वालों का उनके निश्चय पर अपना निश्चय भी रखते हैं और उस भावका नाम स्वकीया है माध्व संप्रदा और हितहरिवंश संप्रदा वाले पर किया भाव का निश्चय और विलक्षण भाव भी रखते हैं अर्थात् विवाह नहीं हुआ प्रिया प्रीतम महाराज का अन्योन्य प्रीति का होना वर्णन करते हैं और दोनों स्वरूप को एक जानते हैं सो पुराणादिक के वचनों के प्रमाण से दोनों भाव में से एक भाव को जो दृढ़ किया जाय तो दूसरे को अनरुचि होगी इस हेतु इस के निर्णय का कुछ प्रयोजन नहीं समझ कर यही निश्चय हुआ कि दोनों भाव से वृषभान महाराज खसुर वो कीर्तिदा महारानी सास श्री व्रजचन्द्र महाराज की हैं और यह भी जाने रहो कि अब तक बरसाने की सब जाति नन्द गांव वालों को अपनी बेटी बिवाह में देते हैं वो नन्दगांव की बेटी नहीं लेते हैं सिवाय इस के वल्लभाचार्य के कुल में वात्सल्य निष्ठा है अर्थात् पुत्र भाव रखते हैं कि इसका वर्णन वल्लभाचार्य की कथा और वात्सल्य निष्ठा में अच्छे प्रकार हुआ उनकी यह रीति है कि व्रजयात्रा के समय जब किसी मन्दिर में दर्शन को जाते हैं तो आपही मन्दिर के भीतर जाकर पूजा इत्यादि किया करते हैं सो जब बरसाने में आते हैं और लाड़िली जी के दर्शनों को जाते हैं तो बरसाने वाले उनको मन्दिर के भीतर नहीं जाने देते भाव इसमें यह है कि समधी को कैसे महल में जाने देवें बाप के घर में कोई लड़की अपने ससुराल वालों के सामने नहीं जाती ऐसे ऐसे विमल भाव व्रजवासियों के हैं रसिक लोग विचार करके अपने अपने भाव और विश्वास के अनुसार वृषभान और

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

कीर्ति जो में भाव राखैं सब प्रकार भक्ति और भाव परम आनन्द वो प्रेम की खान हैं दृषभान वो कीर्त्ति जीका यश चन्द्रमा से भी अति निर्मल है जिसने उस यश का शरण लिया संसार के ताप से छूटा ॥

कथा उग्रसेन की ॥

उग्रसेन जी कन्स के बाप नाना श्री कृष्ण महाराज के थे और उनकी भक्ति का भाव ऐसा अलौकिक हुआ कि भगवत् भक्ति का उत्पन्न करने वाला है श्री कृष्ण महाराज को पूरण ब्रह्म सच्चिदानन्द घन मानते थे और दौहिता अपना जानकर वैसेही प्रेम निबाह ते थे और भगवत् ने कन्सादिक आठ बेटे उनके मारे परन्तु भगवत् दर्शन का सुख ऐसा माना कि उनके बधका दुःख कबहीं निकट न आया और भगवत् उस भक्ति और भाव के आधीन होकर ऐसे बसी भूत होगये कि ब्रह्मा शिव और सूर्य और चन्द्रमा और यम और काल वो बरुण इत्यादि सब जिसकी माया से भय भीत होकर सदा प्रसन्नता की आंसा करते हैं उस अपनो ईश्वरता पर कुछ विचार न कियो और आप श्री हस्त से छत्र वो चौंर लेकर सेवकों के सदृश सेवा को किया सत्य करिके भक्तिही भगवत् को बशीभूत करती है गुण नहीं अर्थात् यह विचार करना चाहिये कि सुदामा को कौन धन और गजराज को कौन बिद्या उग्रसेन जो को कौन पौरुष वो बल वो कुब्जा को कौन सुन्दरता व्याधकी कौन पुण्य आचरण वो बिदुर जो का कौन उत्तम कुल और ध्रुव का क्या बयक्रम सो निश्चय करिके भगवत् भक्ति हीसार पदार्थ है ॥

कुन्ती की कथा ॥

कुन्ती जो परम भक्त भगवत् की हुईं भगवत् श्री कृष्ण महाराज को अतीज्ञ अपना जानती रहीं और ऐसी प्रीति भगवत् से थी कि हर घड़ी भगवत् मूर्ति अथवा साक्षात् अथवा ध्यान में आंखों के आगे रहती थी दुर्योधन को जीतने पीछे जब राज्य राजा युधिष्ठिर को प्राप्त हुआ तो भगवत् ने बिचार द्वारका जाने का किया कुन्ती जाने जाने न दिया पीछे उसके जब कबहीं बिचार जानेका करते तो कुन्ती जी ब्याकुल वो दुखित होकर कहती कि इस राज और सुख से तो बन वासही अच्छा था कि सदा श्री कृष्ण संग रहा करते थे और भगवत् से कहा करती कि हे श्री कृष्ण हम को वह बन और बन बासही अच्छा है अब भी वही देना चाहिये जिस में तुम्हारे दर्शन होते रहैं एक दिन भगवत् ने दृढ़ बिचार जाने का किया और रथपर सवार होगये कुन्ती जी गईं उनको दशा देखकर भगवत् को निश्चय होगया कि जो अबजाते हैं तो कुन्ती जी तन छोड़ देगी न गये कुन्ती जी रथसे उतार ले आई और अंत समय

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

में कुन्ती जी ने भगवत् के अन्तर्ध्यान होने के समाचार सुनतेही तुरन्त अपने देह को छोड़ दिया और जहां भगवत् रहे तहीं पहुंची ॥

युधिष्ठिरादि की कथा ॥

पांचों पाण्डवन में से अर्जुन की कथा सखा निष्ठा में लिखी जायगी वे राजा युधिष्ठिर वो भीमसेन वो नकुल वो सहदेव की कथा यहां लिखी जाती है पांडव लोग भगवत् को ममेरे भाई जानते थे और ब्रह्मवो स्वामी भी जानते रहे और भगवत् भी वह भाव उनका अपनी कृपालुता और भक्त वत्सलता से पूरण करते थे अर्थात् नित प्रभात के समय ऊपर के भाव से युधिष्ठिर वो भीमसेन जो वयक्रम में भगवत् से बड़े थे प्रणाम किया करते थे और नकुल वो सहदेव कि कि छोटे थे वंदना किया करते थे और कबहीं अपनी ईश्वरता का प्रकाश उनको ऐसा दिखला दिया करते थे कि वह भाव ईश्वरता का भी सदा उनको बना रहता था और जितनी मर्याद वो संकोच राजा युधिष्ठिर के साथरही तितनी भीम सेनके साथ नहीं वरु हंसी ठट्ठा भाई चारों का झगड़ा करता था विशेष करिके बहुत भोजन करने वो खूलता वो लम्बेडील पर भीमसेन को हंसाकरते थे वो भीमसेन जी भी जो मन में आता सो कहते थे वृत्तान्त बोलन वो चालन इत्यादि भगवत् वो चारों भाइयों का वर्णन नहीं होसक्ता व्यास जो महाराज ने कुछ थोड़ासा महाभारत में लिखा है कि उन चरित्रों को सुनकर असंख्य पापी जन्म मरण के दुःख से छूटगये और छूटेंगे युधिष्ठिर महाराज धर्म का अवतार वो भीमसेन जी पवन का और नकुल सहदेव अश्विनी कुमार देवताओं के बैद से हुए जो जो संकट दुर्योधन की प्रभुता करिके उनपर आन पड़ा भगवत् ने कृपा करिके सबसे रक्षा किया पहिले तो दुर्योधन ने भीमसेन को विष दिलवाया और हाथ पांव बांधकर नदी में डाल दिया भगवत् ने यह कृपा की कि भीमसेन को नदी में से वरुन देवता अपने गृहमें लेगये वहां उन को अमृत वो दस हजार हाथी का बल मिला पीछे उसके लाक्षा गृह में जलाने का उपाय दुर्योधन ने किया तहां भी कुछ न हुआ वरु अधिक ऐश्वर्य वो मर्याद वो ख्यात का कारण पांडवों को हुआ अर्थात् हजारों राजों की सभा में से द्रोपदी को जीत करलाये पीछे उस के हस्तिना पुर जो दिल्ली है तहां आय के धरती पर जितने राजा हैं तिनसे विजय कराय कै भगवत् ने राजसूययज्ञ पूरण कराया उस यज्ञ में जब दुर्योधन की हंसी हुई उनसे जूए में छलसे सब धन संपति इत्यादि को जीत लिया और द्रौपदी को राज सभा में नग्न करने को चाहा तो भगवत् ने रक्षा की और जब पांडव दुर्योधन से बचन हारने के कारण तेरह वर्ष बनमें रहे तो बहुत गन्धर्व वो राक्षसों को विजय किया वो अनेक प्रकार की लाभ उनको ऋषेश्वरों वो शिवजी वो

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

इन्द्रादि देवताओं से लड़ी और भगवत् ने दुर्वासा के शाप से बचाया और महाभारत युद्ध के समय दुर्योधन की ओर ग्यारह अक्षौहिनी दल था और भीष्मपितामह वो द्रोणाचार्य वो कृपाचार्य कर्ण वो अश्वत्थामा वो शल्य वो सोमदत्तसो जयद्रथ वो विकर्ण आदि ऐसे २ शूर बीर थे कि सब कोई पाण्डवों को जीतने का अहंकार रखता था और दुर्योधन का अंग अष्टधातु के सदृश था वो दुःसासन दस हजार हाथियों के बल वाला वो दूसरे अट्ठानवे भाई दुर्योधन के सब बलवान वो शूरबीर थे और पाण्डवों की ओर पांचो भाई पांडव आप और दो चार राजे दूसरे वो सात अक्षौहिनी दल था भगवत् ने उस लड़ाई का घोर नदी से आप कैवर्तक होकर पाण्डवों को पार उतारा वो दुर्योधनादिक की सेना वो शूरबीरों समेत भग्न वो नाश कर दिया पीछे राजा युधिष्ठिर राज सिंहासन पर विराज आप हुए तो न्याय वो धर्म पूर्वक प्रजा पालन किया जब परम जेही भाई अर्थात् भगवत् के अन्तरध्यान होने का वृत्तान्त सुना तो उसी घड़ी राज को छोड़ दिया और उत्तर दिशा में सुमेरु पर्वत के निकट बरफाने में जाकर परम धाम को गये सो कथा पाण्डवों की विख्यात और महाभारत आदि में विस्तार से लिखी है इस हेतु नाम मात्र थोड़ा लिखा गया॥

द्रोपदी की कथा॥

द्रोपदी जी परम सती की भक्ति और भाव की महिमा ऐसा कौन है जो वर्णन कर सकै उस भगवत् ने कि जिसको वेद और ब्रह्मा भी वर्णन नहीं कर सके उसके मनोर्थ को पूर्ण किया अर्थात् जब द्रोपदी जीने स्मरण किया तब तुरन्त आये और अपनी ईश्वरता को छोड़ कर उनकी चाह को मुख्य जाना द्रोपदी जी भगवत् श्री कृष्ण स्वामी को यद्यपि मन से पूर्ण ब्रह्म परमात्मा जानती थीं परन्तु भाव देवर का रखती थी उस भाव में रस वो परम आनन्द अपार है चरित्र द्रोपदी जीका और वृत्तान्त उनके जन्म का पाण्डवों की कथा के साथ विस्तार करिके महाभारत वो दूसरे पुराणों में लिखा है यहां भी दो एक कथा लिखी जाती हैं जब राजा युधिष्ठिर ने संपूर्ण राज्य द्रोपदी समेत आप वो भाइयों ने जुए में दुर्योधन के हाथ हार दिया तो दुर्योधन ने पाण्डवों को बे मर्याद करना विचारा वो राज सभा में जहां युधिष्ठिर वो भीमसेन वो अर्जुन वो नकुल वो सहदेव भी बैठे थे द्रोपदी को बुलाकर दुःसासन को नग्न करने के वास्ते आज्ञा दी वो भीष्म पितामह वो द्रोणाचार्य इत्यादि इस विचार से कि द्रोपदी जी भगवत् भक्त हैं दुष्टता वो अनीति दुष्टों को नहीं चल सकैगी अथवा दुर्योधन के डरसे कुछ मना न करसके और युधिष्ठिर आदि धर्म को विचारि के न बोले और द्रोपदी जी उस समय की धर्म के कारण केवल एक साड़ी पहिने हुए थी दुःसासन दुष्टबुद्ध

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

खींचने को जब तैआर हुआ तब द्रोपदी जीने भक्त वत्सल दीन बंधु प्रणतारत भञ्जन कृपा सिंधु अपने देवर को स्मरण किया और लज्जा रखने वाले महाराज कि सदा सर्व काल अपने भक्तों के सहाय के हेतु सभी पही बने रहते हैं आन पहुंचे वो द्रोपदी को सारी बावन महाराज के शरीर के सदृश अथवा कुरुक्षेत्र के तुलादान के सदृश अथवा भगवत् अर्पित कर्म के सदृश अथवा नारायण के नाभिनाल के सदृश बढ़ने लगी इतनी बढ़ी कि दुःसासन जो दस हजार हाथियों का बल रखता था खींचते २ हारगया वो एक नखभी द्रोपदीका नग्न न हुआ सब दुष्ट लज्जित होरहे और उसी समय उन पापियों से राज्य वो धर्म वो बुद्धि वो बड़ाई वो आयु वो सम्पत्ति इत्यादि ने बिदा मांगी ॥

दोहा ॥

कहा करै वैरी प्रबल जो सहाय प्रभु वीर।
दश हजार गजबल छुट्यो घट्यो न दसगजचीर ॥

कवित्त ॥

दुर्जन दुःशासन दुकूल गह्यो दीन बंधु दीन ह्वै के द्रुपद दुलारी यों पुकारी है।
आपनो सबल छांड़ि ठाढ़े पति पारथ से भीम महाभीम ग्रीवा नीचे कीरिडारी है॥
अम्बरलो अम्बर पहाड़ कीनों शेष कवि भीषम करण द्रोण सबीयों बिचारी है।
सारीमध्यनारीहै किनारीमध्यसारीहै किसारीहै कि नारीहै किनारीहै किपारी है॥

यहां एक शंका यह है कि भगवत् बिना पुकारे आपसे आप सहाय करते उन्होंने किस हेतु धैर्य को छोड़ कर भगवत् से सहाय चाहा सो एक उत्तर तो प्रेम से भरा यह है कि भगवत् से और द्रौपदी जी से जब हंसी बातें वो छेड़ छाड़ होती थी तो कबहीं भगवत् निरुत्तर होजाते थे और कबहीं द्रौपदी जीको जब यह संकट आनि पड़ा तो द्रौपदी जीने इस हेतु श्रीकृष्ण स्वामी को स्मरण किया कि जो आप से आप बिना स्मरण वो पुकारे भगवत् की सहाय हुई तो मेरा परम स्नेही देवर सदा मेरे व्यंग वचन से निरुत्तर होजाया करैगा कि दुःसासन वस्त्र खींचता था तब सहाय को नहीं आये थे तो उसीको पुकारना चाहिये कि जिसमें वह निरुत्तर न हो और सुभी को अपने उपकार से संकुचित करके व्यंग वचन बोला करै कि राज सभा में कैसी भई ॥ दूसरे यह कि द्रौपदी जी भगवत् को स्मरण करके वचन मारती हैं कि तुम अपने राज वो बड़ाई को बड़ाई करके हमको बचन मारते रहे अब देखो कि तुम्हारी भावज को दुष्ट लोग किस प्रकार से बे वस्त्र किया चाहते हैं ॥ तीसरे यह कि द्रोपदी जी भगवत् को स्मरण करके सब भक्तों को शिक्षा करती हैं कि भगवत् के स्मरण करने से वस्त्र जो जड़ पदार्थ है अनन्त होजाता है तो जीव उसके स्मरण से अनन्त वो अच्युत क्यों न होजायगा चौथे अपने पतिन को धैर्य

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

देतो हैं कि भगवत् के स्मरण से कौन ऐसा संकट है कि दूर न होगा पीछे दुर्योधन ने पांडवों को बारह वर्ष का बनवास और फिर एक वर्ष गुप्त रहने को निश्चय विचार किया सो बनको चले सिवाय शस्त्रों के दूसरी सामग्री कुछ खाने पीने की पास न थी सूर्य नारायण ने एक टोकनी को प्रसन्न होकर दिया चमत्कार उसका यह था कि जब तक द्रोपदी जी भोजन न कर लेती थीं तब तक सब प्रकार की सामग्री भोजन की जो चाहना होती उसमें से निकलती थी और जब द्रौपदी जी भोजन कर चुकती थीं तब बन्द होजाती थी एक दिन दुर्वासा जो दस हजार चेलों समेत दुर्योधन के कहने से ऐसे समय पर आये कि द्रोपदी जी भोजन कर चुकी थीं युधिष्ठिर महाराज ने भोजन के वास्ते विनय किया दुर्वासा जीने कहा कि स्नान कर आवैं तब भोजन करैंगे यह कहि कर स्नान करने को गये वो राजा युधिष्ठिर ने द्रोपदी जीसे कहा कि तुम भोजन न करना दुर्वासा जीका शिष्टाचार है द्रोपदी जीने विनय किया कि मैंने तो भोजन कर लिया राजा युधिष्ठिर यह वचन सुनतेही अचेत वो बेसुध होगये और रोदन करने लगे कि अब किस प्रकार मर्याद रहैगी और दुर्वासा के शाप से कैसे बचैंगे द्रोपदी जीने जो यह दशा राजा की और भीम वो अर्जुन आदि की देखी तो अति दृढ़ विश्वास वो भक्ति से कहने लगी कि तुम क्यों ऐसे दीन वो अधीर होते हौ वह श्रीकृष्ण तुम्हारा भाई परम स्नेही क्या कहीं दूर है कि इस समय सहाय न करैगा और यह कह कर द्रोपदी जीने श्रीकृष्ण स्वामी को स्मरण किया भगवत् तुरंत द्वारका से रुक्मिणीजी को छोड़ कर आन पहुंचे मानों उसी जगह थे सबसे मिलने पीछे द्रोपदी जी की ओर देख कर कहा कि भूख लगी है कुछ भोजन को लावो द्रोपदीजी ने कहा कि यहां पहिले से एक के वास्ते सब शोचमें पड़े हैं यह दूसरे नए भूखे आकर पधारे मेरे घर कुछ खाने पीने को नहीं है भगवत् ने कहा कुछ थोड़ा सा ले आवो द्रोपदीजी ने कहा कुछ नहीं है बड़ी बेर से टोकनी मांज धोकर रक्खी है भगवत् ने युधिष्ठिर की ओर देख कर कहा कि यह पुरबिए की बेटी भूखें घरकी ऐसी भूखी मिल गई है कि जब हम भोजन मांगते हैं बिना नहीं कियें कबही नहीं देती है अच्छा वह टोकनी उठाय ले आवो हम आप ढूढ़ लेंगे द्रोपदीजी टोकनी उठाय ले आईं और भगवत् के सामने रख करे कहा कि जो आपही ढूढ़ लेवैंगे तो यहां किसका निहोरा है भगवत् ने एक पत्ता साग का उसमें कहीं लगा हुआ पाया उसको निकाल द्रोपदीजी को दिखाया कि देखो यह क्या है द्रोपदी जी बहुत हंसी और कहा कि यह कृष्ण साग इत्यादि से रुचि मान रहा है सोई ढूढ़ लिया भगवत् उस सागके पत्ते को अपनी हथेली पर रखकर भोजन कर गए और थोड़ासा जल पिया कि उसी क्षण त्रिलोकी तुष्ट वो तृप्त

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

हो गई और दुर्वासाजी की तो यह दशा भई कि पेटके भरने से उठने की सामर्थ्य न रही और फिर जो विचार किया कि क्या कारण इस भांति पेट के अफरने का है तो भगवत् भक्तों का प्रताप अपने मनमें समझ कर श्री राजा अम्बरीष के कारण जो कष्ट उठाया उसको स्मरण करके राजा युधिष्ठिर से बिना कहे छिप कर भाग गए भीमसेन ढूढ़ आये कहीं पता न लगा ऐसे चरित्र द्रौपदीजी के अनेक हैं क्या सामर्थ्य किसीकी है जो लिख सकैं॥

निष्ठा इक्कीसवीं॥

जिसमें महिमा शरणागती वो आत्म निवेदन और दम भक्तों की कथा वर्णन है॥

श्रीकृष्ण स्वामीके चरणकमलों की कृपाचमर रेखा को दण्डवत् करके सम्पूर्ण अवतार को वन्दना करता हूं कि बिठूर में वह अवतार धारण करके सब धर्मों का प्रकाश किया शरणागति वो आत्म निवेदन की महिमा के पहिले एक बात यह लिखने के योग्य है कि जो भक्त बन्दन निष्ठाके उपासक हैं सोभी इस निष्ठा में लिखे जायंगे हेतु यह है कि वास्तव करिके बन्दन से अभिप्राय वारि जाने अर्थात् निछावर होने का है और बन्दन और शरणागत में केवल इतनाही भेद है कि बन्दन तो बाहर निछावर और अर्पण होने को कहते हैं और शरणा गति बाहर वो भीतर दोनों को अर्पण और भेट करने का नाम है जिस प्रकार कीर्त्तन वो स्मरण कि कीर्त्तन तो उसको कहते हैं कि जो भगवत् का नाम और भजन केवल मुखसे होय और स्मरण उसका नाम है कि जो मनसे होय वास्तव में दोनों बात का तात्पर्य्य एक ही है मनसे होय अथवा बचन से सुरति बनी रहे इस हेतु स्मरण भी कीर्त्तन निष्ठा में मिलाय के लिखा गया है इसी प्रकार बन्दन निष्ठा को भी शरणागति से मेल किया गया और यह भी मालूम रहे कि शरणागति और आत्मनिवेदन एक बात है कि इसका वर्णन इसी निष्ठा में विस्तार करिके होगा कोई उपासक लोग विशेष करिके रामानुज संप्रदा वाले भगवत् के प्राप्त होने का हेतु मुख्य शरणागति को मानते हैं और कहते हैं कि भगवत् दो प्रकार से मिलता है एक तो भक्ति से दूसरे शरणा गति से सो भक्ति के योग्य तो वे लोग हैं कि जिनको अपने परिश्रम वो उपाय का भरोसा दृढ़ होय कि इस जन्म में अथवा दसके पचास जन्म में अपने पुरुषार्थ अर्थात् भगवत् आराधन इत्यादि से निश्चय भगवत् को प्राप्त होंगे और भजन के विश्वास से यमराज इत्यादि का कुछ भय नहीं रखते और जो इस जन्म में उन का मनोर्थ पूर्ण न होतो होने वाले जन्मों से आगे को यह भय नहीं कि हमको भगवत् भक्ति न होगी भगवत् गीता के वचन के अनुसार कि अनेक जन्मों में सिद्धि को प्राप्त होकर परम गति को जाता है दूसरा बन्दन

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

यह कि हे अर्जुन मेरे भक्त का नाश कबहीं नहीं होता ऐसे ऐसे बचन सैकड़ों वो हजारों भागवत वो गीता वो दूसरे पुराणों के हैं वो शरणागति वह वस्तु है कि जिस समय भगवत् में दृढ़ बिश्वास करके शरण ह्वा और इस लोक वो परलोक का बोझ भार भगवत् पर डाल दिया उसी घड़ी से उस जनको न किसी उपाय का प्रयोजन है न पुरुषार्थ का और जो कुछ पुरुषार्थ और उपाय का भरोसा रहा तो उसके शरण होने में कचाई है बरं उसका नाम शरणागती नहीं वो न शरणागती का फल उस को मिलता है जिस प्रकार हनुमान जी को इन्द्रजीत रावण के बेटे ने ब्रह्म फांस में कि वह एक पतरी रस्सी थी बांधि लिया तो और कुछ उपाय न किया और उसको बिश्वास रहा कि इस ब्रह्म फांस से कबहीं न छूटैगा उसके बिश्वास के अनुसार हनुमान जी बंधे रहे जब वह बिश्वास छूट गया अर्थात् मोटे २ रस्सों से हनुमान जी को बांधा तो हनुमान जी उस ब्रह्म फांस और रस्सों को तोड़ कर निकल गये इसी प्रकार भगवत् शरण हो-कर कुछ और भी बिश्वास मुक्ति के हेतु समझा तो शरणागति का रूप कहां बाकी रहा॥ भक्ति मार्ग के चलने वालों का यह सिद्धान्त है कि श्रवण कीर्तन इत्यादि जो भगवत् भक्ति है उनमें प्रेम वो स्नेह का होना विशेष चाहिये जब वह प्रेम परिपक्व और दृढ़ता को पहुंच जायगा सोई फल है उस से आगे पर कुछ करतब्य शेष नहीं रहता वो न किसी साधन का प्रयोजन॥ अब निर्णय इस बात का उचित ह्वा कि शरणागति वो आत्मनिवेदन में क्या भेद है जो कुछ भेद नहीं तो शरणागति वो भक्ति मार्ग वालों को आपुस में बोल चाल क्या हैं सो जाने रहो शरणा गति और आत्म-निवेदन एक बात है और उसी को प्रपत्ति वो न्यास और त्याग कहते हैं जिस प्रकार घड़े के कई नाम कलश को कुम्भ वो घट हैं इसी भांति उस शरणा गति के कई नाम जो ऊपर लिखे हैं सो हैं केवल एक बचन का भेद उनमें यह है कि भक्ति मार्ग वालों ने तो शरणागति को एक अंग भक्ति का समझा अर्थात् यह कहते हैं कि भगवत् शरण होकर दास्य अथवा बात्सल्य अथवा शृंगार अथवा श्रवण कीर्त्तन इत्यादि भक्ति का करना योग्य है कि उस भक्ति से उद्धार होगा और शरणागति के उपासकों ने शरणा गति ही को उद्धार के हेतु मुख्य समझा और कहते हैं कि शरणा गति के ऊपर प्रयोजन और किसी बात का नहीं शरणागतिही सब काम दोनों लोक का कर देती है सो यह सिद्धान्त दोनों मार्ग वालों के निश्चय का लिखा गया परन्तु जब कि शरणागति के उपासना वालों को बिना सेवा पूजा श्रवण कीर्त्तन इत्यादि के शोभा नहीं तो न श्रवण न कीर्त्तन के उपासकों को बिना शरणागति के दूसरा कुछ उपाय है इसे बोलन का भेद जो ऊपर लिखा सो भेद नाम मात्र वो बिश्वास के बढ़ावने के वास्ते है महिमा बड़ाई शरणा

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

हो गई और दुर्वासाजी की तो यह दशा भई कि पेटके भरने से उठने की सामर्थ्य न रही और फिर जो विचार किया कि क्या कारण इस भांति पेट के अफरने का है तो भगवत् भक्तों का प्रताप अपने मनमें समझ कर और राजा अम्बरीष के कारण जो कष्ट उठाया उसको स्मरण करके राजा युधिष्ठिर से विना कहे छिप कर भाग गए भीमसेन ढूढ आये कहीं पता न लगा ऐसे चरित्र द्रौपदीजी के अनेक हैं क्या सामर्थ्य किसीकी है जो लिख सकै॥

निष्ठा इक्कीसवीं॥

जिसमें महिमा शरणागती वो आत्म निवेदन और दस भक्तों की कथा वर्णन है॥

श्रीकृष्ण स्वामीके चरणकमलों की छत्र चमर रेखा को दण्डवत् करके अन्तर अवतार को वन्दना करता हूं कि जिन्हों ने वह अवतार धारण करके सब धर्मों का प्रकाश किया शरणागति वो आत्म निवेदन की महिमा के पहिले एक बात यह लिखने के योग्य है कि जो भक्त बन्दन निष्ठाके उपासक हैं सोभी इस निष्ठा में लिखे जायंगे हेतु यह है कि वास्तव करिके बन्दन से अभिप्राय वारि जाने अर्थात् निछावर होने का है और बन्दन और शरणागत में केवल इतनाही भेद है कि बन्दन तो बाहर निछावर और अर्पण होने को कहते हैं और शरणा गति बाहर वो भीतर दोनों को अर्पण और भेट करने का नाम है जिस प्रकार कीर्त्तन वो स्मरण कि कीर्त्तन तो उसको कहते हैं कि जो भगवत् का नाम और भजन केवल मुखसे होय और स्मरण उसका नाम है कि जो मनसे होय वास्तव में दोनों बात का तात्पर्य्य एक ही है मनसे होय अथवा बचन से सुरति बनी रहै इस हेतु स्मरण भी कीर्त्तन निष्ठा में मिलाय के लिखा गया है इसी प्रकार बन्दन निष्ठा को भी शरणागति से मेल किया गया और यह भी मालूम रहै कि शरणागति और आत्मनिवेदन एक बात है कि इसका वर्णन इसी निष्ठा में विस्तार करिके होगा कोई उपासक लोग विशेष करिके रामानुज संप्रदा वाले भगवत् के प्राप्त होने का हेतु मुख्य शरणागति को मानते हैं और कहते हैं कि भगवत् दो प्रकार से मिलता है एक तो भक्ति से दूसरे शरणा गति से सो भक्ति के योग्य तो वे लोग हैं कि जिनको अपने परिश्रम वो उपाय का भरोसा दृढ़ होय कि इस जन्म में अथवा दसके पचास जन्म में अपने पुरुषार्थ अर्थात् भगवत् आराधन इत्यादि से निश्चय भगवत् को प्राप्त होंगे और भजन के विघ्नाज से यमराज इत्यादि का कुछ भय नहीं रखते और जो इस जन्म में उन का मनोर्थ पूर्ण न होतो होने वाले जन्मों से आगे को यह भयनहीं कि हमको भगवत् भक्ति न होगी भगवत् गीता के बचन के अनुसार कि अनेक जन्मों में सिद्धि को प्राप्त होकर परम गति को जाता है दूसरा बचन

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

यह कि हे अर्जुन मेरे भक्त का नाश कबहीं नहीं होता ऐसे ऐसे बचन सैकड़ों वो हजारों भागवत वो गीता वो दूसरे पुराणों के हैं वो शरणागति वह वस्तु है कि जिस समय भगवत् में दृढ़ विश्वास करके शरण ह्वआ और इस लोक वो परलोक का बोझ भार भगवत् पर डाल दिया उसी घड़ी से उस जनको न किसी उपाय का प्रयोजन है न पुरुषार्थ का और जो कुछ पुरुषार्थ और उपाय का भरोसा रहा तो उसके शरण होने में कचाई है बरं उसका नाम शरणागती नहीं वो न शरणागती का फल उस को मिलता है जिस प्रकार हनुमान जी को इन्द्रजीत रावण के बेटे ने ब्रह्म फांस में कि वह एक पतरी रस्सी थी बांधि लिया तो और कुछ उपाय न किया और उसको विश्वास रहा कि इस ब्रह्म फांस से कबहीं न छूटैंगा उसके विश्वास के अनुसार हनुमान जी बंधे रहे जब वह विश्वास छूट गया अर्थात् मोटे २ रस्सों से हनुमान जी को बांधा तो हनुमान जी उस ब्रह्म फांस और रस्सों को तोड़ कर निकल गये इसी प्रकार भगवत् शरण होकर कुछ और भी विश्वास मुक्ति के हेतु समझा तो शरणागति का रूप कहां बाकी रहा॥ भक्ति मार्ग के चलने वालों का यह सिद्धान्त है कि श्रवण कीर्तन इत्यादि जो भगवत् भक्ति है उनमें प्रेम वो स्नेह का होना विशेष चाहिये जब वह प्रेम परिपक्व और दृढ़ता को पहुंच जायगा सोई फल है उस से आगे पर कुछ करतब्य शेष नहीं रहता वो न किसी साधन का प्रयोजन॥ अब निर्णय इस बात का उचित ह्वआ कि शरणागति वो आत्मनिवेदन में क्या भेद है जो कुछ भेद नहीं तो शरणागति वो भक्ति मार्ग वालों की आपुस में बोल चाल क्या हैं सो जाने रहो शरणा गति और आत्म-निवेदन एक बात है और उसी को प्रपत्ति वो न्यास और त्याग कहते हैं जिस प्रकार घड़े के कई नाम कलश वो कुम्भ वो घट हैं इसी भांति उस शरणा गति के कई नाम जो ऊपर लिखे हैं सो हैं केवल एक बचन का भेद उनमें यह है कि भक्ति मार्ग वालों ने तो शरणागति को एक अंग भक्ति का समझा अर्थात् यह कहते हैं कि भगवत् शरण होकर दास्य अथवा वात्सल्य अथवा शृंगार अर्थवा श्रवण कीर्त्तन इत्यादि भक्ति का करना योग्य है कि उस भक्ति से उद्धार होगा और शरणागति के उपासकों ने शरणा गति को उद्धार के हेतु मुख्य समझा और कहते हैं कि शरणा गति के ऊपर प्रयोजन और किसी बात का नहीं शरणागतिही सब काम दोनों लोक का कर देती है सो यह सिद्धान्त दोनों मार्ग वालों के निश्चय का लिखा गया परन्तु जब कि शरणागति के उपासना वालों को बिना सेवा पूजा श्रवण कीर्त्तन इत्यादि के शोभा नहीं वो न श्रवण न कीर्त्तन के उपासकों को बिना शरणागति के दूसरा कुछ उपाय है इस बोलन का भेद जो ऊपर लिखा सो भेद नाम मात्र वो विश्वास के बढ़ावने के वास्ते है महिमा बड़ाई शरणा

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

गति निष्ठा की किसे लिखी जाय कि सब प्रकार की भक्ति का सार मेरी शरणागति है भगवत् ने चौथे स्कन्ध पुरञ्जन की कथा में कहा है कि सख्य वो आत्मनिवेदन को मैं आप शिक्षा करता हूं इससे निश्चय हुआ कि सब प्रकार की भक्ति का सार वो फल शरणागति अर्थात् आत्मनिवेदन है जहां तक जो मंच देखने में आते हैं सब में शरणागतिको मुख्य रक्खा है बिशेष उसका यह है कि कोई मंचों में तो खुला हुआ पद शरणागति का लिखा है कि मैं श्री कृष्ण की नारायण की रामचन्द्र की शरण हूं और कोई मंचों में नमःपद लिखा है और नमः के अर्थ दण्डवत और वन्दन करने के हैं और वन्दना का तात्पर्य अर्पण अथवा भेंट के निवेदन करना शरीर से है कि जिसको वारी जाना वो निछावर होना कहते हैं तो जब कि दण्डवत करना और शरणागति वो आत्मनिवेदन एक ही बात है और एकही परिमाण है तो निश्चय हो गया कि सब मंच भगवत् शरणागति का वर्णन करते हैं और शरणागति ही सर्वत्र मुख्य करी गई और जब कि सब प्रकार की भक्ति और उपासना का निश्चय केवल मंच के ऊपर है और मंचों से शरणा गति की बड़ाई दृढ़ हुई तो शरणा गति को सब उपासना और सब भक्ति मार्गों में मुख्यतर होने में क्या संदेह रहा और सब उपासना और निष्ठाओं में शरणा गति की बड़ाई इससे भी दृढ़ हुई कि भगवत् ने गीताजी में कहा है कि जो मेरे शरण होते हैं सो मेरी माया को तरते हैं जब भगवत् श्रीकृष्ण स्वामी ज्ञान और भक्ति वो वैराग्य वोयोग वोकर्म का उपदेश अर्जुनको कर चुके तो आज्ञा की कि जो सब से अत्यन्त गुप्ततम बात है सो परम बचन मेरा हुआ तुझसे कहता हूं काहे से कि तू मेरा प्यारा सखा और बुद्धिमान है सब धर्मों को छोड़ कर मेरे एक के शरण हो मैं तुझको सब पापों से तुरन्त छुड़ादूंगा शोच मति करै और इस शरणा गति उपदेश के पीछे और कोई उपदेश नहीं किया तो प्रतीति हो गई कि सब धर्मों का परिणाम पदवी वो तात्पर्य शरणा गति है इस के आगे अब और कोई भागवत धर्म नहीं और सब भक्ति आप से आप शरणा गति से प्राप्त हो जाती हैं अथवा उसके अंग हैं॥ जब बिभीषण भगवत् शरण आया तो सुग्रीव आदि ने उसको बन्दी में डालने का सम्मत किया भगवत् ने कहा कि जो कोई मेरी शरण हो कर यह कहता है कि तेरा हूं उस को सम्पूर्ण लोकन से निर्भय कर देता हूं यह प्रतिज्ञा मेरी है यह अर्थ बाल्मीकी रामायण के श्लोक का है और यह दोनों श्लोक अर्थात् गीता जीके अन्त के और बाल्मीकी रामायण के मंचों में भी गिने जाते हैं॥ सो इन भगवत् बचनों से अच्छे प्रकार सिद्धान्त हो गया कि शरणा गति ही उद्धार के वास्ते समर्थ है इसके सिवाय शास्त्रों से प्रसिद्ध है कि गज और बिभीषण ने कोई साधन नहीं किया केवल भगवत् शरण हुए थे कि उसके प्रभाव

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

करिके दोनों लोक के अर्थ को प्राप्त हुए॥ जगत् में प्रसिद्ध चाल देखने में आती है कि कैसहूं पापी और नीच किसी की शरण जाता है तो उसके अवगुण और अन्याय पर कदापि दृष्टि नहीं जाती सब से पहिले उसके कार्य सिद्ध होने पर दृष्टि होती है इसी प्रकार यह जीव सब भरोसे को छोड़ कर जो भगवत् शरण होगा तो वह परमात्मा कि जो सब रीतों का जाननें वंगला है क्यों नहीं दोनों लोक का मनोर्थ पूर्ण करैगा सो बिचार वो दृष्टांत वो रीति वो प्रमाण से अच्छे प्रकार निश्चय हो गया कि भगवत् शरणागति उद्धारके वास्ते आप समर्थ वो स्वतंत्र हैं दूसरे किसी साधन का प्रयोजन नहीं सो उस शरणागति का वास्तव रूप तो यह है कि दोनों लोक के प्राप्त की चिन्ता वो शोच अपने शरीर से दूर करके और सब बोझ वो भार अपना भगवत् के ऊपर डाल कर अपने आप को भगवत् के समर्पण कर देना और हर घड़ी यह बिश्वास दृढ़ बनारहना कि भगवत् शरणागति से इस लोक और पर लोक के सब काम आप से आप हो जायंगे मेरी चिन्ता आप भगवत् को है और जिस समय जो भगवत् शरण होता है अनेक जन्मों के पाप उसी समय दूरहोजाते हैं परन्तु कोई इस शरणागति में छः प्रकार के बिघ्न करते हैं॥ प्रथम यह कि शरणागति के समय से जो भागवत धर्म शास्त्रों में लिखे हैं उनका आचरण करना दूसरे जो भागवत धर्म्म से बिरुद्ध धर्म हैं और शास्त्रों में उन का निषेध लिखा है उन का त्याग करना और भगवत् भक्तों में प्रीति और सेवा का होना॥ तीसरे यह बिश्वास दृढ़ रखना कि मैं जो भगवत् के शरणागति हूं भगवत् मेरे सब अपराधों को अवलोकन न करिकै निश्चय क्षमा करैंगे चौथे यह कि सिवाय एक भगवत् के दोनों लोक में किसी को रक्षा वो कल्याण के वास्ते स्वप्न में भी न समझना॥ पांचवां यह कि भगवत् की मूर्ति जैसे शालग्राम इत्यादि अथवा मानसी स्वरूप भगवत् के आगेखड़ा होकर अपनी दीनता और अपराध बर्णन करना कि हे प्रभु मैं अपराधी वो दीन हूं सिवाय आपके मेरा कुछ ठिकाना और आसरा नहीं सो आप पतित पावन दीन बत्सल हैं तो यह एक सम्बन्ध भी आपसे रखता हूं कि मेरेसे अधिक पतित और दीन कोई नहीं मेरा उद्धार आपसे होगा॥ छठवां अपने आत्मा अर्थात् अन्तर वो बाहिर की ममता सब भगवत् समर्पण करदेना सो इस प्रकार की शरणागति निःसन्देह बिना दूसरे किसी साधन के इस संसार समुद्र से एक छिन में पार उतार देवैगी॥ हे श्री कृष्ण स्वामी हे दीन बत्सल हे पतित पावन हे अधम उद्धारन महाराज जैसा हूं आपका हूं मेरे ऊपर भी कृपा की दृष्टि होय कि आपका चिन्तवन दिनरात करता रहूं जो स्वरूप बैकुण्ठ का धाम निष्ठा में लिखा है उसके मध्य में निज धाम भगवत् के बिहार का है कि हजार खम्भ उसके

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamakar Mishra Collection, Varanasi

हैं और सब हार वो दीवार उसके प्रकाश रूप दिव्य मणिन से जड़े हुए हैं उसके बीच में सहस्र दल कमल और सबदल मंच रूप हैं अर्थात् जितने देवताओं के मंच उन दलों पर चिन्हित वो अंकित हैं उनके ऊपर शेषजी महाराज मसनन्द की भांति हैं और शेषजी के ऊपर श्री लक्ष्मीनारायण परम शोभा और माधुर्य के धाम बिराजमान हैं भगवत् के स्वरूप और प्रकाश परम दे दीप्तमान के आगे करोड़ों, सूर्य वो चन्द्रमा जो एक संग उदय होकर एक बेर प्रकाश करैं तो करोड़वां अंशको नहीं पहुंचै चरण कमलों के नख कि जिनका शिव और ब्रह्मादिक ध्यान करके कृतार्थ होते हैं और उनको मुक्ति का स्थान शास्त्रों ने लिखा है ऐसे प्रकाश करने वाले हैं कि मानों भक्तों के हृदय को प्रकाश करने के निमित्त कोटिन महामणि के पुंज हैं और चरण तलसे उन चरणों को ऐसी लाली है कि जितनी ज्योति और शोभा सब ब्रह्माण्डों में है उसीसे प्रगट हुई है और ऊपर से ऐसी मनोहर शोभा उन चरणों की है कि सब शोभा उसी सम्बन्ध से है कड़े और घुंघरू बिराजमान पीताम्बर धारण किये हुए उसपर क्षुद्र घंटिका यज्ञोपवीत शोभायमान मणिगण और तुलसी मंजरी और फूलों की माला कौस्तुभमणि कण्ठ में ऊपर भंवर गूंज रहे हैं चारों भुजन में कड़े पहुंची बाजबन्द आदि आभूषण वो शंख चक्र गदा पद्म शोभायमान सुखारविन्द देदीप्त मान और भाल पर तिलक शोभित मकराकृत कुण्डल कानों में शिरपर किरीट सुकुट पीताम्बर आदि की मन मोहनी मूरत श्रीवत्स चिन्ह वक्षस्थल पर और आप लक्ष्मी जी वामभाग में वैसोही शोभा से विराजमान चरण सेवा में और विष्वक्सेन आदि पार्षद कैंकर्य में तत्पर॥

अक्रूर की कथा॥

अक्रूरजी को शास्त्रों ने वन्दने निष्ठा के उपासकों में लिखा है यदुवंशियों में सुफल्लक के पुत्र पवित्र थे यद्यपि उनके रहने का संयोग कुसंग अर्थात् कंस के राज काज में था परंतु वे भगवत् चरणों में विश्वास दृढ़ रखते थे इस हेतु वह कुसंग कुछ हानि नहीं कर सका था बरु उन कुसंगियों को अक्रूर जीका चरण श्री वो आयुर्बल का कारण था जब कंसने श्री बलचन्द महाराज के ले आने के हेतु अक्रूर जीको भेजा तो अति आनन्द से तनमें न समाये इस आसा से कि इस बहाने से उन चरण कमलों को देखूंगा कि जो शिव और ब्रह्मादिक के स्वामी और नायक हैं और उस चन्द्र मुख को देख कर मेरी आंखें शीतल और सफल होंगी कि जिसके हेतु सब ब्रज सुन्दरी चकोरसी होकर अनूप रूप सुधा के प्यासे हुए नहीं होतीं और जब दण्डवत करूंगा तो उन हस्त कमलों से मुझे को उठाकर हृदय से लगावेंगे कि जिनकी छाया कल्प वृक्ष के सदृश सदा भक्तों के शिरपर रही है ऐसे मनोर्थ करते हुए जब श्री वृन्दावन के निकट

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

हैं और सब हार वो दीवार उसके प्रकाश रूप दिव्य मणिन से जड़े हुए हैं उसके बीच में सहस्र दल कमल और सबदल मंच रूप हैं अर्थात् जितने देवताओं के मंच उन दलों पर चिन्हित वो अंकित हैं उनके ऊपर शेषजी महाराज मसनन्द की भांति हैं और शेषजी के ऊपर श्री लक्ष्मीनारायण परम शोभा और माधुर्य के धाम बिराजमान हैं भगवत् के स्वरूप और प्रकाश परम दे दीप्तमान के आगे करोड़ों, सूर्य वो चन्द्रमा जो एक संग उदय होकर एक बेर प्रकाश करैं तो करोड़वां अंशको नहीं पहुंचै चरण कमलों के नख कि जिनका शिव और ब्रह्मादिक ध्यान करके कृतार्थ होते हैं और उनको मुक्ति का स्थान शास्त्रों ने लिखा है ऐसे प्रकाश करने वाले हैं कि मानों भक्तों के हृदय को प्रकाश करने के निमित्त कोटिन महामणि के पुंज हैं और चरण तलसे उन चरणों को ऐसी लाली है कि जितनी ज्योति और शोभा सब ब्रह्माण्डों में है उसीसे प्रगट हुई है और ऊपर से ऐसी मनोहर शोभा उन चरणों की है कि सब शोभा उसी सम्बन्ध से है बड़े और घुंघरू बिराजमान पीताम्बर धारण किये हुए उसपर क्षुद्र घंटिका यज्ञोपवीत शोभायमान मणिगण और तुलसी मंजरी और फूलों की माला कौस्तुभमणि कण्ठ में ऊपर भंवर गुंजार रहे हैं चारों भुजन में कड़े पहुंची बाजूबन्द आदि आभूषण वो शंख चक्र गदा पद्म शोभायमान सुखारविन्द देदीप्त मान और भाल पर तिलक शोभित मकराकृत कुण्डल कानों में शिरपर किरीट मुकुट पीताम्बर आदि की मन मोहनी मूरत श्रीवत्स चिन्ह वक्षस्थल पर और आप लक्ष्मी जी वामभाग में वैसोही शोभा से विराजमान चरण सेवा में और विष्वक्सेन आदि पार्षद कैंकर्य में तत्पर॥

अक्रूर की कथा॥

अक्रूरजी को शास्त्रों ने भक्तिनिष्ठा के उपासकों में लिखा है यदुवंशियों में सुफल्क के पुत्र पवित्र थे यद्यपि उनके रहने का संयोग कुसंग अर्थात् कंस के राज काज में था परंतु वे भगवत् चरणों में विश्वास दृढ़ रखते थे इस हेतु वह कुसंग कुछ हानि नहीं कर सका था बरु उन कुसंगियों को अक्रूर जीका चरण श्री वो आयुबल का कारण था जब कंसने श्री बलचन्द्र महाराज के ले आने के हेतु अक्रूर जीको भेजा तो अति आनन्द से तनमें न समाये इस आसा से कि इस बहाने से उन चरण कमलों को देखूंगा कि जो शिव और ब्रह्मादिक के स्वामी और नायक हैं और उस चन्द्र मुख को देख कर मेरी आंखें शीतल और सफल होंगी कि जिसके हेतु सब ब्रज सुन्दरी चकोरसी होकर अनूप रूप सुधा के प्यासे हो रही होतीं और जब दण्डवत करूंगा तो उन रक्त कमलों से मुखको को उठाकर हृदय से लगावैंगे कि जिनकी छाया कल्प वृक्ष के सदृश सदा भक्तों ने शिरपर रखी है ऐसे मनोर्थ करते हुए जब श्री वृन्दावन के निकट

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

पहुंचे तो व्रज भूषण महाराज के चरण कमलों के चिन्ह को पहिचान कर प्रेम तो स्नेह के आनन्द से अत्यन्त बेसुधि होगये और उन चिन्हों को अपना स्वामी वो इष्ट देव जान कर साष्टांग दण्डवत किया उसी प्रेम और उमंग में भरे हुए जहां जहां चरण चिन्ह देखे तहां तहां दण्डवत की और प्रेम के मदमें छके हुए श्रीनन्द जीके घर पहुंचे श्री भक्त वत्सल महाराज ने उनके हृदय कीप्रीति पहिचान कर उनकी चाहना पूर्ण करी और अति भावसे बलदेवजी सहित उनसे मिले जब प्रभात को नंदजी महाराज और बाल गोपालों समेत चलकर श्री यमुनाजी पर पहुंचे तो अक्रूरजी को प्रेम बश यह संदेह हुआ कि श्रीकृष्ण महाराज और बलदेवजी परम सुकुमार और शोभायमान बालक हैं मैं बड़ी मूर्खता करताहूं कि निर्दय वो महा बलवान मल्लोंके झुण्डमें कंसकी सभामें ले जाताहूं श्री ज्ञानराय महाराज को यह संदेह दूरकरना उचित मालूम हुआ और जब अक्रूरजी स्नान करने लगे तो यह चरित्र देखा कि कई वेर भगवत् को बलदेव जी और सब समाज सहित यमुना में और बाहर रथ पर देखा और फिर यहदेखा कि आप भगवत् शेष सय्यापर श्याम सुन्दर स्वरूप किरीट मुकुट मकरा कृतकुण्डल वो सब आभूषण सब अंगन में कौस्तुभ मणि और पीताम्बर पहिने हुए शंख चक्र गदा पद्म हाथों में लिये विराजमान हैं ब्रह्मा शिव यम काल यक्ष राक्षस गन्धर्व आदि भय वो त्रास युक्त चारों ओर खड़े स्तुति करते हैं और वह देखा जो कबहीं न सुना था अक्रूरजी का संदेह तुरन्त दूर होगया और यमुनाजीसे बाहर आकर अति प्रेम से दण्डवत किया और मथुरा को चले कंसके बध होने पीछे आप भगवत्ने उनके घर चरण लेजाय के और भक्ति का वर देकर कुलपरिवार के समेत कृतार्थ करदिया जब भगवत् द्वारिका को पधारे तो यादवों को अक्रूर जी के प्रताप और भक्ति के न जानने के कारण से बेविश्वासी और शत्रुता होगई और स्यमन्तकमणि के वृत्तान्त में भगवत् की आज्ञानुसार अक्रूर जी काशी को चलेगये उसी घड़ी द्वारका में ऐसा उपद्रव उठा और दुर्भिक्ष पड़ा कि सब दीन होगये और जब अक्रूर जी आये तब सब उपद्रव शांत हुआ एक और भक्ति का प्रताप विचारने वो लिखने के योग्य है कि स्यमन्तक मणि ऐसा था कि आठभार सोना नित्य आपसे आप जहां रहै तहां जमा होजाय और दरिद्रता आदि कोई उपद्रव तहां निकट नहीं आता परंतु दोष भी उसमें ऐसा था कि जहां रहा तिसकी हानि को क्रिया अर्थात् पहिले सचाजित मारागया जब उसका भाई लेकर भाग गया तो वह भी मरा जब जामवन्त के पास गया तो वहां भी यद्यपि भक्त होने के कारण से जामवन्त के बहुत उपद्रव न कर सका तौ भी जामवन्त को पराजय प्राप्त हुई तब आप भगवत् के पास गया तो भगवत्

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

से बलदेव जी को संदेह उत्पन्न होगया परन्तु जब अक्रूर जी के पास गया तो उसका सब दोष दूर होगया और पूर्ण फल मंगल हुआ ऐसे चरित्रों से भगवत् अपने भक्ति का प्रताप दिखाते हैं नहीं तो सब कोई जानता है कि भगवत् एक निमिष में कोटिन ब्रह्माण्ड प्रगट करके फिर नाश करता है तिसको गुण दोष से क्या प्रयोजन ॥

विंध्यावली की कथा ॥

विंध्यावली राजाबलि की पटरानी परम भक्त और पतिव्रता हुई जिस घड़ी राजाबलि से वावन जीने तीनडग धरती की जाचना करी और शुक्र-जीने समझाया कि यह विष्णु नारायण हैं उस घड़ी यह रानी निर्भर प्रेम में मग्न होगई और अपने और राजा के भाग की बड़ाई करती हुई लोटा का जल लेकर बारबार राजा से कहने लगी कि संकल्प करो २ और कारण कहने का यह था कि ऐसा न हो कहीं शुक्रजी के कहने से राजा का मन दान से फिर जाय संकल्प होने के पीछे जब भगवत् ने दो डग से दोनों लोक नापिलिये तो तीसरे डग के हेतु राजा को बांधा रानी को उस घड़ी राजा के बधने का शोच वो दुख तनक न हुआ वरु यह आनन्द हुआ कि राजा बड़ा भाग्यवान है कि उसको भगवत् के चरणों और हाथों का स्पर्श हुआ और फिर भगवत् से विनय करने लगी कि हे नाथ हे कृपासिंधु आपने दया वो करुणा जो कुछ इस राजा पर करी सो किस प्रकार वर्णन होसकै कि एक राज्य वो धनके अभिमानी को आप निज पधार के दर्शन दिया और कुल परिवार समेत पवित्र कर दिया पीछे रानी ने बिचारा कि राजा का राज्य वो धन भगवत् भेट होकर सफल होगया परंतु मुझ को और राजा को देह अभिमान बाकी है सो यह भी जो भगवत् अर्पण होजावे तो आगे परके देहके होने का बखेड़ा मिट जावै इस हेतु जब राजा ने अपने शरीर के नाप लेने वास्ते कहा तो रानी ने भी विनय किया कि महाराज मेरा अंग शास्त्र बचन के अनुसार आधा अंग राजा का है सो राजा का वो मेरा शरीर एक डगके बदले में नाप लीजिए भगवत् ने जब यह प्रेम रानी का आत्म निवेदन में देखा और राजा के दृढ़ बिस्वास पर निगाह को किया तो उस कृपा को किया कि जिसका वर्णन नहीं होसक्ता कि उसका थोड़ासा वृत्तान्त राजाबलि की कथा में लिखा गया कि वह कृपा भगवत् की रानी की परम भक्ति और आत्म निवेदन के कारण से हुई ॥

विभीषण की कथा ॥

विभीषण जो विश्रवा के बेटे पुलस्ति के पोते ऐसे परम भक्तहुए कि शास्त्रों में परम भागवत् लिखे गये और प्रभात ही उनके नाम लेने से

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

मंगल वो कुशल होता है बाल्य अवस्था ही से भगवत् चरणों में प्रीति रही जब अपने भाई रावण वो कुंभकर्ण के साथ तप किया तो बरदान के समय ब्रह्मा और शिव जीसे भगवत् भक्ति को मांगा जिनका चरण लंका में रावण आदि राक्षसों की संगति वो आयुर्बल का कारण था सो रावण को जब बिभीषण जीने त्याग किया तबही तुरन्त लंकापर विध्वंस अग्नि पहुंची और रावण आदि सब राक्षस मृत्यु के ग्रास हुए सूच्छ्म वृत्तान्त यह है कि जब रघुनन्दन महाराज की सेना समुद्र के किनारे पर पहुंची तो रावण ने अपने सब मंत्रियों से मंत्र पूछा बिभीषण जीने जो धर्म और नीति के ज्ञाता थे कहा कि कुशल तो इसी में है कि सीता जीको भगवत् के समर्पण करो और बिनय और प्रार्थना सहित चरणगहो वो संधिकरो नहीं तो बिग्रह बढ़ने से लंका की और तुम्हारी और सब राक्षसों की कुशल नहीं है रावण को यह मंत्र अच्छा न लगा और क्रोध करके राज सभा में एक लात मारी और कहा कि जिसकी बर्ग्ग वो पक्ष तू करता है उसीके पास जा बिभीषण जीने फिर भी साधुता की रीति से उसके कल्याण की शिक्षाकरी परन्तु जब सब प्रकार भगवत् से विमुख निश्चय करलिया तब उसका त्याग करके भगवत् चरणों के शरण में चले राह में यह मनोर्थ करते आते थे कि आज मैं उन चरण कमलों को दंडवत् करूंगा कि जो शिव और ब्रह्मादिक के भी इष्टदेव हैं और उस रूप अनूप को देखूंगा कि जिसको योगीजन समाधि लगाकर ध्यान करते हैं जब समुद्र के इसपार आये तो श्रीरघुनन्दनस्वामी को समाचार पहुंचे विनय निबेदन होने पर आनेको आज्ञादी सुग्रीवने विनय किया कि शत्रुका भाई है न जानै उसके मनमें क्या है अच्छा यह है कि बांधि लिया जाय रघुनन्दन स्वामी ने हंस के कहा यद्यपि तुमने राजनीति की बात कही परंतु मेरा प्रण शरणागत के भय को दूर करने का है जो कोई दोनों लोक के सब पापों में फंसा है और भयभीत होकर मेरे शरण आकर एक बेर यह कहता है कि मैं तुम्हारा हूं उसी घड़ी दोनों लोकके भयसे निर्भय कर देताहूं तो जो शरण आया है और बांधा जाय तो मेरे प्रण में भंग होगा और जो कपट करके आया है तो तौभी कुछ चिन्ता नहीं कि लक्ष्मण जी एक क्षण में सारे संसार के राक्षसों का संहार कर सक्ते हैं सो हर प्रकार से उसका आना उचित है यह सुनकर हनुमान वो अंगद वो जामवन्त आदि दौड़े और बड़ी रीति वो मर्याद से ले आये बिभीषणजीने दूरसेही धनुषबाण धारी के शोभायमान मुखकी शोभा देख करके दोनों लोकके दुख वो पीड़ाको बिदा किया और साष्टांग दण्डवत् करके अति दीनता से पुकार कर यह शब्द कहा कि हे शरणागत बत्सल शरणहू शरणपाल महाराज उस शब्द के सुनतेही उठे और छाती

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

से लगा लिया और बार्तालाप होनेपर यद्यपि भगवत् दरशन प्राप्त होने से विभीषण जीको कुछ कामना संसार के विषय की नहीं रही परन्तु दर्शन करने के आगे जो कुछ चाहना उनके मनमें रही उसकापूर्ण कारण भगवत् ने निश्चय समझा इस हेतु वह राज लंकाका कि जिसको रावणने हजारों बार अपने मस्तक को भेट कर करके शिवजी से पाया था उसी घड़ी विभीषणको प्रसन्न होकर देदिया और समुद्रका जल मंगाकर राज्य तिलक कर दिया रावणके बध होने पीछे जब बिभीषणजी राज्य लंकाका करने लगे तो वहांहीं लंका जो पहिले पाप और अपराधों से भरी हुई थी सो धर्म और भक्ति को रूप होगई बिभीषणजी को रामनाम में इतना बिश्वास था कि थोड़ासा वृत्तान्त उसका यह है कि एक जहाज किसी सौदागर का समुद्र में चलनेमे रुकि गया जहाज के मालिक ने अपने मंत्रियोंके कहने से एक आदमी को समुद्र की भेट करके समुद्र में डाल दिया वह बिचारा डूबता उतराता बहता बहता लंकाके किनारे जाय लगा यहां के लोग बिभीषणजी के पास उसको लेगये कि बिभीषणजी इस बिश्वास से कि ऐसेही आकार और स्वरूप मेरे स्वामी के हैं उसको भगवत् रूप जानी और प्रेम से सेवा पूजा करके सिंहासन पर बैठाला बड़ी मर्याद से रक्खा वह आदमी राक्षसों के संग से डर कर नित्य बिदा मांगे तब बिभीषणजी ने उस को बहुत रत्न देकर बिदा किया और समुद्र से पार होने के वास्ते उसके भाल में राम नाम लिख दिया वह मनुष्य उसीरामनाम की नौका पर समुद्रमें ऐसे सुखसे चला कि जहाज मेंभी ऐसा सुख नथा संयोगवश उसी जहाज के निकट पहुंचा और जहाज वालों ने चढ़ालिया उसने सब वृत्तांत और भक्ति बिभीषणजी की और रामनाम की महिमा को जहाज वालों से बर्णन किया वे लोग सब बिश्वास युक्त हुए और उस नाम को जपकर कृतार्थ होगये निश्चय करके यह नाम मंगल रघुनन्दन स्वामी का वह है कि जिसके प्रभाव से शिला समुद्र पे तर गई पापी और पातकी जितने इस संसार से उतरे हैं उनकी तो कुछ गिनतीही नहीं और बिभीषण जीनेभी यही समझ कर उसके भाल पर रामनाम लिख दिया कि करोड़ों महापातकी संसार घोर समुद्र को उतर गये तो एक मनुष्य का छोटासा समुद्र उतरना क्या बात है॥

गजराज की कथा॥

महाभारत वो भागवत् और दूसरे पुराणों में कथा बिस्तार से लिखी है कि गज वो ग्राह दोनों पहिले जन्मोंमें ब्राह्मण भगवत् भक्त थे ऋषेश्वरके श्राप से एक ने शरीर हाथी का दूसरे ने शरीर ग्राह का पाया वो पहिले जन्म की चतुता से इस जन्म में भी संयोग लड़ाई का पहुंचा इस प्रकार कि एक दिन वह गजराज पानी पीने के वास्ते गंडकी नदीमें जहां वह ग्राह रहता

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

था गया और ग्राहने गज का पांव पकड़ लिया ग्राह अपनी ओर जल में खींचता था और गज अपनी ओर इसी भांति एक हजार वर्षतक दोनों लड़ते रहे अन्त को ग्राह प्रबल पड़ा और गज को नदी में ले चला सूंड़माच थोड़ा सा डूबने को बाकी था कि गजने भगवत् की शरण ली अर्थात् एक कमल नदी में से तोड़कर अपनी सूंड़ में लेकर भगवत् भेटकिया और पुकारा कि हे हरि मैं तुम्हारे शरण हूं शरणागत वत्सल दीन दुख भंजन महाराज दुख से भरी ऊंची टेर सुनतेही बिकल होकर गरुड़ पर सवार चक्र फिराते हुए बैकुंठ से दौड़े और शीघ्र पहुंचने के हेतु ऐसी विकलता हुई कि जो गरुड़ का वेग मन के बराबर है उसको भी बल हीन समझ कर छोड़दिया और पियादे पायन धाये, गज की सूंड़ ज्यों की त्यों बाहरथी कि आनि पहुंचे और ग्राह के सुंह पर चक्र मारा कि सुंह उस का कट गया और गज उसकी फांसी से छुटा ॥ एक शंका यह है कि भगवत् सर्वत्र व्यापक हैं सो क्या कारण कि बैकुंठ से अवतार धारण करके आये उसी जगह से क्यों न प्रगट हुए सो हेतु यह है कि उस समय गजने बैकुंठ नाथ का ध्यान मनमें करके पुकार किया था इसी कारण से रीति के अनुसार भक्त की चाहना के अनुकूल बैकुण्ठ से आये और दूसरा यह कि यह चरित्र अपनी अधिक विकलता का कि अपने शरणागत के छुड़ाने के वास्ते दूसरे भक्तों के भाव बढ़ाने के निमित्त विख्यात करना उचित समझा इस हेतु बैकुंठ से आये भगवत् के शीघ्र पहुंचने के वर्णन में हजारों श्लोक वो कवित्त कवि लोगों ने रचना किये हैं उनमें से दो चार का भाव सूक्ष्म करिके यह हैं ॥ हा इन सिटन पाइ आये हरि आतुर हुये ॥ अर्थात् पुकार की भनक न मिटी थी तब तक विकल हुए आय पहुंचे ॥ दूसरा——राकह्यौ कदन माहि मा कह्यौ मगनमें ॥ अर्थात् गजने राम पुकारा तो ऐसी शीघ्रता से आये वो रक्षा करी किराशब्द तो पीड़ा वो रोतेमें मुखसे निकला और म शब्द आनन्दमें मुखसे निकला ॥ तीसरा——पानी में प्रगह्यो कैधौं बानी में गयंद के ॥ अर्थखुला है ॥ चौथा——आयो चढ़िवाही के मनोरथ महारथी ॥ अर्थात् उसी की चाहना पर चढ़ कर आये ऐसी लाघवता करी ॥ पीछे गजने भगवत् की स्तुति करी कि गजेन्द्र मोक्ष स्तोत्र में लिखा है कि जो कोई उसका पाठ करता है भगवत् धामको जाता है भगवत् ने प्रसन्न होकर अपना परमपद गजराज को दिया और भगवत् दर्शन वो चक्र के स्पर्श होने से ग्राह को भी परम पद मिला ॥

ध्रुवजी की कथा ॥

ध्रुव जीकी कथा बहुत से पुराणों में लिखी है और सब लोग जानते हैं इस हेतु थोड़ीसी में लिखता हूं जन्म उनका राजा उत्तानपाद वो रानी सुनीति से हुआ एक दिन राजाने दूसरी रानी का बेटा उत्तम नामी को

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

गोद में बैठाया था ध्रुव जी ने भी गोद में बैठने की इच्छा की सुरुचि रानी जो दूसरी थी तिसने कहा कि तू जो मेरे उदर से जन्म लेता तेरा राजा की गोद में बैठने योग्य होता यह कह कर बैठने न दिया ध्रुव जी ने लज्जा वो हीनताई से उसी घड़ी भगवत् शरण ली कि सिवाय भगवत् शरणागति के दूसरा शरण दिखलाई न पड़ा अपनी माता से आज्ञा लेकर भगवत् भजन करने घरसे चले राहमें नारद जी ने समझाया न फिरे तब द्वादशाक्षर मंत्र का उपदेश कर दिया ध्रुवजी मथुरा में आये मंत्र जप करके भगवत् को प्रसन्न किया सो शरणागत वत्सल दीनबन्धु महाराज आये अपना हस्त कमल ध्रुवजी के माथे पर रख कर भक्ति वरदान देकर कहा कि छत्तीस हजार वर्ष इस पृथ्वी का राज्य करके फिर अटल लोक का राज्य करोगे अब तुम अपने घर जाव ध्रुव जी अपने घर को आये पिता उनका नारद जी की आज्ञा वो समझाने से ध्रुव जी को आगे जाय के बड़ी रीति मर्याद से ले आया और ध्रुव जी को राज्य तिलक देकर आप भगवत् भजन करने को वनको चला गया ध्रुव जीने छत्तीस हजार वर्ष न्याय धर्म पूर्वक राज्य किया और भगवत् धर्म को सारे संसार में फैलाया उत्तम नामे ध्रुवजी का भाई था उसको कुबेर के अनुचरों ने मारडाला ध्रुवजी कुबेर पर चढ़ गये एक लाख अस्सीहजार कुबेर के अनुचरों को बध किया स्वायंभुमनु आये कुबेर का अपराध क्षमा कराया पीछे उसके ध्रुव जी अपने दोनों माता पिता समेत ध्रुव लोक को गये और जब महाप्रलय होगी तब भगवत् के परम पदको जायंगे॥

जटायु की कथा॥

सब रामायणों में कथा विस्तार से लिखी है कि जटायु पक्षियों का राजा परम भक्त भगवत् का हुआ और अपने शरीर को भी भगवत् पर निछावर कर दिया जब रघुनन्दन महाराज दण्डक बन में आये और पंचवटी से सीता जीको रावण चुराकर ले गया: तो सीता जी भगवत् विरह से व्याकुल होकर महा विलाप करती जाती थीं जटायु ने जानकी जीको पहिचान कर रावण के प्रताप वो लंका कुछ भय न किया अधीर होकर दौड़ा वो अपनी चोंच वो पंजों से रावण को मार कर गिरा दिया सीता महारानी को छुड़ा लिया और एक जगह बैठाल कर रावण से लड़ने को सन्नद्ध हुआ ऐसा लड़ा कि जिस रावण ने सारे देवता वो राजाओं को विना परिश्रम जीत लिया था उसको बेसुधि शतक की नाई कर दिया रावण चकित वो क्रोधवन्त हुआ तरवार से पंख काटि दिये यद्यपि ऐसी दशा में भी बल वो पराक्रम बहुत किया परन्तु जब कि पक्षी बिना पक्ष के शतक के सदृश हैं वह परिश्रम कुछ काम न आया रावण दो चार कारीघाव देकर चलागया सीताजी को ढूंढ़ते हुए रघुन-

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

न्दन महाराज और लक्ष्मण जी जटायु के पास पहुंचे उसी घड़ी तक प्राण जटायु का शरीर में था रघुनन्दन महाराज के दरशन करके सब दुख सुख शत्रु मित्र साधु असाधु मन से दूर हुए सिवाय रूप अनूप भगवत् के भीतर बाहर कुछ न रहा पीछे रघुनन्दन महाराज से सब वृत्तान्त कह कर प्राणों को विदा मांगी श्री करुणा कर कृतज्ञ ने जटायु को अपनी गोद में रख कर शरीर पर हस्त कमल फेरा उस समय के चरित्र में एक कवित्त तुलसी के पिता का कहा हुआ लिखता हूं॥

कवित्त॥

दीन मलीन अधीन है अंग बिहंग परो छिति छिन्न दुखारी।
राघव दीन दयालु कृपाल को देखि दुखी करुणा भइ भारी॥
गीधको गोद में राखि कृपानिधि नयन सरोजन में भरि वारी।
बारहि बार सुधारत पंख जटायु की धूर जटान झारी॥ १

और शोक के दुख से बिकल होकर आंखन में आंसू भरि कहा कि तनक छोड़ना क्या प्रयोजन अटल और निश्चय कर सक्ता हूं जटायु ने कहा कि जिसका नाम करोड़ों जन्म के पातकों को दूर करके परम आनन्द को पहुंचा देता है सो पूरणब्रह्म सच्चिदानन्द घन मुझको अपनी गोद में लेकर मेरे शिर पर हाथ फेरता है और प्यार करता है और मैं उस स्वरूप को कि जो शिव जी के भी ध्यान में कबहो बहुत कष्ट से आता है तिस को देख कर आनन्द में मग्न हूं तो इस घड़ी से सिवाय और कौन सी घड़ी अच्छी होगी कि इस अनित्य शरीर को छोड़ूंगा यह कह कर भगवत् चरणों का चिन्तवन करता हुआ तनको छोड़ कर स्वरूप मुक्तिको प्राप्त हुआ भगवत् की स्तुति करके परम शोभायमान बिमान पर आरूढ़ होकर परम धाम को गया भगवत् ने उसके शरीर को दाहादिक क्रिया को आप किया और जिस प्रकार दशरथ महाराज को तिलांजलि दिया था उसी प्रकार जटायु को भी दिया धन्य है इस कृपालुता वो दीन वत्सलता को भगवत् की कि वैसे २ तुच्छ किस पदवी को पहुंचाते हैं कि जहां मन वो बुद्धि का प्रवेश नहीं॥

मामू भांजे की कथा॥

मामू भांजे दोनों ऐसे परम भक्त हुए कि भगवत् को अपनी सेवा से प्रसन्न किया और प्राण तक भगवत् की निछावर करदिया पहिले जब भगवत् शरण हुए तो घरबार सब त्याग करके तीर्थयात्रा करते हुए फिरने लगे पंडित और ज्ञानवान थे यात्रा करते में किसी बन में देखा कि परम शोभायमान भगवत् की मूर्ति है परन्तु मन्दिर नहीं सो मन्दिर बनवाने का विचार करके द्रव्य के अन्वेषण में फिरने लगे कहीं कुछ न मिला किसी नगर में सेवड़ों के देवता की प्रतिमा पारस पाषाण की

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

सुनी प्रसन्न हुए कि अब मन्दिर मन माना बनजायगा परंतु शंका यह हुई कि सरावगियों के चौताले में जानामना है कैसे जावें फिरि यह विचारा और निश्चय किया कि यह शरीर भगवत् शरण है भगवत् जिस बात में प्रसन्न हों सो बात करनी चाहिये और भगवत् शरणागतोंने जो नर्कादिक का भय किया तो शरणागती को दृढ़ता नहीं नितान्त सेवड़ोंके मन्दिर में जाकर चेले होगए और ऐसी सेवा उस मन्दिर और सेवड़ों की करी कि सबने बुद्धि हीनता करके सब कारबार मन्दिरका उनको सौंप दिया जब देखा कि सब कारबार अपने बसमें आगया तो मूर्तिके ले जाने की चिन्ता की परंतु राह निकालने की न मिली द्वार संकीर्ण था कारीगरने जो मन्दिर बनाया था उनसे युक्तही युक्त भेद लिया कि गुम्मज के ऊपर जो कलश है पेच लगा कर दृढ़ किया गया है और वह पेंच खुल सक्ता है और वहीं मूर्ति के आने जाने की राह है रात को दोनों आपुस में मंत्रणा करके पहिले उस कलश को उतारा फिर भांजा उस राह से निकल कर गुम्मजपर चढ़ गया मामू ने मन्दिर के भीतर बैठकर उस मूर्ति को अच्छे प्रकार दृढ़ रस्सी से बांधा वो भांजेने ऊपर खींच लिया जब मूर्ति के मिलने से मन स्थिर होगया तो मामू ने भी उसी राह से निकलने को चाहा परंतु अति हर्ष होने के कारण से शरीर ऐसा मोटा होगया कि उस राह से न निकल सका उसी में फंसगया कितनेही उपाय किये परंतु कुछ बस न चला मामू ने अपने भांजे से कहा कि जो मेरा शरीर यहां रहा तो कुछ चिन्ता नहीं वो न कोई बात दुख की है मनोर्थ जो था सो सिद्ध होगया उचित यह है कि तुम जाकर भगवत् मन्दिर जैसी कांचा है बनवाओ और मेरा सिर काटकर कहीं डालदेव कि मेरे कानों में साधु भेष की निन्दा शब्द सेवड़ों के मुखकी पड़ने नपावे क्योंकि साधु भेष वास्तव करिके भगवत् भेष है भांजे ने शोक सेदुःखित होकर मामूके कहने के अनुसार किया अर्थात् उसका शिर काट लिया और मूर्त्ति को लेकर चला यद्यपि ज्ञानी थो भगवत् शरणागती के दृढ़ता से कुछ शोच अपनेमामू के मरजाने से नहीं ले आया परन्तु सत्संग को समुझकर वो परम भागवत के बिछुड़ने से ऐसा शोक समुद्र में पड़ा कि किसी भांति चित्त को चैन नहीं सो कबहो शोकमें दुखित कबहीं मूर्त्ति के मिलने के आनन्द में मग्न होता जहां मन्दिर बनवाने का बिचार किया था तहां पहुंचा दूरसे देखा कि कोई मन्दिर के बनवाने की तैयारी में तत्पर है अपने मनमें जाना कि कोई दूसरे मनुष्य ने मन्दिर के बनवाने का कार लगाया है दुखित हुए जब और समीप पहुंचे तो देखा कि मामू खड़ा है और मन्दिर बनवाने के काममें तत्पर है अति आनन्द से दौड़ कर दोनों मामू भांजे मिले और मन्दिर रंगनाथ स्वामी का ऐसी शोभा वो तैयारी से बनवाया कि वैसा दूसरा संसार में नहीं॥

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

राघवा नन्द की कथा ॥

राघवा नन्द जी रामानुज स्वामी की संप्रदा में परम भक्त और हरि भक्तों को आनन्द के देनेवाले हुए जिसदेश में रहते थे उसको काशी जीके सदृश कर दिया चारो वर्ण अर्थात् ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र और चारों आश्रम अर्थात् ब्रह्मचर्य गृहस्थ वानप्रस्थ संन्यस्थ को भगवत् भक्ति में दृढ़कर दिया रामानन्द जीको स्वयं मुखसे निकाल कर साढ़े सातसौ ग्रंथ को आशुर्वल्क को देदिया कि रामानन्द जी की कथा में वृत्तांत लिखागया है ऐसे २ प्रभाव उनके बहुत हैं महिमा उनकी कौनलिख सक्ता है ॥

जगन्नाथ की कथा ॥

जगन्नाथ बेटे रामादास जीके पारीक ब्राह्मण कान्हड़ाकुल में धर्म और भक्ति के मर्याद हुए श्री रामानुज संप्रदा के अनुकूल भगवत् शरण होकर मन को लगाया और उपासना के शास्त्र अच्छे पढ़कर निज अभिप्राय उपासना का भली प्रकार सब समझा सार और असार को ऐसा न्यारा २ कर दिया कि जिस प्रकार हंस दूध और पानीको अलग अलग कर देता है मुनीश्वरों की भांति आचार औ धर्म का आचरण करते थे और अनन्य शरणा गती वो दश प्रकार की भक्ति के करने वाले दृढ़ हुए पुरुषोत्तम अपने गुरूके प्रताप से दोनों अंगमें कवच जिसको बख्तर कहते हैं पहिना थे इसके अर्थ कई भांति के हैं प्रथम यह कि ये महाराज पुरोहित राजा के थे और शूरता बीरता में विख्यात सो एक जो शरीर है उसमें बख्तर पहिना करते थे जैसा सिपाही लोग पहिनते हैं और दूसरा अंग जो मन है तिसमें सहिष्णुता वो क्षमा का बख्तर धारण था कि किसी की कठोर बानी रूपी शस्त्र न लगै दूसरा यह कि दोनों अंग जो दोनों भुजा तिसपर शंख और चक्र के चिह्न धारण करके कलियुग के पाप जो तीरवो तरवार के सदृश हैं उनसे शरीर को रक्षा किया तीसरा यह कि प्रगट अंग में श्रीवत्स सेवा का ऐसा कवच पहिना था कि संसारी कार्य जो तीरव तरवार सेभी अति तीक्ष्ण हैं कदापि नहीं काम कर सकते थे और हृदय में भगवत चिन्तवन रूपी कवच पहिना था कि जिस करके दूसरी चिन्ता रूपी शस्त्रस्पर्श नहीं कर सकता था ॥

लक्ष्मणभट्ट की कथा ॥

लक्ष्मणभट्ट जी रामानुज संप्रदा में परम भक्त शरणागती मार्ग के हुए भक्ति का आचरण मुनीश्वरों के अनुसार करते थे और भाव वो भगवत धर्म और भगवत् भक्तों की सेवा और दश प्रकार की भक्ति में विख्यात हुए संतोष वो क्षमा वो प्रेमकी मूर्ति थे और मन कबहीं स्वप्नमें भी संसारी कार्यके सिद्धके अर्थ नहीं सावधान होता था परम धर्म जो शरणागति है उसका प्रति पालन करके सब लोगों को उपदेश किया और श्री भगवान

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamakar Mishra Collection, Varanasi

वत को विचार कर सार और असार को अलग अलग कर दिया। भगवत् कीर्त्तन में अहर्निश और भजन सुमिरन में वैसेही थे॥

निष्ठा बाईसवीं॥

जिसमें महिमा सखाभाव वो वर्णन कथा पांच भक्त उपासकों की॥

श्रीकृष्णस्वामी के चरण कमलों की सुकुट रेखा को दण्डवत् करके भू अवतार को दण्डवत प्रणाम करता हूं कि बिट्ठौर में अवतार धारण कर के भागवत् भक्ति और शरणागती के स्वरूप को जगत में प्रगट किया जाने रहो कि कोई २ पुराणों में भू अवतार के स्थान नारद जी का अवतार लिखा है सखाभाव के उपासकों का यह सिद्धांत है कि ईश्वर और जीव दोनों परस्पर सखा अर्थात् मित्र हैं और ऐसी मित्रता वो स्नेह दृढ़ है कि ईश्वर को जीव बिना ईश्वरता न हो और न जीव ईश्वर बिना हो सक्ता है अर्थात् को जीव नहो तो ईश्वर को कोई नहीं जानता और जो केवल जीव हो और ईश्वर न हो यह बात होने की नहीं क्योंकि बिना ईश्वर जीव नहीं हो सक्ता जो कदाचित् यह वाद कोई करै कि मित्रता दोनों की आपुस में बराबर के हों तब होती है सो कहां तो जीव कि हजारों प्रकार की पीड़ा जन्म मरण वो पाप पुण्य में फंसा है और कहां वह ईश्वर जिसका स्वरूप मन वो बुद्धि में न आयसकै और बेद जिसको नेति नेति कहते हैं और माया के गुणों से अलग नित्य निरीह निर्विकार अच्युत अनन्त पूर्ण ब्रह्म परमात्मा सच्चिदानन्दघन हैं इस विवाद का उत्तर प्रगट दृष्टांत से समझ लेना चाहिए कि पहिले तौ मित्रता के व्यौहार में कुल वो ढंग वो मर्यादा वो बुद्धि वो चतुराई वो सुन्दरताई वो वस्त्र की पहिरन वो आभूषण की सजावट इत्यादि सब सामा सब तुल्य वो बराबर होना योग्य होता है तिसके पीछे अपना अपना भाग्य है कि एक बादशाह होजाय और दूसरा दरिद्र रो ऐसाही दृष्टान्त जीव और ईश्वर को मित्रता का है अर्थात् जैसा ईश्वर निर्विकार प्रकाशवान ज्ञानानन्दस्वरूप है वैसाही दो एक बातों के न्यून विशेष करके जीव है कुछ भेद नहीं दोनों के बीच में माया के स्वरूप का आचरण जंजाल हुआ सो जीव तो अणु अर्थात् छोटा वो अल्पज्ञ था इस कारण करिके वह तो माया को देख कर मोहित हो गया और उसके जाल में फंस गया और ईश्वर कि जो अनन्त वो सर्वज्ञ सो वह माया से ज्यों का त्यों अलग वो परे रहा यद्यपि ईश्वर ने अपने मित्र के छूटने के हेतु बेद वो शास्त्र के द्वारा उस मित्र को अपना और उसका स्वरूप बतलाया और अपने नाम को प्रगट किया और सकड़ों हजारों उपाय जैसे मंत्र जप वो यज्ञ वो दान वो दया वो कर्म वो ज्ञान वो वैराग्य वो नवधा भक्ति इत्यादि की प्रवृत्ति करी परंतु वह जीव उस माया के मोह में ऐसा फंसा कि कुछ

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

न संकल्पा. और अपना और अपने मिच का स्वरूप संपूर्ण भूल गया सो जब अपने और ईश्वर और माया के स्वरूप को जान कर छूटने के निमित्त उपाय करै तब फिरि अपने मिच का मिलन और परम आनन्द को प्राप्त होय॥ अब बड़ी शंका यह उत्पन्न ऊई कि जब ईश्वर और जीव मिच हैं और वहे ईश्वर कि जिस की माया में यह जीव फंसा ऊआ है उसके छुटाने को चाहता है तो फिर कौन हेतु यह जीव माया में बंधा है आप ईश्वर क्यों नहीं छुड़ालेता सो यह शंका नई नहीं है वही बात है कि जो शास्त्रों में ईश्वर की दयालुता वो कृपालुता जीव पर बर्णन करी है और संसार के सृष्टि की परंपरा के बने रहने के हेतु कर्म की विशेषता प्रगट करके मुक्ति का होना ज्ञान से अर्थात् पाप पुण्य ये दोनों कर्मों के दूर होंने पर बर्णन किया है सो जो उत्तर इस शंका के समाधान के हेतु शास्त्रों के सिद्धान्त के अनुसार वहीं निश्चय ऊआ है सोई यहां समझ लेना चाहिये और जो सखा भाव की रीति के उत्तर की चाहना होय तो यह है कि संसारी वो पारलौकिक सब कार्यों की रीति वो पद्धति का जानने वाला ईश्वर से अधिक दूसरा कोई नहीं इसी प्रकार मिचता की रीतिभी भगवत् से अच्छा दूसरा कोई नहीं जानता और मिचता की रीति में दोनों मिच बराबर आचरण करते हैं जो एक मिचने शिष्टाचार किया तो उसके बदले में दूसरा मिच उसे अच्छा शिष्टाचार करदेता है और विवाहादि में जो एक मिचने सौ रुपैया उठाया तो दूसरा मिच भी उसके विवाहादि में उतनाही उठाता है सो इस बराबरी के रीति के अनुसार जो ईश्वर बिना सन्मुख भये जीव की माया को दूर करके मिलने के वास्ते आवै तो रीति और मूल मित्रता की बिपरीत हो जाय जो यह कहिये कि जीव के सन्मुख होने पर कौन प्रबन्ध था आप ईश्वर ने अपने मिच के मिलने के हेतु अगुताई क्यों की कि मिचता में मिचका अपने घर आना अथवा आप उसके घर जाना दोनों बात बराबर हैं सो जाने रहो कि भगवत् की ओर से अगताई वो हठ अच्छे प्रकार से ऊई और कदापि कोई रीति में चूक न ऊई अर्थात् अपना और उस मिचका स्वरूप बर्णन करके और वेद वो शास्त्रों को संदेशा पहुंचाने वाले के भांति भेज कर मिलने के वास्ते संदेशा भेजा और अपना नाम और लक्षण प्रगट किया तिसके पीछे मिलने का उपाय बतलाया और अबतक सर्व काल सर्व जगह मिलने के वास्ते सन्मुख वो प्राप्त है तो ईश्वर की ओर से कौन चूक है सब चूक इस जीवकी है कि कदापि उसे मिलना नहीं चाहता वो न सन्मुख होता है॥ यहां जो कोई संदेह करै कि बात तो माया से छुड़ाने की पड़ी है तुम मिलने की बात लिखते हो प्रश्न और उत्तर और सो संदेह कुछ नहीं है माया से छूटने का तात्पर्य्य ईश्वर से मिलने का है और ईश्वर से मिलने का अभि-

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamakar Mishra Collection, Varanasi

प्राय माया से छूटने का हैं बात एक ही है केवल बातके कहने का फेर फेर है ॥ अब यह निश्चय कैसे होय कि जीव और ईश्वर पुराने मिल हैं सो वेद श्रुती में स्पष्ट यही बात लिखी है और श्रीमद्भागवत के चौथे स्कंद पुरंजन की कथा में विस्तार से निर्णय करिके लिखी है कि जीव और ईश्वर दोनों आपुस में मिल हैं इसके सिवाय जहां नवधा भक्ति का वेद और शास्त्रों ने वर्णन किया है तो वहां सखाभाव की भी भक्ति लिखी है तो जो जीव और ईश्वर आपुस में मिल नहीं होते तो सखाभाव की भक्ति और उसकी रीति वेद और शास्त्र में क्यों लिखी जाती ॥ और सखाभाव के आराधन की रीति दूसरी निष्ठाओं की रीति के अनुसार है केवल इतना भेद है कि दूसरी निष्ठाओं में स्वामी इत्यादि ज्ञानि के सेवा पूजा करते हैं और इस निष्ठा में मिल वो बराबर समझ कर सेवा होती है और भगवत् ने चौथे स्कंद पुरंजन उपाख्यान में कहा है कि दूसरी भक्ति तो गुरू के उपदेश से मिलती है और सखाभाव वो आत्मनिवेदन को मैं अन्य उपदेश वो शिक्षा करता हूं इस भांति से सखाभाव में जिस घड़ी भक्त का मनलीन होता है उस घड़ी आप भगवत् उसके हृदय में प्रवेश वो प्रकाश करता है यह रस जिस किसी ने पान किया तुरन्त मतवारा वो बेसुध हो गया सब सखाभाव वालों के मन की लाभ भगवत् चरित्रों में अपने मन के रुचिके अनुसार है जैसे कि बदरिकाश्रम में नर नारायण सखा हैं उनकी प्रीति तप और ज्ञान के चरित्रों में है ॥ अर्जुन और श्री कृष्णमहाराज की प्रीति महाराजों के सदृश और ब्रजगोप कुमारों की खेल और हंसी गोप कुमारों के सदृश और अयोध्या के राजकुमारों की प्रीति भगवत् चरित्रों में महाराज कुमारों के हंसी खेल के सदृश हुई और इसी प्रकार सबके भाव अलग अलग हैं जिस ओर जिस किसी का चाह है उसी भांति की तैआरी से सेवा और भगवत् आराधन किया करता है वह आराधन वो सेवा पूजा जो नव अथवा सात बेर नित्य न होसकै तो तीन बेर से कम नहो खोच पाठ और नाम वो मंत्र जप अलग रहा वो हरघड़ी मनसे ध्यान उस ओर लगा रहना नित्य नेम की सेवा पूजा से अलग बात है कि सब सेवा पूजा वो उपासना उसी के हेतु है यह उचित वो परम सिद्धांत है इसकाल में उपासना इस सखा भाव की माधुर्य वो शृंगार के विचार से विशेष करिके प्रवृत्त है कैराम उपासक हों अथवा कृष्ण उपासक और सिद्धांत विचार सेभी जितनी प्रीति की दृढ़ता वो वृद्धि माधुर्य भाव में शीघ्र होती है और दूसरे किसी भाव में इतनी शीघ्र नहीं होती है थोड़े दिन बीते हैंगे कि अयोध्या जीमें रामसखे महाराज और उन के चेले प्रेम सखे जी सखा भाव की प्रभा और भक्ति के देश के राजा हुए रामसखे जी का एक ग्रन्थ इस भाव का है उसमें माधुर्य को मुख्य करके रक्खा है और ब्रजमें जो निर्णय

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

इस बातकी करी गई तो वहां विशेष करिके प्राधान्यता माधुर्य की सर्वावस्था में उचित वो योग्य ठहरी कि व्रजमें चरित्र भगवत् के सब शृंगार और माधुर्य के स्वरूपही हैं अनन्य भाव भगवत् में और यह बात कि उपासक को भूलकर भी अपने उद्धार वो मुक्ति के वास्ते दूसरे देवता का चिन्तवन न होवे जैसे अनन्यता सब निष्ठाओं में सिद्धांत है इसी प्रकार इस निष्ठा में ज्यों की त्यों है महिमा इस निष्ठा और उपासकों की वर्णन नहीं होसक्ती क्योंकि इस निष्ठा और भगवत् वो इस निष्ठा के उपासकों में वार बराबर भी भेद नहीं सब एक हैं॥ भगवत् उपासक लोगों ने इस सखा निष्ठा को पांचों रसों में एक रस वर्णन किया सो उस रीति के अनुसार भगवत् श्रीकृष्ण अथवा श्रीराम के विषय चतुराई में वो चोज वो कटाक्ष लेके बोलने वो शीघ्र समझने वो हाव भाव वो झटिति उत्तर देने में प्रवीण वो प्रगल्भ वो नव योवन परम शोभायमान कि जिसके सुखके सन्मुख सब शोभा वो सुन्दरता धूल हैं वस्त्र वो आभूषण जैसा जहां चाहिये सब अंगन में पहिने हुए विषया लंबन हैं अर्जुन वो सुदामा वो श्रीदामा आदि ब्रजग्वाल वो दूसरे भक्त सखाभाव के आश्रयालंबन हैं वो सामग्री शृंगार वो माधुर्य वो हंसी वो ठट्ठा वो आपुस में खेलना एक साथ भोजन करना एक संग शयन करना एक साथ बैठना एक साथ रहना एकही साथ उपवन पुष्पवाटिका आदि में विहार को जाना आपुस में शृंगार वो छोबकी सजावट करना ऐसे ऐसे हजारों भाव सामग्री प्रथम वो द्वितीय अर्थात् विभाव अनुभाव की सामा है वो सामा तीसरी अर्थात् आठों सात्विक सब इस रसमें अपनी प्रवृत्ति करते हैं और यह सख्य रस शृंगार रससे मिश्रित हैं इस हेतु तेतीसों प्रकार के व्यभिचारी अर्थात् सामा चौथी इस रसमें वर्त्तमान होते हैं थाई भाव इस रस का वह है कि उस परम मनोहर मित्रके स्नेह में इतनी दृढ़ता वो पक्कता होय कि कदापि तनक स्वप्न वो ध्यान में मनकी लगन दूसरी ओर न जाय और अचल चित्त की वृत्ति उस मित्र मनोहर के प्रेम में मग्न रहै॥ हे श्री कृष्ण हे दीन बत्सल हे प्रणतारत भंजन महाराज मैंने सुना है कि आपके न्याय वो रक्षासे कोई बली किसी दुर्बल को सताने नहीं सक्ता और दीन वो दुखी न्याय पावते हैं सो कृपा सिंधु महाराज मेरे वास्ते न जाने वह न्याय वो कृपा कहां गई कि यह महामोह दिन राति भांति भांति के उपद्रव करता है वो अनेक जन्मों से दुखी वो दीन कर रक्खा है सो आपके कृपा वो न्याय में कुछ संदेह नहीं परन्तु मेरी अभाग्य दशा है कि उस पापी के पंजे से छूटने नहीं पावता अब आपके श्री द्वार पर दीन होकर पुकारता हूं कि एक बेर किसी प्रकार उसके उपद्रव वो उपाधि से छुड़ाकर मेरे मनको अपने रूप अनूप के चिन्तवन में लगा दीजिये कि जो सब वेद और

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

शास्त्रों का सार और एकान्ति निजभक्तों का जीवन वो आधार है॥

कवित्त॥

कर कंजन मंजुबनी पहुंची धनुही शरपंकज पानि लिये।
लरिका संग डोलत खेलत हैं सरयू तट चेहट हार हिये॥
तुलसी असबालक सो नहि नेह कहा जपयोग समाधि किये।
नरसोखर शूकर स्वान समान कहो जगमें फल कौन जिये॥

तिलक॥

बिनाधागेके माला पहिरे हुए अभिप्राय यह कि वह सखी जिसके यहां रात को रहे सो जो माला पहिने थी उसका स्पष्ट छाती पर शोभायमान है॥ हंसके गतिकी तात्पर्य यह है कि रात के जगने से मतवारी चाल है॥ अधरन पद वज्र वचन अर्थात् दोनों होंठ कई बेर के पान खाने और सखी के लाल होठों की लाली भी लग जाने से अत्यन्त लाल हो रहे हैं अथवा अधर के आगे जो नकार है सो लाली को नहीं कहता है अर्थात् यह कि सखी ने अधरा मृत पान किया है इस कारण से होठों की लाली जातीरही और शोभा वो छवि चढ़िके है हेतु यह कि बहुत अच्छीभांति शृंगार करके ठटि कर गये थे॥ तिलक पद के आगे नकार सो एक अर्थ तो वज्रवचन सूचित करता है अर्थात् सखीके॥

मल—बिनगुनमाल वारे चलन मराल वारे अधरन लालवारे शोभा मदभारे हैं।
तिलकन भालवारे जलन तमालवारे मूरति बिशालवारे दृगअनियारे हैं॥
पीतपटवारे लटवारे नटवारे पुष्पोद्यारी लेटवारे तूतोमोहनी मनडारे हैं।
चोर पर वारे चितचोरपरवारे सुनमोर परवारे तेरी मोर परवारे हैं॥

भालके तिलक के चिन्ह होने से बहुत से तिलक होगये हैं दूसरा अर्थ नकार का नहीं रहने तिलक के है अर्थात् मिलने वो आलिंगन गाढ़ करने से भालपर तिलक न रहा दलमल गया जलज जो कमल वा तमाल जो वृक्ष सुन्दर होता है तैसे सुकुमार वो श्याम वो शोभायमान अथवा कमल दिनमें शोभित होता है परन्तु तुमने यह आश्चर्य किया कि तमाल अर्थात् सघन अंधेरी में कमल की भांति आपप्रफुल्लित हुए और दूसरे को प्रफुल्लित किया मूरति बिशाल वाले कहने का यह हेतु है कि तुम ऐसे ही कोमल अंग और छोटे से स्वरूप वाले नहीं युवा लोगों का काम करते हो और अनियारे आंखो से यह अभिप्राय है कि रातको उनीदी हैं तिस करिके हृदय में चुभते हैं अथवा काजर की तीक्ष्ण रेखा से बरबस कलेजे को बेधती हैं॥ पीताम्बर वाला कहने से छबिसंवार कर जाने का है और लटवाला कहने से हेतु यह है कि केश कहां गुन्दवाये और नटवाला कहने से अभिप्राय स्फूर्त्ति वो चमकता के जताने का है और यमुना किनारे वाला कहने से तात्पर्य वो कटाक्ष यह है कि रातको वन के कुंज में रहैं और मन का

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

मोहलेने वाला कहने का यह हेतु है कि वह ऐसी दगादेने वाली सखी है कि तुम को भी मोहित करलिया ॥ चोर अर्थात् माखन चोरी का स्वभाव तो पहिलेही से था परन्तु अनचित्त के चुराने का भी स्वभाव वैसाही हुआ सुनते मोरमुकुट के मुकुट वारे तेरी मोर अर्थात् चिभंगी लचकन पर मैं बलिहारी होगई अर्थात् तेरा मन दूसरी ओर लगै तो लगै परन्तु हम को सिवाय तेरे दूसरा प्राण अधार नहीं ॥ यद्यपि यह कवित्त धीराखण्डिता का है परन्तु इसके सब पद प्रेम और रस और ब्रजराज महाराज के ध्यान और शोभा और माधुर्य को प्रकाशित करते हैं इस हेतु इस का लिखना उचित जान कर लिखा ॥

अर्जुन की कथा ॥

अर्जुन महाराज के सखाभाव का वर्णन कौनसे हो सकता है जिनके भावना और भक्ति के बश होकर वह पूरण ब्रह्म सच्चिदानन्द घन जो मन वो बुद्धि में नहीं आयसक्ता सो रथवाहे उनका हुआ यद्यपि अर्जुन महाराज फुफेरे भाई श्रीकृष्ण स्वामी के थे परन्तु सखाभाव मुख्य था बैठना उठना वा खाना पीना वो लीला बिहार वो हंसना बोलना मिलना मिचवत् था युधिष्ठिर वो भीमसेन आदि के सदृश भाई चारे की रीति न थी जो जो भगवत् ने कृपा वो सहायता की बिस्तार करिके सो कथा महाभारत में लिखी है उन का वर्णन इस कथा में प्रयोजन नहीं समझा क्योंकि मित्रता में जिस किसी से जो कुछ भलाई आपुस में होय सबयोग्य है एक वृत्तांत निष्कपटता का लिखा जाता है अर्जुन महाराज जब सुभद्रा जीकी शोभा वो सुन्दरता को देखकर हजार जीव से आशक्त होगये तब सच्ची मिताई के विचार से प्रसन्नता वो उदासी का कुछ शोच न किया अपनी प्रीति वो बिकलता का वृत्तांत सत्य २ श्रीकृष्ण स्वामी से कहिदिया वो श्री महाराज की सुभद्रा जी उनकी यद्यपि बहिन थी परन्तु रुचिर खाना वो मनोर्थ पूर्ण करना अपने मित्र परम प्रेमी का इतना चित्तमें बसा कि जगत् के उपहास्य वो निन्दापर कुछ दृष्टि न करके यह गुप्त मंत्र अर्जुन जीको दिया कि जो बिवाह करने वास्ते बसुदेव जी वो बलदेव जीसे कहता हूं तो न जानै अंगीकार करैं कि न करैं सो तुम संन्यासी का बेषधारण करिके द्वारका में जाय बलसे अपने ले आओ पीछे बसुदेव जी वो बलदेव जी को समझा कर प्रसन्न कर लिया जायगा सो अर्जुन ने वैसाही किया और जब बलदेव जीने अर्जुन के मारडालने की तैयारी को किया तो आप श्रीकृष्ण महाराज ने समझा कर उनका क्रोध शांत किया ॥ एकबेर अर्जुन महाराज सुभद्रा जीसे आनन्द वो बिलास में रतरहे श्रीकृष्ण स्वामी ने उन को बैठक की जगह नहीं देखा तो बिकल होकर लज्जा छोड़ के सुभद्रा जीके महल में चले गये मित्रता की हंसी ठट्ठे में लीन हुए और अतिशय करिके स्नेह को दृढ़

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

किया ॥ भगवत् की कृपालुता वो दीन वत्सलता पर विचार करना चाहिये कि आप मित्र वा शत्रु वो सुख दुख पुन्य पाप इत्यादि माया के प्रपञ्च से महांतक भीतर बाहरकी आंखैं पहुंचै न्यारा वो निर्लेप है सो ऐसा हो कर जो ऐसे चरित्र किये तो भक्तों को बोध और दूसरे लोगों को भक्ति के हेतु शिक्षा देता है कि जो कोई जिसभाव से मेरा भजन करता है मैं उसी भाव से प्रगट होकर भक्त की भावना पूरण करता हूं कि गीता जी में इस बात का प्रण दृढ़ किया है ॥

कथा सुदामा की ॥

कथा सुदामा जीकी भागवत वो बिष्णु पुराण में विस्तार करिके लिखी है और भाषा में कवि लोगों ने सुदामा चरित्र कई एक बनाये हैं इसहेतु थोड़े में लिखता हूं सांदीपन गुरू के पास जब श्रीकृष्ण स्वामी ने वेद और दूसरी विद्या सब पढ़ी उस समय की मिताई सुदामा जीसे थी जब पढ़ि चुके तब विशेष हुआ सुदामा जी दरिद्री ऐसे थे कि न घर में कुछ अन्न-दाना न तनपर वस्त्र था एक दिन उनकी स्त्री सुशीला ने कहा कि बड़े आश्चर्य की बात है कि जिस का मीत लक्ष्मी पति श्रीकृष्ण महाराज हो सो ऐसा दीन वो दरिद्री होवै सो अब तुम उन के पास जाव सुदामा जीने बहुत संदेह वो नाहीं नाहीं किया परन्तु सुशीला ने ऐसे उत्तर दिये कि हारि के जाने का निश्चय किया सुशीला थोड़े से चावल साठी के कहीं से मांगि लाई और सुदामा जीको देके कहा कि भगवत् की भेट लेजा सुदामा जी भगवत् दरशन की प्रेम में भरे हुए चले रातको किसी गाव में टिके वहां भगवत् को अपने मित्र से मिलने का प्रेम उमगा और रातों रात सुदामा जी को द्वारका के समीप बुला लिया प्रभात को सुदामाजी जब थोड़ी दूर चले तो एक नगर दिखाई पड़ा और जो नाम पूछा तो द्वारका सुन कर हर्षित हुए स्नान पूजा करके पूछते पूछते श्रीकृष्ण महाराज की राजधानी पर आये द्वार पालों ने दंडवत करके श्रीकृष्ण स्वामी को निवेदन किया कि एक ब्राह्मण छोटी धोती फटी चादर पहिने नंगेपांव दरिद्री सा आप का स्थान पूछता है और सुदामा नाम है सुनतेही उस नाम के बेसुधि दौड़े पहिले चरण पकड़ छाती से लगा लिया और बहुत दिन पर जो दोनों मित्र मिले थे इस हेत बड़ी बेर तक ऐसे मिले रहे कि मानो दोनों एक तन होगये पीछे भगवत् हाथमें हाथ लेकर रंग महल में लाये और दिव्य पलंग पर बैठाल कर कुशल प्रश्नादिक पूछने लगे इतने में रुक्मिणी जी पूजा की सामग्री ले आईं और आप भगवत् और रुक्मिणी जी चरण धोने लगे उस समय का एक कवित्त नरोत्तम कविका कहा लिखता हूं ॥

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

कवित्त छन्द सवैआ अर्थ सहित है॥

ऐसे बेहाल बेवायन सों भये कंटक जाल गुंधे पग जाये।
हाय सखा दुख पाये महातुम आये इते न कितै दिन खोये॥
देखि सुदामा की दीन दशा करुणा करिके करुणा मय रोये।
पानी परात को हाथ छुयो नहिं नैनन के जलसों पगधे ये॥

पायधोये पीछे भगवत् ने अपने पीताम्बरसों पोंछकर जैसी पूजा की विधिसे पूंजा कियां तबे पूछा कि हमारी भाभीने कुछ हमारे वास्ते भी दिया है और तुम्हारेस्वभाव और भांति का है ऐसा नहो कि तुमहीं पचाय जाव और हम देखतेही रहैं सुदामा जी जो साठी के चावल कुच्छ में थे छिपाने लगे भगवत् ने जाना कि कुछ सौगात बगल में है इधर तो भगवत् उस के लेने के दाव घात में उधर सुदामा जी लज्जाके हेतु छिपाने के विचार में इतने में कपड़ा बहुत जीर्णथा फटगया और चावल धरती में गिरगये भगवत् ने उन्में से एक मूठी लेकर तुरत और जल्दी से मुंह में डाल लिया और दूसरी मूठी के वास्ते भी वैसी ही चतुराई थी कि रुक्मिणी जीने हाथ पकड़ लिया सो कोई २ भक्त वो तिलक कार लोगोंने हाथ पकड़ लेने का हेतु यह लिखा है कि एक मूठो चावल से तो दोनों लोककी संपत्ति सुदामाको देदी दूसरी मूठी में कौन वस्तु देवेंगे और किसीने यह लिखा कि रुक्मिणीजी को भय हुआ कि मैं लक्ष्मी का स्वरूप हूं ऐसा न हो कि भगवत् दूसरी मूठीके बदलेमें हम को देदेवें और किसी का यह कहा है कि रुक्मिणी जी को भगवत् के सुकुमारता वो स्वल्प आहार वो कोमल वो मधुर पदार्थों के भोजन का स्वभाव सोच कर यह चिन्ता हुई कि कच्चे चावलों के भोजन से कुछ अवगुण न करैं परंतु निज अभिप्राय रुक्मिणी जी का हाथ पकड़ लेने से यह है कि महाराज यह सौगात तुम्हारे मित्र के घर की है ऐसा मीठा पदार्थ अकेले आपही आप खाये लेना उचित नहीं इस में हमारा भी भाग है और जो यह कहोगे कि हमारे मित्र की लाई हुई सौगातमें तेरा क्या बखरा है तो आपके मित्र भूखे बंगाली वो उपास मस्त होते हैं उनको किसी सौगात के सुहावने की क्या सामर्थ्य है यह सौगात मेरी जिठानी के व्यवसाय से तुमको जुरी है निश्चय करिके भागी हूं इस चरित्र के होने पीछे सेवक लोगों ने जेवनार के तैयार होने का संदेस निवेदन किया दोनों मित्रों ने एक संग भोजन किया इसी प्रकार सात दिन सुख आनन्द में बीते पीछे सुदामा जीने बहुत कहा तब विदा हुए भगवत् दूर तक पहुंचाने के हेतु गये और विदा के समय सुदामा को कुछ न दिया सुदामा जी अपने मनमें कहने लगे कि आखिर तो ग्वालियों के घर पलेहो क्या हुआ कि अब राज्य वो बड़ा ऐश्वर्य्य मिला जो हमको कुछ देते तो क्या खजाने

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

का टोटा था वा कि काम होजाता था और बहुत अच्छा हुआ कि कुछ न दिया अब उस स्त्री से कि जिसने बलात्कार करके भेजा था कहूंगा कि धनको अच्छी प्रकार से जतन करिके धर कि बहुत खजाना मिला है फेर मनमें कहने लगे कि जानें भगवत् ने इस विचार से कुछ न दिया कि धन के आवने से भगवत् भजन में बाधा न पड़जावै ऐसेही ऐसे सोचते विचारते अपने गांवके समीप पहुंचे देखा कि द्वारका से भी सहस्र गुण अच्छीसोने की मणि गणों की महलात खड़ी हैं ऐसे कि कभी देखीथी न सुनीथी लोगों से पूछा कि किसका नगर है और क्या नाम है उत्तर दिया कि आपही का नगर है और सुदामा पुर नाम है यही कहते सुनते थे कि तब तक दास दासी दौड़े हाथों हाथ सुदामा जी को महलों में लेगये सुशीला आकर चरणों में पड़ी औरसुदामा जी इस भगवत् कृपा को देखकर जो वचन भगवत् कोअंग वितर्क कहे थे उसका शोच वो पश्चात्ताप करने लगे ऐश्वर्य के सुखमें कबहीं भजन और आराधन न भूले बरु अधिक करिके तत्परहुए भगवत् की ईश्वरता कि अच्युत अनंत वो सच्चिदानन्द घन परमात्मा पूर्ण ब्रह्म हैं विचार करके फिर इस दयालुता वो कृपालुता वो भक्त वत्सलता और मित्र भाव के निवाहने की भाव पढ़ सुनकर जो निर्भर आनन्द में मग्न नहीं होते उसने व्यर्थ जन्म लेकर अपने माता के योवन का नाशकिया और जिसके आंखों से प्रेमका जल नहीं उमगता तो वे आंखैं अंधी अच्छी ॥

व्रजके ग्वालबालों की कथा ॥

श्रीनन्द नन्दन महाराज के असंख्य ग्वालबाल सखा हैं उन्में—श्रीदामा, मधु, मंगल, सुबल, सुबाहु, भोज, अर्जुन, मंडल, ये आठ सखा परम मित्र और हर घड़ी पास रहने वाले वो दूसरे सब सखाओं के नायक हैं जिस प्रकार श्रीराधिका जी के साथ—ललिता, विशाखा, चित्रा, चंपकलतादि आठ सखी हैं सिवाय असंख्य सखाओं के—रक्तकपत्रकपत्री, मधुकण्ठ, मधुव्रत, रसाल, विशाल, प्रेमकंद, मकरंद, आनंद, चन्द्रहास्य, पयद, वंकुल, रसदान, सारदावह्नि, इतने सखा यद्यपि सखाभाव रखते हैं परंतु सेवकाई वो आज्ञा पालने में भी क्या गृहमें क्या बनमें हरघड़ी तत्पर वो हाजिर रहते हैं सखाभाव वालों के जितना भाव अलख २ हैं उन सब में मुख्यता व्रजके ग्वालबाल सखाओं को है किस हेतु कि उनको उस पदवी से न्यून वो अधिक नहीं होती भगवत् के नित्य विहार में प्राप्त रहते हैं और सब गोलोक निवासी हैं जब भगवत् का अवतार होता है, तब वह भी साथ आते हैं जो कोई भगवत् की महिमा अथवा भगवत् चरित्रों को लिखसकै तो उन की महिमा भी लिखसकेगा नहीं तो जैसे महिमा भगवत् की अपार है तैसेही उन की है और उनके चरित्र और परम पवित्र

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

कथा का यह माहात्म्य है कि जो कोई धोखेसे भी उनकी खेल वो लीला वो हंसी ठट्ठा अशङ्कता बाल-चरितों को सुनता है अथवा गान करता है तो भगवत् बलात्कार से अपनी भक्ति उस को देकर उसके आधीन हो जाते हैं. सखा भाव के चरित इतने अगणित वो अपार हैं कि शेष वो शारदा भी वर्णन नहीं कर सक्ते सो एक दो चरित सूक्ष्म करके इस ग्रन्थ के प्रविष्ट होने के हेतु लिखता हूं जब वन में गऊ चराने को जाया करते थे तो दो यूथ होकर खेल ते थे एक दिन बलदेव जी का यूथ तो जीत-गया और लाल जीका यूथ हारा तब हारे हुए सखाओं ने एक एक सखा जीते हुए को अपनी पीठी चढ़ाया श्रीदामा जीके बखरे में नन्द नंदनजी आये वो जहां पहुंचाने की प्रबन्धथी सो जगह दूरथी थोड़ी दूर चल कर सुकुमारता वो सुंदरता के कारण से नंद नंदन महाराज को पसीना आयगया और थकगये तो पहिले श्रीदामा की बहुत खुशामद वो लल्लो चप्पो करी कि आधी दूरतक ले जाऊंगा जब न माना तो घबड़ाया डर-पाया कि अच्छा कल्ह को मैं तेरी अच्छी प्रकार पिट्टा चारी करूंगा जब उसपर भी श्रीदामा जीने कुछ न माना तो बचलाई करने लगे परन्तु श्रीदामा जी ऐसे उस्ताद मिले कि एक डग भी माफ न किया जहां तक का प्रबन्ध था वहांहीं तक ले गये जब श्रीनन्द नन्दन महाराज कंस के बुलाने पर मथुराजी में गये तो मुष्टिक वो चाणूर आदि मल्लों को और कुवलयापीड़ मतवारे हाथी को बिना परिश्रम एक क्षण में मारडाला और उसी अखाड़े में जब ग्वालबाल वालों के साथ कुस्ती होने लगी तो कभी नंद नंदन महाराज उनको धरती पर गिराय देते थे और कभी ग्वाल बाल आप को ऐसे पटकते थे कि शीघ्र उठने की सामर्थ्य नहीं रहती थी धन्य है यह भक्त वत्सलता और प्रीति की पूर्णता जब सूर्य ग्रहण में कुरुक्षेत्रपर द्वारकासे भगवत् आये तो सब व्रजवासी भी आये थे बहुत दिनपर आपुस में मिलाप हुआ और लोग तो अपने २ स्नेह वो भाव के अनुसार मिले और भगवत् सखा उस अपने रंग में रंगे हुए अपने दाव और पेंच के लेने को तैयार हुए और वह रंग भगवत् गुणानन्त निर्विकार को भी ऐसा चढ़ा और प्रेम की नदी में ऐसा मग्न कर दिया कि प्रेम का जल आंखों से बहकर चरणों तक पहुंचा॥

गोविंद स्वामी की कथा॥

गोविंदस्वामी महाराज के सखाभाव का चरित भगवत् भक्तों को तो परम आनंद का देने वाला है और जो कोई भक्त नहीं उनको भक्ति का देने वाला है गोविंदस्वामी उस भावकी आराधनासे थोड़ेही दिन में उस पदवी को पहुंचे कि गोवर्धननाथ जीके साथ सदा खेल वो क्रीड़ा में प्राप्त रह कर अपने परम मित्र के रूप अनूप में मग्न रहते थे एक दिन गुल्ली

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

डंडाखेल रहे थे जबदांव गोबिंदस्वामी का आया तो नटनागर महाराज भाग कर मंदिर में आ घुसे गोबिंदस्वामी पीछे दौड़ आये और गुस्सी भगवत् मूर्त्ति पर मारी उधर से भगवत् के हिमाती अर्थात् पुजारी लोग मंदिर के दौड़े और अत्यन्त ढिठाई गोबिंदस्वामी की समझ कर धक्के देकर मंदिर से निकाल दिया वो भगवंत् से विमुख जाना गोविंद स्वामी तड़ाग् के निकारे राह पर आकर बैठरहे वो गालियां देकर कहने लगे कि अबतो हिमायत में जाबैठा भला कभी तो निकलैगा ऐसी शिष्टाचारी करूंगा कि जानैगा नंदकिशोर महाराज को चिन्ता हुई कि अबयह बेरंग मेरे तलाश में है और मुझसे बिन वन बिहार और खेल के रहा नहीं जाता जब बाहर जाऊंगा न जानै क्या करैगा सो इस सोच में कुछ न खाया और गोसाईं विट्ठलनाथ जी जो परम भक्त थे उन से कहा कि गोबिंद स्वामी के डरमे हक्क से कुछ भोजन नहीं किया जाता जो हम को कुछ भोजन कराना होय तो गोविंद स्वामी को प्रसन्न करो यद्यपि दांव गोविंद स्वामी का था परन्तु सुधिभूलि कै मैं मंदिर में चला आया अब वह मुझको दृथा गाली देता है और जब बाहर जाऊंगा न जानै क्या करैगा सो जब उसका क्रोध शान्त होगा तब मुझको कुछ खानेपीना सुहायगा विट्ठल नाथ जी दौड़े गये विनय प्रार्थना करके बलसे गोबिंद स्वामी को बना कर लाये और मंदिर में भगवत् के पास भेज दिया वहां जब दोनों का आपुस में बनाव हो गया और दोनों यार गले लगकर मिले तब नंदलाल महाराज ने भोग लगाया एकबेर गोविंद स्वामी बाह्य शंका को बनमें गये थे जब बैठे तब आप लालजी महाराज जाकर दूर खड़े होकर आक के फल मारनेलगे और इसी प्रकार की दूसरी कुछ चपलाई को किया गोबिंद स्वामीने उसी दशा में उठकर ऐसे आकके फल मारे कि ब्रज मोहन महाराज ने घबरा कर भागने को चाहा संयोग वश गोबिंद स्वामी की माता उनको ढूढ़ती आयगई तब गोविन्द स्वामी धोती बांधकर घरगये और झगड़ा छूटगया॥ एकबेर भगवत् मन्दिर को भोगके निमित्त थाल जाता था वो गोविन्द स्वामी जोकि राह में प्रसाद की आसा करके बैठ रहे थे पुजारी से मांगा कि पहिले हमको देव तिसके पीछे नन्दनन्दन के वास्ते थाल ले जाना पुजारी ने नमाना गोविन्द स्वामी उसके हाथ से थाल छीन कर सब सामग्री थाल की खाय गये और चल खड़े हुए पुजारी रिस करता हुआ गोसाईं जीके पास आया और कहा कि मैं पूजा सेवा से बाज आया गोविन्द स्वामी भोग का थाल लूट ले गया गोविन्द स्वामी को बुलाकर पूछा कि यह क्यों ढिठाई है गोविन्द स्वामी ने उत्तर दिया कि तुम अपने लाला को अच्छे अच्छे भोजन करा कर फिरने वो खेलने वो लड़ने को तैयार कर देते हो वो पहिले ठटिवट कर बनको चला जाता है

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

मुझको जो भोजन पीछे मिलता है तो उसको ढूंढ़ता हुआ सारे बनमें अमित भटता फिरता हूं तोमें उसे पहिले क्योंने तैयार होरहूं गोसाईं जीने हंसि कर प्रताप और भक्ति और सखाभाव गोबिंद स्वामी का पुजारी से वर्णन कियां और आगे पर को ढिठा दिया कि उनके प्रसन्नता से भगवत् की प्रसन्नता जानिगये गोबिन्द स्वामी के पद बनाये हुए भागवत में ऐसे श्रीधरन को लगादेते हैं कि मानो मूलमंत्र हैं और मालूम रहै कि कीर्त्तन निष्ठा में नन्ददास जी की कथा में जो अष्ट छापके नाम लिखे हैं तो उसमें दो नाम की भूल है वो तुलसी शब्दार्थ प्रकाश ग्रन्थ गोपाल सिंह जीका बनाया है उसमें अष्ट छाप के नाम ठीक ठीक लिखे हैं सो यह हैं ॥ सूरदास ॥ कृष्णदास ॥ परमानंद ॥ कुंभनदास ॥ ये चारों भक्त बल्लभाचार्य के चेलेथे ॥ चतुर्भुजदास ॥ छीत स्वामी ॥ नंददास ॥ गोबिंद स्वामी ॥ ये चारों भक्त बल्लभाचार्य के पुत्र बिट्ठल नाथ जी तिन के चेले थे अर्थात् ये आठों भक्त बल्लभ कुल के प्रभाव से भगवत् पद को प्राप्त हुए और उनके ग्रन्थ गोकुल वो बल्लभा चार्य जी की संप्रदा में मिलते हैं सो ये गोबिंद स्वामी भी अष्ट छाप में हैं ॥

गंग ग्वाल की कथा ॥

गंगग्वाल व्रजनाथ जी के चेले सखाभाव के परम भक्त और किसी सखा का अवतार हुए जिन्हों ने व्रज के चरित्र और सबसखी और भगवत् सखाओं का वर्णन विस्तार करिके किया नंदनंदन महाराज के साथ खेल का जो परम आनंद उसके रस में हरि घड़ी मग्न रहते थे व्रजकी भूमि प्राण से प्यारी थी और भगवत् चरित्रों में अत्यन्त प्रीति रखते थे और भगवत् कीर्त्तन अर्थात् गांधर्व विद्या जो गान विद्या है तिस में हुए कि उस समय में उनके ऐसा गानेवाला दूसरा कोई न था एकबेर बादशाह श्री वृन्दावन आया और उनके गाने की बड़ाई सुनकर बुलाया बल से आये बल्लभा चार्य भी उस घड़ी साथ में थे दो पहर का समय था तिन्हे सारंग गाया कि बादशाह और जो कोई वहां था सब मोहित होगये और सब भगवत् के प्रेम में मग्न बादशाह यह प्रताप देख कर हाथ जोड़ कर खड़ा हुआ और अत्यन्त आधीनताई से यह बिनती किया कि मेरे साथ चलो उत्तर दिया कि व्रज भूमि को छोड़ कर नहीं जा सक्ता जब बहुत कहा सुनी दोनों ओर से हुई तो बादशाह कैद करके दिल्ली में ले आया वो नजर बंद में रक्खा राजा हरि दास जाति तोदर राज पतने यह वृत्तान्त सुना सिपारस करके छुड़ा दिया तुरन्त व्रज में आये और अपने परम मित्र को देख कर परम आनंद को प्राप्त हुए ग्वाल संज्ञा सखाभाव करिके विख्यात था ॥

—०—

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

निष्ठा तेईसवीं ॥

जिस में महिमा शृंगार वो माधुर्य की वो कथा आठ भक्तों की है ॥

श्रीकृष्ण स्वामी के चरण कमलों की चिकोण रेखाको और श्रीकृष्ण अवतार को दण्डवत् करता हूं कि वह अवतार गोकुल में धारण करके ऐसे चरित्र पवित्र जगत् में विख्यात वो प्रवर्तमान किये कि जिनके प्रभाव से ब्रह्मा नंद वो परम पद की प्राप्ति महा पापी वो अपराधियों को भी अति सुलभ होगई शृंगार रसको उज्वल और शुक्लरस भी कहते हैं यह वह रस है कि ज्ञान और वैराग और भक्ति सब जिस के सेवक वो दास हैं दूसरे धर्मों की तो क्या गिनती है इस शृंगार रस को वह गुन है कि एक क्षण में निविड़ प्रेम उत्पन्न करके फ़क़ीर को बादशाह वो बादशाह को फ़क़ीर कर देता है इस रस अर्थात् सुन्दरता के बराबर मोहन गुण तंत्र में है न मंत्र में है वो राग इत्यादि तो एक बात हल की हैं जितने भक्त पहिले हुए और आगे पर होंगे और अब हैं सो इस रस के अवलम्ब से अपने मनो वांछित पदवी को पहुंचे और पहुंचैंगे महिमा इस रस की अपार वो अथाह है जो कोई भगवत् की महिमा वो चरित्रों का वर्णन करसकै तो इस रस की भी महिमा वर्णन करदे गोपिका एक तो स्त्री फिर गांव की रहने वाली न कुछ विद्या पढ़ी न कुछ साधन किया वो न कुछ साधन जानती थीं और जातिसे भी उत्तम न थीं इस रस के प्रभाव से उस पद को पहुंचीं कि ब्रह्मा जो सब जगत के पितामह और उत्पन्न करने वालेने जिनकी चरण रज को अपने शिर पर धारण किया और जिनके चरित्रों का जहाज संसार समुद्र से पार उतारने को ऐसा प्रवर्तमान हुआ कि कर्म भोग रूपी आंधी का कदापि भय नहीं शृंगार उपासक जो इस रसको मुख्य वर्णन करके कहते हैं कि ब्रह्मानंद इसी रस से प्राप्त होता है वचन उनका सत्य वो ठीक है क्योंकि जब भगवत् आराधन ज्ञान अथवा भक्ति के द्वारा करिके होगा तो कोई झलक सुन्दरता वो माधुर्य भगवत् की उपासक के मनमें ऐसी प्रगट होगी कि उस के आनंद से सब मिठाई वो उत्तम पदार्थ तीनों लोक के तृण के समान समझ पड़ैंगे और बेसुधि वो मग्न उस झलक के दरशन में होजावेगा और जब तक भगवत् के सुन्दरता की झलक मनमें न आवैगी तब तक भगवत् की प्राप्ति कदापि नहीं तो इसे निश्चय होचुका कि ब्रह्मानन्द केवल शृंगार रससे प्राप्त होताहै इस में एक शंका यह उत्पन्न हुई कि जो शृंगार रस मुख्यहै तो शास्त्रों में जो दास्य सख्य वात्सल्य इत्यादि कई प्रकार की निष्ठा वो भक्ति लिखी हैं उनका लिखना क्या प्रयोजन था केवल शृंगार निष्ठा लिखदेना बहुत था और नव प्रकार भक्ति में शृंगार का कहीं नाम भी नहीं है सो जाने रहो कि जितने वेद वो पुराण और शास्त्र इत्यादि ग्रंथ

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

वो आज्ञा हैं सब शृंगारही रसका वर्णन करते हैं वो शृंगारही मुख्य है वो जो वर्णन जहां भगवत् आराधन का है वह सब शृंगारका अर्थ समझना चाहिये क्योंकि सुन्दरताकी झलक के बिना साक्षात्कार ऊए भगवत् की प्राप्तिकदापि २ होने नहीं सक्ती और दास्य सख्य वात्सल्य इत्यादि जो भक्तिके प्रकार शास्त्रों में लिखेहैं सो भी उसी शृंगारही के विस्तार हैं जैसे भक्ति के स्वरूप के वर्णन में प्रथम भूमिका में लिखाहै कि भक्ति एकहै वो जिस २ रीति से जिस किसी ने मन लगाया वही एक प्रकार की भक्ति होगई॥ इसी प्रकार भगवत् की शोभा वो माधुर्य की चिन्तन सब निष्ठा दास इत्यादि में योग्य वो निश्चय ऊआ है जिस किसी ने भगवत् को अपना स्वामी ध्यान करके सुन्दरता वो स्वरूप वो माधुर्य का चिन्तवन उस रीति से किया सो दास निष्ठा ठहरा और जिस किसी ने मित्र जान कर उस रूप का ध्यान किया सो सख्य और जिस किसी ने पुत्र जान कर चिन्तवन किया सो वात्सल्य इसी प्रकार सेवा और अर्चा वो शरणागती इत्यादि को विचार कर लेना चाहिये तो वेद और पुराणों के प्रमाण से निश्चय होगया कि भगवत् का शृंगार वो माधुर्य मुख्य है जो यह कोई कहै कि भगवत् की करुणा वो दयालुता वो भक्त वत्सलता आदिभी तो जगह २ लिखी हैं कि तिस कारण से भगवत् में प्रीति होती है सो पहिले उत्तर तो यह है कि वह प्रीति जिस का वर्णन करते हो किस वस्तु में होती है जो किसी रूप वो झलक में होती है तो उसी का नाम शृंगार वो माधुर्य है और जो कुछ शोभा वो झलक के चिन्तवन में नहीं होती है किसी और बात में होती है तो मिथ्या है क्योंकि बिना किसी सुन्दरता वो झलक के प्रकाश भये कदापि दृढ़ प्रेम नहीं हो सक्ता दूसरा उत्तर यह है कि जिस प्रकार संसारी प्रीति अर्थात् मनखी प्रीति में जिस पर आशक्त हैं तिसकी सुन्दरता का वर्णन करते हैं तो उस के बोलने वो चलने वो मिलने इत्यादि स्वभावका भी वर्णन किया करते हैं इसी प्रकार भगवत् प्रेम के वर्णन में भगवत् के रूप और माधुर्य का वर्णन करना तो मित्र के सुन्दरता के वर्णन के सदृश है और भगवत् की अद्वैतता वो कृपालुता वो करुणा वो भक्त वत्सलता वो ईश्वरता वो सर्वज्ञता और दूसरे गुण जैसे अच्युत वो अनन्त वो व्यापक वो अन्तरयामी वो पूरण ब्रह्म वो परमात्मा वो सच्चिदानन्दघन इत्यादिक वर्णन मित्र के स्वभाव के वर्णन के सदृश हैं अब यह शङ्का उत्पन्न ऊई कि एक वचन से भक्ति वो शृंगार एकही भांति जनाई पड़ते हैं अर्थात् एक जगह तो दास्य सख्य वात्सल्य इत्यादि को भक्ति के प्रकार में लिखा और इस शृंगार निष्ठा के वर्णन में शृंगार के अंग वो भेद उन दास्य इत्यादि निष्ठाओं को लिखा जब कि भक्ति दशा प्रेमा भक्ति की है और शृंगार प्रियवल्लभ के सुन्दरता को कहते हैं तो

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

दो दशा भिन्न २ एक कब हो सकती हैं सो सत्य है कि दोनों प्रकार अलग २ हैं परन्तु एक से एक का संबंध ऐसा है कि एक के बिना एक का प्रकाश नहीं होता क्या हेतु कि सुन्दरता बिना स्नेह कदापि नहीं हो सक्ता और इसी प्रकार प्रेम बिना सुन्दरता का गाहक कोई नहीं जैसे कि जगत् न रहा तब भक्त भी नहीं थे उस काल में ईश्वर को कौन जानता था और आगे पर जब प्रलय हो जायगी तो तब भगवत् को कौन जानैगा वो उसकी सुन्दरता पर कौन आसक्त होगा तो जबकि स्नेह वो सुन्दरता ऐसे सम्बन्धी हुए तो अंग सब उनके परस्पर मिश्रित होकर एकके सदृश होंय तौ कौन आश्चर्य वो विरुद्ध है सिवाय इसके परिणाममे स्नेह करने वाला वो जिसमें स्नेह हुआ दोनों एक होजाते हैं अर्थात् प्रेम करने वाला अपनी सब दशा भूल कर सब अंगमें अपने प्रियवल्लभ का रूप हो जाता है तो इस प्रकार से भी एक लिखने में कुछ शंका योग्य नहीं है सिवाय इसके शृंगार वो भक्ति दोनों भगवत् रूप हैं कुछ भेद नहीं इस प्रकार सेभी शंका की समवाई नहीं निश्चय करिके यह शृंगार रस सब रसों में मुख्य तर है और सत्य करिके भगवत् में प्राप्त कर देता है यह रस चार सामा अर्थात् विभाव वो अनुभाव वो सात्विक वो व्यभिचारी करिके उत्पन्न होता है पहिली सामा जो विभाव तिसमें भगवत् सच्चिदानन्दघन पूर्ण ब्रह्म नव योवन सब शोभा वो सुन्दरता का सार श्याम सुन्दर स्वरूप दिव्य वस्त्र वो आभूषणों कोसजे हुए कि जिसके सब अंगोंपर करोड़ों कामदेव निछावर होते हैं विषयालंबन हैं और जिस उपासक की भगवत् के सुन्दरता वो शृंगार पर जैसी प्रीति वो चाह होय सो अपनी उपासना के अनुसार भगवत् का ध्यान जैसा कि जगह जगह शास्त्रों में वर्णन किया है और इस ग्रन्थ में भी जहां तहां लिखा हुवा है विचार करलेवै॥ भगवत् भक्त जो कि उस सुन्दरता वो शृंगार के महाआशक्त और ध्यान करने वाले हैं इस विभाव में आश्रयालंबन हैं वो दूसरी सामा सब इस शृंगार रसको विस्तार करिके इस ग्रन्थ के आरंभ में लिखी गई है दोबार लिखना प्रयोजन नहीं शृंगार रसमें उपासक लोग दो भेद वर्णन करते हैं एक तो शृंगार और दूसरा माधुर्य शृंगार तो उस सुन्दरता और प्रेम से तात्पर्य है कि जो नायक वो नायिका के बीच में हो और बिना एक ओर नायिका वो एक ओर नायक के शृंगार नहीं कहाजाता सो उसमें उत्तम पदस्वकीया नायिका अर्थात् ब्याही स्त्री और पतिके शृंगारका है भगवत् भक्तोंमें यह पदवी लक्ष्मीजी और सीताजीकी और रुक्मिणीजी पर समाप्त हुई और किसी किसीके वचन से श्रीराधिकाजीभी स्वकीया हैं अब कोई उपासक इसपदवीका न देखा न सुना वो दूसरी पदवी शृंगार की परकिया नायिका हैं सो गोपिकाओं पर समाप्त हुआ अब यह भाव किसको होसक्ता है जो कोई किसी गोपिका का

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

अवतार लवें तो होसक्ता है जैसे कि मीराबाईजी वो कर्मैतीजी वो नरसीजी वो हरिदासजी इत्यादि लोग हुये और यह भी जानेरहो कि रीति शृंगार वो प्रीति की इसी पदवी में विशेष बनि आती है अब जो उपासक हैं उनके यह भाव हैं कि कोई तो सख्यता की मुख्यता लिये दासी भाव रखते हैं और कोई वो दासी भाव की मुख्यता सख्यता की गौणता है और कोई अपने आप को युगल की दासी जान ते हैं सख्यता से कुछ प्रयोजन नहीं और कोई अपने आप को श्रीप्रियाजी की दासी जान कर उनके प्रसन्नता में प्रीतम की प्रसन्नता मानते हैं औ इस अंत पदवी के निज उपासक हितहरिवंशजीकी संप्रदा वाले हैं सब शृंगार उपासकों की यह रीति है कि युगल शृंगार वो विहार में अपने भाव के रूप से सब समय प्राप्त रहते हैं कोई समय अन प्राप्त वो परदे की नहीं और प्रिया प्रीतम के मन की बात जानने वाले और संदेस में चतुर और मान के समय मनाने वो मिलाने में प्रवीण ऐसे २ सैकड़ों हजारों भाव से सेवा वो चिन्तवन करते हैं भाव बहुत बारीक वो अति कठिन है इस का विस्तार करके कहना प्रयोजन नहीं शृंगार की उपासना चारों युग से सदा है बहुत रूपेश्वर और योगीजन श्री रघुनन्दन महाराजाधिराज का अपार रूप देखकर मोहित वो आसक्त होगये और उस रूप वो शृंगार के पूर्ण सुख वो आनंद की प्राप्ति श्रीमहारानी जीको देखकर मानसी दासी भाव वो सख्यता से मन को लगाया॥ माधुर्य का अर्थ यद्यपि मिठाई का है परंतु तात्पर्य सुंदरता से है माधुर्य के उपासक लोग अपने आप को सखी भाव नहीं मानते भगवत् के माधुर्य वो सुन्दरता के आसक्त वो अनुरक्त होते हैं उन में कई भेद हैं एक वह है कि केवल भगवत् माधुर्य के उपासक हैं प्रिया जीके ध्यान से कुछ संबन्ध नहीं रखते दूसरे वहहैं कि युगल स्वरूप अर्थात् प्रिया प्रीतम का चिन्तवन और ध्यान करते हैं उन में भी एक यूथ वाले तो भगवत् की ईश्वरता मुख्य मानते हैं और प्रिया जीको आद्या और सब ब्रह्मांडों की माता और भगवत् आश्रयाभूत जानते हैं दूसरे ऐसे हैं कि प्रिया प्रीतम को एक मानते हैं जिस प्रकार जल और तरंग अथवा सांप और उसका कुण्डल कि वास्तव करिकै एक है कहने मात्र को दो कहे जाते हैं वो तीसरे ऐसे हैं कि प्रिया जीको परत्व अधिक करते हैं वो प्रीतमकी न्यून इस तीसरे भावकी बात विस्तार से आगे लिखी जायगी और माधुर्य के उपासकों के सेवा पूजाकी रीति ऊपर के लिखे भावों से लिवाय कई भाँति के दूसरे हैं अर्थात् कोई कोई तो युगल स्वरूप के सेवा पूजा के समय अपने आप को बालक दो चार वरष का चिन्तवन करके सब सेवा पूजा करते हैं और किसी की यह रीति है कि आप तो सेवा भगवत् की करते हैं और महारानी जी के सेवा के निमित्त अपनी माता की स्त्री को

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

अथवा भगिनी इत्यादि को अथवा अपने घरकी सब स्त्रियों को महारानी जीकी दासी विचार कर लेते हैं और किसी की यह रीति है कि ब्रह्माणी और भवानी वो इन्द्राणी इत्यादि को महारानी जीकी सेवा करने वाली जान कर भगवत् की सेवा पूजा आप कर लेते हैं सिवाय इसके स्वकीया परकीया भाव अलग रहा सो रामानुज संप्रदा और राम उपासकों में तो परकीया भाव तो कदापि शोभित नहीं हो सक्ता स्वकीया भाव से सेवा आराधन प्रवर्तमान है श्रीकृष्ण उपासना में विशेष करके परकीया भाव से आराधन योग्य है और होती है सो उसका यह भेद है कि निम्बार्क संप्रदा में स्वकीया भाव से सेवा पूजन करते हैं और विवाह का होना श्रीकृष्ण वो राधिका महारानी का पुराणों के प्रमाण से मानते हैं और विष्णुस्वामी की संप्रदा वाले यद्यपि उपासक केवल बाल चरित्र श्रीकृष्ण स्वामी के हैं परंतु राधिका जीको निम्बार्क संप्रदा के प्रमाण के अनुकूल स्वकीया भाव से श्रीकृष्णस्वामी की परम प्रिया जानते हैं और माध्व संप्रदा में परकीया भाव की रीति है और मन की रुचि दूसरी बात है कोस्मार्त मत वालों में कोई सिद्धांत रीति का प्रबंध नहीं जैसे चरित्रों और भाव पर मन सन्मुख होगया वैसाही मान लेते हैं॥ शृंगार और माधुर्य्य भावमें जो साज वो शृंगार प्रिया प्रीतम का ध्यान में अथवा प्रत्यक्ष करना चाहिये और जो प्रिया प्रीतम आप परस्पर के मिलने और देखने और दिखलाने और अपने २ सजावट रखने और विहार वो आनन्दकी सामा अत्यंत मनसे रीझि सोझि वो बनावट से तैयारी की उमंग रखते हैं और जो खेल वो हंसी वो बाग विलास वो प्यार वो चाह परस्पर उनमें होते हैं उसका वर्णन अगिणित शेष और सारदा से करोड़ों कल्पतक कदापि नहीं होसक्ता और जिन भक्तों की उपासना सिद्ध होगई है और वह सामां वो समाज मनमें समाय गई हैं उनको भी सामर्थ्य नहीं कि वर्णन करसकैं मनहीं मनमें उस आनन्द का अनुभाव करते हैं तो मैं मतिमन्द क्या लिख सकूं वे मित्र प्रेम प्रेमी वो लेहो कि जिनका मन आपुस के सुन्दरता पर परस्पर परम असक्त हो और मिलने की चाह और उमंग में भरे हुए चयलोक का ऐश्वर्य वो संपत्ति से जहांतक सामा के लिये वो आनन्द वो सजावट की जो बातों में सुनते हैं वो जो कुछ देखते हैं अथवा जहांतक मन पहुंचे सो सब तैयार करते हो सो सब प्रिया प्रीतम के शृंगार वो बिहार वो आनन्द वो सुख वो शोभा वो सुन्दरता के सामा के आगे ऐसे हैं कि जैसे सौ करोड़ सूर्य के सामने एक बालू की कण हो सो इस हेतु उपासक लोग अपनी चाह वो मनकी दौड़ वा देखे सुने के अनुसार जिस प्रकार जितना शृंगार स्वरूप का ध्यान वो आराधन करसके तितनाही अच्छा है जैसी और जिस प्रकार चिन्तवन करेंगे सोई वांछित पद को पहुंचावैगा और यह भी

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

जाने रहो कि प्रिया प्रीतम परस्पर प्रेमासक्त सेवैयों में शिरोमणि हैं जो चरित्र शृंगार वो माधुर्य के हृदय की आंखों को दिखाई पड़े सो सब भगवत् के किये हुए होंगे नए चरित्र कोई न होंगे सो उसरूप अनूप में जिस प्रकार मनलगैं लगाना चहिये कि परमानन्द वो ब्रह्मानन्द वो ज्ञान वो भक्ति वो वैराग्य वो चारों पदार्थ आप से आप प्राप्त हो जाते हैं ऊपर वर्णन हुआ है कि कोई कोई प्रियाजी की परत्व वर्णन करते हैं और प्रीतम की किंचिन्न्यून सो जानै रहो कि चारों संप्रदा में ऐसी रीति को किसी ने प्रगट नहीं किया था अब चार संप्रदाओं में एक किसी ने नई शाखा निकाली अर्थात् पहिले से रामानुज संप्रदा में दो मार्ग हैं एक तिंगल दूसरे बड़गल तिंगल वे हैं कि जो निज रामानुज स्वामी की रीति के अनुकूल हैं और उनके सिद्धान्त में विष्णु नारायण ईश्वर हैं और लक्ष्मी जी जीव और बड़गल वे हैं कि बेदान्त चारी ने नई रीति चलाई कि विष्णु और लक्ष्मी को बराबर जाना और युगल स्वरूप के आराधन की परिपाटी को प्रवर्त्त मान किया अब थोड़े दिनों से अर्थात् सौ दो सौ बरष से बेदान्ताचारी के पन्थ में बीर राघवा चार्य ने यह शाखा निकाली कि विष्णु नारायण पर लक्ष्मी जी को अधिक लिखा और बीर राघवी मत चलाया उनका मत दुर्गा उपासकों से थोड़ा मिलता है उस मतमें थोड़े लोग हैं और मदरास से एक मञ्जिल पश्चिम उनका गुरुद्वारा है॥ शृंगार वो माधुर्य के उपासक लोग ध्यान करबे में वो प्रिया प्रीतम के सुन्दरता वो शृंगार के उपासना में एक मत हैं और आरम्भ परिणाम दोनों का एकही भांति है इस हेतु शृंगार वो माधुर्य के उपासक लोगोंको एकही निष्ठा में लिखना उचित जाना हे कृपासिन्धु हे दीन वत्सल हे करुणाकर अब इस दीन की ओर भी कछू ऐसी कृपादृष्टि होकि आपके माधुर्य का चिन्तबन करता हुआ आनंद में रहा करूं यद्यपि मेरे कोई आचरण आपके कृपा वो दया करने के योग नहीं है परन्तु जो आपको विरद दीनवत्सल और प्रणतारत भञ्जन को ओर दृष्टि जाती है तो दृढ़ आशा होती है सो अपनी ओर वो अपने बिरद की ओर देखकर दृढ़ दृढ़ता कृपा करो॥ कवित्त॥

जिन जान्यो बेदतें तो बेदबिदबिदित हो हैं। जिन जान्यो लोकलोक लोकनपरलह मरैं॥
जिन जान्यो तपतीनों तापनसों तपतते। पंच अग्नि संगले समाधि धर धर मरैं॥
जिन जान्यो योगते तो योगी युग २ जिये। जिन जान्यो जोति सो उजोतिले जर मरैं॥
हूंतो देवनन्द के कुमार तेरी चेरी भई। मेरो उपहास कोऊ कोटिन कर मरैं॥ १॥

कोउ कहो कुलटा कुलीन अकुलीन कोउ। कोउ कहो रंकिनि कलंकिन कुनारी हौं॥
लोक वेद लोकलोक परलोक चयलोक मेंतो। लीनो है अलौकिक लोक लोकनते न्यारी हौं॥
तन जाहु धनजाहु देवगुरु जन जाहु। जीव क्यों न जाहु नेक टरत न टारी हौं॥
वृन्दावन वारी बनवारी के मुकुटवारी। पीत पट वारी वा मूरति की वारी हौं॥ २

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

माथेपै मुकुटदेखि चन्द्रिका चटकदेखि। छवि की लटक देखि रूप रस पीजिये॥
लोचन बिशाल देखि गरेगुंज मालदेखि। अधर रसाल देखि चित्त चोप कीजिये॥
कुण्डल हलनदेखि अलकैं बलनदेखि। पलकैं चलन देखि सर्बस दीजिये॥
पीताम्बर छोरदेखि मुरली की घोर देखि। सांवरे की ओर देखि देखि वोई कीजिये॥३॥

ब्रजगोपिकाओं की कथा॥

ब्रज गोपिकाओं के चरित्र चयलोक्य को ऐसे पवित्र करने वाले हैं कि जिनकी उपमा कोई नहीं देखने में आती जो गंगा इत्यादि तीर्थों से बराबर करीजाय तो वे एक एक देश में स्थित हैं जो लोग दूर रहते हैं उनको बड़े परिश्रम से मिलते हैं और पर्व आदि के भेद से पुण्य के न्यून विशेष की बात अलगरही और यह चरित्र परम पवित्र सबको सब जगह अनायास प्राप्त हैं और चारों पदार्थ के देने के निमित्त सब समय बराबर हैं अपने अभाग्य से जो उसमें प्रीति न होय तो दूसरी बात है महिमा गोपिकाओं की वेद और ब्रह्मा वो शेष वो सारदा इत्यादि भी नहीं कहि सक्ते ब्रह्मा जी ने जिनके चरण रेजको अपने शिरपर धारण किया वो अम्ना भाग सराहा तो फिर उनकी महिमा का वर्णन करने वाला कौन है जो गोपिकाओं को भगवत् भक्तों के यूथ में गिना जाय तो उसमें शंका होती है प्रथम यह कि जितके चरित्र गाय करके भक्तजन भक्तनाम पायकर विख्यात होते हैं जो उनको भक्त कहा जावै तो ढिठाई है दूसरे यह कि वेद और पुराणों में कई प्रकार की भक्ति लिखी हैं उनके साधन से भक्त नाम होता है सो गोपिकाओं ने उन सब में कौन सा साधन किया कि उनको भक्तों में गणना किया जाय वो जो उनको भक्तों में न लिखा जावै तब भी शंका का स्थान है प्रथम यह कि किसी ने विना भगवत् भक्ति भगवत् को नहीं पाया दूसरे यह कि जो वे भक्त नहीं तो इस भक्तमाल में क्यों लिखा इस हेतु उनको भगवत् की परम प्रिया और भगवत् रूप जानना चाहिये और जो महिमा उनकी वर्णन हो सो महिमा भगवत् की विचार करनी योग्य है वरु गोपिकाओं की महिमा अधिक है इस भांति कि जो प्रबल होता है सो निर्बल को अपनी ओर खींचलेता है सो गोपिकाओं ने भगवत् को गोलोक से अपनी ओर खींच लिया सिवाय इसके सारा संसार कहता है कि भगवत् इस संसार का कर्त्ता हर्त्ता और स्वामी है परन्तु इस कहने सुन ने से भी किसी को विश्वास नहीं होता कि भगवत् का भजन स्मरण करके भगवत् के रूप अनूप का चिन्तवन किया करै और गोपिकाओं के चरित्र को वह प्रताप और प्रभाव है कि जो थोड़ा सा भी कोई सुन लेता है तो ऐसा कदापि नहीं हो सक्ता कि भगवत् का वह स्वरूप उसके हृदय में न आजाय और भगवत् में विश्वास न होय इच्छा थी कि कुछ चरित्र गोपिकाओं के इस ग्रन्थ में लिखे जावैं परन्तु उन अपार चरित्रों में से एक

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

प्रकार के चरित्र के लिखने की भी सामर्थ्य करोड़ों जन्मतक न देखी गोपिकाओं का भाव भगवत् में अलौकिक अर्थात् जो न देखने में आवे ऐसा हुआ कि भगवत् भक्तों को परम आनंद का देनेवाला है और दूसरे लोगों को भगवत् में लगा देनेवाला है अर्थ अलौकिकभाव का यह है कि गोपिका भगवत् को एक वो सबसे अलग पूर्ण ब्रह्म परमात्मा जानती थीं और उसीको यार दोस्त वो सिच परमप्रेही वो प्राणप्रीतम समझकर मित्रता वो दुलार वो प्रेमके नेमकी रीतसब आचरण करती थीं यद्यपि यह दोनों बात परस्पर ऐसी विरुद्ध हैं कि जैसे अन्धकार वो प्रकाशको आपुस में विरुद्धता होती है परन्तु सो गोपिकाओं में दोनों बनेरहे इस हेतु शास्त्रोंने उनका भाव अलौकिक कहा सो इस भावके चरित्रों में से एक दो चरित्र नमूने के भांति लिखता हूं ॥ एक बेर ब्रजभूषण महाराज रातको किसी गोपिका के घररहे जब बड़ो भोर वहां से चलने की इच्छा को किया अपने घुंघुरू इस डरसे कि शब्द सुन कर कोई जागि न पड़ै उतारने लगे उस गोपिकाने हाथ पकड़ लिया और कहा कि जो मेरी उपहास होय तो चिन्ता नहीं परन्तु यह उपहास तुम्हारी होनी न चाहिये कि श्रीकृष्ण पूर्ण ब्रह्म अपने चरण से लगे हुए को अलग करदेता है ॥ एक बेर ब्रज गोपिका माखन बेचने के लियें यमुना पार जाती थी और उन को ब्रजचन्द्र महाराज से हंसने बोलने वो देखने की प्रीति अनुक्षण रहती थी इस हेतु उसी ओर गईं जिस ओर नटनागर महाराज थे और दर्शन परस्पर होने पीछे दधिदान का झगड़ा वो रस बाद के होने पर यमुना पार जाने की इच्छा को किया तब ब्रजकिशोर महाराज ने कहा कि यह नाव तो यमुना में है परन्तु इस समय मल्लाह नहीं है जो तुमको आवश्यक जाना है तो हम तुमको पार उतार देवेंगे सब गोपिका उस नावपर चढ़िगईं और ब्रजकिशोर महाराज मल्लाह बने संयोग बश वह नावसड़ी और पुरानी थी जब बीच धारा में पहुंची उस में पानी आने लगा कौतुकी महाराज ने कहा कि सावधान हो जाओ नाव डूबी उनमेंसे जो नन्द नन्दन महाराज के हंसीखेलके स्वभावको जानने वाली थीं उन्होंने कहा कि कुछ चिन्ता नहीं डूबने दो हम वह मतिहीन नहीं हैं कि तेरी धमकी से डरकर जो तू कहै सो मानि लेवें और कोई २ जो थोड़ी अवस्था की और नन्द नन्दन महाराज के स्वभाव से अजान वो गईं आईं थीं वह सब घबरानी और श्यामसुन्दर शोभाधाम के निकट आकर कोई तो छाती से लिपट गई और किसी ने हाथ पकड़ लिया और कोई चरण पकड़ कर बैठ गई और किसीने गले में हाथ डाल दिया जब मन मोहन महाराज ने देखा कि बज्रतों से तो मन की भाई सिद्ध हुई परन्तु कितनी एक हमारे धमकी में नहीं आती हैं तो नाव को बारी बरोबर पानी में मग्न कर दिया तब तो सब को निश्चय होगई कि अब यह

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

नाव डूबी औ गोप कुमार जो किनारे पर खड़े थे ताली बजाकर हंसने लगे कि यह मूरख गोपीसंग इस नन्दलाल के भरोसे से नाव पर चढ़ी थीं उन व्रज नागरियों को अपने प्राण का तनक शोच न हुआ और कहने लगीं कि यह गोरस और साखन सब डूबजावै तो क्या चिन्ता है और जो हमारे प्राण जाते रहैं तब भी कदापि कुछ चिन्ता वो शोच का प्रयोजन नहीं है परन्तु अत्यन्त शोक वो शोच इस बात का है कि सब जगत् में बात फैलेगी कि जिसनाव का खेवने वाला श्रीकृष्ण भवसागर तारक था सो नावडूबगई। जब यशोदा जी महारानी ने ब्रह्मा और शिव आदिक को माया की फांसी से बांधने और छुड़ाने वाले को रसरीसे बांधा तब सब गोपिका लीला देखने को आईं और कहने लगीं कि हे नन्द नन्दन बहुत अच्छी बात हुई जो तुमको यशोदा जीने ऊखल से बांधाकि अब भी तुमको दूसरे के बंधने का दुख जान पड़े अर्थात् जीवों को मुक्ति कृपा करो॥ जब ऊधो जी भगवत् का संदेसा लेकर मथुरा से गोपिकाओं के पास आये और ज्ञान वैराग का राग आरम्भ किया तब व्रज सुन्दरियों ने ऐसे उत्तर दिये कि निरुत्तर होरहे संयोग वश एक भ्रमर वहां आय गया गोपिका उस भ्रमर के मिस करिके ऊधो से कहती हैं कि हे भ्रमर तू उसी निर्दई वो कपटी की स्तुति वो बड़ाई करता है कि जिसने राजा बलि बिचारे से कपट वो धूर्तई करिके उसका राज लेलिया फिर रामावतार धारण करिके पहिले तो सूपनखा को अपने सुखकी शोभा पर वशीभूत वो आसक्त कर लिया फिर उसी के रूप का नाश कर दिया और न जानै कि उस धूर्त बेशील को अन्तर्यामी किस वास्ते कहते हैं जो वास्तव करिके अन्तर्यामी है तो हमारे अन्तर की दशा देखकर क्यों नहीं आता और हमारे दुख की दशा पर दया क्यों नहीं करता सो कैसे अन्तरयामी नहीं है कै निर्दई वो बेशील है इस प्रकार के चरित्रों से कि अनन्त हैं गोपिकाओं का अलौकिक भाव अच्छे प्रकार प्रत्यक्ष है॥ महाभारत वो भागवत वो गर्ग संहिता वो विष्णु पुराण और दूसरे पुराणों से प्रगट है कि गोपिका बेदस्तुती वो ऋषेश्वरों वो जनकपुर वासिनों की स्त्रियों की अवतार थीं जितना कि ज्ञान और प्रेम वो भाव इत्यादि उनको हुआ सब ठीक वो युक्त है प्रेम गोपिकाओं का इतना हुआ कि सब ऋषेश्वर लोग वो कवि लोगों ने अगिले वो अबके प्रेम का अन्त गोपिकाओं पर समाप्त लिखा और इस भक्तमाल में जो प्रेम की दशा प्रेम निष्ठा में लिखी जायगी और उनके दृष्टान्त वर्णन होंगे सो करोड़ से करोड़ वो भाग गोपिकाओं के प्रेम का है विचार यह किया था कि कुछ गोपिकाओं के प्रेम का वर्णन इस कथा में भी लिखा जाय परन्तु जब अपार देखा तब मौनता को अंगीकार किया शृंगार रस जिसका कुछ वर्णन ग्रन्थारम्भ में और कुछ इस शृंगार रसकी

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

भूमिका में ऊधा उसरसके खजाने की ध्वजा अथवा उस रस के देशको सांम्राट अथवा चक्रवर्ती राजा यह व्रज गोपिका ऊई वो उस रसका अन्त व्रज गोपिकाओं पर समाप्त हो चुका अब थोड़ा थोड़ा जिस किसी को प्राप्त होता है तो व्रजबागरियों की कृपा से मिलता है और जिस किसी को उसके स्वादकी चाह होवे तो गोपिकाओं के चरित्र की शरण लेवे और व्रज गोपिका वो व्रज चन्द्र महाराज वह चरित्र सब जो शास्त्रों में लिखे हैं ज्यों के त्यों अब तक करते हैं जिनको भगवत् ने सूझने वाली आंखें कृपा करके दी हैं सो उस चरित्र को देखते हैं व्रज नन्द महाराज कबहीं व्रज छोड़ कर अलग नहीं होते और भागवत इत्यादि पुराणों में जो मथुरा वो द्वारका का और भगवत् के जाने का वर्णन ऊधा वे चरित्र भगवत् के कोई कोई कार्य के प्रयोजन के हेतु हैं एक रूपने तो सब चरित्र मथुरा आदि में किये और दूसरा निज स्वरूप पूर्ण ब्रह्म सच्चिदानन्द घन नन्द नन्दव महाराज का व्रजमें रहा कि अब तक वे चरित्र ज्यों के त्यों होते हैं इस का सिद्धांत वेदस्तुती और पुराणों से अच्छे प्रकार उपासक जनों ने निश्चय कर दिया है उसको विस्तार करके लिखने की यहां समवाई नहीं परन्तु एक वृत्तान्त थोड़े में लिखा जाता है जब उद्धव जीने बिरह करिके गोपिकाओं की अत्यन्त बिकलता देखी तो आप दयासे अति बिकल वो बे चैन हो गये और भगवत् की और निर्दयता वो कृतघ्नता को समाप्त करने लगे यह विचार करतेही थे कि एक चरित्र देखा यह कि नन्द नन्दन महाराज किसी व्रज गोपिका से हंसते हैं और किसी का माखन चुराकर खाते हैं और नन्दराय जीके घरमें गऊ बछड़ों की रक्षा गो दोहन इत्यादि करते हैं और बनसे गऊ चराये लिये आते हैं और गोपिका भगवत् के देखने के लिये अपने अपने द्वारपर खड़ी हैं ऐसेही ऐसे चरित्र जो भगवत् नित्य क्रिया करते थे देखे और आश्चर्य में चकित होकर बे सुधि बुद्धि हो गये तब व्रज गोपिकाओं ने समझाया कि उद्धव तू ज्ञान किसको सिखलाता है और क्यो प्रयोजन इत्यादि को वर्णन करता है श्री कृष्ण सदा यहां विराजमान रहते हैं और कबहीं व्रजसे अलग नहीं होते॥

मीराबाई जी की कथा॥

गोपिकाओं की प्रीति और भक्ति के अनुसार कलियुग में अशंक वो निर्भय प्रीति मीराबाई जी की ऊई संसार की लज्जा और कुलकी परम्परा त्याग करके बलसे गिरधर लालजीसे प्रेम लगाया और निर्मल यश सब भगवत् भक्तों ने गाया मेरतेके राजाके घर जन्म ऊआ और लड़काई से गिरधर लालजी के रूप अनूप में प्रीति होगई कारण उस प्रीति होने का कोई २ भगवत् भक्त यह कहते हैं कि किसी बड़े के घर बरात आई थी उस बरात के धूम धाम के देखने के निमित्त महल की स्त्रियां कोठे पर

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

चढ़ी उस समय मीराबाई जीकी माता गिरधरलाल जी के दर्शन के हेतु जो महल में बिराजते थे गई थी मीराबाई जी भी तीन चार बरस की थी खेलती हुई अपनी माता के पास चलीगई वो अपनी माता से पूछा कि हमारा दूलह कौन है उनकी माने हंसकर गोदमें उठा लिया और गिरधरलाल जी की ओर बतलाकर कहा कि तेरा दूलह यह है मीराबाई जीने अपनी माता की लज्जा से अपने दूलहसे घूंघटकर लिया और हंसी घड़ी से ऐसी प्रीति गिरधरलाल जी में हुई कि एक पल बिना दर्शन वो चिन्तवन अपने स्वामी के नहीं व्यतीत होता था भक्तमाल के तिलक कारने लिखा है कि मीराबाई वो गिरिधरलाल जीके प्रीति दृढ़ हो जाने के पीछे माता पिता ने चीतौर के राना के बेटे के साथ मीराबाई जी का बिवाह कर दिया और बरात बड़ी भारी आई जब रानाके बेटे के साथ भांवरी होने लगी तो मीराबाईजी अपनी भांवरी गिरिधरलाल जीके साथ करती थी राना के बेटे का भान तनक नथा जब बिदा करने की तैयारी को माता पिता ने किया तो मीराबाई जी गिरिधरलाल जीके बियोग को न सहिसकी और अत्यंत बिकल होकर रोते रोते बे सुधि हो गई मां बाप ने अति प्रेम वो प्यार से कहा कि सब कुछ तैयार है जो तुम को अच्छी लगै सो ले आव मीराबाई जी ने उस बिकलता दशा में कहा कि जो हमको जिलाबा चाहो तो गिरिधर लाल जी को देव मैं तनमन से सेवा करूंगी माता पिता को मीराबाई जी बहुत प्यारी थी और समय बिछुड़ने की थी इस हेतु गिरधर लाल जी को मीराबाई जी को सौंप दिया बाई जी भगवत् को अपने डोले में बिराजमान करके भगवत् छबि को देखती हुई और अपने प्राण प्रीतम के मिलने से बहुत प्रसन्न वो हर्षित राना के घर बड़ेचोसासने डोला उतारने की रीति भांति करके तब पहिले दुर्गाका पूजन अपने बेटे से करवाया और फिर मीराबाई जीसे कहा मीराबाईजीने उत्तर दिया कि यह तन गिरधर लालजी को भेटकर चुकी हूं उनसे सिवाय और किसी के सामने शीस कब झुका सक्ता है सासने कहा दुर्गा के पूजन से सुहागकी बढ़ती होती है इस हेतु दुर्गा पूजन उचित है मीराबाई जीने उत्तर दिया कि इस बातमें हठ करने का कुछ प्रयोजन नहीं जो कुछ मैंने पहिले कही है उसके सिवाय और कुछ नहीं होगी यह सुनकर मीराबाई जी की सास अप्रसन्न हुई और जल बल कर अपने पति के पास गई और कहा कि यह बहू किसी काम की नहीं जब कि पहिले ही दिन उत्तर देकर मुझको लज्जित करदिया तो न जानें आगे क्या करैगी राना यह बात सुन कर महा क्रोध में भर कर मीराबाई जीको मारने को उद्यत होगया परन्तु अपनी स्त्री के कहने से रुकिरहा और अलग मकान में टिकादिया॥ यह बात जानेरहो कि गोपिका और रुक्मिणी ने जो दुर्गा

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

पूजन किया था तो श्रीकृष्ण महाराज तबतक मिले नहीं थे वो मीराबाईं जी को तो पहिलेही श्रीकृष्ण महाराज पति मिलगये इस हेतु दुर्गा पूजन का प्रयोजन न हुआ और रुक्मिणी वो गोपिकाओं के दृष्टान्त से शंका भी योग्य नहीं है मीराबाईं जी जब अलग स्थान में रहने लगीं तो बहुत प्रसन्न हुईं और गिरधरलाल जी को विराजमान करके शृंगार और संझावटे में भगवत् की और सत्संग में दिन रात मन लगाया राना की बेटी जिसका उदोबाई नाम था सो मीराबाईं जीको समझाने के निमित्त आई और कहने लगी कि भाभी तूं बड़े घरकी बेटी है कुछ ज्ञान वो विवेक सीख वैरागियों का संग छोड़ दे इस में दोनों कुलको कलङ्क लगता है मीराबाईं जीने उत्तर दिया कि सत्संग से करोड़ों जन्मके कलङ्क छूटते हैं जिसको सत्संग प्यारा नहीं सोई कलङ्की है और हमारा तो सत्संगही से जीवन है जिस किसी को दुख होय उसको तुम्हारी शिक्षा उचित है उदाबाई फिरि आई और अपने माता पिता से सब वृत्तान्त कहा कि मीराबाई भगवत् भक्ति में ऐसी दृढ़ है कि किसी का कहना नहीं मानती रत्न क्रोधित हुआ और बिषका कटोरा चरणामृत का नाम करिके मीराबाई जीके पास भेजि दिया मीराबाईजीने भगवत् चरणामृत को शीसपर चढ़ाया और अति आनन्द से पानकर गई राना अगोरता रहा कि अब मीराबाई के मरने के समाचार पहुंचते हैं परंतु मीराबाई जीके मुखारविन्द पर शोभा का प्रकाश छिन छिन बढ़ता था भगवत् शृंगार और शोभा में छकी हुई नये २ प्रकारों से सजावट करती थी और भगवत् चरित्रों का कीर्त्तन करके रस और प्रेमामृत में भरती थी उस समय मीराबाई जीने एक बिष्णु पद भगवत् के साम्हने कीर्त्तन किया ॥ स्याई उसका यह है ॥ रानाजी जहर दियो हम जानी ॥ जब मीराबाईं जीको विष की ज्वाला कुछ न व्यापी तब राना ने डेवढ़ी दार रखदिया कि जिस समय मीराबाईं जी साधों से बोलना बत रावना करती हो उसका वृत्तान्त पहुंचावै कि मारडालीजावै वो मीराबाईजी गिरधरलालजी के साथ हंसी वो ठट्ठा वो खेल वो बात चीत पर कायां अभिमानियों वो प्रियवल्लभों की जैसी होती है किया करती थी एक दिन डेवढ़ी दारने समाचार पहुंचाये कि इस समय मीराबाईं जी किसी के साथ बोल बतराव हंसी ठट्ठे की करती हैं राना तरवार पकड़े पहुंचा और पुकारा कि किवारखोल मीराबाईं जीने किवाड़ खोल दिये जब भीतर गया तो कुछ न देखा बोला कि जिसके साथ बात चीत हंसी ठट्ठे की हो रही थी सो कहां है मीराबाईं जीने कहा कि तुम्हारे आगे बिराजमान है आंख खोलकर देखलो कि उसको तुमसे कुछ लज्जा वो ओट नहीं है उस समय मीराबाईं और भगवत् आपुस में चौसर खेलते थे जब राना पहुंचा तो भगवत् ने पांसा

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

डालने के वास्ते हाथ फैलाया था रानाने जो हाथ भगवत् का पांसा लिये देखा देखा तो लज्जित हुआ फिर आया रानाने अपने आंखें से यह प्रभाव भी देखा परंतु उसके मन में कुछ न व्यापा निश्चय करिके जबतक भगवत् भक्तों की कृपा नहीं होती तबतक भगवत् कदापि कृपा नहीं करते राना तो मीराबाई जीके मारने के उपाय में लगा था भगवत् कृपा उसपर किस भांति से हो एक धूर्त कपटी साधुका भेष बनाकर मीराबाई जीके सामने आया और कहा कि गिरधरलाल जीकी आज्ञा है कि मीराबाई जीका पुरुष के अंग संग का सुखदेव इसहेतु आया हूं मीराबाई जीने कहा कि गिरधरलाल जीकी आज्ञा मेरे शिर ऊपर है पहिले आप भोजन प्रसाद करैं तिसके पीछे मीराबाई जीने जहां भगवत् भक्तों की समाज होरही थी उस मकान के आंगन में पलंग बिछवाया और सजिके उस धूर्त साधु को बुलाया और कहा कि पलंग पर पधारिये लज्जा और भय किसी बात की न चाहिये क्योंकि गिरधरलाल जीकी आज्ञा का पालन सर्वथा उचित है वह धूर्त सुनतेही पीली पड़ गया और हृदय का अन्धकार ध्वस्त होकर प्रकाश होगया मीराबाई जीके चरणों में गिरि गिरिकरिके पड़ा मीराबाई जीने कृपा करिके भगवत् सन्मुख कर दिया॥ अकबर बादशाह मीराबाई जीकी सुन्दरता का वृत्तान्त सुनकर तानसेन के साथ दर्शन को गया और दर्शन किये पीछे भक्ति की दशा देखकर अपने भाग्य को धन्यमान कर बहुत प्रसन्न हुआ तानसेन जब एक विष्णुपद भगवत् के भेटकर चुका तब फिरि चलागया मीराबाई जी दर्शन के निमित्त श्री वृन्दावन में आईं वो जीव गोसाईं जीके दर्शन को गईं जीव गोसाईं ने कहलाभेजा कि हम स्त्रियों का दर्शन नहीं करते मीराबाई जीने कहाकि हमतो वृन्दावन में सबको सखी रूप जानती थीं और पुरुष केवल गिरधर लाल जीको सो आज हमारे जानने में आया कि इस व्रजके और उस व्रजराज के और भी पट्टीदार हैं गोसाईं जी सुनकर नांगे पायन आये मीराबाई जीके दर्शन करके प्रेम में पूर्ण होगये पीछे मीराबाई जी सबबन वो कुञ्जों के दर्शन करके वो भगवत् रूप माधुरी को हृदय में धरके अपने देश में आईं राना की द्वेष बुद्धि ज्यों की त्यों बनी देखकर द्वारका जी में चली गईं और गिरधरलाल जीकी शोभा में छकी हुई भगवत् शृंगार के रसमें मग्न रहने लगी जब भगवत् भक्तों का आवना राना के नगर में बन्द हुआ और भांति भांति के उपद्रव होने लगे तब राना ने मीराबाई जीकी भक्ति का प्रताप जाना और बहुत से ब्राह्मण मीराबाई जीको फेरि लाने के निमित्त भेजे ब्राह्मण द्वारका में गये और राना की प्रार्थना वो विनती सब सुनाई ब्राह्मणों ने जब देखा कि मीराबाई जीको देश चलने का मन नहीं है तो सब धरने बैठे कि जब तुम चलोगी तबहीं अन्न जल करैंगे मीराबाई जीने

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

ब्राह्मणों से कहा कि मेरा निवास इस द्वारका में रनछोड़जी की कृपा से हुआ है उनसे विदा हो आऊं सो वहां जाकर गिरधर लाल जीके प्रेम में मग्न होकर एक विष्णुपद भगवत् भेंट किया अन्तका तुक उसका यह है॥ मीरा के प्रभु गिरधर नागर मिलि बिछुड़न नहिं कीजै॥ भगवत् पूर्णब्रह्म सच्चिदानंदघन परम प्रीति मीराबाई जीकी देखकर अलग न करसके और उनको अपने अंग में मिला लिया विलम्ब भये पीछे जो ब्राह्मण लोग ढूंढ़ते वहां गये तो मीराबाई जीको कहीं न देखा परन्तु सारी जो मीराबाई जी पहिने थीं सो पीताम्बर की जगह भगवत् के अंगपर देखी भक्ति की निश्चय करिके फिर आये वो अकबर बादशाह ने चीतौर को मीराबाई जीके चले जाने पर युद्ध से विजय करिके ध्वस्तकर दिया॥

करमैती जी की कथा॥

करमैती जी परसराम रहनेवाले कण्डिले राजा सिखादत्त के प्रोहित की बेटी ऐसी परम भक्त हुई कि कलियुग जो हजारों कलङ्क वो पीड़ा से भरा हुआ है करमैती जीके निकट नहीं आया अनित्य पतिको छोड़कर नित्य निर्विकार पति श्रीकृष्ण महाराज से प्रीति लगाई वो संसार की सब फांसे तृणके सदृश तोड़कर वृन्दाबन में बास किया निर्मलकुल जो परसराम ब्राह्मण उनके पिता हैं उनके धन्यभाग हैं कि जिसके घर ऐसी लड़की जन्मी जिसकी बड़ाई और भक्ति सब भक्तों ने वर्णन करी श्री कृष्ण महाराज के रूपपर करोड़ों कामदेव निछावर होते हैं ऐसा चित्त को लगाया कि उसी रूपके चिन्तवन वो ध्यान में मग्न रहती और ध्यान के सुखसे ऐसी आनन्द वो खादलेती कि शरीर में न समाती वो संसार का सब काम असार वो फीका होगया करमैतीजी का पतिगवना लेने के निमित्त आया माता पिताने गहने वो कपड़े की अच्छी तैयारी करी करमैती जी को शोच हुआ कि यह तन भगवत् भजन के हेतु है शरीर के विषय भोग के सुख लेने के निमित्त नहीं है इसहेतु देह त्याग की इच्छाकरी फिर शोचा कि भगवत् की प्रीति और भजन सब अर्थों पर मुख्य तर अर्थ है और जगत् की प्रीति वो सम्बन्ध सब अनित्य हैं सो बिना शरीर भगवत् भजन नहीं होसक्ता इस हेतु देहका त्याग करना उचित नहीं भजन के विरोधियों का त्याग योग्य है यह विचार सिद्धान्त ठहरायके जिसरातके भोर को गवना था उसी रात के आधी बीतने पर भगवत् के रूपमें छकी हुई और उसी ध्यान रूपी रूप के साथ निर्भय निराली अकेली घरसे निकल कर चल खड़ी हुई प्रभात को चारों ओर आदमी ढूंढ़ने को दौड़े उनको आते देखकर एकभरे ऊंटके कोठार में घुसकर छिपगई वो कलियुग के पापों के दुर्गन्धके बराबर भरे ऊंटकी दुर्गन्ध नहीं तुलसती इसी कारण से वह दुर्गन्ध जनाई न पड़ी वो भगवत् शृंगार के अतर इत्यादि की सुगन्ध

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

जो मन वो प्राण के मस्तक में समाई थी उसके कारण से भी कुछ दुर्गन्ध का विकार न हुआ तीन दिन उसी कलंक में छिपी रही तीन दिन बीते उसमें से निकलकर एक मेला गंगा नहाने को जाता था उसके साथ गंगा जी पर आई वहां स्नान करके गहने सब दान करदिये तब मथुरा जी में गई वहां स्नान और याचा करी तब वहां से वृन्दाबन में ब्रह्मकुण्ड पर निवास करके भगवत् के चिन्तवन और ध्यान में रहनें लगीं ॥ करमैती जी का पिता परसराम ढूंढ़ता मथुरा जी में पहुंचा एक मथुरा बासी चौबे से मताभाय कर वृन्दाबन में गया उनदिनों में इतनी आबादी वो कुञ्ज वो बाग इत्यादि वृन्दाबन में नहीं थीं बन सघन वो हरियाली बड़ी थी एक बरगद के वृक्ष पर चढ़कर देखा कि करमैती जी भगवत् ध्यान में बिराजमान हैं वृक्ष से उतर कर उनके पास आया और अत्यन्त स्नेह से रोता कलपता चरणों में लपटगया और कहनें लगा कि तुम्हारे चले आने से मेरी नाक कट गई कि भाईबन्धु कलङ्क लगाते हैं और सारा तेरा बोल मारता है अब घरको चलो अपने दुसरात में जाकर भगवत् भक्ति वो सेवा पूजा किया करो यह वन है कोई जंतु तुमको खाय जायगा हमको दुख होगा तुम्हारी माता जी घर में अटकी है तिसको निर्लाघो करमैतीजीने उत्तर दिया कि निश्चय करिके जिस २ तनमें भगवत् भक्ति नहीं है वह तन वृतक प्राय है जो जीने को चाह है तो भगवत् भक्ति करनी चाहिये और यह जो कहतेहो कि नाक कटगई सो नाक पहिलेही से तुम्हारे मुंहपर न थी क्योंकि मुख्य नाक भगवत् भजन वो भक्ति है बिना उसके हजारों नकटे कान कटे हैं सोचकरो कि पचास बरष तुम्हारी अवस्था संसार के विषय विलास में बीतगई और कबहीं तृप्ति न हुई अबभी मोह रूपी नींद से जागो कि सब भोग विलास अनित्य वो तुच्छ हैं भगवत् का भजन सार है सब बखेड़ा छोड़ कर उसी ओर मनलगाओ इस थोड़े ही उपदेश से परसराम का अज्ञान इस प्रकार दूर होगया कि जैसे सूर्य के उदय होने से अंधकार का नाश होजाता है तब तक करमैती जी ने एक भगवत् स्वरूप सेवा के निमित्त दिया वो विदा किया परसराम घर आया भगवत् मूर्ति बिराजमान करके ऐसा मन लगाया कि सिवाय सेवा वो भजन के दूसरी ओर तनक सुरत नरही वो लोगों के यहां आना जाना सब किसी से बोलना बतरावना भी छोड़ दिया एक दिन राजा ने लोगों से पूछा कि परसराम ब्राह्मण बहुत दिनों से हमारे पास नहीं आता उसका क्या समाचार है किसी मनुष्य ने सब वृत्तान्त विस्तार से भक्ति वो भजन का वर्णन किया राजा ने मनुष्य बुलानें को भेजा परसराम ने कहा अब राजा से कुछ काम नहीं मनुष्य तन पाय कर जो कार्य करना चाहिये तिसमें लगाहूं राजा परसराम की भक्ति और वैराग को विचार

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

करके आप दरशनों के निमित्त आया और उनकी सांची प्रीति भगवत् में देख कर और करमैती जीके भक्ति और वैराग्य का वृत्तांत सुनकर प्रेम से विह्वल होगया इच्छा हुई कि करमैती जीका दर्शन करना चाहिये जो मेरे अच्छे भाग हों तो क्या आश्चर्य है कि आवें और देशको पवित्र करें इस आशा से वृन्दावन को गया और करमैती जीके दर्शन किये देखा कि नन्दनन्दन महाराज की निश्चल और दृढ़ प्रीति में करमैती जी उस अवस्था को पहुंच गई हैं कि कुछ कहने सुनने की बेर नहीं रही उस दशा में चलने के निमित्त अधिक बोलचाल न करसका और करमैती जीके मने करने पर भी एक कुञ्ज कुटी करमैती जीके रहने के निमित्त बनवाकर चरणों को दण्डवत करके फिर आया और भगवत् भजन में लौलीन हुआ अब तक कुटी करमैती जीकी ब्रह्म घाट पर प्रगट है॥

नरसी जी की कथा॥

नरसी जी महाराज का गुजरात देशमें और ऐसे कुलमें कि स्मार्तधर्म्म से सिवाय जहां भगवत् भक्ति का निर्मूलपतान था और जो किसी को तिलकछाप धारण किये हुए देखते थे तो उसी की निंदाकरते थे तहां जन्मेहुआ और ऐसे परम भागवत हुए कि उसदेश के पापों को दूर करके सबको भगवत् भक्त करदिया शृंगार और माधुर्य के उपासना में ऐसे हुए कि गोपिकाओं के तुल्य कहना चाहिये जूनागढ़ के रहनेवाले थे इनके मा बाप जब मरगये तो भाई भावज के यहां रहनेलगे एकदिन बाहर से खेलते हुए घरमें आए और भावज से पानीमांगा उसने अपने दुष्ट प्रकृतिके कारण से क्रोध करके उत्तरदिया कि ऐसाही कमाई करके लाया है जो पानीपिलाऊं नरसीजी को लज्जाके मारे जीना भारी होगया और शिवजीकी सेवामें गये सातदिन तक बिनाअन्न जल शिवालय में पड़े रहे शिवजीमहाराज ने विचार किया कि संसारी मनुष्य भी अपने द्वारपर पड़े हुएकी रक्षा करता है और मैं जगत् का ईश्वरहूं इसहेतु साक्षात् आकर दर्शन दिये और कहा कि जो इच्छा हो सो मांग नरसी जी ने विनयकिया कि मुझ को मांगने नहीं आता जो कुछ आपको प्रियहोय सो दीजिये शिवजी को चिन्ता हुई कि मुझको वह प्रिय है कि जिसको वेद भी नेति २ कहते हैं और जिसका भेद अपनी परमप्रिया पार्वती जीको भी अच्छे प्रकार से नहीं बतलाया इस मनुष्य को तुरन्त कैसे बतलादेवें फिर अपने वचन और इस बातको देखा कि इस मनुष्य के प्रभाव करिके एक देव कृतार्थ होजावेगा इस हेतु अपना और नरसीजी का सखी रूप बना कर वृंदावन में आये देखा कि सब भूमि कंचनमई रत्न जटित उसके बीचमें रास मंडल वो रास मंडल में असंख्य गोपिका और गोपिकाओं के बीच में सिंहासन और सिंहासनपर प्रियाप्रीतम विराजमान हैं शोभा

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

की चांदनी से करोड़ों चन्द्रमा की चांदनी फीकी दिखाई पड़ती है रास विलास होरहा है ताल देकर कबहीं आप लालजी प्रिया जी को और कबहीं प्रिया जी प्रीतम को सांगीत की गति सिखाते हैं और कबहीं परस्परगलबांहीं देकर नृत्य और कबहीं परस्पर हाथ पकड़कर गान करते हैं और कबहीं दूसरी गोपिकाओं के नृत्य वो गान पर सावधान हैं और कबहीं हंसी वो ठट्ठा होता है पखावज वो बीना आदि सब प्रकार के बाजे मिले ताल सुरसे बजते हैं छहोंराग रागिनियों सहित सखी रूपसे खड़े हैं नरसी जी ने जब यह समाज देखा तो कृतार्थ होगये दुःख सुखसे उसी घड़ी अलग हुए और शिव जी की आज्ञा से मशाल दिखलाने लगे व्रजकिशोर महाराज ने प्रियाजी से कहा कि आज यह सखी कोई नई आई है प्रिया जीने उत्तर दिया कि शिव जी के साथ है तब बटवागर महाराज ने मन्द मुसुकान और कृपा की दृष्टि से नरसी जी की ओर देखा और फिर प्रियाजी ने भी वचन से सहाय किया तब आज्ञा हुई कि अब तुम जाओ और जो देखा है उसीका ध्यान और चिन्तवन करते रहो जहां बुलाओगे तहां तुरन्त आऊंगा नरसी जी भगवत् आज्ञा पाय परम आनन्द में मग्न अपने घरको आये अलग एक घर बनाकर उसी समाज के ध्यान में रहने लगे एक ब्राह्मण की लड़की से बिवाह होगया उसीसे एक बेटा दो लड़की उत्पन्न हुए संसार में भगवत् भक्ति को विख्यात किया जो साधु आते उनकी सेवा अच्छे प्रकार किया करते और रात दिन भगवत् भजन से सिवाय दूसरा कार्य नहीं था यह वृत्तान्त देख कर उनके सजाती ब्राह्मण द्वेष करके शत्रुता करने लगे परन्तु नरसी जी तो भगवत् रूप के समुद्र में मग्न थे और भगवत् सदा उनकी रक्षा वो सहाय के निमित्त प्राप्त रहते थे इस कारण से वे लोग कुछ न करसके एक बेर साधु आनि उतरे लोगों से पूछा कि हमको द्वारका की हुण्डी करानी है कोई साहूकार यहां है लोगों ने कुत्सा यो ठट्ठे की राह से नरसी जी को बतलाया और समझा दिया कि जो वे न माने तो तुम चरण पकड़ लेना और बहुत विनय प्रार्थना करना साधु आये और सात सौ रुपया नरसी जी के आगे रख कर चरण पकड़ लिये नरसी जी नाहीं करने लगे तो हाथ जोड़ जोड़ प्रार्थना करने लगे नरसी जी ने जाना कि किसी के बहकाने से आये हैं अथवा भगवत् ने शत्रु लोगों के हृदय में प्रेरणा करके यह खरच भेजवाया है तुरन्त हुण्डी को लिख दिया और समझा दिया कि जिसके नाम हुण्डी है उसका नाम सांवल साह है उसी के हाथ में देना वे साधु द्वारका में आये और उस साहूकार को ढूंढ़ा पता न मिला लाचार भूखप्यास से विकल नगर से बाहर आये कि भोजन प्रसाद से छुट्टी करके तब फिर साहु को ढूंढेंगे सांवलासाहु महाराज ने विचार

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

किया कि विना पक्के खोजके मेरा मिलना कठिन है परन्तु जो अधिक कष्ट ढूंढ़ने का देता हूं तो मेरी शुमारतगरी और नरसी जी की साहूकारी में बट्टा लगता है इस कारण बड़ी पगड़ी लम्बी धोती नीचा जामा पहिन कमर बांध कलम कान पर रख एक बही बगल में दबी साहूकार रूप बना और थैली रूपैया की कांधे पर रख जहां साधू टिके थे आये और पक्का कि नरसी जी की झण्डी कौन लाया है साधु लोगों के तन में मानों प्राण पड़ गया और सब एक बेरही बोले कि महाराज हम लाये हैं आपको ढूंढ़ते २ हार गये आपने बड़ी कृपा करी कि आये साहू ने कहा कि किस वास्ते लजवाते हो हमको तुमको ढूंढ़ते कई दिन बीति गये और नगर में जो मेरा पता न मिला तो कारण यह है कि जो भगवत् का निज दास है सो मुझको जानता है साधों ने झण्डी को दिया और सांवलशाह ने नगद रुपया देकर नरसी जी के नाम जवाब लिख दिया कि चिट्ठी आई रुपैया रोकदे दिये मुझको अपना शुमारताजान कर काम काज लिखते रहना साधू लोग याचा करके फिर नरसी जी के पास आये और वह चिट्ठी दीनी नरसी जीने पूछा कि सांवलशाह को देख आये साधोंने कहा हां महाराज देख आये नरसी जी अति प्रेम से मिले और साधों को जो यह वृत्तान्त मालूम हुआ तो वो भी प्रेम में रंगिगये नरसी जीने वह सब रुपैया साधु सेवा में खर्च किया क्योंकि साहू का रुपैया देना निश्चय है और उसके पास कोई लेजाने वाला पहुंच नहीं सकता है सिवाय साधु सेवा के और कोई उपाय नहीं नरसी जी की बड़ी लड़की के लड़का उत्पन्न हुआ और नरसी जी के घरसे कुछक की सामा नहीं गई सास आदिक सब नित्य बोली मारती वो गालियां दिया करती थीं उस लड़की ने नरसी जीको कहला भेजा कि इस सासने मुझको जातना में डाल रक्खा है जो तुमसे कुछ दिया जावे तो लेआओ नरसी जी एक पुरानी गाड़ी जिसके बैल अति दुर्बल वो बूढ़े से तिसपर चढ़कर उस नगरके किनारे पहुंचे लड़की ने जो कंगाली दशा देखी तो नरसी जीसे कहा कि जो तुम्हारे पास कुछ न था तो किस हेतु आये नरसी जीने कहा कि चिन्ता का कुछ प्रयोजन नहीं अपने सासके पास जाकर जो कुछ सामान कुछक का चाहिये सो एक कागज पर लिखालेआवो सासने क्रोध करके सारे नगर के वास्ते सामा पहिरने का बो गहना सब लिख दिया जब नरसी जीकी लड़की फरद लेकर आई तो नरसी जीने फेर भेजा कि जो किसी के निमित्त कुछ और बाकी रहगया हो तो वह भी लिखकर भेजो सास ने रिस करके लिख दिया कि दो पत्थर भी भेजदेना पीछे एक पुराने वो टूटे दहलान में टिका दिया वो न्हाने के वास्ते जल भेजा सो ऐसा उष्ण किसीय न लगाया जाय भगवत् इच्छा से मेह बरसा जल शीतल होगया नरसी जीने यथेष्ट

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

स्नान किया और उस दहलान में एक कोठरी थी उसके द्वारपर परदा डाल कर भगवत् कीर्तन आरम्भ किया भगवत् आप रुक्मिणी जीके सहित सब असबाब जो कागज पर लिखा था लेकर उस कोठरीमें आये और रुक्मिणी जीको साथ लानेका यह हेतु है कि पुरुषों के शृंगार पोशाक सामा तेर मेरे आधीन है जो स्त्रियों की सामा में कुछ भेद पड़ैगी तो उसका दोस रुक्मिणी जी का समझा जायगा एक शंका यह उत्पन्न हुई कि नरसी जी शृंगार उपासक थे उचित यह था कि उनके इष्टदेव अर्थात् नन्द नन्दन महाराज वो राधिका महारानी आकर बिराजमान होते रुक्मिणी जी वो द्वारकानाथ महाराज क्यों आये उत्तर इसका यह है कि नरसी जीने प्रिया प्रीतमके सुख समाज वो विहार में दुचिताई डालना उचित न समझा इस हेतु द्वारकानाथ वो रुक्मिणी जीको स्मरण किया दूसरे यह कि भगवत् ने विचारा कि यह कार्य्य शृंगार के सम्बन्ध नहीं है गृहस्थी धर्म के सम्बन्ध का है इसहेतु उसरूपसे चलना चाहिये कि सब कार्य्य बिवाह गवना छूछक भात इत्यादि को जिसने किया होय सो द्वारका नाथ वो रुक्मिणी जीके रूपसे प्रगट हुए पीछे नगर के बासीलोगों को सामा ओढ़ने पहिरने की बटने लगी और ऐसे असबाबदिये कि किसीने आखसे भी नहीं देखे थे सबसे पीछे दो पत्थर चांदी सोने के दिये सारे नगर वो देश में नरसी जी का यश ऐसा हुआ कि अब तक साधु समाजमें गाया जाता है पीछे नरसी जी अपने घरको चले एक स्त्री का नाम उस कागज पर नहीं चढ़ाया छूटगया था उसको नरसी जीकी लड़की अपनी पोशाक देने लगी उसने हठ किया कि जिसके हाथसे सबने लिया है उसी के हाथसे लूंगी नरसीजीने अपनी लड़की के संकोच से दोहराय के भगवत् को बुलाया और उसको भी सब असबाब दिया इस देने से नरसी जीकी लड़की इतनी प्रसन्न हुई कि शरीर में न समाई और अपने बापको भक्ति देखकर अपने पति इत्यादि को त्यागा करदिया नरसी जीके साथ चली आई भगवत् भजन में लगी दूसरी लड़की ने अपना व्याहही न कराया वह भी भगवत् भक्त होगई जूनागढ़ जहां नरसीजीका घर था दो गाने वाले गाते फिरते थे कहीं एक कौड़ी उनको न मिली किसीने नरसी जी का नाम बतलादिया कि उनके घर से कुछ अच्छी भांति तुमको मिलैगा वे आयके नाचने गाने लगे नरसी जीने समझादिया हम फकीर हैं हमसे क्या चाहते हो चले जाओ उन्होंने न माना नरसीजीने कहा कि यहां केवल भगवत् भक्ति साक्षात् है जो तुम को उसकी चाह होय तो मूंड़ मुड़ाय के आजाओ उन्होंने तुरंत फिर मुंड़ा लिया और नरसी जीके समाजमें मिल गये नरसीजीकी दोनों लड़की वो दोगायन प्रेम और भक्तिसे भगवत् का भजन और कीर्त्तन करके जो भाव भगवत् भक्ति और प्रेम के परम आनंद देने वाले होते प्रगट किया करती नरसी जीका मामूशाह

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

संगनां में जूनागढ़ के राजा का दीवान् था उसको नरसीजी का आचरण अच्छा नलगा और राजा से मिथ्या पाखंडी ठहराय के इस बात पर सन्नद्ध किया कि दण्डी साधु और ब्राह्मणों का समाज करके नरसी जीको इस नगर और देशसे निकालदेना चाहिये कि लोगों को पाखण्ड में भुलाता है सो चार चोपदार नरसीजी को लेआने वास्ते भेजे नरसीजीने अपनी लड़कियों और दोनों गायनों को कहा कि तुम लोग कहीं अलग होजाओ हम राजा के पास जाते हैं उन लोगों ने कहा कि राजा का क्या डर है हम भी साथ हैं सो सब भगवत् कीर्तन करते हुए राजा की सभा में आये सब सभावालों के सुख की थी नरसी जीके प्रताप से जाती रही परन्तु एक पण्डित ने पूछा कि स्त्रियों को साथ रखना किस पद्धति में लिखा है नरसीजीने उत्तर दिया कि सब शास्त्र और पुराण और वेदों का सार भगवत् भक्ति है जिस किसी को कि भक्ति प्राप्त हुई वह परम भागवत् और भगवत् रूप है क्या स्त्री होय क्या पुरुष और उसका एक निमिष का सत्संग भगवत् भक्ति का देने वाला है भगवत् ने श्री मुखसे आप मथुरा वासिनी स्त्रियों की श्लाघा करी और उनके प्रति मथुरा के ब्राह्मणोंने उनके भागकी बड़ाई करके कहा कि यह स्त्री परम बड़भागिनी हैं कि भगवत् का दर्शन पाया और हमारी सर्वज्ञता और वेद पढ़ने पर धिक्कार है कि भगवत् से विमुख हैं भागवत में लिखा है कि वही बड़ा है और वही मुक्ति के योग्य है और वही सत्संगी है और वही सेवा करने वाला है कि जिसको भगवत् भक्ति है फिर भगवत् का बचन है कि मैं भक्ति के बसमें हूं एकादशस्कन्ध में भगवत् का बचन है कि मेरा भक्त जो खपच भी है तो उन बड़े कुलीनों से कि जो भगवत् भक्त नहीं बड़ा है तो जिस किसी को भगवत् भक्ति लाभ हुई उसका स्त्री अथवा पुरुष अथवा छोटी जाति या बड़ी जाति कहना शास्त्र विरुद्ध है वह भागवत और भगवत का प्यारा है शास्त्रोंके सिद्धान्त और मुख्य तात्पर्य को समझ कर जो भगवत् में मनको लगाये हैं सोई पण्डित वो सर्वज्ञ हैं नहीं तो सब गुण वो पण्डिताई तुच्छ है ऐसेही ऐसे उत्तर से सब सभा को निरुत्तर कर दिया इस बेर्ल बतरावमें एक ब्राह्मणने नरसी जी का प्रताप और छूछक के देनेका वृत्तान्त राजा से वर्णन किया राजा को विश्वास हुआ और चरणों में पड़ा प्रार्थना करके विनय किया कि मेरे गृहको पवित्र कीजिये अर्थात् गृह में मेरे चल कर विराजमान हों कि मेरी कृतार्थता हो राजा का आश्वासन वो बोध करके नरसी जी चले आये और भगवत् भजन में लगे श्री मूर्ति भगवत् की जो विराजमान थी नित्य उस स्वरूप के सन्मुख भजन वो कीर्तन किया करते थे और जिस समय राग के द्वारा गाते थे उस समय भगवत् प्रसन्न होकर अपने गले की माला दिया करते थे एकबेर साधु सेवा का प्रयोजन पड़ा

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

केदारा रागनी को साहूकार के यहां गिरों रखदिया कि जब तक रुपैया न देंगे तब तक केदारा भगवत् को न सुनावेंगे उसी समय में शत्रु लोगोंने राजा को बहकाया कि नरसी जी की बड़ाई वो मिथ्याव्यर्थ फैलरही है एक कच्चधागे में फूलोंकी माला भगवत् को पहिनाय देता है और वह माला फूलों के भारे से आप टूट पड़ती है राजा परीक्षा लेनेपर हुआ राजाकी माता भगवत् भक्त थी उसने बहुत समझाया परंतु कुछ न माना एक मोटेरेसम के डोर में माला को बनवाया और भगवत् को पहिना कर नरसी जी से कहा कि हम भी तो देखें कि भगवत् तुमको माला किस प्रकार देते हैं नरसी जीने कीर्त्तन आरम्भ किया एक केदारा छोड़ और सब राग गाये परंतु भगवत् प्रसन्न न हुए और न माला दीना तब तो नरसी जी नें बोली मारना प्रारम्भ किया कि नितान्त ग्वालबाल है एक माला के हेतु ऐसी कृपणताई को अंगीकार कर लिया है कि छाती से लगा रक्खी है और सिवाय उस केदारा के किसी भांति प्रसन्न नहीं होते विष्णु नारायण बड़े बुद्धिमान हैं कि सारे संसार की पालन करके अपने किंकरों की वाञ्छा पूरी करते हैं मेरे भाग्य से तुम ग्वालबाल लिखगये कि एक माला के निमित्त यह दशा है और इस उदारताई पर विशेष यह है कि अपने से अलग भी नहीं होने देते हो अपने मुख और अंगन की अनूप छबि को दिखाकर बसी वो आधीन करलिया हो और इस तुम्हारी कृपिणता पर मेरी क्या हानि है तुमहीं को कलङ्क लगैगा जब आप खीजीने यह बोली मारना सुनलिया तो नरसी जी का रूप बनाकर और उनका रुपैया लेकर उस साहूकार के घरगये वह साहूकार अभागा नींद में था उसने कह दिया कि मेरी स्त्रीको रुपैया देकर लिखना अपना निकलवाय ले जाव जब स्त्रीके पास गये तो उसने दण्डवत और प्रतिष्ठा किया वो रुपैया लेकर लिखना फेर दिया पाछे कुछ भोजन करवाकर निद्रा किया साहूकार की स्त्रीको जो दर्शन हुए तो कारण यह है कि एक बेर उस स्त्रीने नरसी जीसे बहुत प्रार्थना करके विन्य किया था कि भगवत् के दर्शन करा दो तब नरसी जीने वचन प्रबन्ध किया था सो नरसी जीके वचन को भगवत् ने पूरा किया इसहेतु दर्शन न हुए जब भगवत् के आगे राग केदारा अलापा तो कागज नरसी जीके गोद में डाल दिया नरसी जी देखकर प्रसन्न हुए और ऐसा उस राग को गाया कि कि और दिन तो माला भगवत् के गले से अलग हो जाया करती थी उस दिन भगवत् मूर्ति ने अपने हाथ से नरसी जीको पहिनाई सबने जय जय कार किया और राजा दृढ़ बिश्वास युक्त होकर चरणों में पड़ा सब दुष्ट लज्जित हुए और भगवत् भक्ति का बिश्वास करिके भगवत् शरण हो गये भगवत् ने जो बिना केदारा गाये माला कृपा न किया तो कारण यह है कि

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

पहिले तो नरसीजी के मनसे बड़ाई वो प्रेम उस केदारा रागिनी की जाती रहती सिवाय इसके साहूकार वो और दूसरे लोगों को उस रागिनी का विश्वास न रहता औ नरसी जोने माला मिलने हेतु वो दिखावने सिद्धाई के जो हठ किया तो कारण यह है कि उस देश में भक्ति का प्रचार नहीं था और यह प्रभाव सिद्धता का देखने से बज़त लोगों ने भक्ति को अंगीकार किया जो इस सांचो भक्ति की परीक्षा में कुछ अनर्थ प्रगट होता तो सबलोग बे विश्वास हो जाते और भक्ति का प्रचार उस देश में नहोता॥ एक ब्राह्मण लड़की के विवाह के निमित्त लड़का ढूंढ़ता जूनागढ़ में आया कोई लड़का रुचि के अनुकूल न मिला किसी ने नरसी जी का पता बतलाया कि उनका लड़का बज़त सुन्दर है उस ब्राह्मण ने नरसी जी का लड़का जो देखा तो बज़त प्रसन्न हुआ और तुरन्त तिलक विवाह का कर दिया नरसी जीने कहा कि हम कंगाल हैं तुम किसी धनवान के घर विवाह करो वह ब्राह्मण नरसी जी की बड़ाई सो विनय करके शीघ्र अपने नगर में पहुंचा वो लड़की के बाप से सब वृत्तान्त कहा वह लड़की वाला नरसी जी का नाम सुनकर बज़त अप्रसन्न वो क्रोधवन्त हुआ और उस ब्राह्मण से कहा कि यह लड़का अंगीकार नहीं है टीका फेरलावो ब्राह्मण ने कहा कि जिस अंगुली से विवाह का तिलक करि आया हूं उसको जो काटडालो तो कुछ चिन्ता नहीं है परंतु सम्बन्ध नहीं फिर सकैगा वह लड़की वाला लाचार हुआ और कहने लगा कि लड़की के भागमें जैसा है वसा निश्चय करिके होगा शोच करना प्रयोजन नहीं विवाह में ऐसा दायज दे देवैंगे कि नरसी जीको धनाढ्य कर देंगे जब विवाह का दिन निकट आया तब उसने लग्नपत्रिका भेजी नरसी जी ने उसको कहीं डाल दिया और निर्मल विवाह की चर्चा वो कबही चिंतवन न किया ज्यों के त्यों भजन और कीर्त्तन में लगे रहे चार दिन जब विवाह के रहि गये और नरसी जीने कबहीं विवाह का नाम भी न लिया तो श्रीकृष्ण स्वामी और रुक्मिणी महारानी जी विवाह के कार्य संवारने के निमित्त आये रुक्मिनी जी तो स्त्रियों के कार्य संवारने में लगीं और आप भगवत् नरसी जीके करने योग्य कार्यों में लगे स्त्रियों ने विवाह के गीत गाना इत्यादि आरंभ किया वो ठौर ठौर मिठाई वो पकवान बनने लगे और नौबत खाने बजने लगे श्री रुक्मिणी जीने अपने हाथ से लड़के के भालपर तिलक किया कि जिसको चिचसुख अथवा सुख मंडन अथवा सुरवट कहते हैं और आप शृंगार करिके घोड़े पर चढ़ाया और जिस जिस जगह जो जो नेग दान दक्षिणा का उचित था सो दस गुणा किया फिर ज्यौंनार हुई असंख्य आदिमी आए ब्राह्मण लोगों ने स्पर्द्धा वो द्वेषके कारण से इतनी मिठाई वो पकवान लिया कि पोट बांध बांध कर घर ले गये फिर बरात की तैयारी

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

हुई असंख्य रथ वो घोड़े वो हाथी वो पालकी इत्यादि पर सुन्दर सुन्दर पुरुष लोग चढ़े जब बरात चली तो भगवत् ने नरसी जी का हाथ पकड़ के आज्ञा किया तुमभी साथ चलो गुप्तमें यद्यपि हम साथ हैं परन्तु प्रगट में तुम सब कार्य करते रहो नरसी जीने कहा कि महाराज आप जानें और आपका काम जानै मुझको ताल बजाना और आपका कीर्तन आता है सो यह काम जहां चाहो तहां ले लो भगवत् ने विचारा कि सिवाय भजन कीर्तन के नरसीजी से कुछ काम न होगा तो आपही सब कामों के अधिष्ठाता हुए और बरात समधी के नगर के समीप पहुंची उस समधी भेबरात के आने के पहिले अपने आदमी भेजे थे कि दिन विवाह का आपहुंचे है जो लड़का और दो चार आदमी आतेहों तो ले आवो उन लोगों ने जो बरात ऐसी भारी देखी तो लोगों से पूछा कि यह बरात किसकी है बरातियों ने कहा कि नरसीजी महथा की है वह लोग समधी के पास आये और बरात की भीड़ और शोभा का वृत्तान्त वर्णन किया समधी ने जो नरसीजी को कंगाल समझ लिया था और कुछ सामान तैयार नहीं किया था उन लोगों से कहा कि क्या मेरी हंसी करते हो उन लोगोंने कहा हंसी नहीं सत्य कहते हैं तबतो समधी की बुद्धि उड़गई और जो ब्राह्मण टीका दे आया था उसको देखने के निमित्त भेजा वह बरात को देखकर अत्यन्त प्रसन्न वो आनन्द हुआ और आयके समधीसे कहने लगा कि इतनी बरात आती है कि तुम अपने सारे धन लगानेसे घोड़ोंको घास नहीं दे सक्ते हो जिस ओर दृष्टि जाती है सिवाय बरातके कुछ नहीं देख पड़ता समधी घबरा कर आप देखने को गया बरात को देखकर शोच में पड़ा धनका अहंकार दूर हुआ मर्यादा रहनी कठिन समझी लाचार वो दीन होकर तिलक चढ़ाने वाले ब्राह्मण के चरणों में पड़ा कि अब मेरी मर्यादा सिवाय तुम्हारे और किसी से नहीं रहि सक्ती वह ब्राह्मण उसको नरसी जी के पास ले गया उसने जातेही नरसीजीके चरण पकड़ लिये और हाथ जोड़ कर प्रार्थना किया कि क्षमा करो और मुझको और मेरी मर्यादा को रखलो यह कह कर रोने लगा वो फिर चरण पकड़ लिया नरसीजी उससे मिले और भगवत् के दर्शन कराये और उसको आश्वासन करी कि दोनों ओर की लज्जा वो मर्यादा इन महाराज के अधीन है यह समझाकर बिदा किया भगवत् ने आप दोनों ओर का कार्य सम्हाला और इस धूमधामसे विवाह हुआ कि वर्णन नहीं होसक्ता जब विवाह करके नरसी जी घरआये तब भगवत् द्वारका को पधारे और भगवत् भक्ति के प्रताप का यश सारे संसार में व्याप्त हुआ यह प्रसंग नरसीजी का पढ़ सुन कर जिसको भगवत् चरणों में प्रीति उत्पन्न न होवै तो उससे अधिक भाग्य हीन और कोई नहीं क्योंकि यह चरित्र अच्छे प्रकार से बोध करता है कि भगवत् की

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

शरण होने से कुछ चिन्ता संसार वो परलोक की नहीं रहती आप भगवत् सब पूर्ण करते हैं॥

कथा हरिदासजी की॥

स्वामी हरिदासजी सब शृंगार उपासकोंके शिर मौर हुए और उपासना में दृढ़ धारना जैसी उनको हुई उसका वर्णन नहीं होसक्ता अपने समय में अद्वैत थे सखी भावना से अनुक्षण प्रिया प्रीतम के सुख समाज और नित्य बिहार में मिले रहते थे और प्रिया प्रीतम कुंजबिहारी राधारमण राधाकृष्ण नाम जिह्वा पर रहताथा भक्तिका प्रताप यह था कि देश २ के राजा दर्शन की आशा करके द्वार पर रहते थे भगवत् भोग लगने के पीछे मयूर वो बन्दर इत्यादि को देखते तो बड़ी प्रीति से भोजन करवाते इस भाव से की नटनागर महाराज उनसे खेल वो दिल्लगी करते हैं और जिनके कीर्त्तन और गान विद्या के सन्मुख गन्धर्व भी लज्जित थे कोई सेवक स्वामीजी के निमित्त अति उत्तम तिल तैल अर्थात् अतर बड़े परिश्रम से लाया उस समय स्वामीजी यमुना के पुलिन में बैठे थे शीशा लेकर सब अतर उस रेत में डाल दिया उस सेवक को बड़ा दुःख वो शोच हुआ और मनमें कहने लगा कि स्वामीजी ने मर्य्याद वो गुण इस अतरका न जाना स्वामी जी उसके मन की सब जानगये उसको कहा कि बिहारीजी महाराजके दर्शन कर आवो वह पुरुष जब मन्दिर में आया तो सारा मंदिर सुगन्ध की लपट से भरा पाया और जब बिहारीजी के दर्शन किये तो भगवत् की पोशाक शिरसे पांव तक सब अतरमें भीगी देखी तबतो बिश्वास हुआ और अपनी अज्ञानता से लज्जित होरहा॥ सब शीशा अतर भगवत् पर डालने का हेतु यह है कि हरिदास जी ध्यान में भगवत् से होरी खेलते थे भगवत् ने हरिदास जी पर रंग वो गुलाल डाला स्वामीजी के हाथ में उस घड़ी यह शीशा अतर का आय गया कि रंग की जगह उस शीशे को भगवत् पर डाल दिया॥ कोई एक पुरुष स्वामी जी के पास सेवक होने को आया और पारस मनि भेंट किया स्वामी जीने जाना कि इसको पारस मनि बहुत प्यारा है जब तक उसमें से प्रीति न जायगी तब तक प्रिया प्रीतम में प्रीति कब होगी इस हेतु से उसको आज्ञा किया कि यह पारस मणि यमुना जी में डाल दे उसने आज्ञा के अनुसार यमुना में उसमणि को डाल दिया परंतु यह शोच मनमें रहता था कि जो वह पारस रहता तो साधु सेवा और भगवत् के शृंगार की सामा की तैयारी अच्छे प्रकार होती स्वामी जीने देखा कि अबही उस पत्थर को प्रीति नहीं गई इस हेतु अपने साथ वनमें लेगये और हजारों पारस पाषाण दिखला कर कहा कि जिन त्रिलोकी के ऐश्वर्य और जितनी स्वादकी चाहना भीतर वो बाहर की हैं सब भगवत् प्राप्ति के पथके ठग हैं और जब तक सब

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

और से प्रीति दूर करके भगवत् चरणों में मन नहीं लगता तब तक भगवत् का परम आनन्द प्राप्त नहीं होता इस हेतु सब और से मनको खींच कर भगवत् में लगाना चाहिये और जो पारस पाषाण प्यारा है तो जितना तुझ को काम हो उठाले वह सेवक चरणों में पड़ा और मन को एकाग्र करके भगवत् के भजन स्मरण मे लवलीन हुआ अकबर बादशाह ने तानसेन से पूछा कि तुम्हारा गुरू गान विद्या का कौन है उसने स्वामी हरिदास जी को बतलाया बादशाह को स्वामी जीके दर्शन की बड़ी उत्कंठा हुई और तानसेन के साथ तानपूरा लेकर दर्शन पाया तानसेन ने एक पद गाया और जान बूझ के दो एक जगह ताल सुर में अशुद्ध किया स्वामी जीने तानपूरा लेकर आप उस पदको गाया कि जितने लोग सुनते थे सब भगवत् स्वरूप में लयहो रहे जब बादशाह डेरे पर आया तब उसी पद के गाने को आज्ञा तानसेन को दी जब उसने गाया तो जो रस स्वामीजी के मुखसे पाया था सो न मिला कारण इसका तानसेन से पूछा उत्तर दिया कि स्वामी जी तो उसके सामने गाते थे कि जो सबका स्वामी और पालन करने वाला है और मैं तुम्हारे सामने गाता हूं बादशाह ने यह वचन उसका स्वीकार किया॥ बिदा के समय स्वामी जी से बादशाह ने बिनय किया कि कुछ सेवा की मुझको आज्ञा होय स्वामी जीने कहा कुछ प्रयोजन नहीं जब बहुत हठ किया तो स्वामीजी ने दिव्य ब्रजभूमि दिव्य नैन दे बादशाह को दिखलाया कि वह वृत्तांत धाम निष्ठा में लिखा गया पीछे बादशाह चरणों में पड़ा दो प्रार्थना किया कि जो किसी सेवा के योग्य यद्यपि नहीं हूं परंतु कुछस्वल्प सेवाके निमित्त भी आज्ञा होय तौ मैं कृतार्थ वो धन्य भाग्य होजाऊं स्वामीजीने कहा कि पहिले बन्दरों के निमित्त कुछचना पहुंचता रहै दूसरे ब्रजभूमि के वृक्ष और शाखा कोई काटने न पावै तीसरे तुम फिर कबहीं हमारे पास न आना बादशाह ने आज्ञा पालन किया॥

रत्नावली जी की कथा॥

रत्नावली जी भगवत् भक्तों में राजाऊई भगवत् कथा और कीर्त्तन और सत्संग और उत्साह और भगवत् शृंगार में अनुक्षण लवलीन रहती थीं पतिके सेवका तनक चिंतवन न था भगवत् प्रीत और भक्ति को सख्य समझ कर अपने विश्वास से चलाय मान न हुई अपने प्रेम और भक्ति को अच्छे प्रकार निबाहा सत्य करिके अंधेरे घरकी चांदनी हुई राजा मान सिंह मैरके अधिपति तिसके छोटे भाई माधवसिंह तिसकी रानी थी एक सहेली भगवत् भक्ति में पगी हुई भगवत् का नाम नवलकिशोर वो नंदकिशोर वो ब्रजचंद वो मन मोहन वो बिहारी जी इत्यादि कहि कर प्रेम से आंखों में जल भरलाती और प्रसन्न हुआ करती रानीजीने जो भगवत् के नाम सुने

CC-0. Digitized by eGangotri. Kamalakar Mishra Collection, Varanasi

तो स्नेह उत्पन्न होगया और सहेली से पूछा कि बारंबार किसका नाम लेती है जो मेरे मनको अपने ओर बलसे खीचते हैं सहेली ने उत्तर दिया कि तमक्या पूछती हो अपने सुख वो सुहाग में लवलीन रहो भगवत् भक्तों की कृपा से यह अनमोल रत्न मुझको प्राप्त हुआ है रानी जी को और अधिक प्रेम भगवत् का उत्पन्न हुआ और सहेली से पूछा कि किस प्रकार वह मनमोहन महाराज मुझको भी मिलै सहेली ने जो प्रेम रानी जी का देखा तो भगवत् के चरित्र रानीजी को सुनाये और भगवत् भक्तजो रसिक वो शृंगार उपासक हुए हैं तिनकी कथा कही रानी जीने उस सहेली को सेवा टहल करनाछुड़ा दिया वो गुरूके सदृश समझा और मर्य्यादा बहुत करने लगी और भगवत् चरित्र दिन रात सुना करती जब अच्छे प्रकार मन भगवत् के चरित्रों में लगा तो दर्शनों की चाहना हुई और सहेली से कहाकि ऐसा कुछ उपाय करना चाहिये जिसमें भगवत् के दर्शन होंय कि प्राण सुखी रहैं क्योंकि वह मनमोहन मनमें समाय गया है सहेली ने कहाकि उसके दर्शन बहुत कठिन हैं हजारों ऋषेश्वर इत्यादि घर बार वो राज ऐश्वर्य त्याग करके धूरमें लोटते हैं और दर्शन नहीं पाते परंतु प्रेमसे वह मिलता है सो तुम भक्ति और भाव से भगवत् सेवा अंगीकार करो और शृंगार वो रागभोगमें लवलीन रहाकरो रानी जी ने नील मणिका स्वरूप भगवत् का विराजमान किया और बड़ी भक्ति और भावसे सेवा में लीनहुई भांति २ के शृंगार और राग भोग और नाना प्रकार के लाड़ लड़ाने की आरंभ किया थोड़े दिनमें उस पदवी को पहुंच गई कि स्वप्न में भगवत् से बातचीत हुआ करती निश्चय करि करोड़ों उपाय और योग यज्ञ वो तप वो दान इत्यादि से प्रेम की राहकुछ निराली है पीछे यह कांक्षा हुई कि भगवत् के साक्षात् दर्शन होंय उसी सहेली से मनकी बात कही उसने उत्तर दिया कि अपने महल के निकट एक मकान बनवाओ और चारों ओर अपने मनुष्य सावधान करो कि जो कोई भगवत् भक्त वो साधु आया करैं उनको ले आकर उस मकानमें टिकाया करैं और भोजन इत्यादि की सेवा अच्छे प्रकार होती रहै और तुम परदे में बैठकर उनके दर्शन किया करो इस उपाय से विश्वास

और से प्रीति दूर करके भगवत् चरणों में मन नहीं लगता तब तक भगवत् का परम आनन्द प्राप्त नहीं होता इस हेतु सब ओर से मनको खींच कर भगवत् में लगाना चाहिये और जो पारस पाषाण प्यारा है तो जितना तुझ को काम हो उठाले वह सेवक चरणों में पड़ा और मन को एकाग्र करके भगवत् के भजन स्मरण मे लवलीन हुआ अकबर बादशाह ने तानसेन से पूछा कि तुम्हारा गुरू गान विद्या का कौन है उसने स्वामी हरिदास जी को बतलाया बादशाह को स्वामी जीके दर्शन की बड़ी उत्कंठा हुई और तानसेन के साथ तानपूरा लेकर दर्शन पाया तानसेन ने एक पद गाया और जान बूझ के दो एक जगह ताल सुर में अशुद्ध किया स्वामी जीने तानपूरा लेकर आप उस पदको गाया कि जितने लोग सुनते थे सब भगवत् स्वरूप में लयहो रहे जब बादशाह डेरे पर आया तब उसी पद के गाने को आज्ञा तानसेन को दी जब उसने गाया तो जो रस स्वामीजी के मुखसे पाया था सो न मिला कारण इसका तानसेन से पूछा उत्तर दिया कि स्वामी जी तो उसके साम्हने गाते थे कि जो सबका स्वामी और पालन करने वाला है और मैं तुम्हारे साम्हने गाता हूं बादशाह ने यह वचन उसका स्वीकार किया॥ बिदा के समय स्वामी जी से बादशाह ने विनय किया कि कुछ सेवा की मुझको आज्ञा होय स्वामी जीने कहा कुछ प्रयोजन नहीं जब बहुत हठ किया तो स्वामीजी ने दिव्य ब्रजभूमि दिव्य नैन दे बादशाह को दिखलाया कि वह वृत्तांत धाम निष्ठा में लिखा गया पीछे बादशाह चरणों में पड़ा को प्रार्थना किया कि जो किसी सेवा के योग्य यद्यपि नहीं हूं परंतु कुछस्वल्प सेवाके निमित्त भी आज्ञा होय तौ मैं कृतार्थ वो धन्य भाग्य होजाऊं स्वामीजीने कहा कि पहिले बन्दरों के निमित्त कुछचना पड़ुंचता रहै दूसरे ब्रजभूमि के वृक्ष और शाखा कोई काटने न पावै तीसरे तुम फिर कबहो हमारे पास न आना बादशाह ने आज्ञा पालन किया॥

रत्नावली जी की कथा॥

रत्नावली जी भगवत् भक्तों में राजाऊंई भगवत् कथा औरकीर्त्तन और सत्संग और उत्साह और भगवत् शृंगार में अनुक्षण लवलीन रहती थीं पतिके लेशका तनक चिंतवन न था भगवत् प्रीत और भक्ति को मुख्य समझ कर अपने विश्वास से चलाय मान न हुई अपने प्रेम और भक्ति को अच्छे प्रकार निबाहा सत्य करिके अंधेरे घरकी चांदनी हुई राजा मान सिंह मैरके अधिपति तिसके छोटे भाई माधवसिंह तिसकी रानी थी एक सहेली भगवत् भक्ति में पगी हुई भगवत् का नाम नवलकिशोर वो नंदकिशोर वो ब्रजचंद वो मन मोहन वो बिहारी जी इत्यादि कहि कर प्रेम से आंखों में जल भरलाती और प्रसन्न हुआ करती रानीजीने जो भगवत् के नाम सुने

तो स्नेह उत्पन्न होगया और सहेली से पूछा कि बारंबार किसका नाम लेती है जो मेरे मनको अपने ओर बलसे खींचते हैं सहेली ने उत्तर दिया कि तुमक्या पूछती हो अपने सुख वो सुहाग में लवलीन रहो भगवत् भक्तों की कृपा से यह अनमोल रत्न मुझको प्राप्त हुआ है रानी जी को और अधिक प्रेम भगवत् का उत्पन्न हुआ और सहेली से पूछा कि किस प्रकार वह मनमोहन महाराज मुझको भी मिलै सहेली ने जो प्रेम रानी जी का देखा तो भगवत् के चरित्र रानीजी को सुनाये और भगवत् भक्तजो रसिक वो शृंगार उपासक हुए हैं तिनकी कथा कही रानी जीने उस सहेली को सेवा टहल करनाछुडा दिया वो गुरूके सदृश समझा और मर्य्यादा बहुत करने लगी और भगवत् चरित्र दिन रात सुना करती जब अच्छे प्रकार मन भगवत् के चरित्रों में लगा तो दर्शनों की चाहना हुई और सहेली से कहाकि ऐसा कुछ उपाय करना चाहिये जिसमें भगवत् के दर्शन होंय कि प्राण सुखी रहैं क्योंकि वह मनमोहन मनमें समाय गया है सहेली ने कहाकि उसके दर्शन बहुत कठिन हैं हजारों ऋषे-श्वर इत्यादि घर बार वो राज ऐश्वर्य्य त्याग करके धूरमें लोटते है और दर्शन नहीं पाते परंतु प्रेमसे वह मिलता है सो तुम भक्ति और भाव से भगवत् सेवा अंगीकार करो और शृंगार वो रागभोगमें लवलीन रहाकरो रानी जी ने नील मणिका स्वरूप भगवत् का विराज मान किया और बड़ी भक्ति और भावसे सेवा में लीनहुई भांति २ के शृंगार और राग भोग और नाना प्रकार के लाड़ लड़ाने को आरंभ किया थोड़े दिनमें उस पदवी को पहुंच गई कि स्वप्न में भगवत् से बातचीत हुआ करती निश्चय करि करोड़ों उपाय और योग यज्ञ वो तप वो दान इत्यादि से प्रेम की राहकुछ निराली है पीछे यह कांक्षा हुई कि भगवत् के साक्षात् दर्शन होंय उसी सहेली से मनकी बात कही उसने उत्तर दिया कि अपने महल के निकट एक मकान बनवाओ और चारों ओर अपने मनुष्य सावधान करो कि जो कोई भगवत् भक्त वो साधु आया करैं उनको ले आकर उस मकानमें टिकाया करैं और भोजन इत्यादि की सेवा अच्छे प्रकार होती रहै और तुम परदे में बैठकर उनके दर्शन किया करो इस उपाय से विश्वास है कि बजकिशोर महाराज के दर्शन होजावेंगे रानी जी ने वैसाही सब किया और साधु सेवा में विरहिनि वो प्रेम मतवालियों की भांति दिन काटने लगी एक बेर निज ब्रज भूमि के रहने वाले साधु आय गये कि युगल किशोर महाराज के रंग में रंगे हुए थे उनके दर्शन और बोल बत रान से रानी थकित होगई और सहेली से पूछा कि इस शरीर में वह कौन अंग है कि जिसकी लज्जा से सत्संग वो साधु सेवा में व्यवधान पड़ता है मेरे देखने में सब अंग बराबर हैं भगवत् स्वरूप के रससे परम आनंद के

रसमें मग्न होना यही सार है और सब असार और तुच्छ है यह कह कर जहां भगवत् भक्त थे तहां चली आई उस सहेली ने मनाभी किया पर न माना आयकर चरण पकड़ के दण्डवत् किया और बड़ी दीनता वो आधीनता पूर्वक अपने हाथसे भोजन करानें और सेवा करानें का मनोर्थ करके विनय किया कि जो आज्ञा होय सो करें उस समय के प्रेम की दशारानी जी की लिखने वो वर्णन करने में नहीं आयसक्तो और किस प्रकार वर्णन होसकै कि प्रेम से नेम नहीं रहता अपने हाथ में सोने का थाल भगवत् प्रसादका लेकर सबको भोजन कराया और चन्दन लगाया और पान दिया और चरणों में पड़ी हरि भक्त यह सेवा और प्रेम रानीजी का देख कर प्रेम से विह्वल होगये जब सब परदा वो संकोच रानीजी ने उठाधरा तो नगर में शोर हुआ और लोग देखने को आये महल पर सुसही तैनात था उसने राजा को सब वृत्तान्त लिखा कि रानी जीने निर्भय होकर सब लज्जा को दूर किया और सुण्डी अर्थात् वैरागियों के साथ बैठतीहैं राजा ने जो पत्र पढ़ा और हलकारे के जबानी सब सुना तो जल बल कर भस्म होगया संयोग वस कुंवर प्रेमसिंह जो रत्नावलीजी के पेटसे जन्मा था अपने बाप को सलाम करने इस स्वरूप से आया कि भालपर तिलक और गले में कंठी वो माला थी जिस समय आय कर सलाम किया तो लोगों ने साधों के स्वरूप से कुंवर के आने का वृत्तान्त निवेदन किया तो माधोसिंह ने उस कुंवर को सुण्डी के अर्थात् वैरागिन का बेटा कहा और यह कह कर महल में चला गया प्रेम सिंह को अपने बापके क्रोध करने की चिन्ता उत्पन्न हुई लोगोंसे कारण पूछा सब वृत्तान्त समझने पीछे बिचार किया कि जो हम साधु हैं तो इससे अच्छा और क्या है भगवत् भक्ति अंगीकार करनी चाहिये अपनी माता को लिख भेजा कि जो तुम्हारी प्रीति भगवत् चरणों में सांची है तो राजा ने आज सभामें हमको सुण्डी का कहा है उसको सत्य करना चाहिये और मृत्यु को शिर पर पहुंचा जान कर किसी प्रकार का सोच योग्य नहीं रानी ने वह पत्री पढ़ी और भगवत् भक्ति के रंग में रंगीन होकर उसी घड़ी शिरके केश जो अतर फुलेल से भीजेथे दूर किये और पहिले साधों को भोजन इत्यादि सेवा करके महलों में चली जाती थी उस दिन से महलका जाना बन्द किया साधु सेवा के स्थान में रहने लगी और राजा की ओर से जो कुछ खरच के निमित्त बंधान था तिसका लेना छोड़ दिया और अपने पुत्र प्रेमसिंह को लिख भेजा कि आज सुण्डी होगई तुम आनन्द से रहो प्रेमसिंह बहुत आनन्द हुए लोगों को इनाम दिया और नौबत बजवाई राजामाधोसिंह ने लोगों से पूछा कि आज कुंवर प्रेम सिंहको किस बात की खुशी है लोगोंने कहा कि पहिले तो रानीजीने सुण्डीका स्वांग बना रक्खा था अब आपने जो कुंवर प्रेमसिंह को सुण्डी का कहा तो रानीजी

सची झुण्डी हो गई और केश शिरके दूरकिये राजा सुन कर महाक्रोध में आया और कुंवर वो उसकी माता का घातक शत्रु हो गया वो हथियार बांधकर फौज लेकर कुंवर के मारने के निमित्त सवार हुआ कुंवरने जो यह वृत्तान्त सुना तो वह भी युद्ध पर आरूढ़ हो गया और संयोग मार काट की निकट पहुंच गई थी कि राज मंत्रियों ने राजा को समझाया कि बेटेपर मारने की कमर बांधनी उचित नहीं बड़ा दुर्यश सारे संसार में होगा और इधर कुंवर प्रेमसिंह को समझाया कुंवर ने उत्तर दिया कि संसार के विषय भोग के हेतु हजारों लाखों शरीर धारण किये फिर वो शरीर जाते रहे जो एक बेर भगवत् की राह में यह तन जाय तो इससे दूसरा क्या उत्तम है राज मंत्रियों ने चरण पकड़ लिये और विनय प्रार्थना किया तब यह ठहरी कि जो माधोसिंह कमर खोलकर अपने मकान पर चलाजावै तो हमको भी विना प्रयोजन युद्ध करना अंगीकार नहीं है सो ऐसाही हुआ राजि के समयराजा माधोसिंह रानी के मारनेके हेतु दिल्ला से कूच करके अपने नगर में आया और लोगों से सब वृत्तान्त सुनि के अपने महल में गया मंत्रियों से मंत्रना किया कि रानी ने हमारी नाक को काट लिया ऐसी स्त्रीके वध करने में कुछ पाप नहीं होता सोवध करना चाहिये एक बुद्धिमान्ने मंत्र दिया कि तरवार इत्यादि से मारना उचित नहीं जहां रानी रहती हैं तहां नाहर को छोड़वा दो कि रानी को मार देवैगा सब को यह मंत्र पसंद हुआ और प्रभात को यही बात करी उस समय रानी भगवत् सेवा करके उठी थी और भगवत् रूप के प्रेम काजल आंखों में था उस सहेली ने कहा कि देखो नाहर आया रानीजीने देखकर कहा कि यहां नाहर का क्या काम है नृसिंह जी पधारे हैं और अत्यन्त भक्ति भाव से सन्मुख आई दण्डवत् वो विनय करके कहा कि आज धन्य मेरे भाग्य हैं जो दर्शन दिये भगवत् ने जो यह शुद्ध भाव देखा तो उस नाहरही में अपना नृसिंह रूप दिखाया रानी जी ने पूजन किया और फूल वो माला इत्यादि अर्पण करिके आरती को किया भगवत् ने बिचारा कि पूजा को तो करलिया परन्तु काम भी तो नृसिंह का करना चाहिये इस हेतु नृसिंह जीके सदृश कि हिरण्य कश्यप के मारने के समय खम्भ से भयंकर रूप प्रगट हुए थे मन्दिर से बाहर आये और जो लोग विमुख थे उनको मार कर निकल गये माधो सिंह को यह सब सुनने में आया और रानी का वृत्तान्त सुना कि ज्यौं की त्यौं भजन में आनन्द है तब तो विश्वास हुआ वो आधीन होकर आया भूमिमें गिरकर साष्टांग दण्डवत किया उस सहेली ने विनय किया कि राजाजी दण्डवत करते हैं रानीजी ने कहा कि लाल जी महाराज को दंडवत करैं फिर विनय किया कि एक निगाह देखनी चाहिये उत्तर दिया कि ए आंखैं एक ओर लगी

है दूसरी ओर निगाह नहीं हो सकी राजा ने हाथ जोड़ कर विनय किया कि राज्य वो खजाना सब आप का है जो मन में आवै सो करो रानी जी ने कुछ सावधान होकर उत्तर नदिया भगवत् भजन में लगीरहीं एक बेर राजा मानसिंह वो माधो सिंह दोनों एक बड़ी गम्भिरी नदी के पार जातेथे नाव डूबने लगी और मल्लाह बेबश होगये दोनों घबरांये और राजा मानसिंह ने माधो सिंह से कहाकि अब कौन उपाय करना चाहिये माधोसिंह ने रानी के भक्ति का वृत्तान्त सब कहा और फिर ध्यान रानी जीका किया उसी घड़ी नाव किनारे पर लगिगई और दोनों को मानो नया जन्म हुआ राजामानसिंह को बड़ी चाह दर्शन की हुई जब आया तो पहिले रानी जीके दर्शन को गंया दीन वो आधीनता से विनती करी और मन में दृढ़ विश्वास युक्त हुआ॥

निषाद की कथा॥

भीलों के राजा निषाद की कथा सब रामायणों में विस्तार करिके लिखी है यहां सूच्छ करिके लिखी जाती है जब श्रीरघुनन्दन स्वामी दशरथ महाराज की आज्ञा से बन को गये तब श्रृंगबेरपुर में कि अवसोरौ विख्यात है वहां के राजा गुहनामा निषाद थे तहां पहुंचे निषाद रघुनन्दन स्वामी के आगमन का समाचार सुनतेही भेट वो नज़र लेकर आये और रूप अनूप वो छवि माधुरी का दर्शन कर के मन वो प्राण से आसक्त रूप होगये और उसी घड़ी से सिवाय उस रूप और दर्शन के कुछ सुधि अपने वो बिराने की न रही जब रघुनन्दन स्वामी चित्रकूट को पधारे और निषाद को विदा किया तो बेसुधि बुधि होकर उसी रूप के ध्यानमें रहने लगे जब भरत महाराज रघुनन्दन स्वामी से मिलने के निमित्त चित्रकूट को चले और निषाद को समाचार पहुंचे तो सन्देह हुआ कि मेरे स्वामी वो परम प्रीतम से लड़ने के हेतु यह सेना आती है तब प्राण देने को उद्यत होगये और तनक भय उस सेना कटोली का न किया फिर जो वृत्तान्त भक्ति और मनकी निष्कपटता भरत जी को जाना तो भरतजी से मिले और चित्रकूट तक साथ चले गये जब वहां से फिरि आये तो भगवत् के वियोग से ऐसे विकल वो बेचैन हुए कि रोते रोते आंखों से रुधिर बहने लगा और उस भगवत् के ध्यान में अपने और बिराने की सुधि जाती रही फिर मनमें विचार करने लगा कि मुझसे मीन इत्यादि जंतु जलके हजार गुना अच्छे हैं कि अपने प्राण प्रीतम से बिछुड़तेही मरजाते हैं नितान्त फिर दर्शन मिलने की आशा करके रहे परंतु यह न हुआ कि इन आंखों से सिवाय उस रूप अनूप के और भी कुछ देखना चाहिये इस हेतु आंखें बन्द करके उसी रूप के चिन्तवन और ध्यान में रहे चौदह बरष पीछे जब रघुनन्दन स्वामी आये तो विश्वास न आया

और कहने लगे कि ऐसे मेरे भाग्य कहां हैं कि फिर भी उस रूप कोइन आंखिन से देखूं श्री रघुनन्दन स्वामी अपार प्रीति देखकर आप आये और उठा कर अपनी छाती से लगाया उस घड़ी निषादने आंखें खोली और अपने स्वामी परम प्रीतम के दर्शन करके दोनों लोक में कृतार्थ हुए॥

बिल्व मंगल की कथा॥

बिल्व मंगल जी श्रीकृष्ण स्वामी की कृपा के पात्र आनन्द स्वरूप परम भागवत हुए करुणामृत वो गोविंदमाधव ग्रन्थ और स्फुट स्तोत्र संस्कृत में ऐसे रचना किये कि रशिक भक्तों को हार और माला के सदृश हैं चिन्तामणि के संग को पाय कर ब्रज सुन्दरियों के विहार वो परम आनन्द को वर्णन किया दक्षिण देश में कृष्णवेणा नदीके निकटके रहनेवाले थे और चिन्तामणि नामेवेश्या के प्रेम में ऐसे आसक्त थे कि संसारकी लज्जा शरम छोड़कर दिन रात उसीके प्रेममें फंसे हुए उसीके घररहा करतेथे जातिके ब्राह्मण थे पिताके श्राद्धके दिन कर्म्म करते और ब्राह्मण जिमाते दिन थोड़ा रहगया विकल होकर चले वह वेश्या कि नदी के उसपार रहतीथी जब नदी पार पहुंचेतो बाढ़ पर देखा और नाव इत्यादि उतरने की सामा कुछ न पाई तो अत्यन्त बेचैन हुए और बिना अपने प्रेमी के जीना व्यर्थ समझकर नदी में कूद पड़े कुछ सुधि अपने वो बिराने की न थी उसी वेश्या के मिलने का ध्यान था जब नदी में डूबने लगे तो एक मृतक वहां बहा जाता था उसको पकड़ लिया और विचारा कि उसी महबूबेने नावभेजी है उसपर चढ़ कर किनारे पहुंचे वहां से गिरते पड़ते बड़े वेगसे उस वेश्या के द्वार पर पहुंचे आधीरात थी वो द्वार बन्द था भीतर जाने की चिन्ता में हुए संयोग वश एक सर्पलटक रहा था विचारा कि उस महबूबेने कृपा करके चढ़ने के वास्ते डोर को लटकाय दिया है उसको पकड़कर मकान की छत्तपर चढ़ गये और वहां से जब उतरने की राह न पाई तो आंगन में कूद पड़े शब्द सुन कर वेश्या और उसके घरके लोग जगे दीपक बार कर देखा तो बिल्व मंगल जी हैं स्नान करवाया वो सूखे वस्त्र पहिनाये पूछा कि किस प्रकार आये उत्तर दिया कि तुमने नदी पर नाव को भेज दिया वो द्वार पर डोर लटकाय दिया उसीके अवलंब से आया हूं वेश्याने छत्त पर चढ़कर देखा तो अजगर लटक रहा है वह वेश्या अत्यंत क्रोध करिके कहनेलगी कि जिस प्रकार मेरे शरीर पर कि केवल मांस वो चमड़ा है मनको लगाया है इसी प्रकार श्यामसुन्दर सब शोभा के धाम जो वृजनागर महाराज हैं उनसे क्यों नहीं मनको लगाता कि इससंसार समुद्र से पार होजावै और दोनों लोक शुद्ध होंय मैं तो प्रभातही से युगल किशोर महाराज का स्मरण भजन करूंगी तुझको तेरे आधीन है जो चाहै सोकर बिल्वमंगल जी को यह बात ऐसी लगी कि हिये की आंखें खुल गईं और श्रीवृजचन्द

की रूपमाधुरी ने तुरंत हृदय में प्रकाशकिया और उसीघड़ी रूपमाधुरी का रसऐसा मनोवांछित पाया कि परम आनंद में मगन होगये वहरात तो भगवत् चरित्र और वृन्दावन की कुंज और शोभाके कीर्तन में व्यतीत हुई प्रभात होते दोनों ने अपनी अपनी राहको लिया मनमें परम शोभा धाम का स्वरूप और जिह्वापर नाम और आंखों में प्रेमका जल था बिल्वमंगल जी माध्व संप्रदा में सोमगिर नामे सन्यासी के सेवक हुए और भगवत् के रूप अरूप की चिंतवन करते हुए हजारों श्लोक रस चरित्र वो भगवत् के ध्यान के गुरूमे पढ़े औ आप रचना किये एक वर्ष पर्य्यंत गुरू की सेवा में रहे पीछे श्रीवृन्दावन के दर्शन की चाह हुई उसी प्रेम में मतवाले चले-राहमें एकनदी के किनारे पहुंचे वहां स्त्रियां सब स्नानकर रही थीं एक स्त्री परम सुन्दरी को देखकर आसक्त होगये और अपने भेषको भूलकर उसके पीछे होचले वह तो अपने घरमें चलीगई और बिल्वमंगले जी देखने की चाहमें द्वारपर खड़े रहे उस स्त्री का पति भगवत् भक्त था एक परम भागवत को अपने द्वार पर खड़ा देखकर अपनी स्त्री से वृत्तान्त पूछा उस स्त्री ने वृत्तान्त आसक्त होने और साथ आने का वर्णन किया उस भक्तने बिल्वमंगल जी को हाथ जोड़कर विनय किया कि मेरे गृहमें पधारिये कि चरण पड़ने से मेरा गृहपवित्र होय और सेवा करके दोनों लोकमें धन्यता को प्राप्त हूं उसे अपने घर लेगया अटारी पर टिकाय कर बड़ीप्रीत से सेवाकिया अपनी स्त्री से कहा कि शृंगार करके सब प्रकार से सेवाकर कि भगवत् भक्तों की सेवा से भगवत् बहुत शीघ्र मिलते हैं वह स्त्री शृंगार करके और थालमें भगवत् प्रसाद लेकर बिल्वमंगल जी की सेवा में पहुंची बिल्वमंगल जीने उसको देखकर और उनकी भक्ति वो साधु सेवा को विचार करके अपने मन आसक्त को सावधान किया और जानाकि सब उपाधि वो बखेड़े के कारण ये मेरी आंखें हैं जोये न होती तो काहे को मन आसक्त होता उस स्त्री से कहा कि दो सूई ले आओ सो वह ले आई और बिल्वमंगल जी ने उन दोनों सूइयों से अपनी दोनों आंखों को अंधीकर लिया वह स्त्री डरीगई और कांपती अपने पति के पास आई वृत्तान्त कहा वह भक्त आया चरण पकड़ कर अत्यन्त बिकल होकर बोला कि महाराज हमसे क्या अपराध हुआ कि जिस कारण आपको यह क्लेश हुआ बिल्वमंगल जीने उनको आश्वासन करके कहा कि तुम्हारी साधुता वो भक्तिमें कुछ संदेह नहीं हमारी ही साधुता में भेद है उसने विनय किया कि कुछ दिन आप रहैं कि सेवा करके कृतार्थ होऊं बिल्वमंगल जीने कहा कि तुमने ऐसी सेवा करी है जो किसी से नहीं होसक्ती अब तुम भगवत् भजन करो यह कहिकर चले ऊपर की आंखों को दूरकर के भीतर की आंखों से कामरवखा वृन्दावन में पहुंचे

एक वृक्ष के नीचे बैठकर भगवत् के ध्यान और भजन में लवलीन हुए भगवत् ने देखा कि मेरा भक्त भूखा और प्यासा है आप आये और महा प्रसाद भोजन कराया जिस जगह बिल्वमंगल जी बैठेथे वहां धूप आगई भगवत् ने कहा कि चलो तुमको छांहमें बैठाल देवें सो हाथ पकड़ कर घनीछाया में लेगये बिल्वमंगल जी महा प्रसाद के भोजन वो मधुर बोलन और कोमल हाथ के स्पर्श से जानगये कि आप हैं इस हेतु हाथ पकड़ लिया और छोड़ने को मन न चाहा भगवत् ने छुड़ाने के हेतु बल किया तो बिल्वमंगल जीने भी बल किया नितान्त भगवत् हाथ छुड़ा कर लंबे हुए तब बिल्वमंगल जीने कहा कि भलाइस घड़ी तो बरिआई आपको चलनिकली अबमन में पकड़ता हूं देखूंगा कैसे भाग जाओगे सो ऐसाही क्रिया अर्थात् सब ओर से मन कोबटोरि के एक श्री वृज चन्द महाराज के रूप और ध्यान में ऐसा चित्त लगाया कि जो योगियों के मनसे भी निकल जाता है सो बिल्वमंगल के मनमें दृढ़ होकर स्थित हुआ जब अच्छे प्रकार मनको दृढ़ता होगई तो बनसे उठकर वृन्दावन में आये और चाह यह हुई कि जो आंखें होती तो भगवत् के कुंज महल के बिहार स्थान और भगवत् के श्रीविग्रहों का दर्शन करते भगवत् ने उनके मनकी रुचि जानिकर पहिले तो उस बांसुरी की धुनि की जो योग माया कीभी माया है सुनाई और परम आनंद में पूरण किया वो फिर दोनों आंखों को प्रकाशवान कर दिया जैसा सूर्य के उदय से कमल खिल जाते हैं बिल्वमंगल जीने बल और लता और कुंज वो बिहार स्थान भगवत् के दर्शन किये और फिर भगवत् श्री मूर्तियों का रूप शोभायमान देख कर अधिक चाह वो तृष्णा ध्यान के रूप माधुरी की हुई क्योंकि उस परम अनूप रूप का सुख ऐसा नहीं कि तृप्त होय वरु जितना प्रकाश हृदय में करता जावै तितनाही अधिक तृषा वो चाह को बढ़ाता है बिल्वमंगल जीने करुणाद्भत रस ग्रन्थ और कई स्तोत्र ऐसे ऐसे रचना किये कि जिस से मन युगल स्वरूप में लगजाता है करुणाद्भत ग्रन्थ के मंगलाचरण में जो पहिले नाम चिन्तामणि पीछे नाम अपने गुरू का लिखा तो इस में दो बात जानी जाती हैं एक तो यह कि पहिले उपदेश चिन्तामणि से हुआ इस हेतु उस को प्रथम गुरू करिके जाना वो पहिले नाम उसका लिखा दूसरे यह कि भगवत् भक्त थोड़े से उपकार कोभी बहुत मानते हैं इस हेतु यद्यपि वह वेश्या थी परंतु उसका उपकार इतना माना कि गुरू से भी अधिक उसको विचार किया और जय पद उसके निमित्त धरे उस चिंता मणि बड़ भागिनी ने बिल्वमंगल जीका वृत्तान्त सुना कि भगवत् के दर्शन हुए और परम भक्त होगये हैं पहिले प्रेम का नाता विचार करके वृन्दावन में आई बिल्वमंगल जी उसको देख कर उठे और बड़ा सत्कार वो आदर मान

किया दूधभात का देना निज प्रसाद का भोजन के निमित्त आगे धरा चिन्तामणिने पूछा कि यह भोजन कहां से आया है बिल्वमंगल जीने कहा भगवत् कृपा करिके देते हैं चिन्तामणि ने कहा कि यह महा प्रसाद भगवत् ने तुमको कृपा करिके दिया है जो मुझ को कृपा करिके अपने हाथ से देंगे तो लेऊंगी यह कहिके भगवत् भजन में लगी भगवत् ने जो प्रीति अपार चिन्ता मनि की देखी तो परम प्रीति और कृपासे आप दोना दूध वो भात का चिन्तामणि के निमित्त लाये कि जिसकी ब्रह्मादिक भी बड़ी चाहना से कृपा कटाक्ष जोहते रहते हैं वो दर्शन देकर कृतार्थ किया॥

सूरदास मदन मोहन की कथा॥

सूरदास मदन मोहन ब्राह्मण सूरध्वज-किसी सखी का अवतार परम भक्त माध्व संप्रदा में हुए यद्यपि सुख नाम उनका सूरदास था परन्तु श्री मदन मोहन जी महाराज में प्रेम और स्नेह अत्यंत रखते थे इस हेतु नाम सूरदास मदन मोहन उनका विख्यात हुआ बाहिर भीतर की आंखें कमल के सदृश प्रफुल्लित थीं और गानविद्या वो काव्य की रचना में बहुत अभ्यास रखते थे प्रिया प्रीतम के जो गोप्य चरित्र हैं उनके परम आनन्द और सुख और रसके अधिकारी हुए और नवरसों में जो शृंगार रस मुख्य और पहिले है उसको अपनी कविताई में अच्छा वर्णन किया कविताई उनकी तुरन्त मुखसे निकलते के साथ विख्यात हो जाती थी एक दिन में चारसौ कोस तक पहुंच जाती थी मानो वह काव्यही पङ्ख उड़ने को बांध लेती थी पूरबके जिलों में बादशाह की ओर से सन्दीले के सूबेदार थे बाजार में खांड़ खोह दिव्य देखी विचार में आया कि मदन मोहन महाराज के मालपूआ के योग्य है खरीद करने के निमित्त आज्ञा दी सेवकों ने कहा कि इसके दाम से बीसगुना खरच किराये का पड़ेगा और वृन्दावन तक मिश्री से भी अधिक महंगी पहुंचैगी सूरदास जी ने कहा कि खरच का कौन वर्णन है भगवत् प्रीति पर दृष्टि चाहिये सब गाड़ियों में भरवा कर भेजा संयोग वस वृन्दावन में रात के समय मङ्गी मन्दिर के पुजारियों ने भण्डारे में रखवा लिया कि प्रभात को भोग लगावैंगे भगवत् कि अपने भक्त के भेजे सौगात का बाट जोहि रहे थे भूखे के कारण भोर तक धीर्य्य न धर सके गोसाईं जी को स्वप्न में आज्ञा दी कि इसी घड़ी मालपूआ बनैं सो बना और भोग लगा तब सन्तुष्ट होकर शयन किया धन्य है यह भक्त वत्सलता कि जिस की माया कोटान कोट ब्रह्मांड को एक क्षण में ग्रास कर लेती है सो ईश्वर भक्त के वस होकर क्षुधा वो सन्तुष्टता प्रगट करता है सूरदास जीने एक विष्णु पद के तुक में वर्णन किया कि भगवत् भक्तों के जूतीका रक्षक यह पदवी मुझको मिले किसी साधु ने परीक्षा के हेतु सूरदास जी से कहा कि तुम मदन मोहन जी महाराज के दर्शन कर

आवें हमारे जूते की रखवारी करते रहो सूरदास जी ने बहुत प्रसन्न होकर साधु की जूती को अपने हाथ में उठा लिया और कहने लगे कि आज तक तो इस कार्य में बातही की जमा खरच थी परंतु आजमेरी बांछापरी हुई कि यह सेवा मिली गोसाईं जी ने कईबार बुलाया नहीं गये बिनय कर भेजी कि साधु के चरण सेवा करे पीछे दर्शन को पहुंचूंगा गोसांई जी और साधु इस विश्वास पर अत्यन्त प्रसन्न हुए संदीलेके सूबेसे तेरह लाख रुपैया तहसील होकर आया सब साधु सेवा में खरच कर दिये और कुछ हर हिसाब वो बादशाह का न किया जब बादशाह के सेवक लोग रुपैया लेने के निमित्त आये तो संदूक कंकरों से भर कर सब संदूकों में एक एक पुरजा लिखकर डाल दिया उसमें यह लिखा था [तेरह लाख संदीले उपजे सब साधुन मिलि गटके सूरदास मदन मोहन आधीरात सटके] और हर एक संदूक पर अपनी मुहर करके आधीरात को भाग गये जब संदूक खोली गई तो कंकर निकले बादशाह ने पुरजों को पढ़कर कहा कि गटक अर्थात् खाना तो अच्छा हुआ परंतु सटक अर्थात् भाग जाना अच्छा न हुआ और साधु सेवा वो उदारता को समझ कर प्रसन्न हुए वो एक फरमाना कसूर के माफ होने का और हाजिर होने के निमित्त भेजा सूरदासजीने उजुर लिख भेजा कि अब आपकी और सूबेदारी से श्री वृन्दावन की गलियों में झाड़ देना सहस्र गुन बड़ाई है टोडरमल दीवान ने बिनय किया कि जो इसी प्रकार लोगमाल वाजिब सरकार का खरच करके भाग जावें गे तो सब इंतजाम जाता रहैगा उनके गिरिफ़तारी का हुकुमजारी कराया और कैद खाने में भेजि दिया सूरदासजी ने एक दोहा लिख कर बादशाह के पास भेजि दिया उस में बादशाह की शाबा और कैद का दुःख और अपना हाल थोड़े में लिखा था बादशाह ने उसी घड़ी छोड़ दिया छूटे तब वृन्दावन में आकर श्री ब्रज किशोर किशोरी के ध्यान में मग्न रहे ॥

अग्रदास की कथा ॥

स्वामी अग्रदासजी चेलें कृष्णदास पय अहारी के तीसरी पीढ़ी में रामानंद जी के परम भक्त हुए और उनकी संप्रदा माधुर्य उपासक विख्यात हैं जो कथा से कोई चरित्र माधुर्य वो शृंगार की नहीं जानने में आती हो इस हेतु इस निष्ठा में लिखी ऐसे भजनानन्द थे कि एक पल वो एक क्षण भी बिना भजन वो चिंतवन नहीं बीतता था प्रभात से उठकर भगवत् भक्तों की रीति जैसी होती हैं आचार वो कृपा से श्री सीता पति अवध बिहारी के सेवा वो स्मरण में रहते और अपने बचन अमृत की वर्षा से सबको ऐसा आनंद देते कि जिस प्रकार घटा की दृष्टि सब पर बराबर होती है सिद्ध ऐसे हुए कि नाभा ग्रन्थकार जन्म के अन्धे तिसको नवीन नेत्र कर

दिये और समुद्र से डूबता हुआ जहाज बचाया कि यह दोनों बात ग्रन्थ के आरम्भ में लिखी गई जानकी महारानी के साक्षात दर्शन हुए वैराग इतना था कि सब कार बार संसारी त्याग करके गलता जी में जो कि आमेर के निकट हैं तहां भजन में लवलीन हुए फुलवाड़ी को अपने स्वामी का विहार स्थान समझ कर आप अपने हाथों झाड़ू देते वो उज्वल किया करते यद्यपि सैकरों बागवान वो नाभा ऐसे ऐसे चेले सब सेवा में थे परन्तु किसी को अपनी सेवा में साझी नहीं करते एक दिन झाड़ू देकर पत्ते वो कूड़े टोकरी में लेकर बाहर डालने को निकले थे कि महाराजा मानसिंह आमेर के अधिपति दर्शन के निमित्त आये स्वामीजी भीड़ देखकर फुलवारी में न गये बाहर एक बट के वृक्ष के नीचे बैठरहे जब विलम्ब हुआ तो नाभा जी गये और दण्डवत करके प्रेम में भरे हुए खड़े होरहे कुछ कहि न सके राजा नें बहुत बेरतक बाट जोही फिर उठकर जहां स्वामी जी बैठे थे तहां गया दर्शन वो दण्डवत किया फिर विदा हुआ स्वामी जीके भीतर न जानेका अभिप्राय यह था कि वृक्षवृक्ष के नीचे छोटे बड़े सबको बराबर दर्शन होंगे और भीतर बड़े लोगों को दर्शन होंगे और छोटे लोगों को दर्शन न होंगे और यह भी विचार किया कि भीतर बैठने से राजा बहुत बेर तक रहैगा वृक्ष के नीचे धूल इत्यादि में बहुत बेर तक न रहैगा चला जावैगा धनाढ्य लोगों का संग जितनाही थोड़ा हो तितनाहीं अच्छी बात है॥

स्वामी कील्हदास की कथा॥

स्वामी कील्ह जी चेले कृष्णदास पय अहारी के माधुर्य्य और शृंगार उपासक परम भागवत स्वामी अग्रदास जी के गुरुभाई हुए दिन रात श्री रघुनन्दन स्वामी के चरण कमलों के ध्यान में मग्न रहते थे जिनका निर्मल यश अब तक सारे संसार में विख्यात है भगवत् भजन में शूरवीर और सांख्य योग के मुख्य तात्पर्य के जानने वाले हुए भीष्म पितामह के सदृश मृत्यु अपनी इच्छा के आधीन किये थे ऐसी सिद्धता पर प्रेम वो नम्रता का यह वृत्तान्त था कि सबको आप प्रणाम किया करते सुमेरदेव उनके पिता गुजरात में सूबा थे जब उनका परलोक हुआ तो विमान पर चढ़कर परम धाम को चले उसी घड़ी कील्हदास जी मथुरा में राजा मानसिंह के पास बैठे थे विमान को देख कर उठे और दण्डवत करके कहा कि अच्छा हुआ अच्छा हुआ राजा ने पूछा कि किस से बात कहते थे कील्हदास जीने पहिले छिपाया जब राजा ने हठ किया तो जो वृत्तान्त था सो कहि दिया राजाने हरकारा भेजकर दिन घड़ी सब समझा ठीक उतरा तो दण्डवत किया वो विश्वास दृढ़ किया एक बेर कील्हदास जी भगवत् पूजन करते थे और पिटारी फूलोंकी रक्खी थी उसमें फूल लेने के निमित्त

जो हाथ डाला तो सांपने अंगुली में काटा कील्हजीने जाना कि सांप टप्पनहीं ऊआ उसको कहा फिरकाट सो तीनबेर कटवाया तनक विष नभीना जब परमधाम जाने की इच्छा करी तो भगवत् भक्तों का समाज किया और दर्शने वो सत्संग करने के पीछे दसवांद्वार अर्थात् ब्रह्मांड तोड़ कर देहत्याग कियां कि योगी जन भी यह वृत्तान्त सुनकर चकित ऊए वो सब भक्तों को विश्वास ऊआ॥

गोपाल भट्ट की कथा॥

गोपाल भट्ट व्यंकट भट्ट के पुत्र श्रीकृष्ण चैतन्य महा प्रभ के चेले ब्राह्मण परम भागवत ऊए माधुर्य और शृंगार उपासना में ऐसे पगेऊए थे कि वृन्दावन में उस अद्भुत रसका स्वाद उन्हीं को प्राप्त ऊआ जिनके प्रभाव करके सहस्रों को भगवत् की प्राप्त ऊई भागवत धर्म के प्रवृत्त करने वाले और भगवत् भक्ति के रूप ऊए कि सिवाय गुण के किसी का अवगुण दृष्टि में न आया धन रंपति सब छोड़कर वृन्दावन में बास किया और सदारस रास और परम शोभा में व्रजकिशोर महाराज के मग्नरहते थे भगवत् भक्त भावना महाराज उनकी भक्ति और सेवा के वसिमें ऐसे थे कि अत्यन्त प्रसन्न हो कर शालग्रामी मूर्ति स्वरूप अपना प्रगट किया अर्थात् सेवाके समय एकबेर उनको शालिग्रामजी में यह चिंतना ऊई कि जिस प्रकार भगवत् का शृंगार ध्यान में किया जाता है वो प्रगट उसी प्रकार ऊआ करै तो अच्छा है भगवत् ने अपने भक्त के मनोर्थ पूर्ण करने के लिए शालग्राम से मूर्ति स्वरूप अपनी परम शोभायमान को वैशाख शुदी पूर्णमासी को प्रगट किया भट्टजी ने मंदिर में विराज मान करिके राधा रमण नाम विख्यात किया कि वृन्दाबन में प्रसिद्ध वो विख्यात है और चिह्न आधे भाग शालग्राम का चरण के नीचे और आधे का कटिपर विराजमान है इस कृपा के पश्चात् भट्टजी शृंगार वो सेवा वो राग भोग इत्यादि में लगे वो सारे संसार को हेतु सुगति के ऊए॥

केशव भट्ट की कथा॥

केशव भट्ट काश्मीरी ब्राह्मण ऐसे परम भक्त ऊंए कि लोगों को दुःख वो पापों से छुड़ा कर भगवत् सन्मुख कर दिया महिमा भट्टजी की संसार में विख्यात है कि भक्ति के कुल्हाड़े से दूसरे धर्मों के वृक्षों को काट कर भगवत् चरित्रों को जगत में विख्यात किया भट्ट जीको निम्बार्क संप्रदा वालों ने अपने गुरु परंपरा में लिखा है वे उनकी कथा से उपदेश होना श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभ से कि माध्व संप्रदा में थे प्रगट है ऐसी जनाई पड़ती है कि उनको उपदेश भगवत् भक्ति का श्रीकृष्ण चैतन्य से ऊआ और उस समय महाप्रभु की सात वर्ष की अवस्था थी इस कारण से उन के चेले न ऊए निम्बार्क संप्रदा वालों के सेवक ऊए जिस प्रकार भगवत्

भक्ति प्राप्त ऊई तिसका वृत्तांत यह है कि यह भट्टजी बड़े पंडित थे हजारों पंडितों को शास्त्रार्थ में निरुत्तर करि दिया जब दिग्विजय करते ऊए सैकड़ों पंडित वो शिष्योंके सहित नदिया शांति पुरमें पहुंचे तो वहां के पण्डित लोग भयको प्राप्त ऊए महा प्रभू जीने विचार किया कि इस पंडित को अपनी पंडिताई का बड़ा गर्भ है सो गर्व दूर करना चाहिये इस हेतु भट्टजीके पास आये वो मधुर बचन से बोले कि आप की विद्या और यश सारे संसार में विख्यात है कुछ मुझको भी सुनाकर कृतार्थ करो भट्टजीने उत्तर दिया कि अबही लड़के हो और विद्याभी प्राप्त नहीं ऊई ऐसे बचन निर्भय बोलना ढिठाई है परंतु हम तुम्हारे मधुर बचन से बहुत प्रसन्न ऊए जो कुछ कहो सो सुनावैं महा प्रभूजीने कहांकि गंगाजी का स्वरूप वर्णन करो भट्टजीने कई श्लोक अपने बनाये पढ़े महाप्रभू जीने तुरन्त उपस्थितकर लिया बस पढ़िके सुनाय दिया और कहा कि अर्थ वो गुण दोष जो उन में हैं वर्णन करो भट्टजीने कहा कि मेरे काव्य में दोष कब होसकता है महा प्रभूजीने कहा कि यह नहीं होसक्ता जो आज्ञा करो तो मैं गुण दोष वो अर्थ वर्णन करूं सो कहना आरंभ किया और ऐसे ऐसे अर्थ किये कि बनाने के समय भट्टजी को भी नसूझे थे और जो जो दोष वो गुण थे सोभी ऐसे विस्तार से प्रगट किये कि भट्टजी को उत्तर न आया महा प्रभू जी तो अपने स्थान को चले आये और भट्ट जी लज्जित हो कर रात को सरस्वतीका ध्यान किया सरस्वती जी आई भट्ट जीने विनय किया कि सारे संसार से विजय कराकर एक लड़के से हराय दिया हमसे ऐसा कौन अपराध ऊआ था सरस्वती जीने उत्तर दिया कि महाप्रभू जी भगवत् अवतार और मेरे स्वामी हैं मेरी क्या सामर्थ्य है कि उनके सन्मुख बोल सकूं और तुम्हारे भाग्य धन्य हैं कि उनके दर्शन ऊए यह कहि कर सरस्वती तो अंतर ध्यान ऊई और भट्टजी महाप्रभुजी की सेवा में आये हाथ जोड़ कर विनय किया वो प्रार्थना किया कि कुछ शिक्षा होय महा प्रभु जीने आज्ञा किया कि भगवत् भक्ति अंगीकार करो और आगे को किसी पण्डित के साथ वाद करना उचित नहीं भट्टजीने मानि लिया उस वचन को धारण किया और जो पण्डित लोग साथ थे सब को विदा करके भगवत् भक्त होगये फिर काश्मीर अपने घरमें गये और कुछ दिन वहां रहे मथुरा जी के वृत्तान्त वो समाचार पहुंचे कि मुसल्मानों ने विश्रांतघाट पर ऐसा यंत्र लगा दिया है कि जो कोई उधर जाता है आपसे आप उसकी सुन्नत होजाती है और मुसल्मान बलात्कार उसको अपने दीन में मिलालेते हैं भट्टजी यह समाचार सुनतेही काश्मीर से चले और एक हजार अपने चेलों सहित मथुराजीमें पहुंचे पहिले विश्रांत घाट पर गये दुष्टों ने जैसे और लोगों से दुष्टता करते थे उसी प्रकार भट्टजीसे भी

कहा कि नग्न होकर हम को दिखाओ भट्ट जीने उन को अच्छी प्रकार मारा और यंच को तोड़ कर यमुना जीमें डाल दिया सुसल्मान सब सूबा के पासफिरयादी हुए सो सब दुष्टता उन को सूबे की हिमायत से थी उसने अपनी फौज सहायके हेतु पठाई भट्टजी उसफौजसे ऐसे लड़े कि बहुतेरों को बध किया और कितनेको यमुना में डाल दिया और कुछ भाग गये इस युद्ध का वृत्तान्त एक कविने विस्तार करिके लिखाहै उस से जानने में आया कि भट्टजीने चक्र सुदर्शन की आराधन करके ऐसी अग्नि बरसाई कि सब दुष्ट अशरण होगये और काजी वो सूबा आदि सब आय के चरणों में पड़े पीछे उसके यह चरित्र किया कि सब सुसल्मानों के शरीर पर चिन्ह हिंदुओं के जनाई पड़ने लगे वह लोग यह प्रभाव देख कर अधिक आधीन हुए और सब ने हाथ बांधिके सेवकाई करनी अंगी कार करके रक्षा चाही चाहि २ पुकारा भट्टजीने ब्रजके सब हिंदुओं का बटोर किया और बहुत जगह आप गये वो सबको सुसल्मानों से निर्भय कर दिया और भगवत् भक्ति की प्रवृत्ति करी॥

बनवारी जीकी कथा॥

बनवारी जी भगवत् भक्तिके रंगमें रंगीन और माधुर्य वो शृंगार रस के रसिक और भजन के मूर्त्ति हुए अच्छे बचन के बोलने वो काव्य के समझने वो व्यंग वो व्याजोक्त में बड़े बुद्धिमान वो प्रवीण वो सार असार के विचारमें परम हंसों से भी अधिक हुए सदाचार के करने वाले वो संतोषी वो सब पर दया करने वाले अनेकन विद्या के ज्ञाता पण्डित वो दस प्रकार भक्तिके साधन में सावधान हुए उनके दर्शनोंही से लोग पवित्र होते थे और जो किसीसे बात चीत हुई तो उस के पवित्र और भक्त हो जाने में कुछ संदेहही न था वो ब्रज भूषण महाराज सुख धाम के चरित्र के आलाप में अत्यंत चतुर थे॥

जसवन्त की कथा॥

जसवन्त जातिके रजपूत राठौर भगवत् भक्तिमें समाधान और भक्ति के सब धर्मों के आचरण करने वाले हुए भगवत् भक्तोंसे ऐसी सच्ची प्रीति थी कि क्लेश निकट नहीं आता था सब हाथ बांधे उदार मन से उनकी सेवा में एक पाय से खड़े रहते थे और अनुक्षण यह चाहना करते थे कि किसी सेवा के निमित्त आज्ञा हो श्री वृन्दावन में दृढ़ बास करके श्री राधाबल्लभलाल के चरित्र और विहार लीला में मन को लगा कर दिन रात भगवत् के शृंगार और माधुर्य के चिंतवन में रहते थे सब धर्मोंका सार जो नवधा भक्ति है उसके धनी और सत्य के बोलने वाले हुए और भगवत् प्रेम में ऐसे हुए कि विशेष करिके बेसुधि वो डूब जाते थे॥

कल्यान दास की कथा ॥

भगवत् की भक्ति और भलाई और सब गुणों की सूक्ष्म समझ संसार में कल्यान दास जीके बखरे में आई नवलकिशोर ब्रजचन्द्र महाराज के प्रेम में मग्न रहते थे वो जिस प्रकार नदी का प्रवाह दिन रात प्रवर्त्तमान रहता है इसी प्रकार अनन्य जो दृढ़ मनकी, दृत्ति अनुक्षण माधुर्य वो शृंगार के चिन्तवन में रहती थी बाणी ऐसी मधुर थी कि सुन्नेवाले का मन बरबस मोहित होकर आधीन होजाय परोपकारी दयावान वो बिबेकी हुए और नाभाजीने जो यह बचन लिखा है कि मन क्रम बचन से रूप भक्तके चरण रजके उपासक थे इसका अर्थ यह मालूम होता है कि रूप जो भक्त हैं सनातन के भाई तिनके चरण रजके उपासक अर्थात् उनके चेले थे अथवा रूप भक्त अर्थात् माधुर्य्य उपासक जो भक्त तिनके उपासक थे अथवा रूप अर्थात् माधुर्य्य और भगवत् भक्त दोनोंके उपासक थे ॥

कर्ण हरिदेव विख्यात कन्हर दासकी कथा ॥

कर्णहरिदेव विख्यात कन्हरदासजी रहने वाले योडियां के भगवत् भक्त अपने आत्मा में आनंद करने वाले और भविष्य के जानने वाले श्रीकृष्ण भक्तिके आरोपण करने वाले ब्राह्मण कुलमें सूर्यके सदृश सहिष्णु वो दृढ़ स्वभाव सब गुणोंकी खान हुए भगवत् भक्तों को अपना सर्वस्व जानकर प्रेम से सेवा भक्ति करते थे कपड़ा वो जिनिस खाने पीने का जो कुछ जितना जिसको प्रयोजन होता था निर्मल मन वो बिश्वास से देते थे सोभरामजी से उनको अनुभव हुआ शृंगार और माधुर्य्यके स्वरूप थे वो सब जीवोंपर कृपा दृष्टि बराबर रखते थे ॥

लोकनाथ की कथा ॥

लोकनाथ जीको भगवत् में प्रेम वो स्नेह इतना था कि जितना पार्षदों को है श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभु जीके चेले थे और प्रिया प्रीतमके चिंतवन और चरित्रों में अनुक्षण ऐसे मग्न रहते थे कि जो एक क्षण भी भगवत् स्वरूपका चिन्तवन न करते तो बिकल होजाते श्रीमद्भागवत् का गान और कीर्त्तन प्राण से अधिक प्यारा था वो जो कोई भगवत् के रास चरित्र का भजन और कीर्त्तन करता तो उसको अपना मित्र जानते थे और उसही को नातेदार समझते एकबेर राहमें चलेजाते थे एक मनुष्य को देखा कि भगवत् चरित्रों का कीर्त्तन करता है उसको रसिक और प्रेमी जान कर बेसुधि होकर उसके चरणों में पड़े और इस चरित्र से दूसरे मनुष्यों को शिक्षा भगवत् के प्रेम और भक्ति की करी ॥

मानदास की कथा ॥

मानदासजी परम भक्त परोपकारी दयावान सुशील हुए श्रीरघुनन्दन स्वामी के चरण कमलों में प्रेम और भक्ति अनन्य थी जानकी जीवन

महाराज के जो चरित्र रामायण वो हनुमन्नाटक और दूसरे रामायणों में गोप्य करके लिखे हैं उनको मानदास जीने भाषा में इस सुघड़ाई वो कविताई से वर्णन किया कि सबको प्रिय और दोनों लोक में लाभ देने वाले हैं यद्यपि नवरस कि जिनका दृष्टांत ग्रन्थके आरंभ में लिखागया अपने ग्रन्थ में विस्तार से वर्णन किया परन्तु भगवत् का शृंगार और माधुर्य्य रस ऐसा लिखा कि जिसके पढ़ने सुने से निश्चय करिके मन भगवत् स्वरूप में लगि जात हैं और जो रीति शृंगार की श्रीकृष्ण चरित्र में उपासकों ने वर्णन किये हैं उसी प्रकार रामचरित्र में मानदासजीने वर्णन किया॥

कृष्णदास की कथा॥

कृष्णदासजी परम भक्त और पण्डित हुए श्रीगोविन्द चन्द्र महाराज के रूप माधुरी और शृंगार में मग्न होकर उनके रसमें रातदिन मत्त रहते थे भगवत् सेवा ऐसी प्रीतिसे करते कि सेवाके स्वरूप हो जाते भगवत् भक्तोंको भांति भांति के भोजन और प्रसाद दिया करते और जो कोई साधु उनको संप्रदाय का होता तो उसके साथ बड़ी प्रीतिसे मिला करते भगवत् चरित्रों के कीर्त्तन और स्वरूपकेचिंतवन और अनुभव में ऐसे आनंद और विसुधि रहा करते थे कि वर्णन उसका नहीं होसक्ता॥

निष्ठा चौबीसवीं॥

प्रेम के वर्णन में वो जिसमें सोलह भक्तों की कथा वर्णन है॥

श्रीकृष्ण स्वामीके चरण कमलों के सुधा ह्रद रेखा को दण्डवत करके रामावतारको दण्डवत करता हूं कि जगत्के उद्धारके हेतु अयोध्या पुरीमें धारण करके रावण इत्यादि राक्षसों को वध किया और धर्मकी मर्य्यादको दृढ़ आरोपण करिके पवित्र चरित्र जगत् में फैलाये यह प्रेम निष्ठा भगवत् रूप है और जितनी निष्ठा इसके पूर्व वर्णन हो चुकी उन सबका सार वो परिणाम यह निष्ठा है इसके आगे कोई और पदवी नहीं कि उसको साधन करना पड़े जीवन मुक्ति जो विख्यात हैं सो इसी प्रेमके दृढ़ होनेको कहते हैं और कोई कोई जो कैवल्य मुक्ति कहते हैं वह भी इसी प्रेम और उसके दृढ़ होने को कहते हैं अब कुछ अर्थ वो विवरण उस प्रेम का लिखा जाता है शाण्डिल्य ऋषेश्वर ने पहिली भूमिका में अपने सूत्रों के यह सूत्र लिखा है॥

अथातो भक्ति जिज्ञासः॥

अर्थ सूक्ष्म करिके इस सूत्र के तिलककार के तिलक अनुसार यह है कि भगवत् भक्तिचारों पदार्थ अर्थात् अर्थ धर्म काम मोक्ष की देने वाली है इस हेतु उस भक्ति को जानना चाहिये सूत्र दूसरा॥

सापरानुरक्ति ईश्वरे ॥

अर्थ इसका यह है कि परम अनुरक्त ईश्वरमें होना उसका नाम भक्ति है और अनुरक्ति अथवा राग कै प्रीति कै प्रेम कै इश्क अथवा रति अथवा मोह धृत अथवा उलफत अथवा स्नेह सबके एकही अर्थ हैं और जबकि भक्ति को अनुरक्ति लिखा तो भक्ति का अर्थ भी दृढ़ प्रीति निश्चय भत होगया और इस प्रकार से प्रेम और भक्ति एकही बात ठहरी सो नारद पंचराच में लिखा है कि अनन्य ममता भगवत् में है उसको प्रेम कहते हैं और उसी का नाम भक्ति है अब दो शंका उत्पन्न ठहरीं एक यह कि जो प्रेम वो भक्ति एक बात है तो भक्ति का वृत्तान्त ग्रन्थ के आरंभ में लिखा गया यहां अब फिर किस हेतु वर्णन होता है दूसरा यह कि जो सब निष्ठाओं का परिणाम पदवी प्रेम निष्ठा है तो जो दूसरी निष्ठा और उनकी साधा पहिले लिखि आये सो किस हेतु लिखे केवल यह प्रेम निष्ठाही बहुत थी सो पहिली शंका का उत्तर यह है कि ग्रन्थारंभ में जो दशा भक्ति की लिखी गई वह महिमा भक्ति की और स्वरूप उसका और भक्ति का प्रकार लिखा गया और इस निष्ठा में वह वृत्तान्त लिखा जाता है कि उस भक्ति के प्राप्त होने पीछे जो दशा उस भक्त की होती है दूसरी शंका का उत्तर यह है कि जो महिमा बड़ाई दूसरी निष्ठाओं को लिखी गई सो सब सत्य वो योग्य है परंतु यह प्रेम निष्ठा जो विचारी गई तो यह सब निष्ठाओं की परिणाम दशा है जो वह सब निष्ठा विचारी न जाती तो इस परिणाम दशा की निष्ठा के लिखने का संयोग काहेका प्रसंगता सिवाय इसके यद्यपि निष्ठा बहुत हैं परंतु परिणाम दशा सब की एकही भांति है जैसे दास निष्ठा वाला अपनी उपासना पर दृढ़ होकर उस पदवी को पहुंच गया है कि कबहीं गावता है कबहीं नाचता है कबहीं हंसता है कबहीं रोता है और कुछ सुधि अपने वो विराने की नहीं रखता अब सखा अथवा वात्सल्य वो मधुर वो पूजा इत्यादि निष्ठा वाला परिणाम पदवी को पहुंचैगा तो उसकी भी ऐसीही दशा होगी इस हेतु सब निष्ठाओं की परिणाम दशा एक ठहरी और उस परिणाम दशा का वर्णन जो सब निष्ठाओं में लिखा जाता तो ग्रन्थ के बहुत विस्तार होने की बात अलग रहै एक प्रकार की दशा वृत्तान्त सब निष्ठाओं में लिखना पड़ता इस हेतु यह प्रेम निष्ठा लिखी गई सिवाय इसके सब वस्तु का प्रारंभ वो परिणाम नियत है जो प्रेम निष्ठा न लिखी जाती तो अन्त की पदवी जानी नहीं जाती और जाने रहो कि मुक्ति इस निष्ठा वो सब निष्ठाओं का फल है वो सब निष्ठाओं की अंतिम पदवी प्रेम है और यह भी जाने रहो कि यद्यपि परा भक्ति और प्रेम एकही बात है परंतु सब शास्त्रों में उस दशा नियत को भी प्रेमही नाम धरके लिखा है कि जो प्रेम की विकलता भक्त पर बीतती है प्रेम दो प्रकार से उत्पन्न होता

है एक ईश्वर की कृपा से कि भगवत् ने एकादश में कहा है कि हे ऊधो गोपी न गुरू से पढ़ीं न तप किया न यज्ञ इत्यादि कुछ किया केवल मेरी ही कृपा से मुझको पहुंच गईं अथवा मीराबाई वो करमैती की भांति कि आपसे आप प्रेम भगवत् कृपासे हुआ दूसरा भाव से होता है अर्थात् भगवत् का सच्चिदानन्द स्वरूप उसके गुण सुन कर प्रेम उत्पन्न हो और उस प्रेम से द्रवी भूत होकर लदाकार वो बेसुधि होजाय जैसे विष्णु पुराण को वचन है कि भगवत् अन्तर्यामी के गुण सुनने से चित्तको वृत्ति भगवत् की ओर लगाने के योग्य है और वह ऐसी हो कि जिस प्रकार गंगा का प्रवाह दिन रात प्रवर्त मान रहता है वह भाव दो प्राकार का है एक तो भगवत् भक्तों के प्रताप से होता है जिसका नारद जीने प्रह्लाद वो दक्ष प्रजापति के पुत्रों को वो दत्तात्रेय ने राजा सुबाहु को वो भरत ने रघुगण को उपदेश किया वो तुरंत भगवत् स्वरूप साक्षात्कार हो गया और अबभी विख्यात है कि कोई ऐसा सिद्ध भगवत् दास किसी को मिलगया कि एक घड़ी में भगवत् प्रेम को दरशाय दिया दूसरा साधन से प्रगट होता है जैसे नारद जीसे भगवत् चरित्रों को सुना उसपर आचरण वो साधन किया भगवत् भक्त और प्रेमी होगये इस भावके चार भेद तंत्र शास्त्र में लिखे हैं एक वह जो सदा चित्त की वृत्ति भगवत् में लगी रहै उसमें भी दो भेद हैं एक वह कि जिसको कबहीं संसार के विषय स्वाद की चाहना नहीं होती जैसे प्रह्लाद वो सनकादिक इत्यादि दूसरे वह कि जिनको संसार के सुखों की चाह होजाती है जैसे अर्जुन इत्यादि दूसरे वह कि प्रेम के समय समाधि की दशा होती है जैसे शुकदेव इत्यादि तीसरे वह कि बड़े खेच से मन को लगाते हैं तब प्रेम की दशा उत्पन्न होती है जैसे अक्रूर आदि चौथे वह कि मनमें सोच वो पश्चात्ताप करते हैं कि हमारा मन गोपिकाओं की भांति भगवत् के प्रेमसे पूर्ण हुआ जैसे उद्धव वो युधिष्ठिर इत्यादि अब प्रेमकी दशा के प्रकारों के लिखने के पहिले इसबात का निर्णय करना हुआ कि प्रेमकी दो दशा हैं एक संयोग दूसरी वियोग सो भगवत् प्रेम में भी वियोग की दशा होती है कि नहीं वो जो होती है तो उसका क्या वृत्तांत है सो जाने रहो कि निश्चय वियोग की दशा होती है परंतु विषयी लोगों के मन सुखी प्रेम की भांति वो संसारी विषय भोग के संबन्धियों के सदृश दुखको देने वाली नहीं होती बरु भगवत् के प्रेम और चिंतवन को बढ़ाने वाली होती है जिस प्रकार गोपिकाओं को ब्रजचन्द्र महाराज के मथुरा गवनके समय विरह हुआ परंतु वह ऐसे प्रेमका भभकाने वाला हुआ कि बेसुधि होकर भगवत् के नित्य विहार में जामिलीं इसमें जो यह कोई कहै कि यह वृत्तान्त तो उन भक्तों के विरह का है कि साक्षात रामकृष्ण के रहने के समय जिनको विरह हुआ परन्तु जिन लोगों को कि ध्यान से

और रूप वो गुनके श्रवन से भगवत् का प्रेम उत्पन्न हुआ अथवा होता है उनको भी विरह होता है कि नहीं सो जाने रहो उनको भी विरह होता है और उसके कई स्वरूप हैं एक यह कि भगवत् के ध्यान वो चिन्तवन के समय किसी समय गोपिकाओं अथवा दशरथ महाराज वो कौशिल्या महारानी अथवा नन्दजी वो यशोदा महारानी अथवा दूसरे भक्तों के वियोग की चिन्तवन आय गई कै उनके वियोग की कथा सुनी तो जो दशा उन पर वियोग के समय बीती थी वही इस भक्त पर बीतती है तनक भेद नहीं रहता सो कथा में किसी वियोग के चरित्र के सुनने के समय विशेष करके परीक्षा सबको होती है वो जिस समय ध्यान की पक्वता होने लगती है उस समय अति चिन्तवन वो प्रेम की झलक से ध्येयरूप की शोभा का जो विरह होता है सो दशा भी ज्यों की त्यों प्रियवल्लभ के वियोग की दशा की भांति होती है और जब भगवत् का ध्यान वो चिन्तवन अनुक्षण रहने लगा तो भगवत् के साक्षात् दर्शन होते हैं अथवा ध्यान का रूप वो शोभा साक्षात् रूपके सदृश इस भक्त को हो जाता है तब सब समय वो प्रति दिन दशा संयोग वो वियोग की बीता करती हैं अर्थात् प्रारम्भ दशा से अंतिम दशा तक संयोग वो वियोग दोनों होते हैं अब यह लिखना उचित हुआ कि कोई २ लोगों ने वियोग की पदवी को संयोग की पदवी से अति लिखा और वास्तव करिके जो कुछ स्वाद वियोग में है सो संयोग में इतना नहीं इन दोनो में बड़ाई जिसको है सो जाने रहो कि जो वाद विवाद से लिखी जाय और बड़ाई का निश्चय एक का दूसरे पर करा जावै तो सैकड़ों पोथियों में लिखने से समवाई नहोसकै क्योंकि अन्तको झगड़ा वो वाद विवाद वेद स्मृति और न्याय वो पातञ्जलि वो कर्म शास्त्र वो वेदान्त तक पहुंच जाती हैं और सिद्धान्त नहीं होता सो इस हेतु उस विस्तार से बचाय के जो सारांश सब बातों का पाया गया सो लिखा जाता है कि प्रेम में वियोग और संयोग दोनों अन्योन्य सम्बन्ध रखते हैं क्योंकि जो सदा वियोग बना रहै और आशा संयोग ध्यानमें संयोगकी अथवा प्रगट संयोग की न होवै तो प्रेम कबहीं न उत्पन्न होय और इसी प्रकार सदा संयोगही की दशा बनी रहै और वियोग अथवा बियोग का भय वो शोच न होय तब भी प्रेम कदापि न होय सो प्रेम नाम उसीका है कि वियोग के पीछे संयोग और संयोग के पीछे बियोग होता है इस हेतु संयोग और वियोग दोनों का सम्बन्ध है परन्तु वियोग में स्वाद विशेष तर है और प्रेम की पक्वता वियोग से होती है और मुख्य अभिप्राय जो नित्य संयोग अर्थात् मुक्ति है सोभी वियोग के भाव से शीघ्र प्राप्त होती है इस हेतु कोई कोई लोगों ने वियोग की बड़ाई लिखी है और जो मुख्य अभिप्राय पर दृष्टि करी जाय तो सब शास्त्र और सब साधन और भक्तिज्ञान वैराग्य इत्यादि

केवल संयोग के निमित्त हैं अब प्रेम की दशा वो प्रकाश लिखा जाता है सब दशा का जो दृष्टान्त वो उपमा लिखी जायगी तो उनके पढ़नेसे यह नहो कि वे दशा अगिले समय में बीतती होंगी वरु वे सब दशा सब भक्तों पर सदा अब बीतती हैं और भक्तको जिस समय जैसी चिंतवन होती है वैसेही समाधी का तदाकार वो तद्रूप होजाता है वे दशा बारह हैं और कोई २ ने उनमें से सूक्ष्मता निकाले कर तीन दशा और अधिक की कि सब पन्द्रह हो गईं सो सब का उदाहरण किया जाता है पहिली दशा का नाम उन्न जब महबूब अर्थात् प्रिय वल्लभ की सुन्दरता और गुनों को सुना और अत्यन्त चाह उसके मिलने की हुई और फिर वह किसी भांति दिखाई पड़ा तो सिवाय उस प्यारे के और किसी प्यारी वस्तु की और किसी की देखी सुनी सुन्दरताई की आखों में न समानी और यह आशा और चाह होनी कि यह प्यारा मेरे आखों से क्षणभर भी अलग नहो उस समय में जो दशा सर्वे आधिक अर्थात् भक्त पर बीतती है उसका नाम उन्न है जैसे कि जानकी महारानी की जब रघुनन्दन स्वामी जनक पुर में पहुंचे अथवा रुक्मिणीजी की भांति अथवा गोपिकाओं की संदेश कै अक्रूजी कै सुतीक्ष्णकी ॥

दूसरीयत ॥

कोई मिसकारके दूतसे अपने प्यारे के समाचार पूछने और उस पूछने के समय विकल वो विरही आधिक पर जो दशा बीतती है अथवा मेह-बूप्यारे का वृत्तान्त सुनकर जो दशा और हर्ष होती है अथवा प्यारा आयाहै और जान पहिचान नहीं है इस कारण से मिलना वो बोलाना बतरावना नहीं हुआ और उसी की चर्चा होना कि यह कौन है और कहां से आया है उस समय जो दशा होती है अथवा महबूब की ओर से कोई संदेसा लेकर आया है उस के साथ बात चीत करने के समय जो गति होती है इन सब दशाओं में से कोई एक दशा हो उस का नाम यत है और मालूम रहै कि इस के दश प्रकार हैं जल्प वो प्रजल्प इत्यादि और सब में नई नई बातें हैं ग्रंथ के विस्तार के भयसे नहीं लिखीं दृष्टांत इसयत दशा का यह है कि जिस समय उद्धव जी श्री बजकिशोर महाराज का संदेशा लेकर ब्रज में आये उस समय जो बोलना बतराना हुआ अथवा भंवर के मिस करिके गोपियों ने ब्रज चन्द्रमहा राज की निठुरता वो कृतघ्नता इत्यादि को वर्णन किया कि भंवरे गीत में विस्तार सहित लिखा है अथवा जिस समय रघुनन्दन महाराज जनक पुर में पहुंचे वहां स्त्रियां देख कर आपुस में कहती सुनती भईं ॥

तीसरी खलित ॥

खलित का स्वरूप यह है कि महबूब अर्थात् प्यारे के देखने की उमंगवो

उसके तरंग से गुरजन लोगों की शिक्षा वो ताड़न वो तर्जन को मन में न ले आना वो बार बार देखने के निमित्त चाह होनी और लज्जा को छोड़कर देखने के हेतु पीछे हो लेना और जब नयनन भरि देख लिया तब गुरजनों से वो अपने साथ स्नेह करने वालों से लज्जा होनी जिस प्रकार गोपिका कि जब ब्रजमोहन महाराज बन से आते थे तो ब्रज गोपिका लज्जा संकोच को छोड़ कर बिना भय सास ससुर इत्यादिके देखनेको जाती थीं और स्वयंवर के समय धनुष तोड़ने के पहिले से जो दशा जानकी महारानी पर बीती॥

चौथा दलित॥

दलित का रूप यह है कि महबूब प्यारा किसी कारण से आंखों के सामने नहीं उस के वियोग में रंग का बदल जाना अर्थात् वे वर्ण होना और नींद न पड़नी वो अहार घटि जाना वो दुर्बलता वो त्रिकलता होजानी और किसी वस्तु का न सुहाना और रोते२ बेसुधि होजाना और महबूब प्यारे का मन में ध्यान करके तन्मय हो जाना और उस समय मन नव नीत के सदृश्य कोमल होकर जो कुछ दशा बीतती है उस को दलित कहते हैं जिस प्रकार गोपिकाओं से रास के आरंभ में ब्रज किशोर महाराज अंतरध्यान होगये और उस समय भांति २ का विलाप गोपिकाओं ने किया और जब ढूंढ़ कर हारि गईं मनमोहन न मिले तो चरित्रों का गान करिके तन्मय होगईं कै श्री जानकी महारानी के लंका में जाने वो अशोक वाटिका में रहने के समय जो दशा बीती॥

पांचवीं मिलित॥

मिलित का स्वरूप यह है कि बहुत काल से जो महबूब प्रिय वल्लभ से वियोग था और विश्लेषता की व्यथा के कष्ट से मन विकल वो बेचैन होकर भांति २ के मनोर्थ वो चाह किया करता था वह प्याराप्राण वल्लभ बहुत काल पीछे मिला उस समय जो मनकी दशा होती है उसका नाम मिलित है जिस प्रकार श्री ब्रजचन्द्र नटनागर महाराज रास लीला में अन्तर ध्यान होगये थे और फिर अचानक गोपिकाओं से आनि मिले कै रघुनन्दन महाराज लङ्का जीतकर अयोध्या में आये और भरत इत्यादि वियोगियों को नवीन जीवन हुआ॥

छठवीं कलित॥

कलित का रूप यह है कि जिस समय मन संयोग के आनंद से द्रवी भूत होकर प्यारे महबूब के प्रेम में डब जाता है उस दशा को कलित कहते हैं वह दो प्रकार की है एक यह कि प्रियवल्लभ से साक्षात् अर्थात् प्रगट मिलकर उसके देखने अथवा वार्त्ता लाप वो लाड़ वो प्यार वो भाव अथवा स्वप्न से जो आनंद हो दूसरा यह कि ध्यान वो चिन्तवन में मिल कर जो चाहना थी सो उस चिंतवन में ज्यों की त्यों प्राप्त हो और उससे

आनंद हो वह दोनों प्रकार का संभोग परम आनंद का देनेवाला है जिस प्रकार किसी गोपी को श्री ब्रजचन्द्र महाराज ने बनमें अकेली पाकर अपने प्रेम वो कटाक्ष भरे बचन और परस्पर प्यार वो दुलार से वो जोबन का लेना देना दुर्लभ होवै ऐसी परस्पर आपुस के मांगने से और हंसी वो छेड़ छाड़ और खेंचा खेंची इत्यादि से परम आनन्द के अंतको पहुंचाया और उसरस में बेसुधि किया अथवा रास लीला के समय ऐसा वृत्तांत विस्तार से पंचाध्याई में लिखा है॥

सातवीं छिलित॥

छिलित यह कि प्यारे प्राण बल्लभ पर परम अत्यन्त स्नेह के कारण से क्रोध आजाना और प्यारे के दोष वर्णन करना और बहुत प्रेम के क्रोध से ओठों का फड़कना वो शरीर कांपना और दूसरी दशा सब क्रोध की तिससे अपने प्यारे महबूब का तदाकार होजाना उस को छिलित कहते हैं जिस भांति गोपिका भंवर गीत में अति क्रोध से कहती हैं कि हे भंवर तू उसी कृष्ण की श्लाघा करता है कि जिसने राम अवतार में बालीको व्याधा के भांति होकर मारा कि जिसका मांस वो चर्म कुछ प्रयोजन का नथा और प्रेम से जो रावणकी बहिन आई उसके रूपको बिगाड़ करके न आप रक्खा वो न और के योग्य रहने दिया बावन अवतार में राजा बलिके यज्ञ को नष्ट कर दिया अथवा जिस प्रकार लक्ष्मण जीको बनवास होनेके समय रघुनन्दन स्वामी पर क्रोध आया और कहाकि आप क्या ब्राह्मणों कीसी बात कहते हैं कि बनमें जाकर ऋषीश्वरों के दर्शन और तप करें गे मैं आपका किंकर हूं आज्ञा होवै कि शत्रुघ्न को यमलोक में पठाय देवैं और इसी प्रकार चित्रकूट पर जब भरत जी गये तब क्रोध आया॥

आठवीं चलित॥

चलित यह कि देह त्यागके समय अपने प्रिय बल्लभ का चिंतन करके प्रेमके कष्ट की दशा में यह मांगना कि दूसरे जन्म में भी मुझको उसका प्रेम होवै और वही मिलै इसका नाम चलित है जिस प्रकार सती जीने दक्ष प्रजापति के यज्ञ में देह त्याग के समय चाहना किया वो मांगा अथवा बाली को राजा दशरथ अथवा सरभंग इत्यादि ने॥

नवीं क्रांत॥

क्रांत यह कि प्यारे महबूब के चिन्तवन से जो स्वरूप मनमें प्रगट हुआ उनके चाहके अनुकूल शृंगार इत्यादि करना और हंसना खेलना बोलना बैठना और अपने मनकी चाह वो कामना परी करनी और सिवाय अपने प्यारे के और किसी का वृत्तांत सुनना न और को देखना न और किसी से बोलना ऐसी जो दशा हैं उस को क्रांत कहते हैं जिस प्रकार कोई गोपी भगवत् के चिन्तवन से बाहिर की सब बात भूल गई और

चिन्तवन में जो परम आनंद प्राप्त हुआ उस में योगी जनों की भांति ज्यौं की त्यौं रहि गई और वियोग का जो दुःख था तनक न रहा और बावरी सी कभी आंखें खोलती है और कभी बंद कर लेती है जानने रहो कि विरही आशिक अर्थात् रूपासक्त को जो माशूक अर्थात् प्राण वल्लभ के चिंतवन का सुख न होवै तो शोक के कष्ट से जीता न रहै और जो अनुक्षण चिंतवन में मग्न रहै तब भी थोड़े ही दिन जियै॥

विक्रांत॥

विक्रांत एक अंग नवीं दशा का है इस हेतु गणना में लिखा नहीं गया जिस समय आशिक अर्थात् रूपासक्त भक्त भगवत् के प्रेम के प्राप्त होने से अपने भाग्य की बड़ाई करता है अथवा अपने इष्टदेव अर्थात् भगवत् की बड़ाई और उसके मिलने का आनन्द और उस आनन्द की बड़ाई और उसके मिलने की दुस्तरता वर्णन करता है अथवा अपने इष्टदेव से जो औरों की प्रीति है उनकी श्लाघा और गुणों को कहता सुनता है अथवा अपने प्यारे के न मिलने वो देखने का शोच करता है इन दशाओं में से एक दशा प्रगट हो अथवा कई उसका नाम विक्रांत है जिस प्रकार भरद्वाज और अत्रि और वाल्मीक इत्यादि ऋषीश्वरों ने श्रीरघुनंदन स्वामी के देखने के समय अपने भाग्य को सराहा अथवा ब्रह्मा वो शिव और दूसरे ऋषीश्वरों ने भगवत् की महिमा वर्णन करी अथवा ब्रह्मा जीने ब्रह्मस्तुति में बड़ाई ब्रज और गोपिकाओं की और दुर्लभता मिलने भगवत् के प्रेम की वर्णन करी कि वे आंखें गोपिकाओं की धन्य हैं जो नंद नंदन शोभा धाम को देखती हैं॥

संक्रांत॥

संक्रांत अंगक्रांत वो विक्रांत का है वर्णन करने का प्रयोजन नहीं॥

दसवां विह्वल॥

विह्वल दशा का रूप एक श्लोक के दृष्टांत के अनुसार है कोई गोपी कहती है कि देखो पहिले जन्म में हमको श्रीकृष्ण महाराज का प्रेम न हुआ इस कारण यह देह पाई और संसार के दुःख देखने पड़े और कैवल्य मुक्ति में जो श्रीकृष्ण के प्रेम की अधिकाई नहीं तो वह मुक्ति नहीं मानो मृत्यु है अभिप्राय यह है कि जो मृत्यु के समय भगवत् का प्रेम होजाय तो मृत्यु हजार जीवन के सदृश है और जिस मुक्ति में भगवत् का प्रेम नहीं सो मुक्ति हजार मृत्युसे निकृष्टतर है कोई गोपीने श्रीकृष्ण महाराज से मान करके मनावने पर भी मान न छोड़ा जब श्रीकृष्ण महाराज चले गये तब सोच करके वियोग की दशासे विह्वल हुई और अपने शरीर और मानको धिक्कार करके शोककी पीड़ा वो विरह से चिन्तवन में बेसुधि हो गई॥

संहृत॥

संहृत एक अंग विहृत का है उदाहरण का प्रयोजन नहीं है॥

ग्यारहीं गलित॥

यह कि प्यारे महबूब अर्थात् प्राण वल्लभ की सुन्दरता इत्यादि कीचिन्तवन करके अथवा उसकी सुन्दरता देख कर गलाई चांदी सोने के सदृश मनका द्रवीभूत हो जाना उसको गलित कहते हैं जिस प्रकार कोई गोपिका किसी सखी को देख कर कहती है कि देखो इसी गोपिका ने एक बेर श्रीव्रजकिशोर महाराज की शोभा वो सुन्दरता और बोलन चलन वो भाव इत्यादि किसी से सुना है इस हेतु से इसकी यह दशा है कि योगियों की भांति मौन होगई है न हिलती है न डोलती है कबहीं रोती है कबहीं रोमांचित होती है कबहीं बकती है और कबहीं नांचती है और कबहीं गाती है और कहती है कि कब मैं उस प्यारे को देखूंगी जब कि नंद नन्दन की सुन्दरता के सुनने से यह दशा है तो न जानै मन मोहन के देख लेने पीछे कैसी दशा होगी॥

बारहवीं संहृत॥

संहृत यह कि सच्चिदानन्द घन पूरण ब्रह्म परमात्मा छवि समुद्र शोभा धाम में ऐसा जिसका मन लगा है कि जहां तहां उसको देखतीहैं और उस रूप अनूप में ऐसी वे सुधि वो मग्न हैं कि तनक भी दूसरी ओरमन को वृत्ति नहीं जाती है दर वो दीवार में वही प्यारा दिखाई पड़ता हैकि जिसके निमित्त अनेक जन्म में अनेक प्रकार के योग और अभ्यास और शुभ कर्म किये थे इस दशा का नाम संहृत है और सब उपासना वो निष्ठाओं का सार वो मानो वही दशा है इसी की बड़ाई में भगवत् गीता में यह लिखा है कि जो वासुदेव रूप सब जगह देखता है सो महात्मा है सो दुर्लभ है इसी अवस्था वो दशा के वर्णन में सब वर्णन भगवत् गीता औ भागवत में लिखा है इसी पदवी को सांडिल्य सूत्र में परानुरक्ति अर्थात् पराभक्ति कैनाम सेलिखा हैकि यह सूत्रऊपर लिखागया इस भमिका परदृढ़ होने कानाम जीवन मुक्त है वो फल इसका मुक्ति वो परमपद है और जानेरहो कि जो दशा सब सात्त्विक व्यभिचारी अर्थात् समान तृतीय वो चतुर्थ जो कि रस भेद के वर्णन में ग्रन्थके आरंभ में लिखी गई हैं सोभी प्रेम निष्ठाकी संबन्धी हैं सो ग्रन्थ आरम्भ में जो दशा रस भेद की लिखी है और इस प्रेम निष्ठाकी दशा सब मिलाने पर जो किसी प्रेमासक्त की कोई नई दशा सुनने के देखने में आवे तो उसको एक अंग उन दशाओं का समझलेना चाहिये अथवा हमसे लिखते नबना नहीं तो ऐसी बात कोई नहीं कि भाखने जिसका मूल न लिखा होय॥ हे श्रीकृष्ण स्वामी हे दीन वत्सल हे पतित पावन महाराज जिस भांति श्रेणीभाव आप पर परिणाम को प्राप्त

ऊआ है उसी प्रकार पतित पावन और अधम उद्धारन नामभी आप पर समाप्त है और जिस प्रकार शेषनाग पर शेषभाव का अन्त ऊआ है उसी प्रकार अधम और पतित होनेकी पदवी मेरे ऊपर समाप्त है परंतु ऐसी मेरी दुर्भाग्यता है कि शेषजी को तो अनुक्षण संमीपता प्राप्त है और मैं इस जगत के जंजाल में ग्रसित रहूं और गुण यह कि मैं तो अपने काम चतुर वो चौकस हूं अर्थात् कोई पाप वो अपराध ऐसा नहीं कि न किया हो वो न कर्त्ता हूं और आप को कबहीं अपने नाम का स्मरण भी नहीं होता सो कुछ चिन्ता नहीं अब हमने ग्रन्थों में लिखना आरंभ कर दिया है कबही तो चित्तपर पर चढ़ैगा यद्यपि इस भांति बिनय करनी अनरीति है परन्तु आपकी ढिलंगी ने इस ढंगसे कहलाई कि लिखाई ढिठाई जमा की जाय उसके ऊपर इतना और अधिक है कि आपका दृढ़ बचन प्रबन्धक इस जगह पर है कि जो शरण आता है उसको अभय कर देता हूं सो बहु तकाल बीता कि आपके द्वार पर पड़ा हूं यद्यपि ऐसा पक्का वो दृढ़ नहीं कि वाद करके ठहराय देव परंतु आप सब प्रकार जानते हैं कि आपके द्वार को छोड़ और किसीसे कुछ संबन्ध भी नहीं रखता अब जो कुछ मेरे निमित्त होगा आपसे होगा थोड़े में बिनय यह है कि किसी प्रकार उस रूप अनूपके चिन्तवन में दिनरात लगा रहूं जो सब रूप और शोभा का सार भूत है मेरे निमित्त वही सब कुछ है॥

अंबरीष की रानी की कथा॥

राजा अम्बरीष की कथा में लिखी गई कि रानी का वर्णन प्रेम निष्ठा में होगा सो उसी रानी की बात लिखी जाती है कि जब यह रानी ब्याही आई और राजा से उपदेश अलग सेवा पूजा करने का पाया तो अत्यन्त प्रेम वो विश्वास से भगवत् मूर्ति विराजमान करके सेवा पूजा करने लगी और इतना प्रेम भगवत् में ऊआ कि किसी समय सिवाय भगवत् भजन और आराधन के किसी काम में मन नहीं लगाती थी राजा को भी इस वृत्तान्त की समाचार पहुंचा रानी के महल में आया देखा कि रानी को भगवत् में इतना प्रेम है कि साधन अवस्था से जाय के सिद्ध अवस्था के समीप अर्थात् तद्रूपताको पहुंच गई है इस दशाको कि कबहीं अति चाह वो उमंग से गाती है और कबहीं नाचती है और कबहीं हंसती है और कबहीं रोती है और कबहीं भगवत् ध्यान में भीति के चित्र के सदृश हो जाती है राजा यह दशा देखकर अति प्रसन्न ऊआ और अपने भाग्य की बड़ाई करता ऊआ रानी के पास पहुंचा रानी तो भगवत् छबिके अनुभव में मग्न होकर शरीर की सुधी वो भान भूल गई थी पहिले कुछ बात न पूछी पीछे बहुत बेर बीते कुछ सुधि ऊई तो राजा को देख कर बड़ी रीति मर्यादा वो आदर सन्मान करके हाथ जोड़ खड़ी ऊई इस हेतु कि एक तो पति

दूसरे राजा तीसरे गुरू कि उसके ही उपदेश से भगवत् सेवा मिली पीछे वार्त्तालाप सत्संग वो भगवत् आराधन हुए पर राजा ने भगवत् चरित्रों के कीर्त्तन करने की आज्ञा करी सो रानी ने भगवत् कीर्त्तन और नृत्य आरम्भ किया और ऐसी प्रेम में मग्न होगई कि अपने वो बिराने की कुछ सुधि न रही राजा ने इस कारण से कि इस प्रेम रस के आनन्द वो सुख का स्वाद कबहीं पाया नहीं था अपने भाग्य को धन्य मानि के नित्य वो हर घड़ी उस रानी के सत्संग में रहने लगा और रानी के प्रेम का फल यह हुआ कि सारा नगर और देश राजा का भगवत् भक्त होगया वह वृत्तान्त विस्तार करके राजा की कथा में लिखा गया॥

सुतीक्ष्ण की कथा॥

सुतीक्ष्ण ऋषेश्वर अगस्तिजी के चेले रामोपासक बड़े प्रेमी हुए जब रघुनन्दन महाराज दण्डक बनको पधारे और सुतीक्ष्ण जीके आश्रम के समीप पहुंचे तो सुतीक्ष्ण जी अपने स्वामी के आगमन का समाचार सुनकर आगे लेने के हेतु चले परंतु परम आनन्द भगवत् के आगमन की और दर्शन की उमंग इतनी हुई कि सब सुधि अपने बिराने की भूलगयी सिवाय उस रूप अनूप जो चिंतवन में था और कुछ भीतर वो बाहर दिखाई नहीं पड़ता था और न यह कुछ जानरहा कि मैं कौन हूं और कहां हूं और किस ओर जाताहूं जब कबहीं सुधि होतीतो यहमनमें होतीथी कि आज कौन ऐसी शुभ घड़ी और क्या मंगल दिनहै कि जो शिव वो ब्रह्मादिकों को भी दुर्लभ है तिस स्वामी का दर्शन करूंगा और कबहीं इस बात पर प्रसन्न होते थे कि मेरे बराबर और कौन बड़भागी है कि जिसको आज पूरण ब्रह्म सच्चिदानन्दघन के दर्शन होंगे बस ऐसे चिंतवन और आनन्द में एक डग भी न चलागया और बेबस होकर राहमें बैठ गये इस भांति उस ध्यान के स्वरूप में लीन वो लय हो गये कि जब रघुनन्दन स्वामी जानकी महारानी और लक्ष्मणजी के सहित आये तो कुछ जनाई न पड़ी और जब पुकारा तो कुछ न सुना जब तो रघुनन्दन स्वामी ने अपना रूप जो ध्यान में देखते थे तिसको अंतर्ध्यान कर लिया और चतुर्भुज रूप उनके मन में प्रगट किया जब सुतीक्ष्ण ने वह मनोहर रूप अपने स्वामी का न देखा तो विकल होकर आंखें खोल दीं और अपने मन भावन को सम्मुख देख कर और अति प्रेम से बेसुधि होकर चरण पकड़ लिये न छोड़े भगवत् ने बलसे उठा कर अपनी छाती से लगाया और आश्रम में जाकर टिके ऋषेश्वर ने रीति अनुसार पूजा इत्यादि किया फिर भगवत् स्तुति का आरम्भ किया परन्तु मारे प्रेम के ऐसा स्वर भंग हुआ कि एक अक्षर भी उच्चारण न कर सके कबहीं तो आंखों से जल का प्रवाह चलता था और कबहीं कण्ठ रुकि जाता था जब भगवत् ने यह प्रेम अपार देखा तो आज्ञा की कि

जो इच्छा हो सो वर मांगो कि सब कामना तुम्हारी पूरण होंगी ऋषेश्वर ने विनय किया कि कौन वस्तु मागूं हमको अच्छे बुरे का ज्ञान नहीं है आप को जो अच्छी लगे सो दीजिये और जो मेरेही मांगने पर बात है तो यह मागता हूं कि आपका रूप अनूप जानकी महारानी वो लक्ष्मणजी महाराज के सहित मेरे मनमें सदा निश्चल बसा रहे सो भगवत् ने यही वरदान दिया प्रभात को जब रघुनन्दन स्वामी आगेको चलने लगे तो सुतीक्ष्ण जी को वियोग का सम्हार न होसका अगस्तजी अपने गुरू के दर्शन के बहाने से साथ चले और उसी परम आनन्द के समुद्र में मग्न रहे ॥

शबरी की कथा ॥

शबरी भीलनी की महिमा किस प्रकार वर्णन होसकै कि बड़े २ ऋषेश्वर जिसकी भक्ति को देखकर आधीन होगये प्रथम जब शबरी को भगवत् भक्ति हृदय में उत्पन्न हुई तो साधुसेवा को अंगीकार किया यह कि दण्डकारण्य में पंपासर के समीप मतंग इत्यादि ऋषेश्वरों के आश्रम में रात्रि के समय छिपकर लकड़ियों का भार डाल जाती थी और रात से उठ कर जिस राह से ऋषेश्वर लोग स्नान करने को आया जाया करते थे उस राहको झाड़ बुहार कर बिमल कर देती थी मतंग ऋषेश्वर अपने मनमें कहा करते कि ऐसा कौन बड़भागी है कि ऐसी सेवा करता है और हमारे तप वो भजन में बखरा लेने वाला होता है रात को दश बीस ऋषेश्वर चुपके छिपकर लगे रहे जब शबरी आई तो पकड़कर मतंग जी के पास लेगये शबरी ऋषेश्वर के डरसे कांपने लगी और जब सम्मुख गई तो रोदन करने के दुखसे वो डरसे कुछ विनय न कर सकी दूसरे ऋषेश्वरों को तो यह मनमें हुआ कि यह शबरी नीचजाति है तिसकी ले आई हुई लकड़ी जो हमने काम में लगाई न मालूम किस पाप में पकड़े जायंगे और मतंग ऋषेश्वर कि भक्ति के प्रभाव को जानते थे अपने मनमें कहने लगे कि यह शबरी ऐसी परम पवित्र वो शुद्ध है कि जिसके ऊपर करोड़ों ब्राह्मणोंके धर्म कर्म निछावर करना उचित है मतंग ऋषेश्वर उसको अपने आश्रम में लेआये और भगवत् मंत्र उपदेश किया जब मतंग जी परम धाम को जाने लगे तो शबरी को शिक्षा किया कि श्रीरघुनन्दन स्वामी पूरण ब्रह्म यहां आवेंगे वो तुझको उनके दर्शन होंगे तू इसी आश्रम में रहा करे यद्यपि शबरी को गुरु के वियोग से अत्यंत शोक हुआ परन्तु श्री रघुनन्दन स्वामी के दर्शनों की आशासे प्रसन्न होकर भजन वो ध्यान में रहने लगी जिस घाट पर ऋषेश्वर स्नान के निमित्त जाया करते थे शबरी राह बुहारा करती थी एक दिन नियत समय में विलंब होगया और ऋषेश्वर ने शबरी को देख कर क्रोध किया और उसी क्रोध में एक ऋषेश्वर का वस्त्र जो शबरी से स्पर्श होगया तो और अधिक ऋषेश्वरों के क्रोध का कारण हुआ और

शबरीके वचन दुष्ट वो कठोर कहिकर फिर स्नान को गये तड़ाग जल का स्थान रुधिर से भरा देखा और बड़े २ कीड़े देखे इस बात को अपने दुर्विदग्धता से यह समझा कि शबरी के अपवित्रता से जल तड़ाग का नष्ट होगया है कुटी पर अपने फिर गये वो शबरी ऋषेश्वरों के भय से अपने स्थान पर चली गई और चिंता की श्रीरघुनन्दन स्वामी के निमित्त प्रसाद अन्वेषण करनी चाहिये इस हेतु वन २ फल ढूंढने को जाने लगी अच्छे २ बेर तोड़ कर पहिले आप चाखा करती कि यह मीठे हैं कैखट्टे जो मीठे होते तो रख लिया करती और खट्टे को फेंक दिया करती और फिर राह पर जाकर जिस ओर से रघुनन्दन स्वामी पधारेंगे बाट देखा करती जब अपने कुरूपता वो जाति की नीचता को बिचारती तो किसी जगह झाड़ी में छिप जाती और जब अपने गुरू के वचन और भगवत् की कृपालुता वो पतितपावन तापर दृष्टि करती तो आगे लेने के हेतु दौड़ती इसी प्रकार भगवत् के प्रेम वो चिन्तवन में दिन रात व्यतीत होती जब बहुत दिन बीते तो अधम उधारण को भक्त वत्सल महाराज पधारे और लोगों से बड़ी चाह से पूछा कि शबरी परम भक्त का स्थान कहां है जब स्थान के समीप आये तो शबरी ने साष्टांग दण्डवत् करी रघुनन्दन स्वामी ने लपक कर धरती से उठा लिया और सब दुःख वो शोक बियोग का दूर किया शबरी को यह दशा हुई कि भगवत् मुख चन्द्रमा को चकोर होगई और दर्शन में मग्न होकर निर्भर परमानन्द का जल आंखों से ऐसा प्रवाह मान किया कि जिसका बार पार न रहा फिर रघुनन्दन स्वामी को अपने आश्रम में लेगई और बेर जो जंगल से ले आती थी भोजन के निमित्त आगे धरे भक्त भावन महाराज तो उन बेरों को भोजन करने लगे और शिव आदि उस भक्त वत्सलता वो कृपालुता के प्रेम में मग्न होकर शबरी के भाग की बड़ाई करने लगे भगवत् एक बेर उठावें और मुखमें डालकर उसकी मधुरता वो मिठास की श्लाघा कर लें कि ऐसा फल मीठा कबही नहीं खाया फिर दूसरा उठावें और उसी भांति गुण वर्णन करिके भोजन करें जब भोजन कर चुके तो सब ऋषेश्वर आगमन सुन कर कि आप शबरी के ग्रह में आयके उतरे हैं अचंभे योग में हो श्रीरघुनन्दन स्वामी के दर्शन को आये वो सब गर्व अपने धर्म कर्म वो कुलीनता का बिदा किया और भगवत् दर्शनों से कृतार्थ होकर परम आनंद को प्राप्त हुए वार्त्तालाप होने पीछे ऋषेश्वरों ने तड़ाग के जल बिगड़ जाने का वृत्तान्त कहा वो उसके शुद्ध वो बिमल होने का उपाय भगवत् से पूछा भगवत् ने आज्ञा किया कि शबरी के चरण परम पावन जब उस तड़ाग में पड़ेंगे उसी क्षण जल निर्मल वो शुद्ध होजायगा ऋषेश्वर शबरी को बिनय वो प्रार्थना करिके तड़ाग पर लेगये और उस परम भक्त के चरणों के पड़तेही तड़ाग भगवत्

भक्तों के मानस के सदृश विमल वो शुद्ध होगया पीछे रघुनन्दन स्वामी ने आगे जाने की विदा श्वरी से मांगी और आज्ञा किया कि जो उपदेश भक्ति का हमने किया है उसी प्रकार आगे पर आचरण करती रहना श्वरी को जो वह परम मनोहर वो रूप बाहर वो भीतर के आंखों में समाय गया था वियोग न सहसकी विदा मांगतेही अपने प्राण को नछावर करके परमधाम को गई भगवत् ने दाह कर्म उसका आप किया इस चरित्र से आवागवन से छुट्टी चाहने वालों को भक्ति करने की शिक्षा करी निश्चय करके प्रेम की अन्त पदवी यही है कि अपने प्यारे के मिलने के अति आनन्द में अथवा वियोग के अति शोक में आशक्त अर्थात् स्नेह करने वाले के प्राण तुरन्तु जाते हैं॥

विदुर वो उनकी स्त्री की कथा॥

विदुरजी वो उनकी धर्म पत्नी परम भक्त हुए विदुरजी धर्म के अवतार थे माण्डव ऋषेश्वर के श्राप से मनुष्य देह पाई कथा उनकी विस्तार से महाभारत में लिखी है जितनी प्रीति भगवत् में विदुरजी की थी उस से अधिक उसकी धर्म पत्नी की थी जब भगवत् श्रीकृष्ण महाराज कौरव पाण्डवन के विरुद्ध मिटाने के निमित्त हस्तिनापुर में पहुंचे तो दुर्योधन ने अपने ऐश्वर्य के गर्व से संधि अर्थात् मेल अंगीकार नहीं किया परंतु भोजन के शिष्टाचार के हेतु विनय किया भगवत् ने आज्ञा किया कि बिराने घर भोजन तीन भांति से होता है एक तो कंगालता करिके दूसरे प्रेम के संबन्ध से तीसरे हरि भक्त अथवा गुरू चेले आपुस के घर जब जावें सो यहां इन तीनों बातों में से कोई बात नहीं यह कहिके विदुरजी के घर पधारे उस समय विदुरजी घर पर नहीं रहे और उनकी स्त्री स्नान करती थी उसने जो भक्त वत्सल महाराज का आगमन सुना तो मारे हर्ष के अंगन में न समाय सकी और ऐसी प्रेम वो आनन्द में मग्न होगई कि बेधड़क उस नग्न दशा में उठ दौड़ी लज्जा रखने वाले महाराज यह दशा उसकी प्रेम की देखकर चकित हुए और झट पीताम्बर श्रीअंग का अपना उढ़ाय दिया सो यह समझ पड़ता है कि जानै भगवत् को उस समय यह विचार हुआ होगा कि यह मेरे तद्रूपता को पहुंच गई है केवल पीताम्बर नहीं है इस हेतु पीताम्बर भी उढ़ाय देना चाहिये॥ अथवा यह बात हो कि जब राजा किसी अपने प्यारे सेवक पर प्रसन्न होता है तो अपनी पोशाक निज खिलत देता है सो भगवत् महाराजाधिराज मणि ने इसके प्रेम से प्रसन्न होकर पीताम्बर खिलत की भांति कृपा कर दिया अथवा ऐसा मनमें आया होय कि जब कोई राजा की सेवा में जाता है तो कुछ नजर भेंट दिया करता है सो भगवत् ने विदुर पत्नी को अपने प्रेमियों में राजा के सदृश विचार करके पीताम्बर भेंट दिया हो पीछे

भगवत् को अपने घरमें ले आई और परम प्रीति से सिंहासनपर बैठाकर अत्यन्त प्रेम वो आनन्द में बेसुधि होगई कृपासिन्धुमहाराजने जो उसको यह दशा देखी तो अपने और वार्तालाप में लगाने के निमित्त आज्ञा किया कि भोजन कुछ तैयार होय तो लाओ वह बड़ भागी केले के फल ले आई पास बैठकर खिलाने लगी वह तो परमानन्द में पूरण घी गिरी को तो धरती पर गिरा दिया और छिलका भोजन के निमित्त दिया विश्वम्भर महाराज कि केवल प्रेम के भूखे हैं छिलकों को सराहि २ खानेलगे उसी समय विदुरजी आयगये और भगवत् के चरण कमलों को दंडवत् करके स्त्री को तर्जन भर्त्सन करने लगे कि रेमन्द बुद्धीगिरी खिलाने को सो छिलके खिलाती है और आप भगवत् के पास बैठकर बड़े भाव वो भक्ति से गिरी निकाल २ कर खिलाने लगे भक्त चित्त रंजन महाराजने आज्ञा किया कि विदुरजी यह केलों का गूदा बड़ा मीठा है परन्तु उन छिलकों के स्वाद को नहीं पहुंचता इस वचन से भगवत् अपने भक्तों को शिक्षा करते हैं कि जिस किसी को जितनी प्रीति वो भक्त मेरे चरण कमलों में है तितना ही भोजन इत्यादि जो कुछ मेरे अर्पण वो भेंट करते हैं मैं अंगीकार करता हूं दूसरे यह बात जताते हैं कि मेरे दरबार में चतुराई इत्यादि को कुछ नहीं चलती केवल प्रेम वो स्नेह परीक्ष है और एक यह अर्थ भी प्राप्त हो गया कि जो विदुरजी और उनकी स्त्री को छिलकों के खिलाने के कारण से लज्जा वो शोच हुआ था सो सब मिट गया और दोनों परम प्रीति से और भगवत् की सेवा में तत्पर रहे॥

भक्तदास की कथा॥

राजा भक्तदास कुलशेखर जिनका पद है भगवत् भक्त प्रेमी हुए कथा उनके प्रेम और भक्ति की प्रपन्नामृतग्रन्थ में विस्तार से लिखी है यहां मूल भक्तमाल में जितनी लिखी है सो लिखी जाती है यह राजा श्री रघुनन्दन स्वामी के उपासक थे श्रीरघुनन्दन स्वामी की कथा चरित सदा सुना करते और अति प्रेम और प्रीति से लीला और उत्साह भगवत् का नित्यनये भाव से किया करते ब्राह्मण कथा सुनाने वाला राजा के प्रेम का वृत्तान्त जानने वाला था जब रामायण में सीताहरण की कथा आया करती तो छोड़ दिया करता था एक बेर वह दुखी पड़ा उसका बेटा कथा सुनाने को आया वही कथा सुनाई कि रावण आया और जानकी महारानी को चुरा कर ले गया इतना वचन सुनतेही राजा तरवार खींच कर मार मार करता हुआ दौड़ा और घोड़े पर सवार होकर लङ्का की ओर चला कि इसी घड़ी रावण को मार कर अपनी माता के दर्शन करूंगा मेरे जीते मेरी माता को कैसे ले जाय जब राह में समुद्र आनिपड़ा तो निर्भय घोड़ा समुद्र में डाल दिया भक्त भावन वो भक्त मनरञ्जन महाराज जानकी

महारानी वो लक्ष्मणजी सहित प्रगट हुए और कहा कि कुलगुरु कहां जाते हैं रावन को तो हमने वध किया जनक नन्दिनी सहित अयोध्या को जाते हैं राजा चरणों में पड़ा युगल स्वरूप के दर्शन करके नये प्राण पाये अपनी राजधानी में आकर प्रेम भक्ति में मग्न रहे॥

बिट्ठलदास की कथा॥

बिट्ठलदास जी माथुर चौबे अनहंकार वो औरोंको मान देने वाले सब प्रकार से निर्मल परोपकारी हुए किसी के अवगुण पर दृष्टि नहीं जाती थी जो विद्या जिस में होती थी उसका वर्णन करते थे माला और तिलक वो भगवत् भक्तों की महिमा वो प्रेम भगवत् के सदृश बुद्धि में समाय रहा वो हरिगोविन्द हरिगोविन्द यह वाणी अनुक्षण जिह्वापर रहती थी उनके बाप दो भाई सगे राना के प्रोहित थे बिट्ठलदास लड़केही थे तबही वह दोनों आपुस में लड़कर मरि गये जब बिट्ठलदासजी सयाने हुए तो भगवत् भक्ति को अंगीकार किया और राना के पास आना जाना छोड़ दिया एक दिन राना ने लोगों से पूछा कि हमारे प्रोहित का लड़का नहीं आता वह कहां है शीघ्र ले आओ बिट्ठलदासजी न गये जब दोहराय के बुलाया तब कुछ लोगों ने कहा कि महाराज वह तो दिन रात राग रंग वो वैरागियों के संग में रहता है और अपने आप को भक्त में गिनता है राना ने बिट्ठलदासजी को कहला भेजा कि आज जागरण हमारे यहां है सो जागरण हमारे गृह में करना बिट्ठल दास जी हरि भक्तों के समाज सहित गये राना ने सबको आदर भाव करके समाज के निमित्त तिखने मकान की छत्त पर फरस लगवाया जिस समय भगवत् चरित्रों का कीर्त्तन और भजन होने लगा बिट्ठलदास जीकी दशा उन चरित्रों के रसमें बेसुधि होगई और अपने वो विराने को भूल कर आप कीर्त्तन करने लगे और नृत्य वो गान की दशा में कुछ सुधि अपने शरीर वो मकान की न रही तिमंजिले मकान से नीचे गिरे राजा वह दशा देख कर बड़े शोच में डूबा और दुष्ट लोगों को बहुत तर्जना भर्त्सना किया साधु लोग बिट्ठलदासजीको उठा कर घर पर ले आये वो राना ने रुपैया वो सामग्री सब भेजी बिट्ठलदास जीको तीन दिन पीछे सुधि भई उनकी माता ने सब वृत्तान्त राजा की परीक्षा लेने का वो दुष्ट लोगों की दुष्टता वो तिमहले पर फरस होने का कारण सब कहा बिट्ठलदास जी राति को अपने घरसे चले छठीकरा गांव में कि जहां यशोदा जीने छठी की रीति रसम श्रीनन्द नन्दन महाराज की करी है आय कर श्रीगरुड़ गोविन्द की सेवा पूजा में लगे राना के सेवक सब जगह २ ढूंढ़ आये कहीं न मिले परन्तु उनकी माता वो स्त्रीने ढूंढ़ते २ पाया घर चलने के निमित्त उनसे बहुत कहा वो उपाय किया समझाया परन्तु मन

बिट्ठलदास जीका सेवा वो स्वरूप में श्रीगरुड़ गोविन्द महाराज के लिपट गया पर इस हेतु कोई उपाय ने काम न किया हारिके, उनकी माता वो स्त्री उसी गांव में रहने लगे कुछ दिन बीते बहुत दुखी पड़े भगवत् ने स्वप्न में आज्ञा की कि तुम मथुरा जीमें निवास करो बिट्ठलनाथ जीको गरुड़ गोविन्द महाराज का वियोग अंगीकार न हुआ जब तीन दिन तक बराबर आज्ञा को किया तब बेबस होकर मथुरा जीमें आये वो अपने सजातियों को देखा कि भगवत् भक्ति से विमुख हैं इस हेतु एक बढ़ई साधु जीके घर उतरे उनकी स्त्री परम सती गर्भवती रही उसको खर्च पात की चिन्ता हुई भगवत् ने मिट्टी खोदते में एक अपनी मूर्त्ति को बहुतधन सहित प्रगट कर दिया बिट्ठलदास जी वह मूर्त्ति वो रुपैया बढ़ई को देने लगे परन्तु उसने हाथ जोड़ कर चरणक पकड़ लिया वो बिनय किया कि आपही भगवत् की सेवा करें और यह रुपैया भी खर्च में लगावें बिट्ठल दास जीने ऐसी प्रीति से सेवा को आरंभ किया कि सिवाय सेवा पूजा के और किसी कार्य्य से सम्बन्ध न रक्खा और थोड़े दिन में उनके भक्ति भाव की ऐसी ख्यात हुई कि बहुत लोग केले हो गये भगवत् उत्साह और कीर्तन का ऐसा समाज रहने लगा कि मनो भगवत् पार्षदों का समाज है संयोग बस एक नटिनी आय गई और उसने भगवत् के आगे नृत्य और गान किया बिट्ठलदास जी भगवत् प्रेम में ऐसे बे सुधि वो बेबस हो गये कि जो गहने वो वस्त्र दिक थे सब उसको प्रसन्न दान कर दिया और जब उसको भी कम जाना तो रंगी रायने अपने पुत्रको भगवत् की निछावर करके दे दिया रंगी रायकी चेली राना की लड़की थी उसने उस नटिनी से कहला भेजा कि जो रुपैया वो आभूषण तुझको चाहना होय मुझसे लेवो रंगीराय मेरे गुरूको मुझको दे नटिनी ने उत्तर दिया कि संपत्ति की तो कुछ परवाह नहीं परंतु रीझकर मन मन धन सब देसकी हूं राना की लड़कीने बिट्ठलदास जीसे बिनय वो प्रार्थना करके फिर समाज करांया और जो गुनी और भक्त जन आये थे बहुत रुपैया उनको नजर भेंट दिया और आप भगवत् के सामने नृत्य करने लगी कि वह नटिनी भी चकित होगई और रंगीराय जीका शृंगार करके और डोलेमें बैठाकर भगवत् के सन्मुख लाई रंगी रायजी उस नटिनी के कहने से नृत्य करने लगे कि सब समाज भगवत् प्रेम में बे सुधि हो गया और नटिनी ने सब धन संपत्ति रंगीराय जी सहित भगवत् भेंट किया रंगी राय जीने बिट्ठलदास जीसे कहा कि आप मुझको भगवत् के निछावर कर चुके हैं उचित नहीं कि फेर लेवें इस हेतु रंगीराय जीको तो बिट्ठल दास जीने न लिया परन्तु राना की लड़की ने ले लिया रंगीराय जी ने बिचारा कि यद्यपि प्रगट जो तन है सो तो भगवत् निछावर हो चुका परंतु प्राण अब तक निछावर नहीं हुए इस हेतु पंच भौतिक तन छोड़ कर भगवत् के

परम धाम को प्राप्त ऊए यह चरित्र पवित्र भगवत् के रसिक वो प्रेमियों का कि भगवत् भक्ति का देनेवाला है विचार के योग्य है ॥

कृष्णदास की कथा ॥

कृष्ण दास जी परम भक्त भगवत् के ऊए कि श्रीनन्द नन्दन महाराज ने निज अपने चरण कमलों का नूपुर उनको कृपा करके दिया भगवत् कीर्तन की रीतों के अच्छे ज्ञाता रहे स्वर और ताल वो ग्राम और मूर्च्छना इत्यादि जो कुछ संगीत रत्नाकर आदि ग्रन्थों में लिखे हैं उनको ऐसा जानते कि उस समय में उनके सदृश कोई न था और अत्यन्तता उस की यहां तक ऊई कि राधिका वल्लभ महाराज को भी अपने प्रेम और गुण से प्रसन्न करके रिझाय लिया जाति के सुनार थे और खरगसेन उनके बापका नाम था एक दिन श्री राधा कृष्ण महाराज की सेवा पूजा करके भगवत् के साम्हने नृत्य वो गान करने लगे और भगवत् के रूप और चरित्र के चिन्तवन वो रसमें ऐसे मग्न और बेसुधि ऊए कि कुछ शरीर की भान न रही उसी दशा में एक पांवका घुंघुरू खुल कर गिर पड़ा और सभा जो जम रहा था उसमें विक्षेप होने लगा श्री रसिक बिहारी परम रिझवार उस सभा के भंगको ताल वो वेशोभा समझकर उठे वो अपने चरण कमल का नूपुर श्री हस्तसे कृष्णदास जीके चरण में पहिना दिया कृष्ण दास जीने नृत्य और कीर्त्तन के पीछे जब यह वृत्तान्त जाना तो भगवत् कृपा की और अपने भाग्य को धन्य मानि कै फिर आनंद में मग्न होगये और ऐसे भगवत् भजन में लवलीन ऊए कि दिन राति उसी प्रेम की दशा में बेसुधि रहने लगे वो साधुसेवी ऐसे थे कि हरि भक्तों को कबहीं भगवत् से न्यून न जाना जो किसी को शंका होय कि भगवत् ने अपना घुंघुरू क्यों पहिनाया वही घुंघुरू क्यों न सजिदिया सो हेतु यह है कि जो वह घुंघुरू साजिके पहिनाते तो बिलंब होता इसहेत अपना घुंघुरू पहिना दिया और भक्त के मन में अपनी रिझवारता और चित्तकी चाहको प्रगट कर दिया सिवाय इसके यह बात भी सूचित होती है कि भगवत् ने रीझ कर यह घुंघुरू इनाम दिया ॥

कात्यायनी की कथा ॥

कात्यायनी जीके प्रेम और भक्त की कथा किससे कही जाय जितना प्रेम और स्नेह व्रजगोपिकाओं को श्री व्रजभूषण महाराज में ऊआ तितनाही कात्यायनी जीको था बात कहते २ भगवत् के रूप में चिन्तवन करके बेसुधि हो जाती थी तनक सुधि नहीं रहती थी जगत के जितने झगड़े धी बखेड़े हैं तिनसे न्यारी और भगवत् के प्रेम की मूर्ति थी सब भगवत् भक्तों का सम्मत इस बात पर है कि भगवत् का स्नेह कात्यायनी जी पर समान ऊआ यह दशा थी कि राह चलते में भगवत् चरित्रों के तन्मय हो जाती थी और कबहीं गाती थी कबहीं रोती थी कबहीं हंसती थी एक बेर की

जान है कि भगवत् चरितों के कीर्त्तन में बेसुधि वो मग्न थी पवन तेज चलने के कारण से दृक्षों से शब्द आने लगा कात्यायनी जी यह समझी कि यह लोग कई ताल मृदंग बजाने वाले हैं भगवत् के सन्मुख जो मैं गाती हूं तो यह बाजा बजाते हैं इस हेतु कुछ इनाम उन को देना चाहिये सो सब अपने वस्त्रों को उन को प्रसन्न दान कर दिया और प्रिया पीतम के प्रेम में बेसुधि और मग्न हो गई ॥

माधव दास की कथा ॥

माधव दास रहने वाले कधागढ़ के ऐसे प्रेमी भक्त भगवत् के हुए कि जब भगवत् चरितों का गान अथवा कीर्तन सुनते अथवा आप कीर्तन किया करते तो भगवत् के रूप माधुरी के चिन्तवन में बेसुधि होकर लोटनेलगते और कुछ सुधि न रहती और पुत्र वो पौत्रों का भगवत् भक्तों में अत्यंत प्रेम था वो दृढ़ प्रेम रखते थे और तन मन से उनकी सेवा टहल किया करते थे नगर का अधिपति भगवत् से विमुख था दुष्ट लोगों ने उसको बहकाया कि माधोदास अपने को संसार में दिखलाने के हेतु भगवत् प्रेम के बहाने झूठ मूठ धरती पर लोटा करता है राजा अज्ञानीने परीक्षा के निमित्त अपने स्थान पर समाज ठहराया और तिमहले पर समाजी सभा ठहरी समाज समय माधो दासजीने नूपुरबांधकर ऐसा कीर्तन किया कि बेसुधि होकर लोटने लगे और उसी दशा से मकान कीछत से एक कड़ाह तप्तघृत में कि वह उत्सव के निमित्त पकवान बनता था उसी में गिरे भगवत् ने ऐसी रक्षाकरी कि किसी अंगको कुछ चोट न आई इस चरित्र से राज की आंखें हृदय की खुलगईं वो भय वो लज्जा से भगवत् भक्तिमान वो भक्तों से आधीन होगया और भक्त हुआ ॥

नारायण दास की कथा ॥

नारायण दास जी नर्त्तक अर्थात् नट वो भगवत् प्रेम के स्वरूप हुए यद्यपि संसार में हजारों नाचने वाले होगये और हैं परंतु जो भगवत् प्रेम को उन्होंने निबाहा दूसरे किससे हो सक्ता है विष्णुपद को अक्षर के अर्थ से भगवत् रूप में मग्न होकर भगवत् के नित्य विहार में जा मिले उनका यह नेम वो प्रण था कि सिवाय भगवत् के और किसी के सामने नृत्य वो गान नहीं करते थे तीर्थ और भगवत् मन्दिरों की यात्रा करते हुए हंडिआ सराय में जो प्रयागराज से छः कोस पर है पहुंचे और उनके नृत्य वो गान की धूम नगर में हुई वहां का हाकिम यमन था उसने बुलाने के हेतु अपने लोगों को भेजा नारायण दास जीने भगवत् सिंहासन का छोड़ जाना यमन के सामने उचित न समझा और उसका अभिलाष भंग करना भी अच्छा न जाना बेबस होकर एक विचार अपने जीमें ठहराय कर गये और ऊंचे सिंहासन पर तुलसी की माला कि शास्त्र के वचन से

तुलसी और भगवत् में कुछ भेद नहीं विराजमान करके नृत्य और गान करने लगे परंतु उस हाकिम मुसल्मान की ओर जो अलग बैठा था भलकर भी न देखा जब यह विष्णुपद मीराबाई जीका कि भवा उस का यह है सांचो प्रीत ही को नातो कैजानै राधिका नागरी कै मदन मोहन रंग, रातो॥ कीर्तन किया तो उस के अर्थ वो भाव को समझ कर प्रिया प्रीतम के चिन्तवन में बेसुधि होगये और उसी बेसुधिता की दशा में उस विष्णुपद के अर्थ के अनुकूल भीतर वो बाहर की आंखन में वह समाज समाया कि ब्रज मोहन महाराज वो वृषभान नंदनी परस्पर की प्रीति वो स्नेह से आनन्द में भरे खेल और विहार वो नृत्य और गान में लवलीन हैं और नृत्य की दशा में तिरछा देखना और भृभंगी लटक वारे रूप ब्रजकिशोर महाराज ने और परम शोभा वो शृंगार ब्रजनागरी जीने ऐसे छटा वो समा का स्वरूप पकड़ा कि नारायण दास जीको अत्यन्त चाव से कुछ निछावर करना उचित वो निश्चय करिके हुआ उस समय अपने प्राण से अच्छी और कोई वस्तु निकट न पायी बस तुरन्त युगल स्वरूपके निछावर करके नित्य विहार और परम आनन्द में जामिले॥

लीलानुकरन की कथा॥

एक ब्राह्मण पुरुषोत्तम पुरी में ऐसे प्रेमी भक्त भये कि भगवत् रूप के अनुभव में मग्न होकर तनमय वो बेसुधि हो जाते थे एक बेर नृसिंह जीकी लीला को परम पवित्र नृसिंह चतुर्दशी के दिन लोगोंने बड़ेही धूम धाम से तैयार किया और उस ब्राह्मण को भगवत् भक्त और प्रेमी जान कर नृसिंह जीका रूप बनाया जब उस चरित्र का कीर्तन होने लगा कि नृसिंह जीने हिरण्यकश्यप को अपने नखों से उदर चीर कर मार डाला तो उस ब्राह्मण को अनुकरण का ध्यान रहा और जो नृसिंह जीको करना उचित था सोई क्रिया अर्थात् जो पुरुष हिरण्यकश्यप का रूप बना था उस का उदर अपने नखों से चीरकर मारडाला और प्रह्लाद को राजदिया लोगोंने उसको वध शत्रुता के कारण से समझा और भगवत् भक्तों ने यह कहा कि शत्रुता नहीं नृसिंह जीका अंश इस ब्राह्मण में आगया था नितांत सबका यह सम्मत ठहरा कि रामलीला के समय इस ब्राह्मण को दशरथ महाराज का अनुकरण बनाना चाहिये उस समय वृत्तान्त प्रेम और शत्रुता का खुल जायगा सो रामलीला में वैसाही किया जिस समय वह चरित्र आया कि रघुनन्दन स्वामी जनकनन्द नीवो लक्ष्मण महाराज सहित वनको गये और सुमन्त मन्त्री ने आकर राजा दशरथ को सन्देशा रघुनन्दन स्वामी का सुनाया और राजा ने सुनतेही सन्देसे के प्राण त्याग किये तो उस ब्राह्मण ने कि वास्तव करिके दशरथही होगया था रघुनन्दन स्वामी का सन्देशा सुमन्त के मुखसे सुनते ही उसी घड़ी

अपना प्राण भगवत् के निछावर किया और दशरथ महाराज से बढ़कर पदवी पायी वास्तव करिके प्रेम का ऐसाहीं प्रताप है॥

सुरारिदास की कथा॥

सुरारिदास जी प्रेमी भक्त श्री रघुनन्दन स्वामी के बलवंडा शहर में जो मारवार देश में विख्यात है ऊए भगवत् का उत्साह और हरि भक्तों की सेवा और भंडारा करने में अद्वितीय थे कीर्तन करने के समय श्री रघुनंदन स्वामी के चरित्रों में लवलीन हो कर प्रेम की अंतदशा हरि भक्तों को शिक्षा किया एक चर्मकार भगवत् सेवा पूजा बड़े भावसे करके बड़े उच्च स्वरसे नित्य कहा करता था कि जो भगवत् के चरणाम्रत का अधिकारी हो सो लेजावे सुरारिदास जीने वह शब्द राह चलते सुना उसके धरगये वह चमार डरसे कांप उठा सुरारिदास जीने उसको बहुत आश्वासन करी और कहा कि भय किस हेतु करता है केवल चरणाम्रत के निमित्त आया हूं चमार नें विनय किया कि महाराज मैं जातिका चमार हूं आपको कब दे सक्ता हूं सुरारिदास जीने उत्तर दिया कि तू हमसे भी अच्छा है वो जो तुझ को कुछ डर है तो हम किसी से न कहेंगे॥ यह कह कर विह्वल होगये और जल आखों से बहने लगा चमार ने पूछा कि महाराज तुम किस हेतु रोते हौ सुरारिदास जीने उत्तर दिया कि हमारी आखैं दुखती हैं फिर चमार ने बड़ी विनय बो धिक्कार से कहा कि महाराज आपको चरणाम्रत सुभ नीच से लेना न चाहिये सुरारिदास जीने न माना और हठ करिके चरणाम्रत लिया भगवत् भक्ति को मुख्य समझा और जाति कर्म आदि पर धूल डाल दी जाने रहो सुरारिदासजी इस चरित्र से तीनेंं प्रकार के लोगों को शिक्षा करते हैं अर्थात् जो कोई भगवत् प्रेम और भक्ति की सिद्ध दशा को पहुंचगये हैं उनको तो यह शिक्षा है कि जाति इत्यादि का बन्धन उन लोगों को है कि भगवत् प्रेम में दृढ़ नहीं ऊए सो तुम उस दृढ़ता परिखर रहना और साधक लोगों को दृढ़ निश्चय कराते हैं कि भगवत् भक्ति में और प्रेम में वह पदवी प्राप्त करनी चाहिये कि भेद और द्वैत दूर होजावे और जो भगवत् से विमुख हैं उन पर यह दशा है कि तुमसे चमार अच्छे हैं जो भगवत् सेवा करते हैं भागवतके एकादश का वचन है कि जो विप्र बारह कर्म करके युक्त है परंतु भगवत् भक्ति नहीं रखता उससे श्वपच अच्छा है काशी खंडमें लिखा है कि ब्राह्मण अथवा क्षत्रिय अथवा वैश्य के क्षुद्र और नीच जो भगवत् भक्त हैं सोई सब उत्तम लोगोंमें उत्तम हैं ऐसे सैकरों वचन इस बातके सिद्धांत में हैं एक यह उपदेश भी इस चरित्र से दिखाई देता है कि आगम शास्त्रके वचन के अनुकूल भक्ति मार्ग के पांच कंटक हैं॥ कुलमद--१ विद्यामद--२ धनमद--३ सौंदर्य मद--४ बल-

मद--५॥ सो जिसने इन पाचों विरोधियों को जीत लिया सोई भक्त देशका अधिपति हुआ सुरारिदास जी का यह वृत्तान्त सारेनगर में फैला और सब लोग प्रगट बोली मारने लगे और राजा तक समाचार पहुंचाया राजा को भीयह बात अच्छी न लगी और मन फिर गया एक बेर सुरारिदास जी राजा के देखने को आये तो पहिलीसी भाव भक्ति राजा में न देखी वो वैरागवान पुरुष थे सब त्याग कर किसी और जगह जारहे इनके जाने से भगवत् भक्तों का आना निर्मूल बंद होगया और राजा जो प्रति वर्ष उत्साह करता था और देश देश के साधु भगवत् भक्त इकट्ठे मेलेमें होते थे कोई न आया और उपाधि उपद्रव वो अकाल का आगमन दिखाई देनेलगा तब तो राजा शोच वो शोक युक्त होकर फेर लेआने के हेतु चला और जाकर अत्यन्त दीनता वो नम्रता से साष्टांग दण्डवत किये सुरारिदास जीने मुंह फेर लिया कि ऐसे भगवत् विमुख का मुख देखना नहीं चाहिये कि ऐसे भगवत् विमुख से गुरू की निन्दा होती है राजा हाथ जोड़े दीनता औ दुख से लज्जा की नदी में डूब कर खड़ा रहा और फिर दण्डवत करके प्रार्थना की कि आप मेरे ऊपर दया करके जो दंड विचार करें उसके योग्य हूं और यह कटाक्ष का वचन भी विनय किया कि मेरे अच्छे भाग्य होने में कुछ संदेह नहीं कि आप ऐसे गुरू मुझको न मिले परंतु आपकी कृपा वो दया की न्यूनता निश्चयकरिके है कि आपके चरणों में विश्वास न रहा सुरारिदास जी इस कटाक्ष युक्त वचन से बहुत प्रसन्न हुए और प्रसंग वाल्मीकि खप्पच का कि श्रीकृष्ण महाराज ने युधिष्ठिर के यज्ञ में सब से ऊंचे आसन पर बैठलाकर द्रौपदीजी के हाथ से भोजन कराया और सबरी का कि ऋषीश्वरों ने जिसके चरण पकड़े और तड़ाग जिस चरण के प्रभाव से पवित्र हुआ और निषाद का कि वशिष्ठ जी और भरत जीने अपने बराबर बैठाया वो हनुमान वो सुग्रीव वो विभीषण वो गज वो गणिका इत्यादि का वृत्तान्त उपदेश करके राजा के हृदय के अन्धकार को दूर कर दिया और भगवत् भक्ति और भक्तों का विश्वास दृढ़ कर दिया पीछे राजा के नगर में आये और वैसाही समाज भगवत् भक्तों का और सत्संग रहने लगा सब उपद्रव वो उत्पात शान्त होगया वो सब लोगों ने भगवत् भक्ति को अंगीकार किया॥ एक बेर समाज हुआ वो जो कोई कीर्तन और भजन में ज्ञाता वो प्रवीन थे सब चेले हुए भजन कीर्तन के समय भगवत् भक्तों ने सुरारिदासजी को कहा कि कुछ आपभी भजन करें उनके कहने से उठे और घुंघरू बांधकर नृत्य करने लगे वो भगवद् भक्त थे सब राग रागिनी और सातों स्वर वो, तीनों ग्राम वो इक्कीसों मूर्छना आयके प्राप्त हुई और ऐसा समाज हुआ कि किसीने देखा था न सुनाथा जब श्री रघुनंदन स्वामी के वनके जाने का चरित्र भगवत् भक्तों

ने कीर्तन किया तो मुरारिदास जी भगवत् विरह के तन मय होगये और चित्र के सदृश ज्यों के त्यों रह गये अथवा यह बात समझी कि उस बन वो अरण्य में परम सुकुमार रघुनन्दन स्वामी वो जानकी महारानी और लक्ष्मणजी की सेवा कौन करैगा इस हेतु यह प्राण संग भेजना उचित है यह दशा देख कर उस समाज ने बहुत दुख पाया वो मुरारिदासजी परंपद श्री रघुनंदन स्वामी को पहुंचे ॥

गदाधर भट्टकी कथा ॥

गदाधर भट्टजी प्रेम भक्ति के समुद्र सुशील मधुर बोलने वाले सहज स्वभाव निस्पृह अनन्य भगवत् भजन में आनन्द और लोगों को भगवत् भक्ति में दृढ़ करने वाले हुए किसी से कुछ चाहना नहीं रखते थे और भगवत् भक्तों की सेवा ऐसे प्रेम से करते थे मानों इसी हेतु उनका जन्म हुआ था उनका यह विष्णु पद कि ॥ सखी हों श्याम रंगरंगी देखि बिकाय गई वह सूरत मूरति मोहिं पगी ॥ जीव गोसाईंजी ने सुना वो एक चिट्ठी लिखकर दो साधुके हाथ भेजी चिट्ठी में यह लिखा था कि तुमको बिनारैनी रंग किस प्रकार चढ़ गया हमको चिंता है इस लिखने का तात्पर्य प्रथम यह कि बिना वैराग्य अर्थात् त्याग बिना भक्ति की रंग चढ़नी अति कठिन है सो तुमने अब तक गृह कुटुम्बका त्याग नहीं किया जो फिर रंग में रंगीन किस प्रकार हुए ॥ दूसरे यह कि श्री वृन्दावन भगवत् स्वरूप के रंग की रैनी है सो वृन्दावन वास बिना रंग किस प्रकार चढ़ गया साधु लोग वह चिट्ठी लेके भट्ट जीका घर जहांथा तहां पहुंचे संयोग वस भट्ट जी नगर से बाहर कोई कुएं पर बैठे थे उनहीं से पूछा कि गदाधर भट्टजी कहां रहते हैं भट्टजी ने पूछा कि तुम कहां से आये वो कहां रहते हैं साधोंने कहा कि सब धामों का परम धाम श्रीवृन्दावन है तहां रहते हैं और तहांही से आये हैं भट्टजी उस नाम परम अभि राम के सुन-तेही प्रेम से बेसुधि होकर गिर गये कुछ काल पीछेसुधि हुई तो परम आनन्द में मग्न मौन होकर चित्र की मूरति के सदृश भगवत् रूप के चिन्तवन में बैठ गए किसी ने साधों से कहा कि गदाधर जी यही महाराज हैं साधों ने वह पत्री उनको दी भट्ट जी ने जो पढ़ा सिर पर चढ़ा कर वृन्दावन को वृन्दावन बिहारी के रूप में आनन्द होकर उसी क्षण वृन्दावन को चल खड़े हुए वो आयके जीव गोसाईं जीसे मिले दोनों परम भागवतों को प्रेम की नदी ऐसी उमड़ी कि उसमें डूब गये और आपुस के सत्संग से भाग्य को धन्य मान कर भगवत् की बड़ी कृपा समझी गदाधर भट्ट जीने जीव गोसाईं जीसे सब ग्रन्थ भगवत् चरित्र और रसरास और प्रिया प्रीतम के कुञ्ज विहार के पढ़े सुने और भगवन् के रूप रंगमें रंगीन होगए भट्टजी नित्य श्रीमद्भागवत की कथा करते थे कल्याणसिंह नामी

राज पूत रहने वाला दरिद्र गांव का जो कि वृन्दावन के निकट है कथा सुनकर भगवत् की ओर सावधान हुआ और अपने घरमें का आना जाना त्याग करके भगवत् भजन में रहने लगा उसकी स्त्री ने समझा कि भट्टजी के सत्संग से घरकी चाह वो काम की वासना जाती रही सो अपने पति को वे विश्वास करने के हेतु एक स्त्री गर्भवती जो कि भिक्षा मांगती फिरती थी उसको बुलाया वो बीस रुपैया देने को कहकर यह बात सिखाई कि जिस समय भट्ट जी कथा कहैं उस समय जो मैं सिखाती हूं अच्छे सुकार कर कहि देना अपनी दासी साथ करके गदाधर जीका स्थान उसको बतलाय दिया वह स्त्री लोभमें वह होकर जहां भट्ट जी कथा कहते थे आई और पुकारकर कहा कि तब तो मेरे साथ तुमको वह खेल खेला था कि गर्भ रहिगया अब ऐसी निठुराई है कि खरचा का देना भी बन्द कर दिया भट्ट जीने कथा कहतेही में उत्तर दिया कि ठीक है परन्तु मेरी इस में कौन तकसीर है तुमहीं ने दर्शन नहीं दिया कथा में जितने लोग थे किसी को विश्वास न आया और कहने लगे कि निपट झूठ है बरु यह पापिनी दंड के योग्य है ॥ राधावल्लभ लाल जीके गोसाईं को इस वृत्तान्त का समाचार पहुंचा बहुत दुखित हुए उस स्त्री को बुलाकर बहुत भयभीत दिखा कि सच कहु नहीं तो जीती न छोड़ूंगा उसने जो बात सत्य २ थी सो कहि दी उस कल्याण सिंह ने अपनी स्त्रीके तिरिया चरित्रके समाचार पाये तो तरवार लेकर उसके मारने को उद्यत हुआ भट्ट जीने दया से कहा कि कदापि स्त्रीको कुछ न कहना चाहिये इतनाही दंड बहुत है कि उस का त्याग हो गया ॥ किसी देशका एक महंत कथा में आया वो भट्ट जीने सब से आगे उस को बैठाया उस महंत ने देखा कि सब श्रोता प्रेम में भरे हुए भगवत् चरित्रों को सुनते हैं और प्रेम का जल आंखों से बहता है परन्तु मेरी आंखो से एक बून्द भी जल नहीं निकलता सब लोग मेरी महंतता पर निश्चय करि कै व्यंग करेंगे दूसरे दिन लाल मिरच चादरके कोनेमें बांधकर कथामें जा बैठे और आंखों में मिरच डाल २ कर अच्छा पानी बहाया एक साधु ने इस बात को देखलिया था भट्ट जी से सब वृत्तांत कहि दिया भट्ट जी अपने हृदय की सचाई से यह समझे कि उस महंत ने इस हेतु अपनी आंखों में मिरचडाली हैं कि जिन आंखों से प्रेम का जल न बहै उसमें मिरच अच्छी है सो जब कथा होचुकी भट्टजी बहुत प्रसन्न होकर उस महंत से मिले और यह मिलना उनका उसके हेतु ऐसा रसायन होगया कि थोड़े दिन में दूसरे प्रेमियों से अधिक होगया ॥ एक बेर गदाधरजी के स्थान में चोर आया और बचा-दिक वस्तु की दृढ़ पोटरी बांधी परन्तु भारी के कारण से उठाय न सका भट्टजी आप आये और वह गठरी असबाब की उठवा दी चोरने खेंच

किया कि यह मनुष्य कौन है कि पकड़ता नहीं है गठरी, उठवाय देता है पूछा कि तुम कौन हो भट्टजी ने अपना नाम बतलाया चोर असबाब को छोड़कर चरणों में पड़ा और गिड़गिड़ाने लगा भट्टजीने कहा कि निर्भय होकर लेजाओ वरु और जो चाहिये सो लेलेव और शीघ्र चले जाओ प्रभात होगई चोर ने हाथ जोड़ कर बिनय किया कि अब वह धन निरुपाधि मुझको क्षमा होय कि दोनो लोक की चिन्ता से निश्चिन्त होकर वे परवाह होजाऊं यह कहिकर रोयके फिर चरण पकड़ लिया भट्ट जीने दया करिके उसको मंत्र उपदेश किया और इस चोरी से छुड़ाकर लाखन चोर से हाथ पकड़ा दिया॥ भट्टजी की यह रीति थी कि भगवत् की रसोई की सेवा सब अपने हाथ से किया करते थे वो सेवक वो चाकर बहुत थे परन्तु भगवत् सेवामें किसी को प्रवृत्त होने नहीं देते एक दिन भगवत् रसोई का चौका देते थे कोई साहूकार अथवा राजा दर्शन करने को आया और बहुत द्रव्य भेंट के निमित्त लाया एक सेवक ने भट्ट जी से बिनय किया कि चौका छोड़कर हाथ धोकर शीघ्र गद्दी पर आवें कि बड़ा भारी सेवक आता है भट्टजी उस सेवक से बहुत अप्रसन्न हुए और कहा कि भगवत् सेवामें दूसरा मुख्य काम कौनसा है कि जिसके हेतु सेवा छोड़ी जाय ऐसे चरित्र गदाधर भट्टजीके बहुत और आनन्दके देने वाले हैं॥

रतवन्ती की कथा॥

रतवन्ती बाई परम भक्त वात्सल्य उपासक हुई भगवत् भजन और भोग इत्यादि की सामग्री की तैयारी में सर्वकाल सदा लौलीन रहा करती थी श्री मद्भागवतकी कथा किसी जगह होती थी तो नित्य वहां जाने का नियम था एक दिन भगवत् की रसोई बनाती थी उसको छोड़कर कथा में जाना उचित न समझा क्योंकि सेवा की विशेषता है अपने बेटे को कथा में भेज दिया उस दिन कथा में यह प्रसंग था कि नन्द नन्दन व्रज चन्द्र महाराज माखन को चुराकर अपने मित्रों और बंदरोंको खिला रहे थे और उस खेल और लीला में लगि रहे थे कि यशोदा जी ने यह चरित्र आप अपनी आंख से देखा और उसी दिन कितने उरहने इसी प्रकार के व्रजसुन्दरियों के भी पहुंच चुके थे इस हेतु रानी जीने व्रज भूषण महाराज को ऊखल से बांधि दिया रतवंतीजीके बेटे ने वह सब कथा आय कर कहि दीनी जिस समय उस लड़के के मुखसे यह बात निकली कि रस्सी से बांध दिया तो बिह्वल होगई और यह कहा कि यशोदा बड़ी कठोर है उस सुकुमार कोमल अंग परम सुन्दर को रस्सी की बन्धन कैसे सहि सकी होगी हाय वह मेरा मनोहर बालक तो ऊखल से बंधा हो और मैं सुखसे बैठी रहों यह कहिकर उसी घड़ी अपने प्राण निछावर किये और नित्य परम आनंद को पहुंच कर अपने आंख की पुतली वा

कलेजे के टुकड़े श्यामसुन्दर को अखल से छुड़ाया कि जिसकी माया की फांसी में करोड़ों ब्रह्माण्ड बंधि रहे हैं ॥

जखूधर की कथा ॥

देवदास बंस में जखूधरजी ऐसे भक्त दृढ़ ऊए कि पुत्रवो स्त्री इत्यादि सब भगवत् परायण थे और जिस भाव और भक्ति से भगवत् में प्रेम और स्नेह था उसीभाव से भगवत् भक्तों की सेवा करते थे और रघुनंदन स्वामी के चरित्रों में इतनी प्रीति थी कि चरित्रों को सुनकर भगवत् रूप में बेसुधि हिजाते थे यह चरित्र जो रामायण में लिखा है कि विश्वामित्र ऋषीश्वर आये वो दशरथ महाराज से श्रीरघुनंदन स्वामी और लक्ष्मण सहारजि को मांगा वो भक्तवत्सल महाराज ऋषीश्वर के साथ चलने को तैयार ऊए तो इस चरित्र के वर्णन करते समय उसी समाज के तद्रूप होगये अर्थात् कहने लगे कि महाराज मैं भी साथ चलता हूं भगवत् ने साक्षात् होकर कहा कि तुम यहां रहो हम थोड़े दिन में विश्वामित्र जीका यज्ञ पूरण करके आते हैं सो जखू धर जीने उस रूप माधुरी को सम्मुख देख लिया था कि जिसकी शोभा के एक कण की शोभा में कोटान् कोट ब्रह्मांडों की शोभा होती है तो वियोग कब सहाजाय रहने की अज्ञा सुनतेही अपने प्राण भगवत् शोभा धाम की निछावर करके नित्यपरम आनन्द को प्राप्त ऊए ॥

कृष्ण दास की कथा ॥

कृष्णदास ब्रह्मचारी के चेले सनातन जीके ऊए जब श्री मदनमोहन जी महाराज का मन्दिर तैयार ऊआ और मूर्ति भगवत् की उसमें विराजमान ऊई तो सनातन जीने कृष्णदास जीको भगवत् सेवा में अति योग्य जानकर भगवत् सेवा उनको सौंप दी सो ऐसे भाव वो भक्ति से सेवा पूजा में तत्पर ऊए कि जिसे भगवत् वो गुरु की प्रसन्नता का कारण ऊआ तिसके पीछे कृष्ण दास जीने नारायण भट्ट को भक्त वो प्रेमी जानकर अपना चेला किया एक दिन कृष्णदास जीने भगवत् का शृंगार किया वो भगवत् छबि को देखने लगे भगवत् के रूप में बेसुधि वो मग्न होगये और इतना प्रेम का तरंग वो झोक बढ़ा कि उपाय करने से भी बहुत देरतक अपने वो फिराने की कुछ सुधि न रही जिस स्नेह वो प्रेम से शृंगार करते थे उसका वर्णन कबहो सक्ता है ॥

संपूर्णता इस भाषान्तर और कुछ वृत्तान्त प्रयोजनी का वर्नन ॥

श्रीराधा कांत वृन्दावन विहारी के चरण कमलों को बलिहारी कि मेरे ऐसे अधम वो मतिमन्दों को कृपालुता वो दयालुता करिके अपने चरण के शरणमें राखि के दोनों लोक के दुःखों से एकक्षण में निर्भय वो निश्चिन्त कर देते हैं विचार करना चाहिये कि जिसकी माया अनंत ब्रह्माण्डों को

रचिकर फिर नाशकर देती है जिस को कोई सहस्र शीर्षा वो सहस्रपाद और कोई निराकार निर्गुण निरवयव अर्थात् बिना अंगवाला और कोई विश्वरूप और कोई योगका परिणाम और कोई सब प्रमाणों का प्रमाण और कोई सब तत्वों का परम तत्व और कोई चिन्मात्र वो कोई कालका भी काल और कोई सब कर्मों के फलका परम फल बत लाता है और जिसके चरण कमल ब्रह्मा के भी ब्रह्मा वो देवताओं के देवता हैं जिसकी रूप अनूप शीवजी के मन मानस का हंस वो भक्तों का अधार है मंगल रूप नाम जिसका सब नामियों के नामका देने वाला है वो रूप वेद वो शास्त्रों की सार है जिसकीमहिमा के वर्णन में शेष मौन वो सारदा मूक हैं वेद जिसको नेति नेति कहते हैं वो बुद्धि वो विचार वोअनुमान वो तर्क से बाहर है सो कहां तो वह स्वामी और कहां मैं अपराध वो अधपुंज कि जिसको नर्क भी घृणा करता है सो मेरे ऊपर भी ऐसी करुणा वो कृपा करी कि जिसका लेख नहीं अर्थात् जिस भक्तमाल का सुनना और पढ़ना अगले जन्मों के हजारों पुण्य वो सुतकर्म के फल के उदय से प्राप्त होता है सो भक्त माल ग्रन्थ जो पारसी में है तिसको अनायास पंजाब देश से ले आकर प्राप्त कर दिया वो पारसी भाषा से देवनागरी में भाषान्तर करके हृदय में प्रेरना किया कि उस भाषांतर करने से एक एक अक्षर की चिन्तना वो पद पद का अर्थ समझाना और फिर उसको भाषांतर करना और उसके रसमे आनंद होना नेत्रों से जलका आना रोमांचित होना वो हृदय द्रवी भूत हो जाना वो कबहीं प्रेम के तरंग में करतल हाथ का हाथ रहजाना यह सब सुख सुभ को प्राप्त हुआ और चारों संप्रदाय के उपासना इत्यादि के ग्रंथ जब बहुत संग्रह करते वो पढ़ते समझते तब अभिप्राय वो सारांस वो गुरु परम्परा लिखते सो ऐसे परिश्रम की नदी को उतरने के निमित्त सुभ को यह पारसी आरसी सी ऐसी मिली कि जैसे चींटी को पुल मिलजाय सिवाय इसके यह कृपा की कि दूसरे की सहायता को भी न लेने दिया मेरेही हाथ वो लेखनी से संपूर्णकरा दिया सो ऐसी कृपालुता वो करुणा को विचारकर जो मेरा अल्पभागी मन ऐसे स्वामी के चरण कमलों में न लगै तो उससे अधिक भाग्य हीन वो सठ कौन है और यह चरित्र भगवत् भक्तों के आप श्री कृष्णस्वामी को श्री राधिका महारानी वो अपने भक्ति महारानी के सदृश प्यारे हैं और बिना निज कृपा कटाक्षभय किसी को प्राप्त नहीं होती दोनों लोक का मनोर्थ अर्थात् अर्थ धर्म काम मोक्ष की दाता और श्री कृष्ण स्वामी के स्वरूप को हृदय में दृढ़ प्रकाश कर देनेवाली है इस हेतु इस के संपूर्ण होने से भगवत् की कृपा वो धन्य मानना उचित न था काहे कि न जाने यह आनंद फेर मेरे भाग से मिलै कै न मिलै परन्तु यह दृढ़ विश्वास

है कि जिस कृपा से यह सत्संग प्राप्त हुआ और बहुत काल पर्य्यंत इस में लगे रहे वो मनोर्थ पूर्ण हुआ सो कृपा सदा बनी रहैगी और सर्वदा को सत्संग मेरे भाग में बना रहैगा और एक कारण से विशेष करिके कृपाकी आशा मुझ को है कि स्वामी के मिचों वो संबंधियों के चरित्रों को मन से भाषांतर किया है जो कदाचित् अपने चरित्रों के रचना की मंजूरी न दें तो समर्थ हैं परन्तु यह कदापि नहीं होसकता कि उनके मित्रों के चरित्रों को मंजूरी न मिले इस हेतु दृढ़ विश्वास है कि निश्चय करिके रूप अनूप का दृढ़ चिंतवन और स्मरण भजन का धन मुझ को मिलैगा जो यह संदेह करें कि भाषांतर की बानी गद्य बज वो स्वामी के रीझ के योग्य नहीं है मुझ को कौन आशा कुछ मिलने की है तो यह संदेह योग्य नहीं क्योंकि यह भाषांतर की बानी भदेस वो गद्य बज सुनकर बहुत हंसेंगे वो जब हंसने की चाह होगी तब तब इस को सुनेंगे वो प्रसन्न होकर जो धन मैं चाहता हूं सो निश्चय करिके स्वामी देंगे और भगवत् भक्तों की रीति है कि जिस पद वो रचना में भगवत् वो भक्तों के चरित्र वो नाम हैं उसी को परम मंच वो अच्छा काव्य समझते हैं जो वह कैसेही बुरे वो अवगुन भरे कवि की रची और काव्य गुण से रहित होय इस हेतु साथ बैठनेवाले भगवत् के कि भक्त हैं इस भाषान्तर को कि भगवत् और भक्तों का चरित्र का स्वरूप है अति प्रेम से सुनकर वो प्रसन्न होकर निश्चय हमारी विनय को सहाय वो सिपारस करेंगे वो हमारे मनोकामना को पूर्ण करेंगे अर्थात् भगवत्के रूप अनूप का चिन्तवन वो भजन सुखको मिलैगा सिवाय इसके यह भक्तमाल एक कल्पवृक्ष के स्वरूप है कि भगवत् भक्त तो उसका मूल और चौबीस निष्ठा जो वर्णन हुई सो साखा हैं भगवत् भक्तों की कथा पत्र हैं और नवीन नवीन अर्थ वो भाव सब फल हैं और भगवत् स्वरूप का चिन्तवन भजन का दृढ़ होजाना यह जिससे फले हैं सो जब किसी ने ऐसे कल्पवृक्ष को सेवन किया है तो वह फल सुख को क्यों न मिलैगा और कदाचित् हमारे कोई पाप कर्म ऐसे उदय हो जायें कि इधर तो इस सत्संग से अन्तर पड़ै और उधर भगवत् भजन वो चिन्तवन में मन लगा तो निश्चय करिके यह बात समझी जायगी की यह मेरा तन स्वान वो शूकर वो खर वो सर्प आदि से भी निंदित है क्योंकि क्षुधा पिपासा निद्रा मैथुन इत्यादि सब जीवों को बराबर हैं मनुष्य शरीर की बड़ाई भगवत् भजन से है तो जिस शरीर से भगवत् भजन आराधन नहीं होता वह सब शरीरों से अधम वो अमंगल है जो शिर कि भगवत् वो भगवत् भक्तों के चरणों में नहीं झुकता सो सिर बाजीगरके सूमका अथवा कड़ुई तूंबी और जिसकी जीभसे भगवत् कीर्तन नहीं होता सो दादुर की जीभ और कान से भगवत् चरित्र श्रवण नहीं किया सो सर्प का बिल जानना चाहिये और भगवत् का

दर्शन जिन आंखों से नहीं ऊआ सो आंखें मोर के पर अथवा जंती का सिताबा और हाथ बिना भगवत् पूजन सेवाके अधजली लकड़ी के सदृश हैं और चरण जो भगवत् तीर्थों वो भगवत् स्थान में याचा नहीं करते तो सूखे वृक्ष के सदृश हैं केवल भगवत् भजनहीं से मनुष्य कहा जाता है नहीं तो खाल तो लुहारकी धौकनी से भी निकलती है खासा लेने से मनुष्य नहीं हुआ जन्म लेकर अपनी माता को दुःख दिया और यद्यपि निष्काम भजन को पृथ्वी उत्तम है परन्तु जिन लोगोंने संसारी कामना के हेतु भगवत् की शरण को लिया है उनको मनवांछित संसारी कामना प्राप्त ऊई और होती हैं और अन्त को आवागमन के बन्धन से छूट गये और छूट जाते हैं कि वेद श्रुति और गीता वो भागवत् और सब पुराण यह बात पुकारते हैं और ध्रुव वो सुग्रीव वो विभीषण वो युधिष्ठिर वो उग्रसेन वो सुदामा इत्यादि हजारों भक्तों की साक्षी देते हैं और यह भी शिक्षा सबको करते हैं कि भगवत् से विमुख हो कर किसी ने सुख नहीं पाया न किसी का ऐश्वर्य बनारहा कि जरासन्ध वो वेणु वो दुर्योधन वो रावण वो कंस वो शिशुपाल आदि की कथा साक्षी हैं ॥

: भगवत् भजन की महिमा के वर्णन में- वर्त्तमान लोगों का वृत्तांत वो भगवत् भजन के विरोधी का ॥

कईबार आपुस में अच्छे लोगों के इस बात का वाद विवाद ऊआ कि हस्तिनापुर के बादशाहों पर एक हजार वर्ष के दिनों से बराबर उत्पात और किस कारण से होते हैं इसके उत्तर में किसीने तो व्यभिचार की रीति प्रवर्त्त हो जाने और उस पाप से भांति २ की पीड़ा होनी वर्णन किया किसीने कहा कि परलोक का भय न रहा वो सत धान्य के खाने की रीति उठ गई सब उद्यमी लोगोंने अपने सत्कर्म के धान्य में अधर्म का धान्य थोड़ासा मिलाकर सब को नष्ट कर लिया है किसी ने कारण प्रवर्त्त होने रीति मिथ्या वो धूर्तता वो मद्यपान वो कपट वो द्यूत वो चोरी इत्यादि बुरे कर्मों का वर्णन किया कोई बोला कि यचु ता वो फूट इस देश में इतनी फैल गई कि सहोदर भ्राता आपुस में बुरा चाहते हैं इस हेतु बिराने लोग प्रबल पड़ गये और भांति २ के दुख दिये एक किसीने कहा कि शास्त्रविद्या इस देश में कम हो गई अपने मन वो दूसरी विद्याओं से बज्रत से अज्ञ वो मूर्ख हैं कुलीन लोगों में जो थोड़ी विद्या का प्रकाश है तो केवल संसार के लाभमात्र का है परलोक का निर्मूल चिन्तवन नहीं और दूसरी जाति सब लाभ के हेतु बिराने की विद्या वो बोल पढ़ लिये उसी को पढ़ते हैं स्वप्न में वो भूलकर भी अपनी विद्या की ओर चाह नहीं करते सो जैसी विद्या को पढ़ते हैं वैसाही स्वभाव होजाता है इस हेतु भगवत् के दरबार से भ्रष्ट हो गये और हो जाते हैं और अनेक प्रकार की पीड़ा

है कि जिस कृपा से यह सत्संग प्राप्त हुआ और बहुत काल पर्य्यंत इस में लगे रहे वो मनोर्थ पूर्ण हुआ सो कृपा सदा बनी रहैगी और सर्वदा को सत्संग मेरे भाग में बना रहैगा और एक कारण से विशेष करिके कृपाकी आशा मुझ को है कि स्वामी के मित्रों वो संबंधियों के चरित्रों को मन से भाषांतर किया है जो कदाचित् अपने चरित्रों के रचना की मंजूरी न दें तो समर्थ हैं परन्तु यह कदापि नहीं होसकता कि उनके मित्रों के चरित्रों को मंजूरी न मिले इस हेतु दृढ़ विश्वास है कि निश्चय करिके रूप अनूप का दृढ़ चिंतवन और स्मरण भजन का धन मुझ को मिलैगा जो यह संदेह करें कि भाषांतर की बानी गज बज वो स्वामी के रीझ के योग्य नहीं है मुझ को कौन आशा कुछ मिलने की है तो यह संदेह योग्य नहीं क्योंकि यह भषांतर की बानी भदेस वो गज बज सुनकर बहुत हंसैंगे वो जब हंसने की चाह होंगी तब तब इस को सुनेंगे वो प्रसन्न होकर जो धन मैं चाहता हूं सो निश्चय करिके स्वामी देंगे और भगवत् भक्तों की रीति है कि जिस पद वो रचना में भगवंत् वो भक्तों के चरित्र वो नाम हैं उसी को परम मंच वो अच्छा काव्य समझते हैं जो वह कैसेही बुरे वो अवगुन भरे कवि की रची और काव्य गुण से रहित होय इस हेतु साथ बैठनेवाले भगवत् के प्रिय भक्त हैं इस भाषान्तर को कि भगवत् और भक्तों का चरित्र का स्वरूप है अति प्रेम से सुनकर वो प्रसन्न होकर निश्चय हमारी विनय की सहाय वो सिफारस करैंगे वो हमारे मनोकामना को पूर्ण करदेवैंगे अर्थात् भगवत्के रूप अनूप का चिन्तवन वो भजन सुखको मिलैगा सिवाय इसके यह भक्तमाल एक कल्पवृक्ष के स्वरूप है कि भगवत् भक्त तो उसका मूल और चौबीस निष्ठा जो वर्णन हुई सो साखा हैं भगवत् भक्तों की कथा पत्र हैं और नवीन नवीन अर्थ वो भाव सब फूल हैं और भगवत् स्वरूप का चिन्तवन भजन का दृढ़ होजाना यह जिसमें फल हैं सो जब किसी ने ऐसे कल्पवृक्ष को सेवन किया है तो वह फल सुख को क्यों न मिलैगा और कदाचित् हमारे कोई पाप कर्म ऐसे उदय हो जायें कि इधर तो इस सत्संग से अन्तर पड़ै और उधर भगवत् भजन वो चिन्तवन में मन लगा तो निश्चय करिके यह बात समझी जायगी की यह मेरा तन स्वान वो शूकर वो खर वो सर्प आदि से भी निंदित है क्योंकि क्षुधा पिपासा निद्रा मैथुन इत्यादि सब जीवों को बराबर हैं मनुष्य शरीर की बड़ाई भगवत् भजन से है तो जिस शरीर से भगवत् भजन आराधन नहीं होता वह सब शरीरों से अधम वो अमंगल है जो शिर कि भगवत् वो भगवत् भक्तों के चरणों में नहीं झुकता सो सिर बाजीगरके सूमका अथवा कड़ुई तूंबी और जिसकी जीभसे भगवत् कीर्तन नहीं होता सो दादुर की जीभ और कान से भगवत् चरित्र श्रवण नहीं किया सो सर्प का बिल जानना चाहिये और भगवत् का

दर्शन जिन आंखों से नहीं ऊआ सो आंखें मोर के पर अथवा जंती का सिताबा और हाथ बिना भगवत् पूजन सेवाके अंजली लकड़ी के सदृश हैं और चरण जो भगवत् तीर्थों वो भगवत् स्थान में यात्रा नहीं करते तो सूखे वृक्ष के सदृश हैं केवल भगवत् भजनहीं से मनुष्य कहा जाता है नहीं तो खासा तो लुहारकी धौकनी से भी निकलती है खासा लेने से मनुष्य नहीं हुआ जन्म लेकर अपनी मातां को दुःख दिया और यद्यपि निष्काम भजन को पदवी उत्तम है परन्तु जिन लोगोंने संसारी कामना के हेतु भगवत् को शरण को लिया है उनको मनवांछित संसारी कामना प्राप्त हुई और होती हैं और अन्त को आवागमन के बन्धन से छूट गये और छूट जाते हैं कि वेद श्रुति और गीता वो भागवत् और सब पुराण यह बात पुकारते हैं और ध्रुव वो सुग्रीव वो विभीषण वो युधिष्ठिर वो उग्रसेन वो सुदामा इत्यादि हजारों भक्तों की साक्षी देते हैं और यह भी शिक्षा सबको करते हैं कि भगवत् से विमुख हो कर किसी ने सुख नहीं पाया न किसी का ऐश्वर्य बनारहा कि जरासन्ध वो वेणु वो दुर्योधन वो रावण वो कंस वो शिशुपाल आदि की कथा साक्षी हैं॥

भगवत् भजन की महिमा के वर्णन में- वर्त्तमान लोगों का वृत्तांत वो भगवत् भजन के विरोधी का॥

कईबार आपुस में अच्छे लोगों के इस बात का वाद विवाद हुआ कि हस्तिनापुर के बादशाहों पर एक हजार वर्ष के दिनों से बराबर उत्पात और किस कारण से होते हैं इसके उत्तर में किसीने तो व्यभिचार की रीति प्रवर्त्त हो जाने और उस पाप से भांति २ की पीड़ा होनी वर्णन किया किसीने कहा कि परलोक का भय न रहा वो सत धान्य के खाने की रीति उठ गई सब उद्यमी लोगोंने अपने सत्कर्म के धान्य में अधर्म का धान्य थोड़ासा मिलाकर सब को नष्ट कर लिया है किसी ने कारण प्रवर्त्त होने रीति मिथ्या वो धूर्तता वो मद्यपान वो कपट वो द्यूत वो चोरी इत्यादि बुरे कर्मों का वर्णन किया, कोई बोला कि अचुता वो फूट इस देश में इतनी फैल गई कि सहोदर भ्राता आपुस में बुरा चाहते हैं इस हेतु बिराने लोग प्रबल पड़ गये और भांति २ के दुख दिये एक किसीने कहा कि शास्त्रविद्या इस देश में कम हो गई अपने मन वो दूसरी विद्याओं से बजत से अज्ञ वोमूर्ख हैं कुलीन लोगों में जो थोड़ी विद्या का प्रकाश है तो केवल संसार के लाभमात्र का है परलोक का निर्मूल चिन्तवन नहीं और दूसरी जाति सब लाभ के हेतु बिराने की विद्या वो बोल पढ़ लिये उसी को पढ़ते हैं स्वप्न में वो भूलकर भी अपनी विद्या की ओर चाह नहीं करते सो जैसी विद्या को पढ़ते हैं वैसाही स्वभाव होजाता है इस हेतु भगवत् के दरबार से भ्रष्ट हो गये और हो जाते हैं और अनेक प्रकार की पीड़ा

दूसरों के हाथ से पाई और पाते हैं किसी ने कहा कि राजा लोग अपने धर्म से जाते रहे अर्थात् धर्म शास्त्र के अनुसार राजा ऐसा हो कि बुद्धिमान वो धर्मात्मा विद्यावान पूर्ण पण्डित शास्त्र में सावधान सूक्ष्म का समझने वाला न्याय के समय शत्रु मित्र को बराबर जाननेवाला अठारह अवगुण जो हैं मद्यपान हिंसा विहार स्त्री रत रहना अन्याय दुर्वचन बोलना वाचालता बिन अपराध वध करना प्रजासे शत्रुता खेल कूद इत्यादि इन सब से बचा रहै आठ जगह से चौकस रहै अर्थात् गुरु पुरोहित मंत्री कोट किला खजाना कारबारी सब फौज मित्र इतने को सावधानी से रखनेवाला वो सामदाम भेद दण्ड की रीति का जानने वाला वो उसका आचरण करनेवाला हो वो अपनी प्रजा को दूसरे राजों के हाथ से वो ठग वो उचक्का वो बटपार वो चोर वो फेरहा वो मूर्ख वो मद्यपी वो धूर्त वो जान मारने वाला और दूसरे सब दुष्टों से अच्छे प्रकार की रक्षा में अपने प्राण के सदृश रखकर सब को अपने धर्म में स्थिर वो दृढ़ राखै और कारिंदा लोग और पुंश्चली स्त्रियों से अति अधिक रक्षा प्रजा की करै कि यह दोनों प्रबल प्रेत राजा को झूठ मूठ मीठी मीठी बातें कह कर अपने बसमें करलेते हैं इसी हेतु मंत्री बुद्धि मान वो पर लोक का भय करने वाला वो समझदार वो विद्या वान को रखना शास्त्रोंने लिखा है सो ऐसे राजा अपने प्रजा को रक्षा करके धर्म पर स्थिर रखते थे अबके राजों का वह वृत्तान्त है कि नहीं कहना अच्छा सूक्ष्म कर कहते हैं कि सब विपरीत शास्त्र के आचरण हैं प्रजा की रक्षा वो पालन की जगह अन्याय वो लूट पाट है वो धर्म की जगह अधर्म वो विद्या की जगह मूर्खता है वो चतुराई की जगह अज्ञता वो लाघवता की जगह असावधानता है कारिंदा वो बकशी वो मंत्री आदि ऐसे हैं कि विद्या जानना वो धर्म को प्रवृत्ति वो प्रजा का पालन तो अलग रहा निज आप तीनों बात के नष्ट करने को लगे हैं और शुभ चिंतना वो धर्म निष्ठता का यह वृत्तान्त है कि राजा का राज जाता रहै तो जूती से परंतु किसी प्रकार उनको मुद्रा लाभहोय कोई राजा लोगों के निमित्त यह दृष्टान्त योग्य है कि किसी बनमें जंगली जीवों का बादशाह एक बन्दर था बिल्ली वो मूसा एक रोटी के बांट कराने के हेतु उसके पास गये बादशाह साहिब ने उस रोटी के दो टुकरे कर दिये परंतु एक बड़ा हो गया था उस का भोजन करना प्रारम्भ किया दोनों फिरयादी ने कारन भोजन करने का पूछा तब बादशाह साहिबने आज्ञा किया कि दूसरे के बराबर करता हूं खाते खाते वह छोटा हो गया तो दूसरे का भोजन करना आरम्भ किया और इसी प्रकार बराबर करते वह रोटी समूची चट कर गये भला जब राजों का यह वृत्तान्त है तो प्रजा आदि दरिद्र वो दुखी क्यों न तुरन्त सङ्कट में पड़ें और जब कि

एक गरीब की आह से एक बड़ा देश भस्म होने सकता है तो जिस राज में लाखों गरीबों की आह हो क्यों न जाता रहै वो क्यों न विध्वंस को प्राप्त हो पीछे एक किसी ने कहा कि धर्म के चार चरण थे सत्य १ शौच २ दया ३ दान ४ यही शास्त्रोक्त धर्मों के मूल थे सो कलियुग के प्रभाव करिके उन चारों चरणों में महा विघ्न उत्पन्न ऊआ वो मनुष्य पापी वो अपराधी होगये इस हेतु दूसरे के हाथ से उन पापों का दण्ड ऊआ और होते हैं इसी प्रकार के कारण बहुत लोगों ने अपनी बुद्धि वो समझ के अनुसार कहि सुनायें सब से पीछे एक पुरुष बुद्धि मान वो सर्वज्ञ वो भगवत् भक्त ने कहा कि मुख्य कारण छूट जाने राजों के राज का वो उठ जाने शास्त्रोक्त धर्मों का वो प्रवर्त होने अपने धर्म वो प्राप्त होने अनेक महा उत्पातों का यह है कि भगवत् का भजन वो आराधन न रहा जो वह प्रवर्तमान रहता तो कदापि नहीं किसी प्रकार का विघ्न किसी बात में होना वो न कलियुग का कुछ बल चलता और कारण लुप्त हो जाने भगवत् भजन वो आराधन का यह है कि कोई पन्था तो लोगों ने ऐसी चलाई कि वेद वो शास्त्र से सब बातें विरुद्ध हैं और कोई ऐसी चली कि यद्यपि मूल उनका शास्त्र से मिलता है परंतु प्रवृत्ति में उस के अगिले आचार्य अथवा पिछले आचार्यों से उस पन्थाई की ऐसी भूल वो चूक होगई है कि उनके अनुयाई वो पन्थाई वाले इधर के ऊए न उधर के वो निन्दित धर्म कर्म में रत है और कोई लोगों ने कलियुग वो पाप कर्म के प्रभाव करिके नर्क कुण्ड के भरने के निमित्त शास्त्र का अर्थ विपरीत समझ लिया और एक पन्थाई के बहाने से त्याज्य वो वर्जित वस्तु के खानेपीने वो विषय भोग इन्द्रियों का मजा आनन्द खूब अच्छे प्रकार उड़ाने लगे धन्य यह पन्थाई वो धन्य समझ अधिक सोच इस बात का यह है कि इन लोगों ने शास्त्र का सिद्धान्त वो अर्थ तनक भी नहीं समझा सिवाय इस के हमारे अग्रज लोग आप निर्बल होगये और थोड़े से जो शेष हैं तो उनके आचरन वो वचन के प्रभाव वो अनुसार करिके थोड़ा बहुत परम्परा भजन का प्रवर्तमान है सिवाय इस के एक बड़ा अनर्थ यह उत्पन्न ऊआ कि कोई कोई लोग जोकि आप संसार गर्तगह्वर वो अन्ध वो संकीर्न में बिना हाथ पांव के पड़े हैं परन्तु किसी ऐसे कोई से कि वह भी उसी गर्त में उस से अति अधिक दीन वो दुखी हैं बड़ाई किसी ऐसे बादशाह की कि चौमहले के ऊपर है और चौमंजिले महल के ऊपर चढ़ जाने पर जाने मिले कै न मिले और एक एक महल का चढ़ना हजार जन्म में भी कठिन है वो चढ़ जाने पर भी गिरने का भय अनुक्षण बना रहता है तिस को सुनकर बिना चारों महल पर चढ़े बिना पनारे के सहारे इच्छा मञ्च जाने की रखते हैं आश्चर्य यह कि उस महल पर पहुंचना तो दूर रहा उस गढ़ ही

से भी उनके निकलने का भरोसा नहीं और उस पर भी मजा यह है कि ऐसी मति मन्दता वो मलीन समझ पर दूसरे लोगों को अपना संप्रदाई बना लेने में चूकते नहीं विष्णु पुराण में उन लोगों के निमित्त जो कुछ लिखा है सोठीक है इन लोगों के सिवाय एक और यूथ ऐसाही है कि जिनके कारण से भजन और धर्म की जड़ निर्मूल हो गई और ऐसा प्रवर्तमान है कि जैसा सतयुग में भगवत् भक्तों का यूथ था नाम उन का दुष्ट वो विमुख वो खल है वर्णन वो उनकी बड़ाई की भगवत् भक्तों के चरित्र से दूना तिगुना विस्तार है थोड़े में लिखते हैं॥ उपासना उनकी यह है कि शास्त्र विरुद्ध आचरण करना यही कर्म वो भागवत् धर्म है दूसरों के अवगुन वो दुष्ट कथा और दुष्टों के चरित्र सुनना यह उनकी श्रवण निष्ठा है मिथ्या वो चुगली वो निन्दा वो गाली देने का रात दिन कीर्तन करते हैं जैसे पोशाक और छबि सें हिंदू जनाई पड़ै ऐसी पोशाक वो छबि बनानी यह उनकी भेष निष्ठा है मदिरा बेचने वाले वो जुवा खेलने वाले वो जो बड़े धूर्त वो कपटी वो मिथ्या बोलने में वो निर्लज्जता में अभ्यास रखता हो ऐसे सब उनके गुरू हैं वेश्याओं वो पराई स्त्रियों वो लड़कों का भगवत् मूर्ति से भी अधिक सेवन करते हैं बिना कारण किसी को हानि कर देनी वो क्रीधहिंसा वो कपटमिताई वो लड़ाई वो क्रोध यह उनकी दया है मद्यपान करना वो बर्जित वस्तु का खाना यह उनका चरणामृत वो महाप्रसाद है दिन रात नाचरंग रंग कुत्सित इतिहास पढ़ना खेलकूद लीला तमाशा चकले की सैर गलीन में घूमना और ऐसेही काम में रहना यह उनका सत्संग स्थान है भगवत् भक्तों और साधु संन्यासी आदिकी निंदा की रचना करनी यही उनकी साधु सेवा है सत्यबात को भी मिथ्या समझ लेना और संदेह युक्त रहना वो एक काम वो स्मृति की आज्ञा में मन्मुखी तर्क उत्पन्न करके उस के अनुकूल न आप आचरन करना न दूसरे को आचरन करने देना यह उन का ज्ञान है भगवत् वो भक्तों के चरित्रों सें इतना वैराग्य है कि कबही स्वप्न में भी कर्ण नहीं होता चाह वो खोटा पन वो लालच वो कामोल्लास वो गर्व वो दंभ वो असत्यता से मिताई है और जो उन के अनुकूल काम करै सोई उन का संबंधी और प्रिय है अर्थ के किंकर हैं और जिस से कुछ मिलै तिस के शरणागत मद्यस्थान वो द्यूतस्थान वो बिजयादि का स्थान और वेश्याओं का मकान वो कुसंगियों का स्थान जिन का तीर्थ और धाम है कई बार अथवा बहुत भोजन करना यह उपास है ऊपर लिखि आये सो आचरण वो कर्म को सुनकर वो मन लगा कर विचार करके दिन रात उस में प्रसन्न रहना और दूसरी ओर चाह न होनी यह उन लोगों का दृढ़ प्रेम है परम धाम अर्थात् मुक्ति उन की वह नर्क है कि जिसे न निकलैं और जिनको सुनके हृदय कांपि जाय

ऐसे कठिन वो अपार दुःखों का प्राप्त होना यही उस मुक्ति का सुख है काम क्रोध लोभ मोह मद मत्सर उस के आदि आचार्य हैं अग्रगामी वो प्रकाशक वो प्रवर्तक उस के वे महाराज धर्मवान अथवा आज्ञा चलाने वाले अथवा कुलीन वो पुराने घराने दार अथवा लंपटों वो सोहदों के प्रधान लोग हैं कि जिन को भगवत् भजन में प्रीति नहीं काहे से कि जैसा आचरण उन का दूसरे लोगों ने देखा वैसाही आचरण किया भगवत् ने गीता में कहा है कि यद्यपि मैं शुभ अशुभ कर्मों से बंधमान होने के योग्य नहीं हूं परन्तु लोक संग्रह के निमित्त सब कर्म आप मैं करता हूं जो मैं कर्मों को छोड़ दूंतो दूसरे लोग भी मेरे अनुसार आचरण करैं और सबका नाश हो जावै इससे निश्चय होगया कि उन चारों प्रकार के लोगों से जो ऊपर लिखि आये सब अनर्थों वो अधर्मों की प्रवृत्ति हुई कुछ निन्दा किसी की कोई न समझै केवल स्मृति वो शास्त्र की शिक्षा लिख देने में कुछ अनुचित न समझी एकादशस्कंद की टीका में श्रीधर स्वामी वे क्रम से नीच वो नष्ट लोगों का वर्णन करके समाप्तता राजों के सेवकों पर लिखी और स्मृति का वचन भी उसके अनुसार पाया और एक वचन सारे संसार की कहनावत है कि खेती की वृत्ति उत्तम है वो वनिज मध्यम है और सबसे नष्ट चाकरी की है सो कारण इसके नष्टता का यह है कि सब शास्त्र वो सब संप्रदाय वो मत की राह मनके एकाग्र होने के के निमित्त है कि उसी को निर्मल मान सकें हैं और जब मन निर्मल हुआ तब भगवत् मिलता है और मनके एकाग्र होने के निमित्त दया का होना विशेष से विशेष चाहिये मुख्य साधन है सो इस चाकरी की वृत्ति में दोनों बात नहीं है अर्थात् वे विश्वासता स्वामी से इतनी है कि कदापि मन सुस्थिर नहीं रहताऐसा दूसरी वृत्ति में नहीं है और निर्दय पन इस अधिकाई से है कि भारी पीड़ा वो दुःख को राज सेवक लोग एक बात प्रबन्ध वाली वो रीति वो पद्धति अपने स्वामी की समझते हैं भला जब कि वे मुख्य बातें दोनों जोकि दृढ़ साधन वो विशेष कारण भगवत् के मिलने का इस वृत्ति को प्रभाव करके जाता रहै तो सब वृत्तियों में यह वृत्ति नष्ट वो निकृष्ट क्यों न गिनी जाय और क्यों न शास्त्रों में उसकी निन्दा लिखी जाय अभिप्राय इस लिखने से यह है कि एक तो यह वृत्ति नष्ट तिस पर जो इस वृत्ति वाले भगवत् भजन करैं तो अपनी अन्त दशा पर अच्छे शोच करलें कि क्या होनी है और जो ऐसी निन्दित वृत्ति के प्राप्त रहने पर भी भगवत् भजन करैंगे तो उसका अंत समय का फल भी देखलें कि सबसे उत्तम पदवी उनको क्यों न मिलैगी अभिप्राय कहने का यह है कि जब भगवत् भजन रूप चन्द्रमा को कृष्णपक्ष की चतुर्दशी है तो उस भगवत् भजन में हानि काहे न होय और उस परम धर्मकी परम्परा काहे न भंग

होजाय और दूसरे लोगों के हाथ से भांति २ की पीड़ा काहे न होय सो भगवत् भजन सार वो तात्पर्य सब शास्त्रों का है जिस प्रकारें हो सकै भजन में मन लगाना उचित है और जाने रहो कि ब्रह्मा जोकि सबसे बड़ा है सोभी बिना भगवत् भजन इस संसार समुद्र से नहीं उतर सक्ता है॥

दृष्टान्त वो स्वरूप मुक्ति का॥

जगह २ इस ग्रन्थ में हुआ कि भगवत् आराधन वो सब मतों का फल मुक्ति है उसीके निमित्तसब परिश्रम करते हैं सो वर्णन करना चाहिए कि मुक्ति किसको कहते हैं और वह कौन वस्तु है सो जाने रहो कि जैसा ज्ञान शब्द के वर्णन में हर एक मत वो शास्त्र के न्यारे २ अर्थ वो सिद्धांत हैं इसी प्रकार मुक्ति के निर्णय है कथन का भेद है नहीं तो अभिप्राय सब का एकसी निकल आता है अर्थात् किसीसे संसारके आवागमन से छूटने को मुक्ति का स्वरूप वर्णन किया और किसी ने कहा कि सब दुख दूर होकर नित्य सुख होने को मुक्ति कहते हैं॥ और किसीने माया के गुणों से अलग होनेको और किसी ने सुख दुख दोनों के न रहने को और किसीने परतंत्रता से छूट कर स्वतंत्र हो जाने को और किसीने शरीर वो मन दोनों का न रहना॥ और किसी ने सब तत्त्व वो पंच महा भूतको ईश्वर में मिल जाने को॥ और किसी ने माया का नाश होजाना मुक्ति का रूप बतलाया परंतु मुख्य बात जो शास्त्रों के सिद्धांतके अनुसार मालूम हुई सो यह है कि ब्रह्म स्वरूप होजाने का नाम मुक्ति है यद्यपि शाब्दिक अर्थ मुक्ति शब्दका छूटने का है परन्तु जब तक ब्रह्मस्वरूप न होगा तब तक कब छूट सकता है इस हेतु ब्रह्मस्वरूप होना सिद्धांत वो सार ठहरा वो ब्रह्मस्वरूप सो होता है जो भगवत् कृपा से माया की फांसी से छूट जाता है अब यह बात उत्पन्न हुआ कि शास्त्रों में मुक्ति के चार नाम लिखे हैं और ऊपर की लिखावट से केवल एक मुक्ति अर्थात् ब्रह्मस्वरूप होजाना जानने में आता है तो विरुद्ध की बात क्या है सो जानेरहो कि वास्तव में तो मुक्ति केवल ब्रह्मस्वरूप होने का नाम है परन्तु शास्त्रों ने जो चार नाम से बिख्यात किया है तो कारण यह है कि भगवत् को सब दशा में अपने भक्त के मनकी चाह पूरण करनी अंगीकार रहती है और वे भक्त वहां भी उसी अपने भावकी चाह करते हैं कि जिस भाव वो सौकर्य के प्रभाव से ब्रह्म स्वरूप होने की पदवी उनको प्राप्त हुई इस हेतु उस एक मुक्ति अर्थात् ब्रह्म स्वरूप होने के चार प्रकार शास्त्रों ने लिखे हैं॥ प्रथम सार्टि अर्थात् परमात्मा के समान ऐश्वर्य का होना॥ दूसरी सालोक्य अर्थात् उस परमात्मा के लोक में रहना॥ तीसरी सारूप्य अर्थात् परमात्मा के स्वरूप ऐसास्वरूप धारण करके वहां रहना॥ चौथी सामीप्य अर्थात् भगवत् के समीप रहना॥ सायुज्य पांचई है अर्थात् भगवत् में मिल जाना उसका नाम भी सार्टि

को कहते हैं कि इसमें किसी का तो यह निश्चय है कि भगवत् में एक
हो जाना और फिर खोज उस जीव का उस लोक में न रहना उसका
नाम सायुज्य है और किसी का यह बचन है कि यद्यपि भगवत् में जीव
मिल जाता है परंतु उस जीव को भगवत् में अपने मिल जाने का ज्ञान
बना रहता है जिस प्रकार कोई पुरुष नदी में डुबकी लगाता है यद्यपि
किसी को नदी से भिन्न वह दृष्टि में नहीं आता परंतु उस डुबकी लेने वाले
को अपने डुबकी लेने का दृष्टांत स्मरण रहता है और किसी का सिद्धांत
सायुज्य शब्द से सहयोगका है अर्थात् भगवत् अंगसे अंगका संलग्न होना॥
सो जिस समय उपासक की उपासना परि पक्वता को पहुंचती है उस
समय जीवन मुक्त कहलाता है और परम धाम जाने की इच्छा हुई तब
इस देह को छोड़ कर लिंगशरीर को धारण करता है फिर भगवत् पार्षदों
के साथ उसराह से कि कुशीत की उपनिषद वो आठवीं अध्याय गीताजी
में अग्नि यों सूर्य और शुक्लपक्ष और छः महीने उत्तरायण के देवताओं का
दृष्टांत लिखा है याचा करके जो माया के गुण जैसे पृथ्वी जल अग्नि पवन
आकाश वो अहंकार जो यह छः नित्य हैं उनको एक २ के आवरन में छोड़ता
हुआ अर्थात् पृथ्वी की आवरण जब भेद न कर चुका तो पृथ्वी के सब तत्त्व
को वहीं छोड़ दिया जल के आवरण में जामिला इसी प्रकार दूसरे
आवरनों का भेदन करता हुआ इन्द्र वो ध्रुव वो ब्रह्मा इत्यादि देवता वो
ऋषीश्वरों से पूजा आदर सत्कार ग्रहण करता हुआ इस ब्रह्मांडसे बाहर
होता है जाने रहो कि पृथ्वीकी रज और जलकी सीकर जो गिन जांय
तो गिनजांय परन्तु ब्रह्मांडों की गणना नहीं हो सकती सो सब आवरनों
के भेद न करके पीछे विरजानदी पर कि वह प्रभाव वो प्रकाश परमब्रह्म
परम सच्चिदानंद का है पहुंचता है और उस में स्नान करके लिंग शरीर
को छोड़ देता है और दिव्यशरीर निर्विकार प्रकाशवान् ज्ञानानंद
स्वरूप को धारण करके माया के जो गुण हैं उनसे अलग वो निर्लिप्त
होता है और फिर उन गुणों से संबंध नहीं रहता वहां से आगे जो
दूसरे स्थान सब नित्य मुक्त इत्यादि भगवत् भक्तों वो पार्षदों के
हैं उन के और वहां के रहने वालों के दर्शन करता हुआ और उनसे
पूजा वो सत्कार को प्राप्त होता हुआ अपने स्वामी के निज विलास स्थान
के द्वारपर पहुंचता है कि किसी के सिद्धांत में वह बैकुंठ है और किसी
के गोलोक और किसी के अयोध्या तब पार्षद लोग वो द्वारपालक सब
दंडवत वो महा सत्कार कराने पीछे भीतर लेजाते हैं वहां की झलक वो
तड़प वो प्रभाव वो प्रकाश परम ब्रह्म परमात्मा का कि उसी से सब स्थान
वो वाटिका फुलवाड़ी वो जलजंच वो जलप्रनाली वो कूप वो मार्ग इत्यादि
जो कुछ मन वो विचार के बुद्धिको देखने में आवें तैयार हैं सुख दर्शन

करता हुआ अपने स्वामी के पास पहुंचता है और वहां भगवत् परब्रह्म परमात्मा सच्चिदानंद घनस्वामी और उनकी परम प्रिया वो उनके निकट निवासी की ओर से सब रीतिप्यार वो दुलार वो प्रेम कृपा वो दया कि इस पहुंचने वाले पर होती है बोलबतराव होने पीछे उस समय यह कहता है कि मैं नित्य निर्विकार ज्ञानानंद स्वरूप प्रकाशवान् ब्रह्म हूं अब तक माया के जालमें फंसा था अब आपकी कृपा से छूटा अपने स्वरूप को प्राप्त हुआ पीछे उसके चाहे भगवत् स्वरूप में मिल जाय अथवा वही अधिकार वो सेवा उसको मिलती है कि जिस ओर चाह उसकी है और परम आनंद में निश्चल वो मग्न होकर उस परमपद में वास करता है यद्यपि आप इतना बल वो सामर्थ्य रखता है कि कोटान कोट ब्रह्मांडों को उत्पन्न करके पालन और नाश करदेवै परन्तु उस ब्रह्मानंद के स्वाद में ऐसा मग्न रहता है कि दूसरी ओर चाह नहीं होती जो कुछ वेद वो शास्त्र और संप्रदावालों के सिद्धांत के अनुसार समझ में आया लिखा गया और कोई कोई बात का विशेष वर्णन वो निर्णय इस हेतु न किया कि किसी एक संप्रदा के संबंध में वह हो जायगा और चाहना यह थी कि सब संप्रदा वाले अपने निश्चय के अनुकूल अपना अर्थ सिद्ध कर लेवैं सो ऐसे ही अक्षरों से वहां लिखा गया ॥

इस बातका वर्णन कि निर्गुण पंथ और भक्ति मार्ग में विशेषता किसको है ॥

अब एक यह संदेह हुआ कि बहुत से लोग भक्ति मार्ग पर ज्ञान मार्ग की बड़ाई वर्णन के श्रुति वो शास्त्रों के बचन को प्रमाण देकर मुक्ति का होना निर्गुण ब्रह्म के ज्ञान होने पर वर्णन करते हैं और इस भक्त माल में आदि से अन्त पर्यंत बड़ाई और महिमा भगवत् भक्ति और सगुण ब्रह्म की वर्णन होकर उसीके प्रभाव करके उद्धार का होना वर्णन हुआ सो इन दोनों मार्गों में वास्तव कर के बड़ाई किस मार्ग को है और किस से मुक्ति मिलती है सो उत्तर पीछे लिखेंगे यह बात चाहे रहो कि वास्तव करिके मुख्य अर्थ ज्ञान शब्द का ईश्वर माया जीव के स्वरूप जानने के हैं और निर्गुण ब्रह्म का अर्थ यह है कि माया के गुणों से वह परमात्मा अलग निर्लेप है परन्तु कोई २ लोग ज्ञान शब्द का तात्पर्य जीव वो ईश्वर के एक होने से समझते हैं और ईश्वर को अव्यक्त मानते हैं स्वरूपमान नहीं मानते और उसको निर्गुण ब्रह्म बिख्यात करते हैं सो इस वादानुवाद में उन निर्गुण मतवालों के निश्चय के अनुसार दोनों पद के अर्थात् ज्ञान पद वो निर्गुण पद के अर्थ को समझना चाहिये और सगुण पद का तात्पर्य उपासकों वो भक्तों के इष्टदेव से और मुख्य अर्थ सगुण स्वरूप का आगे लिखेंगे वो जो संदेह ऊपर लिखि आये तिसका उत्तर पहिलेही श्रीकृष्ण स्वामीने अर्जुन से गीता में वर्णन किया है अर्थात् अर्जुनने

भगवत् से पूछा कि दोनों मार्गों में से कौनसा मार्ग उद्धार के निमित्त विशेषतर है भगवत्ने आज्ञा की कि जो मेरे में मन लगा कर विश्वास से मेरी उपासना अर्थात् मेरी भक्ति करते हैं सो योग्य तम अर्थात् बहुत अच्छे हैं और जो निर्गुण अर्थात् अरूप वो अव्यक्त जान कर उपासना करते हैं यद्यपि वेभी मुझको प्राप्त होंगे परन्तु क्लेश बहुत अधिक उसमें है काहे कि अव्यक्त अर्थात् अरूप की उपासना और प्राप्ति में दुख वो परिश्रम बहुत है फिर ब्रह्म स्तुति में ब्रह्माजी का वचन है कि हे महाराज जो कोई अपने आपको मुक्त होने का गर्वमान कर आपकी भक्ति नहीं करते और शुष्क-वाद विवाद में बड़े बुद्धिमान हैं जोवे बड़े कष्ट से किसी उत्तम पद को पहुंच भी जावें तो फिर गिर पड़ते हैं किस हेतु कि आपके चरण कमल से विमुख हैं और जिन लोगों ने आप के चरण कमलों में मन लगाया है सो लोग बड़े २ देवतों के ऊपर होकर वहां पहुंचते हैं कि जहां से फिर नहीं फिरते तीसरे स्कंद में कपिल देवजीने अपनी माता को उपदेश किया कि भगवत् भक्ति सिद्ध है अर्थात् निर्गुण ज्ञान से अधिक है जो निष्काम हो फिर कैसे हो कि इन्द्रियां वो उनके देवता वो मन सब भगवत् में लगजावें पद्म पुराण में लिखा है कि ज्ञान और योग इत्यादि से क्या है केवल भगवत् भक्तिही मुक्ति की देनेवाली है भागवत का बचन है कि हे महाराज जो तुम्हारी भक्ति को छोड़कर केवल निर्गुण ज्ञान के लाभ के हेतु क्लेश वो दुख उठाते हैं उनको केवल दुखही हाथ रहता है जिस प्रकार भूसे के कूटने वालों को कि सिवाय दुख के दूसरा कुछ हाथ नहीं लगता और जिन लोगों ने अपने सब कर्मों को आपके समर्पण किये हैं और तुम्हारे चरित्र सुनते हैं वे तुम्हारी भक्तिको पाकर मुक्त होजाते हैं यद्यपि इन वचनों से ज्ञानमार्ग पर भक्ति मार्गको बड़ाई वो विशेषता स्थिर वो सिद्ध होगया परन्तु मनको यह उमंग हुई कि थोड़ा और भी वृत्तान्त लिखाजाय सो कुछ लिखताहूं और सब पुराणों में श्रीमद्भागवत को प्राधान्यता है इस हेतु प्रमाण के निमित्त कुछ बचन भागवत के लिखे जावेंगे दूसरे पुराणों के बचन लिखने का कुछ प्रयोजन नहीं समझा और जाने रहो कि चारों वेद का सार उपनिषद और सब उपनिषदों का सार गीता उपनिषद है और निर्गुण वो सगुण मत के सब उपासकों ने उस गीता के बचन को प्रमाण दृढ़ करके अंगीकार किया है इस हेतु कि जैसा वेद भगवत् के मुख से उत्पन्न हुआ ऐसीही यह गीता है सो उस के मुख्य सिद्धांत के कोई २ बचनों को तरजुमा करके लिखूंगा भागवत में भगवत् का बचन है कि भक्ति योग जो विख्यात है और मैने वर्णन किया है उसके प्रभाव करके तीनों गुण से अर्थात् माया से छूट कर जीव मेरे भाव को प्राप्त होता है॥ बचन दूसरा मेरे भक्त सारूप्य इत्यादि मुक्ति को मेरे देने पर भी नहीं

लेते केवल मेरी भक्ति चाहते हैं ॥ बचन तीसरा मेरे भक्त स्वर्ग और धरती पर के सब सुख कदापि नहीं चाहतेहैं परन्तुमेरी भक्ति चाहतेहैं ॥ बचन चौथा मेरे भक्त कैवल्य मुक्तिको भीनहीं चाहतेयद्यपि मैं देताहूं ॥ बचन पांचवां दूसरे बचन के अनुसार कुछ थोड़ा न्यून विशेष है हे अर्जुन मेरे ही में मन लगावै और मेराही भक्त हो और मेरेही निमित्त यज्ञ करै अर्थात् जप कर और सुभी को दण्डवत् करकि मुझही को प्राप्त होगा यह सत्य कहता हूं इस अध्याय से बहुत अच्छे प्रकार निश्चय हो गया कि ज्ञान वो विज्ञान केवल भक्ति हैं दसवीं अध्याय में भगवत् ने अपनी विभूति स्वरूप का वर्णन करके ग्यारहवीं अध्याय में अपना स्वरूप अर्जुन को दिखाया और कहा कि न मैं वेदों से न तप से न दानसे न यज्ञ से देखने में आता हूं कि जैसा हे अर्जुन तूने देखा और यह भी कहा कि अनन्य भक्ति से मिलता हूं जैसा मैं हूं इस अध्याय से भी यही सिद्धांत ठहरा कि भगवत् केवल भक्ति से जाना जाताहै बारहवीं अध्याय में संपर्ण भक्ति का वर्णन हुआ दूसरी चर्चा कुछ नहीं और निज अभिप्राय उस का इस विवादके आरंभमें वर्णनकर चुकाहूं तेरहवीं अध्याय में यद्यपि भगवत् भक्तिका वर्णन एक जगह हो चुका है परंतु वह अध्याय प्रारंभ से समाप्त पर्यंत ईश्वर माया जीव और दूसरे तत्त्वों को वर्णन करती है चौदहवीं अध्याय में भगवत् ने माया के तीनों गुणों को वर्णन करके अंत में कहा कि जो मुझ को दृढ़ भक्ति से सेवन करते हैं सो उन तीनों गुणों से छूट कर ब्रह्मस्वरूप होने के योग्य होते हैं पंद्रहवीं अध्याय में भगवत्ने अर्जुन को शरणागती मंत्र उपदेश किया और जीव तटस्थ से अपने आप को अलग पुरुषोत्तम नाम से वर्णन करके कहा कि जो मुझ को पुरुषोत्तम जानता है सो सब प्रकारसे मेरा भजन करता है यह अति गुप्त बात तुझ से मैंने कही हे अर्जुन जिस को ज्ञान कर कृत कृत्य हो जावै भगवत् के इस वचन परअच्छे प्रकार विचार करना चाहिये कि निर्गुण मार्ग कब सिद्धांत रहा अर्थात् भगवत्ने जीव को पुरुषोत्तम से अलग वर्णन किया और कृत कृत्य होने का निश्चय पुरुषोत्तम के जानने पर समाप्त किया तो बिना परिश्रम और बिना संदेह प्रगट वो दृढ़ होगया कि ईश्वर सगुण स्वरूप है और भक्ति से जाना जाता है सोरहवीं अध्याय में विमुख वो असुर भावका वर्णन है सत्रहवीं अठारहवीं अध्यायमें सब प्रकारके कर्म धर्म वर्णन करके अंतमें भगवत् ने कहा कि जिस प्रकार ब्रह्म को प्राप्त होता है सो ज्ञान निष्ठा संक्षेप करके कहता हूं बुद्धि से मनको एकाग्र करके और इन्द्रियों के स्वाद वो द्वैत अर्थात् दुख सुख चिंता शोक इत्यादि को त्याग करके एकांत में बचन छठवां भगवत् ने गोपियों से कहा कि अच्छा हुवा तुम्हारी प्रीति मेरे में हुई काहे से कि मेरी भक्ति निश्चय करिके

मुक्ति को देने वाली है ॥ बचन सातवां वेद करके क्या है और बड़े शास्त्रों से क्या है और तीर्थ सेवन से क्या है मेरी भक्ति ही अर्थ धर्म काममोक्ष को देनेवाली है ॥ आठवां बचन ॥ शुभ कर्म वो योग इत्यादि सब का यह फल है कि भगवत् में भक्ति हो और वह भक्ति मुक्ति इत्यादि सब पदार्थों को देती है ॥ गीता जीके प्रथम अध्याय में गीता शास्त्र के वर्णन का कारण लिखा है दूसरे अध्याय में जीव का स्वरूप और सांख्य योग का वर्णन है ॥ तीसरे अध्याय में कर्म योग कहा है ॥ चौथे अध्याय में ब्रह्म यज्ञ का कथन है ॥ पांचवें अध्याय में संन्यास योग कहा है छठें अध्याय में मन और इन्द्रियों और आत्मा को स्थिर करने का योग है योगके वर्णन करने के पीछे छठवें अध्याय के अंत में भगवत् ने कहा है कि जिस किसी का मन मेरे में लगा है और सच्चे मन से मेरा भजन करता है सो सब योगियों में युक्त तम अर्थात् सब से उत्तम है इस बचन से दृढ़ निश्चय हो गया कि छहों अध्याय में जो सब मार्ग लिखे हैं तिन सब पर भगवत् भक्तिही की बड़ाई है सातवें अध्याय में लिखा है कि बहुत जन्मों के पश्चात ज्ञानवान होकर तब मेरी शरण होता है इस बचन से यह बात स्थिर हुई कि ज्ञान एक अंग भक्ति का है फिर उसी अध्याय में लिखा है कि मुक्ति के निमित्त जो मेरे शरण होकर सेवन करतेहैं सोई ब्रह्म और सोई उसके जानने वाले और सोई अध्यात्मज्ञानी और सोई सब कर्मोंके जानने वालेहैं फिर लिखा है कि जो कोई मुझको अनन्य जानकर मेरा भजन करते हैं उन योगियों को बहुत सहज से मिलता हूं आठवें अध्याय में भगवत् का बचन है कि वह परम पुरुष अर्थात् भगवत् अनन्य भक्ति से जाना जाता है नवें अध्याय के आरंभ में भगवत् का बचन है कि ज्ञान वो विज्ञान सब तुझसे कहताहूं और उस सब अध्याय में अपना स्वरूप ईश्वरता का वर्णन करके मिलना अपना अपनी भक्ति से वर्णन किया और उपाय अपने मिलने का वर्णन करके अंतमें लिखा कि मेरे शरण होने से स्त्री शूद्र वैश्यइत्यादि भी तर जाते हैं ब्राह्मणों को तो कुछ कहनाही नहीं इस हेतु बैठ कर गर्व वो चाहना आदि से छूटा हुआ ब्रह्म होने के योग्य होता है तिसके पश्चात् ब्रह्म में एकाग्र होकर न शोच है न कुछ चाहना है और सब जीवमात्र को बराबर देखता है सो मेरी पराभक्ति को पहुंचता है भक्तिही से जाना जाताहूं वास्तव में जैसा हूं उसी भक्ति से मुझको जान कर वह भक्त मेरेमें वास करताहै अर्थात् मुझको प्राप्त होता है पीछे उसके सब से अंतमें कहा कि अतिगुह्य तम परम बचन फिरतू सुन क्योंकि तू मेरा मित्रहै और मेरे में तेरी मति दृढ़ है इस हेतु तेरे कल्याण होनेके निमित्त वह सिद्धांत कहता हूं कि मेरेही में मन लगाव मेराही भक्त हो मेराही यज्ञ अर्थात् जपकर और मुझही को दण्डवत् कर मुझी को प्राप्त होगा सब कहता हूं कि तू मेरा

प्यारा है सब धर्मों को छोड़ कर एक मेरे शरण होने से मैं तुझ को सब पापों से छुड़ा दूंगा शोच मत कर इस उपदेश करने पर पीछे भगवत् ने कुछ उपदेश नहीं किया इस अध्याय से भगवत् भक्ति ही मूलसार वो सिद्धान्त ठहर गई और यह श्लोक कि मेरेमें मन लगाव और मेरा भक्त हो जो भगवत् ने दो जगह अर्थात् पहिले नवें अध्याय में दुहंराय के अठारहें अध्याय के अंत में कहा तो इसके दो हेतु हैं एक यह कि जो बात आवश्यक वो विशेष जताने के योग्य होती है तिसको बारबार कहने में आता है सो दोबार कहने से भगवत् अपनी प्रेरणा भक्ति के निमित्त दृढ़ वो प्रगट जनाते हैं॥ दूसरे यह कि भगवत् को ज्ञान और विज्ञान नवें अध्याय में कहने की इच्छा थी सो भगवत् भक्ति से अधिक ज्ञान और विज्ञान और कुछ नहीं इस हेतु एक बेर तो वहां इस श्लोक को कहा और अठारहवें अध्याय में भगवत् को सार वो सिद्धांत संपूर्ण गीता के कहने की इच्छा हुई सो जब कि भगवत् भक्ति सब शास्त्र और वेदं वो उपनिषद् इत्यादि का सिद्धांत और निज अभिप्राय है इस हेतु वहां भी वही श्लोक जो ज्ञान विज्ञान के स्थिति के निमित्त नवें अध्याय में कहा था वर्णन किया और इस वर्णन से इस बातको दृढ़ वो स्थिर किया कि ज्ञान और विज्ञानभी भगवत् भक्ति है और सार वो सिद्धांतभी भगवत् भक्ति ही है तात्पर्य कहने का यही कि संपूर्ण गीता शास्त्र का अभिप्राय आदि से अंत पर्यंत यह है कि भगवत् भक्ति सार है तो जबकि भगवत् के वचनों से सिद्धांत सब शास्त्रों का भगवत् भक्ति दृढ़ हुई और दूसरे पुराण भी भगवत् भक्ति ही को सब मार्ग और धर्म कर्म का फल वर्णन करते हैं और भगवत् का मिलना भी कि उसका नाम मुक्ति है केवल भक्ति से बहुत शीघ्र होती हो तो भक्ति से अधिक दूसरे किस मार्ग को अच्छा समझा जाय और दूसरी कौन सी बात ऐसी है कि जिसको बड़ाई दीजाय भक्ति ही भगवत् के मिलने के निमित्त मालिक वो स्वतंत्र वो सार वो सिद्धांत सब वेद वो शास्त्रों को है बिना भक्ति किसी प्रकार भगवत् किसी को न पहिले मिला न अब मिलेगा ज्ञान शब्द का अर्थ पहिले ही लिखि आये कि जीव माया ईश्वर के जानने को कहते हैं जो निर्गुण उपासकों का यह हठ और निश्चय कि यह शब्द एक तत्व को कहता है तो इस में भी भक्ति ही की सहायता है क्योंकि जबतक ईश्वर के एक और सबसे निर्लेप होने का ज्ञान होगा तब तक मुक्ति कब हो सकती है सो अनन्य भक्ति का कई जगह वर्णन हुवा है उपासक तत्वं मसि और सोहं इत्यादि महावाक्य को मूल कारण अपने मत का समझते हैं और उन महावाक्यों के अर्थ सगुण उपासना को प्रगट करते हैं कि सो पदसे अहं पद आप भिन्नता का अर्थ सूचित करता है वो इसी प्रकार त्वंपद तत्व पदसे भिन्न सूचित होता है और जो यह सब महावाक्य और ज्ञान शब्द भी जीव ईश्वर के एक होने को निर्गुण

उपासकों के कथन के अनुसार समझा जावै तब भी सिद्धांत सगुण उपासकों का विशेषता है क्योंकि कोई उपासको ने जीव ईश्वर का एक हो जाना अंगीकार किया है और सायुज्य मुक्ति उनका मुख्य निश्चय है अब यह विवाद उत्पन्न हुआ कि वेदांत शास्त्र वेदका अंग है और उस शास्त्रके बड़े २ विस्तार ग्रन्थ देखने में आते हैं उसमें निर्गुण उपासकों का सिद्धांत लिखा है उसका क्या वृत्तांत है सो जाने रहो कि वेदांत वेद के अंत भाग अर्थात् उपनिषद को कहते हैं और जो उपनिषदों में वर्णन हुआ सोई गीताजी और शरीरक सूत्र में लिखा है तो मुख्य वेदांत शास्त्र यह तीनो हैं कि बड़े २ ग्रन्थ ऊपर कहे सोहैं निर्गुण उपासकों ने उनका तिलक आप बनाया और उसके सहाय के निमित्त विस्तार करके ग्रन्थ अलग बनाये उसका नाम वेदांत रखलिया नहीं तो वास्तव करिके उपनिषद और गीता और सूत्रों का सिद्धांत वो सम्मत भगवत् भक्ति है और भगवत् भक्ति के संम्बन्ध के जो तिलक वो भाष्य वो ग्रंथ हैं सो मुख्य वेदांत है और भगवत् उपासकों में प्रवर्त वो विख्यात है इस कहने का तात्पर्य यह कि कुतर्क रहित निर्विवाद भगवत् भक्ति ही सर्व मार्गों का सिरताज वो शिरोमणि है यह सिद्धांत सब शास्त्रों का देख रहित लिखा गया भला इस को रहने दीजिये जो निर्गुण उपासकोंई के बचनों का सिद्धांत माना जाय तब भी भक्तिही को बड़ाई प्राप्त होती है क्योंकि उनका वचन है कि वही निर्गुण ब्रह्म सगुण स्वरूप हो जाता है अब इसमें यह पूछते हैं कि वह सगुण स्वरूप जो निर्गुण ब्रह्म ने प्रगट कर लिया ईश्वर है कि आवागवन के परंपरा में पड़ा है जो जन्म लेना वो मरना उसको है तो ईश्वर कहना न चाहिये और जो ईश्वर है तो उसके सेवन से मुक्ति क्यों न होगी सिवाय इस वाद के और एक यह बात है कि निर्गुण मार्गके अनुसार वेद श्रुति ने कहा है कि निर्गुण परमात्मा अपने भक्तों पर कृपा करके सगुण रूप हो जाता है इसमें यह पूछते हैं कि जो उस सगुण रूपकी भक्ति वो सेवन मुक्ति न हुई तो उस निर्गुण ब्रह्मने कृपा क्याकरी वरु वह कृपा एक प्राण पीड़ा हो गई क्योंकि हजारों जन्मोंतक एक जीव बेचारे ने परिश्रम किया और अंतकाल वह ईश्वर मुख्यकार्य के सिद्ध करने में असमर्थ निकला तो वह निर्गुण ब्रह्म एक धोखेबाज वो कपटी हुआ कि लोगों को एक हरा बगीचा बातों का दिखलाता है और उसी श्रुतीके अनुसार दूसरा प्रश्न यह है कि जो वेद श्रुती सिद्धांत वो ठीक है और यह भी बात उनकी सच हैं कि निर्गुण मार्गसेही मुक्ति होती है तो इस भगवत् वाक्य का क्या अर्थ करा जायगा॥ हे अर्जुन मेरे जन्म वो कर्म जो कोई जानता है अर्थात् मेरे चरित्रों में मन लगाता है सो शरीर को छोड़ कर फिर जन्म नहीं लेता और मुझको प्राप्त होता है अभिप्राय इस के लिखने का यह है कि मुक्ति

है जो भगवत् भक्ति से जो मानि लिया है तो इस सिद्धान्त में विरुद्ध पड़ता है कि बिना निर्गुण मार्ग के भक्ति नहीं और जो यह सिद्धांत ठीक है तो उस श्रुती और भगवत् के वचन का उत्तर देना उचित है कि सच है कि झठ इसके सिवाय सिद्धांत की बात है कि जो जिस किसी का ध्यान करता है सो वही रूप हो जाता है तो इस सिद्धान्त के अनुसार जिस किसी ने भगवत् को पूर्णब्रह्म परमात्मा सच्चिदानन्दघन व्यापक माया धीश अनन्त ब्रह्मांडों का नायक जानकर उसके रूप अनूप का चिन्तवन किया सो कहां जायगा जो यह कहोगे कि अपने स्वामी का रूप हो जायगा तो यह भी कहना उचित है कि उसके स्वामी में वे गुण कि जैसा जान कर उसने चिन्तवन किया है कि नहीं जो हैं तो सब प्रकार से वह चिंतवन करने वाला मुक्त हो गया कि सिद्धांत यही है और जो वे गुण नहीं तो वैसा गुण वाला दूसरे किसी को निश्चय कर देना चाहिये नहीं तो सिद्धांत में बड़ा विरुद्ध पड़ैगा यद्यपि इन बातों को निर्गुण मतवाले मानि के यह बात बनावते हैं कि निश्चय करिके जो भक्ति करिके अपने स्वामी को पहुंच गया है उस को आवा गवन नहीं होगा परन्तु वास्तव मुक्ति अर्थात् निर्गुण ब्रह्म की प्राप्ति तबहीं होगी कि जब अपने स्वामी के साथ अंतरध्यान होकर निर्गुण ब्रह्म में मिल जावैगा अभिप्राय उनका यह है कि निर्गुण ब्रह्मके मिलने का भक्ति एक साधन है सो इसका उत्तर तो हम ऐसी मोटी बुद्धि वालों का तो यह है कि हम को आंमखाना कि पेड़ गिनना तात्पर्य हमारा आवा गमन से छूटने का था सो तुम्हारी कृपा से आप प्राप्त हो गया अब अधिक बाद बिबाद को क्या प्रयोजन है और किस हेतु सिवाय अपने स्वामी के दूसरे किसी को ईश्वर अंगीकार करैं परन्तु जो कोई निज निचोवा के दृष्टांत और वेद शास्त्रों के सिद्धान्त तो जानते हैं वे निर्गुण मत वालों की बातों को बिना जड़ मूल का कहिकर उत्तर देते हैं कि वह वचन उनका तब निश्चय करने के योग्य होता कि जो सगुण ब्रह्म एक अंग निर्गुण ब्रह्म का होता और जब कि निर्गुण ब्रह्म एक अंग सगुण ब्रह्म का है तो वह सिद्धांत उनका कब अंगीकार करने के योग्य है निश्चय विरुद्ध वो विपरीत है सो सूक्ष्म करिके वृत्तान्त उसका यह है कि पन्द्रहवीं निष्ठा में शास्त्रोंके सिद्धान्त के अनुसार जहां ईश्वर का वर्णन हुआ है तहां पांच प्रकार का निरूपण लिखा गया उसके चौथे निरूपण में यह लिखा गया है कि वह स्वरूप चौथा उस सगुण ब्रह्म का अंतरयामी अव्यक्त ज्ञानानन्द अलख अविनाशी निरंजन निर्गुन ब्रह्म सर्व व्यापक है तो प्रगट होगया कि निर्गुणब्रह्म अंग सगुण ब्रह्मका है और निर्गुण मतवाले उसी चौथे स्वरूप के उपासक हैं सिवाय इसके वाराही संहिता में लिखा है कि निर्गुणब्रह्म प्रकाश वो छाया सगुणब्रह्म का है और निज रूप भगवत् का

सगुण ब्रह्म है और इसी प्रकार का वचन सनकादिक संहिता में लिखा है तो इन वचनों से पन्द्रहवीं निष्ठा के चौथी निरूपण की मिलान होती है सो निस्सन्देह निर्गुण ब्रह्म एक अंग सगुण ब्रह्म का है और प्रकार के विवाद वो संदेह के दूर करने के निमित्त निर्गुण ब्रह्म का अर्थ इस बाद के प्रारम्भ में लिखि आया हूं कि जो ईश्वर माया के गुणों से भिन्न वो निर्लेप होय उसको निर्गुण ब्रह्म कहते हैं अरूप को नहीं कहते हैं और इसी प्रकार ज्ञान शब्द का अर्थ भी लिखा गया कि ईश्वर माया जीवके जानने का नाम ज्ञान है और वह एक साधन भगवत् भक्ति का है कि इसका सिद्धान्त गीताजी के श्लोकों के तरजुमे जो ऊपर लिखि आये हैं उनसे अच्छे प्रकार होता है और यहां भी दो एक वचन लिखता हूं गीता जीमें भगवत् ने कहा है फिर जो मुक्ति के निमित्त मेरे शरण होते हैं सोई ब्रह्मके जानने वाले और अध्यात्मज्ञान वो सब कर्मोंके जानने वाले हैं ॥ सांडिल्य सूत्र है ॥ कि ब्रह्म कांड अर्थात् ज्ञान भगवत् भक्ति जानने के निमित्त है सो निश्चय करिकै ज्ञान एक साधन भक्ति का है और भगवत् भक्ति में दृढ़ होना विज्ञान है अब जो यह शङ्का होय कि निर्गुण शब्द का अर्थ जो उपासकों के इष्टदेव के सम्बन्ध का ठहरा तो सगुण स्वरूप का कौन अर्थ किया जायगा सो प्रगट है कि जब निर्गुण ब्रह्म का अर्थ माया से निर्लेप का हुआ तो सगुण शब्द का अर्थ उस भगवत् स्वरूप का ठहरा कि अपनी मायाके आश्रय होकर अपने भक्त के कार्य के हेतु प्रगट होता है और जिसका चरित संसार समुद्र के उतरने वास्ते दृढ़ सेतु हैं जो कोई संसार समुद्र से पार हुआ तो उन चरितोंही के कृपा वो प्रभाव से उन चरितों से अधिक और कोई निर्बाह की राह न आगे रही न अब है न आगे पर होगी इस बात को वेद वो शास्त्र ऊंचे स्वरसे पुकार कर कहते हैं नितांत सब शंका संदेह दूर छोड़ेपर भगवत् भक्तिही मुख्य है उसके सिवाय और कोई राह अच्छी वो सीधी नहीं और ईश्वर का स्वरूप निर्गुण मत वालों का भगवत् भक्तिके उपास्य ईश्वर परमात्मा का एक अंग है इस लिखने में जो यह शङ्का कोई करै कि जो वह निर्गुणब्रह्म भगवत् के सब रूपों में एक अन्तरयामी वो व्यापक अथवा छाया है तो उसके उपासना में क्या विवाद है क्योंकि भगवत् उपासकों का सिद्धान्त है कि भगवत् के कोई एक रूप चाहे धाम चाहे नाम अथवा चरित की उपासना दृढ़ होनी चाहिये निश्चय करिके उद्धार होगा उत्तर इसका यह है कि इस विवाद के आरंभ से वो यहां तक यह बात कहीं नहीं लिखी कि उनका मत अशुद्ध है केवल भगवत् भक्ति और सगुण स्वरूप की विशेषता का वर्णन किया गया है जो वह लोग सिद्धान्त वो सच्ची बात को समझ कर निर्गुण ब्रह्म का आराधन करै तो निश्चय करकै कबहीं न कबहीं भगवत् सच्चिदानन्दघन पूरण ब्रह्म का वास्तव स्वरूप उनके

हृदय में प्रगट हो और उद्धार हो जाय परन्तु विचार करना भी तो उचित है कि वह मार्ग कैसा कठिन वो क्लिष्ट है पहिले तो भगवत्ने आप गीताजीमें कहा है कि अव्यक्त की राह अर्थात् निरूप की प्राप्ति देहाभिमानो को दुख रूप है अति कठिन है सिवाय इसके उसका निरूपण करना कठिन जो कदाचित् किसीने निरूपण भी किया तो उसका समझना उससे और अधिक कठिन और जो किसी प्रकार समझ भी लिया तो आचरण वो आरूढ़ होना उसपर कैसा कठिन वो क्लिष्टहै कि जानें पहिले युग वो समय में कोई आचरण करने वाला उसका हुआ होगा क्योंकि जो वस्तु बुद्धि वो समझ से बाहर है उसमें किस प्रकार मन लगे और बिना एकाग्र होने मनके उसका प्राप्त होना दुर्लभ है इस हेतु उस परम्परा पर पहुंचना जाने रहना कदाचित् अगिनित जन्मों में बड़े कष्टसे किसी एक को कोई पदवी प्राप्त भी हुई तो ऊपर ठहरना अत्यन्त कठिन है और गिरना बहुत सहज क्योंकि इन्द्रियों की बलात्कारी सब को मालूम है तात्पर्य यह कि आदि से अन्त पर्यन्त सिवाय क्लिष्टता के और कोई बात दिखाई नहीं पड़ती और भगवत् भक्ति की सहजता वो भगवत् के शीघ्र मिलने का वृत्तान्त यह है कि किसी प्रकार से भगवत् चरित्रों में थोड़ीसी प्रीतिहोनी चाहिये वह चरित्रही भजन और कीर्तन में लगाकर भगवत् स्वरूप को हृदय में प्रगट कर देते हैं उस स्वरूप का यह प्रताप है कि दिन २ भक्त के हृदय में अपने निज झलक वो प्रकाश को बढ़ावता हुआ दृढ़ निश्चयवो विश्वास कृपा करके अनन्य मन से संसार के स्वाद की चाहना दूर करता हुआ और ज्ञान वैराग्य को प्रकाशित करता हुआ औ नाम कीर्तन वो भजन के सहाय से पहिले करुणा क्षमा तितिक्षा इत्यादि भक्त के मन में उत्पन्न कर देता है तिसके पीछे अपनी यथार्थ सुन्दरता वो अनूप छवि हृदय की आंखों को दिखा कर ऐसा बस वो मोहित कर लेता है कि सिवाय उस रूप अनूप और छवि माधुरी के दूसरी ओर वह मन नहीं जाता फिर वह कृत कृत्य वो कृतार्थ होकर उस रूप अनूप में दृढ़ वो निश्चल हो जाता है कि उसी का नाम जीवन मुक्त है इसके पीछे मुक्ति होती है सो आदि अन्ततक सहज और अनैः २ सुख रूप इस मार्ग के और मार्ग कठिन हैं कोई बात देखने में नहीं आती जन्म मरण की पीड़ा से भय करिके उसी ओर सम्मुख होने की देर है भगवत् को अपनी करुणा और दयालुता और दीनवत्सलता में तनक देर नहीं अपने मिलनेका सब सामान वो सामग्री आप कर देता है जगत में बहुत जगह सुना और कहीं २ देखनेमें भी आया कि झूठें वो विषई प्रेमियों के मन की लगन अज्ञानी वो अनेक पाप वो अवगुणों से भरी हुई स्त्रियों के मन में प्रवेश करके उन स्त्रियों को उनकी चाह करने वालों को मिला देता है

तो वह परमात्मा जोकि शुद्ध सच्चिदानन्दघन सब जानने वाला वो उत्पन्न करने वाला सब परिपाटी वो प्रबन्ध वो रीति पर कायाभिमानी वो प्रियवल्लभपने का अर्थात् आशिकी वो माशूकी का है अपने प्रेम करने वाले परदश करके क्यों नहीं शीघ्र वह मिलैगा और क्यों न मनोर्थ पूर्ण करैगा नहीं तो उसीकी मर्यादा प्रबंधमें दोष प्राप्त होगा तात्पर्य इन बातों के कहने का यह है कि जो कोई ऐसे सहज वो सुख मार्गको छोड़ कर भगवत् के मिलनें के निमित्त अति क्लिष्ट वो एकअंगकी ओर चित्तदेतेहैं वे निश्चय करिकै बुद्धिहीन वो अल्प भागी वो कर्महीन हैं रत्नोंको डालकर कंकरोंको उठातेहैं कामधेनुको छोड़कर दूधकेनिमित्त आकका पेड़ खोजते हैं और एक चोरकी बात स्मरण हो आई कि निर्गुण खसम को स्त्री भी अंगीकार नहीं करती पुरुष समझदार वो बुद्धिमान तो निर्गुणको अपना स्वामी क्यों अंगीकारकरै सो गोपिका भगवत् की परमप्रिया उद्धवसे कहती हैं ॥ सूरछाड़ि गुनधाम सांवरो को बिगुन निरबा है ॥ और एक बात बिचार वो न्याय के योग्य है कि प्रेम बिना सुन्दरता वो शोभा के नहीं होता और जब तक प्रेम नहीं तब तक मिलना भगवत् का कदापि नहीं होसकता ॥ उस मतवालोंका सिद्धांत है कि जब तक वर्णआश्रम के धर्मोंको करके हृदय निर्मल नहो तब तक वह ज्ञान उपदेशका अधिकारी नहीं अब बड़ब्रह्मज्ञानी गली गली ऐसा कहा २ फिरताहै कि जो थोड़ाभी वर्णन करूं तो बहुत विस्तार होजाय और द्वैषता का कलंक अलग रहा इस हेतु उसकी चरचाहीको छोड़ दिया और अच्छी प्रकार समझ लिया कि विष्णुपुराण वो भागवत इत्यादि में जो वृत्तांत कलिधर्मके लिखे हैं और यह भी वर्णन हुआ है कि कलियुग में स्त्री पुरुष ऐसे होंगे कि सिवाय ब्रह्मज्ञानिके और कुछ नकरैंगे और कर्म उनके ऐसे होंगे कि थोड़े से लालचसे आय कर ऐसे कर्म करैंगे कि जिससे भांडाज का भी हृदय कांप जावै सो वह समय अब आगया अब और बाद विवादको विरुद्ध करके अति आधीनताई वो प्रार्थना पूर्वक बिनती करता हूं कि जो सूर्य पश्चिम उगै और शशाके शिरपर सींग जामैं वो आकाशमें फुलवारी लगै वो पानीमें आगलगै तो संदेह नहीं यह सब होय परंतु यह कदापि २ नहीं होसकता कि बिना भजन भगवत् पूर्णब्रह्म परमात्मा मेरे स्वामीके इस संसार समुद्र से पार होजावै यह प्रताप भगवत्के सेवन भजनहीं का है कि वह संसार समुद्र गोपद जलके सदृश होजाता है यह सिद्धांत वो सार वेद वो शास्त्रों का है

थोड़ा सा वृत्तांत भेद चारों संप्रदाका और वास्तवमें
एक होना उनका परिणाम में ॥

अब यह लिखना उचित हुआ कि सबसंप्रदा वाले अपनी संप्रदाको दूसरी

संप्रदा पर विशेष जानकर उद्धारके निमित्त उसीको सत्य वो सिद्धांत समझते हैं और उसीकी विशेषता वर्णन करते हैं सोइन चारों संप्रदा में अच्छी वो विशेष कौन संप्रदा है सो जानेरहो कि संसार समुद्रसे पारकरदेनेके निमित्त चारों संप्रदा एकही भांति वो बराबर हैं किसीमें कुछ न्यून वो विशेषता नहीं सब संप्रदावालों ने भगवत् की अद्वैतता एकही प्रकार वो बराबर लिखी है और प्रमाण श्रुति वो स्मृति इत्यादिका सब संप्रदा वालोंमें एकहै और युक्ति है कि सिवाय भगवत्के न कोई उद्धार करने वाला है न उसे सिवाय और किसी देवताका साधन चाहिये और इसी प्रकार भगवत्के धाम वो विग्रह में सब का बराबर एक सम्मत है केवल थेड़ो बात पर झगड़ते हैं एक तो माया और जीवके निर्णयमें आपुसमें उनलोगों के निश्चय में भेद है दूसरे तिलक और मुद्रा धारण करने और उसकी मर्ति बनाने में विरुद्ध है तीसरे सब संप्रदा वाले अपने इष्टदेव को अवतारी वो स्वयं स्वरूप और दूसरों को अवतार वो अंश वो विभूति अपने स्वामीका जानता है सो इस विरुद्धता का दृष्टांत भेष निष्ठा वो धाम निष्ठा और चारों आचार्योंकी कथा वो चारों निष्ठाओंसे मालूम होसक्ता है ॥ रामानुज स्वामी की संप्रदा में कैंकर्य निष्ठा है वो ईश्वर को चिदचिद्विशिष्टाद्वैत मानते हैं अर्थात् माया और जीव भी उसी अद्वैत से मिले हुए हैं और नित्य हैं वो निम्बार्क स्वामीकी संप्रदा में अनन्यता की निष्ठा है वो जीव ईश्वरमें भेदाभेद अद्वैताद्वैत अर्थात् एक भी वो दोभी हैं और व्याप्यव्यापक सम्बन्ध करके तात्पर्य यहकि जो जिस करके व्याप्य है सोतद्रूपहै और माध्व संप्रदा वालों की निष्ठा कीर्तन की और द्वैत सिद्धांतहै वो विष्णुस्वामी संप्रदा आत्म निवेदन की निष्ठा वो शुद्ध अद्वैत सम्मत है सो इन भेदों पर विचार किया जाय तो एकही है क्योंकि वास्तव वस्तु सब निष्ठाओंकी एकही प्रकार की है जो कुछ झगड़ा वो वाद आपुस में है सो अपनी २ राह में प्रीति वो विश्वासके बढ़ानेके निमित्तहै वास्तव करिके कुछ विरुद्ध नहीं ॥

स्मार्त मतके वर्णनके बहाने अन्य शब्दका अर्थ वर्णन और दूसरी बात प्रयोजन वालीका भी वर्णन ॥

अब यह बात वर्णन करनी पड़ी कि स्मार्त संप्रदा की भी चरचा इस भक्तमाल में हुई है उस संप्रदावालोंका क्या मार्ग है और किस देवताका आराधन करते हैं और फल वो परिणाम उस मार्गका क्या है सो जानेरहो कि स्मृति अर्थात् धर्म शास्त्रके अनुसार चलना वो सोरह कर्म गर्भ के आरंभसे मरण पर्यन्तको मुख्य जानना उनकी परंपरा मार्ग है जिसने पहिले यज्ञोपवीत दिया अथवा जिससे विद्या पढ़ी उसीको गुरु जानते हैं ऋषीश्वरों अर्थात् मनु वो याज्ञवल्क्य इत्यादि को आदि आचार्य्य समझते हैं और ऋषेश्वर नहुत होगये इस हेतु कोई एक मुख्य प्रवर्तक उस मार्ग का

नहीं कहने में आता परंतु अंतमें सैकड़ोंके बध होनेके पीछे शंकर स्वामी से उस मार्गकी बहुत विशेष प्रवृत्ति हुई और वे लोग सारफल अपने धर्मकर्म का निराकार निर्गुण ब्रह्मकी प्राप्तिको समझते हैं इस हेतु शंकरस्वामीको अंतका आचार्य समझना चाहिये स्त्री को पूजा इत्यादि के निमित्त पुस्तक पद्धति की जानते हैं पञ्चांग पूजा करते हैं अर्थात् गणेश शिव विष्णु दुर्गा सूर्य की मूर्ति एक सिंहासन पर विराजमान करके सबको पूजते हैं और जिस देवता पर विश्वास वो प्रेम अधिक होय तिसको मध्य में और चारों कोनों पर चार देवता को बैठालते हैं चारों संप्रदा वैष्णवी में से किसी के चेले नहीं होते उनमेंसे कोई कोई ऐसे भी हैं कि निज एक किसी देवता को पूजा करते हैं और अपने आप को स्मार्त कहते हैं देवता के पूजा की पद्धति और स्तोत्र पाठ इत्यादि सब रखते हैं परंतु उपासना के ग्रंथ जिस प्रकार चारों संप्रदा में हैं कोई नहीं और होना भी निश्चय बिना निःप्रयोजन है क्योंकि वह लोग पूजा देवताओं की दूसरे कर्मों के सदृश समझते हैं और वेदांत निर्गुण मतका पढ़ते हैं इस भक्तमाल में जो कोई कोई जगह स्मार्त संप्रदा का वर्णन ऊआ है तो कारण यह है कि उन लोगों में किसी किसी को भगवत् आराधक ऐसा देखा कि भूल कर भी दूसरी ओर चित्त नहीं देते सो भगवत् को अपना अनन्य दास प्यारा है जो कोई हो सोई भगवत् का भक्त है भगवत् को जाति विद्या बड़ाई सम्पत्ति मार्ग इत्यादि पर कुछ दृष्टि नहीं केवल अनन्य भक्ति चाहिये बाल्मीक स्वपच सेवरी गज गणिका सुग्रीव हनुमान विभीषण प्रह्लाद इत्यादि हजारों भक्तों की कथा इसके प्रमाण वो दृष्टांत को प्रसिद्ध हैं और गीता में कहा है कि अनन्य चित्तसे भजन करने वाले को सुलभ हूं दूसरा बचन है कि अनन्य होय कीर्तन करने वालों को मुक्ति देता हूं अनन्य शब्द का अर्थ साधन अवस्था में तो यह है कि अपने स्वामी से सिवाय और किसी से जानि बुझि कर किसी बात का कोई प्रकार का सम्बन्ध नहो वो सिद्धावस्था यह है कि सिवाय अपने स्वामी रूपरास के और कोई बाहर वो भीतर की दृष्टि में दिखाई न पड़े दोनों अवस्था में एकसे सिवाय दूसरा अंगीकार वो विश्वास के योग्य नहीं और सिद्धांत की बात है कि दो रूप सुन्दर पर एक की प्रीति नहीं होसक्ती सो एक दृष्टांत भी स्मरण हो आया किसी धूर्त दगाबाज ने एक सुन्दरी स्त्रीसे कहा कि मैं तेरा आशिक हूं उसने उत्तर दिया कि फलानी स्त्री बड़ी सुन्दरी है उसपर आशिक हो वह पुरुष उस स्त्री को ढूंढने गया वो फिर आकर कहा कि कोई स्त्री न मिली उस स्त्री ने उत्तर दिया कि तेरी परीक्षा मैं लेती थी जो तू सच्चा मेरा आशिक था तो दूसरी स्त्री के ढूंढने के हेतु क्यों गया था सो ऐसी बातों से हम नहीं जानें कि जिनको विश्वास वो निष्ठा कहीं और है और निज अभि

प्राय का सिद्ध करने वाला जिसको पूजा पची करते हैं उसके सिवाय और किसी को जानते हैं तो उनको प्रेम किसमें और किस प्रकार होगा और कैसे अपने मनो वाञ्छित पदको पहुंचेंगे और ऐसी निष्ठा पर कौतुक यह है कि जो कोई शास्त्र के प्रमाण के अनुसार एक ओर मन को लगाये हैं उनको अपने मन सुखी ज्ञान करिके वे विश्वास और निंदक ठहराते हैं और वह कदापि न किसी से द्वेष रखते वो न किसीकी निंदा करते जिस देवता का जैसा प्रभाव वो प्रभुत्व है तैसाही यथार्थ जानकर सच्चे मन से उसको वैसाही मानते हैं परंतु वहां इतना भेद है कि उन लोगों के सदृश सब को ईश्वर नहीं मानते इस हेतु कि शास्त्रों के वचन के अनुसार ईश्वर एक है दो चार नहीं अभिप्राय इस विस्तार से कहने का यह है कि जो कुत्ता द्वारद्वार फिरता है कदापि उसका पेट नहीं भरता और जो कुत्ता एक द्वार सेयकर रहता है सो यद्यपि अपवित्र वो अशुद्धता के भी घरके मालिक को ऐसा प्यारा हो जाता है कि आप उसकी खबर गीरी करता है और यह भी विचार करने योग्य है कि पुन्श्चली स्त्री का पुत्र बाप बाप किसको कहै ॥

भगवत् के अवतार लेने और भक्तों के चाह के अनुसार चरित्र करने का सब हेतु ॥

अब यह प्रश्न है कि इस तरजुमे में भक्तमाल वो सब शास्त्रों में भगवत् की महिमा लिखी गई कि वह अच्युत अनन्त व्यापक सच्चिदानन्दघन पूर्ण ब्रह्म परमात्मा है कि वेद जिसको नेति २ कहते हैं और उसी का यह वर्णन हुआ कि किसी भक्त के निमित्त स्वामी और कहीं टहलुवा कहीं चरवाहा कहीं मशालची कहीं सुनार कहीं चोर कहीं साहूकार कहीं बेटा कहीं बाप कहीं आशिक कहीं माशूक कहीं यार कहीं नातेदार हुआ तो उस महिमा की ओर देख करके ऐसे चरित्रों पर दृष्टि जाती है तो महा आश्चर्य होता है इसका क्या वृत्तान्त है सो जाने रहो कि जो भगवत् वो शास्त्र के मानने वाले हैं उन लोगों को तो यह आशङ्का नहीं और न उनको कुछ उत्तर का प्रयोजन है क्योंकि उनको यह चरित्र परम आनन्द के देनेवाले और दूर करने वाले सब सन्देहोंके और भगवत् भक्ति वो दृढ़ प्रेम के छपा करने वाले हैं वो उनको भगवत् चरित्रों से सिवाय वास्तव करिके तृनक भी दूसरी कथा पर चाह नहीं होती काहे से कि उन चरित्रों का यह बलवो प्रताप है कि भगवत् के रूप अनूप और छवि साधुरी का हृदय में प्रकाश करके भगवत् परायण करदेते हैं परंतु जो लोग नास्तिक हैं उनसे यह विनय है कि इस प्रश्न का उत्तर केवल भगवत् की करुणा वो दयालुता भक्तों की चाह पूरण करने के निमित्त जहां जगह थोड़े में वर्णन हुआ है यहां भी थोड़े में लिखा जाता है वेद श्रुती कहती हैं कि भगवत् पूरणब्रह्म अपने भक्तों पर करुणा वो दया करके

आविर्भाव होता है सांडिल्य सूत्र में लिखा है कि भगवत् के स्वरूप धारण करने में केवल करुणा वो दया का कारण है भगवत् ने, गीता जोमें कहा है कि भक्तों की रक्षा करने को और धर्म को स्थिर रखने के निमित्त युग युग में अवतार लेता हूं मेरे उन जन्मों और कर्मों के जानने से फिर जन्म नहीं होता तो उन वचनों के अनुसार जब कि भगवत् अपने परम धाम को छोड़कर प्रगट होता है तो जो चरित्र करता है सो भक्तों पर दया वो करुणा के कारण से है इस हेतु कि भक्तलोग उन चरित्रों को कीर्तन करें के और अपने स्वामीके करुणा वो दयालुता को देखकर उसी ओर लगे रहते हैं दूसरी ओर चित्त नहीं देते और दूसरों को भी उन चरित्रों के प्रभाव करके उद्धार हो जाता है सिवाय इसके भगवत् भक्तों को अनुक्षन ध्यान वो चिंतवन अपने स्वामी का रहता है और जो प्रयोजन आनि पड़ता है तो भगवत् को छोड़ और किसी से नहीं जाचते तो रीति वो सिद्धांत के अनुसार भक्त के प्रयोजन के समर्थ उसीका आना योग्य वो उचित होता है कि जिसका उस भक्त को ध्यान रहता है और उसमें जो यह कोई कहै कि भगवत् में सब कुछ सामर्थ्य और पराक्रम है क्या और किसी प्रकार से वह प्रयोजन सिद्ध नहीं होसक्ता निज आप आने का क्या प्रयोजन है सो जानेरहो कि इस आशंका से पहिले तो रीति और सिद्धांत में भेद पड़ता है कि ध्यान तो किया किसी और रूप का और कार्य वो मनोर्थ की सिद्धता किसी और प्रकार से यह कब होसक्ता है दूसरे उन वचनों के अनुसार जो ऊपर लिखे हैं दया करुणा में भगवत् के विरुद्ध पड़ता है अर्थात् जब भक्तों को प्रयोजन हुआ और आप नहीं आया दूसरे किसी प्रकार से प्रयोजन सिद्ध होगया तो वह वचन भगवत् का और दया कहां रहीरही किस हेतु कि उन वचनों में यह बात लिखी है कि आप मैं आता हूं यह बात नहीं लिखी है कि प्रयोजन सिद्ध कर देताहूं और इसी शंकाके समाधान में एक इतिहास स्मरण हो आया यह कि किसी महाराज ने किसी एक बड़े महानभाव से पूछा कि ईश्वर सब प्रकार समर्थ है औतार लेने का क्या प्रयोजन था किसी और प्रकार से भक्तों का कार्य क्यों न कर दिया वे महानभाव उस दिन चुप रहे एक मूर्ति उसके छोटे बालक के तदाकार ऐसी बनवाई कि तनक उसके लड़के के स्वरूप से भेद नहीं था और लड़का खिलाने वाले को समझा दिया कि जिस समय हम और महाराज यमुना के तीर की नाव पर चढ़ें उस समय वह मूर्ति गोद में लेआना सो वह उसी समय पर लेगया वो वह महानभाव उस लड़के को लेकर महाराज को देने लगा परन्तु वह मूर्ति हाथ से छूट कर यमुना में गिर पड़ी महाराज जोकि उस मूर्ति को अपना लड़का समझाथा विकल होकर यमुना में कूदपड़ा कुछ अपने

प्राण वो डूबनेका शोच न किया उस महानुभाव ने निकलवाया और पूछा कि तुम्हारे नौकर वो मल्लाह सैकड़ों खड़े थे तुम आप क्यों जमुना में कूद पड़े महाराज ने कहा कि मुझको उस लड़के के स्नेह वो प्रेम के कारण से इतनी सुधि वो सम्हार न रही कि कुछ कहूं इस हेतु आप कूद पड़ा उस महानुभाव ने उत्तर दिया कि यही दशा उस भगवत् की है कि जब अपने भक्त को दुख में देखता है दया करिकै बिकल हो आपचला आता है सिवाय इस बात के भगवत् का दृढ़वाचा प्रबंध है कि अपने भक्तों की चाहना पूरण करता हूं और उन श्लोकोंका अर्थ कई जगह इस ग्रन्थ में लिखा गया तो उस वाचा प्रबंध के अनुसार जैसी चाहना भक्त की हुई सोई आयके भगवत् ने पूरण की इस के सिवाय भगवत् वो भगवत् का चरित्र कल्पवृक्ष के सदृश है जैसा जिस किसी का विश्वास है उसको वैसाही फल देते हैं सो जानकी महारानी के स्वयंबर में श्री राम चन्द्रस्वामी वो मथुरा के रंग भूमि में आप श्री कृष्ण स्वामी सब लोगों के भाव के अनुसार दिखाई दिये इस से निश्चय होगया कि जिस भक्त ने जिसभाव से चिंतवन किया उसको उसी भाव से देखपड़े और वैसाही फल दिया और वैसेही चरित्र किये एक दृष्टान्त बरसानेमें देखने में आया अर्थात् वनजात्रा के समय जब बरसाने श्री राधिका महारानी के मैकेमें जानेका संयोग हुआ तो वहां की ब्रजबासिनी सब जातियों से पैसा रुपैया मांगने लगीं किसी ने कहा कि जब यह बात कहोगी कि नन्दनन्दन ब्रजकिशोर हमारा बहनोई है तब कुछ देवेंगे उन ब्रज बासिनियों ने अपने नाते वो भाव के अनुसार उस राधिका वल्लभ और उसके संबंधी लोगों को सौगालियां सुनाईं और भगवत् भक्तों और रसिकों के हृदय में प्रिया प्रीतम के रूप अनूप का एक समाज प्रगट कर दिया उस समय एक दी की तो यह दशा देखी कि प्रेमका प्रवाह आंखों से बहताथा भगवत् की छवि माधुरी की चिंतवनमें मग्न वो बेसुधि थे और उन ब्रजबासिनियों को भगवत् की सखी जानकर प्रणाम करतेथे और कोई दुष्ट भाव वालों को देखा कि उन स्त्रियों से गाली देकर कुदृष्टि से देखतेथे और हंसी ठट्ठा उन के साथ करतेथे अब विचार करना चाहिये कि एक ओर वालों को तो गालियों ने महामंच का फल दिया और दूसरे गोल वालों को वे ही और उनकी बात चीत नर्क का कारण होगई अभिप्राय इस कहने का यह है कि जिस किसी को भगवत् वो भगवत् चरित्रों में जैसा भाव है उसको वैसाही देखने में आता है और ग्रन्थों में स्पष्ट लिखा है कि भगवत् का चरित्र भक्तों को तो आनंद का देने वाला और दुष्ट वो विमुखों को रसातल पहुंचाने वाला है जैसे सूर्य को कमल तो देखकर खिलजाता है और कुमुदिनी संपुटित हो जाती है

अथवा सारे संसार को तो प्रकाश प्राप्त होता है वो उलूक वो चमगीदड़ी को आंखोंकी ज्योति जाती रहती है इससे कोई संदेह का स्थान नहीं कि भगवत् समर्थ और मालिक और अपने वाचा प्रबंध का दृढ़ और अपने वचन को सत्य कहने वाला और अपने भक्तों पर अत्यंत दया करने वाला है जो चरित्र उसने किया और आगे करैगा सब सत्य वो समीचीन हैं शंका वो कुतर्क की कदापि समवाई नहीं विश्वासयुक्त और प्रेमियोंको वह चरित्र निश्चय वो निसंदेह आनन्द वो ब्रह्मपद का देने वाला है, और विमुख वो वेविश्वासियों को विश्वास छुड़ाकर सातवें पाताल को प्राप्त करदेने वाला है काहे से कि कल्पवृक्ष से आनन्द के मांगने वाले को आनन्द मिलता है और दुख मांगने वाले को दुख कि यह पहिले भी लीलानुकरण निष्ठामें वर्णन हुआ है मुझ को ऐसे शंका करने वालोंका प्रश्नपर अत्यंत आश्चर्य हुआ कि उन्होंने बिना समझे सोचे ऐसा प्रश्न निर्बल वो अयोग्य किया काहे को, क्योंकि जिन भक्तों के हृदय के नयनों को सिवाय भगवत् के और कोई दृष्टि में नहीं आता वो न बाहर सिवाय उसके और किसी को जानते हैं तो जो उनको चाहना किसी प्रकार की हो उसका पूर्ण करने वाला सिवाय भक्तवत्सल कृपासिन्धु के और कौन निश्चय किया जाय और उन भक्तोंके भीतर वो बाहरे के नयनों को सिवाय उसके और कौन दिखाई दे ॥

कुसंग से हानि वो सुसंग से लाभ तिसका वर्णन ॥

अब लिखने का प्रयोजन पड़ा कि कौन वस्तु तुरंत त्यागने योग्य है और कौन वस्तु अंगीकार करने योग्य है सो जानेरहो कि दुष्ट और खल वो विमुखों के संगका त्याग शीघ्र उचित वो योग्य है उनका वर्णन करना वो लिखना कुछ प्रयोजन नहीं कि थोड़ा बहुत कोई २ निष्ठा में वो विशेष करिके इसके अन्तमें लिखि आया हूं उनके संग को एक करामात विचार करना चाहिये अनेक रूप से लोगों को सताते हैं अर्थात् किसी को बीछू वो काले भौंरा के सदृश हैं और किसी को बौड़हे कुत्ते के सदृश वो किसी को मदिरा की रंगत दिखाती है और किसी के निमित्त हलाहल विषकी मूर्त्ति हो जाती है गोसाईं तुलसीदासजी ने जो इन लोगों के संग त्याग के हेतु जो चौपाई उत्तरकाण्ड में कही है सो यह है ॥

उदासीन नित रहिये गोसाईं। खलपरि हरिये स्वान की नाईं ॥

इस चौपाई के अर्थ कई एक हैं परंतु सूच्छ करिके अर्थ यह है कि दुष्ट से दूर रहिये और स्वान जो कुत्ता है तिसकी भांति उसका त्याग उचित है तात्पर्य दूर रहने से यह है कि कुत्ते से जो स्नेह करिये तो वह शरीरमें लगकर चाटकर अपवित्र करै और जो उसको मारिये तो भूकै वो काट खाय। इसी पर व्यासजी का दोहा है ॥

दोहा ॥

व्यास बड़ाई जगत की कुत्ते की पहिचान। प्यार किये मुह चाटई बैर किये तन हान ॥

अर्थात् दोनों प्रकार से हानि है और दूर रहने में कुछ हानि नहीं और टुकड़ा डाल देने में भी कुछ हर्ज नहीं होता अर्थात् इस दोहा वो चौपाई के दृष्टान्त से कुछ उपकार वो भलाई करदेने में रुकावट नहीं समझना उनसे बैर वो प्रीति नहीं करना यह मना करते हैं वो दूर रहने की आज्ञा है किसी ने इसी वचन के अनुसार एक दोके सार्थ आचरण किया आनन्द में रहा निश्चय त्याग करना संग विमुख वो दुष्टों का बहुत उचित है भलकर भी निकट न जाय वो जैसा विमुख वो दुष्टों का और उनके प्रीति का त्याग करना अत्यन्त उचित है इसी प्रकार अंगीकार करना सत्संग वो समागम भगवत् भक्तों का बहुत योग्य वो उचित है सत्संग वह वस्तु है कि जिस पदवी का मिलना मनु वो बुद्धि में न समाय वो न समझ में आवे सो पदवी सहज में मिलजाती है इस संसार वो स्वर्गादिक के सुख तो तुच्छ हैं ब्रह्मानन्द का सुख भी सत्संग की बराबरी नहीं कर-सक्ता बरु वे सब सुख सत्संग के सेवक हैं सब हाथ बांधे सन्मुख होजाते हैं और जब कि पर्णब्रह्म परमात्मा सत्संग के प्रभाव करके सहज में मिलजाता है और जहां सत्संग है तहां आप देवताओं के सहित प्राप्त रहता है तो दूसरी पदवी के सुख सब प्राप्त हो जावें तो क्या आश्चर्य है सत्संग का वह प्रताप है कि अजामिल ऐसा पापी यम दूतों को मार पीट कर उस स्थान पर पहुंचा कि योगियों को मिलना कठिन है बेश्या जो सब पाप की मूर्ति हैं उनको वह पद मिले कि रंगनाथ स्वामी और नाथ जी महाराज वशी भूत होगये और नित्य विहार में अपने मिलाय लिया बाल्मीक वो नारदजी के दृष्टान्त पर दृष्टि करनी चाहिये कि पहिले वे क्या थे और अब सत्संग के प्रभाव से क्या हैं सो किसको किसको गिनावें जो कोई जिस उत्तम पदवी को पहुंचा है सत्संग होके प्रभाव से सो जिस किसी को संसार समुद्र से उतरना है सो सत्संग करे बिना सत्संग न तो नाम कीर्तन प्राप्त होता है न भक्ति न भगवत् ॥

—०—

बहुत निष्ठा स्थापित होने का कारण वो उसके साथ माहात्म्य नाम कीर्तन का।

इस ग्रन्थ में चौबीस निष्ठा लिखी हैं वो सब निष्ठाओं के वर्णन में यह लिखा गया कि इस निष्ठा से भगवत् मिलता है अब चित्त इस ओर में है कि उनमें से किसके अनुकूल आचरण करना चाहिये और जो एक निष्ठा से भगवत् मिलता है तो इतनी निष्ठा के लिखने का क्या प्रयोजन एक निष्ठा लिखदेनी बहुत थी और जो किसी कारण से चौबीसों निष्ठा होवें तो यह भी वर्णन करना चाहिये कि उनमें कौनसी निष्ठा ऐसी हैं कि जिनसे

मनोर्थ अतिशीघ्र सिद्ध हो उत्तर यह है कि सब निश्चयों की जो कुछ महिमा लिखी गई है सब सत्य वो ठीक है किसी भांति कुछ सन्देह नहीं है उन में से किसी एक निष्ठा पर चित्त दृढ़ आरूढ़ हो जाना चाहिये वही एक निष्ठा इस संसार समुद्र से पार उतार देवेंगी दूसरी निष्ठा का प्रयोजन न होगा और उसी एक निष्ठा के विश्वास वो निश्चय को यह प्रताप है कि शेष दूसरी सब निष्ठाओं में आप से आप अधिकार हो जायगा जैसे एक दीपक के प्रकाश होते से सब वस्तु घरमें हैं सो दीखने लगती हैं और जिस निष्ठा पर जिसका चित्त लगे तो उस निष्ठा से सिवाय भगवत् के मिलने के निमित्त दूसरे साधन का प्रयोजन नहीं दिन दिन प्रीति को वृद्धि करके अधिकारता को पहुंचाय देती है वो बहुत निष्ठा स्थापित होनेका कारण यह है कि सब किसी की रुचि मन की एक सी नहीं है किसी को बाल चरित्रों में रुचि है और किसी को माधुर्य वो शृंगार में वो किसी का हंसी खेल सखाभाव के चरित्रों में मन लगता है और कोई ईश्वरता वो कृपालुता के चरित्रों पर चाह रखता है इसी प्रकार सब उपासक अपने मन की रुचिके अनुसार भगवत् के शोभा वो चिंतवन में सावधान होता है तो ग्रंथों में जो उनके सब भाव की निष्ठा लिखी न जाती तो बिना ठहरने रीति आराधन उस निष्ठा के भगवत् के मिलने में व्यवधान पड़ता प्रमाण इस वचन का आप भगवत् के चरित्रों से प्रसिद्ध है कि भगवंत ने सब निष्ठा के संबंधी चरित्र किये जिस में जैसे चरित्रों पर जिस को चाह हो वैसेही चरित्रों पर मन को लगा कर भगवत् परायण होजावै इस हेतु चौबीस निष्ठा जो ठहराई गईं बरु जितनी अधिक लिखी जातीं तितनी अधिक प्रकाशित होतीं येही बात ग्रंथ के आरम्भ में जहां भक्ति अनेक प्रकार की होनेका उत्तर लिखा गया है तहां प्रथमही पद्धति वो रीति के नाम से लिखी हैं यहां उसीको विशेष करिके लिख दिया है और यह नहीं कहा जाता कि इस निष्ठा से भगवत् बहुत शीघ्र मिलता है और इस निष्ठा से शीघ्र नहीं क्योंकि यह चौबीस निष्ठा आवागमन के समुद्र से पार होने को चौबीस जहाज के सदृश हैं जिस जहाज पर बैठेगा बेखट के पार हो जायगा जहाज पर बैठने अर्थात् विश्वास दृढ़ वो आचरण पक्का करने की देर है पार उतारने वाला अपनी दया के बस पार उतारने को सदा सर्व काल सावधान है परन्तु इस काल में अर्थात् कलियुग के निमित्त जो कुछ शास्त्रों में लिखा है कि सतयुग में भगवत् का ध्यान ध्येय और त्रेता में यज्ञ और द्वापर में भगवत् की पूजा करने से उद्धार होता था अब कलियुग में केवल भगवत् का नाम मुख्य आधार है और इस वचनका निर्णय भागवत वो स्कन्द पुराण वो पद्मपुराण इत्यादि से अच्छे प्रकार होता है वो रामतापनी में वेद श्रुति कहती है कि नामके प्रभाव से पूरण

दोहा ॥

व्यास बड़ाई जगत की कुत्ते को पहिचान। प्यार किये मुह चाटई बैर किये तन हान ॥

अर्थात् दोनों प्रकार से हानि है और दूर रहने में कुछ हानि नहीं और टुकड़ाडाल देने में भी कुछ हर्ज नहीं होता अर्थात् इस दोहा वो चौपाई के दृष्टान्त से कुछ उपकार वो भलाई करदेने में रुकावट नहीं समझना उनसे वैर वो प्रीति नहीं करना यह मना करते हैं वो दूर रहने की आज्ञा है किसी ने इसी वचन के अनुसार एक दोके सार्थ आचरण किया आनन्द में रहा निश्चय त्याग करना संग विमुख वो दुष्टों का बहुत उचित है भलकर भी निकट न जाय वो जैसा विमुख वो दुष्टों का और उनके प्रीति का त्याग करना अत्यन्त उचित है इसी प्रकार अंगीकार करना सत्संग वो समागम भगवत् भक्तों का बहुत योग्य वो उचित है सत्संग वह वस्तु है कि जिस पदवी का मिलना मनं वो बुद्धिमें न समाय वो न समझ में आवे सो पदवी सहज में मिलजाती है इस संसार की स्वर्गादिक के सुख तो तुच्छ हैं ब्रह्मानन्द का सुख भी सत्संग की बराबरी नहीं कर-सक्ता बरु वे सब सुख सत्संग के सेवक हैं सब हाथ बांधे सन्मुख होजाते हैं और जब कि पर्णब्रह्म परमात्मा सत्संग के प्रभाव करके सहज में मिलजाता है और जहां सत्संग है तहां आप देवताओं के सहित प्राप्त रहता है तो दूसरी पदवी के सुख सब प्राप्त हो जावें तो क्या आश्चर्य है सत्संग का वह प्रताप है कि अजामिल ऐसा पापी यम दूतों को मार पीट कर उस स्थान पर पहुंचा कि योगियों को मिलना कठिन है वेश्या जो सब पाप की मूर्ति हैं उनको वह पद मिले कि रंगनाथ स्वामी और नाथ जी महाराज वशी भूत होगये और नित्य विहार में अपने मिलाय लिया बाल्मीक वो नारदजी के दृष्टान्त पर दृष्टि करनी चाहिये कि पहिले वे क्या थे और अब सत्संग के प्रभाव से क्या हैं सो किसको किसको गिनावें जो कहें जिस उत्तम पदवी को पहुंचा है सत्संग होके प्रभाव से सो जिस किसी को संसार समुद्र से उतरना है सो सत्संग करे बिना सत्संग न तो नाम कीर्तन प्राप्त होता है न भक्ति न भगवत् ॥

—०—

बहुत निष्ठा स्थापित होने का कारण वो उसके साथ माहात्म्य नाम कीर्तन का ॥

इस ग्रन्थ में चौबीस निष्ठा लिखी हैं वो सब निष्ठाओं के वर्णन में यह लिखा गया कि इस निष्ठा से भगवत् मिलता है अब चित्त उद्गम में है कि उनमें से किसके अनुकूल आचरण करना चाहिये और जो एक निष्ठा से भगवत् मिलता है तो इतनी निष्ठा के लिखने का क्या प्रयोजन एक निष्ठा लिखदेनी बहुत थी और जो किसी कारण से चौबीसों निष्ठा लिखी तो यह भी वर्णन करना चाहिये कि उनमें कौनसी निष्ठा ऐसी हैं कि जिससे

मनोर्थ अतिशीघ्र सिद्ध हो उत्तर यह है कि सब निष्ठाओं की जो कुछ महिमा लिखी गई है सब सत्य वो ठीक है किसी भांति कुछ सन्देह नहीं है उन में से किसी एक निष्ठा पर चित्त दृढ़ आरूढ़ हो जाना चाहिये वही एक निष्ठा इस संसार समुद्र से पार उतार देवेंगी दूसरी निष्ठा का प्रयोजन न होगा और उसी एक निष्ठा के विश्वास वो निश्चय को यह प्रताप है कि शेष दूसरी सब निष्ठाओं में आप से आप अधिकार हो जायुंगा जैसे एक दीपक के प्रकाश होने से सब वस्तु घरमें हैं सो दीखने लगती हैं और जिस निष्ठा पर जिसका चित्त लगे तो उस निष्ठा से सिवाय भगवत् के मिलने के निमित्त दूसरे साधन का प्रयोजन नहीं दिन दिन प्रीति को वृद्धि करके अधिकारता को पहुंचाय देती है वो बहुत निष्ठा स्थापित होनेका कारण यह है कि सब किसी की रुचि मन की एक सी नहीं है किसी की काल चरित्रों में रुचि है और किसी को माधुर्य वो शृंगार में वो किसी का हंसी खेल सखाभाव के चरित्रों में मन लगता है और कोई ईश्वरता वो कृपालुता के चरित्रों पर बांह रखता है इसी प्रकार सब उपासक अपने मन की रुचिके अनुसार भगवत् के शोभा वो चिंतवन में सावधान होता है तो ग्रंथों में जो उनके सब भाव की निष्ठा लिखी न जाती तो बिना ठहरने रीति आराधन उस निष्ठा के भगवत् के मिलने में व्यवधान पड़ता प्रमाण इस वचन का आप भगवत् के चरित्रों से प्रसिद्ध है कि भगवंत ने सब निष्ठा के संबंधी चरित्र किये जिस में जैसे चरित्रों पर जिस को चाह हो वैसेही चरित्रों पर मन को लगा कर भगवत् परायण होजावै इस हेतु चौबीस निष्ठा जो ठहराई गईं बरु जितनी अधिक लिखी जातीं तितनी अधिक प्रकाशित होतीं येही बात ग्रंथ के आरम्भ में जहां भक्ति अनेक प्रकार की होनेका उत्तर लिखा गया है तहां ग्रंथमही पद्धति वो रीति के नाम से लिखी हैं यहां उसीको विशेष करिके लिख दिया है और यह नहीं कहा जाता कि इस निष्ठा से भगवत् बहुत शीघ्र मिलता है और इस निष्ठा से शीघ्र नहीं क्योंकि यह चौबीस निष्ठा आवागमन के समुद्र से पार होने को चौबीस जहाज के सदृश हैं जिस जहाज पर बैठेगा बेखट के पार हो जायगा जहाज पर बैठने अर्थात् विश्वास दृढ़ वो आचरण पक्का करने की देर है पार उतारने वाला अपनी दया के बस पार उतारने को सदा सर्व काल सावधान है परन्तु इस कलि में अर्थात् कलियुग के निमित्त जो कुछ शास्त्रों में लिखा है कि सतयुग में भगवत् का ज्ञान ध्यान और त्रेता में यज्ञ और द्वापर में भगवत् की पूजा करने से उद्धार होता था अब कलियुग में केवल भगवत् का नाम मुख्य आधार है और इस वचनका निरूपण भागवत वो स्कन्द पुराण वो पद्मपुराण इत्यादि से अच्छे प्रकार होता है वो रामतापनी में वेद श्रुति कहती है कि नामके प्रभाव से पूरण

दोहा ॥

व्यास बड़ाई जगत की कुत्ते की पहिचान। प्यार किये मुह चाटई बैर किये तन हान ॥

अर्थात् दोनों प्रकार से हानि है और दूर रहने में कुछ हानि नहीं और टुकड़ा डाल देने में भी कुछ हर्ज नहीं होता अर्थात् इस दोहा वो चौपाई के दृष्टान्त से कुछ उपकार वो भलाई करदेने में रुकावट नहीं समझना उनसे वैर वो प्रीति नहीं करना यह मना करते हैं वो दूर रहने की आज्ञा है किसी ने इसी वचन के अनुसार एक दोके सार्थ आचरण किया आनन्द में रहा निश्चय त्याग करना संग विमुख वो दुष्टों का बहुत उचित है भलकर भी निकट न जाय वो जैसा विमुख वो दुष्टों का और उनके प्रीति का त्याग करना अत्यन्त उचित है इसी प्रकार अंगीकार करना सत्संग वो समागम भगवत् भक्तों का बहुत योग्य वो उचित है सत्संग वह वस्तु है कि जिस पदवी का मिलना मन वो बुद्धि में न समाय वो न समझ में आवे सो पदवी सहज में मिलजाती है इस संसार वो स्वर्गादिक के सुख तो तुच्छ हैं ब्रह्मानन्द का सुख भी सत्संग की बराबरी नहीं कर-सक्ता बरु वे सब सुख सत्संग के सेवक हैं सब हाथ बांधे सन्मुख होजाते हैं और जब कि पर्णब्रह्म परमात्मा सत्संग के प्रभाव करके सहज में मिलजाता है और जहां सत्संग है तहीं आप देवताओं के सहित प्राप्त रहता है तो दूसरी पदवी के सुख सब प्राप्त हो जावें तो क्या आश्चर्य है सत्संग को वह प्रताप है कि अजामिल ऐसा पापी यम दूतों को मार पीट कर उस स्थान पर पहुंचा कि योगियों को मिलना कठिन है वेश्या जो सब पाप की मूर्ति हैं उनको वह पद मिले कि रंगनाथ स्वामी और नाथ जी महाराज वशी भूत होगये और नित्य विहार में अपने मिलाय लिया बाल्मीक वो नारदजी के दृष्टान्त पर दृष्टि करनी चाहिये कि पहिले वे क्या थे और अब सत्संग के प्रभाव से क्या हैं सो किसको किसको गिनावें जो कोई जिस उत्तम पदवी को पहुंचा है सत्संग होके प्रभाव से सो जिस किसी को संसार समुद्र से उतरना है सो सत्संग करै बिना सत्संग न तो नाम कीर्तन प्राप्त होता है न भक्ति न भगवत् ॥

—०—

बहुत निष्ठा स्थापित होने का कारण वो उसके साथ माहात्म्य नाम कीर्तन का ॥

इस ग्रन्थ में चौबीस निष्ठा लिखी हैं वो सब निष्ठाओं के वर्णन में यह लिखा गया कि इस निष्ठा से भगवत् मिलता है अब चित्त उद्यमग में है कि उनमें से किसके अनुकूल आचरण करना चाहिये और जो एक निष्ठा से भगवत् मिलता है तो इतनी निष्ठा के लिखने का क्या प्रयोजन एक निष्ठा लिखदेनी बहुत थी और जो किसी कारण से चौबीसों निष्ठा लिखे हैं तो यह भी वर्णन करना चाहिये कि उनमें कौनसी निष्ठा ऐसी हैं कि जिससे

मनोर्थ अतिशीघ्र सिद्ध हो उत्तर यह है कि सब निष्ठाओं की जो कुछ महिमा लिखी गई है सब सत्य वो ठीक है किसी भांति कुछ सन्देह नहीं है उनमें से किसी एक निष्ठा पर चित्त दृढ़ आरूढ़ हो जाना चाहिये वही एक निष्ठा इस संसार समुद्र से पार उतार देवेंगी दूसरी निष्ठा का प्रयोजन न होगा और उसी एक निष्ठा के विश्वास वो निश्चय को यह प्रताप है कि शेष दूसरी सब निष्ठाओं में आप से आप अधिकार हो जायगा जैसे एक दीपक के प्रकाश होने से सब वस्तु घरमें हैं सो दीखने लगती हैं और जिस निष्ठा पर जिसका चित्त लगे तो उस निष्ठा से सिवाय भगवत् के मिलने के निमित्त दूसरे साधन का प्रयोजन नहीं दिन दिन प्रीति को वृद्धि करके अधिकारता को पहुंचाय देती है वो बहुत निष्ठा स्थापित होनेका कारण यह है कि सब किसी की रुचि मन की एक सी नहीं है किसी की बाल चरित्रों में रुचि है और किसी को माधुर्य वो शृंगार में वो किसी का हंसी खेल सखाभाव के चरित्रों में मन लगता है और कोई ईश्वरता वो कृपालुता के चरित्रों पर चाह रखता है इसी प्रकार सब उपासक अपने मन की रुचिके अनुसार भगवत् के शोभा वो चिंतवन में सावधान होता है तो शास्त्रों में जो उनके सब भाव की निष्ठा लिखी न जाती तो बिना ठहरने रीति आराधन उस निष्ठा के भगवत् के मिलने में व्यवधान पड़ता प्रमाण इस वचन का आप भगवत् के चरित्रों से प्रसिद्ध है कि भगवत् ने सब निष्ठा के संबंधी चरित्र किये जिस में जैसे चरित्रों पर जिस को चाह हो वैसेही चरित्रों पर मन को लगा कर भगवत् पारायण होजावै इस हेतु चौबीस निष्ठा जो ठहराई गईं वरु जितनी अधिक लिखी जातीं तितनी अधिक प्रकाशित होतीं यही बात ग्रन्थ के आरम्भ में जहां भक्ति अनेक प्रकार की होजानेका उत्तर लिखा गया है तहां प्रथमही पद्धति वो रीति के नाम से लिखी हैं यहां उसीको विशेष करिके लिख दिया है और यह नहीं कहा जाता कि इस निष्ठा से भगवत् बहुत शीघ्र मिलता है और इस निष्ठा से शीघ्र नहीं क्योंकि यह चौबीस निष्ठा आवागमन के समुद्र से पार होने को चौबीस जहाज के सदृश हैं जिस जहाज पर बैठेगा बेखट के पार हो जायगा जहाज पर बैठने अर्थात् विश्वास दृढ़ वो आचरण पक्का करने की देर है पार उतारने वाला अपनी दया के बस पार उतारने को सदा सर्व काल सावधान है परन्तु इस काल में अर्थात् कलियुग के निमित्त जो कुछ शास्त्रों में लिखा है कि सतयुग में भगवत् का ज्ञान ध्यान और त्रेता में यज्ञ और द्वापर में भगवत् की पूजा करने से उद्धार होता था अब कलियुग में केवल भगवत् का नाम मुख्य आधार है और इस वचनका निर्णय भागवत वो स्कन्द पुराण वो पद्मपुराण इत्यादि से अच्छे प्रकार होता है वो रामतापनी में वेद श्रुति कहती है कि नामके प्रभाव से पूरण

ब्रह्म परमात्मा मिलता है नाम माहात्म्य कौमुदी ग्रन्थ में सूच वो स्मृती पुराण वो वेद के प्रमाण से, निश्चय करके मिलना मुक्ति का केवल भगवत् नाम से ऐसा सिद्धांत लिखा है कि वह ग्रंथ पढ़ने वो सुनने से जान आता है विस्तार के भय से उसके भावार्थ का कुछ प्रयोजन न समझा जितने मत वो पंथाई देखने सुनने में आये उनके अग्रगामी अपने अपने मत वो पंथ की बड़ाई करके आपस में लड़ते झगड़ते हैं परन्तु भगवत् नामकी महिमा और बड़ाई करने में सबका सम्मत एक है वो सब बराबर कहते हैं कि यह नाम सब काम दोनों लोक के सुधार देता है वो अचरीला की बात है कि दश आदमी गाढ़ निद्रा में सोते हैं उन में किसी एक का नाम लेकर किसी ने पुकारा तो वही जगता है जिसका नाम लेकर पुकारा इस दृष्टांत वो प्रमाण से दो बात की निश्चय ठई एक यह कि सोता जीव पुरुष नाम के पुकारने से जगकर प्राप्त हो जाता है तो वह भगवत् कि सर्व काल जागने वाला वो सर्वत्र व्यापक है क्यों नहीं सन्मुख होजायगा दूसरे यह कि इस प्रमाण से नाम वो नामी को अभेदता निश्चय ठहर गई अर्थात् जो नाम है सोई नाम वाला है तो जब कि नाम भगवत् का कि वास्तव में भगवत् है अनुक्षण जिसके जिह्वापर रहैगा तो वह व्यापक क्यों न ब्रह्म रूप होजायगा शास्त्रों का जो यह वचन है कि नाम के लेने से संपूर्ण पाप आगे के वो अबके दूर होजाते हैं उसका निर्णय नाम माहात्म्य कौमुदी ग्रंथ में अच्छे प्रकार से लिखा है अर्थात् शंका करने वाले ने यह शंका किया किजो धोखे वो भूलकर एक बेर के नाम लेने से संपूर्ण पाप आगे के संचित वो वर्तमान काल के नाश को प्राप्त होजाते हैं तो वह लोग संसार वो अंत काल में क्यों दुःख पाते हैं उत्तर यह है कि एक बेर नाम लेने के पीछे जो नाम नहीं लेते इस हेतु नाम नहीं लेने के पाप से बढ़ होकर भांति भांति की पीड़ा वो दुःखों को भोगते हैं जो बराबर नाम लेते रहैं तो कोई पाप नहो वो ब्रह्म स्वरूप होजावें और खेत वस्त्र पर स्याही बूंद शीघ्र भीन जाती है तो जिस जिह्वा से एक बेर नाम उच्चारण ठआ और वे फिर नाम नहीं लेते तो उन को नाम नहीं लेने का पाप अधिक होता है अभिप्राय यह निकला कि भगवत् का नाम प्रतिश्वास वो प्रतिक्षण जपता रहै कि फिर कोई पाप निकट न आवै यह सिद्धांत ऐसा है कि कोई संदेह अथवा शंका उचित नहीं वो जो किसी को संदेह होतो अजामिल के प्रसंग से शंका का समाधान करदे सर्व या इस कलियुग में सिवाय नाम मंगल रूप मेरे स्वामी के और कोई उपायविशेष वो सुष्टतर ऐसा नहीं कि जिसके अवलम्ब से अति शीघ्र मनोवांछित सुख को पहुंच जाय वो नाम लेने में न कुछ अटपट है न कुछ खरच होता है केवल जीभ हिलानी है सो जीभ अनुक्षण सुख में प्राप्त है जिन लोगों ने अनन्य

उसनामी के नाम की शरण ली है वही [illegible] है और वही भजना-
वो वही साधु है और वही वैष्णव और वही जीवन्मुक्त है ॥

भगवत् भक्तों के आगे विनय वो श्रीराधाश्याम अनंदधाम के चरणारविंद में निवेदन ॥

अब भगवत् भक्तों वो उपासकों के चरण कमलों को दंडवत प्रणाम
करके विनय करता हूं कि यह चरित्र भगवत् भक्तों का संपूर्ण पाप वो
दुःखों का दूर करने वाला और भगवत् चरणों में प्रीति का बढ़ाने वाला
वो दोनों लोक का सब सुख कृपा करने वाला वो ब्रह्मानन्द का देने वाला
जैसा अपने मति अनुसार मुझ मतिमंद से हो सका देवनागरी में भाषा-
न्त रचि करके निवेदन किया यह तुम्हारे परम प्रीतम के चरित्रों से भरा
है इस हेतु मेरे बुरे कर्मों की ओर न देखिके अवश्य अंगीकार करने योग्य
है और सब संप्रदा वालों को आनन्द का देने वाला है क्योंकि सब
संप्रदाओं के आचार्य वो रीति वो परंपरा का वृत्तांत निखोट सब बड़ाई
वो मर्याद के सहित लिखा है जो कुछ चूक होगी सो मेरी अज्ञता है
प्रारंभ से वो अंततक केवल एक सिद्धांत पर दृष्टि वो परिश्रम रहा है
कि जिसप्रकार हो सकै किसी निष्ठा के अवलम्ब से अथवा चरित्र से कैनाम
से कै संप्रदा से भगवत् पूरण ब्रह्म सच्चिदानन्दघन छवि समुद्र शोभाधाम
के चरित्रों वो रूप अनूप में अज्ञ लोगों को प्रीति वो ज्ञाता लोगों
को प्रीति की वृद्धि वो दृढ़ता प्राप्त होय वो दो अपराध जानि बूझिके
[illegible]त्ते हुए एक यह कि बहुत जगह इस समय के लोगों को वृत्तान्त का
[illegible] निश्चय करिके मेरा वृत्तान्त है सो लिखा गया है सो प्रयोजन इसका
[illegible] नहीं है कि संग्रह वो त्याग [illegible] पहिचान नहीं होसक्ता दूसरा यह
कि कोई २ जगह वह भेद वो भाव लिखि [illegible] है कि जो विमुख वो
संप्रदाओं से वहिर्मुख लोगों से गुप्त रखने [illegible] इस में [illegible]
वो दृढ़ताई यह है कि उन लोगों को उस भेद वो भावके पढ़ने वो सुनने
का संयोग ही नहीं पहुंचैगा कदाचित् जो हजार दो हजार में कोई एक
पढ़ सुन लेगा तो उसके स्वाद वो भाव और मुख्य अभिप्राय से निश्चय
करिकै अज्ञ रहैगा वो कथा वो इतिहास की भांति समझैगा जैसे पीनस-
वारे को कर्पूर की सुगन्ध का ज्ञान नहीं होता क्योंकि उस रसके वेही
भागी हैं कि जिनकी भगवत् चरित्रों में प्रीति है और उस रसके उपासक
हैं और उनही के निमित्त वे भाव और भेद लिखे गये हैं ॥ हे श्रीनन्दनन्दन
राधावर वृन्दावन बिहारी शोभाधाम हे शरणागत वत्सल प्रणतारत भञ्जन
दीनबन्धु हे करुणाकर सच्चिदानन्दघन पूर्ण ब्रह्म नित्य निर्विकार हे यशोदा-
किशोर परम मनोहर सुकुमार हे पतितपावन हे अधम उद्धारन हे करु-
णानिधान हे दयासिंधु जैसा मेरा वृत्तान्त है किस प्रकार किस मुख से
निवेदन करूं कि आपको बिना मेरे निवेदन किये सब अच्छी प्रकार ज्ञात

वर्तीराजा पर कोई कानी कौड़ी निछावर करै वामभाग में जो स्मृती
महारानी जी विराजमान हैं उनको जो श्री नन्दनन्दनस्वामी से भगवत्
जाय तो गोपाल सहस्र नाम वो गोलोक तापिनी इत्यादि उपनिषद वो
दूसरे शास्त्रों से विरुद्ध पड़ता है वो महादेव के वचन के अनुसार ब्रह्महत्या
का पाप प्राप्त होता है और जो एक रूप श्रीनन्दनन्दनस्वामी का वर्णन
किया जाय तो माधुर्य वो शृंगार वो छवि वो शोभा वो सुन्दरता इत्यादि
प्रियाप्रीतम के नित्य हैं उनकी नित्यता में विरुद्ध आता है बात यही
सिद्धांत है कि जो नन्दनन्दनस्वामी हैं सोई राधिका महारानी वो जो
राधिका महारानी सोई नन्दनन्दनस्वामी है भक्तों को अपने चरणों में
लगाकर उद्धार करने के हेतु और शृंगार वो माधुर्य की उपासना प्रवर्तमान
करने के निमित्त भगवत् ने अपने दो रूप प्रगट किये इसी कारण माधुर्य वो
शृंगार निष्ठा सब निष्ठाओं पर अग्रवर्ती मुख्य है कि उसके प्रभाव से
बहुत शीघ्र भगवत् मिलता है और प्रिया प्रीतम के एक होने की एक यह
छटा है कि उस सिंहासन पर जो दोनों विराजमान हैं तो गौड़श्याम
श्री अंगन की सुन्दरता वो निर्मलशोभा वो पोशाक वो आभूषण की
झलक वो दमक चमक दोनों स्वरूप के परस्पर मुखारविन्द वो वस्त्र आभूषण
पर पड़ते हैं उस समय यह नहीं विवेक होता कि कौन श्री प्रियाजी
महारानी हैं वो कौन श्रीकृष्णस्वामी इस पहिचान करने में [illegible]
सारदा की भी बुद्धिदंग है दूसरे की तो क्या सामर्थ्य है जो निरुपा[illegible]
वो प्रिया प्रीतम के प्रेम का यह वृत्तांत है कि [illegible] जी के हृदय में [illegible]
वो प्रीतम के हृदय में प्रिया [illegible] निरंतर बसे रहते हैं सो जबकि [illegible]
वो बाहर [illegible] है तो दोनों में किस प्रकार कहा जाय [illegible]
प्रिया प्रीतम [illegible] करिके एक हैं जैसे शब्द वो अर्थ वो जलरा
तरंग सो ऐसी श्रीवृषभानुनन्दिनी साक्षात् कृष्ण प्रिया जिसकी [illegible]
नखचन्द्रिका परम रसिकों का जीवन आधार वो संपूर्ण शोभा वो शृंगार
का कारण तिसकी सुन्दरता शोभा वो शृंगार का वर्णन किस प्रकार कोई
करि सकै जितनी उपमा रही सो प्राकृतस्त्रियों की शोभा के वर्णन में लगि
गई प्रियाजी महारानी के योग्य न रहीं ऐसी श्री प्रियाजी महारानी
श्रीकृष्णस्वामी के वाम अंगविराजमान हैं कि जिसकी शोभा वो सुन्दरता
के कारण से श्रीनन्द नन्दन महाराज की शोभा वो सुन्दरता प्राप्त होती
है ललिता वो विशाखा इत्यादि सब सखी चवंर छत्र व्यजन पानदान
उगालदान इत्यादि नाना प्रकार की सामा सेवा के लिये अपनी २ सजसे
सेवा में सजी हुई खड़ी हैं सन्मुख सखी गण नृत्य करती हैं बिना बेन बंशी
मृदंग सारंगी करतार आदि भांति २ के वाद्य जंत्र सब एक सुर में मिले
बजते हैं घुंघुरू वो किंकिनी गति पर छमा छम छम कि रही हैं वो मधुर